894.342-3
А 92
хинди

मुख़्तार अवेज़ोव

कविता की पुकार

894.342-3
A 3 C

मुख़्तार अवेज़ोव

कविता की पुकार

(प्रथम खण्ड)

प्रगति प्रकाशन, ताश्क़न्द १९८०

अनुवादक : राय गणेश चन्द्र

डिज़ाइन : मिखाइल कलीनिन

МУХТАР АУЭЗОВ

АБАЙ

Книга первая

На языке хинди

...икасының
...ханасы. Инв. №
...библиотека
... Инв. №

$А \frac{70303-059}{014(01)-80}$ 725--79--4702230200

© सर्वाधिकार स्वरक्षित, प्रगति प्रकाशन, ताश्क़न्द – १९८०

विषय-वस्तु

अपने बारे में लेखक के दो शब्द	५
घर को वापसी	११
बवण्डर	८७
प्रयाण	१२८
भूल-भूलैया	१८८
तराइयों में	२४१
उत्थान	३०४
उत्कर्ष	३५६

अपने बारे में लेखक के दो शब्द

मेरा जन्म एक कज़ाख़ ख़ानाबदोश उमरख़ान अवेज़ोव के परिवार मे २८ सितम्बर, १८९७ में हुआ था। मेरे पुरखे मध्य एशिया से आये थे और १९वी सदी के शुरू से ही मेरे नायक अबाय कोनानबायेव के कबीले अर्थात् तोबिक्ति क़बीले के होकर रह गये।

मेरा प्रारंभिक बचपन एक आऊल मे बीता जहाँ मैने अलिफ-बे सीखा। हम पोतों को हमारे दादा अवेज़ ने पढ़ाया (उन्ही के नाम पर मेरी उपाधि अवेज़ोव पड़ी है)।

मुझे याद है, मै पाँच या छह साल का था और एक दिन शाम को जब सुस्वादु रात्रि-भोजन की प्रतीक्षा मे मग्न था, मेरे दादा जी ने खुद इस बात का इम्तहान लेने का फैसला किया कि मेरी उम्र अक्षर-ज्ञान कराने लायक हो चुकी है या नही उन्होने मुझे कई ऐसे शब्द दुहराने को कहा जिनमे "र्र" की ध्वनि आती थी। उनके लिए अक्षर-ज्ञान का सवाल ही नही उठता था जब तक इसका साफ-साफ उच्चारण नही कर सकते थे: मुल्ला लोग निश्चय ही उनकी जीभ उमेठ देते थे जो उस अक्षर का उच्चारण नही कर सकते थे क्योकि कुरान को सीखते समय पहले पाठ मे ही यह अक्षर सबसे पहला मिलता. "बिस्मिल्लाहि रहमान इर्र-र्रहीम " ("सर्वशक्तिमान परमात्मा के नाम पर")। और कोई भी मुल्ला पवित्र पाठ के तोड़-मरोड को बर्दाश्त नही कर सकता। जाहिरी तोर तर मुझसे सन्तुष्ट होकर दादाजी ने दूसरे ही दिन मुझे मेरा पहला पाठ सिखाया।

यह वसन्त की एक चमचमाती गर्म सुबह थी। बच्चो के मन को लुभानेवाले भेड़ो के मेमने और बछेड़े जाड़े के पड़ावो के बीच उछल-कूद रहे

थे। हमारे ऊपर आसमान में दादी की परीकथाओं की सफ़ेद परोंवाली परियों जैसे हंसों की धूप में दमकती एक लम्बी क़तार उड़ी चली जा रही थी और कही ऊपर से मुश्किल से सुनाई दे रही गाने की आवाज़ आ रही थी। सहसा ही वसन्त का यह सम्मोहन छिन्न-भिन्न हो जाता है, हमें दादा जी के नीची छतवाले चारो ओर से बन्द जाड़े के मकान मे बुलाया जाता है। मुझे शायद और भी गहरा सदमा पहुँचा जब मैंने उनके हाथों में एक मोटी-सी हस्तलिखित पुस्तक देखी और समझ गया, हमें यहाँ किस लिए बुलाया गया था। दादाजी ने अरबी के अक्षर दिखाये, ओह, उनमें से हरेक का नाम कितना मुश्किल था!

किताब आबाय की कविताओं का संग्रह थी। कवि के मित्र और हार्दिक प्रशंसक अवेज़ ने एक मुल्ला को किताब को प्रतिलिपिबद्ध करने का आदेश दिया था। उन्होंने हमें अपने प्रिय कवि की पुस्तक से पढ़ाने का फ़ैसला किया था जिससे कि हम भी कुछ प्रेरणा ग्रहण कर सकें।

पढ़ाने का हमारे दादाजी का अपना तरीक़ा था, ऐसा तरीक़ा जिससे पढ़ानेवाले के लिए तो बातें आसान हो जाती थीं लेकिन पढ़नेवाले को आठ-आठ आँसू बहाने पड़ते। मैं अभी अक्षरों को पहचान भी नही पाता था कि जबरन मुझे एक के बाद दूसरा पद घोखने के लिए कहा जाता। मुल्लों से होड़ करते हुए, सुबह से रात तक दादाजी हमें किताब में डुबोये रहते और फिर रात के खाने से पहले अपने और पिताजी के सामने उन्हें मुँहज़बानी दुहराने के लिए मजबूर करते। वसन्त की धूप मेरे लिए धूमिल पड़ गयी और मैं कई-कई दिनों तक अपने मेमनों को नही देख पाता। तत्याना* की फ़रियादों से भरे आबाय के पृष्ठ एक और बलि के बकरे के आँसुओं से तर हो जाते लेकिन अवेज़ अपनी ज़िद से बाज़ ही नही आते, यहाँ तक कि सहृदया दादीअम्माँ की सिफ़ारिशों पर भी कान नही देते। दादीअम्माँ को डर था, उनका पोता इस अनवरत तोता-रटन्त से कही गावदी होकर न रह जाय।

जब मैं ग्यारह साल का था, मेरे पिताजी की मृत्यु हो गयी और मुझे मेरे चाचा क़ासिमबेक ने गोद ले लिया। मेरे चाचा जी जब नौजवान थे, अपने धार्मिक उस्ताद के अभिशापों से भयभीत हुए बिना मुस्लिम मदरसा

---

* तत्याना – पुश्किन के "येव्गेनी आनेगिन" की नायिका।

का त्याग कर रूसी स्कूल मे पढ़ने चले गये थे। मेरे चाचाजी ने मुझे भी सेमिपलातींस्क के पाँच दर्जेवाले स्कूल में भेज दिया जहाँ चिंगीज़ वोलोस्त के लिए नगर समिति द्वारा प्रदान की गयी छात्रवृत्ति मिल जाती थी।

ज़ारशाही सरकार इन छात्रवृत्तियों के लिए स्तेपी में रहनेवाली आबादी से पैसे जमा करती थी जिससे दुभाषियों, मामूली कर्मचारियों और इसी तरह के अन्य लोगों को प्रशिक्षित किया जा सके। हालाँकि कज़ाख़ लोग रूसी स्कूलों में अपने बच्चों को पढ़ने के लिए बड़ी बेदिली से भेजा करते थे। बाप-दादे के ज़माने से चले आ रहे उनके प्रतिकूल विचारों और मुल्लों के दुराग्रहपूर्ण धर्मोपदेशों ने रूसी स्कूलों के प्रति अविश्वास के बीज उनके हृदय में रोप दिये थे: बहुत से लोगों का ख़याल था कि स्कूल की स्थापना कज़ाख़ बच्चों को ईसाई बनाने के मुख्य उद्देश्य से की गयी है। इसलिए उयेज़्द के सरदारों को, हरेक वोलोस्त से दो बच्चों की माँग द्वारा लोगों को बाध्य करके जगहें भरनी पड़ती थी। सच तो यह है कि वोलोस्त सरदार लड़कों को भेजने के लिए अभिभावकों को प्राय: घूस दिया करते। सो हमारे दादाजी को बुज़ुर्गों और आक़साक़ालों से अपने बेटों व पोतों को रूसी स्कूल में पढ़ने के लिए भेजने के कारण न जाने कितनी मलामत और हँसी-दिल्लगी बर्दाश्त करनी पड़ी। जब हम छात्र गर्मी की छुट्टियों में अपने आऊलों में लौटते, क़बीले के बड़े लोग हमारी पोशाकें देखकर खेद से अपने सिर हिलाते और इस हादसे का "दोष" आबाय के प्रभाव पर डालते। मैं यह कहने की हिम्मत करता हूँ, वे ठीक ही कहते थे। महान कवि ने अपने काव्य और दार्शनिक ग्रन्थों में रूसी शिक्षा की न केवल हिमायत ही की है बल्कि अपने बच्चों को रूसी स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा भी – यह एक ऐसी बात थी जो सुविदित है।

अपनी छुट्टियों के दौरान हम जिस स्तेपी जीवन को व्यतीत करते थे, वह हमारे शहरी जीवन से अत्यधिक भिन्न था और लिहाज़ा, ख़ाना-बदोश सामन्तवाद के अवशेषों, पुराने बाप-दादे के ज़माने से चले आ रहे घृणित रीति-रिवाजों पर बल देनेवाला था जैसे दहेज़, बहुविवाह, हत्या के लिए भारी जुर्माना की प्रथा, क़बीलों के आपसी झगड़े जिनके कारण हमले होते, डाके डाले जाते और मुक़दमेबाज़ी होती। यह सब लोगों के दिल पर भारी बोझ थे। पिछड़ी स्तेपियों का ऐसा अन्धकारमय जीवन इतना दुराग्रहपूर्ण था कि कज़ाख़स्तान में सोवियत सत्ता की स्थापना के

बाद भी जनता को बायो और उप-सामन्तो से सघर्ष करना पडा जो पुराने ढर्रे, रिवाज और शरीअत से चिपके रहना चाहते थे।

१९१९ मे मैने सेमिपलातीस्क शिक्षक सेमिनरी से स्नातक किया और सोवियत सत्ता की स्थापना के बाद पहले सेमिपलातीस्क प्रादेशिक कार्यकारिणी समिति मे, फिर ओरेनबुर्ग-स्थित कजाखस्तान की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति में काम किया। इसके साथ-साथ नाटककार और पत्रकार के रूप मे अपनी लेखनी भी चलाता रहा। १९२२ की पतझड में मैने ताशक़न्द मे मध्य एशियाई राज्य विश्वविद्यालय के भाषणो मे भाग लिया और "शोल्पान" पत्रिका के लिए कुछ कहानियाँ लिखकर, उसमे योगदान करना शुरू किया।

एक साल बाद मैने लेनिनग्राद राज्य विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग मे प्रवेश लिया। वहा मेरी पढाई १९२८ तक चलती रही। उसके बाद मैने ताशकन्द के मध्य एशियाई राज्य विश्वविद्यालय के प्राच्य विभाग के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम मे प्रवेश लिया।

उस समय तक मेरे नाटक कई कजाख थिएटरो मे चलने लगे थे। विभिन्न पत्रिकाओ मे मेरी बहुत-सी कहानिया और वृत्त-रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी थी। समय बीतने के साथ-साथ मैने काफी अनुभव और विचार-विभूतियाँ एकत्र कर ली जिनसे मेरी परिपक्वता मे विकास हुआ।

कजाखस्तान मे समाजवाद के विभिन्न चरणो को दिखाते हुए मैने बीस से अधिक नाटक लिखे है; इसके अलावा मैने बहुत-सी कहानियो और छोटे उपन्यासो की रचना की हे। पिछले दस वर्षो के दोरान मै क्लासिकी कजाख लेखक आबाय के बारे मे एक उपन्यास तैयार करने मे लगा रहा।

उपन्यास पर काम शुरू करने से पहले मैने उनके जीवन और कृतियो का अध्ययन किया। मै उनकी सम्पर्ण कृतियो का सम्पादक था, उनकी जीवनी लिखी, कवि और उनके युग से सम्बन्धित ऐतिहासिक सामग्री एकत्र की। मैने आबाय नामक एक दुखान्त भी लिखा जिसमे कवि के जीवन के अन्तिम वर्षो का वर्णन किया था। इसे मैने कज़ाख सस्कृति के एक उत्कट अध्येता, अपने रूसी मित्र लेखक लियोनिद सोबोलेव के सहयोग से लिखा था।

आबाय से सम्बन्धित सामग्री एकत्र करने की प्रक्रिया की अपनी विशेषताएँ थी जो ऐतिहासिक उपन्यासो के अधिकांश लेखको के लिए अनजान

थी। इसका कारण यह है कि आबाय के जीवन, कार्य, रूपाकृति और चरित्र से सम्बन्धित कोई लिखित अथवा मुद्रित सामग्री नही थी – न तो उनका कोई निजी संग्रहालय या उनका रोजनामचा, न तो ख़त या संस्मरण, न तो कोई विवरण! मुझे उनसे सम्बन्धित तथ्यों की छानबीन उन लोगों से बातचीत करके करनी पड़ी जो उनसे कभी परिचित रहे थे। उनमे से बहुतेरे बहुत ही बूढे लोग थे जिनके लिए अतीत के दिनों को, तब के परिचितों को, उनसे हुई बातो को और आँखों देखी घटनाओं को स्मृति में लाना मुश्किल होता था। मेरी बातचीत कोकपाय से हुई। वह आबाय का चेला तथा उनके घनिष्ठ मित्रो में से एकमात्र था जो मेरा भी समकालीन था। कोकपाय की मृत्यु १९२७ मे हो गयी। मेरे लिए यह अफ़सोस की बात थी कि वह आबाय के नौजवानी के दिनों के बारे मे कुछ नही बता सका क्योंकि वह कवि से उम्र मे सोलह वर्ष छोटा था।

तथापि, उपन्यास लिखने की बात दिमाग़ में आने से बहुत पहले अपने छात्र-जीवन मे ही मैंने अपने दादा अवेज़ के वृत्तान्त सुने थे जो आबाय से कुछ साल बड़े थे। उन्हें कोनानबाय की भी याद थी। इसके बाद फिर मैंने आबाय की पहली पत्नी दिल्दा को भी देखा। मुझे अनेक बहुमूल्य विवरण-संस्मरण आयगेरिम से भी प्राप्त हुए जो अपने पति की मृत्यु के बाद दस साल और जिन्दा रहीं। उन्होंने उनकी यादों को संजो रखा था।

मैंने आबाय के मित्रों और प्रशंसकों तथा उनके दुश्मनों व बुरा चाहने-वालों – उनके समकालीनों या बेटो व पोतों से बातें कीं। अपनी खोज के फलस्वरूप मैंने इतने बड़े पैमाने पर विवरण एकत्र कर लिये कि मैं बहुधा गोर्की के आदेशों में एक को दुहराया करता: "जिन चीज़ों को छुपाने का तुम्हे कोई हक नही, उनके बारे में तुम्हें ज़रूर लिखना चाहिए।" अब जब कि आबाय के यौवनकाल से सम्बन्धित उपन्यास पूरा हो चुका है, मैं देखता हूँ, अभी भी मेरे पास काम में नही लायी जा सकी इतनी सामग्री बच रही है कि मैं उसी काल के बारे में एक और किताब लिख सकता हूँ। सामग्री की इस प्रचुरता ने मेरे कार्य के लिए अनुकूल, किंवा एक निर्णायक स्थिति प्रदत्त कर दी है।

निस्सन्देह, सामग्री एकत्र करने के कार्य की अपनी कठिनाइयाँ थीं। मुझे अतीत को अपने समकालीनों की भूली-बिसरी यादों के ज़रिये पढ़ना पड़ा। मुझे अपनी कल्पना को मुक्त-विचरण और कई बातो को अन्य

समकालीनो के विवरण से मिलान करते हुए तालमेल बैठाने के लिए छोड़ देना पड़ता। उन भूली-बिसरी यादो के लिए सावधानी बरतने की आवश्यकता थी। यह ऐसी ही बात थी जैसे विलम्बित मुसाफ़िर को गुज़र गये कारवाँ द्वारा राख मे छोड़े गये अंगारशेष को अपनी ही साँसों से बड़ी सावधानी के साथ प्रज्वलित करना पड़ता है। अतीत का फिर से निर्माण जितना कठिन था उतना ही तरुणी आयगेरिम के उसके साठ साल पुराने विवरण के सौन्दर्य को विवेचित करना।

कवि की प्रतिमा की पुन: सृष्टि करते हुए मैने दिमाग़ में सिर्फ़ हमारे इतिहास मे उनके स्थान और अतीत मे उनकी प्रगतिशील भूमिका का ही नही बल्कि उनके उन सपनों का भी ख़्याल रखा है जो उन्हें हमारी पीढ़ी से सूत्रबद्ध करते है।

उपन्यास आबाय उस वृतान्त-माला का एक भाग है जो गत शताब्दी के मध्य से हमारे आज के समय तक कज़ाख़ लोगों के जीवन का विवरण प्रस्तुत करेगी।

अपने छात्र-काल से ही मैने लेखन को शोध-कार्य से समन्वित किया है। स्कूलों और विश्वविद्यालयो के लिए कज़ाख़ साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित पाठ्यपुस्तको के संकलन कार्य मे मैं हिस्सा लेता रहा हूँ और पन्द्रह वर्षो से ज्यादा अर्से से आलमा-आता विश्वविद्यालय में व्याखान भी देता रहा हूँ। सेर्गेय मीरोनोविच कीरोव नामक कज़ाख राज्य विश्वविद्यालय के एक प्रोफ़ेसर के रूप में मै आबाय की कृतियो से सम्बन्धित एक विशेष पाठ्यक्रम और कज़ाख़ लोक-साहित्य पर चरिचर्चा चलाता हूँ। कज़ाख़ विजान अकादमी के एक सदस्य के रूप मे मै कज़ाख़ विज्ञान अकादमी के तत्वावधान मे भाषा और साहित्य अनुसन्धान संस्थान मे काम भी करता हूँ।

मुख़्तार अवेज़ोव

घर को वापसी

लड़का घर पहुँचने को बेताब था। यह उसकी यात्रा का तीसरा दिन था और आज ही यात्रा पूरी हो जाये, इसके लिए वह कुछ भी कर गुज़रने को तत्पर था! क़ोरिक में जहाँ उन्होने रात बितायी थी, भिनसरे ही उसने अपने स्वजन बायतास को जगा दिया था जो उसे शहर से लिवा ले जाने आया था और उससे पौ फटते ही यात्रा पर चल पड़ने का अनुरोध किया था। लड़का अपने साथियो से तीर की तरह सनसनाता आगे रहने के लिए लगातार घोड़े को एड़ लगाये जा रहा था।

"आऊल लौटने की कितनी बेताबी है उसे!" बायतास और बूढ़ा जुमाबाय बार-बार चकित-से चीख़ पड़ते।

"बेचारा! ज़रूर ही जाड़े भर मदरसे मे रहकर उकता गया होगा!"

और लड़के के साथ बने रहने के लिए दोनों आदमी अपने-अपने घोड़ों को उकसा रहे थे। जुमाबाय ने अपने घुटने के नीचे लकड़ी का एक पुराना काले रंग का हथियार – चोक़मार लगा रखा था जबकि बायतास ने अपने बूट के सिरे पर भोज वृक्ष की लकड़ी का बना लम्बा-सा एक और हथियार – सोयिल सावधानी से जमा रखा था। जब वे तक़िरबुलाक कहलानेवाली झाड़ियो के पास पहुँचे, बायतास ने सोचा लड़के के जोश को कम करना उचित होगा।

"अकेले आगे बढ़ते न जाओ," उसने आवाज़ दी। "हो सकता है एसंबाय घाटी मे डाकू हों!"

"और क्या पता वे इस पल तुम्हारी निगरानी कर रहे हों," जुमाबाय

बोल पडा।" शायद वे कह रहे हों, 'अरे बडा बहादुर है, क्यो? अकेले घोडा हाँके आ रहा है, है न?' और वे तुम्हारे सिर पर वार करेंगे।"

"और आप? आप लोग यहाँ किस लिए है?"

"ह-ह-ह! भला हम क्या कर सकते है? बस हम दो ही तो है।"

"और उनका तो पूरा जत्था है," जुमाबाय ने हामी भरी।

"हाँ, अगर उन्होने हमे भी अपना ही भाई-बन्धु समझा तो ठीक है, हम बच निकलेगे लेकिन अगर ऐसा नही हुआ तो बात बिगड जायेगी!" उसने लडके को डराने की कोशिश करते हुए नाक-भौ चढाकर कहा।

लेकिन इसका असर एकदम उल्टा हुआ।

"ठीक है, अगर आप दोनो कुछ नही कर सकते तो आप के साथ चलू या न चलूँ, क्या फर्क पडता है? मै तो चला!"

अपने घोडे पर कोडे फटकारता वह आगे बढ गया और एसबाय घाटी तक पहुँचने से पहले उसने एक बार भी पीछे मुडकर नही देखा।

यात्रा के पहले दो दिनो मे अपने आलसीपन के कारण उन दोनो बुजुर्गो ने उसकी नाक मे दम कर दिया था और अब आखिरी दिन उन्हे हडबडा देने का एक तरीका सूझ जाने से वह बडा खुश था। उसने आऊल तक रास्ते भर काफी आगे-आगे रहने का फैसला किया।

हालाकि उसके साथी आँखो से लगभग ओझल-से थे, वह घोडा हाँकता ही गया। यह एक उजाड आऊल था, बस टीले और ढूह ही वहाँ मौजूद थे। इस इलाके को खाली करके आऊल अब चिंगीज पर्वतो पर जा चुके थे। हर टीले पर से रास्ता एकदम साफ-साफ दिखाई देता था और अचानक हमले द्वारा दूसरो को लूटकर दौलतमद होनेवालो के लिए खड्ड और घाटियाँ छुपने के वास्ते बहुत सुविधाजनक जगहे थी।

"वह भयभीत क्यो नही? क्या उसकी अक्ल मारी गयी है?" बायतास ने मलामत से अपना सिर हिलाया।

जुमाबाय ने भी जो लडके को काबू मे रखने मे असफल रहा था, सहर्ष हाँ मे हाँ मिलाया

"एकदम अपने बाप जैसा है! जाहिर है बूढे भेडिये की असली औलाद है! सिवा उसके साथ-साथ चलने के और कुछ नही किया जा सकता।"

वे घुडदौड करते सरपट घोडो को भगा ले चले, कभी कोई आगे बढ जाता, कभी कोई। बायतास खुद कोनानबाय के काले अयालवाले तीव्रगामी

रणतुरंग पर सवार था और जुमाबाय अपने मालिक के घोडो मे से एक, दीर्घकाय हिम-धवल बीजाश्व नैमनकोक पर। वे उडते-से एक दर्रे से दूसरे के पास जा पहुँचे। एक टीले पर पहुँचकर उन्होने देखा, लडका गायब। जब वे घाटी मे उतरने लगे, जुमाबाय को सहसा घोडो की टाप सुनाई पडी – आवाज एसबाय दर्रे की ओर से अथवा बदकिस्मती से ठीक घाटी की ओर से ही आ रही थी!

जुमाबाय को काटो तो खून नही। "शैतान खुले घूम रहे है! लगता है, लडके को मार डाला और अब हम लोगो के पीछे है," उसने सोचा। अपने घोडे पर बुरी तरह कोडे फटकारता वह भाग चला, उसे पीछे मुडकर देखने की हिम्मत तक न हुई। तभी एक कर्कश आवाज ने आदेश दिया

"अपनी आँखे बन्द कर लो!"

जुमाबाय मुडा लेकिन आदेशदाता ने दिन के उजाले मे हमला बोलनेवाले स्थानीय डाकुओ की तरह अपना चेहरा रूमाल से छुपा रखा था। बायताम अपने घोडे को पूरी तेज गति से भगाता, बहुत आगे जा चुका था। इस लिए जुमाबाय अकेला पड गया था। "मै इसे मार भगाऊँगा," उसने तय किया और घुटने के नीचे बधे चोकमार को थाम लिया। "लेकिन कही उसने पहले ही चोकमार से मेरे सिर पर वार कर दिया तो?" उसके दिमाग मे यह भयानक ख्याल आया। हमले से बचने के लिए जुमाबाय घोडे की अयाल पर सीधा झुककर लेट गया।

अजनबी ने अपने शिकार को दुबारा हथियार तक हाथ बढाने का मौका ही नही दिया। तेजी से आगे बढकर, झटके से उसने बूढे के चौडे किना-रोवाले काले टोप को उसकी आँखो तक झुका दिया। जुमाबाय को सिर उठाने मे भय लग रहा था – वह अपने प्रतिद्वन्द्वी से गुत्थमगुत्था होने की हिम्मत नही जुटा सका और भागने की कोशिश करने के लिए काफी देर हो चुकी थी। डाकू ने उसके घुटने के नीचे से उसका चोकमार झपट लिया। नैमनकोक की बागडोर अचानक ही जैसे खिँच गयी और वह जुमाबाय की राह मे कोई दीवार-सी उठ खडा हुआ। जुमाबाय सावधानी से उठ बैठा, उसके तो हाथ-पॉव फूल गये, उसने कॉपते हुए हाथो से अपना टोप पीछे खिसकाया।

कही वह सपना तो नही देख रहा? अरे, उसके सामने घोडे पर तो लड़का बैठा था! तो हमलावर यही था जिसने उसका हथियार छीन लिया

था, उसका घोड़ा रोक लिया था और अब वहाँ बैठा हँसी के मारे बेदम हुआ जा रहा था। ग़लती की कोई गुंजाइश ही न थी: यह आबाय ही था – "कोनानबाय का वृक-शावक"।

कुछ और लज्जित जुमाबाय झल्लाकर बोला:

"बेटे, अपनी शरारतों से तुम ख़ुद मुसीबत बुला रहे हो! और वाह, क्या जगह चुनी है तुमने इसके लिए! डाकुओं के ठीक गढ़ को।"

हँसी रोकने के कारण लड़के का साँवला चेहरा लाल हो गया था। सिर नीचे करके उसने अपनी टोपी ठीक से रखने की कोशिश की। किसी असली लुटेरे की तरह उसने अपनी टोपी का पिछला हिस्सा आगे की ओर कर लिया था। जुमाबाय को आ घेरना और बदली हुई आवाज़ मे रुकने का आदेश देना आसान था।

बायतास अब फिर आ पहुँचा और यह कहना मुश्किल था कि वह भयभीत हुआ था या नही। जब उसे पता चला, माजरा क्या है, वह हँस पड़ा और लगा, उसे मज़ाक़ पसन्द आया था।

"ज़रा देखो, उसने अपने क़ुम्मैत का सफ़ेद दाग़ भी छुपा लिया है।"

जुमाबाय ने देखा और निश्चय ही लड़के के घोड़े के माथे पर सफ़ेद दाग़ को मिट्टी से लेप दिया गया था। लेकिन बूढ़ा रोबदाबवाली इज़्ज़त का आदी था: उसकी हँसी उड़ायी जाये, वह सहन नही कर सकता था। उसने हँसकर बात उड़ा देने की कोशिश की।

"नन्हा शैतान – ठीक अपने बाप जैसा!" जबरन हँसने की कोशिश करते हुए उसने कहा। तभी तो केरेय और वाक हमेशा शिकायत करते रहते है कि सारे तोबिक़्ति * लोग चोर-डाकू हैं तो कोई आश्चर्य नहीं। और वे ठीक ही कहते है, देखो, यह शैतान छोकड़ा राहज़नी के सारे गुर जानता है!"

---

* तोबिक़्ति – मध्य जुज़ (मध्य ओर्दा) में कज़ाख़ों का एक विशाल क़बीला जो आज के सेमिपलातीस्क प्रदेश के दक्षिणी हिस्से, चिंगीज़ पर्वत-माला के सम्पूर्ण भू-भाग और उत्तर में स्थित स्तेपियों में रहा करता था। दक्षिण मे उनके पड़ोसी केरेय, उत्तर में वाक़, पूर्व में सिबान और पश्चिम में क़ाराकेसक क़बीलेवाले थे। तोबिक़्ति में कई कुल थे – इर्गिज़बाय, जिगितेक, बोकेंशी, तोर्ग़ाय, तोपाय, क़ाराबातिर और कोक्शे जिनका उल्लेख इस उपन्यास में हुआ है। आबाय इर्गिज़बाय कुल के थे। – सं.

आबाय इस वृद्ध व्यक्ति के प्रति अपने पिता की श्रद्धा को अच्छी तरह जानता था। जुमाबाय के शहर आने का क्या कारण था, वह ठीक-ठीक नहीं जानता था लेकिन अपने दोनों साथियों की छुटपुट बातचीत से उसने अन्दाज़ लगाया था कि ख़ुद क़ोनानबाय ने उसे कोई महत्वपूर्ण काम सौपा था। हँसी पर लगाम डाल, वह अपने घोड़े को जुमाबाय के क़रीब ले आया।

"सफ़र लम्बा है सो मैं बस समय बिताना चाहता था। मेहरबानी करके मुझे माफ़ कर दीजिये, जुमाबाय," उसने स्नेहपूर्वक कहा और हालाँकि जुमाबाय ने कोई जवाब नही दिया, उसे अन्दर ही अन्दर ख़ुशी हुई। उधर बायतास ने आबाय के साथ दिल्लगी शुरू कर दी मानो वह पूर्णवयस प्राप्त कर चुका हो:

"पहले तो ठिठोली करते हो और फिर कहते हो, 'मेहरबानी करके माफ़ कर दीजिये!' इससे मुझे अपने एक गीत की याद हो आयी है:

सफ़र के लिए लादते सामान ऊँट पर,
जानता था बोझ न होगा बहुत ज़्यादा;
लेकिन झेल पायेगी कैसे ओयकपा
बोझ समय का जब मैं होऊँगा सफ़र पर?

आबाय मतलब न समझ पाने के कारण चकित था।

"ओयकपा कौन है, बायतास आग़ा?"

"तुम्हें ओयके, मेरी बीवी की याद नही?"

"हाँ, याद है। उन्हें क्या हुआ?"

"पिछले साल गर्मी भर मैं आऊल-आऊल घूमता-ठहरता, जवान औरतों तथा लड़कियों के साथ मौज-मज़े करता रहा। लेकिन जब यह सब ख़तम हुआ, मैं अपनी बीवी से आमना-सामना करने की हिम्मत नही जुटा सका। इस लिए पश्चाताप के इस छोटे-से गीत से मैंने उसका हृदय पिघलाने का फ़ैसला किया। मैंने यह गीत अपने मित्रों और गायकों तक पहुँचा दिया और मेरी बीवी ने उनसे यह गीत मेरे वापस लौटने से पूरे एक महीना पहले सुन लिया।"

बायतास काफ़ी ख़ूबसूरत और जाना-माना गायक था। आबाय खुले

दिल से उनकी तारीफ करके उन्हे सम्मान देता। पिछली गर्मियो मे ग्रोयके ग्रौर बायतास के मित्रो से हुई ग्रपनी मुलाकात की उसे ग्रच्छी तरह याद थी। वे सब के सब खुशमिजाज, ग्रनथक गायक थे ग्रोर उनकी ग्रावाज ग्रानन्ददायी थी। लेकिन वह उसकी कहानी ध्यान से सुन रहा था ग्रौर इसकी प्रतीक्षा मे बेताब था कि ग्राखिर मे क्या हुग्रा। बायतास ने उससे सयानो की तरह बात की थी, इस लिए उसने हिम्मत करके पूछ लिया

"लेकिन ग्रोयके ने क्या कहा, बायतास ग्रागा?"

बायतास हॅस पडा, फिर महसा ही गभीर हो गया।

"क्या कहूँ? भला किसी भोली-भाली ग्रौरत का दिल इतनी दूर से भेजे गये गीत – ऐसे गीत जिसमे क्षमा याचना की गयी हो, कैसे प्रतिकूल रह सकता है? जब मै घोडे पर घर वापस ग्राया, बाहर ग्राकर उसने मेरा स्वागत किया, मेरा घोडा ले जाकर बाध ग्रायी ग्रौर फिर सारे ग्राऊलो मे मेरे गीत की गूॅज बन्द हो गयी। बस यही हुग्रा।" बायतास ने जुमाबाय को ग्रॉख मारी।

बातचीत होते वक्त नैमनकोक ने दुलकी चाल पकड ली थी ग्रौर थोडा ग्रागे बढ गया था। एकाएक लडके को फिर सफर का ग्रहसास हो ग्राया ग्रोर सब कुछ बिसराकर उसे घर की याद सताने लगी। एड लगाते हुए वह घोडे का सरपट भगा ले चला हालॉकि उसके साथियो ने उसे मना किया

"बेटे ग्रब फिर ग्रपने घोडो की जान निकाल डालोगे!"

"ग्रगर ग्रकेले गये तो निश्चित ही डाकुग्रो के हाथ पड जाग्रोगे!"

लेकिन शहर ग्रौर विमूढकारी मदरसे से छूटकर ग्राबाय इतना गृहातुर हो उठा था कि उनकी बाते शायद ही उसके कान मे पडी। ग्रौर फिर एमबाय घाटी ग्रौर उन डाकुग्रो से जिन्होने उसके साथियो के हृदय मे इतनी दहशत भर दी थी, इतना भयभीत क्यो हुग्रा जाये? ग्राखिर उनमे ग्रौर दूसरे कजाखो मे फर्क ही क्या था? बस यही न कि वे फटे-चिटे कपडे पहनते है, उनके घोडो के जीन जीर्ण-शीर्ण होते है ग्रौर ग्रपने साथ वे सोयिल लिये फिरते है। ग्राबाय उन जैसो को पहले भी देख चुका था। उसने बूढे लोगो की कहानियॉ सुन रखी थी ग्रौर उसके दिल मे खुद डाकुग्रो का हमला ग्रपनी ग्रॉखो से देखने की इच्छा भी थी।

पहरग्रा टीला, गुप्त घाटी ग्रौर यह सारी जगहे उसे ग्रपने ग्राऊल की

तरह परिचित थीं। क़ोनानबाय का आऊल हरेक वसन्त और पतझड़ के मौसम में यहां कई-कई महीनो तक अपने ओताव लगाता था। कन्दराएँ, गहरी घाटियाँ, दर्रे, वे जगहे जहाँ बछेड़े रखे जाते और तम्बू गाड़े जाते, पर्वतीय चरागाह जिन्हें रास्ते से देखा जा सकता था – सब के सब लड़के से अच्छी तरह परिचित और प्रिय थे। यही, इसी जगह से, एसंबाय घाटी से पिछले साल उसे मदरसा भेजा गया था। यह बोख़राव * की छुट्टियों के शुरू होने के बाद और जब भेड़ों का ऊन काटा जा रहा था, तब की बात थी। यह उसे कल की ही बात लग रही थी जब वह इन पहाड़ियों में दूसरे लड़कों के साथ, एक सालवाले अश्व-शावकों पर सवार होकर घुड़-दौड़ करते ठुनकता फिर रहा हो। एसंबाय घाटी में व्यतीत उन अनोखे दिनों के सपने वह शहर मे बहुधा देखा करता था।

अब उसे बताया गया था, यहाँ डाकुओं ने अड्डा जमा लिया है और यह जगह ख़तरनाक व मुसीबत से भरी है लेकिन उसे विश्वास नही आया। वही पहले जैसी शातिपूर्ण पीताभ पहाड़ियाँ और हरे-भरे मैदान है – जहाँ तक दृष्टि जा सकती थी वहाँ तक अब भी पहले जैसी हरी-हरी घास फैली थी। आबाय ने प्रेमपूर्ण आँखों से अपने चारों ओर देखा – अन्तहीन स्तेपियो को, उन पहाड़ियो को जहाँ उसका जन्म हुआ था और उसने अपना बचपन बिताया था। वह इन सब को गले लगा लेना, अपने कलेजे से चिपका लेना चाहता था। ठंडी बयार कितनी तरोताज़ा करनेवाली थी – सांस-सी मसृण – न कभी तेज़ न कभी निस्पन्द। यह विशाल स्तेपियों को तरंगायित कर देती है, हरी-हरी घास मे हिलोर पर हिलोर उठा देती है। नही, शायद यह स्तेपियाँ है ही नही बल्कि एक विशाल समुद्र, एक विलक्षण सागर है...। उन्हें देखते उसे तृप्ति कहाँ! वह इस अति विस्तृति से अभिभूत था और उसे इनका किंचित भय न था! काश, उन्हें वह अपनी बाँहों में भर पाता तो उनके कानों मे कहता, "मैं कितना तरसा हूँ तुम्हारे लिए! दूसरों के लिए तुम भयावह हो सकती हो लेकिन मेरे लिए नही, मेरी प्रियतमा, मेरी अपनी स्तेपियाँ!"

और रजत-हरीतिमा में बिन्दुवत लड़का सरपट उड़ चला।

---

* बोख़राव – पवित्र मेरी की रक्षा के अवसर पर रूसी चर्च में मनाये जानेवाले महोत्सव के लिए कज़ाख़ शब्द है – सं.

"क्या हम उसके पीछे-पीछे कारवाँ मे गाड़ी हाँकनेवालों की तरह रेंगते चलने के लिए है?" बायतास ग़ुस्से से चीख़ पड़ा। "चलो हम आगे बढ़ चलें, जुमाके, वह हमें शर्मिन्दा कर रहा है!" और अपने चितकबरे घोड़े को एड़ लगाकर वह सरपट भाग चला।

स्वत: जुमाबाय को उसके साथ होना पड़ा और थोड़ी ही देर में तीनों स्तेपियों में घुड़दौड़ करते बढ़ चले।

लड़का अपने ही ढंग का था। क़ोरिक़ से रवाना होने के बाद से एक पल के लिए भी विश्राम किये बिना वे पूरा दिन फेन-फेन हो गये मुँहवाले घोड़ों पर तब तक कठिन सफ़र करते रहे जब तक कि शाम की नमाज़ के समय वे कोलक़यनर में क़ोनानबाय के आऊल में पहुँच नही गये। यहीं आबाय की माँ उलजान भी रहती थी।

कोलक़यनर से होकर बहनेवाली सरिता अपने स्वच्छ तथा हमेशा भरपूर रहनेवाले जल के कारण विख्यात थी। और वहाँ वृक्ष भी थे। शायद जंगल तो नही लेकिन हाँ, इतने ज़रूर कि चिंगीज़ पर्वतों में स्थित जयलाव* तक का रास्ता तय करते हुए क़ोनानबाय के तीन-चार आऊल अपने पड़ाव

---

* ख़ानाबदोश कज़ाख़ों के रिवाजों के मुताबिक़ एक आऊल में झोंपड़ा-तुमा तम्बुओं, ओतावों के वे समूह शामिल होते थे जिन में रहनेवाले रिश्तेदार और आर्थिक रूप से जुड़े होते थे। अलग-अलग मौसम के लिए हरेक आऊल के ओताव डालने के अपने स्थायी स्थल होते थे: वसन्त में कोक्तेव, गर्मियों के लिए जयलाव, पतझड़ के लिए कुज़ेव और जाड़े के लिए क़िस्ताव, जिसके दौरान आऊल के सदस्य लकड़ी और मिट्टी के मकानों में रहते थे। अलग-अलग आऊलों के लिए विभिन्न ओताव गाड़ने के स्थलों और उसके आस-पास की ज़मीन पर उनके अधिकार का फ़ैसला क़बीले के बुज़ुर्ग आपस में समझौते द्वारा करते थे, लेकिन इनकी वजह से प्राय: विभिन्न आऊलों और सारे क़बीलों में झगड़े व वैमनस्य पैदा हो जाते।

आऊल का मालिक इसका सबसे अमीर सदस्य, परिवार का मुखिया, बी या बुज़ुर्ग होता था, जिसके नाम पर आऊल का नाम रखा जाता था। उसका विशाल ओताव आऊल के किनारे होता जबकि इसके आस-पास, अर्द्धवृत्त में बने ओतावों को युवा ओताव कहा जाता जिन में उसके विवाहित बेटे रहते। इनसे परे निकटतम स्वजनों के ओताव होते। फिर कभी-कभार चले आनेवालों के लिए अतिथि ओताव और अन्त में आऊल में काम करनेवाले "पड़ोसियों" के ओताव होते थे। उनकी ओर के आऊल में

डाल सकें। क़ोनानबाय के ग्रोतावों के पास उसके निकटतम स्वजनों के ग्रोताव लगे थे। स्तेपियों के सांध्य पवन में ग्रावाज़ों की गूँज थी। कुत्तों के भौंकने की ग्रावाज़ें गड़ेरियों के चीख़ने, भेड़ों के मिमियाने ग्रौर घोड़ों की टापों की ग्रावाज़ों के साथ गड्डमड्ड हो रही थीं। सोते की ग्रोर घोड़ों को हाँक ले जाने के कारण ग्राऊल के ऊपर धूल का एक सुनहला ग्रावरण तिर ग्राया था। निर्बन्ध ग्रश्व-शावक ग्रपनी माताग्रों की खोज में इधर-उधर धमा-चौकड़ी करते हुए हिनहिना उठे। ग्राग से उठनेवाला धुग्राँ ठोस गहरे-भूरे बादल की तरह ग्राऊल के ऊपर तैर रहा था। यही वे चीज़ें थीं जिनके लिए वह इतना तरसता रहा था, जिन चीज़ों ने उसके हृदय को ग्रड़ियल ग्रश्व-शावक की तरह दौड़ मचाने को बाध्य कर दिया था।

तीनों घुड़सवार सोते के किनारे ग्राऊल में पहुँच गये। सामने की ग्रोर जो पाँच ग्रोताव है उनमें क़ोनानबाय की दोनों छोटी बीवियाँ – उलजान ग्रौर ग्रायगिज़ ग्रपने बड़े परिवार के साथ रहती है। क़ोनानबाय की बड़ी बीवी कुन्के दूसरे ग्राऊल में रहती थी।

तथाकथित क़ोतान – भेड़ों के लिए विशाल बाड़ा ग्रौर ग्रश्व-शावकों को बाँधने के लिए बाड़े होते। यहीं पनीर तथा ग्रन्य उत्पाद तैयार करने के भी ग्रोताव होते।

ग्राऊल के मालिक के बेटे ग्रौर स्वजन तब तक उसके साथ-साथ यहाँ से वहाँ भटकते फिरते जब तक उनके भेड़ों की संख्या पूर्व निर्धारित संख्या को पार नही कर जाती ग्रौर उनके लिए पानी पिलाने की जगहों ग्रौर चरागाहों का प्रबन्ध करना कठिन हो जाता (एक समूह में १,००० से ग्रधिक भेड़ रखने का रिवाज था)। ऐसा होने पर परिवार के विभिन्न सदस्य मुख्य ग्राऊल से ग्रपने भेड़ों, ग्रोतावों ग्रौर "पड़ोसियों" के साथ ग्रलग हो जाते ग्रौर एक नया स्वाधीन ग्राऊल बनाकर ख़ुद ख़ानाबदोश जीवन शुरू कर देते। हालांकि वे हमेशा ग्रपने मुख्य ग्राऊल के इर्द-गिर्द ही रहते।

ग्राऊल की सफ़ाई-निराई का काम "पड़ोसियों" द्वारा, ग़रीब संबंधियों ग्रौर मज़दूरों द्वारा किया जाता जिन्हें जिस के रूप में मेहनताना मिलता। वे पशुग्रों व भेड़ों को चरानेवाले, दूध दूहनेवाले, रसाइये, पानी ढोनेवाले ग्रादि होते। "पड़ोसियों" में सब से ग़रीब जाताक़ लोग कभी जाड़े के पड़ावों से दूसरी जगह नहीं जाते, बल्कि ग्रपने ग्राऊलों के स्थायी मकानों की देख-भाल के लिए वही रह जाते। – लेखक।

साध्य चरागाह की ओर जाते तितर-बितर भेडो के झुड के बीच से रास्ता तय करते हुए नवागन्तुको को तत्क्षण ही पहचान लिया गया। उनपर पहली नजर बडे-बडे पेशबन्द लगाये दूध-दूहनेवाली ओरतो की पडी, उन्होने अपनी पोशाक के किनारे कमरबन्दो मे ऊपर उठाकर कस रखे थे।

"वे शहर से वापस आ गये! लोट आये!"

"ओर वह रहा आबाय! नन्हा आबाय!"

"हा, हाँ, वही है तेलकारा *! मुझे उसकी माँ को खबर देकर खुश करना चाहिए!" और नोजवान ओरतो मे से एक अपनी बाल्टियाँ एक ओर फेक तेजी से मुख्य ओताव की ओर चली गयी।

जब से बायतास आबाय को लाने के लिए गया था, उलजान दिन और घण्टे गिनती रही थी और इन्तजार कर-करके थक गयी थी। शहर पहुँचने और लौटने के लिए समय का हिसाब लगाकर, वह यात्रियो के आज ही के दिन वापस लौटने की आशा कर रही थी। ओरतो के जोर-जोर से बोलने की आवाज तुरत ही उस तक पहुँच गयी।

उलजान के गुदार, विवर्ण और चालीस से ज्यादा अवस्था की होने पर भी लगभग झुर्रीविहीन चेहरे पर जब वह अपने भारी भरकम शरीर के बावजूद मनोहारी ढग से चलते हुए, अपनी वृद्धा सास जेरे का तत्पर-तापूर्वक हाथ थामे ओताव से बाहर आयी तो मुस्कान घिर आयी। बूढी जेरे अपने प्रिय पोते के लिए जाडे भर तरसती रही थी। उसे पल-पल याद करते हुए उसने उसकी सलामती के लिए अनगिनत दुआएँ की थी।

मुख्य ओताव और अतिथि ओताव के बीच तीनो सवारो के स्वागत के लिए बडी भीड जमा हो गयी। आसपास के ओतावो से लडकियो और औरतो, वृद्ध पुरुषो और स्त्रियो की उस जगह पर जमघट लग गयी। छोटे-छोटे लडके जितनी तेजी से दौड सकते थे, दौडते आये और पुरुष भी सब ओर से आ पहुँचे।

आबाय आतुरता से भीड का अवलोकन करता खडा था, वह एकदम से ही भूल गया था कि उसने अपने साथियो को बहुत पीछे छोड दिया है।

---

* तेलकारा – ऐसा नाम जिससे पता चलता है कि आबाय का पालन-पोषण उसकी माँ और दादी ने किया था। तेल – जिसे दो माताओ ने दूध पिलाया हो, कारा – सावला। – स

वह घोडे से उतरा और कोई उसके घोडे को ले गया। तभी उसकी नजर अपनी माँ पर पडी और वह उसकी ओर बढा लेकिन उलजान ने इशारे-इशारे, उसे रोक लिया

"आह, मेरे लाडले! क्या तुम्हे अपने पिताजी नही दिखाई पडे? पहले उन्हे अपना सलाम* कहो!"

तेजी से मुडकर आबाय ने अपने पिता कोनानबाय को कई वृद्ध लोगो के साथ कुछ अलग-अलग अतिथि ओताव के पीछे खडा देखा। अपनी भूल के कारण शर्मिन्दा हुआ लडका उन लोगो की ओर चल पडा। बायतास और जुमाबाय भी अपने घोडो की रास पकडे तेजी से कोनानबाय की ओर जा रहे थे। लम्बा-चौडा, सफेद दाढियोवाला कोनानबाय उनके सामने खडा था। उसकी एकमात्र आख उसके पीले, पत्थर सरीखे चेहरे पर उन लोगो के प्रति अनभिज्ञ-सी प्रतीत होती, अनोखे ढग से चमक रही थी। दूसरे घुडसवार, हृष्ट-पुष्ट, सुसज्जित और अच्छी तरह हथियारबन्द लोग उसके यहाँ आ रहे थे। दूर से ही यह प्रकट था कि यह बुजुर्ग लोग है और अपने जिस चौकस ढग से कोनानबाय उनका निरीक्षण कर रहा था, यह स्पष्ट था, उसे उनके आने की पहले से उम्मीद थी।

बायतास और जुमाबाय के पहुँचने से पहले ही आबाय अपने पिता की बगल मे जा पहुँचा था। कोनानबाय ने सिर हिलाकर लडके के सलाम का जवाब दिया लेकिन उसने अपना पहलू नही बदला। आबाय पर सिर्फ एक परख भरी नजर डालते हुए उसने कहा

"तुम सयाने हो गये। क्या तुम्हारी बुद्धि भी सयानी हुई है?"

यह मजाक मे कहा गया था या इसमे सन्देह जाहिर किया गया था? क्या उसके पिता सच मे उसके बारे मे कुछ जानना चाहते थे? अपने बचपन मे ही लडका अपने पिता की भोहो की गतिविधि को किसी चेतावनी के लिए उसी तरह देखने का आदी था जैसे गडेरिया जूत** के वर्ष मे बादलो को ताका करता है। और इसी कारण उसके पिता उसे और बच्चो से ज्यादा श्रेष्ठ

---

* सलाम – अभिवादन और किसी तीसरे आदमी द्वारा दिया गया मुँहजबानी सन्देश भी।

** जूत – एक प्राकृतिक आपदा जब भयानक जाडे के मौसम मे जानवर बर्फ के नीचे चारा के दब जाने के कारण उन्हे नही खा पाते और मर जाते है।

मानते थे। आबाय ने देखा, अभी उसके पिता उसके बारे मे कुछ भी नही सोच रहे है और उनका ध्यान सिर्फ आ रहे लोगो की ओर है। लेकिन उसे यह भी मालूम था कि अगर सवाल का जवाब नही दिया गया तो यह उनसे नही सहा जायेगा। इस लिए उसने शान्तिपूर्वक व सम्मानपूर्वक जवाब दिया

"खुदा की मेहरबानी है, अब्बा।" और फिर आगे कहा, "स्कूल की पढाई तो खत्म नही हो पायी है लेकिन आपने मुझे बुला लिया। हजरत * ने इजाजत दे दी और मै घर आ गया।"

उसके पिता की ठीक बगल मे मायबासार और उसके नौकर खडे थे। कोनानबाय का छोटा भाई मायबासार कोनानबाय के पिता की चार छोटी बीवियो मे से एक का बेटा था। वर्ष के शुरू मे जब कोनानबाय को आगा सुल्तान** चुना गया था, उसने अपने भाई को तोबिक्ति वोलोस्त का मुखिया नियुक्त किया था।

"अब काफी सयाना हो गया है" आबाय के जवाब से खुश होकर मायबासार ने हिम्मत करके कहा।

लेकिन उसे बीच मे ही कोनानबाय ने रोक दिया और सक्षिप्त आदेश दिया, "बेटे, जाओ, अपनी माताओ का अभिवादन करो!"

आबाय को इसी की प्रतीक्षा थी और वह औरतो की ओर मुड गया जो उसकी ओर ईर्ष्यापूर्वक देखती हुई आपस मे धीमे-धीमे बाते कर रही थी। आबाय के चेहरे पर फिर से खुशी और बाल-सुलभ अभिव्यक्ति छा गयी। अपनी पहले जैसी बेताबी के साथ वह माँ की ओर दौड पडा लेकिन बीच मे ही किसी ने उसे पकड लिया और फिर वृद्ध स्त्री-पुरुषो के चुम्बनो की वर्षा उसपर होने लगी। तो अभी भी लोग उसे बच्चा ही समझते है? उसके कपोल सुर्ख हो उठे लेकिन वह तय नही कर पाया कि उसे

---

* हजरत – पवित्र नाम, मौलवियो के लिए आदरणीय नाम।

** आगा सुल्तान (वरिष्ठ सुल्तान) – प्रादेशिक विभाग का अध्यक्ष। उसका चुनाव प्रदेश की एक आम सभा मे कजाख कबीलो के बुजुर्गो मे से किया जाता था और उसकी उम्मीदवारी पश्चिमी साइबेरिया के गवर्नर जनरल द्वारा स्वीकृत की जाती थी। उप सुल्तान और कोई रूसी कर्मचारी या अफसर प्रदेश मे कजाखो के कार्यकलाप को नियत्रित करने के काम मे उसकी सहायता करता था। कोनानबाय करकरालीस्क प्रदेश का १८५७ से १८५८ तक आगा सुल्तान था।

गुस्सा करना चाहिए या खुश होना चाहिए। वृद्ध औरतो की आँखो मे आँसू थे।

किसी तरह आखिर उनसे छूटकर आबाय तेजी से अपनी माँ की ओर बढा जो कोनानबाय की तीसरी बीवी खूबसूरत आयगिज की बगल मे खडी थी।

"अरे, लोगो ने तो हमारे लडके के चेहरे को अपने चुम्बनो से तर कर दिया है, हम लोगो के लिए तो कोई सूखी जगह बची ही नही!" आयगिज ने कहा और उद्धत मुस्कान के साथ उसकी आँखे चूम ली।

उसकी अपनी माँ ने उसका चुम्बन नही लिया – उसने उसे बस अपने सीने से चिपका लिया और उसके केशो की उत्तप्त सुरभि लेने लगी – पिता के रूखेपन और बेपरवाही ने उसपर अपनी छाप बहुत पहले छोड़ दी थी। लडका यह जानता था, इस लिए उसे ज्यादा की उम्मीद न थी। लेकिन वह उसके मूक आलिगन मे ऐसी गर्मजोशी और प्रेम की अनुभूति कर सकता था कि उसका हृदय अजीब ढग से आकुचित हो उठा था।

उलजान ने ज्यादा देर तक उसे सीने से चिपकाये नही रखा।

"तुम्हे अपनी दादीअम्मा का अभिवादन करना चाहिए," उसने कहा और उसे मुख्य ओताव के दरवाजे की ओर उन्मुख कर दिया।

बूढी जेरे अपनी लाठी पर झुकी भुनभुना रही थी।

"अरे, बदमाश। वह मेरे पास पहले क्यो नही आया, बाप के पास दौड़ गया था!" लेकिन जैसे ही वह उसकी बाँहो मे आया, गालियो की जगह कोमलतम शब्दो ने ले ली।

"अरे, मेरी आँखो का तारा, मेरा नन्हा-मुन्ना, मेरा कलेजे का टुकडा!" उसने बार-बार कहा और उसकी आँखो से आँसुओ की बडी-बडी बूदे टपक पडी।

आबाय ओताव मे वृद्धा की बाँहो मे ही आया। वह वहाँ काफी देर, अन्धेरा होने तक बैठा रहा। उसकी माँ ने उसे किमिज, यख्ना* और चाय लाकर दिया लेकिन उसे भूख न थी – हालाँकि सुबह से उसने कुछ भी नही खाया था।

औरतो और लडकियो ने उस पर सवालो की झडी लगा रखी थी।

"क्या तुमने स्कूल की पढाई पूरी कर ली?"

---

* यख़्ना – शीतल माँस।

"क्या अब तुम पूरे मुल्ला बन गये हो?"

"तुम्हे सबसे ज्यादा याद किसकी आती थी?"

आबाय जवाब मे हाँ-हूँ कहता जाता लेकिन आखिरी सवाल से उसके कान खडे हो गये।

"ओस्पान कहाँ है? वह कहा चला गया है?" उसने कुछ इतने आग्रह-पूर्ण ढग से पूछा कि सब तुरत समझ गये, उसे सबसे ज्यादा याद अपने छोटे भाई – शैतान की मूरत ओस्पान की आती थी।

"कौन जाने? बदमाश छोरा कही इधर-उधर दौडता फिर रहा होगा। हमे उससे आज इतना गुस्सा आया कि दादीअम्मा और मैने उसे निकाल बाहर कर दिया।" उलजान ने जेरे की ओर सिर से इशारा करते हुए कहा जिसने यह महसूस करके कि उसके बारे मे कुछ कहा जा रहा है, पूछा

"अरे, क्या बात है? क्या कह रही हो तुम? मै एक भी शब्द नही सुन सकी।"

आबाय ने उसके कान मे चीखकर समझाया कि क्या कहा गया था।

"दादीअम्मा, पिछले साल तो आप ऐसी न थी। आपके कान को क्या हुआ?"

उसने जेरे के गले मे बाँहे डाल दी और उसके घुटने पर करवट ले ली। बुढिया ने अपने पोते की बाते सुन ली थी।

"अब तेरी दादी-अम्मा मे रह ही क्या गया है, मेरे लाडले? बस हड्डियो की बोरी," उसने काँपती आवाज मे कहा।

आबाय के दिल मे उस बूढी औरत के लिए पीडा हुई, बेचारी की किस्मत मे आस-पास इतने लोगो के रहने के बावजूद अपनी ही अकेली दुनिया मे जीना लिखा था।

"लेकिन, शायद तुम्हारे कान तो ठीक हो सकते थे, हा, अगर कोई सचमुच कोशिश करता?"

औरतो के साथ बूढी जेरे हँस पडी, लेकिन उसका दिल न दुखे, इसलिए मुस्कुराते हुए कहा

"अगर कोई मुल्ला मेरे कानो मे दुआएँ पढे तो शायद मै ज्यादा बेहतर सुनने लगूँ। कहते है, इससे फायदा होता है।"

"यह तो अच्छी बात है," आयगिज ने मजाक किया, "तुम्हारा पोता तो मुल्ला बन चुका है, अगर इससे फायदा होता है तो उसे फूकने दो!"

लेकिन दूसरी औरतें गंभीर थीं जैसे उन्हें आबाय की विद्या की गुण-कारिता पर सचमुच विश्वास हो।

"उसे उसके कानों में दुआएँ पढ़ने दो! कम से कम इससे उसके दिल को राहत तो मिलेगी।"

आबाय जानता था, इलाज का यह तरीका और इसके साथ ही पवित्र पुस्तकों के अक्षरों को धोकर उसके रंगों से घाववाली जगह को रंगने का रिवाज तथा दुआएँ और झाड़-फूक व मुल्लों के दूसरे सारे तरीके और कुछ नहीं, थोथे अन्धविश्वास थे। थोड़ी देर वह अपनी ही दुविधा में बैठा रहा फिर हठात् उसने बुढ़िया का सिर अपने हाथों में थाम लिया और अपने होंठ उसके कान से सटाकर गडडमड्ड आवाज में बुदबुदाया

रूप मनोहर, आँखें उसकी रत्न-ज्योति-सी
लज्जित हो जाय तीखी भोर की लाली!
मसृण ग्रीवा उसका हिम से और धवलतर,
अल्ला ने अपने ही हाथों भौंह उसकी खींची होगी!

श्रोताव में कोई भी उसके शब्द नहीं समझ पायी लेकिन औरतों को उसके दुआएँ पढ़ने का यकीन हो गया। वह अपने नीचे घुटने मोड़े बैठा था, चेहरा एकदम तना था और किसी मँजे मुल्ला की तरह लगातार दुआएँ पढ़ रहा था

और बावजूद इसके, उन थोड़े क्षणों में हम जब भी मिले
निष्प्रभ हुई आँखें मेरी और खून धमनियों में दौड़ चला,
जिह्वा पर आये शब्द सारे हो गये निष्प्राण
उस कान्तिमय लावण्य की चारुता के सामने।

उसने अपनी आँखें आधी बन्द कर ली, होंठों को सिकोड़ा और अपनी दादी के कान में फूंक मारी

"आ-फ्फू!"

यह उसकी अपनी कविताएँ थीं। उसने इनकी रचना वसन्त में तब की थी जब उसका दिमाग नवाई और फुजूली की गजलों से भर उठा था।

बहरहाल, औरतों ने तो यही विश्वास कर लिया कि आबाय दुआ पढ़ रहा है। भ्रम को और देर तक बनाये रखने के लिए आबाय ने बुदबुदाकर बोलना शुरू किया और तब कहीं अन्त में जाकर अपनी आवाज़ ऊँची करके उसने मज़ाक़ ज़ाहिर कर दिया। क़ुरान की आयतों को गुनगुनाते समय जिस तरह कोई मुल्ला आह्लादपूर्वक कभी इधर, कभी उधर झूलता जाता है, उसी तरह उसने अनुष्ठानपूर्ण सुरीली आवाज़ में पदों को समाप्त किया :

लेकिन रुक जाओ पल भर, इतनी जल्दी भी क्यों
जैसे हवा से बातें करता कोई पक्षी उड़ा जा रहा हो दक्षिण की ओर?
और दादी-अम्मा को कुछ भी सुनाई न पड़ा, मैंने जो कुछ कहा –
लेकिन फिर भी प्रतीक्षा करती है, मेरे पढ़ने की दुआ!

"सुफ़!" उसने उसके कान में फिर फूँक मारी, लेकिन उसका मज़ाक ज़ाहिर हो गया था और सब औरतें हँस पड़ी। बुढ़िया भी समझ गयी और चुपचाप हँसी। ख़ुश होकर उसने अपने पोते के ललाट से अपने गाल सटा दिये और उसकी पीठ थपथपा दी।

आबाय अपनी गंभीरता बनाये रहा हालाँकि उसकी आँखों में परिहास झलक रहा था। बुढ़िया को बाँहों में भींचते हुए उसने पूछा :

"क्या अब आप कुछ बेहतर सुन रही है?"

"अरे, हाँ, बहुत ज्यादा। तेरी हँसी-ख़ुशी हमेशा बनी रहे, मेरे मुन्ने!"

लड़के के परिहास से हँसी तो हुई ही, इसके साथ-साथ उसके प्रति प्रशंसा के भाव भी उत्पन्न हुए।

उसकी माँ उलजान ने दूसरों की तरह ठहाके नहीं लगाये; वह गंभीरता से उसके बारे में सोचती रही। साल भर में कितना सयाना, कितना पौरुषमय हो गया है, आँखों में कैसी बुद्धिमत्ता झलकती है! वह अपने भाइयों जैसा बिलकुल नहीं। आख़िरकार उसके होंठों पर फीकी मुस्कान खेल उठी।

"मैं सोचती थी, शहर में तुझे पूरा मुल्ला ही बना दिया गया है, मेरे बेटे," उसने कहा, "लेकिन लगता है तू मेरे ख़ानदान के नक़्शेक़दम पर चल पड़ा है!"

उसका इशारा सब औरते समझ गयी और फिर हँसी फूट पडी।

"बेशक, क्यो नही, उसकी रगो मे शशार* का खून दौड रहा है!"

"अरे, कोई एकबारगी कह सकता है, वह तोन्तेकेन का पोता है!"

किसी ने मृत्यु-शय्या पर पडे तोन्तेकेन के शब्दो की याद दिलायी "हाजियो और मुल्लो की उम्मीदो को तोडना शर्म की बात है। मुझे सच मे मौत आ जाये, कम से कम मेरी अन्त्येष्टि से वे कुछ कमा तो लेगे।"

"आपा**," आबाय ने गभीरता से कहा, "नीम हकीम होने और दूसरो की दया पर जीने से क्या तोन्तेकेन की तरह मर जाना बेहतर नही?"

"तू ऐसा सोचता है, अच्छी बात है। तू कितना सयाना हो गया है, मेरे लाडले," माँ ने गहरी साँस ली।

तभी ओताव के दरवाजे पर मायबासार के सेवक दढियल कमिसबाय का चेहरा दिखाई पडा।

"तुम्हे पिताजी बुलाते है, बेटे!"

तत्क्षण शान्ति छा गयी और जिस मनोभाव ने आबाय को पूरी शाम अभिभूत कर रखा था, समाप्त हो गया। बिना कुछ बोले आबाय ओताव से निकल गया।

अतिथि ओताव उसकी माँ के ओताव जैसा बिलकुल न था। यहाँ तक कि बाहर से भी यह निष्ठुर और वीभत्स लगता। अन्दर घुसते ही आबाय ने सबको ऊँची आवाज़ मे अपना सलाम कहा। बडो ने जवाब दिया। थोडे-से लोग थे कोनानबाय, मायबासार, जुमाबाय तथा तोबिक्ति कबीले के कई बुजुर्ग – बायसाल, बोजेय, काराताय और सुयून्दिक। नौजवानो मे सिर्फ बायसाल का भतीजा जिरेशे था जो हमेशा उसके साथ रहता था। वह उम्र मे बडा होने के बावजूद आबाय का दोस्त था।

एकदम बचपन से ही आबाय को मालूम था, जब उसके पिता ऐसे लोगो से मत्रणा करते – खासकर तीन या चार सर्वाधिक प्रभावशाली बुर्जुर्गो से, तब जरूर ही कोई असाधारण मामलो पर चर्चा होनेवाली होती। उसने कभी ऐसी मत्रणा मे हिस्सा नही लिया था, पहली बार उसके पिता ने उसे बुलाया था और जरूर ही उसके पीछे कोई कारण होगा।

---

* शशार – एक कजाख कबीले का नाम।

** आपा – माँ।

आबाय के बैठते ही बूढे लोगो ने उससे शहर के बारे मे, पढाई और सेहत के बारे मे बहुत-से सवाल पूछने शुरू कर दिये। नाकनक्श से ही चालाक मालूम पडनेवाले बातूनी बूढे काराताय ने उसके जवाबो मे असामान्य रुचि दिखलायी। उसने कोनानबाय के दूसरे लडके की चर्चा की।

"आपका तकेजान बहादुर लडका है," उसने कहा, "बडा ही चुस्त और चतुर।"

"ठीक कहते है," बोजेय ने कहा, "वह सब कुछ कर सकता है।"

"हाँ, एकदम, वह लडका सूई की तरह तेज है," बायसाल ने अपनी बात जल्दी से जोड दी।

स्पष्ट रूप से यह सारी प्रशसाएँ कोनानबाय को लक्ष्य करके की गयी थी। लेकिन वह चापलूसी से अप्रभावित चुपचाप बैठा था। सहसा जैसे वह उन लोगो को चिढाना चाहता हो, आबाय की ओर पलट पडा और हलकी-सी मुस्कान के साथ बोला

"अगर कुछ उम्मीद की जा सकती है तो वहाँ बैठे उस कलूटे छोकरे से!"

काराताय दूसरो से पहले ही कोनानबाय का मतलब समझ गया कि उसने लडके को सिर्फ तारीफ करने के लिए नही बुलाया है। मुस्कुराकर बोजेय और बायसाल की ओर पलटते हुए उसने कहा

"और जानते हो आबाय ने सुन्नत के समय क्या कहा था?"

आबाय को अपने बचपन के फूहडपन के बारे मे काराताय की चर्चा शुरू करने से तनिक भी खुशी न थी और घबराहट के मारे उसका चेहरा सुर्ख हो उठा। किसी बुजुर्ग की बात मे दखल की इजाजत न थी, सो उसने अपना चेहरा ऐसा बना लेने की कोशिश की जैसे उसकी इन बातो से कोई मतलब ही न हो।

"जब उसका सुन्नत होने लगा,' काराताय हँसते हुए सुनाने लगा, "उसने रोना शुरू कर दिया। 'हे खुदा, मै लडकी क्यो न हुआ?' उसने कहा। लेकिन उसकी माँ ने उसे बताया, मेरे बच्चे, तू नही जानता, क्या कह रहा है, अगर तू लडकी होता तब तुझे बच्चे जनने पडते जो सुन्नत कराने से कही ज्यादा बदतर है!' 'अच्छा!' उसने कहा, 'तो लडकियो की भी अपनी मुसीबते है!' और उसने तुरत रोना बन्द कर दिया।"

बूढ़े हँस पड़े।

कोनानबाय निश्चल बैठा रहा जैसे उसने कुछ सुना ही न हो। उसके पिता और बायसाल अन्यमनस्क थे, ज़ाहिर था, ऐसी बातों को वे कोई तरह नही देंगे। आबाय की जान बची। उन्होंने उसे सयानों की तरह सिर्फ़ इस लिए तो बुलाया नहीं होगा कि बच्चों की तरह उसका मज़ाक बनाया जाये?

ठीक तभी आबाय का छोटा भाई ओस्पान दौड़ता हुआ ओताव में आया।

आज कितनी बार उसके बारे में उसने लोगों से पूछा था! बदमाश को देखने के लिए कितना बेचैन था वह!

ओस्पान सलाम करना तो नही भूला लेकिन अपने पिता और दूसरे लोगों की ओर ध्यान दिये बिना वह सीधे आबाय की गर्दन से झूल गया। वह आबाय से पाँच साल छोटा था और उसे दूसरे भाइयों के मुक़ाबले कही ज़्यादा प्यार करता था।

बड़े लोगों के सामने अपना सम्मान बनाये रखने की बात ध्यान में रखते हुए आबाय ने भाई को कुछ शिष्टाचारपूर्वक गले लगा लिया और उसके दोनों गालों को चूम लिया जैसा कि एक बड़े भाई को करना चाहिए। लड़कों की मुलाक़ात अभी-अभी हुई है, यह देखते हुए बूढ़ों ने उनकी इस स्वैरिता को प्रसन्नता भरी दृष्टि से देखा। लेकिन ओस्पान ने बेवकूफ़ी शुरू कर दी और शीघ्र ही अपने प्रति उत्पन्न अनुकूल प्रभाव गँवा बैठा। जब आबाय ने उससे दिन भर का ठौर-ठिकाना पूछा तो पाजी ने बस उसके गले से चिमटते हुए, कान में कुछ गन्दे-गन्दे शब्द कह दिये जो उसने अपने बड़े भाई तकेजान से सुने थे। तो जिस भाई की उसे इतनी याद आती रही थी, उससे मुलाक़ात ऐसी रही। ख़ौफ़ से झटककर वह ओस्पान से पीछे खिसक गया।

"क्या कहा तुमने?" बोल उठा आबाय, लेकिन वह फिर उसकी गर्दन से लिपट गया।

"पिताजी से मत कहना! कहने की हिमाक़त न करना!" उसने ज़ोर से बुदबुदाकर कहा और अकस्मात आबाय को ज़मीन पर धक्का दे दिया।

बुज़ुर्गों की मौज़ूदगी से ख़बरदार आबाय ने बड़ी कोशिश से ख़ुद को संभाला और फिर से अपना सन्तुलन क़ायम किया। लेकिन उस गठीले

छोटे ओस्पान ने उसके दोनों कंधों को पकड़कर उसे चित कर दिया और अपने मुँह से कुछ निकालकर – एकदम चिपचिपा-सा – उसकी गर्दन के अन्दर ठूँस दिया। आबाय ने अपने कधो को बल देकर उससे छुड़ा लेने की कोशिश की। अभी पल भर पहले आबाय बुजुर्गों के बीच किस शान से बैठा था लेकिन उसके इस पाजी भाई ने उसकी ऐसी-तैसी करके रख दी थी! अपने पिता को एकदम-से भूलते हुए, ओस्पान ठहाका लगा पड़ा।

"मेढक है। मैने उसकी गर्दन में मेढ़क डाल दिया है!"

इस बात से आबाय को मजबूर होकर और ज़ोर लगाना पड़ा।

क़ोनानबाय ने अपने पीठ पीछे ज़ोर लगाते लड़को की ओर पहले तो कोई ध्यान नही दिया। उसने सोचा जल्दी ही शान्त हो जायेगे। लेकिन अब तेज़ी से पीछे मुड़कर उसने देखा किस तरह तगड़ा ओस्पान आबाय को ज़मीन पर चितकर उसके सीने पर बैठा था।

क्रुद्ध होकर क़ोनानबाय ने एक हाथ से ओस्पान को पकड़, दूसरे हाथ से उसके गाल पर दो-तीन ज़ोरदार तमाचे जड़ दिये। लड़के का चेहरा तमतमा उठा लेकिन अपनी बड़ी-बड़ी आँखें चमकाता, वह चुपचाप खड़ा रहा। वह भयभीत न था और उसने अपने पिता की ओर ऐसी शान्त निगाहों से देखा जैसे कुछ हुआ ही न था। छोकरे की इस सहनशक्ति से चकित सुयून्दिक़ ने बायसाल की ओर झुककर कहा:

"नन्हा भेड़िया!"

"असली कुज *," दुसरे ने बुदबुदाकर कहा।

क़ोनानबाय ने अपने नौकर को आदेश दिया:

"निकाल बाहर करो बदमाश को!" उसने ओस्पान को बाहर की ओर धकेल दिया।

लड़का लड़खड़ा गया और अगर नौकर ने ऐन वक़्त पर उसे थाम न लिया होता तो वह गिर ही पड़ता। कुछ पलों के लिए ओताव मे निस्तब्धता छा गयी। कोनानबाय तब तक दुबारा न बोला जब तक लोगों ने उकताकर पहलू बदलना शुरू कर दिया और किसी ने गला खँखारा।

---

* कुज – प्रख्यात सूरमा।

बीच में रखी छोटी-सी गोल मेज़ पर मिट्टी का दीपक ओताव के नीचे के छेदों से आ रहे झोकों में टिमटिमाता लाल-लाल-सी रोशनी बिखेर रहा था। प्रकाश के सामने किसी विकराल पार्श्वचित्र की तरह क़ोनानबाय अपने बेटे की बग़ल में बैठा था।

क़ोनानबाय के बर्ताव और उसकी विवश कर देनेवाली मुखाकृति मे कुछ उत्पीड़नकारी अस्पष्टता-सी थी। उसके तीक्ष्ण और प्रभावशाली शब्द सुननेवालो के कानों में प्रचण्ड आवेश के साथ पड़ते। वह अपनी बात मुहावरो और कहावतों मे कहता।

लड़का अपने पिता की बात शायद ही समझ पाता। क्या पता उसके पीछे क्या मंशा रही हो? वह बस थोड़ी-सी असम्बद्ध भावाभिव्यक्तियों को ही समझ पाता। आक़साकाल* होकर क़ोनानबाय अपनी बात घुमा-फिराकर कहता जैसे कोई बाज़ चक्कर लगाता हुआ अपने शिकार पर झपटने को तत्पर हो। आबाय को उसका सिर-पूँछ भी नही समझ में आता और वह एकदम उलझ कर रह जाता। अगर उसका वश चलता, वह दौड़कर अपनी माताओं के ओताव में भाग जाता, लेकिन इस बारे में तो सोचा भी नही जा सकता। उसके पिता ने उसे बुलाया था और छोड़कर चला जाना असंभव था।

वह बैठा सुनता रहता है। कुछ शब्द नये और कुल मिलाकर समझ से बाहर होते जिन्हें वह दिमाग़ मे बैठाने की कोशिश करता। उसके पिता किसी और से क्रुद्ध होते, किसी और को धमका देते। अपने मन की आंखों में आबाय को ऐसा प्रतीत होने लगता कि पूरी तरह से हथियारबन्द लोगों का झुंड स्तेपियों को रौदता दुश्मन का मुकाबला करने चला आ रहा है। जब वह ज़ोरदार भाषण उसके लिए अर्थहीन होने लगता, अपने ख़्यालों में कहीं दूर भटकता, वह क़ोनानबाय के चेहरे की ओर ताकने लगता।

---

* आक़साक़ाल – बूढा आदमी, आऊल का बज़ुर्ग। (शाब्दिक अर्थ: सफ़ेद दाढ़ीवाला) – सं

बचपन से ही आबाय को उत्सुकतापूर्वक, बोंहचक कहानी कहनेवालो, गीतकारो और उन सब के चेहरे ताकने की आदत थी जिनकी बाते उसका ध्यान खीच लेती। उसे हमेशा से पुरुषो के चेहरो मे एक खास आकर्षण मिलता था। लेकिन सबसे ज्यादा दिलचस्प बूढे लोगो के झुर्रीदार चेहरे होते। उनके गालो और ललाट की सिकुडने, क्षीण पड गयी आँखे और उनकी उडती दाढियो के हिल्लोल इधर-उधर बिखरी झाडियो व यत्र-तत्र लगाये बिरवो अथवा काली मिट्टी के ऊपर लहराती कोमल घास की मन्त्रमुग्धकारी तस्वीर खीच देते । कभी-कभी उनमे वह जगली पशुओ या सीधे-सादे घरेलू जानवरो जैसी जिज्ञासा भरी प्रेम-भावना पाता। आदमियो के चेहरे-मोहरे की हरकतो और बाहरी खाको मे उसके सामने पूरी दुनिया जी उठती।

उसके पिता का सिर लम्बा और आकार मे हस के अण्डे जैसा था। शकुवत दाढी के कारण उसका चेहरा कुछ ज्यादा ही लम्बा प्रतीत होता। आबाय के लिए यह एक ऐसी सपाट भूमि की तरह था जिस पर भौहो के रूप मे गुल्मयुक्त दो पहाडियाँ उभर आयी हो। कोनानबाय की अकेली आँख बायी पहाडी पर सावधानी से पहरा देती – निष्ठुर और अनथक पहरेदार की तरह। वह आँख ऐसा प्रतीत होती जैसे कभी पलक की ओट नही लेती हो, बडी और थोडी-सी उभरी – दृष्टि तीखी और व्यग्र जैसे अपने आस-पास की सब चीजो को समेट लेना चाहती हो। पलक तो शायद ही कभी झपकती हो।

कोनानबाय के कन्धो पर ऊँट-शावक के चमडे का रोयेदार ओवरकोट पडा था। वह दृढ विश्वास के साथ अपनी बातो पर वजन डालता बोल रहा था और उसकी अकेली आँख सामने बैठे सुयून्दिक पर से एक पल के लिए भी नही हटती थी।

सुयून्दिक उसकी आँख मे देखने की हिम्मत किये बिना चुपके से अपनी गुपचुप निगाह उस पर डाल लेता। उसकी दाढी हल्की चाँदी-सी सफेद थी और उसकी मुखाकृति आबाय को बहुत फीकी व सामान्य-सी लगती। उनसे उसमे कोई भेद नही छुपा मालूम होता था।

पहली नजर मे बोजेय भी एकदम मामूली आदमी प्रतीत होता हालाँकि साँवला चेहरा, काली दाढी और उभरी हुई नाक के कारण वह वहाँ मौजूद सभी लोगो मे निश्चित रूप से कही अधिक खूबसूरत था। उसके चेहरे

पर झुर्रियाँ भी थोडी-सी पडी थी। कोनानबाय के लम्बे भाषण के दोरान बोजेय ने एक बार भी उधर ताकने या अपनी आँखे ऊपर उठाने की कोशिश नही की। यह कहना कठिन था कि वह ऊँघ रहा था या अपनी ही यादो की दुनिया मे खोया था। उसके भारी-भारी पपोटे उसके मन के भावो पर परदा डाल देते।

कोनानबाय के बोलते समय उसकी आँख मे सीधे देखनेवाला सिर्फ एक आदमी था बायसाल जो एक खास स्थान पर बैठा था। बायसाल एक लम्बा-तडगा, लाल-लाल गालोवाला प्रभावशाली व्यक्तित्व का आदमी था। उसकी बडी-बडी हलकी नीली आँखे उसकी मितभाषिता, अपनी आत्मा की गहराइयो मे कोई रहस्य बनाये रखने की उसकी सक्षमता की उदासीन परिचायक थी।

बाकी लोग विक्षुब्ध-से चुपचाप बैठे थे। बात की पकड, कोनानबाय क्या चाहता है, इसकी समझ, सिर्फ काराताय और मायबासार की आँखो मे झलक रही थी।

आकसाकालो का वृत्त एक ओर पिता की बगल मे बैठे आबाय और दूसरी ओर जिगित* जिरेश पर खत्म होता था।

कोतिबक कबीले का बायसाल का एक सम्बन्धी यह नौजवान मात्र बायसाल की सेवा मे रहनेवाला जिगित ही न था बल्कि एक बडा ही होनहार नौजवान था – नम्र और बडा ही चौकन्ना। इसके अलावा वह विलक्षण किस्सागो और लतीफाबाज भी था। आबाय को उसके कुछ लतीफे अब भी याद थे और वही एक ऐसा आदमी था जिसके साथ वह दिल खोलकर बाते करने को इच्छुक था।

लेकिन प्रकट रूप से या पता नही क्या बात थी, जिरेशे कोनानबाय की बाते पूर्ण एकाग्रता से सुन रहा था और ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसे आबाय या किसी और की कोई सुधि न हो।

आखिर जब जिरेशे ने अपनी भौहे चढायी तो आबाय ने महसूस किया, उसके पिता का भाषण अब खत्म होने को था।

"उस बदमाश कोदर की बदनामी के कारण मै सभा के सामने शर्मिन्दा हूँ, यह हमारे कबीले, हम सब के लिए कलक की बात है!" उसने अपनी

---

* जिगित – निपुण घुड़सवार।

Казакстан Республикасынын Ұлттық кітапханасы Инв. №
92938
Республики Казахстан Инв. №

भेदती आँख सुयून्दिक से बायसाल की ओर उठायी, फिर बोजेय पर टिका दी। न तो बोजेय और न ही बायसाल अस्थिर हुआ लेकिन दूसरे लोगो मे उत्तेजना भडक आयी। कोनानबाय के शब्दो का बोझ वहाँ मौजूद सब लोगो के कधो पर पडा था।

"प्रतिष्ठा मौत से कही ज्यादा बडा स्थान रखती है! अभूतपूर्व अपराध के लिए अभूतपूर्व सजा होनी चाहिए," कोनानबाय गरज उठा।

उसकी पत्थर-सी आवाज मे न बदले जा सकनेवाले फैसले की गूँज थी। सब जानते थे, कोनानबाय एक बार अगर कोई फैसला कर ले तो उसे किसी भी तरह डिगाया नही जा सकता था।

लोगो के सामने दो ही चारा थे तू-तू मै-मै किया जाये, विरोध जताया जाये और खुली झडप का खतरा मोल लिया जाये या जैसा कि बायसाल और बोजेय बहुधा किया करते थे, असहमति जताये बिना चुप्पी साध ली जाये और कोनानबाय को अकेले अपनी मर्जी चलाने दे वही सारी जवाब देही सभाले और उसके फल भुगते!

जब उनके अपने फायदेनुकसान का सवाल नही होता, वे आम तौर से बहुत कम बोलते – अपनी बाते साफ-साफ नही, गोलमोल कहते। लेकिन इस बार कोनानबाय ने उनके कन्नी काट जाने के लिए कुछ भी तो नही छोडा था और हरेक अपने को जाल मे फँसा महसूस कर रहा था। चुप्पी असह्य थी।

आबाय कोदर को तो नही जानता था लेकिन "कोजि-कोरपेश और बयान सुलू"* गीत के पात्र के माध्यम से कोदर की तस्वीर उसके दिमाग मे उभर आयी थी। उसके पिता ने उसके लिए बदमाश शब्द का इस्तेमाल किया था, यह भी उस गीतवाले कोदर के उपयुक्त था जिसे पिछले साल उसकी माताओ के ओताव आकिन बायकोक्शे ने गाकर सुनाया था। कुछ समय के लिए आबाय को ऐसा लगा जैसे किसी आदमी के लिए जान बूझकर कोदर का नाम इस्तेमाल किया रहा है। शायद वह उस गीत के नायक जैसा ही हो।

बयान सुलू – इस काव्य गाथा मे सुन्दरी बयान सुलू को वश मे करने के लिए कोदर द्वारा किये निर्मम और भयावह अपराधो के वर्णन है।

** आकिन – कवि और गायक।

चुप्पी तोडनेवाला पहला आदमी काराताय हुआ। वह विनम्रता से और सोचसमझकर बोलने लगा।

"सच मे यह तो बहुत बुरी बात है! और खुदा न करे, ऐसी बात हमारे बेटे-बेटियो के साथ हो! अगर कोदर ने ऐसा आपराध किया हे, उसका शुमार काफिरो मे होना चाहिए।"

फिर सावधानी से टालमटोल करते हुए, इधर का तीर उधर का तुक्का मिलाते हुए, उसने अपना सन्देह जाहिर किया कुछ भी हो, क्या पता कोदर के बारे मे लोग जो कुछ कह रहे है, शायद वह सच न हो?

वहाँ मौजूद लोगो मे सिर्फ सुयून्दिक ही कोदर का जातियाई था। इसी कारण अपने पूरे भाषण के दौरान कोनानबाय ने उसी पर अपनी आँख टिकाये रखी थी। अगर वह सुयून्दिक को कोदर के घृणित अपराध के बारे मे विश्वास दिला पाता तो उस आदमी की निन्दा खुद उसके स्वजन द्वारा की जाती और इसकी सारी जिम्मेवारी पूरी तरह सुयून्दिक और उसके कबीले पर पडती।

लेकिन सुयून्दिक किसी भी तरह कोदर के अपराध पर विश्वास कर लेने को तैयार न था। काराताय के युक्तिचातुर्य से उसे राह दिख गयी थी और उसने उसके शब्दो को तेजी से थाम लिया " क्या पता, शायद यह सच न हो?"

"अगर उसका अपराध साबित हो जाये," उसने कहा, "तो उसे तुरत मोत के घाट उतार देना चाहिए! उसका कलेजा काढ लेना चाहिए! लेकिन इसकी सचाई की सोगन्ध कौन ले सकता है?"

कोनानबाय कठोर हो उठा। आगे की ओर काफी झुकते हुए उसने कहा

"ओ, सुयून्दिक ठीक ही है, पिशाच कमजोरो की राह ताकता है! कमजोर इच्छा शक्तिवाला, किंकर्तव्यविमूढ नेता खुद ही गुनहगार होगा। अच्छा, मान लो कि हमने अपनी रूहे कोदर के लिए परवान चढायी, उसकी नेकनियती और बेकुसूरी की कसमे खायी। मान लो कि हमने उसे बेकुसूर ठहराया। लेकिन उस दुनिया मे हमे उसके गुनाह अपने पर लेना पडेगा। न बाबा न, मेरी रूह गुनाह कबूल करने को फालतू नही!" और फिर हठात् ही हक्का-बक्का हुए सुयन्दिक पर चीख पडा, "और

क्या तुम क़ोदर की बेगुनाही की क़सम ले सकते हो? क्या तुम उसके लिए हलफ़ उठा सकते हो? क्या तुम अपनी रूह की क़सम खा सकते हो?"

इस चुनौती ने सुयून्दिक का सारा कसबल निकाल लिया।

"मेरी भी रूह फालतू नहीं! मैंने तो बस यही कहा कि पक्के तौर पर पता लगा लेना ज़रूरी है। और मै यहाँ अपनी रूह बेचने तो आया नहीं," उसने खिन्न होते हुए अपनी बात पूरी की।

सब समझ गये, सुयून्दिक़ ने हार मान ली है। और क़ोनानबाय ने तुरंत उसका फ़ायदा उठाया।

"अगर तुम हम पर यकीन नही करते," उसने कहा, "तो कम से कम उन लोगों का तो तुम्हें यक़ीन करना चाहिए जो हर जगह क़ोदर की बदनामी का ढिंढोरा पीट रहे है! सिर्फ़ हमारे ही लोग ऐसा नहीं कह रहें है। कल मंत्रणा सभा मे हम लोगों पर ऐरे-ग़ैरों ने छीटाकशी की! वे भी इस बारे में जानते थे। ज़रा कोशिश करके उनपर असर तो डालो कि वे ग़लत कह रहे है! ज़रा उनके तो मुँह बन्द कराओ! क्या तुममें यह करने की क़ूवत है? है तो जाओ, करो: उसे बेक़ुसूर साबित करो या उसकी निन्दा करो! लेकिन हाथ पर हाथ धरे हे-हें-हों-हों मत करते रहो!"

सुयून्दिक़ कोई जवाब नही दे सका। कुछ देर की चुप्पी के बाद बायसाल बोला। हमेशा की तरह शान्त और निश्चिन्त दृष्टि से उसने क़ोनानबाय की ओर देखा।

"अगर हम क़ोदर को क़ुसूरवार पाते है तो उसकी सज़ा क्या होगी?" उसने बिना किसी भावावेश के पूछा।

क़ोनानबाय ने जवाब दिया:

"कज़ाख़ो ने इतने बड़े गुनाह के बारे मे कभी नही सुना है। न हमे मालूम है कि इसकी क्या सज़ा होनी चाहिए। शरीअत* ही इसका फ़ैसला करेगा। क़ानून को ही फ़ैसला करने दो।"

क़ोनानबाय खीझी, कड़वी आवाज़ में बोल रहा था लेकिन अब उसने अपना लहजा बदल लिया था – वह ख़ुद अभिभूत प्रतीत हो रहा था।

बहस की कोई गुंजायश न रह गयी थी और हर बुजुर्ग महसूस कर

---

* शरीअत – मुसलमानो के मज़हबी कानून।

रहा था, नाक़ेबन्दी की जा चुकी है जैसे कोई घोड़ा हठात् ही बिना दरवाज़े की दीवार में घुस जाए। फिर गहरी चुप्पी छा गयी थी।

बोजेय मन ही मन सोच रहा था: निश्चित ही शरीग्रत हर चीज़ की जाँच-पड़ताल करता है। वे ऐसे ही तो किसी ग्रादमी पर ग्रपने फ़ैसले लाद नहीं दे सकते। फिर भी ग्रपने विचार ज़ाहिर करने की उसकी हिम्मत न हुई। क़ोनानबाय कोई काट खानेवाला जवाब देकर उसे फटकार देगा। बोजेय ने चुप रहना ही बेहतर समझा।

लेकिन क़ाराताय को चुप रहा नही जा रहा था।

"ग्रौर शरीग्रत क्या कहता है?"

क़ोनानबाय कुछ दूर बैठे जुमाबाय की ग्रोर इस तरह पलटा जैसे उसे ग्रभी-ग्रभी उसकी मौजूदगी का ग्रहसास हुग्रा हो।

"मैंने जुमाबाय को हज़रत ग्रहमेतरिज़ा का फ़ैसला जानने के लिए शहर भेजा था। सज़ा है फाँसी," उसने कहा।

"फाँसी?" क़ाराताय दहल उठा।

बोजेय ने प्रश्नभरी निगाह कोनानबाय पर डाली ग्रौर दृढ़ता से उसकी ग्रोर ताका। क़ोनानबाय का चेहरा पत्थर से तराशा-सा लग रहा था।

"क्या ग्रौर कोई उपाय नही? वह भले पागल कुत्ता हो लेकिन ग्राखिर हम लोगों का स्वजन है," बोजेय ने कहा।

फिर क़ोनानबाय की ग्रावाज़ गरज उठी।

"उससे कोई सहानुभूति नही जतायी जा सकती जो कोदर के प्रति सहानुभूति रखता है! शरीग्रत को चुनौती देनेवाले हम कौन होते हैं? क़ोदर तो क़ोदर है, मेरे भाग्य का भी ग्रगर सवाल होता तो मै पीठ नहीं दिखाता या झिझकता नहीं!"

यह स्पष्ट था, इस स्तेपी घोड़े को रस्सी से बाँधा नही जा सकता था।

"ग्रगर तुम्हे इस पर विश्वास हो तो जो चाहे वह करो," बोजेय ने लड़खड़ाते हुए कहा।

बायसाल एक शब्द भी नहीं बोला।

सुयून्दिक़ ने बोजेय का रास्ता ही ग्रख्तियार किया:

"लोगों के हाकिम ग्राप ही है ग्रौर यह दुष्ट भी ग्रापके ही हाथों में है," उसने कहा। "मुजरिम ग्रौर उसका शिकार, दोनों ग्रापकी बुद्धि

पर भरोसा करते है। हम बस एक चीज की माँग करते है जो भी सजा आप मुकर्रर करे, पहले सच्चाई साबित करे। बाकी आप जैसा चाहेगे, वैसा ही होगा।'

दूसरे बुजुर्गो ने भी सुयून्दिक के ही शब्द दुहरा दिये।

"सच्चाई साबित करके जो जी मे आये, कीजिए!"

बहरहाल, उनकी यह रजामन्दी सिर्फ ऊपरी थी। पूरी शाम एक अघोषित सघर्ष अन्दर ही अन्दर चल रहा था। हीला-हवाला और व्यग्यो का बाजार गर्म रहा लेकिन किसी ने भी कोनानबाय से खुलकर झगडने का खतरा मोल लेने की हिम्मत नही की।

बोजेय ने भाँप लिया कोदर के मामले मे कोनानबाय की ओर से कोई तिकडमबाजी चल रही है और परदे के पीछे कोई और बात थी। इसका नतीजा क्या होगा? लेकिन परिणाम चाहे कुछ भी हो, कोनानबाय को इसके लिए अकेले ही जवाबदेह होना पडेगा किसी ने भी तो उसका पक्ष नही लिया था। शायद वह यह बात अच्छी तरह समझ गया है कि दूसरो ने सघर्ष जारी रखने का मौका हाथ से जाने नही दिया है।

लेकिन जब कि गाँव के बुजुर्ग चुपचाप मामले से हाथ खीचे रखने की उम्मीद कर रहे थे, कोनानबाय ने एक-दो बाते कहने के लिए बचा रखी थी उसने अपनी कूटनीति का एक-एक दाँव-पेच अच्छी तरह सोच रखा था।

इन छह बुजुर्गो के हाथो मे तोबिक्ति कबीले के हजारो परिवारो की नियति, आपसी सम्बन्धो, साजिशो, छल-प्रपचो की पेचीदगियो से भरे कबीलाई और पारिवारिक मामलो के पूरे झमेले का वारा-न्यारा था। उनके हाथो मे अनगिनत सन्धियो-अभिसन्धियो, आकस्मिक कार्यवाहियो, मानव-जाति की समस्त धूर्तताओ का सुघड जाल था।

आगा-सुलतान बनकर कोनानबाय औरो से ऊपर उठ गया था। उसके हाथो मे सत्ता थी। वह बाहरी दुनिया से, उच्चतम अधिकारियो से जो उसकी इज्जत करते और उसकी राय को तरजीह देते थे, जुडा हुआ था। और फिर वह एक अर्थलिप्सु धनवान आदमी भी था। उसके पास कभी शब्दो की कमी नही होती और उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली था। स्वभाव से हठी और जिद्दी, वह तब तक हार नही मानता जब तक अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त नही कर लेता और चतुराई से खुद को परिस्थितियो के मुताबिक ढालकर वह अपने आस-पास के सभी लोगो पर अपनी इच्छा लाद देता।

लेकिन तोबिक्ति कबीला अगर उसकी ताकत का जरिया था तो यही उसकी कमजोरी भी था। एक कजाख कहावत मे कहा भी गया है "उडने को पख तो उतरने को पूँछ।" यह बुजुर्ग कोनानबाय के लिए "पख" और "पूँछ" दोनो थे।

पिछले वर्ष से वह उनमे अपने प्रति विश्वास डिगता हुआ महसूस कर रहा था, जब से उनके बीच उन्हे अलग करनेवाली अविश्वास की अदृश्य दीवार खडी हो गयी थी। कोनानबाय बेशक यह बात जानता था लेकिन अब तक किसी ने उससे अलाहदा हो जाने का खतरा मोल लेने की हिम्मत नही की थी। वे सब उसके सामने झुके ही रहे थे। यह महत्वपूर्ण था क्योकि मजबूत और अधिकारसम्पन्न होने के बावजूद उसे एक और सत्ता पर निर्भर करना पडता था – कबीले के फैसले पर। कबीले की नज़रो मे इस नृशस सजा के लिए वे बुजुर्ग उसके मुकाबले कही कम ज़िम्मेवार नही थे। अगर कोनानबाय से इसके लिए जवाबतलब किया जायेगा तो दूसरो को भी जवाब देना पडेगा। सजा वाजिब थी, यह उन्हे सिद्ध करना पडेगा – इससे कोई फर्क नही पडता कि अभी वे क्या सोच रहे है। चुनाँचे, कोनानबाय ने कोई सन्देह ज़ाहिर नही किया।

ऐसे तो तोबिक्ति कई कुटुम्बो और परिवारो से मिलकर बना था। सारी शक्ति उन पाँचो या छहो के हाथो मे थी जिनके आकसाकाल कोनानबाय के ओताव मे जमा थे। वे कबीलाई जीवन की धारा तय करते थे, कानून निर्धारित करते थे। वे तोबिक्ति के नेतागण समझे जाते थे।

मिसाल के तौर पर बोजेय को ही लीजिये जो कोनानबाय की दाहिनी ओर बैठा है। वह प्रभावशाली जिगितेक कुल का था जिसमे पुराने समय मे दुराग्रही, कट्टर हाकिम केंगिरबाय पैदा हुआ था। यह कुल दुस्साहसियो, हमला-पसन्दो, जानवर चोरो तथा सभी तरह के जोखिम उठानेवालो को पैदा करने के लिए प्रसिद्ध था। जिगितेक उद्यम मचानेवालो, बेलगाम लोगो से भरा पडा था।

बायसाल विशाल कोतिबक कुल का प्रमुख था। यह इलाके का एक सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली कुल था जो जगली घोडो के झुंड के मुकाबले दस गुना बेलगाम था। कोतिबक चरवाहे थे और साल-दर-साल ज्यादा से ज्यादा जमीन पर कब्जा जमाये जा रहे थे। अपनी ताकत के प्रति चौकस, वे कोई भी अपराध या लूट-मार करने से हिचकिचाते नही।

सुयून्दिक सबसे छोटे और गरीब कुल बोकेशी का था। मातृ कुल से यह छोटे बोर्सक कुल से सम्बधित था। कोनानबाय का क्रोध-भाजन कोदर इसी मडली का था।

खुद कोनानबाय इर्गिजबाय कुल का था। सख्या मे तो यह कुल जिगितेक और कोतिबक से छोटा था लेकिन इसके पास अथाह दौलत थी। पीढी-दर-पीढी इर्गिजबाय ने तोबिक्ति लोगो के बीच अपनी प्रभावशाली और नेतृत्वकारी स्थिति बनाये रखी थी।

कोनानबाय बोजेय और सुयून्दिक के मुकाबले बायसाल से कही ज्यादा निकट रूप से सम्बन्धित था और वह हमेशा से आदमियो और आम समर्थन के लिए कोतिबक पर निर्भर करता आया था। इसी कारण वह इस बड़े क़बीले के बीच अपनी साख बनाये रखना चाहता था।

काराताय की स्थिति औरो से कुछ भिन्न थी। वह उस प्राचीन कोक्शे कबीले का प्रमुख था जिसका औरो के साथ दूर-दूर का सम्बन्ध था और यह मंडली किसी भी तरह बडी न थी फिर भी इसके योग्य और तिकडमी नेता चतुराई से दूसरे कबीलो के साथ अपना रिश्ता जोड लेते थे। उसे हमेशा हर बात की जानकारी रहती और वह कबीलाई सभा के सभी महत्वपूर्ण फैसलो मे शिरकत करता।

बुज़ुर्गो की हर बात या हरेक फैसला को समस्त तोबिक्ति–बूढे और नौजवान दोनो, बिना कोई सवाल उठाये मान लेते।

इस समय कोनानबाय की बगल मे बैठा उसका भाई मायबासार जब वोलोस्त का मुखिया नियुक्त हुआ, उसने अपने दोस्तो और यहाँ तक कि कोनानबाय के निकटतम सम्बन्धियो से भी कन्नी काट ली थी। कोनानबाय की मौजूदगी मे मृग-शावक-सा भोला प्रतीत होता वह किसी भी तरह इर्गिजबाय के उन भीषण, निष्ठुर नेताओ से पीछे न था जो कोनानबाय की ऊँची स्थिति और सत्ता बनाये रखने मे दिलचस्पी रखते थे।

मायबासार के कारण ही सबसे पहले बोजेय कोनानबाय से अलग-थलग हुआ। दो महीनेवाले मायबासार की नृशसता से खोफ खाये लोगों के अनुरोध पर बोजेय यह माग करते हुए कि मायबासार को अधिकार-च्युत कर दिया जाये, कोनानबाय के पास पहुँचा था। कोनानबाय ने उसकी बात मानने से इनकार कर दिया। वह मायबासार के अत्याचार के बारे

में जानता था लेकिन वह ऐसे आदमी की उपस्थिति की जरूरत महसूस करता था जो खुद उसकी अपराजेय शक्ति और अनन्य कठोरता की जीती-जागती तस्वीर पेश कर सके। जब लोग मायबासार के क्रूर शासन को बर्दाश्त नही कर सकते, सुरक्षा माँगते दौड़कर कुनानबाय के पास आते। इस तरह मायबासार एक ऐसे साधन के रूप मे काम करता जो लोगों को हमेशा यह याद दिलाता रहे कि क़ोनानबाय के हाथो मे जो सत्ता है, वह कोई छोटी-मोटी चीज़ नही।

बात का रुख़ क़ोदर से मोड़ने के लिए क़ोनानबाय ने बुजुर्गो से उनके पशुओं और चरागाहों के बारे में पूछना शुरू कर दिया और उन्हे बताया कि कहाँ और कब प्रस्थान शुरू करना है। इस साल एक बार फिर चिंगीज़ पहाड़ियों पर पड़ाव डालने का फैसला किया गया। बेशक, पहाड़ियो की दूसरी ओर के चरागाह केरेय क़बीले के अधीन थे, आऊल उनके ठीक इर्द-गिर्द स्थापित किये जा सकते हैं और अन्ततोगत्वा केरेय लोगो के चरागाहो पर कब्ज़ा जमाने की प्रच्छन्न आशा से धीरे-धीरे नदियो के किनारों की ओर बढ़ा जायेगा।

तनाव कुछ-कुछ छँट चुका था और हर कोई बिना छल-कपट के खुले दिल से बाते करने लगा। जिरेशे ने आबाय को आँख मारी और सिर से दरवाज़े की ओर इशारा किया।

आबाय अब तक नही जान पाया था, कोदर कौन था और उसपर किस चीज का इलज़ाम लगाया गया था। 'फाँसी" शब्द सुनकर वह थर्रा उठा था और यह महसूस करके कि उसका पिता इतनी कठोर सज़ा देने में समर्थ था, वह क़ोनानबाय की ओर भयभीत नज़रों से देखता रहा। लड़के को याद नही आ रहा था कि स्तेपी मे कभी किसी को फाँसी लगायी गयी हो: उसने अब तक इस के बारे मे कभी नही सुना था। इस खौफ़नाक शब्द के बहाव में उसका दिमाग हारुन-अल-रशीद के पुराने ज़माने की कहानियों में खो गया था, लेकिन उनका सम्बन्ध तो दूसरे देशो से था, जैसे, बग़दाद, मिस्र और गज़ना। "फाँसी की बात बस धमकी देने भर के लिए है," उसने सोचा। "ऐसी बात यहाँ नही हो सकती।"

अब कही उसे जुमाबाय के शहर जाने का कारण समझ मे आया था। वह भौचक था! वे इतने दिनों तक एक साथ थे लेकिन उस बूढे ने इस बारे मे एक भी शब्द नही कहा था। अपने दिल मे शरीअत के शब्दो

को छुआरे, मौत का एक संदेशवाहक उसकी बगल मे घुडसवारी करता, उसके साथ-साथ स्तेपी में घुड़दौड़ करता, हास-परिहास करता आया था! और अब जुमाबाय ऐसे चुपचाप बैठा था जैसे इन सब चीज़ों से उसका कोई मतलब ही न रहा हो! आबाय ने जुमाबाय की ओर ताका। उसे बड़े-बूढ़ों की अजनबियत पर आश्चर्य हो रहा था। "अगर मैं खुद बड़ा होता," उसने सोचा, "मै उन्हे ज्यादा अच्छी तरह समझ पाता। मुझे उनके इरादे मालूम पड़ने लगते।"

अब उसे याद आया, शहर मे उनके ठहरने के दौरान कभी-कभी जुमाबाय का आचरण उसे असमंजस मे डाल देता था। शहर में आने पर बूढ़े ने आँगन से एक गुलगुला, चार साल का गहरा भूरा घोड़ा यह कहते हुए बाहर निकाला था, "तुम्हारे पिता की ओर से इसे हज़रत को उपहार मे देना होगा।"

बूढे ने लड़के से मस्जिद के सब से बड़े मुल्ला, उसके उस्ताद अहमेत-रिज़ा के घर का पता पूछा था और उससे उनके घर का रास्ता दिखाने के लिए कहा था।

मुल्ला के आँगन मे घुसते ही उन्होने घोड़े को बाँधना शुरू कर दिया था। मुल्ला की नज़र उन पर पड़ चुकी थी और उन्होने फ़ौरन समझ लिया होगा, घोड़ा उनके लिए उपहार के रूप मे लाया गया है लेकिन वह शान्त रहे। फिर जुमाबाय ने कोनानबाय की ओर से उनका अभिवादन किया था।

"वह आपसे अपने बेटे, सामने खड़े आपके शागिर्द को आशीर्वाद देने की विनती करते है।"

"महान और दयालु अल्लाह अपने वरद हाथों से तुम्हें इनाम देगा!" हज़रत ने गुनगुनाती आवाज़ मे कहा और हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया।

बिना किसी उचित मौके का इन्तज़ार किये जुमाबाय ने हज़रत साहिब के आलंकारिक वाक्य-प्रवाह को बीच मे ही रोक दिया और थोड़े मे अपने आने का कारण समझा दिया: क़ोनानबाय एक बहुत ही अहम मसले पर विद्वान हज़रत साहिब की राय जानना चाहते है। फिर रुककर उसने आर्थपूर्ण दृष्टि से हज़रत और लड़के की ओर देखा। हज़रत तुरंत ही उसका आशय समझ गये।

"इब्राहिम * , मेरे बच्चे, अभी मदरसा चले जाओ और गाँव लौटने से पहले मेरे पास आ जाना, जिससे मैं तुम्हे अपना आशीर्वाद दे सकूँ।"

लड़का चला गया था।

अब आबाय के सामने सारी बात स्पष्ट थी। जुमाबाय ने कोदर को निष्ठुर सज़ा देने के बारे मे क़ोनानबाय की इच्छा हज़रत को बतायी थी।

अब ओताव मे आबाय के रुके रहने को क्या रह गया था? उसे यहाँ किसी भी तरह के दोस्ताने अल्फ़ाज़ या मुरव्वत भरी निगाहो की उम्मीद न थी। वह जिरेशे के पीछे-पीछे ओताव से बाहर खिसक आया। चरने को छोड़ने के लिए वह घोड़े को पैकड़ा बाँध रहा था। आताव के दरवाज़े पर मद्धिम रोशनी मे जिरेशे ने लड़के को देखा और चुपचाप आवाज़ लगायी:

"आबाय, इधर आ जाओ!"

बेताब सवाल आबाय के मुँह से अपने दोस्त के पास पहुँचने से पहले ही बेसाख्ता निकल पड़ा।

"अरे, जिरेशे, क़ोदर कौन है, जिसके बारे मे वे बातचीत कर रहे थे? और उसने किया क्या है?"

"क़ोदर? बोर्सा़क का एक ग़रीब, अकेला आदमी है

"और अब कहाँ है?"

"चिंगीज़ पहाड़ियो पर बोकेशी दर्रे की तलहटी मे रहता है।"

"और उसने किया क्या है?"

"उसका कहना है, इस साल जब उसके इकलौते बेटे की मृत्यु हो गयी, उसने अपनी बहू को अपना लिया।"

"अपना लिया? क्या मतलब है तुम्हारा?

"अरे, बस वह उसके साथ रहने लगा।"

"मेरी समझ में तो कुछ नही आया!"

"क्या बेवकूफ़ हो तुम! तुम मेरा मतलब नही जानते? अरे भाई,

---

* इब्राहिम – आबाय का मुसलमानी नाम। आबाय उसकी माँ द्वारा प्यार से दिया गया नाम था।

ऊँटों की तरह . नर और मादा . अब समझे?" उसने अश्लील इशारे से बात पूरी की।

जिरेंशे आकसाकालों के बीच बैठकर ऊब गया था और बसन्त की खुली हवा मे आकर खुश था। उसकी ख़्वाहिश लड़के के साथ खेलने-कूदने की थी लेकिन आबाय की खेलो में कोई दिलचस्पी नही हो रही थी: उसका चेहरा अत्यन्त गंभीर बना रहा। जिरेंशे के शब्दो ने उसे बहुत परेशान कर डाला था।

"क्या यह वास्तव मे सच है?"

"अरे, भाई, किसी को पक्का मालूम नही। लेकिन अफ़वाहे है। इसी कारण तो सुयून्दिक सच्चाई के पता लगाने पर ज़ोर दे रहा था," जिरेंशे ने जवाब दिया।

"तो फिर लगता है, शायद यह सच नही?"

"बहुत स लोग है जो ऐसा ही सोचते है। जानते हो, जब कुनेकेन* सिबान क़बीले के बैठक मे भाग लेने गये थे, सब के सामने सोल्ताबाय ने उन पर छीटाकशी की थी। बात ऐसे हुई कुनेकेन ने उनसे कहा था, उन्हे नसवार इस्तेमाल नही करना चाहिए। उस आदमी को गुस्सा आ गया और उसने जवाब दिया. 'नसवार इस्तेमाल करना कोई बड़ा गुनाह नही और अच्छा हो अगर आप चिंगीज़ पहाड़ियों की तलहटी मे रहनेवाली उस चुड़ैल को काबू मे लावे जो वहाँ हर तरह का गुनाह कर रही है!' कुनेकेन क्रोध से आपे से बाहर हो उठे थे। जैसा कि तुम देख ही रहे हो, वह अभी भी आपे मे नही – तड़ित-वारिद की तरह तिमिराच्छन्न।"

आबाय के मानस-पटल पर "फाँसी" की घोषणा करते समय अपने पिता की त्यौरी चढ़ाये, भयानक छवि आ गयी। पल भर के लिए लड़का तलमलाता खड़ा रहा। फिर एक गहरी साँस छोड़कर तेज़ी से मुड़ गया और अपनी माताओ के ओताव की ओर चल पड़ा। जिरेंशे ने कुछ और भी बताने के लिए आवाज़ लगायी लेकिन लड़का रुका नही और शीघ्र ही अंधेरे मे विलीन हो गया।

---

* कुनेकेन – क़ोनानबाय का आदर से किया जानेवाला सम्बोधन।

क़ोदर धीरे-धीरे बाजरे की दलिया और क़ुरुत * खा रहा था जिसे उसकी बहू ने उसके लिए गर्म किया था।

"कमका, मेरी प्यारी, क्या आज शुक्रवार नहीं ?" उसने पूछा।

"हाँ, आज शुक्रवार ही है और मुझे क़ब्र पर क़ुरान पढ़ने जाना है," कड़वाहट से आह भरते हुए उसने आगे कहा, "पिछली रात मैंने उसे सपने मे देखा -- ठीक वैसे ही जैसे वह ज़िन्दा हो।"

"ओह, हे ख़ुदा, हे ख़ुदा," क़ोदर ने भी जवाब मे आह भरी और ऐसा लगा जैसे जिस दुख ने उसके मज़बूत सीने मे घर कर रखा था, इस ज़बर्दस्त आह से मरोड़ खाता बाहर आ निकला हो। क्या थोथे सपने जी हल्का कर सकते थे ? उसने भी अपने इकलौते बेटे क़ुतजान को सपने में देखा था। लेकिन उससे शान्ति कहाँ ? लगता है, कमका को ऐसे सपनों से राहत मिलती है। ठीक है, उसे इसकी चर्चा कर लेने दो। इसी तरह उसके युवा हृदय को हल्का होने दो। वह उसकी बात सुनने को मुख़ातिब था।

"मैंने उसे वैसा ही देखा जैसे वह ज़िन्दा हो और घोड़े पर चढ़ा हमारे ओताव की ओर चला आ रहा हो। हमेशा की तरह हँसता-मुस्कुराता वह घोड़े से उतरा और अन्दर आकर बोला, "तुम और अब्बा बहुत रोते रहते हो। मुझे प्राय: तुम्हारा विलाप सुनाई देता है। क्या तुम समझती हो, मैं सच में मर गया हूँ ? तुम ख़ुद ही देख लो, मैं फिर लौट आया हूँ। बहुत हुआ, कमका ! अब और मत रोओ। ख़ुश हो जाओ !' यही उसने कहा और मुझे बड़ी ख़ुशी हुई !"

बूढ़ा और नौजवान औरत, दोनों बैठे रहे, उनके गाल आँसुओं से तर थे।

एक अजीब-सी तीखी आवाज़ के अलावा चारों ओर नीरवता छायी थी। कमका को बहुत बार सवेरे यह आवाज सुनाई पड़ती थी।

---

* क़ुरुत -- दही को उबालकर बनाया जानेवाला गोला-गोला पनीर जिसको सुखाकर खाते है।

अपना पीला चेहरा ऊपर उठाकर, उसने आवाज पर कान लगाया। उसकी आँखो के किनारे लाल थे, ललाट की नीली नसे फडक रही थी।

"यह बस पहाडियो की ओर चलनेवाली हवा है," उसने समझाया।

"और ऐसी आवाज कैसे हो रही हे?"

"उस पुराने झोपडे की छत है न। उसके सरकडे सड गये ह सो हवा मे वे सारी चिथडी-गलीज चीजे गा उठती है," उसने उसे फिर से आश्वस्त करने के लिए कहा।

वे साथ-साथ बाहर निकल पडे।

बुरी तरह स्याह पडा और पैवन्द भरा उनका ओताव एक छोटे-से झोपडे के सहारे किसी गठरी की तरह टिका था। आस-पास एकदम सुन-सान – न ही कोई कुटिया या ओताव। पडोस के आऊल बहुत पहले ही अपने जयलाव पर चले गये थे।

जब कुतजान जिन्दा था, वह बहुधा कहा करता, "हमे जाताक नही बन जाना चाहिए! हम औरो के साथ ही बढते रहे!" औरो के साथ अपने परिवार को पडावो की ओर बढने के लिए जरूरी दो या तीन ऊँट वह हमेशा ही कही न कही से ऊपर कर लिया करता था। उन दिनो की परेशानियाँ उन्हे शायद ही मालूम हो पाती थी। चरागाहो के बारे मे या दोनो वक्त का खाना कैसे होगा, इसकी चिन्ता करने की उन्हे कोई जरूरत न थी। "गाँव के साथ-साथ सफर करना अच्छा होता हे,' कोदर कहता। "हमे काफी दूध मिल जायेगा और हो सकता है कोई गाय ही गर्मी भर के लिए उधार माँग लेगे।" और वे पडाव की तरफ आगे बढते जाते थे।

लेकिन इस गर्मी मे न तो कमका ही और न ही बूढे का मन कुतजान की कब्र को बेखिदमत छोड देने का हुआ।

उनका पशुओ का ढोर छोटा-सा था और अगर उनके जानवर रात-दिन भी चरते रहते तो मुश्किल से चिगीज पहाडियो की ढलानो पर स्थित चरागाहो का सौवाँ भाग चर पाते। जाडे मे अपने बेटे की मौत के बाद कोदर ने एक गरीब बूढे स्वजन जमपेइस को, जिसका न कोई परिवार ही था न कोई ठौर-ठिकाना और जो अपनी आजीविका दूसरो के लिए मेहनत-मशक्कत करके जुटाता था, अपने साथ रहने के लिए बुला लिया था। "आधोआध पूरा एक होते है! अगर हम खुद पर नही तो और किस पर निर्भर करेगे? आओ, हम एक-दूसरे की मदद करते हुए रहे,"

कोदर ने जमपेइस से अनुराध किया जब वह कुतजान की कब्र पर कुरान पढने आया था। और इस तरह वह बूढा इनके साथ रह गया।

अब छोटे-से ढोर के लिए चिन्ता करने की कोई जरूरत न थी और घर पर भी करने को थोडा ही कुछ था। दोनो अपने दिन कब्र पर बिताते – उम्र और परेशानी से झुकी कमरवाला बूढा और दुख से टूटी जवान औरत। आज भी वे चुपचाप कुतजान के अन्तिम विश्राम स्थल की ओर बढे जा रहे थे।

यह मई का एक चमचमाता और खुशगवार दिन था – स्तेपी की भूमि सुनहली धूप से नहायी थी। विस्तृत आकाश मे बादलो की सिर्फ दो-चार सफेद लडियॉ तैर रही थी। लहराती पहाडियॉ हरी हो उठी थी और नवजात घास इतनी घनी थी जैसे उन बेहतरीन मुलायम कालीनो को भी मात दे रही हो जिन पर हिमसुमन, कन्दपुष्प, गेदा, वनकुकुम और अहिपुष्पो का छिडकाव किया गया हो। बेशुमार लाल, पीले, नीले फूल ठीक ऐसे लग रहे थे मानो तितलियो के झुड इस पर मडरा रहे हो। शीतलता हमेशा जितनी ही थी और पहाडी दर्रे से आती सुबह की बयार तापहारी और जिसे छू जाती, उसी को तरोताजा कर देनेवाली थी।

लेकिन जीवन की इस सारी चमक-दमक, प्रकृति के फिर से जी उठने की अदम्य खुशी की ओर उस दुख के मारे जोडे का कोई ध्यान तक न गया – उनकी ऑखे तो बस एक ही चीज देख पा रही थी – आगे की पहाडी पर पत्थरो के ढूहवाली ताजा कब्र। बस यही एक ऐसी अकेली चीज थी जो उन्हे दुर्निवार रूप से खीचती रहती थी। फूल और अभी उग आयी घास उन्हे बस पिछली बहार की याद दिलाती थी जब हॅसी-खुशी से भरा कुतजान जिन्दा था। और अतिशय व्यथा की एक ताजा लहर उनपर छा गयी।

कोदर ने अभी हाल मे ही साठवॉ साल पूरा किया था, वह मजबूत काठी का बूढा था। अपनी अपूरणीय क्षति के कारण वह टूट चुका था, नही तो क्या मजाल कि दुनिया की कोई दूसरी चीज उसे तोड पाती। उसमे जीवन का अजस्र प्रवाह था। अपनी जवानी मे वह मर्दो मे मर्द था। उन दिनो काबिलयत और हिम्मत मे कोई उसकी सानी नही रखता था। जीवन-भर उसने अपने नाम को बट्टा नही लगने दिया था, उसके सम्मान की रक्षा की थी। सत्ता लोलुप या दभ मे चूर रहनेवालो से उसने

कभी होड़ नही की। अपने-आप मे रहते हुए जो थोड़ा-बहुत उसके पास था, उसी से वह सन्तुष्ट रहता और अपने परिवार के बीच शान्त, एकान्त जीवन व्यतीत करता था। अजनबियो के गाँवो मे जाने अथवा खुसुर-फुसर और चुगलखोरी मे भाग लेने की चिन्ता उसे कभी नही हुई थी। और तो और, उसे अपने गाँव के सदस्य शायद ही जानते थे। सिवा अपने स्वजातियों – बोर्सकों और बोकेंशियों के उसकी किसी के साथ उठने-बैठने की इच्छा न होती।

छह माह पहले बदक़िस्मती ने – इकलौते बेटे क़ुतजान की मौत ने – उस पर किसी बाज़ की तरह झपट्टा मारा और आज तलक उसका हृदय विदीर्ण करता रहा था।

अब वह किस की आस कर सकता था? उसे तसल्ली देनेवाला था कौन? वह जानता था, भाग्य निर्मम है और चिन्ता करने से कुछ भी होने-जाने को न था। सो, अपने अवसाद भरे विचारों को दूर भगाने की कोशिश करता।

उसकी आँखों के सामने ही इच्छा-वंचिता, दुख से पथरायी उसकी बहू कमका मुरझाई जा रही थी। अब उसके लिए बचा ही क्या था? उसका हृदय इस सवाल का जवाब देने मे काँप उठता। जब उसे ख़्याल आया कि वह भी उसे छोड़ जायेगी और अजनबी बन जायेगी, उसे महसूस हुआ जैसे क़ुतजान की मौत के भयानक क्षण उसके सामने फिर से साकार हो उठे हों। यह तो उसके लिए दूसरी मौत होगी। क्या वह उन दोनों का पिता न था?

कमका और क़ुतजान एक-दूसरे से प्यार करते थे और कितनी अच्छी तरह जीवन बिता रहे थे! दूर के सिबान कबीले की ग़रीब अनाथ वह लड़की अपने नये घर से प्यार करने लगी थी। क़ुतजान जब अपनी माँ के रिश्तेदारों से मिलने गया था, तब उससे उसकी मुलाक़ात हुई थी और पहली बार देखते ही, उसी रात वह उसे वहाँ से ले आया था। क़ोदर उससे अपने बेटे से कम स्नेह नही करता था। अपने हृदय की निश्छलता से उसे विश्वास था, अपने बच्चों के प्रति उसका यह स्नेह आख़िरी दिनों तक उसके जीवन को भरा-पूरा रखेगा।

कुछ समय पहले पहाड़ियो में दूसरे गड़ेरियों से सुनी कुछ गन्दी अफवाहों के बारे में जमपेइस ने उसे बताया था। क़ोदर की समझ में यह बात

थोडी ही आयी लेकिन जितनी आयी, वही उसे क्रुद्ध करने के लिए पर्याप्त थी और उसने अपने कबीलेवालो को अपनी जबान पर काबू रखने के लिए कहा। भला जो लोग इतना अच्छा जीवन बिताते है और दुनिया मे किसी चीज की परवाह नही करते है, अपने निठल्लेपन मे ऐसी कहानियाँ गढने का पागलपन कैसे पाल लेते है? जरूर ही उनका दिमाग चल गया होगा। "माँद मे जानवर की तरह कोदर अपने घर मे क्यो घुसा रहता है?" वे पूछते। "वह कभी दिखाई कयो नही देता?" इस पर दूसरे ताना मारते हुए कहते, "और भला उसकी बहू क्यो दिन-रात घर मे घुसी रहती है? वह क्या इरादे बना रही है?"

इन कटाक्षो का भारी बोझ कोदर पर पड रहा था। उसे सन्देह था कि इन सब ऊलजलूल बातो का मतलब सिर्फ यह है कि उसे बहू के लिए धन वसूले बिना उसके लिए शोहर तलाश करके, उसकी शादी कर देनी चाहिए — या दूसरे शब्दो मे वे उस पर एक ऐसा वारिस थोप देना चाहते थे जो उसकी जायदाद और उसके पशुओ का मालिक बनेगा। जरा सोचिये, ऐसी मक्कारी भरी साजिश उन लोगो द्वारा की जा रही है जो खुद को उसका स्वजन कहते है और उसके साथ हमदर्दी का छल करते है! हर किसी से खुद को विमुख करते हुए, कोदर ने किसी से भी मिलने से इनकार कर दिया। काश, वे उसे बस साल भर के लिए अकेला छोड देते! वह इसके आगे कुछ भी सोचना नही चाहता था। लेकिन कुत्सा की सर्द लपट उसके सूनेपन को भेद गयी थी।

जब जमपेइस ने कोदर के चेहरे पर धुआँ-सा देखा, वह समझ गया, उसके जख्म पर नमक डालना ठीक नही होगा। स्वभाव से अल्पभाषी होने के कारण अपने भावो को अभिव्यक्त करने मे उसे काफी जोर लगाना पडा और उसने आगे कुछ नही कहा।

उसे अफवाह के बारे मे इस तरह मालूम हुआ। चरागाह मे एक दिन बूढे गडेरिये अयतिम्बेत ने रुखाई से पूछा

"लोग कहते है, कोदर अपनी बहू के साथ रह रहा है। क्या तुम इससे वाकिफ हो?"

जमपेइस के रोये खडे हो गये।

"छि-छि, खुदा गारत करे जो मुझे कभी ऐसी अपमानजनक बात

4—3336

सुनाई पडे! और तुम, तिकडमबाज, ऐसी बाते कहने की हिम्मत न करना!" वह गुस्से से काँप उठा।

पल भर के लिए अयतिम्बेत यह तय नही कर पाया कि जमपेइस अपने कबीलेवाले की बचाव कर रहा है या वास्तव मे दोषारोपण से तिलमिला उठा है। लेकिन अयतिम्बेत कुत्सा या अफवाह फैलानेवाला आदमी न था और मजबूरन उसने आखिर मे सोचा "बेचारे को अगर सच मे कुछ मालूम होता, वह इतना क्रुद्ध न हो उठता। या तो वे दोनो वास्तव मे ही निर्दोष है या बूढे जमपेइस को उनके प्रति किसी तरह का सन्देह नही" अयतिम्बेत कोदर के करीब रहता था और आसानी से उसने उन बेचारो से मालूम कर लिया जो कभी-कभी कोदर के यहाँ जाते थे। अन्ततोगत्वा वह इसी निष्कर्ष पर पहुँचा कि दोनो एकदम बेकुसूर और कुत्सा के शिकार है।

लेकिन मामले की सच्चाई जाननेवाले कोदर के गरीब पडोसी बूढे की रक्षा मे कुत्सा-प्रचारको से बेकार बहस कर रहे थे। कोई जी-जान से झूठ का जाल बुनने मे लगा था—इस बुरी तरह कि खत्म होने की जगह झूठ ने इतना बडा रूप धारण कर लिया कि इसने कोदर को जहरीले धुन्ध की तरह दबोच लिया।

जाहिर था, बेचारे कोदर को अपनी एक ही बदकिस्मती पर आँसू बहाने नही छोडा गया था—अब उसे इस एक और परेशानी का सामना करना पड रहा था। तीन दिन पहले सुयून्दिक ने इरादतन बातूनी बेक्तेन को उसके पास भेजा था। उसने कोदर को ओताव से बाहर बुलाया और इधर-उधर की बेमतलब बाते करने के बाद अन्त मे जैसे अकस्मात बोल उठा

"बाते जो सारी फैल गयी है, उन्हे रोकना असभव है! सहृदय लोग तुमसे सहानुभूति रखते है और उन्होने अपवाद समाप्त करने की कोशिश भी की लेकिन वे सफल नही हुए।" तब इस जगह पर उसने सुयून्दिक का नाम लिया और जैसे यूँ ही बातो-बात मे, उसकी तारीफ का पुल बाँध दिया। फिर इधर-उधर की बातो से परोक्ष सकेत देकर कोदर को क्लेश पहुँचाते हुए, उसने खुलकर कह डाला, "लोग तुम्हारे और तुम्हारी बहू के बारे मे भयानक बाते कह रहे है!"

कोदर चौककर उछल पडा।

"अरे, क्या गलीज बाते तुम मुझसे कह रहे हो?" उसकी आवाज मे प्रचण्ड रोष था मानो वह बेक्तेन पर टूट पडने को तत्पर हो।

"देखो भाई, कोनानबाय को इन अफवाहो पर यकीन है और वह तुम्हारे लिए भयानक सजा देने की तैयारी कर रहा है," बक्तेन बिना विचलित हुए कहता गया। "लेकिन क्या सुयून्दिक अपने किसी स्वजन को भला धोखा दे सकता है? उसने यहाँ मुझे एक उद्देश्य से भेजा है 'जब तक हगामा खत्म न हो जाये कोदर को कही, जितनी दूर सभव हो सके, छुप जाने कहो!'"

"निकल जाओ यहाँ से! मेरी नजरो से दूर हो जाओ! कोनानबाय की सजा की क्या परवाह मुझे जब खुदा ने ही नही छोडा? मै कहता हूँ, चलता हो जाओ!" कोदर गुस्से के मारे आपे से बाहर हो रहा था।

इस अपमान की कसक आज तक बनी थी और जब कभी वह इसके बारे मे सोचता, कोदर को अपना खून उबलता-सा महसूस होता। लेकिन इसके बारे मे कमका से कुछ कहने की बात वह सपने मे भी नही सोच पाता हालाँकि उसका पितृवत हृदय अन्तरात्मा की किसी भी पीडा से पूर्णतया मुक्त था। कमका उसके लिए अपनी बेटी जैसी ही थी। दिन-ब-दिन उन्होने अपने साझे के बोझ, अपने दुख, अपनी आहो और अपने विचारो मे भागीदारी की थी। धीरे-धीरे वे इतने घनिष्ठ हो गये थे कि कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता जैसे वे दोनो बूढे लोग है जो जीवन भर कधा से कधा मिलाये रहे हो। वे एक-दूसरे को अच्छी तरह समझते थे, किसी भी चीज के बारे मे साफ-साफ और खुलकर बाते कर सकते थे। तो भी इस विकट अपवाद के बारे मे अपनी बहू को बताने की हिम्मत वह नही जुटा सका—इन शब्दो को जबान पर लाने मे उसने खुद को नैतिक रूप से असमर्थ महसूस किया।

धीरे-धीरे वे एकाकी कब्र के पास पहुँच गये। कोदर कुरान से कुछ नही जानता था ओर न ही कमका ने कभी उसे सीखा था। यहाँ तो वे अपनी बनायी सहज, मौन प्रार्थनाएँ कहते, कुतज्ञान से अपने दुख बँटाते और कोमल लहजे मे उसे छोड जाने के लिए उलाहना देते।

बहुत बार तो वे घुटनो के बल गिर पडते और एक-दूसरे से सटे हुए कब्र की ओर आँसुओ के बीच से देखते रहते। वे कब्र के जर्रे-जर्रे

से परिचित थे। अगर हवा से उडकर सूखी घास की कुछ पत्तियाँ पत्थरो के बीच आ जाती, वे तुरत उन्हे साफ कर देते, अगर पत्थर या मिट्टी अपनी जगह से हट जाती, वे उसे तुरत फिर से ठीक कर देते।

आज भी वे कब्र के पास काफी देर तक बैठे रहे।

सहसा उनके पीछे घोडो की टाप सुनाई देने लगी और कुछ घुडसवार उन तक आ पहुँचे लेकिन न तो कोदर ने और न ही कमका ने मुडकर देखने की कोशिश की कि वे कौन लोग है।

वे पाँच थे मायबासार का सन्देशवाहक कमिसबाय, कोदर का एक दूर का रिश्तेदार जेतपिस और कोदर के कबीले बोर्सक के और तीन नौजवान। घोडे से उतरते कमिसबाय बुदबुदाया

"देखा क्या कर रहा है, मक्कार कही का!"

उन्हे कोदर और कमका के कब्र पर मिलने की उम्मीद न थी। दूसरे लोग उन्हे इस तरह दुख मे डूबा देखकर द्रवित हो जाते और कमिसबाय के साथी भी पहले घोडे से उतरने मे हिचकिचा गये थे। लेकिन उनका सरदार धूर्त और क्रूर था अगर उससे बाल काटने को कहा जाए, वह सिर ही उतार लेता। मायबासार खुद उतना क्रूर न था।

"उतरो!" उसने आदेश दिया।

उसके साथियो मे एक का दिल उसी जैसा था।

"देखते हो, अपना सिर तक नही घुमा रहे है! लगता है, कब्र मे गडे हो!" जेतपिस गुर्रा उठा।

आखिर यह महसूस करके कि यह लोग ऐसे ही नही आ पहुँचे है, कोदर ने मुडकर शान्ति से पूछा

"भले आदमियो, तुम्हे क्या चाहिए?"

"वोलोस्त के मुखिया तुम्हे बुलाते है!" कमिसबाय चीखा। "काराशोकि मे सारे बुजुर्ग जमा हुए है, आकसाकालो के सारे कुलीन। वे तुम्हारी प्रतीक्षा मे है!"

"यह बुजुर्ग कोन लोग है आर मुखिया कौन है?"

"मुखिया है मायबासार और उनके ऊपर है आगासुल्तान कोनानबाय। तुम को और तुम्हारी बहू को उनके सामने जवाब देना है। उठो और हमारे साथ चलो!"

"क्या तुम पागल हो? मेरा तुमसे क्या वास्ता?"

"क्या कहा तुमने? हमसे तुम्हारा क्या वास्ता? मुखिया तुम्हे बुला रहे है, और क्या!"

तुम और तुम्हारी धमकियाँ भाँड़ मे जाये!" कमका गुस्से से काँपती, उठ खड़ी हुई।

"तू खुद भाँड मे जायेगी, चुड़ैल कही की! जल्दी चलो!" अपने चाबुक से उन्हे धमकाता हुआ कमिसबाय गरज उठा। नौजवानो की ओर मुडकर उसने आदेश दिया, "पकड़ लो और उन्हे घोड़ो पर बैठा लो!"

नौजवान कोदर पर झपट पडे।

"हे खुदा, तुम मुझसे और क्या चाहते हो?" क़ोदर क्रोध से गरज उठा? और सबसे करीब के दो नौजवानो को जोरो से धक्का दिया। उनमे से एक हाथो से अपना मुँह छुपाकर जमीन पर गिर पड़ा लेकिन बाक़ी तीनो उस बूढे पर टूट पड़े। उसकी बाँहे उमेठकर पीछे से लगाम की रस्सी से बाध दी। कमका को आसानी से क़ब्र पर से घसीट कर कमिसबाय के घोड़े पर बैठा दिया गया। उसके पीछे वह ख़ुद बैठ गया।

भीमकाय जेतपिस क़ोदर के पीछे बैठा। दूसरे झपट कर अपने-अपने घोड़ो पर बैठ गये और पूरा दल सरपट चाल से पूरब की ओर, कारा-शोकि की ओर चल पड़ा। "अच्छा, जो कुछ हो रहा है, होने दो। अब इन जानवरो से बात करने से कोई फायदा नही है। मै खुद मुखिया से बात करूँगा।" कोदर ने सोचा। रास्ते भर वह अपने कबीले के जेतपिस से भी कुछ नही बोला।

बहरहाल, यह नयी आपदा जो क़ोदर और कमका पर आयी जेतपिस और उसके धूर्त भाई जेकसेन की ही कारस्तानी थी।

क़ोदर के सभी रिश्तेदारो मे यही दोनो सर्वाधिक धनी-मानी थे और कुतजान की मौत के बाद वसन्त मे लोगो ने जेकसेन को उलाहना देना शुरू कर दिया था. कोदर निकट सम्बन्धी है, वे कहते। गरीब है, बेटा मर गया है और बेचारा निहायत अकेला है लेकिन जेकसेन उसकी मदद के लिए कुछ नही कर रहा। उसने उन्हे उधार मे पड़ाव बदलने के लिए ज़रूरी वाहक-पशु भी नही दिया और क़ोदर को जाड़े के पड़ाव पर रहने के लिए पीछे छोड़ दिया। ऐसे उलाहने इतने आम हो गये कि

जेकसेन को अपनी क्रूरता को संगत ठहराने के लिए बहाना ढूंढ़ना पड़ गया।

"मेरा हृदय गुनाह के ख़िलाफ़ रहा है," उसने कहा, "ऐसी बात नही कि मै उसकी मदद करना नही चाहता बल्कि मै उसकी बदनामी से मजबूर हो गया हूँ।" यह बात उसने बोकेंशी और बोर्सक़ क़बीलों की भीड़ भरी बैठक में कही जिसने कुत्सा का जन्म दिया।

जल्दी ही सुयून्दिक़ ने जेकसेन से उसकी गुपचुप बात का मतलब जानना चाहा।

"ऐसा लगता है, उसने अपनी बहू को रख लिया है," जेकसेन ने कहा। "मुझे आप क्या करने कहते है? यदि मै उसे अपने घर में रख लूँ, कल ख़ुद आप ही मुझ पर थूकेंगे!" और अपनी बात का सिक्का जमाने के लिए उसने क़ोदर के उन शब्दों का हवाला दिया जो उसने वसन्त में क़ुतजान की मौत के सातवें दिन श्राद्ध में कहे थे।

दुख से कातर हो क़ोदर तब बोल उठा था, "अब मेरा कोई नही बचा! मैं अकेला हूँ! ख़ुदा ने सज़ा देने के लिए मुझे ही ठीक समझा। मैं कर भी क्या सकता हूँ? मै काफ़िरों की मौत मर जाऊँगा लेकिन उसकी सत्ता के आगे सिर नही झुकाऊँगा। अगर ख़ुदा ने मुझे शिकार बनाया है, मैं उसे उसी तरह चुकता करूँगा!"

"ऐसी सूरत मे वह ख़ुदा का क्या बिगाड़ सकता है?" और फिर तब जेकसेन ने आख़िर मे परोक्ष रूप से आक्षेप लगाया कि ख़ुदा से अपना बदला चुकाने के लिए क़ोदर ने अपनी बहू को अपना लिया है।

लेकिन सही बात तो यह थी कि जेकसेन चुपके-चुपके मामले के एक और पहलू से मतलब रखता था। जेकसेन के जाड़े के पड़ावों के पास ही क़ोदर की ज़मीन का छोटा-सा टुकड़ा पड़ता था। "चाहे जो हो, क़ोदर का तो सब कुछ ख़त्म हो ही गया," उसने सोचा, "यदि मैं किसी तरह उसे क़बीले से निकाल बाहर कर पाऊँ तो ज़मीन मेरी हो जायेगी।" यह उसके लिए लालच का कौर था।

सूखी घास में आग की तरह फैलती अफ़वाह अन्त मे क़ोनानबाय तक पहुँच गयी और फिर वज्रपात हुआ। सिबान क़बीले के एक बड़े जमाकड़े में सोल्ताबाय ने बार-बार क़ोदर के नाम से तोबिक्ति पर कालिख लगाने की चेष्टा की। जब सुयून्दिक़ के पास ख़बर पहुँची, उसने महसूस किया,

बात बहुत बढ़ गयी है। नये सबूत पेश करवाने के लिए एक बार और वह जेकसेन के पास गया। सिर्फ़ इसी से सन्तोष न करके उसने क़ोदर के आस-पास रहनेवाले लोगों से पूछताछ की। छल-प्रपंच से कोसों दूर उन सीधे-सादे लोगों को उसकी निर्दोषिता पर तनिक भी सन्देह न था। बूढ़ा अपने बेटे की मौत से कितना ग़मगीन था, वे सिर्फ़ इसी की बखान कर सके।

लेकिन जेकसेन और जेतपिस इसे सच न मानने पर डटे रहे।

"वह तो सिर्फ़ बहाना बना रहा है," उन्होंने कहा। रात होते ही वह कुछ और चीज़ मे लग जायेगा।

एक बार फिर सुयून्दिक़ सच्चाई सिद्ध करने में असफल रहा। उसे डर था, कही अफ़वाहें सच साबित हो गयी और अन्य क़बीलों के बुज़ुर्गों के साथ बातचीत के दौरान उसने जो अडिग रूप से ज़ोर देते हुए कहा था, "यह कुत्सा है!" तो हो सकता है, इस बात का इस्तेमाल क़ोनानबाय बोकेंशी और बोर्सक़ पर अपना गुस्सा उतारने के लिए बहाने के रूप में न करे। क़ोनानबाय के यहाँ मंत्रणा के समय भी उसके मन में क़ोदर के समर्थन की इच्छा थी लेकिन क़ोनानबाय ने उसके मुँह से पहले शब्द निकलते ही फटकार दिया था।

मामला इस तरह और बिगड़ गया कि वह बेवकूफ़ बेकतेन, जिसे सुयून्दिक़ ने क़ोदर के पास भेजा था, लौटते समय रात भर के लिए जेकसेन के घर ठहर गया और सब कुछ बक गया:

"क़ोदर ने कहा, 'न मैं ख़ुदा को मानता हूँ और न क़ोनानबाय को! जो चाहूँगा वही करूँगा! इससे तुम्हें क्या मतलब?' और फिर उसने मुझे खदेड़ दिया!"

बात को रोचक बनाने के लिए बेकतेन ने चुन-चुनकर रंगीन शब्द इस्तेमाल किये और क़ोदर को बदनाम करने के लिए जो कुछ बन पड़ा किया।

क़ोनानबाय के ओताव में मंत्रणा के बाद सुयून्दिक़ ने अपनी अन्तरात्मा को यह समझाकर शान्त करने की कोशिश की कि क़ोदर अपराधी है।

इस तरह, किसी को निश्चित रूप से कुछ भी न मालूम होने के बावजूद, क़ोदर पर भयानक विपत्ति आ गिरी थी।

चिंगीज़ पर्वतमाला की पहली चोटियो मे एक क़ाराशोक़ि क़ोदर के जाड़े के पड़ाव से दूर न थी। इसकी वृक्ष-बहुला ढलानों से होकर एक तेज़ झरना बहता था जिसके किनारो पर बेद के पेड़ों, ऐस्प वृक्षों और वसन्त की सुषमा से भव्यमान कुन्तलाकार सक्साऊलों की पाँत खड़ी थी। हरित चरागाहों की यहाँ प्रचुरता थी और यूँ तो न जाने कितने सालो से इन पर चुनौती के साथ बोकेशी और बोर्सक़ का कब्ज़ा रहा था, बहुत पहले से ही कई इर्गिज़बाय परिवारों ने अपनी ईर्ष्यापूर्ण आँखें क़ाराशोक़ि पर गड़ा रखी थीं जहाँ जेकसेन का आऊल बसा था।

जेकसेन के आऊल के ओताव चार थे और वे नदी पर लटकती एक बहुत बड़ी चट्टान से हवाओं की आड़ मे थे। यही भीड़ जमा हुई थी जहाँ क़ोदर और कमका को लाया जा रहा था।

"वे आ रहे है! वह वहाँ क़ोदर आ रहा है!" आवाज़े सुनाई पड़ी।

जो लोग जेकसेन के ओताव मे बैठे थे, अब बाहर निकल आये। क़ोनानबाय सबसे आगे था। हालाँकि आ रहे जिगित अभी कुछ दूर थे, आऊल के परे मैदान में भीड़ तेज़ी से बढ़ने लगी।

मैदान के बीचों-बीच एक खंभे से बंधा एक लम्बा-चौड़ा काला ऊँट था। उसके कूबों के बीच नमदे का बड़ा-सा ढेर था जिसके ऊपर ज़ीन कसी थी और इन सब के चारों ओर कुडली की तरह एक लम्बी-मोटी रस्सी लपेटी थी।

कमका जो रास्ते भर एक भी शब्द नही बोली थी, भीड़ देखकर काँप उठी और क़मिसबाय की ओर मुड़कर बोली:

"सुनो, तुम भी आदमी हो। हम लोगों ने क्या किया है? तुम हम लोगों के साथ क्या करना चाहते हो? जी चाहे तो हमें मार डालो, लेकिन पहले हमें यह तो बताओ आख़िर क्यों..."

क़मिसबाय भी चुप ही रहा था लेकिन अब वह बोल पड़ा। उसके शब्दों मे ज़हर घुला था·

"तुमने अपने श्वसुर क़ोदर के साथ गुनाह किया है! इसलिए आज तुम्हें फ़ाँसी दी जायेगी!"

कमका बिलख उठी और धीरे-धीरे घोड़े से सरकने लगी। कमिसबाय ख़ुद ज़ीन पर गिरते-गिरते बचा। उसे मज़बूती से थामते हुए, वह शीघ्र ही भीड़ की ओर घोड़ा हाँक ले चला, जहाँ क़ोदर को घोड़े से उतारा जा रहा था। मैदान के बीच मे क़मिसबाय घोड़े से उतरा। उसने उस समय भी कमका को एक हाथ से थाम रखा था। फिर उसने उसे नीचे उतार दिया लेकिन तब तक कमका अचेत हो चुकी थी और ज़मीन पर गिर पड़ी।

क़ोदर कोई सौ-एक आदमियों की भीड़, क़ोनानबाय, बोजेय, क़ाराताय सुयून्दिक़, मायबासार तथा तोबिक़्ति के अन्य बुज़ुर्गों के आमने-सामने आया। उनके पीछे आक़साक़ाल तथा अन्य प्रमुख व्यक्ति खड़े थे। कोई ऐसा नही दिखाई दे रहा था जिसकी वेष-भूषा से ग़रीबी या सादगी झलकती हो। यह सब अत्कामिनेर * लोग थे—सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क़बीलों के सर्वाधिक प्रभावशाली लोग।

क़ोदर ने जिसके हाथ पीछे की ओर बंधे थे, उनकी ओर देखा। वह घृणा से उबाल खा रहा था और जैसे ही उसने क़ोनानबाय को पहचाना जिसकी कानी आँख दुष्टतापूर्वक उस पर टिकी थी, उसके पूरे शरीर मे एक सिहरन-सी दौड़ गयी।

"अहा, क़ोनानबाय! तुम समझते हो, क्या ख़ुदा ने मुझे कम सज़ा दी है? मेरे लिए कौन-सी नयी दुष्टता का खेल तुम रचा रहे हो?"

उसे बीच में ही मायबासार तथा दूसरों ने चीख़कर रोक लिया।

"बहुत बकबक कर लिया! बस!

"ज़बान को लगाम दो!"

"मुंह बन्द रखो!" चारों ओर से गुस्से भरी आवाज़ें उठने लगीं। कभी किसी ने इतनी गुस्ताख़ी से क़ोनानबाय को सम्बोधित नही किया था।

क़ोदर ने हल्ला थम जाने तक प्रतीक्षा की।

"क्या मुझपर कलंक लगाकर तुम भाग्य से अपनी एक आँख जाने का बदला लेना चाहते हो?" उसने गुस्से से तमककर कहा।

"उसका मुँह बन्द कर दो!" क़ोनानबाय हुँकार उठा।

मायबासार अपना चाबुक फटकारता बूढ़े की ओर दौड़ पड़ा:

"नीच कटखने कुत्ते!"

---

* अत्क़ामिनेर—बुज़ुर्ग, क़बीलाई सरदार (शब्दश:—घुड़सवार लोग)।

क़ोदर की आवाज़ और ज़ोरों से गरज उठी:

"मैं कटखना कुत्ता हूँ तो तुम रक्त-पिपासु कुत्ते हो! लोगों पर झपटकर उन्हें काट डालनेवाले।"

चार जिगितों की मदद से क़मिसबाय क़ोदर को घसीटकर दूर ले गया, लेकिन बूढ़ा पूरी ताक़त लगाकर चीख़ रहा था:

"मैं क़ुसूरवार हूँ या बेक़ुसूर – तुम यह जानना नहीं चाहते, हत्यारो!" और उसने फाड़ खानेवाले भाव से क़ोनानबाय की ओर देखा।

लेकिन तब तक फन्दा उसके गले में पड़ चुका था और चारों जिगित उसके सिर पर एक बोरी डालकर घसीटते हुए काले ऊँट की बग़ल में ले गये। कम से कम छह आदमी बहुत ज़ोर लगाने पर उसे पकड़ पा रहे थे, जैसे ही उसने आख़िरी बार धिक्कारने के लिए अपना मुँह खोला, उसे अपनी पीठ पर कुछ बहुत ही ज़ोरदार-सा झटका महसूस हुआ। ऊँट अपने पैरों पर खड़ा हो रहा था। बूढ़े के गले में शिकंजे-सी जकड़न महसूस हुई – ऐसी जकड़न जो उसके प्राण निकाले दे रही थी। उसे चट्टान-सा भयानक वज़न महसूस हुआ। सारी दुनिया घूमती प्रतीत हुई। उसे जीवन की अन्तिम टिमटिमाती लौ दिखाई पड़ी – और फिर सब कुछ विस्मृत हो गया। भीड़ पर मौत की निस्तब्धता छा गयी।

जब ऊँट पूरी तरह उठ खड़ा हुआ, कमका का शरीर दूसरी ओर से लटका था। वह तुरंत ही मर गयी थी।

लेकिन क़ोदर के शरीर में अभी भी आक्षेपजन्य स्पन्दन हो रहा था। उस भीमकाय व्यक्ति पर मौत जल्दी विजय नहीं पा सकी थी। आकार से वह और विस्तृत हो गया प्रतीत हो रहा था, उसकी एड़ियाँ लगभग ज़मीन तक पहुँच रही थी। देखनेवाले निस्तब्ध, ख़ामोश खड़े थे।

बायसाल से और नही देखा गया, उसने मुँह फेर लिया। दूसरों ने बोलने की कोशिश की लेकिन उनके बस होंठ हिलकर रह गये। क़ाराताय ने चुपचाप बोजेय से कहा:

"नराधम कितनी देर से तड़प रहा है। उसे मौत नहीं आती... अभी ही पता चला, नर-पुंगव था वह!"

बोजेय ने उसकी ओर देखा, उसका चेहरा उदास था:

"तुम्हारे नर-पुंगव को एक शृगाल निगल गया!" और यह कहकर उसने भी अपना मुँह फेर लिया।

"ज़िन्दा है!.. वह अभी भी ज़िन्दा है!" भीड़ में बुदबुदाहट हुई।

आक्षेप से अभी भी क़ोदर का शरीर ऐंठ जाता।

क़ोनानबाय को बढ़ती बुदबुदाहट पड़ रही थी। मृतक की यंत्रणा देखनेवालों को हत्या से कहीं अधिक मर्माहत कर रही थी। हल्के-से इशारे से उसने ऊँट को बैठा देने का आदेश दिया।

जब ऊँट ज़मीन पर बैठ गया, कमका का निर्जीव शरीर पल भर के लिए सीधा खड़ा रहा फ़िर औंधा गिर पड़ा। अब तक जीवित क़ोदर भहराकर ढेर पर गिर पड़ा। किसी को भी सोचने का मौक़ा दिये बिना क़ोनानबाय ने चोटी की ओर इशारा किया।

"उसे चोटी पर ले जाओ और अधम को वहाँ से फेंक दो।"

कमिसबाय और दूसरे चार जिगित चुपचाप लपककर क़ोदर को ऊँट की पीठ पर लाद दूसरी ओर से पहाड़ी चोटी पर ले गये जिधर ढलान सुविधाजनक थी। तितर-बितर होती भीड़ को क़ोनानबाय ने गरजकर आदेश देकर रोक लिया: "रुक जाओ! किसी को जाने मत दो!" और वह फिर निश्चल खड़ा हो गया।

जंगल की ओर से दो घुड़सवार बाहर आये। उन्होंने उतरकर आख़िरी ओताव के खंभे के साथ अपने घोड़े बाँधे और भीड़ की ओर चल पड़े। यह दोनों जिरेंशे और आबाय थे।

और तभी कोदर के शरीर को ले जा रहे पाँचों आदमी चट्टान की चोटी पर दिखाई पड़े। क़ोनानबाय से संकेत मिलने पर उन्होंने क़ोदर के भारी शरीर को झुलाया और चरागाह के ऊपर लटकती चोटी से नीचे की ओर उछाल दिया।

भारी-भरकम शरीर हवा में कुलाँचे भरता ठीक भीड़ के सामने धड़ाम से ज़मीन पर आ गिरा और जो किनारे खड़े थे, उन्हें हड्डियों की कड़र-कड़र की आवाज़ सुनाई पड़ी।

तब तक जिरेंशे और आबाय भीड़ तक पहुँच गये थे। सब की नज़रों का पीछा करती उनकी नज़रें चोटी तक जा पहुँची और उन्होंने किसी आदमी के शरीर को हवा में उड़ते हुए देखा, उसके लहराते कपड़े इस तरह फैले थे जैसे किसी बहुत बड़े पक्षी के पंख हो। ज़िरेंशे जल्दी से आगे जा धमका। आबाय ने अपने हाथों से अपनी आँखें छुपा ली और वह ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ गया। सब ख़त्म हो चुका था... अभागा आदमी मर चुका था।

काश, वह समय पर आ जाता तो अपने पिता से क़ोदर को छोड़ देने की याचना करता। लेकिन उसे आने में काफ़ी देर हो चुकी थी और उसे इन लोगो की ओर देखना सहन नही हो पा रहा था। बस उसके दिमाग़ मे एक ही बात आ रही थी – जल्दी से घोड़े पर जा बैठे और कही भाग ले। इसी पल भीड़ सप्रण हो उठी:

"इसे उठा लो!"

"ख़ुद कर लो!"

"और तुम किस लिए हो!"

चारों ओर से चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ आने लगी जिसनें अब आम कोलाहल का रूप धारण कर लिया था – कभी कोई ज़ोर से चीख़ता, कभी कोई। कुछ ने पत्थर उठाने शुरू कर दिये। "शायद फ़साद," लड़के ने सोचा।

लेकिन फ़साद की बात कोई नही सोच रहा था। मृतक के शरीर के ज़मीन पर आ गिरते ही क़ोनानबाय ने एक नया आदेश दिया था:

"उसमें अभी भी प्राण है। इस पतित से अपनी मुक्ति के लिए, आओ, हम तोबिक्ति के चालीस क़बीलो के चालीस चुने लोग उस पर पत्थर फेकें! आ जाओ! हर कबीले से एक आदमी – अपने-अपने पत्थर उठाओ!"

क़ोनानबाय ने झुककर एक पत्थर उठाते हुए बोजेय और बायसाल से मुख़ातिब हो दृढ़ निश्चय के साथ दुहराया:

"अपने-अपने पत्थर उठा लो!"

दोनों ने पत्थर उठा लिये।

"शरीअत में ऐसा ही विधान है! मारो!" क़ोनानबाय ने चीख़कर कहा और पहला पत्थर क़ोदर के सीने पर फेंक मारा।

इसी कारण कुछ पत्थर उठाने के लिए झुक आये थे जबकि दूसरे "पहले तुम, पहले तुम" करते झगड़ रहे थे।

लड़के ने नज़दीक जाकर लोगों को एक-एक करके पत्थर फेंकते देखा। जिरेंशे ने आबाय को टहोका दिया और धीमे से कहा:

"उस बुड्ढे को देखते हो? वही क़ोदर का स्वजन जेकसेन है! उसे जानते हो? कितना कमीना है!"

उसी पल आबाय को महसूस हुआ, जेकसेन ही वास्तविक हत्यारा था

ग्रौर लड़का तेजी से उसकी ग्रोर बढ़ गया। लेकिन वह ग्रादमी पत्थर फेंकने के लिए ग्रपना हाथ उठा चुका था ग्रौर जैसे ही ज़ोर से चीख़ते हुए "गलीज़ ग्रादमी, तुम्हारा नाश हो!" कहा, एक बड़ा-सा पत्थर मुर्दे पर जा गिरा।

तभी ग्राबाय को क़ोदर का शरीर दिखाई पड़ा। खोपड़ा चकनाचूर हो चुका था... ग्राबाय का कलेजा ख़ून से भर गया, वह ग़ुस्से से उबल पड़ा।

"बुड्ढे शैतान," उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा ग्रौर जेकसेन के सिर के पीछे ग्रपनी मुट्ठी से ठोकर मार दी।

जेकसेन तेज़ी से पीछे मुड़ा, बेशक, यह सोचते हुए कि शायद ग़लती से कोई पत्थर उसे ग्रा लगा हो। लेकिन उसके सामने तो क़ोनानबाय का बेटा खड़ा था।

"नीच, कमीने बुड्ढे!" ग्राबाय ने चिल्लाकर कहा।

जेकसेन हक्का-बक्का रह गया था।

"तुम्हें क्या हो गया है, लड़के? क्या ग्रकेले मैं ही दोषी हूँ? ग्रगर तुम्हें इतनी परेशानी हो रही है, तो तुम्हारा बाप तुम्हारे पीछे ही खड़ा है," उसने स्तब्ध होते हुए भुनभुनाकर कहा।

भीड़ में उत्तेजना फैल गयी।

"क्या हुग्रा? क्या बात है?"

लेकिन तब तक ग्राबाय ग्रपने घोड़े की ग्रोर दौड़ चुका था। जब उसने घोड़े को खोला, उसे ग्राख़िर के ग्रोतावों से सुबकने की ग्रावाज़ सुनाई पड़ी।

वे ग्रौरतें ग्रौर बच्चे थे जिन्हें फ़ाँसी की कार्यवाही शुरू करने से पहले ग्रोताव के ग्रन्दर खदेड़ दिया गया था। कुछ ग्रौरतें सुबकियों के मारे काँप-काँप उठती थी, दूसरी चुपचाप क्रन्दन कर रही थीं। कोई ज़ोर से रोने की हिम्मत नही कर पा रही थी लेकिन ग्रांसू थे जो रोके नहीं रुक रहे थे।

ग्राबाय को ग्रपने दिल मे कोई तीर चुभता-सा महसूस हुग्रा। एक ही छलाँग में वह ज़ीन पर जा बैठा ग्रौर स्तेपियों में सरपट भाग चला।

शायद जेकसेन ने कोनानबाय से शिकायत कर दी थी, क्योंकि उसने ग्रपने पिता को गुस्से से चीख़ते सुना:

"ठहर जा, पाजी! ग्रभी तुझे मज़ा चखाता हूँ!"

लेकिन धमकी देने के अलावा कोनानबाय ने और कुछ भी नही किया। उसे वापस बुला लाने की उसकी इच्छा न हुई।

आबाय अपने आऊल की ओर बढ रहा था, जिरेशे उसके पीछे-पीछे घोड़ा दौड़ाये चला आ रहा था।

"ऐ, पगले! ठहर जा, आबाय! रुक जा, तेकेबाय* !" वह चीखा और फिर नयी गालियाँ दिमाग़ मे आने पर बकने लगा।

और दोनों जल्दी ही घाटी मे गुम हो गये।

दो प्राणियों की हत्या के बाद भीड़ चारो दिशाओ में तितर-बितर होने लगी। बुज़ुर्ग ख़ामोशी से घोड़ों पर रवाना हो गये।

"पुराने ज़माने में किसी स्वजन की हत्या के लिए कोई हरजाने की माँग कर सकता था," सुयून्दिक़ और क़ाराताय के साथ-साथ घोड़े पर चलते हुए एक आह भर बोजेय ने कहा। "लेकिन अब ज़रा कोशिश करके देखो। अपनी ज़बान बन्द रखना बेहतर है! मैं ने ख़ुद मारा। चालीस क़बीलों से हम लोगों ने अपने हाथों से पत्थर फेंके। मानो अब भी कोई इसके बारे मे कुछ कह सकता है!"

"शरीअत के विधान का सबसे खौफ़नाक हिस्सा तो क़ोनानबाय ने एकदम आख़िर तक छुपाये ही रखा था," क़ाराताय ने अपनी बात जोड़ी। "लगता है शरीअत मे चालबाज़ी और धूर्त्तता के लिए काफ़ी जगह है! शरीअत क़ोनानबाय के लिए काम करती प्रतीत होती है!"

सुयून्दिक़ का मन खिन्न था।

"छोड़ो, जो कुछ हुआ उसे भूल जाओ! मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ मामला यही खत्म हो जाये।" उसने अपनी बात ज़ाहिर की।

चूँकि बोजेय अनुभवी आदमी था, वह कोनानबाय को औरों से ज़्यादा समझता था।

"यही ख़त्म?" उसने कड़वाहट से कहा। "बोकेंशी और बोर्सक़ चाहें तो मेरी बात लिखकर रख लें: यह आज तुमने क़ोदर के गले में फ़ाँसी का फंदा नही डाला है। यह फंदा तुमने अपने गलो में डाला है—ख़ुदा की मदद से!"

---

* तेकेबाय—बकरा; उजड्ड से मतलब है।

इन बातों से तीनो बुरी तरह प्रभावित हुए। किसी ने भी बोलने की ज़हमत न की और वे ख़ामोशी से आगे बढ़ते रहे।

५

न तो आबाय को और न ही जिरेंशे को ऐसे भयानक दृश्य देखने की उम्मीद थी। आक़साक़ालो और बुज़ुर्गों ने अपना रहस्य अच्छी तरह पोशीदा रखा था और आगे क्या होने जा रहा है, इसका किसी को भी कोई सन्देह न हुआ था।

उस सुबह जिरेंशे क़ोनानबाय के आऊल में व्याघ्र नस्ल का अपना नया शिकारी कुत्ता दिखाने गया था। कुत्ते के रंग-रूप ने खलबली मचा दी थी और बच्चे ओतावों से टोलियों में निकलकर इसे देखने आ रहे थे। इस गुलगपाड़े को शुरू करनेवाला मुखिया हमेशा की तरह ओस्पान ही था।

अतिथि ओताव तक अपने कुत्ते के साथ जिरेंशे के पहुँचते न पहुँचते, ओस्पान ने शोर मचा दिया:

"लियो, लियो! वह रहा! जोलदायाक, बोर्बासार!"*

फिर क्या था, कुत्तों का एक पूरा जत्था ही उमड़ पड़ा।

"ओस्पान, मेरे प्यारे!" जिरेंशे ने उसे मना करने की कोशिश की। "तुम समझदार लड़के हो, तुम्हें इस तरह नही करना चाहिए! कृपाकर यह बन्द करो!"

लेकिन ओस्पान चिकना घडा था, चापलसी का उसपर कोई असर न पड़ा।

"बोर्बासार, अतू, अतू!" ज़ोर-ज़ोर से हँसते, किलकारियाँ भरते वह आऊल भर में दौड़ गया और ज़्यादा से ज़्यादा कुत्ते वहाँ जुटने लगे।

जिरेंशे किसी तरह अतिथि ओताव तक पहुँच गया था। हमला करने-वालों से अपने शिकारी कुत्ते को बचाने के लिए वह घोड़े से उछलकर नीचे आ गया। कोई दर्जन भर गड़ेरियों के कुत्ते ओतावों के पीछे से उछलते,

---

* जोलदायाक, बोर्बासार – कुत्तों के नाम।

भयानक अन्दाज मे गुर्राते आ पहुँचे और जिरेंशे के चारो ओर एक सकरा--सा घेरा बना लिया। जिरेंशे को आगे बढने की हिम्मत नही हो रही थी और ओस्पान से वह जितनी ही याचना करता, छोकरा उतने ही जोर से ठठाकर हँस पडता और कुत्तो को ललकार देता।

"अर्र-अर्र्र, लियो, लियो!" वह तेजी से खुद आगे की ओर दौडकर उन्हे ललकार देता।

लेकिन गडेरियो के बूढे कुत्ते इस खेल से जल्दी ही उकता गये। उन्हे इतने असहाय शिकारी पर हमला करने मे आलस महसूस हो रहा था। वे पास ही गुर्राते, भोकते बैठ गये।

शोरगुल आखिर मुख्य ओताव मे उलजान तक पहुँच गया।

"जा और उन हराम कुत्तो को भगा दे। वह बेवकूफ लौडा फिर मुसीबत खडी कर रहा है!" उसने नाश्ता कर रहे आबाय से कहा।

जल्दी-जल्दी कुत्तो को भगा कर आबाय जिरेंशे को अतिथि ओताव मे ले गया। अपने मनोरजन से वचित हो ओस्पान जिरेंशे के पीछे छुप गया और उसकी पिडली मे कसकर चिकोटी काट ली। शायद कुत्ते ने काट लिया, यह सोचकर जिरेंशे हवा मे उछल पडा और उसका सिर दरवाजे के चौखटे से जा टकराया। एक ही छलाग मे वह ओताव के एकदम बीच मे जा रहा।

"डरपोक, डरपोक," ओस्पान हो-होकर उठा।

जिरेंशे के चौडे कठ, काले चेहरे और अनोखे धारीदार रोओवाले सजीले शिकारी कुत्ते को देखकर आबाय खुश हो उठा।

"क्या नाम रखा है इसका?" उसने पूछा।

"जेलकुईन"। *

"अच्छा नाम है।"

"यह इसके काबिल भी है। यह वास्तव मे बवण्डर है। कोई भी खरहा इससे भागकर नही जा सकता।"

जिरेंशे प्रशसा के इन शब्दो को, जिन्हे उसके आऊल के एक मशहूर शिकारी ने कहा था, दुहराते रहना पसन्द करता था।

"फिर चलो, हम कुछ खरहो का शिकार करे!" आबाय ने सुझाया।

---

* जेलकुईन – बवण्डर।

"बेशक। तुम्हारे पास कोई घोड़ा है? मै बस शिकार खेलने जाने की बात ही सोच रहा था।"

जब तक आबाय के चार साल के कुम्मैत को ज़ीन कसके तैयार किया गया, दोनो दोस्तो ने ओताव मे किमिज़-पान किया।

फिर वे घोड़े पर पश्चिम की ओर, क़िज़िलशोकि के नाम से ज्ञात निचली पहाडियो की ओर चल पड़े।

जन्मजात शिकारियो जैसे आवेग और उत्साह से उन्होने शिकार किया। जिस खरहे के पीछे वे थे, वह काफ़ी देर तक उनकी पकड़ से बाहर रहा और तीन या चार दर्रे के बाद ही जेलकुईन उसे पकड़कर दबोच पाया। चिगीज पर्वतमाला के निकट स्थित क़िजिलशोकि की सुदूर चोटियो तक वे शिकार की व्यर्थ तलाश मे भटकते पहुँच गये।

वहाँ उनकी मुलाकात एक अन्य घुड़सवार, मायबासार के सन्देशवाहक जुमागुल से हुई।

"तुम्हे काराशोक़ि जाना चाहिए," उसने जिरेशे को सलाह दी। "आज वहाँ क़ोदर के मामले की सुनवाई होगी और सब लोग वही जुट रहे है।"

जिरेशे के कान खड़े हो गये।

"और कोदर कहाँ है? उसकी बहू कहाँ है?"

"उन दोनो को लाने के लिए जिगितो को भेज दिया गया है। उन्हें जेकसेन के आऊल मे ले जाया जायेगा।" जुमागुल घोडे को एड लगा चला गया।

"आओ चले, आबाय, देखे क्या हो रहा है!" जिरेशे ने व्यग्रता से सुझाव दिया। "आओ, हम चले!" और इसके बारे मे थोड़ा कुछ भाँप लेने का मौका दिये बिना वह अपने पीछे-पीछे उसे लिये चल पडा।

और इस तरह उन्होने अपनी आँखो से कत्ल, सजा देखी।

अब वे नदी के किनारे-किनारे जगलो से होकर वापस लौट रहे थे। एक सर्द हूक ने आबाय का हृदय जकड रखा था और अपने पिता के आचरण, कोनानबाय के रक्त सने हाथो को देखकर खौफ के मारे उसे अपनी सारी भावनाएँ कुठित-सी प्रतीत हो रही थी। ख़ुद उसका पिता कितना क्रूर, कितना निर्मम है!

उसने जिरेशे की आवाज़ो पर कोई कान नही दिया और तीव्र गति से सरपट घोड़ा भगाता गया। जब वे दोनों नदी तट के साथ-साथ एक-

दूसरे से होड करते घुडदौड कर रह थे, शिकारी कुत्ता उनकी बगल मे आ गया और फिर उन्होने सबसे ऊँची चोटियो मे से एक की ढलानो का चक्कर लगाया। रास्ता सकरा था – ऐसा जिस पर एक बार मे एक ही घुडसवार आगे बढ सकता था और बातचीत करना मुश्किल था। लेकिन जिरेंशे ने आखिरकार आबाय को पकड ही लिया और उसके पीछे एकदम नजदीक चलते हुए वह लगातार बात करता रहा। उसने किसी तरह जेकसेन के आऊल के नौजवानो से दो-चार बाते कर ली थी और वह आबाय को सुनी बाते बताना चाहता था। जैसे बुखार चढ आया हो, इस तरह काँपते हुए लडके ने सिर्फ उसकी आधी ही बाते सुनी, लेकिन उनका मतलब समझ लिया।

हर किसी की जबान पर दो ही बाते थी। एक ने कोदर पर दोषारोपण के लिए बहाने का काम किया जिसे नृशस सजा को उचित ठहराने के लिए उद्धृत किया जाता। कोदर ने कहा था, "खुदा ने मुझे प्रताडित किया है और मै उससे बदला चुकाऊँगा" – जैसा कि उसके हत्यारो ने आज घोषणा की थी। दूसरी, वह आखिरी बात थी जिसे उसने मौत से पहले उनके मुँह पर तमाचे की तरह मारा था, "अगर मै कटखना कुत्ता हूँ तो तुम लोग रक्त-पिपासु कुत्ते हो!"

अन्तरतम से आबाय हिल उठा था। उसे ओताव मे औरतो का करुण, घुटा-घुटा सुबकना याद आ गया। एकाएक उसने रोना शुरू कर दिया, जो उसे भी अप्रत्याशित लगा। पीछे रहने के बावजूद जिरेंशे की नजर इसपर पड गयी।

"क्या हो गया तुझे, लुच्चे, तेकेबाय! क्या बात है?" उसने हैरत से पूछा और लडके की बगल मे पहुँचने के लिए घोडे को एड लगायी।

लेकिन आबाय ने भी अपने घोडे को चाबुक फटकारकर आगे भगा लिया।

वे तग घाटियो को पीछे छोड चुके थे और चौडी घाटियो मे आ गये थे। आबाय ने अपने कुम्मैत को कोलकयनर की ओर मोड दिया और फिर उसे एड लगायी जिससे उसके आँसुओ पर जिरेंशे की नजर न पड सके। नौजवान ने उसे पकड पाने के लिए एडी-चोटी का पसीना एक कर दिया था, लेकिन लडका तीर की तरह सनसनाता आगे बढ चुका था और स्तेपियो मे खुद को अकेला पाकर उसने आँसुओ को बहने की खुली छूट दे दी।

वह वर्षो से नही रोया था लेकिन अब जैसे पिघल-सा गया हो—उसकी हिचकी-सी बँध आयी थी। वह घोडे को एड पर एड लगाता गया और स्तेपियाँ वसन्त की कछार तोडती, उद्दाम और तीव्र, शक्तिशाली और उल्लासकारी नदियो की तरह लहराती चली गयी। हवा के थपेडे उसके चेहरो से टकराकर आसुओ को पोछ ले जाते।

इससे पहले आबाय कभी भी इतना दुखी न हुआ था। उसे मानव सन्ताप के बारे मे मालूम ही क्या था? लेकिन अब वह इसकी गहराइयो मे पैठ चुका था और उसका पूरा अस्तित्व अत्यन्त गहन भावावेग से प्रभावित हो चुका था। उन दो निर्दोष प्राणियो के प्रति, जिन्हे इतने भयानक रूप से प्रताड़ित और कलकित होकर जान गँवानी पडी थी, उसका हृदय करुणा से ओत-प्रोत हो उठा था। उसके हृदय मे गुस्से और नफरत की एक अपार लहर हिलोडे ले रही थी।

"पिता"—कितना प्यारा, कितना स्नेहशील शब्द है! उसके अन्तरतम से उठती एक आवाज लगातार उसके पिता का पक्ष ले रही थी, उसे उन सब चीजो से अलग कर रही थी जो क्रूर है, अपराध मे डूबी है। लेकिन एक दूसरी आवाज भी उठ रही थी, जो बार-बार आज की भयावह हत्या की कहानी दुहरा रही थी। इसकी वीभत्सता उसके ख्यालो को ऊहापेह मे डाल रही थी, एक-दूसरे को चुनौती दे रही थी।

उसे मदरसा मे पढाये शब्द याद आ रहे थे "इनसान के आँसू गुनहगार के गुनाह धो डालते है और गुनाह के लिए प्रायश्चित का काम करते ह।" क्या उसके आँसू हत्यारो का पाप धो डालेगे, ऐसा वह विश्वास कर ले? नही, ऐसा नही हो सकता 'यह सच नही!'"

हत्यारो का दावा था, वे इमाम द्वारा निर्धारित कानून के शब्दो के प्रति पवित्र निष्ठा को बनाये रखने के लिए उनकी हत्या कर रहे थे। चुनाँचे, कोई किसी से शिकायत भी नही कर सकता? तो मौन वीराने मे वह अकेला था? सिर छुपाने के लिए भी जगह नही मिल पा रहे किसी यतीम की तरह वह खद को असहाय महसूस कर रहा था। और फिर एक नये सिरे से शोक ने उसे आ घेरा, कही अनजान गहराइयो से दर्द की ताजा लहर हिलोरे लेने लगी और उसकी दुर्बल, बालसुलभ भावना को बुरी तरह कचोटने लगी। आबाय पर एक बार फिर रोने का दौरा पड गया, उसके गालो पर आँसुओ की धार बह चली। दर्द की बिलबिलाहट-

सी उसकी सुबकियाँ निकलने लगी। सिर्फ़ जिरेंशे न सुन पाये! वह काफ़ी आगे था, उसका घोड़ा घास के मैदान को रौंदता चला जा रहा था।

पता नही घोड़े की गति या किसी और कारण, उसकी उत्तेजना के सामने उसकी सहनशक्ति जवाब दे गयी और उसे सहसा ज़ोरदार उबकाई-सी महसूस होने लगी। तन-मन दर्द से सिहर उठा। लेकिन उसने अपनी गति कम नहीं की और गिरने से बचने के लिए अपने घोड़े के अयाल को थामकर, उन्मादपूर्ण सरपट घुड़दौड़ जारी रखी। जिरेंशे उससे आगे नहीं जा सका।

कोलक़यनर में आबाय घोड़े से उतरा और अपनी माँ के ओताव की ओर चल पड़ा। दरवाज़े पर उलजान खड़ी थी, उसका दिल बैठ-सा गया। उसके बेटे पर मुर्दनी-सा पीलापन छाया था और चेहरा तो पहचान में नही आ रहा था। "सपना तो नही देख रही"? वह हैरत में पड़कर उसकी ओर ताकने लगी। नही। "आबाय ही है लेकिन देखने में कैसा अजीब-सा लग रहा है!" अपना घोड़ा बाँधकर जब वह उसके पास आया उलजान ने तुरंत ही देख लिया, रोते-रोते उसकी आँखें लाल हो उठी है।

"आबायजान, मेरे प्यारे, क्या हो गया? उन्होंने तुम्हारे साथ कैसा सलूक किया है?" वह उत्तेजित हो उठी और हैरत में पड़कर सोचा, कही उसके बाप ने तो नही पीटा।

वहाँ उनके अलावा कोई न था। आबाय निर्वाक माँ से चिपट गया और अपना जलता सिर उसके सीने पर रख एकदम शान्त खड़ा रहा। वह यह कैसे बिसरा गया था – उसके माँ भी तो थी! वह अनाथ और निपट अकेला नही!

वह इस तरह काँपने लगा जैसे फूट-फूटकर रो रहा हो लेकिन अब उसकी आँखों में आँसू न थे।

"मेरी जिन्दगी के आफ़ताब, मुझे बता तो, तुझे हुआ क्या है? क्या पिता ने पीटा है?"

"नहीं, मुझे किसी ने नही पीटा है। मैं आपको बाद में सब कुछ बता दूँगा...। आपा, कृपा करके मेरा बिस्तर लगा दो, मुझे नीन्द आ रही है।" एक-दूसरे का हाथ पकड़े वे ओताव के अन्दर चले गये।

उलजान हड़बड़ा जानेवाली न थी: अभी वह और कुछ न कहेगी।

लड़के को परेशान क्यों किया जाये? ओताव की दाहिनी ओर ज़ेरे की खाट के पास उसने लड़के का बिस्तर लगाकर लिटा, चुपचाप उस पर अपना फर-कोट डाल दिया।

लेकिन दादी ने तुरंत भाँप लिया, दाल में कुछ काला है।

"मेरे लाड़ले, क्या बात है? क्या तबीयत ख़राब है?" उसने पूछा।

"हाँ, वह ठीक नही महसूस कर रहा है," उलजान ने जल्दी से जवाब दिया। "बस उसे अकेला छोड़ दो, सोने दो।"

"तुन्दुक * को गिरा दो जिससे उसकी आँखों पर रोशनी न पड़े," उसने धीमी आवाज़ में नौकर से कहा, "और दरवाज़े पर भी परदा गिरा दो।"

दादी-अम्माँ ने आबाय की ओर उत्सुकता से देखा, लेकिन उसने दीवार की ओर मुँह फेर लिया। वह चकित हो उठी और फिर उसके होठ मौन प्रार्थना में हिलने लगे।

उलजान हैरत में थी, आख़िर जिरेंशे कहाँ है? कुत्ते भौंक उठे और देखने के लिए वह बाहर चली गयी। अतिथि ओताव के सामने जिरेंशे घोड़ा बाँधते खड़ा था और उलजान ने उसे अपने पास बुला लिया।

जिरेंशे ने सब कुछ बता दिया: कैसे सुबह मे उन्होंने खरहे का शिकार किया, जेकसेन के आऊल मे क्या-क्या हुआ और रास्ते मे लौटते समय आबाय ने कैसा अजीब-सा व्यवहार किया था। अन्त में उसने पूछा:

"अब कहाँ है वह?"

उलजान ने उसे बताया, आबाय सो रहा है। उसने नौजवान की ओर सर्द निगाहों से देखा और उसकी आवाज़ मे खीझ भर उठी:

"तुम कोई बच्चे नही, और तुम्हें मालूम होना चाहिए, तुम क्या कर रहे हो। यूं तो तुम्हें भी वैसी जगह नही जाना था, तिसपर तुम वहाँ आबाय को क्यों ले गये? वह अभी बच्चा ही तो है! तुम्हे मालूम होना चाहिए था कि हो सकता है, वह बुरी तरह ख़ौफ़ खा जाये और बीमार पड़ जाये।"

जिरेंशे शर्म से पानी-पानी हो उठा।

---

* तुन्दुक – ओताव के ऊपरी छेद को ढँकने के लिए एक आयाताकार कपड़ा।

"जी, मुझे बाद मे बडा अफसोस हुआ। लेकिन, कसम से, हमे कोदर की हत्या होते देखने की कोई उम्मीद न थी।"

"ठीक है, अब आबाय को फिर कभी एसी जगह पर मत ले जाना, और तुम खुद भी न जाओ। आखिर तुम भी अभी ज्यादा बडे नही हुए।"

लज्जित हो, जिरेंशे सिर लटकाये घुडसवारी के अपने चाबुक के हत्थे से जमीन खुरचने लगा। जब उलजान चली गयी, वह घोडे पर जा बैठा और अपने शिकारी कुत्तो के साथ चला गया।

शाम हो चुकी थी, ढोर लौट आये थे और भेडो के मिमियाने से जब पूरा आऊल भर उठा था, आबाय की नीन्द खुली। काफी देर हो चुकी थी – भेडे दूही जा रही थी और अधेरा घिर आया था। चारो ओर शोरगुल मचा था और आबाय की आखो के आगे धुधली, अस्पष्ट, मटियाली आकृतियाँ नाच रही थी। उसका सिर दर्द के मारे फट रहा था और उसे बडी जलन महसूस हो रही थी जैसे आग पर रख दिया गया हो। उसके होठ भी फटे जा रहे थे। उसने थूक निगलने की बडी कोशिश की लेकिन असफल रहा – उसका मुँह सूखा था।

उसकी माँ और दादी बगल मे बैठी थी। उलजान ने हथेली उसके ललाट पर रखी।

"आपा दादी-अम्माँ मै बीमार हूँ क्या?" आबाय ने पूछा।

"हाँ, तुम्हारा शरीर बहुत तप रहा है। कही दर्द हो रहा है?" उलजान ने पूछा।

उसने करवट ली और ललाट मे तेज दर्द की शिकायत की।

जब वह सोया था, उलजान ने दादी को जो कुछ हुआ था, सब बता दिया था और दोनो की यही राय बनी थी, "बुरी तरह डर जाने के कारण बीमार हो गया है!" जेरे ने जिरेंशे और सारे आकसाकालो को कोसा।

आबाय ने तुरत भाँप लिया, वे सब कुछ जान गयी है।

"पिता! पिता जी!" उसके दिमाग मे ख्याल कौंध उठे।

गहरी साँस छोडते हुए, उसने अपने सीने पर हाथ फेरा और लगभग बुदबुदाते हुए कहा, "कितना निष्ठुर है वह! कितना निर्मम!"

पहली दफा उसने अपने दिमाग मे उमड़ते-घुमडते अनगुथे, अर्द्ध चेतन इन ख़्यालो को उच्चरित किया था।

दादी-अम्माँ को सुनाई नही दिया तो उन्होने बहू के घुटने मे टहोका लगाकर पूछा।

"अपने बाप के बारे मे बोल रहा है। उसका कहना है, वह क्रूर है। उन्हे उनपर दया क्यो नही आयी थी?" उलजान ने उनके कान मे कहा।

जेरे ने दुख से आह भरी। लडके की ओर देखते हुए काफी देर तक वह उसके सिर पर हाथ फेरती रही।

"मेरे प्यारे, नन्हे-मुन्ने...। तुम कहते हो, उसे कोई दया नही? अरे, वह तो यह भी नही जानता, दया है किस चिडिया का नाम!"

अपना चेहरा ऊपर उठाये, आँखे आधी खोले, वह बुदबुदायी,

"हे, प्यारे खुदा, मेरी दुआ सुन! मेरी इस नन्ही जान को इसके बाप के गुस्से से बख्श दे। हे सर्वशक्तिमान परमात्मा, उसकी क्रूरता और निमर्मता से इस बच्चे को बचा।" काँपती अगुलियो से उसने अपने पोते को दुआ दी!

"आमीन," उलजान धीरे से बोली।

आबाय ने भी अपने हाथ चेहरे पर उठा लिये।

यह दो माताएँ थी..। उनके बीच एक ऐसा बच्चा पडा है जिसका दिल जख्मी हो गया है, और उस अजीब झुटपुटे मे जब अधेरे के दूत अपने शिकारो की खोज मे धरती पर भटकते रहते है, उन तीनो ने चुपचाप शान्ति, दयालुता और प्रेम के लिए प्रार्थनाएँ की।

आबाय को उज्ज्वल निर्मलता और शान्ति से भरा अपने बचपन का चिन्ताहीन उल्लास वापस लौटता प्रतीत हुआ। उसका हृदय शोकमुक्त हो गया। लेकिन सिर का दर्द और बुखार और भी बढ गया।

ओताव मे पूर्ण निस्तब्धता छा गयी थी। मेमनो और भेडो का मिमियाना भी धीरे-धीरे बन्द हुआ। आज स्तेपियो मे असामान्य शान्ति थी।

सहसा ही एक आर्त्त क्रन्दन और हृदय-द्रावक रस्मी बुलावे की आवाज आऊल मे गूँज उठी।

"हाय मेरे अपने! मेरे एकदम अपने," कोई घुडसवार रुदन कर रहा था।

किसी के मरने पर इसी तरह रोने का रिवाज था। घोडे पर सवार होकर कोई नौजवान पूरे आऊल मे क्रन्दन करता और शोक-समाचार के शब्द "हाय, मेरे अपने, मेरे एकदम अपने!" से शुरू होते। यह

सुनकर उलजान के दिल मे एक भयानक ख्याल आया। क्या कही उसी के किसी क़रीबी और अज़ीज़ को तो कुछ नही हो गया? कही क़ोनानबाय को तो नही? उसने काँपते हुए ध्यान से सुना। लेकिन निश्चित रूप से भय के कारण उससे गलती हो गयी थी या भ्रम हो गया था: बाहर तो कोई घोडा नही। पर बहुत ही नज़दीक से क्रन्दन की आवाज़ आ रही थी।

बात सबसे पहले आबाय की समझ मे आयी: यह किसी बच्चे की आवाज़ थी। बच्चे ने बड़ी चालाकी से बड़ो के रस्मी विलाप की नक़ल आवाज बदल कर की थी। यह ओस्पान था।

खेतों से लौटते ही उसने यह क्रन्दन शुरू कर दिया था हालाँकि बड़े लोगों ने उसे मना किया था, ऐसे मज़ाक से अपशकुन होता है।

"हाय मेरे अपने, मेरे एकदम अपने क़ोदर," अपने नितम्ब ठोकता और ओतावो के बीच फुदकता-भागता वह चीख़ा।

क़ोदर की मौत की ख़बर तेज़ी से आऊलों में पहुँच गयी थी और लड़के का ध्यान तुरंत इस ओर आकृष्ट हो गया था। उसने छोकरों की अपनी मण्डली जमा करके नदी के किनारे उनके साथ इस मृत्यु-क्रन्दन का अभ्यास किया। कही से एक सूखी हड्डी ढूंढ़कर उन्होंने उसे उचित सम्मान के साथ गाड़ दिया और विभिन्न दिशाओ मे चीख़ते, क्रन्दन करते दौड़ पड़े।

उलजान को बहुत गुस्सा आया: आबाय बीमार है और उस पाजी ने सब को डरा ही दिया।

"जरा इधर आओ, मेरे बच्चे," उसने कहा। "जरा इधर आओ!"

वह शान्ति से बोली, इतनी सावधानी से कि गुस्से का कोई भी चिह्न न प्रगट हो। अगर उसने उसे धमकाया होता तो वह हमेशा की तरह बकबक करता, किसी सुरक्षित जगह भाग खड़ा होता। लेकिन अब वह बिना भय के दौड़ता ओताव मे आ गया और एक छलाँग में माँ की गोद में जा कूदा।

उलजान ने उसका बायाँ हाथ पकड़ लिया।

"क्या मन मे है तेरे? तुझे ऐसा मृत्य-क्रन्दन न करने के लिए चेताया गया था कि इस से अपशकुन होता है। और तू ऐसे समय में यह ठिठोली कर रहा है जब आबाय बीमार है। गधा कहीं का!" उसे बुरी तरह झक-

झोर कर चकरघिन्नी देते हुए उसने कई जन्नाटेदार झापड़ रशीद कर दिये।

अपने बाप से मार खाकर ओस्पान कभी नही रोता था क्योंकि वे उसके आँसुओं पर कोई भी ध्यान नही देते थे। लेकिन माँ से ठुकाई होने पर वह नन्हे शैतान की तरह चीत्कार करता। आज भी उसने पूरी ताक़त लगाकर चीख़ना शुरू कर दिया। फिर फफकते हुए वह दौड़कर ओताव की बायीं ओरवाली लम्बी खाट पर पड़े तकिये में अपना चेहरा लपेट औंधा हो बिलखने लगा। लेकिन इस बार उसके आँसुओं से उलजान का दिल नहीं पसीजा। ओस्पान ने जल्दी ही महसूस कर लिया, वह उसे चुप कराने के लिए कुछ भी नही करेगी। उसके आँसू सूख चुके थे, लेकिन उसने रोते रहने का बहाना बनाये रखा और बीच-बीच में एकाध हृदय-द्रावक आर्त्तनाद कर उठता। आख़िर इससे उकताकर वह अपनी पुरानी चालबाज़ी पर उतर आया। पहले उसने बड़ी सावधानी से दुहराना शुरू किया :

"हाय, मेरे अपने, मेरे एकदम अपने!"

छुपी नज़रों से उसने माँ की ओर देखा, वह उत्तेजित न हुई थी। उसने एक बार फिर दुहराया और आख़िर में ज़ोर से रेघाकर बोल उठा :

"हाय, मेरे अपने, मेरे एकदम अपने आबाय!"

हालाँकि आबाय का सिर दर्द से फटा जा रहा था, वह अपनी हँसी नही रोक पाया।

लेकिन अब ओस्पान ने अपनी माँ की भारी-भरकम आकृति को हरकत में आते देखा! ज़ाहिर था, वह खड़ी होनेवाली थी। आती बला को भाँपकर वह बिस्तरे से उछल भागा।

"हाय मेरे अपने, मेरे एकदम अपने आबाय! आबाय! आबाय!" वह चीख़कर दरवाज़े की ओर भागा और जब तक वह उसे पकड़ पाती, जा चुका था।

"पकड़ो उसे! पकड़कर मेरे पास ले आओ!" माँ ने आवाज़ दी।

ओस्पान ओताव के सामने कई बार इधर-उधर भागता रहा लेकिन तभी वह आऊल के एकदम आख़िरी छोर की ओर तेज़ी से भाग खड़ा हुआ : एकदम ठीक समय पर उसकी नज़र अपने बड़े भाई तकेजान पर पड़ गयी थी जो माँ की आज्ञा का पालन करने उसकी ओर बढ़ रहा था।

आबाय लम्बे समय तक बीमार पडा रहा। कोई कहता वह उशिक* से बीमार है तो दूसरे कहते सोक्पा* है, ऐसे भी लोग थे जिनके ख्याल मे यह सन्निपात था लेकिन ठीक-ठीक कोई नही कह सकता था कि यह क्या है। न ही कोई उसे ठीक करने की कोशिश ही कर रहा था। .

सिर्फ एक बार उसकी बीमारी के दूसरे दिन दादी-अम्मा ने एक बूढी औरत को आबाय को सूर्यास्त के समय बाहर ले जाकर तुरत काटे गये भेड के गर्म-गर्म फेफडो से कई बार थपथपाने का आदेश दिया था।

"भाग जा, ऐ बुरी रूह! भाग जा और मेरे बेटे को छोड जा," उसने चीखकर कहा और आबाय को डूबते सूरज की ओर मुखातिब करके अपने मुँह से पानी छिडकते हुए अजीब-सा इलाज जारी रखा।

आबाय के घुटने जवाब दे रहे थे। उसका सिर चकरा रहा था और बडी मुश्किल से वह ओताव से बाहर निकला। शायद घुमरी के कारण ही पछाही आकाश उसे इतना विलक्षण-सा प्रतीत हो रहा था। क्या यह कोई परीकथा थी या कोई सपना? इस बेसुधी मे दुनिया की हर चीज अलग-सी और अनोखी-सी नजर आ रही थी ।

दो दिन बाद आऊल चिगीज पहाडियो पर जा बसा। पिछले कुछ दिनो से तैयारी मे लगे लोगो ने यात्रियो से पूछताछ करके जानकारी हासिल कर ली थी कि जयलाव बर्फ पिघलने पर साफ हो चुका है या नही, जमीन अच्छी तरह सूख चुकी हे या नही, पर्याप्त घास उग आयी है या नही? सामान्यत , चिगीज पहाडियो की तराइयो मे बर्फ जल्दी ही पिघल जाती है और घनी घास उग आती है। दूसरी ओर ढलाने धीरे-धीरे गर्म होती और वहा हरियाली भी बहुत देर से उगती क्योकि अत्यधिक हिमपात के कारण बर्फ का मोटा आवरण छाया रहता।

सुविस्तृत और जल से परिपूर्ण तोबिक्ति का जयलाव चिगीज पहाडियो की दूसरी ओर स्थित था। कोनानबाय के आऊल रवाना होते ही आस-पडोस के दूसरे आऊल भी हरकत मे आये। तोबिक्ति हिमानी शैल की तरह

---

* उशिक और सोक्पा – ठड लगकर होनेवाली बीमारियो के नाम।

पहाडी दर्रो को जाती सभी पगडडियो और राहो से होकर आगे बढ रहा था।

काश, आबाय स्वस्थ होता तो हँसी-खुशी और खेलकूद से भरे इन आह्लादकारी दिनो का आनन्द लेता। वसन्त मे पडाव बदलना बडो के लिए तो बडा ही मुश्किल काम होता, लेकिन बच्चो और किशोरो – गडेरियो, चरवाहो तथा "पडोसियो" के लिए मजा लूटने का समय होता। पिछले वर्षो मे कोलकयनर से चिगीज पहाडियो के परे स्थित बायकोशकर नदी तक की दस मजिलो मे तय की जानेवाली यात्रा आबाय के लिए बडे पर्वावकाश जैसी होती थी।

इस साल भी आऊल उसी मार्ग से सफर कर रहा था। आबाय बीच मे पडनेवाले सभी पडाव-स्थलो से परिचित था। कुछ स्थलो पर तडके पहुँचकर आऊल वहाँ पूरा दिन व्यतीत करता और रात होने पर फिर से सफर पर चल पडता। अपने गर्मी के पडावो तक पहुँचने की उत्कठा से आऊल जितनी तेजी से सभव होता, सफर करते। सो, जहाँ दो-तीन दिन तक भी रुकना हो, वहाँ बडे ओताव नही लगाये जाते। सिर्फ छोटे ओताव, हल्के तम्बू और झोपडे[1] खडे किये जाते। अपनी पसन्द के मुताबिक हर कोई अपने ठहरने का इतजाम करता, जैसी उसकी मर्जी होती मानो

---

[1] खानाबदोश यात्राओ के दौरान ओताव समेटकर ऊँटो अथवा मालवाहक घोडो पर लाद दिये जाते। ओताव को खडे करने मे कई घटे लगते। केरेगे कहे जानेवाले छोटी-छोटी लकडो के पिजरे – दीवारो पर उवुक – लम्बी लकडियाँ कस दी जाती और ऊपरी हिस्सा शनराक – गुम्बदनुमा पहिये द्वारा मिलायी जाती। ओताव का ढाँचा खडा हो जाने पर इसके ऊपर कच्चे नमदे का या अच्छी किस्म के नमदे का जिस पर प्राय रग-बिरगे कपडो का काम किया होता, खोल चढाया जाता। ओताव का आकार केरेगे, जिन पर बगल की दीवारे खडी रहती (तीन या साढे तीन मीटर के बीच), की ऊँचाई और उनकी सख्या पर निर्भर करता है। सबसे छोटे ओताव मे तीन और बडे ओतावो मे छह से आठ तक केरेगे लगे होते (छहपादीय या अष्टपादीय ओताव)। समारोह के मौको पर (जैसे शादी, सभ्रात व्यक्ति के स्वागत अथवा उच्च पदाधिकारियो को नियुक्त करने के लिए सभा-आयोजनो) दो या तीन ओतावो को एक साथ मिला दिया जाता और प्रवेश के केरेगे का एक हिस्सा हटा लिया जाता। – स

जयलाव की यात्रा करनेवालों ने "आऊल-आऊल"*, "मकान-मकान"**, "कुर्के-कुर्के"*** खेलते चलने का फ़ैसला कर लिया हो!

पड़ाव-परिवर्त्तन के सफ़र के दौरान यहाँ तक कि आम तौर से दूर-दूर रहनेवाले आऊल भी एक-दूसरे से आ मिलते। वे एकाएक कही से प्रकट हो जाने प्रतीत होते और एक अन्तहीन प्रवाह मे घुलमिल जाते। सारे परिवार एक साथ आ जुटते, उनके ढोर आपस में मिल जाते और एक आऊल से दूसरे आऊल का फ़र्क़ करना कठिन हो जाता।

लेकिन यात्रा अगर कुछ के लिए आनन्ददायी होती तो चरवाहों के लिए कभी न खत्म होनेवाली परेशानी और मुसीबत का कारण बन जाती: कभी ज़ीन छूटे घोड़े आवारागर्दी मे अजनबियो के झुँडों के साथ जा मिलते तो कभी एक आऊल के मेमने दूसरो के साथ बुरी तरह मिल जाते। या तो भेड़ों के ढोर को ही लीजिए, वे एक-दूसरे आऊलो के ढोर के साथ ऐसे चस्पाँ हो जाते कि कोई भी उन्हे अलग-अलग करके पहचानने का दावा नही कर सकता। इस गड़बड़झाला मे बेचारे वे निरीह ग़रीब मारे जाते, जिनके मेमने या भेड उनके कब्ज़े मे चले जाते जो दूसरो की जायदाद हथिया लेना गुनाह नही समझते थे। वे पुरानी कहावत को गुरुमंत्र मानकर चलते "अंगुली से थाम, आँखे बन्द कर, सब अपना ही है, पराया क्या!" ऐसे मौक़ो पर, थोड़े लोग न थे जो अपने ढोर मे भटक आये "शिकार" को काटकर आग मे जल्दी-जल्दी पकाते और अधपके गोश्त खा लेते।

इस वर्ष आऊलो ने एक ठोस जत्थे के रूप मे कूच किया था और इकट्ठे ही स्तेपियो मे आगे बढ़ रहे थे। इस जंगली इलाक़े में झुंड के झुंड विचरते भेड़िये खानाबदोशो को हमेशा ही तंग करते और उन्हें जितना संभव हो उतना एक-दूसरे के क़रीब-करीब चलने के लिए मजबूर कर देते। सफर से पहले भेड़िये पहाड़ियों की ढलानों की ओर भाग गये थे और चूहे व दूसरे छोटे जानवरो का शिकारकर पेट भर लेते थे, लेकिन अब अंधेरे का फायदा उठाकर वे ढोरों पर हमला कर देते, जिनकी रखवाली

आऊल-आऊल, मकान-मकान, कुर्के-कुर्के — बच्चों के खेल।

आम तौर से सुबह से शाम तक घोड़ो पर सवार लोग किया करते थे। खेमो के इर्द-गिर्द अलाव जलाये रखे जाते और सुबह होने तक आवाजे की जाती। आऊल के सामान्य शान्त जीवन से हैरानी और खतरे से भरे यह दिन कितने भिन्न थे! दिन चढते सब घोडो पर सवार हो चल पड़ते, भालो, सोयिलो और लकड़ी के कुठारो से लैस लोग प्रयाण करती हथियारबन्द घुड़सवारो की पूरी सेना की तरह प्रतीत होते।

सफ़र तो हमेशा की तरह ही चल रहा था, लेकिन इस वर्ष आबाय को यह कष्टदायक रूप से कठिन लग रहा था। अब उसे किसी तरह का दर्द तो न था लेकिन तबीयत अभी भी सभलने से कोसो दूर थी। चलने-फिरने की तनिक भी कोशिश करने पर उसकी आँखो के आगे अंधेरा छा जाता, सिर चकरा उठता और वह असहाय-सा ज़मीन पर गिर पड़ता। लेकिन एक लड़के के बीमार होने से याता तो रोकी नही जा सकती थी।

क़ोनानबाय आम तौर से तीन-चार दिन मे एक बार उलजान से मिलने आया करता था। वह अपना अधिकाश समय अपनी सबसे छोटी बीवी ख़ूबसूरत आयगिज के साथ व्यतीत करता था, लेकिन प्राय: अपनी सबसे बड़ी बीवी कुनके के यहाँ मिलने जाया करता। उसका अपना आऊल था और इसी जत्थे के साथ कोनानबाय सफर करता था। आबाय के बीमार पड़ने पर शुरू मे उसने उसके बारे मे एक-दो बार पूछताछ की थी लेकिन लगता था, उसके बाद वह लडके को भूल-सा गया था।

आबाय घोडे पर चल नही सकता था। उसे ऊँट पर तो बैठाया जा सकता था लेकिन उसकी माँ नही मानी। "क्या पता बुकचा फिसल जाये या कही ऊँट ही न लड़खड़ा जाये," उसने कहा। "वह बहुत खतरनाक है।"

खानाबदोश छकड़ों या गाड़ियों से परिचित न थे और तोबिक्ति के समस्त क़बीलो मे, आऊल भर मे, अगर कहा जाये तो दादी ज़ेरे और उसकी बहू उलजान के पास ही एकमात्र नीले रंग का छकड़ा था जिसे कोनानबाय ने आगासुलतान चुने जाने पर करकरालीस्क मे खरीदा था।

"यात्राओ के दौरान तुम छकड़े पर चलोगी," उसने अपनी माँ को बताया।

पहाड़ियो मे घोड़े पर सवार होकर चलना उलजान को भी दिन-ब-दिन मुश्किल महसूस होने लगा—वह बूढी और दोहरी होती जा रही थी। लेकिन अब उसे सिर्फ़ आबाय का ख्याल था। अपनी सुविधा का ख्याल

छोड उसने लडके को दादी के साथ छकडे मे बैठा दिया और खुद एक भोली-भाली कुम्मैत घोडी पर सवार हो निरन्तर छकडे के पीछे-पीछे बनी रही।

गर्मी के पडावो तक पहुँचने मे तीन हफ्ते लगे और इतने ही समय मे आबाय किसी के सहारे बिना चलने-फिरने और ओताव से बाहर जा सकने लायक हो पाया।

उसका उत्साह भी फिर से जाग पडा था और उम्मीद थी, उसमे पहले जैसा बचपना, निश्चित उल्लास भी आ जायेगा। लेकिन बडे आश्चर्य की बात थी, इस साल बच्चो के साथ खेलने, उछलने मे उसका जी तनिक भी नही लग रहा था। और जो खेल कभी उसे बहुत प्रिय थे, अब उसे नही खीच पा रहे थे। मानो वह अपना बचपन ही खो बैठा था। न जाने यह उसकी बीमारी का असर था या जो मानसिक उद्विग्नता उसे फिलहाल झेलनी पडी थी, उसने अपनी छाप छोड दी थी? क्या उसके बचपन के दिन पूरे हो गये थे? वह परिपक्वता की दहलीज पर जा पहुँचा था? नही, अभी तक उसने परिपक्वता प्राप्त नही की थी—कोई ऐसी चीज थी जो उसे बीच मे रोके थे। ऐसी स्थिति थी जैसे वह किसी ऊँची दीवार के पास दौडकर जा पहुँचा हो और परेशान, बेचैन खडा हो।

इस साल वह तेरह का हो गया था और शकल-सूरत से भी वह कुछ-कुछ बीचोबीच ही खडा प्रतीत होता, न बच्चा न जवान। वह काफी दराज हो चुका था, उसके हाथ-पैर भी लम्बूतरे हो गये थे। पहले उसकी नाक आखिर मे कुछ मुडी-सी प्रतीत होती थी लेकिन अब साफ-साफ सीधी हो गयी थी। उसका चेहरा उम्र से ज्यादा गभीर लगता लेकिन अभी भी उसकी आकृति मे बहुत कुछ ऐसा था जो अपूर्ण था, उसे अभी और उभरना था। अधेरे मे फूट आये पौधे की तरह वह लम्बा-पतला था पीला व कमजोर, पतली, नाजुक जडोवाला।

कभी उसके जैतूनी गालो पर सेहत की लाली होती थी। अब शहर मे लम्बे समय तक रहने या बीमारी के कारण उसका चेहरा फीका पड गया था और उसके काले-काले बाल थोडे कम हो गये थे, उनके बीच से चमडी नजर आती वह बीमार था और बहुत समय से धूप मे बाहर नही निकला है, यह उसे देखकर पहली नजर मे ही पता चल जाता था।

उसके स्वभाव मे भी बडा परिवर्तन हो गया था। अब वह घुडसवारी

करने लायक तो हो गया था लेकिन रुचि ही न होती। अपनी उम्र के दोस्तो से कतराकर उसने दूसरे दोस्त ढूंढ लिये थे – उसकी दादी-अम्माँ और फिर माँ उनमे सबसे आगे थी।

इसी साल आबाय को पूरी तरह पता चला, उसकी दादी-अम्माँ क्या गजब की किस्सागो हो सकती है। उसके शब्द कानो को मोहते और कल्पना को बाँध लेते।

अपनी बीमारी के दौरान एक दिन जब दर्द के कारण उसे नीन्द नही आ रही थी, आबाय ने दादी से एक कहानी सुनाने का अनुरोध किया। बूढी जेरे पल भर सोचती रही और फिर उसने कहना शुरू कर दिया – और वे शब्द नही थे बल्कि पिरोये मोतियो की एक लम्बी माला थी।

सदियो को कुहरो ने छा लिया है
और मेरे प्यारे, कौन उनकी थाह ले पाया है?

उसने गाती आवाज मे शुरू किया। शब्द आबाय की स्मृति मे खुद-ब-खुद समा गये और दूसरी बार उसके घुटने पर हाथ रखकर सिर्फ इतना ही याद दिलाना पडता

सदियो को कुहरो ने छा लिया है
और मेरे प्यारे, कौन उनकी थाह ले पाया है?

अब वह इसी तरह उससे नयी कहानियाँ सुनाने का अनुरोध करता। जेरे को कई कहानिया मालूम थी "आदिलजाइक," "जुपार कोरिगा," "कुला मेर्गेन," इत्यादि। आबाय सुबह से शाम तक जिद करके उससे कहानी सुनता रहता – तब भी जब वे कूच करते थे।

और जब आखिर आबाय ठीक हो गया, बूढी ज़ेरे ने अपनी कहानियाँ बन्द नही की। उसने आपबीती और दूसरो से सुनी बाते सुनायी। कबीलो के बीच झगडो की कहानियाँ तो कई-कई दिनो तक चलती रहती। लड़के ने यह भी जान लिया, किस तरह कोई बीस या तीस साल पहले नैमन कबीले ने उनके आऊल पर हमला कर दिया था, किस तरह जेरे का पोष्य पुत्र बोस्तानबेक मारा गया था और किस तरह नैमन कबीले के गायक-कवि कोजमबेर्दि को कैद करके डेढ साल तक ज़ंजीरो से जकड़कर

रखा गया था। ज़ेरे को उसके सारे बडे कथा-गीत कठस्थ थे। उसने अपने पोते को दूसरी घटनाओ के बारे मे भी बताया – कारामोर्स्क की लडाई तथा बहुत-सी दूसरी चीजो के बारे मे। फिर उसने उसे कालमाकान और मामिर, मेनलिक और केबेका की दुख भरी गाथाओ के बारे मे भी जानकारी दी।

आबाय को उसकी कहानियो से कभी ऊब न होती और वह उसके शब्दों मे अपने चेहरे पर उत्कठा तथा खोयी-खोयी भावाभिव्यक्ति लिये डूबा रहता। जब वह थक जाती और बोलने मे असमर्थ हो जाती, वह अपनी माँ के पास जा पहुँचता। उलजान भी बहुत-सी कहानियाँ जानती थी लेकिन उसे सबसे ज्यादा आनन्द तब मिलता जब वह कविताएँ सुनाती। उसे मालूम था, न वह पढना जानती है न लिखना और न ही वर्षो से किसी ने उससे इन कविताओ को दुहराने कहा था। लेकिन वे अब भी उसकी याद्दाश्त मे बनी थी, यह बात उसे चकित और प्रसन्न कर देती। लगातार कई-कई दिनो तक वह जिरो,* आयतिसो,** उपदेश गीतो और हास्य-पदो को सुनाते रह सकती थी।

उन दोनो औरतो को नयी कहानियाँ सुनाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से आबाय शहर से लायी किताबो से कविताएँ पढकर उन्हे प्राय: सुनाया करता। वह उन्हे "युसुफ और जुलैखा" पढ़कर सुनाता। वह फ़ारसी के अनजाने शब्दो की व्याख्या और अनुवाद भी करता जाता। निश्चित रूप से वह उनकी स्मृतियो को झकझोर देता और फिर कहानियाँ सुनाने के लिए मजबूर कर देता।

लेकिन धावो और लूट-खसोट की, अचानक हमलो के आतंक की, शोक और तीखे अपमान की ज़ेरे की कहानियाँ कितनी भयानक होती थी।

एक बार जब कहानी अपनी चरम सीमा पर थी, दो मेहमान, दूर से चले आ रहे दो मुसाफिर आऊल मे आ पहुँचे एक बूढा था और दूसरा जवान। नौजवान से आबाय अच्छी तरह परिचित था और उसे देखकर वह बहुत प्रसन्न हो उठा। वह आकिन बायकोकशे था जो जयलाव पर पिछले साल उनके यहाँ आया था और लगातार तीन दिनो तक उन्हे "क़ोज़ि-कोरपेश" और "बयान सुलू" गाकर सुनाता रहा था। दूसरा बूढ़ा आबाय

---

* जिर – आम तौर से इतिहास कथाओ से संबधित कथा-गीत।

** आयतिस – काव्यात्मक प्रतिद्वन्द्विता, कविता प्रतियोगिताओ मे रचे पद।

के लिए तो अजनबी था, लेकिन उलजान उसे अच्छी तरह जानती थी।

सलाम-दुआ व परिवार, घरबार के बारे मे सवाल-जवाब के बाद उलजान मुस्कुराती हुई आबाय की ओर मुड़ी।

"बेटे, तूने मुझे और दादी-अम्माँ, दोनों को परेशान कर रखा है। अब तेरे सामने कहानियों और गीतों का वास्तविक ख़ज़ाना है। यह आक़िन बरसाल है।"

बरसाल की छोटी-सी सफ़ेद दाढ़ी, उसके श्रद्धेय व्यक्तित्व और संगीतमय आवाज़ ने तुरंत ही लड़के का दिल जीत लिया। वह उन बूढ़ो जैसा तनिक भी दिखाई नही दे रहा था जो अपनी सारी जानकारी खुद तक ही सीमित रखने की कोशिश करते थे। स्वभाव से स्पष्ट, बेलाग और बातूनी, उसने एकदम शुरू से ही ऐसा आचरण किया जैसे पूरी ज़िन्दगी ही इस आऊल में एक कुटुम्ब की तरह बितायी हो।

"हाँ, तो बेटे, ऐसा कहते है," उसने मधुर मुस्कान के साथ आबाय से कहा।

श्रोता जब बाग-बाग़ हो जाता है,
आक़िन के गीत के जादुई प्रवाह मे बहा चला जाता है!

धन्य है वे, जो कहने-सुनने की क्षमता रखते है। अगर आबाय सुनते नही थकेगा तो वायकोकशे भी कहते नही थकेगा।"

जयलाव मे उनके आ जमने के बाद उलजान के यहाँ दूसरे आऊलों से अतिथि प्राय: आया करते थे। पड़ोसी क़बीले सिबान के बरसाल के पुराने साथी भी मिलने आ गये थे। रास्ते मे ममाय क़बीले का बायकोकशे भी उनसे आ मिला था। बायकोकशे बरलास का चेला था और हर बार गर्मियों मे कई-कई महीनों तक अपने उस्ताद के साथ आऊल-आऊल घूमा करता।

जिस मेहमाननवाज़ी से उनका स्वागत किया गया था, उससे दोनों आक़िनों का उत्साह तुरंत ही चौगुना हो गया। शाम को जब गोश्त पकाया जा रहा था, बरलास ने "कोबलन्दि बातिर" का गीत गाकर सुनाया। आबाय को तो ऐसा लगा जैसे इससे ज़्यादा ख़ूबसूरत चीज़ उसने

न कभी सुनी थी, न कभी पढी थी। जब गीत खत्म करके हाथ धोने के लिए बरलास उठा, आबाय ने पूछा.

"इस गीत के लिखनेवाले का क्या नाम था?"

"मेरे बच्चे, ऐसा कहा जाता है, यह गीत हमारे यहाँ पुराने जमाने से चला आ रहा है। लेकिन सादाकेन इस गीत को छोटे ओर्दे के कबीले के माराबाय से सुनने का दावा करता है।"

बरलास ने जिस सादाकेन का नाम लिया था, वह और कोई नही सुविख्यात आकिन सादक ही था।

आबाय खास तौर से कोबलन्दि की विदाई, तायबुरिल की दौड और काजान व कोबलन्दि के मुकाबले से प्रभावित हुआ था। वह इन दृश्यो से इतना उत्तेजित हो उठा था कि उस रात उसे देर तक नीन्द ही नही आयी थी।

दूसरे दिन उलजान ने अतिथियो से कुछ और दिन ठहरने का अनुरोध किया।

"जल्दी क्या है? कुछ दिन, मेहरबानी करके, हमारे साथ ठहर जाइये," उसने कहा।

वास्तव मे यह अनुरोध आबाय ही का था। पहले उसका विश्वास था कि हर बुद्धिमत्तापूर्ण और ज्ञानवर्द्धक चीज किताबो मे ही मिल सकती थी और ज्ञान तथा कला का वास तो सिर्फ मदरसे मे होता है। भला निजामी, नवाई और फुजूली का मुकाबला कौन कर सकता है या फिर शैख सादी और ख्वाजा हाफिज की विरल गीतिमयता या फिरदौसी की काव्यात्मकता कहाँ मिल सकती है? उसे नही मालूम था कि कजाखो के पास असन कयकि, बुखर जिराव, माराबाय, सादक जैसे कवि और "कोजि-कोरपेश" तथा "आकबाला-बजदिक" जैसे खजाने भी है।

न जाने उनके गीतो और कहानियो की जानी पहचानी भाषा के कारण या जिस ढग से बरलास और बायकोकशे कभी अपनी आवाजो को आरोह पर ले जाते, कभी अवरोह पर आकर सुकोमल आलाप लेते हुए और फिर तीव्र स्वरावरोह से तेजी के साथ उन्हे मुखरित करते, उसके कारण या दोम्ब्रा के कर्णप्रिय सुरो के कारण – चाहे इसका कारण कुछ भी हो, आबाय ने मान लिया, इन आकिनो के गीतो से बेहतर कोई चीज उसने कभी न सुनी थी।

लगातार कई दिन बीत गये, लेकिन ग्राबाय सुबह से शाम तक उनके साथ लगा रहा ग्रौर उलजान का ग्रोताव ग्राम बैठक-सा बन गया। जब दोपहर मे घोडियो के बच्चो को पकडकर बाँध दिया जाता, ग्राऊल के लोग वहाँ ग्रा जुटते, किमिज पीते ग्रौर तेज मदपान से जोश मे ग्राकर ललकार-ललकारकर ग्राकिनो के गीत सुनते।

दिन मे ग्राकिन ग्रपनी लम्बी गीति-गाथाएँ गाकर सुनाते ग्रौर बीच-बीच मे बुद्धिमानो की उक्तियाँ, बीग्रो[1] की पुरानी प्रतियोगिताग्रो के उद्धरण ग्रौर पुराने जमाने के गायको द्वारा रचे पद्यबद्ध रचनाग्रो को सुनाते। लेकिन जब ग्रधिकाश लोग ग्रपने कामो पर लौट जाते ग्रौर उलजान के परिवार के सदस्य ही वहाँ रह जाते, बरलास या तो ग्रपने, या ग्रपने समकालीनो के गीत सुनाते। ग्रपने कभी न खत्म होनेवाले स्मृति-भडार से वह शोजे, सिबानबाय, बालता, ग्राल्पिस तथा दूसरे ग्राकिनो के गीत निकालते जाते। कथाग्रो के इस ग्रनन्त प्रवाह मे उनकी रुचि विशेष रूप से उनमे थी जो ग्रपनी जनता की ग्राशाग्रो की कहानी सुनाती थी।

इन कहानियो, मोतियो, सरीखे इन शब्दो को – जिनमे से हरेक शब्द पारखी कानो के लिए बहुमूल्य उपहार-मे थे – सुनते समय ग्राबाय ग्रौर उसकी माताग्रो को गहरा ग्राते शाम के धुधलके का कभी ध्यान ही नही रह पाता। ग्रोर ग्राबाय को लगता ऐसे क्षणो मे दिन मे गा रहे होते बरलास तनिक भी नही रह जाते। दिन के बरलास तो उत्साह बढाने के लिए बस ठिठोलिये-से गाते होते थे जबकि शाम के बरलास शिक्षक ग्रौर विचारक बन जाते थे।

राज गहरा है मेरे ख्यालो का
कुहरो से भी गहरा जो है दूर,
रोदन है मुझमे शोक व ग्रकेलेपन का
वास्ते नदिया के जो है दूर।
उमडता-घुमडता पानी इसका,
बहा ले जाता मेरे गीतो को दूर।

"वह इतना दुखी क्यो?" कभी-कभी ग्राबाय ग्रपनी माँ से पूछ लेता था।

---

[1] बी – बाय, धनी ग्रादमी।

"उसमें एक महान भावना है," वह जवाब देती। "वह किसी अशोभन चीज की प्रशसा की ओर कभी उन्मुख नही होता। वह उपहार बटोरने आऊल-आऊल नही जाता। उससे सीखो और उसके शब्दो को गाँठ से बाँध लो।"

आबाय आकिन का एक-एक शब्द मन मे बैठाये जा रहा था वह उन पदो को सुनकर चकित और प्रसन्न था जो तत्क्षण वही, उसकी माँ के ओताव के नीचे रचे जा रहे थे। उनमे देश के शासको के बुरे कार्यो की कटु आलोचना होती।

बेमानी है, कत्ल कितनो का करते है हुक्मरान
होठ लोगो के सदा ही करते रहेगे आलोचन
है चोर, हत्यारा जो गद्दी पे बैठ करता है हमारा शासन
है वह मुर्दाखोर, है वह हिंस्र पक्षी शैतान!

आबाय अपने पिता के कही बाहर चले जाने से खुश था और वह लम्बे अर्से तक न लौटे, ऐसी मनौती कर रहा था। सौभाग्य से बरलास के वहाँ रहते वह एक बार भी मिलने नही आये थे। वह बहुत से बुजुर्गो के साथ आऊलो का दौरा कर रहे थे और इसी कारण उलजान बरलास को अपने ओताव मे रोक पायी थी। कोनानबाय के घर पर रहते आकिन और गायक ज्यादा समय तक टिक नही सकते और इतने खुले दिल से गाना भी असभव होता।

शासको पर वह गीत रचते समय बरलास के दिमाग मे कौन था? निश्चित रूप से वह कभी कुछ न कहता लेकिन आबाय ने उन पदो की व्याख्या अपने ढग से कर ली थी। जीवन ने उसके सामने कई जीते-जागते उदाहरण प्रदत्त कर दिये थे।

बरलास ने गाया.

ऊपर से आये हुक्म के अल्फाजो पर
सीधी तन जाती है पूँछ उसकी आकाश की ओर,
बेचारा उसमे जुट जाता है फिर इनाम को तरसता है।
चाहता है अधम भर देना ख़ौफ हम सब मे
पर दिल मे खुद अपने मालिक का खौफ खाये रहता है।

"यही तो वोलोस्त का प्रमुख मायबासार है," आबाय ने सोचा।

शासक के आगे पूँछ वह हिलाता है,
तुम से एक के नौ वह वसूलता है।
गरीबो के भेड वह हॉक ले जाता है,
जो पा जाता है, हजम कर जाता है।
उसकी चोरी का फल आऊल भुगतता है,
रक को राजा-सा हरजाना देना पडता है।
कर हर आदमी पर वह एक-सा लगाता है
और तेरी मेहनत का फल स्वाहा हो जाता है।

बरलास ने इसे दोम्ब्रा के साथ सुर मिलाकर गाया और गहरी सॉस ली।

खुद लडके और उसी के कारण उसकी मॉ के अनुरोध पर बरलास और बायकोकशे आखिरकार एक महीने तक उनके साथ रुके रहे। उसकी उन दोनो के साथ गाढी छनने लगी और रात मे वह बरलास की खाट की बगल मे ही सोता और दिन मे उनके प्रति अपना आदर प्रकट करने के लिए जो बन पाता, सब करता। यह बात बूढे का दिल छू गयी और एक दिन जब वे अकेले थे, उसने गाया

आबाय-शिरागिम*, बडा तेज है तुम्हारा आगे बढना,
क्या करोगे तब जब गुजर जायेगा बचपना?

फिर उसने अपना दोम्ब्रा लडके को सौप दिया।

"बच्चे, यह ले लो और इसके साथ ही मेरी दुआएँ भी। मै अपने दिल से कह रहा हूँ!"

भावावेग के कारण आबाय के मुँह से शब्द नही फूटे।

ऐसा आकिनो की रवानगी के समय हुआ। सवेरे जब गायको के घोडो के जीन कसे जा रहे थे, आबाय अपनी मॉ को एक ओर ले गया।

---

* शिरागिम – स्नेह का एक शब्द। (शब्दश: मेरा चिराग)।

"आपा, कृपा करके उन्हें कोई अच्छी-सी चीज़ भेंट में दीजिये।"

उलजान ने कोई जवाब नही दिया, लेकिन जब मेहमानों ने छककर क़िमिज़ का पान कर लिया, उसने बोलने के लिए अपना सिर ऊपर उठाया। वे ठहरकर नम्रता से प्रतीक्षा करने लगे।

"जब मेरा बेटा स्कूल से लौटा, बीमार पड़ गया और ठीक नहीं हो सका," उसने कहा। "आपके लाये गीतों ने उसे भला-चंगा किया। आपसे ज़्यादा स्वागतयोग्य कोई भी मेहमान कभी न आया था।"

आबाय को देखकर ही पता चल जाता था, उनके वहाँ ठहरने से उसे कितना अच्छा लगा था। वह वास्तव में ही पूर्ण स्वस्थ हो गया था।

"आप हमारे यहाँ और भी जल्दी-जल्दी आया करे," उसने आगे कहा। "दादी-अम्माँ और मुझे आपसे मिलकर हमेशा ख़ुशी होगी। आपकी यात्रा सुखद हो! हमारा शुक्रिया कबूल करें और वह छोटा-सा उपहार भी, जो बाहर आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। बुरा न मानेंगे। अच्छा दोस्तो, अलविदा।"

आबाय मेहमानों के साथ-साथ बाहर आया। दो ख़ूबसूरत घोड़े ले आये गये थे – बरलास के लिए एक हृष्टपुष्ट काला घोड़ा और बायकोकशे के लिए एक चार साल का क़ुम्मैत।

उपहार में मिले घोड़ों को थामे आक़िन ज़ोर-ज़ोर से "ख़ोश! ख़ोश!"* कहते हुए अपने सफ़र की राह पर चल पड़े।

आबाय में बालसुलभ कृतज्ञता की एक लहर दौड़ गयी। अपनी माँ की विशाल आकृति को बाँहों में भरते हुए उसने उसके गालों, आँखों और होंठों को चुम्बनों से भर दिया।

---

* ख़ोश – अलविदा।

बवण्डर

१

क़ोनानबाय के ग्राऊलों ने उस साल समय से पहले ऊन-कटाई पूरी कर ली थी। ग्राज तक पहली बर्फ़ गिरने से पहले उसने कभी भी पतझड़ के चरागाहों से कूच करने का हुक्म नही दिया था। लेकिन इस बार उसने ग्रकस्मात् ही ग्रक्तूबर के एकदम शुरू में ही जाड़े के पड़ावों की ग्रोर जाने को कहा। उसके इरादों का पता किसी भी दूसरे बुज़ुर्ग को न था हालाँकि वे सब क़ोनानबाय के ग्राऊल से निकट रूप से सम्वंद्ध थे।

सुयून्दिक़ कुछ नही समझ पा रहा था। एक बार बोजेय से मिलने ग्राकर उसने पूछा :

"भई, ग्रपने स्वजन के हाल की कार्रवाइयों से क्या मतलब निकालते हो? वह इतना उतावला क्यों है?"

सुयून्दिक़ ग्रौर बोजेय ग्रकेले न थे। ग्रोताव में तीसरा ग्रादमी जिगितेक का बोजेय के बाद दूसरा ज्येष्ठ हल्की दाढ़ियों ग्रौर लम्बी नाकवाला तुसिप था।

"क़ोनानबाय ने इससे पहले तो कभी ऐसा नहीं किया है," उसने गंभीरता से ग्रपनी राय ज़ाहिर की। "क्या उसके जानवरों के लिए वहाँ काफ़ी घास न थी?"

बोजेय उसकी ग्रोर देखकर हँस पड़ा। सुयून्दिक़ के मन में सन्देह जाग उठा। कही वह कुछ छुपा तो नही रहा है?

"भला उसके जानवरो को चारे की कमी कैसे हो सकती है?" उसने गहरी साँस छोड़ते हुए पूछा। "कोई भी चरवाहा उसके जैसा चरागाह

खाली करना नही चाहेगा! जरूर ही कोई दूसरा कारण होगा। अभी उसके जानवरो पर गोश्त चढना शुरू ही हुआ था और वह जाडे के पडावो को कूच कर रहा है। बहार आने तक वह अपने जानवरो को खिलायेगा क्या? और जल्दी रवाना होने के लिए उसने भेडो की ऊन-कटाई तक इस साल बहुत पहले कर ली है।"

वह फिर बोजेय की ओर मुखातिब हुआ।

"शायद तुम्हे कुछ मालूम हो? अगर मालूम है तो कह भी डालो!"

"क्या तुम समझते हो कोनानबाय ने मुझसे सलाह ली है?"

"अगर उसने सलाह न भी ली हो तो तुम्ही एक ऐसे हो जो उसके इरादो के बारे मे बता सकते हो। तुम्हारा क्या ख्याल है? मेरी समझ मे तो कुछ भी नही आ सका।"

"अगर कोनानबाय ने यह जल्दबाजी बहार मे की होती," बोजेय ने कहना शुरू किया, "तो मै सोचता, वह वाक लोगो की जमीन कब्जे मे लेना चाहता है। अगर वह गर्मी मे इतनी जल्दबाजी करता, मै कहता, उसे केरेय की जमीन पर लालच आ गया है। लेकिन इन हिस्सो मे तो सारे चरागाह तोबिक्ति लोगो के है। दूसरो के जाडे के स्थल तो बहुत दूर है शायद हम उसे अपने ही लोगो की जमीने हथियाते देखे याद है न चील त्नेया की कहानी जिसने अपने मालिक पर ही हमला कर दिया था?"

स्पष्ट रूप से बोजेय की अटकले अवसादकारी थी और उसके शब्दो ने सुयून्दिक को और भी क्षुब्ध कर दिया था। जिस बला की ओर बोजेय ने इशारा किया, वह किस पर आनेवाली थी? अभी सब कुछ कितना शान्त प्रतीत हो रहा है।

"मुझे लगता है," उसने आह भरकर कहा, "कोनानबाय हम सब का सफाया करने पर तुल आया है। उसने हमे जी भरकर सताया है। जुवानतयाक मार भगाये गये। अनेक लोगो के पास जो कुछ लेने लायक था, उसने ले लिया। कोकशे भी लूटे जा चुके है। वह अब और क्या चाहता है? उत्तर से दक्षिण तक तीस खेमे उसके अधीन है। यहाँ वसत के चरागाह है तो वहाँ गर्मियो के तो उस ओर उसके पतझड के पडाव है। और जहाँ तक जाडे के पडावो का सवाल है, उसके पास उनकी भी कोई कमी नही।"

इर्गिजबाय चरागाह के हिसाब से जिगितेक से समृद्ध थे। यह ख्याल

तुसिप को साल रहा था। सुयून्दिक की बाते सुनते हुए वे सारे खूबसूरत चारागाह उसकी आँखो के आगे नाच गये और उसने कटुता से आह भरी।

"उसके चरागाह एक दूसरे से एकदम करीब-करीब भी है," सुयून्दिक ने आगे कहा।

"ठीक बात है, वह और क्या चाहता है?" तुसिप ने हामी भरी। "उसके पास सबसे अच्छे चरागाह है, चारो ओर से घास के मैदान से भरपूर तालाब है, प्रचुर नदियाँ और विशाल झीले है।"

"दूसरो को कई कबीलो के साथ मिलकर गये-बीते सोते के किनारे इकट्ठे भीड लगानी पडती है। अब उसके आऊल मे से प्रत्येक कई अच्छी नदियो मे से चुनाव कर सकता हे," सुयून्दिक ने उसका समर्थन करते हुए कहा।

"और कितने कम समय मे उसने यह सब हासिल कर लिया! न जाने उसके भेजे मे और क्या विचार है?"

"यही तो बात है वह और क्या चाहता है?"

बोजेय चुपचाप सुनता रहा था, लेकिन अब अपना हाथ हिलाते हुए उसने कडवाहट से कहा

"अगर इन बातो का फैसला करने का तुम्हे कोई अधिकार मिला होता तो इस बहस मे कोई तुक भी होता! लेकिन तुम्हारी शिकायतो मे तुक ही क्या है?"

कुछ देर तक वह तुसिप की ओर देखता, चुपचाप बैठा रहा।

"बेचारे असहाय लोगो को उनके विचार हमेशा काटते रहते है। लेकिन ख्याली पुलाव पकाने से हम लोगो का कुछ होनेवाला तो है नही। जब तुम लाचार हो तो बात करने से फायदा ही क्या?" उसने कुछ गुस्से से भौह चढाकर कहा।

ऐसे ख्याल बहुत समय से बोजेय को घुन की तरह खाये डाल रहे थे, यह बात तुसिप अच्छी तरह जानता था। उनके महान पूर्वज केगिरबाय की कब्र जिगितेक के दोनो सम्बन्धित परिवारो के खेमो के एकदम करीब मे पडती थी। लेकिन वह दिन भी आया जब कोनानबाय ने जाडा व्यतीत करने के लिए इस इलाके पर कब्जा जमा लिया। कहने को तो कोनानबाय ने तुसिप को बुलाया था क्योकि वह आसानी से उसकी इच्छा के आगे

झुक जाता था। जब वह लौटा तो उसने बोजेय को समझा-बुझाकर मना करने की कोशिश की और इस तरह क़ोनानबाय पर हमला करने के लिए एक बहुत ही अच्छा मौक़ा हाथ से निकल गया था।

चाहे वह सफल हो पाये या नहीं, बदला लेने के लिए काफ़ी मज़बूत न होने के कारण बोजेय को अपना वैर-भाव छुपाकर रखना पड़ता था। लेकिन जब कभी भी बातचीत का रुख़ क़ोनानबाय की ओर मुड़ता, वह अपना ग़ुस्सा छुपा पाने में असमर्थ हो जाता और जितना संभव हो पाता वह तुसिप की इर्गिज़बाय के मुखिया से झगड़ पड़ने के लिए उकसाने की कोशिश कर पाता। "क़ोनानबाय के साथ हम काफ़ी बातचीत कर चुके," वह कहता। "अब समय कार्रवाई का है। अगर बहादुर हो तो मर्द बनो। अगर नहीं तो जैसे बने निभाये जाओ। उसके सामने घुटने टेक दो!" उसने यही बात सुयून्दिक़ से और बायदालि से जिसे वह जिगितेक का विश्वस्त समर्थक मानता था और जो उसकी भावनाओं से परिचित भी था, कही।

लेकिन उन तीनों में से हरेक से उसने अलग-अलग और गुप्त रूप से बात की थी।

२

क़ोनानबाय के आऊल सात मंज़िलों में कोलक़यनर पहुँचे। जैसे ही वे अपने अलग-अलग जाड़े के पड़ावो की ओर बढ़नेवाले थे, वैसे ही क़ोनानबाय से यह हुक्म मिला कि उसके आदेश के बिना कोई अपनी जगह न छोड़े। मायबासार को साथ ले वह घोड़े पर चिंगीज़ पहाड़ियो की ओर रवाना हो गया। दूरी बहुत ज़्यादा न थी और उन्होंने अपना अधिकांश समय इलाक़े की देखभाल में बिताया। झुटपुटा उतर आने पर वे आऊल लौटे और क़ोनानबाय अपनी सबसे बड़ी बीवी कुन्के के ओताव में आ पहुँचा।

उस दिन वहाँ बहुत-सी औरतें जमा थीं: क़ोनानबाय की माताएँ, उसके मरहूम पिता की पत्नियाँ, चाचाओं की पत्नियाँ और दोनों पीढ़ियों की महिला रिश्तेदार। उनके आऊल जो कोई बीस के क़रीब थे, बहुत पहले ही क़ोनानबाय के मुख्य कौटुम्बिक निकाय से अलग हो चुके थे और अब

स्वाधीन रूप मे विचरण करते थे। वे परम्परागत भेंट-यात्रा पर आये थे और जैसा कि रिवाज था, अपने साथ बहुत-सी खाने-पीने की चीजे लाये थे।

साल मे दो बार इन आऊलो की औरते कोनानबाय के ओताव के लिए उपहार के तौर पर चीजे लाती थी—पहली बार वसन्त मे जब आऊल कोकतेव पहुँचते थे, जाडे के पडावो मे रहने के कारण लम्बे विछोह के बाद एक-दूसरे को देखने के लिए वे उतावली होती। सब से पहले वे जेरे के मुख्य ओताव मे जाती। दूसरी बार, वे सर्दी शुरू होने से पहले इकट्ठी होती।

मायबासार द्वारा सादर दरवाजा खोले जाने पर जब कोनानबाय की प्रभावशाली आकृति दिखाई पडी, सारी हँसी और बातचीत थम गयी।

पुरुषो के बैठ जाने पर कोनानबाय को सम्बोधित करने की हिम्मत करनेवाली एकमात्र औरत उसके पिता की दूसरी पत्नी और उम्र मे जेरे से दूसरी तानशोलपान थी।

"प्यारे, तुम्हारी माताएँ और दूसरी बढी-बूढी औरते तुम्हारे लिए इस मौसम के उपहार लायी है। हम तुम्हारी पूज्य माता जी को अपने सम्मान प्रकट कर चुकी है और अब अपनी अलग राह चलने की तैयारी कर रही है।"

पिछले कुछ वर्षो से कोनानबाय जेरे के लिए हमेशा "पूज्य माता जी" शब्द ही सुनता आया था और दूसरो की तरह तानशोलपान भी अपनी भूतपूर्व सौत के लिए यही शब्द इस्तेमाल करती। लेकिन कोनानबाय ने कोई जवाब नही दिया। तानशोलपान उसके परिवार की अपनी ही मर्जी चलानेवाली माताओ मे थी। ऐसा कहा जाता है, अपनी जवानी मे अपने आऊल के ढोरो पर हमला करनेवाले कजाखो के एक दल को उसने हाथ मे सगीन लेकर खदेड दिया था। तानशोलपान के चार बेटे थे और कई बेटोवाली छोटी बीवियाँ आम तौर से दुराग्रही और दुस्साहसी हो जाती थी।

उसने कोनानबाय की चुप्पी का बुरा मान लिया।

---

* एक पति की पत्नियो को कुन्देस कहा जाता था—सौतने।

"हम कुन्के को नही बल्कि तुम्हे सम्मान देने आयी है, हालाँकि तुम छोटे हो, फिर भी हमारे मुखिया हो," उसने फिर कहा। "कल तुमसे अलाहदा होकर हम अपने जाडे के पडावो को कूच कर जायेगी। वहाँ हम जाडे भर मांद के जानवरो की तरह पडी रहेगी। औरत की यही किस्मत है। मेरे लाये उपहार आनेवाले साल मे तुम्हारे लिए खुशियाँ लाये। बेटे, वे तुम्हारी खुशी के लिए मनौतियाँ है!"

कोनानबाय ने उसकी ओर देखा और सिर हिला दिया।

"आप जाडे के लिए अलाहदा होने की बात कह रही है न?" कुछ देर चुप रहने के बाद उसने पूछा। "लेकिन अगर हम अलाहदा हो ही न, तब? तब आपको फिर से उपहार तैयार करने पडेगे!"

वह साभिप्राय मुस्कुरा उठा। औरते भी जवाब मे मुस्कुरा पडी, हालाँकि मतलब किसी की समझ मे नही आया था। लम्बी, काली, दूबले-पीले चेहरेवाली कुन्के ने कोनानबाय की खुशमिजाजी से लाभ उठाने का फैसला किया।

"लेकिन मैने तो नौकरो को कल बोरिया-बिस्तर खोलने और ओताव गाड़ देने को कह दिया है। क्या हमारा सफर जारी रहेगा? अब तो हम एकदम दुविधा मे है। किसी को नही मालूम, हमे ठहरना है या कही जाना।" उसने सवाली नजरो से मायबासार की ओर देखा।

"लेकिन आपको फिर से उपहार देने होगे," उसने मुस्कुराते हुए कहा।

"बोरिया-बिस्तर खोलने और ओताव गाडने का आदेश मत दो," कोनानबाय ने कहा। कल हम फिर आगे चलेगे।"

"क्या हम भी, प्यारे बेटे? किस नयी जगह तुम हमे ले जाओगे?" तानशोलपान ने उसकी ओर आग्रहपूर्वक देखते हुए पूछा।

हम सब इकट्ठे ही सफर करेगे। कल सुबह-सुबह हम चिंगीज पहाडियो की ओर चल पडेगे। हम चरागाहो का निरीक्षण कर चुके है और आऊलो के लिए जगह ढूँढ चुके है। यह पुरुषो को बता दीजिये। उन्हे तैयार होने कह दीजिये," कोनानबाय ने जवाब दिया।

इर्गिजबाय के बीसो आऊल तडके ही चिगीज पहाडियो के हृद्स्थल की ओर कूच कर गये।

वे सब के सब बिना इधर-उधर भटके एक साथ आगे बढ़ चले।

विचरण के दौरान आम तौर से आऊल उड़ानें भरते सारसों या हँसों की तरह फैले-बिखरे होते। लेकिन इस बार वे बाज़ के झपट्टे से सिमट आये बत्तख़ों के झुड की तरह इकट्ठे गुँथे हुए थे। यह असाधारण यात्रा एकदम अजीबोगरीब ढंग से शुरू हुई। सुबह की पहली किरण के साथ ही क़ोनानबाय ने आदेश दिया:

"कोई मटरगश्ती नही होनी चाहिए! जल्दी करो! और मैं रास्ते में किसी को पीछे रह जाते नही देखना चाहता! हम इकट्ठे आगे बढेंगे और कही पड़ाव नही डालेंगे," उसने अपने सन्देशवाहको से कहा और वे विभिन्न आऊलों की ओर दौड़ पड़े।

मार्ग की बायी ओर एक महाकाय ऊँची पहाड़ी थी। क़ोनानबाय मायबासार और कुन्के से पैदा हुए बड़े बेटे क़ुदायबेर्दि के साथ घोड़े पर आऊल से आगे बढा और पहाड़ी की चोटी पर जा पहुँचा। उसका क़ुम्मैत सुबह के आकाश के परिपार्श्व में विलक्षण रूप से विशाल, लम्बा और दबंग लग रहा था। उस चतुष्पद ने अपने कान फड़काकर जैसे कुछ ध्यान से सुना और अपना सिर इस तरह पलट लिया मानो नीचे से आते जन-प्रवाह की इतनी धीमी गति के कारण बेताब हो। जन-प्रवाह से ऊपर पहाड़ी पर कोनानबाय ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे जनसमुदाय को सम्बोधित करनेवाला हो।

आम शोर-गुल के बिना अपने जानवरों को कूच के लिए तैयार कर, बीसों आऊल सूर्योदय से पहले सज-बज गये थे। लेकिन अब जब वे चल पड़े थे, हो-हल्ला शुरू हो गया था और ख़ानाबदोश कारवाँ के शोरगुल से हवा भर उठी थी: भारी गठरी के तीखे चर्मबन्धनों से पीड़ित हो ऊँट बिलबिला पड़े, अपनी माँ से जुदा हो गये उष्ट्रशावकों ने रिरियाना शुरू कर दिया, कुत्तों की बेमतलब भूँक, कही मालवाहक ऊँटों को इकट्ठा करते घुड़सवारो की चीखे, बच्चों के रोने और माताओं की डाँट-फटकार गूँज उठी। चारो ओर से पशु झुडों और ढोरो पर फटकारें बरसाते चरवाहों की आवाज़ें फैल गयी।

जब सभी आऊल काफ़ी दूरी तय कर चुके, क़ोनानबाय क़मिसबाय और क़ुदायबेर्दि की ओर मुड़ा:

"आऊल के सभी बुज़ुर्गो को बुला लाओ," उसने कहा।

दोनों घुड़सवार तेज़ी से पलट पड़े। लम्बा, गठीला कुदायबर्दि और

हृष्ट-पुष्ट कमिसबाय नीचे जन-प्रवाह के शीर्ष भाग की ग्रोर ढलानो से तेजी से उतर चले। ग्राऊल प्रमुखो के साथ घोडे पर चल रहे लोगो के एक दल के पास पहुँचकर वे पल भर के लिए रुके ग्रौर फिर मुड गये। दो घुडसवार तुरत ही हिरावल से ग्रलग होकर पहाडी की ग्रोर चल पडे जहाँ कोनानबाय उनकी प्रतीक्षा करता खडा था।

कुदायबेर्दि के ग्राखिरी ग्राऊल तक पहुचने से पहले ही कोनानबाय के पास तीस ग्रादमी पहुँच चुके थे ग्रौर वह उनके बीच बैठा हुग्रा था। पतझड का दिन था, हवा नही चल रही थी ग्रोर बादल विहीन पीताभ व ग्रनन्त ग्राकाश पहाडी पर फैला था। सुबह के विशाल सूर्य के गोले ने दूर-दूर तक उत्ताप बिखेरना शुरू भी न किया होगा जब सभी ग्राऊल के घुडसवार कोनानबाय की ग्रोर बढ चले।

उनके ऊपर ग्रपरिमित चिगीज पहाडियाँ उत्तुगमान थी। इसके सारे उत्तुग शिखर भोर के धुधलके मे डूबे थे कि सहसा ही धूप की बाढ ने झिलमिलाती पर्वत श्रेणियो, वनो ग्रौर चरागाहो को प्रतिभासित कर दिया। कारवाँ के ग्रागमन से खबरदार ग्रसख्य भारद्वाज ग्राकाश की ग्रोर उड चले ग्रौर उनकी चहचहाहट से ग्रासमान गुजायमान हो उठा। मुश्किल से दिखाई दे रही ऊँचाई पर उडे चले जा रहे सारसो की कतार ने उनकी ग्रनोखी विदाई का जवाब "टू-टू" करके दिया।

कुदायबेर्दि ग्रौर कमिसबाय सारे ग्राऊलो का चक्कर लगा ग्रब तीन बूढे लोगो के साथ झाग-झाग हुए घोडो पर कोनानबाय के पास लौट ग्राये थे। उनमे से एक कोनानबाय का सौतेला भाई जाकिप था। उनके सलाम का जवाब दे, इर्गिजबाय प्रमुख ने ग्रपने घोडे को एँड लगायी ग्रौर छोटा-सा हुक्म दिया, "ग्राग्रो, चले!"

कोनानबाय जब बुजुगो के साथ चिगीज पहाडी की ग्रोर बढा तो घोडो की टाप से पहाडी काँप उठी। पूरे रास्ते भर खानाबदोश उनके लिए रास्ता छोड एक ग्रोर जा खडे होते लेकिन घुडसवारो को कोई जल्दी न थी।

ग्रपने चचाग्रो, भाइयो, भतीजो तथा दूसरे सम्बन्धियो से घिरा कोनानबाय घोडे पर बीच मे चल रहा था।

ग्रपने बाप की सबसे बडी बीवी जेरे के इकलौते बेटे कोनानबाय को विरासत मे मुख्य ग्रोताव मिला था ग्रौर वह प्रचुर सम्पदा का मालिक तथा निर्द्वन्द्व व्यक्तित्व से सम्पन्न था। उम्र मे भी वह सबसे बडा था ग्रौर उस-

के दादा इर्गिजबाय के उत्तराधिकारियो मे भी कोई ऐसा न था जो उसके खिलाफ आवाज उठाने की हिम्मत कर सके। बीसो आऊल मे एक भी आदमी न था जो असन्तोष तक प्रकट करने की हिम्मत रखता हो। और कोनानबाय को अगर समर्थन की आवश्यकता होती, वह उसे बिना चू-चपड के मिलता। उसकी इच्छा शक्ति, उसकी जबान से निकली हुक्म की आवाज ही सबको उसके अनुकूल आचरण करने को मजबूर कर देती। चाहे यह दूसरो की जमीन हथियाने या बेकाबू हुए कबीले को दबाने का सवाल हो, उसकी भोहो मे तनिक बल पडा नही कि आऊल के सारे के सारे बुजुर्ग कमर कसकर तैयार हो जाते। यहाँ तक कि घरेलू मामलो मे भी, चाहे वे कितने ही जटिल और विवादास्पद हो, झगडा शान्त करने के लिए उसका नाम भर ले लेना काफी होता। एक-दूसरे को टुकडे-टुकडे कर देने को तैयार सरकश सौतिने खुले आम और शोरगुल के साथ झगडने से भय खाती। उनके देवर या जेठ और बुजुर्ग रिश्तेदार जल्दी से जवान-बूढी दोनो के गुस्से शान्त करा देते। जो बात से न मानती, उन्हे लात से चुप करा दिया जाता।

कोनानबाय के चारो ओर ठोस रूप से टोलीबद्ध बीसो गाँव एक ही माँद के भेडिये थे। पूरे विशाल तोबिक्ति कबीले मे एकमात्र इर्गिजबाय ही बिना किसी प्रतिरोध के अपनी मर्जी चला पाते। जहाँ हुक्म नही चल पाता, वहशी ताकत का इस्तेमाल किया जाता। इर्गिजबाय ने छोटी, लेकिन ऐसी सुगठित शक्ति कायम कर ली थी जिससे तोबिक्ति के दूसरे कबीलो पर पर्याप्त असर पड सके। जो उनके लिए काम के थे, वे शीघ्र ही उनके स्वजन बन गये। पुरानी कहावत "जित्ती लम्बी रस्सी उत्ती लम्बी फाँस" पर चलते हुए, वे अपनी मशाएँ पूरी करने के लिए अर्थ, साम, दड, भेद – सब का इस्तेमाल करते। कभी वे जानबूझकर दूसरो को झगडो मे उलझा देते और उन्हे उकसाने के लिए चुपके से चालबाजियाँ खेलते, फिर दोस्तो व बचाव करनेवालो की तरह आगे आ जाते। इस तरह वे अपने साथियो और अपने ऊपर निर्भर करनेवालो का दायरा लगातार बढाते जाते।

इस तरह इर्गिजबाय मे मे प्रत्येक या तो रिश्तेदारी या दोस्ती के सम्बन्धो से अन्य बीसो मे से प्रत्येक आऊल से सम्बद्ध हो गये थे। कोनानबाय को आज जो शक्ति प्राप्त थी, वह इसी जालसूत्र के कारण। अभी अपने आगासुल्तान के साथ घोडे पर चल रहे इन बुजुर्गो को इस सफर

की मंज़िल या उद्देश्य की कोई चिन्ता न थी। "उसका चाहे जो भी फ़ैसला हो, हमारे लिए फ़ायदे का ही होगा। समय आने पर इसके बारे मे हम सब कुछ जान ही जायेंगे।"

क़ोनानबाय के कुम्मैत घोड़े की तेज़ चाल उसके साथियों को साथ बने रहने के लिए जल्द दुलकी चाल से चलने पर मजबूर कर रही थी। अपने अनुगामी वृन्द से एक या दो क़दम आगे चलते हुए, क़ोनानबाय किसी इमाम से भिन्न नही लग रहा था जो नमाज़ के दौरान धर्मानुयायियो की भीड़ के आगे, सामने खड़ा रहता है। हमेशा की तरह उसका स्थान सबसे आगे था – नेतृत्व करता हुआ और अगर कोई नौजवान घुड़सवार आगे जाने लगता, उसे बुजुर्ग रुखाई से रोक देते। क़ोनानबाय की कानी आँख अपने आस-पास हो रही किसी चीज को देखने से न चूकती।

जो लोग उसे घेरकर चल रहे थे, वे सब के सब इर्गिज़बाय थे। प्रत्येक आऊल मे दूसरे क़बीले के लोग भी थे लेकिन वे बस मामूली चरवाहे, पहरेदार और "पड़ोसी" हुआ करते – ऐसे लोग जिनकी फैसले का मौका आने पर कोई गिनती न होती।

क़ोनानबाय और उसके अनुगामी वृन्द कारवाँ से आगे निकल गये। उसने बीसों आऊल के बुज़ुर्गो को निर्देश दिये, जिस योजना को पूरी करने के लिए वे जा रहे थे और ओताव कहाँ खड़े करने थे, इसके बारे में बताया। उसके अल्फ़ाज़ ऐसे थे जिनमे बहस की कोई दरकार न थी – वे किसी क़बीलाई बैठक में दिये गये किसी सुझाव जैसे न थे बल्कि पूर्व निश्चित आदेश-से थे।

३

छह दिन बाद उसी रास्ते खानाबदोशों का एक और कारवाँ गुज़र रहा था। यह बोर्कशी और बोर्सक़ लोग थे। क़िज़िलशोक़ि का चक्कर लगाते हुए वे भी चिंगीज़ पहाड़ियों के हृद्स्थल की ओर बढ़ रहे थे।

तथापि यह दल एक लम्बी ख़स्ताहाल पाँत की तरह आगे बढ़ रहा था –

हर ग्राऊन्न ग्रलग-ग्रलग चल रहा था। गिनती भर के लोग घोडो पर सवार थे – सिर्फ चरवाहे ग्रौर कुछेक ग्रौरते। बाकी सब लोग, बच्चे, बूढे मर्द ग्रौर ग्रौरते सामान ढोनेवाले ऊँटो पर चल रहे थे। उन ग्राऊलो को देखकर कोई सोच सकता था, शायद उन्होने ग्रपने जानवरो को जाडे के चरागाहो पर पहले ही रवाना कर दिया है ग्रौर सिर्फ जरूरत भर घोडे ग्रपने साथ रख लिये है। यहाँ तक कि मर्द भी दो सालवाले ऊँटो या बैलो पर चल रहे थे। हालाँकि घोड़ो की कमी का कारण एकदम कुछ ग्रौर ही था यह दोनो कबीले गरीब थे। सिर्फ तीन ग्राऊल ग्रच्छी हालत मे नजर ग्रा रहे थे सुयून्दिक, जेकसेन ग्रौर सुगिर के।

बिना हँसी-मजाक किये बुजुर्ग लोग चुपचाप कुछ नौजवानो से घिरे घोडो पर ग्रागे बढ रहे थे। भेड की पुरानी खाले ग्रौर टोपियाँ लगाये बूढे कुहासा ग्रौर पतझड के ग्राकाश के रग मे घुलमिल गये लग रहे थे। सुयून्दिक उदास था। फैसलाकुन कार्रवाइयो मे लोग उससे राह दिखाने की उम्मीद करते थे लेकिन वह ऐसा कर पाने मे खुद को ग्रसमर्थ पा रहा था।

"जब हम वहाँ पहुँच जायेगे तो देखेगे। हम खुद उससे बात करेगे। वही हमे बताये, भला क्या सब को छोड-छाडकर खुद-ब-खुद कूचकर जाने का कोई रिवाज या कानून है।" ग्रपने कबीलेवालो के सवालो से बचने के लिए उसने बहाना बनाया।

जेकसेन ने तो उसके हाँ मे हाँ मिलाया लेकिन दूसरे जवान ग्रौर बूढो का पारा चढा हुग्रा था। कोनानबाय पतझड-चरागाहो की ग्रोर ग्रसामान्य रूप से पहले रवाना हो गया था। किसी तरह की गडबडी की ग्राशका से दूसरे कबीलो ने भी जल्दी-जल्दी ग्रपने भेडो की ऊन-कटाई की ग्रौर पीछे-पीछे रवाना हो गये। पूरी गर्मी भर बोकेशियो ने ग्रागासुल्तान को ग्रपनी निगाहे फेर लेते महसूस किया था। उनके साथ झगडा करने के न जाने कितने बहाने बनाये थे। बुरी तरह से परेशान सुयून्दिक एक बार फिर बोजेय के यहाँ गया था लेकिन वह उसे कुछ भी नही बता पाया था।

कोनानबाय के पीछे-पीछे सुयून्दिक के चल पडने पर दूसरे कबीले भी परेशान हो उठे ग्रौर बोजेय व तुसिप सहित इर्गिजबाय के साथी ग्रौर दुश्मन दोनो शीघ्र ही कूच कर गये।

चिगीज मे बोकेशियो के जाड़े के पडाव बड़े न थे। बीच मे जेकसेन का

7—3336

पडाव था जहाँ वसन्त मे कोदर मारा गया था। पहाडियो के पास पहुँचने के बाद खानाबदोश के दल अपने-अपने पुराने चरागाहो की ओर बढने के लिए अलग-अलग हो गये।

सुयून्दिक ओर जेकसेन के आऊल नदी के पास पहुँच गये और जगल के किनारे-किनारे आगे की ओर बढे। निचली पर्वतमालाओ को पारकर वे आखिर अपनी मजिल पर पहुँच गये। यह है काराशोकि के पदतल पर मैदान, यह है वह चोटी, जहाँ से कोदर को फेका गया था

लेकिन यह क्या? उन्हे अपनी आँखो पर विश्वास न था। चोटी के पासवाले चरागाह की घास काटकर ढेर लगा दी गयी थी। जेकसेन की जमीन पर गायो और ऊँटो का एक विशाल ढोर चर रहा था। और पास ही किसी समृद्ध आऊल के ओताव खडे थे। तम्बुओ मे जलनेवाली आग से धीरे-धीरे धुआँ उठ रहा था और खेत मे भेड और मेमने मिमिया रहे थे।

यह अब जेकसेन की जमीन न रह गयी थी बल्कि इस पर किसी और आऊल ने कब्जा जमा लिया था।

ऊपर, ढलानो पर घोडे चर रहे थे—लगभग सब के सब भूरे और कुम्मैत—कोनानबाय के जानवरो का ढोर।

"अल्लाह का गजब हुआ हम पर! प्यारे सुयून्दिक, हम क्या करेगे?" जेकसेन बिलख उठा। उसकी आँखो मे आँसू छलछला आये।

"हाँ वही कहावतवाली मुसीबत आ गयी 'जयलाव दुश्मन के हाथ और जाडे के चरागाह आग की लपटो मे!" सुयून्दिक बडबडाकर रह गया और कुछ नही बोला।

कोनानबाय किसी चक्कर मे है, इतना तो वह जान गया था लेकिन वह ऐसा कदम उठायेगा, इसकी उसने कल्पना तक न की थी।

"तुम विश्वास कर लो, कोनानबाय ने सिर्फ जेकसेन की जमीन पर ही हाथ नही डाला है," जेतपिस ने गुस्से से कहा। "तुम देख लेना, उसने बोकेशी की जाडे की सारी जमीन ले ली होगी! ऐसी बेइज्जती से तो मर जाना बेहतर है!"

बहुत-से नौजवान अपने घोडो पर चाबुक फटकारते आगे की ओर तेजी से बढ गये। उनके झुड से चीखने की आवाज आ रही थी:

"हमारी जमीन किधर है? हमारी जमीन या उनका खून!"

"बोकेशी! क्या हम दोगले है? कही बाहर से आ टपके है?"

"बुजदिली की यही कीमत है!"

"आपने हमे रोककर देर करा दी और नतीजा सामने है!"

सुयून्दिक को झुरझुरी आ गयी। चीखे उसे चाबुक की तरह लग रही थी। वह क्या करेगा? अगर इन नौजवानो को नही रोका गया वे तुरत ही कोनानबाय के खेमे पर टूट पडेगे। और जो चीख रहे थे, वे बुजुर्ग नही बल्कि बेचारे कगाल लोग थे। खुदा ही जाने, अपने गुस्से मे वे क्या न कर बैठे। और दोष किसके मत्थे आयेगा? कल वे सब सुयून्दिक को ही दोषी ठहरायेगे—कहेगे वही उनका अगुआ था, उसी ने उन्हे भडकाया था! यह ख्याल आते ही वह दहशत से भर उठा।

सुयून्कि ने अपने घोडे की रास खीच ली और चीखा

"नौजवानो, रुक जाओ! ठहरो!"

वे उसके इर्द-गिर्द जमा हो गये।

"अगर तुम लोग लडना चाहते हो तो जाओ। लेकिन तुम्हे अकेले ही लडना होगा! मै साथ नही दूँगा! जाओ, वह रहा रास्ता! क्या तुम सोचते हो, तुम अपने बीस सोयिलो से कोनानबाय को डरा सकते हो? अगर उसे तुम्हारा डर होता तो जो उसने किया है, वह नही करता! जहाँ तुम बीस हो, वे सौ होगे—अगर तुम सौ होगे तो वे हजार होगे! देखो!" उसने आऊल की ओर इशारा किया।

और इसमे शक की कोई गुंजायश न थी, ओतावो से, चट्टान से और आस-पास की पहाडियो के आड से निकल-निकलकर बिना किसी बेताबी के साथ घुडसवार चले आ रहे थे। वे सोयिलो से लैस थे। वे सौ से कम न थे। वे ढोर के बीच से अपना रास्ता तय करते हुए एक साथ प्रकट हुए और सुघड, ठोस दल के रूप मे सुयून्दिक की ओर घोडे पर आगे बढे।

बोकेशी चुप हो गये।

अब सुगिर ने भी सुयून्दिक का समर्थन किया। वह कई ढोरो का मालिक था और कुल मिलाकर बोकेशी का सबसे धनी आदमी था।

"हम अकेले नही," उसने घोषणा की, हाँ बहुत जोरो से नही। "हमारे भी स्वजन है और फिर लोग भी तो है। हम उन्हे अपनी जमीन लौटा देने को मजबूर करेगे! हम लोगो के सामने अपना मामला रखेगे।

लेकिन गुस्से मे हमे खुद को नही भूल जाना चाहिए और कुछ ऐसा नही कर बैठना चाहिए जिसके लिए बाद मे हमे अफसोस करना पडे।"

"जो झगडा करेगे, उन्हे इसकी कीमत अपना सिर कटाकर अदा करनी होगी," सुयून्दिक ने रुखाई से आगे कहा। "इसे अच्छी तरह दिमाग मे बैठा लो!"

घुडसवारो मे खुद कोनानबाय दिखाई दे रहा था। उसका विशाल कुम्मैत अपना अयाल उछालता सन्तुलित, शानदार चाल से आगे बढ रहा था। नजदीक पहुँचकर आगासुल्तान ने हाथ के इशारे से हथियारबन्द घुड़-सवारो को एक ओर रोक दिया और सिर्फ दस बुजुर्गो के साथ पास जा पहुँचा।

कोनानबाय की निगाहो मे उपेक्षा थी। उसकी भाव-भगिमा से ही ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह कह रहा हो, "तुम हमारा क्या बिगाड सकते हो?" उसका सिर दर्प के साथ पीछे तना था। सारे अत्कामिनेर-शासक खुद को इसी रग मे रखते थे लेकिन कोनानबाय मे तो यह खास तौर पर भीषण प्रतीत होता। यह तो मात्र भाव-भगिमा है, सुयून्दिक जानता था। क्या दूसरो को सत्रस्त करने के लिए वह भी ऐसी ही भाव-भगिमा नही अपनाता? लेकिन फिलहाल वह भी दूसरो की तरह इर्गिजबाय प्रमुख के आधिकारिक मौन के आगे पानी-पानी हो रहा था।

सलाम करनेवाले बोकेशी पहले थे। कोनानबाय ने उनके अभिवादन का जवाब बस अपने होठो को जुबिश भर देकर दिया। कुछ देर के लिए वहाँ गहन चुप्पी छा गयी।

"मिर्जा, वे घुडसवार कौन हे?" आखिर सुयून्दिक ने पूछा (तोबिक्ति के सारे बुजुर्ग कोनानबाय को मिर्जा कहकर सम्बोधित करते थे)।

"वे? जाडे के चरागाहो मे घोडो को चरने से छोडने के पहले उन्हे दागकर चिहि्नत करने का यही समय है। बस इसी कारण वे लोग यहाँ है," कोनानबाय ने जवाब दिया।

उनकी बातचीत एकाएक टूट गयी। जेकसेन मुडा–करवाँ का अगला हिस्सा पर्वतमाला पार कर चुका था और पहुँचने ही वाला था।

"मिर्जा, वे करीब आ रहे आऊल हम लोगो के है। हम यहाँ जाडा

बिताने आये है लेकिन हमारे पडावो पर औरो ने कब्जा जमा लिया है। हम क्या करेंगे?" जेकसेन खुद-ब-खुद कोनानबाय की ओर मुखातिब हुआ-सा बोला।

"और तुम्हे यहाँ आने के लिए किसने कहा था?" छोटा-सा जवाब मिला। "कहाँ जाये, यह पूछे बिना तुम किस मधुर कल्पना मे खोये-से कूच कर गये? तुम्हारे आऊल वापस मुड जायेंगे!" उसकी आवाज फ़ैसलाकुन थी।

"लेकिन कहावत है, 'शासक लोगों पर शासन करता है और लोगो का शासन जमीन पर होता है'!"

"अच्छा, तो तुम्हारा ख्याल है शासक को आसमान मे समा जाना चाहिए? इर्गिज़बाय को चिगीज मे जाड़ा बिताने का कोई हक नही, यह कहाँ कहा गया है?"

"लेकिन आपको चिगीज़ मे ही जाडा क्यो बिताना है? मिर्ज़ा, आपके पास जाडा बिताने के लिए काफी अच्छी ज़मीने है," सुलह की आशा से सुयून्दिक ने आपत्ति की, लेकिन कोनानबाय ने उसे बीच मे ही डपट दिया।

"अरे, बोकेंशी!" उसने इस तरह बोलना शुरू किया जैसे किसी ग्राम परिषद को सम्बोधित कर रहा हो और लोगो के सामने अपना भारी-भरकम फैसला प्रस्तुत कर रहा हो। "तुम लोग हमारे बडे भाई हो। तुम हमसे पहले उम्र मे बडे होकर जवाँ मर्द बन गये और चिगीज पहाडियो की सारी चौडी तराइयो पर कब्जा कर लिया। इर्गिजबाय कभी तुम लोगो से सख्या मे कम थे और उम्र मे छोटे, लेकिन तुम लोगो ने उन्हे पूरे चिगीज मे जमीन का एक टुकडा भी नही दिया था। अब तुम जाडे के दूसरे पडावो की बात करते हो। लेकिन चिगीज के मुकाबले वे कैसी जगहे है? आखिर हम भी बडे हो गये और अब हम कब तक इसे सहन कर सकते है? क्या हम अनत काल तक अपने उत्तराधिकार से वचित रहे? इर्गिजबाय को भी जाडा बिताने के लिए सुविधाजनक चरागाहो की आवश्यकता है। हम बडे हो गये और मजबूत है। हम अजनबी नही, तुम्हारे स्वजन है। क्या हम नये लोग है, जो तुम हमे वह जमीन देने से इनकार करते हो जिस पर हमारा भी उतना ही हक है जितना तुम्हारा?"

कोनानबाय के भाषण मे फरियादी की फरियाद और किसी जज के फैसले, दोनो की ध्वनि थी।

"आप बोकेशी से जाडे की कितनी जमीन ले लेना चाहते है," सुयून्दिक ने पूछा। कोनानबाय के दावे कितने बडे होगे, वह जानने को उत्सुक था।

"इस इलाके की जाडे की सारी जमीन बोकेशी हम लोगो के लिए खाली कर देगे।"

"और हम कहाँ जायेगे?" जेकसेन का भाई जेतपिस चीख पड़ा।

चारो ओर से चीखने का शोर-गुल हो उठा।

"क्या बोकेशी खदेड दिये जायेगे?"

"क्या हम यहाँ से भगा दिये जायेगे?"

"क्या हम लोगो की ओर से बोलनेवाला कोई भी नही?"

कोनानबाय ने पल भर मे उन्हे चुप करा दिया। उसकी कानी आँख सुयून्दिक पर गड गयी और बोलनेवालो की ओर इशारा करते हुए उसने आदेश दिया:

"उन्हे चुप करो!"

अभी भी कोनानबाय की कृपा की प्रत्याशा करते हुए सुयून्दिक नौजवानो की ओर मलामत के साथ पलट पडा

"बेवकूफ, बकवादियो, मैने तुम लोगो से कहा था न, मचाना मत शोर। चुप रहो!"

चीख-पुकार थम गयी।

"बोकेशी," कोनानबाय बोला, "क्या तुम्हे विश्वास है, अगर तुम्हारी जाडे की जमीन ले ली गयी है तो तुम्हे बिना चरागाहो के छोड दिया जायेगा? अगर मैने ले ली है तो बिना मुआवजा दिये मै ऐसा नही करूँगा तुम्हे दूसरे चरागाह मिलेगे। मे तुम्हे यही चिगीज मे ही जाडे के चरागाह प्रदान करता हूँ पहाडियो पर तालशोकि, तराइयो मे काराऊल। अपने आऊलो के साथ वापस हो उन जगहो पर चले जाओ। मेरा यही फैसला है!"

तभी दो दिशाओ से घुडसवार आ पहुँचे। उनमे से दो पश्चिम की ओर से आये। उनमे से एक सुयून्दिक का बडा बेटा था।

"जाडे की हमारी जमीन पर मिर्जा के भाइयो–जकिप और जारतर ने कब्जा जमा लिया है। हम लोगो का क्या बनेगा?" उसने अपने पिता से पूछा।

सुगिर का एक नौजवान पूर्व की ओर से आ पहुँचा।

"जाडे की हमारी जमीन पर मिर्जा के चचा लोगो – मिर्जाताय और उर्केर ने कब्जा जमा लिया है। मै लोगो से क्या कहूँगा ? हम सामान उतार नही सकते, हम नही जानते, क्या करे," उसने कहा।

जाडे की अपनी जमीन से वचित आऊल के बुजुर्ग चार-चार, पाँच-पाँच की सख्या मे सुयून्दिक के पास कई ओर से आ पहुँचे। वे बुरी तरह गुस्से मे थे – ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे अपने साथ सारे स्वजनो की नाराजगी और बददुआ ले आये हो।

बोकेशियो की भीड बढती गयी। लेकिन कोनानबाय विचलित हुए बिना अपने घोडे पर बैठा रहा। सुयून्दिक को अपने आदमियो की लाचारी महसूस हो रही थी। वह खुद दीनहीन, मसला, कोनानबाय के पैरो तले रौदा था।

"क्या किया जाये। मै कर क्या सकता हूँ ? काश, हमे कम से कम अजनबियो ने नुकसान पहुँचाया होता," उसने कहना शुरू किया।

लेकिन जेतपिस ने उसे बोलने नही दिया।

"अब न्याय नाम की कोई चीज रह नही गयी है!" वह चीख पडा।

जन समुदाय फिर बेचैन हो उठा।

"हम लोगो के लिए बोलनेवाला कोई नही!"

"अगर वे हमे एकदम से खदेड देते तो इस तरह हमे बेइज्जत करने से कही बेहतर रहता।"

एक पहाडी के पीछे से घुडसवारो के दो दल आते दिखाई दिये। दस घुडसवारोवाला पहला दल कोतिबक के अत्कामिनेरो का था जिसका नेता बायसाल था। कोनानबाय के पास पहुँचकर उन्होने उसे सलाम किया और अत्यन्त सौहार्द्रपूर्ण ढग से उसका अभिवादन किया

"आपको नया घर मुबारक हो, मिर्जा!"

"खुदा आपको सालो यहाँ खुशियाँ बख्शे!"

"नया घर आपके लिए अच्छी समृद्धि लाये!"

अब करीब आ गये दूसरे दल का नेता तोर्गाय लोगो का मुखिया बूढा कुलिनशक था। उसके साथ उसके पाँचो बेटे थे जिन्हे "पाँच दुस्साहसियो", बहादुर और भाला चलाने मे सिद्धहस्त के रूप मे जाना जाता था। कोनानबाय के पास रुकते हुए, बूढे ने कहा:

"मुझे आशा है, आप ठीक-ठाक होंगे, मेरे प्यारे कोनानबाय! आपको नया घर मुबारक हो!"

इसने बोकेशियो की आँख पूरी तरह खोल दी: कोनानबाय अकेला उन्हे नही लूट रहा था। कोनानबाय की कमीनापन से भरी हरकतों को कोतिबक, तोगयि और तोपाय के सारे बुजुर्गो का समर्थन प्राप्त था।

और सुयून्दिक कोतिबकों पर अपनी आस लगाये था।

"बायसाल दृढ़ और खरा आदमी है। निश्चित रूप से वह लूट मे हाथ नही बटायेगा," उसने सोचा था। उन्होने साज़िश कब तैयार की थी? शायद वे अब भी कुछ छुपा रहे हों? किसे मालूम! क़ोनानबाय ने सब से बड़े कबीलो का समर्थन पा लिया था, यह तो साफ़ था। बायसाल और कुलिनशक का आगमन सयोग मात्र न था। उन्हे बोकेशियो के सामने अपनी एकता प्रदर्शित करने का आदेश दिया गया था। सारा तमाशा कोनान-बाय ने रचाया था।

सिर्फ सुयून्दिक ही ऐसा नही सोच रहा था। जेकसेन भी समझ गया था।

"चाहे कुछ भी हो, ईमान की बात है," वह कड़वाहट से बोल उठा, "यह मेरे बाप-दादो के जाडे का पडाव था। यही, इसी जगह, उस टीले के नीचे बोकेशी के एक सपूत का खून बहाया गया था। यह ज़मीन मेरी है—इसे मेरे एक स्वजन ने अपने खून से पावन किया है!"

उसके शब्दो से सभी भौचक रह गये थे।

"ठीक ही कहा गया है, क्रोध आने से अकल खिसक जाती है," सुयून्दिक गुस्से से बड़बड़ाया। "ऐसी चीजो को याद करने से क्या फाय-दा?"

जेकसेन की बातो से कोनानबाय भी थोडा गडबडा-सा गया—कोदर का नाम लिये जाने की उसे उम्मीद न थी। लेकिन अब उसने जेकसेन के कटाक्ष का इस्तेमाल जमीन हड़प लेने के अपने काम को वाजिब ठहराने के लिए करने का फैसला किया। उसने अनिष्टकारी ढंग से अपनी आख जेकसेन पर जमा दी।

"अरे, क्या कहा तुमने? बुढ़ापा के कारण शायद तुम्हारा दिमाग़

घिस गया है। सूरमा को तुमने, चरवाहा कह दिया! अगर वह वैसा था तो तुम लोग, बोकेशी लोग क्या हो? कोदर सूरमा नही बदजात था, उससे तो बोकेशियो के पुरखो की रूहो ने भी नाता तोड लिया है! पूरे तोबिक्ति कबीले ने उसका त्याग कर दिया है! और इसी कारण, मैने यह जमीन दूसरो मे बाट दी है—उस काफिर का कलक मिटाने के लिए, सबके दिमाग से उसकी याद निकाल बाहर करने के लिए! यह बकवास बद करो!"

उसके शब्द एक तमाचा की तरह थे, सारे बोकेशियो के गाल पर पडनेवाले पत्थर। कोदर की हत्या का असली मकसद अब उन्हे पता चला उनके जाडे का पडाव हडपना!

सुयून्दिक धीरज नही रख पाया।

"या खुदा," वह चीख पडा, "मै क्या सुन रहा हूँ? आह, चतुर बोजेय! तुम्हारे शब्द मै कैसे भूल पाऊँगा! कितना सही कहा था तुमने, आज यह तुम लोगो ने कोदर के गले मे फदा नही डाला है। खुदा की कसम, तुमने अपने गले मे फदा डाला है!' हाय, कोदर, मेरे शेर, बेकुसूर मारे गये। मेरे सूरमा, प्यारे कोदर!"

गला रुँध आने से वह कुछ और नही कह सका। अपने घोडे की गर्दन बाँहो मे लिये वह झुक पडा।

जेकसेन हठात् फूट-फूटकर रो पडा।

"मुझे ही लानत है," वह सुबक उठा। "मेरा नाश हो! मै कुत्ता हूँ, नीच कुत्ता! हाय, मेरे अपने, मेरे एकदम अपने कोदर!" घोडे को एड लगाकर वह सरपट कोदर के जाडे के पडाव की ओर चल पडा।

उसके अल्फाज सूखी घास पर पडी चिनगारी साबित हुई। सब ने मातम के शब्द दुहराने शुरू कर दिये—"हाय, मेरे अपने, मेरे एकदम अपने"—और जेकसेन के पीछे-पीछे अपने घोडे मोड लिये। सुयून्दिक भी भीड के पीछे-पीछे चल पडा।

---

* कोनानबाय ने जानबूझकर जेकसेन के शब्दो को बिगाड दिया। जेकसेन ने कोदर के लिए "येर अजमत" शब्द का इस्तेमाल किया था जिसका मतलब पुरुष रिश्तेदार होता है और कोनानबाय ने सिर्फ "येर" शब्द कहा जिसका मतलब होता है, बहादुर आदमी, सूरमा।—स०

बायसाल और अपने मुसाहिबो के साथ कोनानबाय अकेला रह गया और अपने मन मे सोच रहा था कि मुझे ऐसा नही कहना था। लेकिन अपने शब्दो का पछतावा बायसाल पर ठीक भी प्रकट नही होने दिया। चुपचाप वह बोकेशियो को घोडे पर जाते देखता रहा और इस अप्रत्याशित भडकाव के लिए कोई सर्वाधिक समीचीन उत्तर सोचता रहा।

"जानते हो, उन्हे किसने भडकाया है?" वह बायसाल की ओर मुड गया। "जरा-सी इनकी दुखती रग छू दो और उनके दिल मे छुपा सब बाहर आ जाता है! उन्हे भडकानेवाला बोजेय है! वही है, और कोई नही! वह तोबिक्ति मे मेरे खिलाफ जाल बिछाना चाहता है! तुम हमेशा हम लोगो के बीच 'एका' की बात करते रहते हो। अब तुम्ही देखो, उसका क्या मायने रह जाता है!"

बायसाल ने कुछ नही कहा।

"सब कुछ अल्लाह के हाथ मे है," कुछ चुप्पी के बाद कोनानबाय ने आगे कहा। "जो भी सामने आये, मै झेलूगा ही।" और मानो बायसाल के प्रति अपने विश्वास पर बल देते हुए, उसने आखिर मे कहा, "सुयून्दिक, सुगिर और जेकसेन से कह दो, उन्हे लोगो को दुखी नही करना चाहिए। उन्हे लोगो को शान्तचित्त करने कह दो। बोकेशियो के लिए चाहे जो भी जगहे मैने चिगीज मे निर्धारित की हो, बुजुर्गो को कोई तकलीफ न हो, इसका मै ख्याल रखूगा। उन तीनो के लिए मुझसे जो भी अच्छा से अच्छा बन पडेगा, मै करूँगा। यह मेरा वायदा है!"

घोडो के ढोर की देखभाल के लिए जिन घुडसवारो को कोनानबाय ने भेजा था, उनमे एक मायबासार था। वह बोकेशियो को रोते, मातमी अल्फाज बोलते घोडे पर जाते देख भौचक रह गया।

"अहा, मेरे दोस्तो! कहते है, अपाहिज भेड सिर्फ अधेरा होने पर मिमियाता है लेकिन बोकेशी इस से भी देर करके मिमिया रहे है। भला आज तक कोई भी पतझड मे उस आदमी की मौत पर सहानुभूति प्रकट करने आया है, जो बहार मे मर चुका हो?" वह द्वेषपूर्वक हँस पडा।

बसन्त मे कोदर को बेआबरू करने, उसकी थूडी-थूडी करने जब सब लोग जमा हुए थे, जेकसेन ने किसी को लाश के पास फटकने तक नही दिया था, उसने रोती-कलपती औरतो को खदेड दिया था। "किस लिए कलप रही हो तुम लोग?" उसने ताना कसा था। "तुम्हारी आँखे गड्ढो

में ही धँस कर रह जायें!" सिर्फ़ दो बूढ़ों – जामपेइस और चरवाहा आयतिमबेत को उसका कोई डर न था। अपने ही जैसे कुछ दूसरे ग़रीबों की मदद से वे क़ोदर और कमका के शरीर कुतजान की क़ब्र तक उठाकर ले गये और आठ-आठ आँसू बहाते हुए उन्हें दफ़्न कर दिया था।

और अब जब रोते, मातमी अल्फ़ाज़ दुहराते घोड़ों पर बोकेंशी क़ब्र पर आये तो वहाँ उनकी मुलाक़ात चार बूढ़े लोगों से हुई – जामपेइस, आयतिम्बेत तथा दो अन्य चरवाहों से। गर्मियों में कब्र पर न आ पाने के कारण जब वे कारवाँ के साथ लौट रहे थे, यह कहते हुए जल्दी-जल्दी आगे बढ़ गये थे कि उन्हें क़ब्र पर दुआएँ करने जाना है।

वे भौचक-से अपनी ओर तेज़ी से आती भीड़ को देखने लगे। रुद्ध कंठ व सुबकते हुए बोकेंशी घोड़ों से उतरे। उनके बीच सुयून्दिक़ को रोता देख उन्हें सबसे ज़्यादा आश्चर्य हो रहा था। घुड़सवारों का अगुआ ख़ुद जेकसेन था, यह देखकर उन्हे और भी अजीब-सा लगा। ज़ोर-ज़ोर से क्रन्दन करते घुड़सवार क़ब्रों पर गिर पड़े।

"हमे माफ़ करना, हमारे बचानेवाले! मुझे माफ़ करना, मेरे भाई!" और उनके चेहरो पर आँसुओ की धारा बह चली।

बहुत देर से किये जानेवाले इस शोक से जामपेइस का दिल तनिक भी नही पसीजा। क़ोदर और कमका के लिए गर्मियों पर शोक मना-मनाकर उसकी कमर झुक गयी थी और वह सूख गया था। और जब जेकसेन ने कमका की क़ब्र पर हाथ फैलाकर आलिंगन करने की कोशिश की, उस बूढ़े ने उसे वापस धक्का दे दिया:

"काश तुम्हारी आँखें गड़ जायें! तुम सबों की आँखों की रोशनी चली जाय, अल्लाह का कोप हो!"

इसके बावजूद भीड़ तेज़ी से बढ़ चली। मर्दो के पीछे औरतें आ गयीं, फिर बच्चे और बूढ़े। सारा बोकेंशी कुटुम्ब रोता-कलपता खड़ा था।

४

बोकेंशी चिंगीज़ से लौट गये लेकिन क़ोनानबाय द्वारा बतायी गयी ज़मीनों पर नही। इसके बदले, उन्होने क़िज़िलशोकि में अपने झोंपड़े खड़े कर लिये और वहीं रहने लगे।

दूसरे कबीले भी बहुत पहले ही अपने-अपने जाड़े के पड़ावो पर जा चुके थे और घास तैयार करने, जलावन के लिए डालियो को काटकर सुखाने, तबेलो को साफ-सुथरा करने, मकानो और तहखानो, घर के चूल्हो की सफेदी करने तथा दूसरे जरूरी कामो मे लग गये।

लेकिन अब तक जाडा बिताने के लिए स्थान तय नही कर पाने के कारण बोकेशियो के पास ऐसे कोई काम न थे।

कोनानबाय के सन्देशवाहक ने सुयून्दिक को हिदायते पहुँचा दी थी. उन्हे काराऊल के आस-पास जाडे के पडाव के लिए कोई जगह चुन लेने कहो: गर्मियो के चरागाहो के लिए वे सारे कोल्देनेन और शल्कार ले सकते है।

सुयून्दिक और जेकसेन ने अपना-अपना दिमाग एक साथ लगाया अगर उनके दोनो आऊल काराऊल के जाडे के पडाव पर पहले पहुँच जाते है और गर्मियो मे दोनो नदियो पर कब्जा जमा लेते है तो व्यक्तिगत रूप से उन्हे शिकायत करने का कोई कारण नही रह जायेगा। उन्होने इस पर तुरत ही अमल करने का फैसला किया और दूसरे स्वजनो को एक भी शब्द कहे बिना अपने आऊलो को सुबह तक ऊँटो को इकट्ठा कर लेने और ओतावो को उखाडकर बाँध लेने का हुक्म दे दिया। लेकिन जैसे ही वे अपने स्वजनो को छोडकर चलने को हुए, बीस या तीस बोकेशियो का एक दल भी अपने घोडो पर सवार हो गया।

वे गरीब बोकेशी लोग थे। उन्हे एक लम्बे और मजबूत बूढे आदमी दर्कमबाय ने प्रोत्साहित किया था। उसने बुजुर्गो की चालबाजियो को लम्बे अर्से तक देख-परखकर उन्हे समझ लेने का अनुभव प्राप्त किया था। वह उस दल को सीधे जेकसेन के आऊल मे ले गया।

"तुम लोग कहाँ जा रहे हो?" उसने पूछा। "क्या तुम हम लोगो को छोड जा रहे हो?" वह चीख पडा। "हम लोगो के बिना जाने की हिमाकत न करो। हम बाकी लोगो के साथ ही मुसीबतो से जूझो। अपने ओताव फिर से लगा दो!"

जेकसेन को एतराज करने की हिम्मत न हुई। हवा का रुख अपने खिलाफ महसूस कर उसने बस इतना ही पूछा

"अच्छा अब तुम क्या करने जा रहे हो, मेरे दोस्तो?"

"बेहतर हो, अपने घोडो पर सवार हो जाओ," दर्कमबाय ने उसकी

बात बीच मे ही काट दी। "हम सुयून्दिक के पास जायेगे और वही अपनी बात खत्म करेगे!"

जेकसेन और जेतपिस के पास उनके साथ चलने के अलावा और कोई चारा न था।

सुयून्दिक के साथ बातचीत भी मुख्तसर थी। दर्कमबाय ने उसे रुकने पर मजबूर कर दिया।

"कम से कम मुझे इतना तो बता दो, तुम उम्मीद किस चीज पर बाँधे हो?" सुयून्दिक ने पूछा। "जाडा पडने लगा है, हमे शरद् का ख़तरा है। क्या हम बूढो और बच्चो को जम जाने के लिए छोड दे? हम कितनी देर यहाँ ठहरेगे?"

"तुम दोनो हम लोगो का नेतृत्व करो सुयून्दिक, तुम और जेकसेन, तुम!" दर्कमबाय ने दृढता से जवाब दिया। "चलो, हम बोजेय के पास चले। हम अपने स्वजनो से बात करेगे! 'अगर अभी हमे छोड जाओगे, तुम भी बाद मे दुख मनाओगे!' हम उनसे कहेगे। और अगर जिगितेक लोगो ने हमारी मदद नही की तो फिर हम देखेगे!"

दोपहर तक बोजेय के पडाव पर वे पहुँच गये। वह अपने पुरखे केगिर-बाय से विरासत मे पाये विलक्षण चिगीज पडाव पर जाडा व्यतीत कर रहा था।

जब उसने बोकेशी के बुजुर्गो को आते देखा तो तुरत ही बायदालि और तुसिप को बुला भेजा जिससे इस मामले मे जो भी राय जाहिर की जाये, वह पूरे जिगितेक की हो।

हमेशा की तरह सुयून्दिक सावधान और मितभाषी था।

"वे तुम्हारे पास आये है," उसने बोजेय से कहा, "क्योकि वे तुम्हारी सलाह चाहते है। तुम्हारी क्या राय है? तुम उन्हे क्या करने की सलाह दोगे?"

बोजेय ने सुयून्दिक के विचारो को पढने की कोशिश की।

"हमेशा की तरह बुजदिल," उसने सोचा। "हमेशा की तरह कमजोर इच्छाशक्तिवाला और कोनानबाय के डर का मारा।" वह हल्के से और उपेक्षा से मुस्कुराया।

लेकिन सुयून्दिक अगर बुझा-बुझा था तो भीड काफी जोश से उबाल खाती थी।

"बोजेके, हम कोनानबाय के आगे अपना सिर काफ़ी झुका चुके है!" दर्कमबाय ने गुस्से से कहा। "हमेशा बुजदिलों को ही कुत्ते काटते हैं और मुर्गियाँ चोच मारती है। हमें उम्मीद है, आप कम से कम हमें नतमस्तक हो जाने नही कहेगे! हमे कोई ऐसी सलाह दीजिए जिससे हमारे लोग आखिर अपने पैरो पर खडे हो खुद अपने हाथ-पाँव चला पायें!"

मर्दानगी भरी यह बात बायदालि को बहुत पसन्द आयी जो हमेशा दृढ़ता और साहस की इज़्ज़त करता था और ख़ुद भी हमेशा फ़ैसलाकुन कार्रवाई का हामी था। वह जिगितेक की शक्ति और धैर्य का जीता-जागता प्रतीक था।

"ओह, सुयून्दिक," उसने चिल्लाकर कहा, "तुम्हे दर्कमबाय से सलाह लेनी चाहिए। गरीब तो वह है लेकिन बात मर्दो की तरह करता है!"

ताकत का सहारा लेने से पहले बोजेय ने न्याय, क़ानून और आम रिवाज के नाम पर एक निवेदन करने का फ़ैसला किया। अगर संभव हुआ तो वह क़ोनानबाय की साज़िशो के बारे मे लोगो की आँखे खोल देगा। लेकिन सबसे पहले बोकेशियो को यह चेता देना ज़रूरी था कि आगे उनके साथ क्या होनेवाला है।

"बोकेशी, तुम लोग मेरे स्वजन हो," उसने कहना शुरू किया। "जो तुम्हारा बुरा करता है, वह मेरा बुरा करता है। मेरी ख़ुशियाँ, मेरी नियति तुम लोगो से अलग नही की जा सकती। क़ोनानबाय ने जो योजनाएँ बनायी है, वे मेरे सामने स्पष्ट है। मैने सुना है, उसने तुम लोगो को तालशोकि, काराऊल और बालपान पेश किया है। क्या जानते हो, यह सब हमे किस ओर ले जायेगा?"

बोजेय ने भीड पर एक नज़र फेरी।

"उसकी इच्छा है, जिगितेक और बोकेंशी की ज़मीनों की सरहद एक हो यानी आपसी समझौते और अच्छे पड़ोसी सम्बन्धों का ख़ात्मा। उसे उम्मीद है, अगल-बगल रहकर हम भी एक-एक झाड़ी, चुल्लू-चुल्लू भर पानी के लिए झगड़ पड़ेगे। वह हम लोगों के बीच दुश्मनी के बीज बोना चाहता है, ऐसी दुश्मनी जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहेगी। ऐसा नही होना चाहिए। मै तहेदिल से तुम्हारे साथ हूँ, मेरे भाइयो। अगर तालशोकि और काराऊल मे बस जाने को तुम लोग मजबूर हुए, जो कुछ मेरे पास है, मै इच्छापूर्वक तुम्हारे साथ हिस्सा बटाऊँगा। यह तय

है। लेकिन पहले हमे उनसे विरोध करने की कोशिश करनी चाहिए। हम तुम लोगो से और उन लोगो से समान रूप से सम्बन्धित है। अगर हम नही तो और कौन बीच-बचाव करेगा?" यह बात कहकर उसने तुसिप पर नजर डाली। "हम कोशिश करेगे। हम उसे बतायेगे, जिगितेक उसकी कार्रवाई को गैरवाजिब समझते है। उसके बाद क्या करना है, हम बाद मे देखेगे। क्या तुम सहमत हो?"

उसके फ़ैसले को सबने स्वीकार कर लिया।

"अच्छा, तो तुसिप, अपने घोडे पर सवार हो जाओ। उसे हम लोगो की राय दे आओ और जवाब लेकर आज ही लौट आओ," बोजेय ने आखिर मे कहा।

"लेकिन उसे सब कुछ बता देना!" बायदालि ने अपनी बात जोडी। "बिना किसी सकोच के दिल खोलकर कहना। हम काफी अर्से तक दब्बू रह चुके! अगर झगड़ा होने की भी संभावना हो तो जो कुछ कहने की जिम्मेदारी तुम्हे सौपी गयी है, कह जरूर देना!" बायदालि क्रुद्ध और कृतसकल्प था। वह तुसिप को प्रोत्साहित करना, उसका दिल बढ़ाना चाहता था।

कोनानबाय काराशोकि मे अपनी सबसे बडी बीवी कुके के शरद् आवास पर आराम कर रहा था। सूर्यास्त के समय तुसिप आऊल मे पहुँचा और इर्गिज़बाय प्रमुख ने उससे पास ही की एक छोटी-सी पहाडी पर मुलाकात की। वे काफी देर तक बातचीत करते रहे। एका और मेल भाव की आवश्यकता की चर्चा करते हुए तुसिप ने अपनी बात बडी सावधानी से असम्बद्ध चीज़ो से शुरू की लेकिन आखिर मे अपने आने के मकसद पर उतर आया।

"आपकी कार्रवाई की भर्त्सना सिर्फ बोकेशियो द्वारा ही नही बल्कि समस्त जिगितेक द्वारा की गयी है," उसने कहना शुरू किया, लेकिन कोनानबाय ने गुस्से भरे अल्फाजो के साथ उसकी बात बीच मे ही काट दी:

"मैं समझता हूँ, जिगितेक बोकेशियो की रक्षा के लिए डडा उठाने को तैयार है, जिनका वे नुकसान होने का दावा करते है। लेकिन वे अपने पड़ोसियो – केरेय और वाक लोगो को क्यो भूल जाते है, उनका भी तो नुकसान हुआ है? और उनको नुकसान किसने पहुँचाया है? जिगितेक ने! तुम लोगो ने उन सब को नुकसान पहुँचाया है जो पड़ोस मे रहते है।

ऐसा कहा गया है कि तुम लोग दूसरो के जानवर हड़प लेते हो, अपने पड़ोसियो की खून-पसीने की कमाई लौटाने से इनकार करते हो। बोजेय, बायदालि और तुसिप – तुम पर, उन सब लोगो ने जो तुम्हे जानते है, बार-बार यह आरोप लगाया है। पहले खुद को सही साबित करने की कोशिश करो और तब बोकेशियो की बात करो! पहले खुद अपने चोर-लुटेरो को काबू मे लाओ!"

"झूठ बोलनेवालो की कही कोई कमी नही, कोनानबाय!" तुसिप आपे से बाहर हो उठा था। "क्या बोजेय और तुसिप आज तक कभी चोर हुए है? शायद हमे दुखी करने के लिए तुम कुछ और भी गढ लोगे? लेकिन तुम चाहे जो भी कहो, हमारे हाथ साफ है और हमने कोई भी गुनाह नही किया है!"

"और मै फिर कहता हूँ, तुम गुनहगार हो, तुम्हारी कोई आबरू नही!"

"अगर ऐसी बात है तो सूर्यास्त' की पवित्र वेला मे इसे साबित करो!"

"मै तुम्हे यह कहूँगा। बोजेय को मेरे लिए जाल बिछाने से मना कर दो! दूसरो की पीठ के पीछे से तीर चलाने से उसे मना कर दो! और अगर वह बाज नही आता तो जो जी मे आये कर लेने दो – सारे फल उसे ही भुगतने होगे! सिर्फ वही जवाबदेह होगा!'

कोनानबाय ने दृढ निश्चय के साथ अपनी बात खत्म की।

"कल तुम्हारे आऊलो मे मै एक बैठक आयोजित करूँगा, और वहाँ हम केरेय और वाक लोगो की शिकायते सुनेगे और तुम लोगो को चुराये गये जानवर लौटा देने को मजबूर करेगे। यह हुई पहली बात। और दूसरी बात, बोकेशियो के मामलो को बस उन्ही पर छोड दो! अपनी राह चलो। ऐसे मामलो मे खुद को जज की कुर्सी पर मत बैठाओ। मैने तुम्हे ऐसा करने के लिए बहाल नही किया है और तुम्हारे फैसले की कोई दरकार नही। दखलअदाजी न करो नही तो मुसीबत मोल लोगे! और अगर तुम आदेश नही मानते तो मै समझूँगा तुम जानबूझकर मेरा विरोध करने के लिए बीच मे आ टपके हो! अच्छा, अब जाओ और मेरी बाते बोजेय और बायदालि को बता दो," उसने कठोरता से अपनी बात खत्म की।

' मुस्लिम आस्था के अनुसार सूर्यास्त के समय बुरी रूहे अपने शिकार की तलाश मे धरती पर भटकती फिरती है। – स

५

दूसरे दिन दोपहर मे मायबासार के दो सन्देशवाहक—कमिसबाय और जुमागुल घोडे पर जिगितेक को रवाना हुए और उर्किमबाय के आऊल पर उतरे।

आस-पास छह ओताव खडे थे। नवागन्तुको के पहुँचने पर कुत्तो ने भौकना शुरू कर दिया। उन्हे चाबुको और गालियो से खदेड दिया गया। गुस्से से भरे मेहमानो से भयभीत हो बच्चे चूहो की तरह जा छुपे और दरवाजो पर लगी चटाइयो से झाँकते रहे।

उर्किमबाय विशालकाय सलेटी ओताव मे दो मेहमानो—बोजेय के निकट-वर्त्ती सम्बन्धियो काउमेन और कराशा की मेहमाननवाजी मे लगा था। उर्किमबाय की नन्ही-सी घबडायी बेटी दौडकर ओताव मे जा घुसी और अपने बाप से चिपकती हुई बुदबुदायी

"सन्देशवाहक, सन्देशवाहक!"

बच्चे भी जानते थे, सन्देशवाहक बदनसीबी लानेवाले होते थे। अधि-कार-सम्पन्नता के चिह्न-चमडे के झोले और पीतल के बडे-बडे बिल्ले लगाये वे दोनो जब ओताव के अन्दर आये, नन्ही लडकी अपने बाप के पीछे छुप गयी।

उर्किमबाय के अभिवादन मे और चाहे कुछ भी हो, दोस्ती न थी।

"हाँ, तो यह हगामा काहे को है?"

"एकदम फौरी मामला! फौरी हुक्म! हमे जल्दी है," कमिसबाय ने समझाया और घर की प्रतिष्ठित जगह पर बैठ गया।

जुमागुल अगीठी के पास ही एक घुटने के बल बैठ लिया।

"क्या हुक्म? अब कौन-सी मुसीबत थोपने की सोच रहे हो तुम?" कराशा ने उद्विग्नता से पूछा।

सन्देशवाहक इससे परेशान नही हुआ।

"हुक्म यह है अपने ओताव खडे करो। तुम्हारे आऊल मे एक जलसा होगा। यही लोग इकट्ठा होगे—केरेय और वाक के फरियादी भी। कबीलो के बीच बातचीत होगी और चोरो को चुराये गये जानवर लौटाने को मजबूर किया जायेगा।"

"कौन कहता है ऐसा?" काउमेन ने जलकर बीच मे ही बात काटते हुए पूछा।

"और मामले का फैसला कौन करेगा?" कराशा ने पूछा।

"और चोरियो के लिए जवाब कौन देगा—चोर या फिर सब कुछ निर्दोष लोगो पर थोप दिया जायेगा?" उर्किमबाय ने सहजबोध से पूछा।

ऐसी किसी भी सभा की व्यवस्था मे बहुत खर्च पडता था। इसमे बहुत से लोग भाग लेते—फरियादी, अधिकारी वर्ग तथा दूसरे ओतावो से जिज्ञासावश आनेवाले बहुत से मेहमान। पूरे एक माह तक रात-दिन मोटे, पेटू शासको को खिलाने के लिए जानवर हलाल करने होगे। यह सब जानते थे। और लोग यह भी जानते थे, शासक ऐसी सभाएँ हमेशा उन आऊलो मे किया करता था जो उसके कोप भाजन होते थे।

यहाँ बैठे लोग तत्परतापूर्वक सभा अपने यहाँ आयोजित करने से सहमत हो जायेगे, कमिसबाय ने एक पल के लिए इसकी आस नही की थी। बेशक, वे आगा सुल्तान या मायबासार से शिकायत करने की हिम्मत नही करेगे, लेकिन बिला शक वे सन्देशवाहको से बहस करने की कोशिश ज़रूर करेगे। बहरहाल, उसे और जुमागुल को मायबासार ने कड़े आदेश दिये थे: किसी तरह का हील-हवाला न माना जाये।

"कोनानबाय और मायबासार की ऐसी ही मर्जी है," उसने कहा। "यह कोई मेरी सूझ नही।" उद्दडता से उसने कराशा की ओर देखा। "इस पर सोच-विचार लो और ज़रूरी तैयारी करो! सारे ओताव एक साथ जमा करो और उन्हे यहाँ लगा दो। कौन-कौन से और कितने जानवर हलाल करने है, इस पर भी अच्छी तरह विचार कर लो। शुरुआत के तौर पर जिगितेक पचास भेड़ दे, यह हुक्म है। किन आऊलो से हमे उन्हे लेना है? चलो, इसके बारे में अभी बात कर ले!"

क़ाउमेन जानता था, सन्देशवाहको से बहस करना फिजूल था। उनसे बात करने के बजाय, वह उर्किमबाय और कराशा की ओर पलटा:

"यह मामला सिर्फ हम लोगो से ही ताल्लुक नही रखता. यह सारे जिगितेक के लिए मुसीबत है। बोजेय से बात करने का समय तो मिलेगा नही—वह हम लोगो से बहुत दूर है। लेकिन बायदालि करीब मे ही रहता है। क़राशा, घोडे पर बैठो और उसके पास पहुँच जाओ। हम उसके जवाब का इन्तज़ार करेगे।"

"ठीक! बायदालि के पास जाओ!" उर्किमबाय ने हामी दी।

सन्देशवाहको ने कोई एतराज नही किया।

कराशा तेजी से उठ खडा हुआ और खामोश चला गया। सन्देशवाहक बैठे चाय पीते रहे। उर्किमबाय एक शब्द भी नही बोला—अन्यायी हुक्म से वह बहुत क्रोधित था।

उन्हे ज्यादा देर इन्तजार नही करना पडा। घुडसवारो का एक जत्था जल्द ही आ पहुँचा और तेजी से घोडो से उतर पडा। यह बायदालि के यहाँ से लौटकर आनेवाला कराशा ही था। उसके साथ दस नौजवान थे—नौजवानो का वह जत्था "आततायियो" के नाम से जाना जाता था और स्तेपियो के लुटेरो के साथ भी वे गैर-दोस्ताना नही थे।

काइयाँ और तीव्र बुद्धि जुमागुल उन्हे देखकर तनिक भी खुश नही हुआ।

"यहाँ क्या करने आये हो," उसने कहना शुरू किया लेकिन नौजवानो मे से एक ने उसे बीच मे ही रोक दिया।

"कहते है, 'अगर तुम्हारे बाप पर दुश्मन ने हमला किया तो तुम भी इससे फायदा उठाने की कोशिश करो।" उसके शब्दो मे चुनौती थी। "हम जिगितेक के सारे जानवर छीन लेगे और तुम्हे सौप देगे।"

"सारे जानवर क्यो? हमने कहा है—पचास भेड। लेकिन अगर तुम्हारे पास इतने अधिक जानवर है, जब फरियादी आयेगे, उन्हे ला सकते हो। हडबडी क्या है?" कमिसबाय ने दाँत किचकिचा कर कहा।

"शायद हमे जानवर तुम्हे सौप देने चाहिए?' कराशा ने ठीक उसकी बगल मे पालथी मारते हुए कहा।

"और नही तो क्या?"

"अरे, रक्त-पिपासु पशु! क्या तुमने काफी पीडा नही पहुँचा ली है? तुम लोगो को सताना कब बन्द करोगे?"

"ऐसी-वैसी बाते बहुत हो चुकी! जो मै हूँ सो हूँ! अब बताओ, बायदालि ने क्या जवाब दिया?"

"मै तुम्हे बता दूँगा। यह रहा उसका जवाब!" और पैरो पर उछलकर खडा होते हुए कराशा ने अपना भारी भरकम कोडा कमिसबाय के सिर पर दे मारा।

सन्देशवाहक जब तक उठकर खडा हो सके, उर्किमबाय ने ओताव मे मौजूद नौजवानो से चीखकर कहा

"कुत्तों को कोड़े मार-मारकर जान निकाल लो।"

ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ बकते हुए जुमागुल और कमिसबाय ने काफी हाथ-पाँव फेंके लेकिन वे आपे मे आ सके, इससे पहले ही नौजवानो ने उन्हे छा लिया। दोनों को ज़मीन पर गिरा दिया गया और मजबूत घुटनो ने उन्हे दबा लिया।

"यही है बायदालि का जवाब! उसने हमें अपनी ताकत भर तुम्हे पीटने और तुम्हे आधमरा करके मायबासार को लौटा देने का हुक्म दिया है! ठीक है ना! तुमने पा लिया ना," और घुटनो के बल कमिसबाय पर झुकते हुए क़राशा ने उसपर घूँसो की वर्षा कर दी।

उसी वेग के साथ उर्किमबाय तथा दूसरे नौजवान जुमागुल पर टूट पड़े।

बुरी तरह पिटे, चिथड़े कपडों के साथ दोनों सन्देशवाहक किसी तरह काराशोकि वापस लौटने की ताकत जुटा पाये। अपने चेहरो से खून धोये बिना वे कोनानबाय के सामने हाज़िर हुए।

ओताव मे आगा सुल्तान बायसाल, मायबासार, कुलिनशक के बेटो, लम्बे तड़ंगे नादानबाय और मनस तथा बहुत से नौजवानो से घिरा बैठा था। ओताव पूरी तरह भरा था।

सन्देशवाहको की कहानी सुनने के बाद कोनानबाय थोडी देर तक कुछ भी नही बोला। फिर अपने चेहरे पर निष्ठुर अभिव्यक्ति लाते हुए वह बायसाल की ओर मुड़ गया और दोनो आदमियो के घायल चेहरो की ओर इंगित किया।

"देखते हो? अच्छा स्वजन बनने से यही फल मिलता है। बोजेंय के कोड़े उनपर नही, मुझपर पड़े है!" नौजवानो को इशारा करते हुए उसने हुक्म किया. "अभी जाकर उर्किमबाय को पकड़ लाओ जिसने अपने ओताव मे उनकी पिटाई करायी है!"

दस नौजवान उछलकर अपने घोड़ो पर जा बैठे और तेज़ी से रवाना हो गये। कुलिनशक के बेटे भी उनके साथ थे।

झुटपुटे के समय उर्किमबाय के आऊल मे पहुँचकर उन्होने सारे मर्दों की निष्ठुरता से पिटाई की और मालिक को ओताव से बाहर खीच लाये। उर्किमबाय ने ज़ोर आज़माइश की कोशिश की लेकिन शीघ्र ही महसूस कर लिया, इससे हो सकता है वह गहन रूप से घायल हो जाये। गुस्से से

पीला हो उसने दाँत पर दाँत जमा, सब कुछ चुपचाप बर्दाश्त करना तय किया। उसके हाथ पीठ के पीछे कसकर बाँध दिये गये और उसे नादान-बाय के आगे जीन पर बैठाकर, गुस्से से शोर मचाते हुए, पूरा जत्था सरपट चाल से काराशोकि की ओर बढ चला।

जब नोजवान नदी के किनारे-किनारे घोडे दौडाये जा रहे थे, अंधेरा गहरा हो चुका था। जल्दी ही वे उर्किमबाय के जाडे के चरागाहो से चिगीज के हृद-स्थल के पास आ पहुँचे, टीलेवाली राह को पार किया, सोते को टापते हुए पश्चिम की ओर, काराशोकि की ओर मुड गये।

उनकी राह मे एक ऐस्प वृक्षो का उपवन आया ही था कि सहसा खुले मे हथियारो से लैस, भयानक चीख-पुकार मचाता, घुडसवारो का एक जत्था उन पर टूट पडा।

"यह जा रहे है वे! चढ जाओ!"

"धराशायी कर दो! उन्हे मार डालो!"

"पीट डालो! कुत्तो की खाले उतार लो!"

चालीस आदमी कोनानबाय के जिगितो पर पैशाचिक चीत्कार के साथ चढ दौडे। चोकमारो और सोयिलो की चारो ओर गूँज मच गयी।

हमलावरो का नेता कराशा था। घण्टो पहले बायदालि ने उसे चेतावनी दे दी थी, 'तुमने एक सख्त कदम उठाया है—अब ध्यान रखो, कही असावधानी मे मारे न जाओ! चौकसी रखो!" कराशा घोडे पर बैठा पहाडियो की तेज निगरानी कर रहा था, तभी झुटपुटे के समय उर्किमबाय के आऊल की ओर पहुँचते हुए उसे घुडसवार दिखाई दिये और तुरत ही उसने उनके इरादो का अन्दाज लगा लिया। अपने ही आऊल मे उसने पाँच जिगितो को इकट्ठा किया और लौटते समय रास्ते मे काउमेन के जिगित उसके साथ हो लिये। आऊल मे ही उन्हे रोक पाने मे काफी देर हो चुकी थी, सो उसने उन्हे एक सुविधाजनक जगह पर छुपा दिया।

कराशा निपुण सोयिल योद्धा था और उसके आऊल के जिगित भी लडाई मे किसी से उन्नीस न थे।

कोनानबाय के आदमियो का नेतृत्व कुलिनशक के पाँच "दुस्साहसी" बेटो मे से एक मनस कर रहा था। जब जगल से दुर्धर्ष जत्थे ने उस पर हमला बोल दिया, वह भौचक नही रह गया था, उसने अपने दिमाग पर काबू रखा था। उसने अपने घुटने के नीचे से चोकमार खीच लिया।

"डटे रहो!" वह चीखा। "बहुत है तो क्या हुआ? दाँत खट्टे कर दो!"

दोनो दल एक-दूसरे पर उन्मत्त रूप से टूट पड़े। मनस ने पलक झपकते ही दो जिगितेको को घोडो से गिरा दिया लेकिन कराशा ने इतनी तेजी से उस पर धावा बोल दिया कि उसे अपने बचाव मे लग जाना पडा। कसकर बंधा उर्किमबाय लड़ाई मे कराशा को पहचान गया और चीख़ पड़ा:

"मै यहाँ हूँ! कराशा, मुझे छुडाओ!"

कराशा पलट गया और उस घोड़े के पीछे भाग चला जिस पर दोनों घुड़सवार थे। लेकिन वह कोनानबाय के कुम्मैत घोड़ो मे एक था और उससे आगे जा पाना असंभव-सा प्रतीत हो रहा था। तो भी क़राशा पीछे लगा रहा। नादानबाय और उसके कैदी को दूसरों से अलग करने के बाद सरगर्मी से उसने नादानबाय का पीछा तब तक जारी रखा जब तक वह अपनी रक्षा के लिए घोड़ो को मोड़ लेने पर मजबूर नही हो गया। उर्किमबाय तत्परता से इस मौके का फ़ायदा उठाते हुए जमीन पर फिसल गया और तुरत ही उसके दोस्तो ने उसे ज़मीन से उठा लिया।

लोगों की आवाजो और घोडो की टापो की गूज सारी पहाडियो मे प्रतिध्वनित हो उठी और घटनास्थल पर चीख-पुकार मचाते बहुत से घुड़सवार तेज़ी से आ धमके।

"भागो! खदेडते हुए आगे बढो! मेरे पीछे-पीछे आओ!" मनस ने चीखकर कहा जब उसने देखा जिगितेक लोगो ने अपना आदमी छुडा लिया है।

चट्टानो के बीच के एक दर्रे से होते हुए वे सरपट भाग खडे हुए और जल्दी ही अंधेरे मे गुम हो गये।

मायबासार के सन्देशवाहको की पिटाई और कोनानबाय के जिगितो की कैद से उर्किमबाय की जबरन रिहाई – इन दोनो घटनाओ ने जिगितेक लोगो को प्रोत्साहित और उनके आत्मविश्वास को दृढ़ कर दिया।

६

दूसरे दिन मौसम में परिवर्त्तन आ गया। उसी दिन पहली बार ठंडी बर्फ़ीली हवा चली।

चिंगीज़ पर्वतमालाओं से आम तौर से ख़ुशगवार हवा चलती रहती थी। वसन्त मे यह बर्फ़ को बहा ले जाती, दर्रो और जंगलों को साफ़ कर देती। जाड़े में भी यह चरवाहों की मददगार होती, यानी चरागाहों से बर्फ़ को साफ़ कर ले जाती और चूँकि यह आदतन दक्षिण की ओर से बहती, शायद ही कभी बहुत ठंडी होती। निस्संदेह, यह ख़तरनाक भी हो सकती थी क्योंकि ऐसे भी मौक़े आते जब यह ऊँचाइयों से कोई बहुत बड़ी चट्टान लुढ़का देती, हर लम्बे पौधे जड़ से उखाड़ फेंकती और इससे सिर्फ़ नीचे की झाड़ियों और मुलायम घास को ही निजात रहती जो भेड़ों के लिए जाड़े की सबसे उत्तम चारा थी।

पतझड़ में ही चिंगीज़ पर्वतमाला में चलनेवाली हवा दुश्मन होती थी। इसके भयानक तेज़ झोंके असह्य होते, कुहासे छा जाते, आकाश प्रवाहहीन बादलों से आच्छादित हो उठता।

इसी दिन हवा अपने साथ बर्फ़ के फुहारे—वर्ष के पहले फुहारे लायी।

दर्रो और वादियों के आऊल जाड़े के पड़ावों में बस चुके थे। हालाँकि बहुत से अभी भी अपने ओतावों में रह रहे थे, मौसम पर कड़ी निगरानी रखी जाती और जाड़े के इस पहले दिन ने सब को शिविर उखाड़कर अपनी-अपनी चीज़ें गर्म स्थानों पर ले जाने को मजबूर कर दिया। क़ारा-शोक़ि स्थित क़ोनानबाय के आऊल में ऐसी हलचल मची थी कि लगता था जैसे वहाँ जनाज़े के भोज की तैयारी हो।

जब मायबासार के जिगित अपने क़ैदी को गँवा कर ख़ाली हाथ लौटे, क़ोनानबाय ने अपने हरकारे सभी दिशाओं में दौड़ा दिये। बायसाल के साथ जो बुज़ुर्ग उससे मिलने आये थे, उन्हें रोक लिया गया और जल्दी ही इर्गिज़बाय के दूसरे लोग आ जुटे। जहाँ कहीं भी हरकारे पहुँचते, लोग तेज़ी से अपने घोड़ों पर सवार हो चल पड़ते।वे क़ोनानबाय के आऊल में सभी दिशाओं से उमड़े पड़ रहे थे।

मायबासार के नेतृत्व में दस जिगित अभी तक क़िज़िलशोक़ि मे टिके बोकेंशियों के पास भेजे गये।

जिगित उनके लिए अपने प्रमुख के कड़े आदेश साथ लाये थे जिनके कारण उन्हें आख़िर मजबूर होकर रवाना होना पड़ा। सुयून्दिक़ और सुगिर काफ़ी पहले से इसके लिए तैयार थे और सिर्फ़ संकेत की प्रतीक्षा कर रहे

थे। विदा होनेवालो मे वे पहले लोग थे और दूसरो को उनके पीछे-पीछे आना पडा।

लेकिन उस दिन कूच करनेवालो मे बोकेशी ही अकेले न थे। कोनानबाय के भी बहुत-से आऊल रवाना हुए थे। शुरू मे आगा-सुल्तान ने जो उन सब को अपनी पहुँच के अन्दर ही रखने की इच्छा रखता था, उन्हे कूच करने का आदेश नही दिया था। लेकिन जाडे के पदार्पण के साथ वह अपनी बूढी माँ और उलजान व बच्चो को ठड मे जमने को नही छोड सकता था।

"ठड पडने लगी है। चलो हम जाडो के पडाव पर चले," बच्चो ने उलजान और बूढी जेरे से बार-बार कहा और उन्होने लगातार कोनानबाय की नाक मे दम कर रखा था। आखिर वह राजी हो गया था।

कोनानबाय ने लोगो के अपने-अपने आऊल के विदा कर देने और चिगीज मे विचरण के दौरान होनेवाले इस आम हडबौग से फायदा उठाने मे जल्दी की।

हरकारो द्वारा हाजिरतलब घुडसवार एकदम सुबह से जमा हो रहे थे। दोपहर तक उनकी सख्या बहुत बडी हो गयी—हमले के लिए तैयार सोयिलो, भालो और चोकमारो से लैस एक विशाल लडाकू फोज।

इर्गिजबाय के अलावा दूसरे कबीलो के लोग भी थे—उनमे कोतिबक लोगो का नेतृत्व बायसाल कर रहा था। जाडे के उनके पडाव कोनानबाय के पडावो के साथ-साथ लगे थे।

दोपहर मे शस्त्रो से सुसज्जित बायसाल और मायबासार को साथ लिये कोनानबाय भीड के समक्ष उपस्थित हुआ।

"घोडो पर सवार!" उसने हुक्म दिया।

सभी उछलकर अपने-अपने घोडो पर जा बैठे। अपने हथियारो को झपटकर लपक लेनेवालो मे पहले इर्गिजबाय थे।

हवा तेज होती जा रही थी और चोटियो पर साँय-साँय कर रही थी! बर्फ का जमना शुरू हो गया था, उडते फुहारे सीधे चेहरो से आ टकराते और धरती पर बिछ जाते। पहाडियाँ धुँधली-धुधली-सी हो गयी थी और हर चीज को पाले ने अपने आगोश मे ले लिया था। पर्वत-शृगो को बर्फीली कुहा ने छा लिया था।

कोनानबाय ने अपने भूरे कुम्मैत पर सवार हो पूरी दृश्यावली का

जायजा लिया। उसकी भाहो की झुर्रियाँ और गहरी तथा उसकी अकेली आँख भयानक रूप से लाल हो उठी।

उसने थोडे मे बायसाल और मायबासार को आदेश दिया "आगे बढो!"

बोजेय के जाडे के पडावो – तोकपामबेत की ओर इतनी बडी सख्या मे घुडसवारो के कूच करने से बर्फ से जमी धरती टापो से गूँज उठी। कोनानबाय और उसका जत्था हरावल के रूप मे आगे-आगे था। जल्दी ही वे तेज गति से आगे बढ चले।

सूर्य अभी भी बुलन्दी पर था जब कोनानबाय अपनी सेना के साथ उस टीले के पास पहुँच गया जो बोजेय के जाडे के पडावो से ज्यादा दूर न था।

तोकपामबेत मे जाडे के लिए अन्तिम तैयारियाँ की जा रही थी। चिमनियो से भेड गोबर जलने से गहरा पीला धुआँ निकल रहा था और झोपडियो के बाहर बहुत से लोग कामो मे लगे थे। कोनानबाय ने तुरत ही देख लिया, दीवारो से थोडे से घोडे बँधे थे। बाकी घोडो पर जीन तो कसे थे लेकिन वे अस्त-व्यस्त से इधर-उधर भरे पूरे चरागाहो मे चर रहे थे।

जब उन्होने बहुत बडी सख्या मे घुडसवारो को आते देखा, झोपडो के आस-पास के लोग झपटकर गति मे आ गये। घोडो के लिए आम भाग-दौड मच गयी और सब कही सोयिल और भाले चमक उठे। मरता क्या न करता – इस हालत मे जिगितेक लडने को तैयार लग रहे थे। पल भर मे वे सब घोडो पर सवार हा जायेगे।

कोनानबाय ने इस फौरी नाजुक हालत को महसूस किया और तुरत कारवाई की।

"ओलजाय! ओलजाय!" वह अपने घोडे को एड लगाकर चीखा।

पूरी सेना उसके पीछे से "इर्गिजबाय! इर्गिजबाय!" "तोपाय! तोपाय!" की गर्जना के साथ आगे बढ चली। स्तेपियो मे तेजी से फैलने-वाली आग की लपटो की तरह वे ढलानो मे फैल गये। उनकी चीख-पुकार,

---

* ओलजाय – इर्गिजबाय के एक पूर्वज का नाम और कबीले की युद्धगर्जना। – स०

युद्ध गर्जना तथा घोडो के टापो की आवाजे पहाडियो और वादियो मे प्रतिध्वनित हो उठी।

बोजेय के आदमियो की सख्या कोनानबाय के मुकाबले कही कम थी। और फिर जिगितेक जुट नही पाये थे—उन पर असावधानी मे ही हमला किया गया था। रिवाज के मुताबिक तो प्रतिद्वन्द्वी को अपने इरादो से परिचित करा देना चाहिए था, लडाई का मैदान तय कर देना चाहिए था और तभी घुडसवारो को हमले के लिए भेजना चाहिए था। कोनानबाय ने ऐसा नही किया था। उसने बिना चेतावनी दिये हमला बोल दिया था।

बोजेय के इर्द-गिर्द बस वही लोग थे जो पडोस मे रहते थे। पादश्रेणियो मे रहनेवाले आऊलो तथा नदी के किनारो पर रहनेवाले जिगितेको को चेतावनी देना असभव था। पहाडियो के अधिकॉश जिगितेक कूच की तैयारी मे व्यस्त थे।

बोजेय के साथ आ जुटनेवालो मे दस वे लोग थे जिन्हे दर्कमबाय लाया था। सुबह मे इर्गिजबाय के जाडे के विभिन्न पडावो से काराशोकि की ओर कूच करते बहुत से हथियारबन्द लोगो की कतारो को देखकर उसे सन्देह हो आया था। "कोनानबाय शायद अपने स्वजनो को बोजेय और सारे जिगितेक पर हमला बोलने के लिए एकत्र कर रहा है," उसने सोचा। दोपहर से बहुत पहले ही उसने बोजेय तथा दूसरे स्वजनो को चेतावनी दे दी थी। रास्ते मे वह बायदालि, कराशा, काउमेन और उर्किमबाय से मिला था और उन सबो को अपने-अपने बेटो के साथ यहॉ लाया था।

अपने अगुआ की रक्षा करने कुल मिलाकर कोई चालीस लोग इकट्ठा हुए थे। उनमे काउमेन और कराशा के सूरमा बेटे तथा हथियारो से लैस एव अपने लोगो के लिए लडने को तत्पर दूसरे जिगित भी थे। पहले उन्होने आस-पास चर रहे घोडो पर जल्दी से सवार हो अपनी युद्ध-गर्जना "केगिरबाय! केगिरबाय!" के साथ हाथ मे सोयिल और चोकमार लिये दुश्मनो पर टूट पडना चाहा था। लेकिन बायदालि ने उन्हे रोक दिया।

"ठहरो! क्या बोजेय को अरक्षित छोड दोगे? अगर हमे मरना है तो साथ ही मरेगे!"

कोनानबाय की सेना तेजी से करीब आती जा रही थी। कोनानबाय के नेतृत्व मे उसके जिगित, निष्ठुरता से कृत-सकल्प उनके सिर पर जा चढ़ने को चले आ रहे थे।

बोजेय किंकर्त्तव्यविमूढ था। "क्या बला हम पर आयी है! उसने हम पर असावधानी मे ही हमला बोल दिया है! फिर विपत्ति बिना चेताये आ गयी है!" वह निराशा से बार-बार कहे जा रहा था।

उसकी एकमात्र आशा उन जिगितो पर टिकी थी जो किसी तरह घोडो पर सवार होने मे सफल रहे थे। हाथ मे सोयिल लिये वे पॉच-पॉच, दस-दस के छोटे-छोटे दलो मे कोनानबाय की सैन्य-टुकडियो की सामना कर सकते थे। लेकिन वे बहुत थोडे जो थे! दूसरे अपने घोडो को पकडने के लिए अब भी खेतो मे इधर-उधर दौड रहे थे। क्या दुश्मन उन्हे घोडो पर सवार होने तक का भी मौका दिये बिना धराशायी कर डालेगे?

कोनानबाय ने धावा बोल दिया। अपनी गति कम किये बिना प्रतिद्वन्द्वियो पर दोतरफा हमला बोलने के लिए उसने दो सौ को भेज दिया। जैसे ही युद्धोन्मादपूर्ण चीख-पुकार करते उसका जत्था पहुॅचा, चरते घोडे सभी दिशाओ मे भाग खडे हुए, सोयिलो ने उनकी लकडी की जीनो को टुकडे-टुकडे कर दिये।

जिगितेको की एक छोटी-सी पैदल कतार ने कोनानबाय का सामना करने की कोशिश की, लेकिन इर्गिजबाय के भूचाल ने उन्हे छा लिया जिनकी ताकत दो सौ को अलाहदा रवाना कर देने पर भी कम होती दिखाई नही दे रही थी। कोनानबाय की टुकडी पर हमला बोलनेवाले जिगितेक घुडसवारो को शीघ्रतापूर्वक धराशायी कर दिया गया। भला उनके लिये इससे आसान और क्या हो सकता था—क्या बेमेल मुकाबला था—एक-एक पर चालीस-पचास!

जो चरागाहो मे अपने घोडो तक नही पहुॅच पाये, उन्होने भी पैरो पर खडे हो लडने की कोशिश की। लेकिन किसी पैदल आदमी की किसी हथियारबन्द घुडसवार के सामने बिसात ही क्या? अत्यल्प समय मे ही उनकी दुर्गति हो गयी, एक ही बार के सुसचालित हमले मे उनमे से हरेक परास्त हो गया। झोपडो से हट आये लोगो का भी वही हश्र हुआ। हमलावर अपनी श्रेष्ठता जानते थे और उनकी युद्ध-गर्जना और भी जोरदार हो उठी।

"ओलजाय! ओलजाय! इर्गिजबाय! इर्गिजबाय! तोपाय! तोंगाय!" अपने दुश्मनो के दिलो मे दहशत भरते वे ओलजाय तथा अपने दूसरे पूर्वजो की रूहो का आह्वान कर रहे थे।

सारे प्रतिरोध चकनाचूर कर दिये गये और विजेता घरो पर ठोस सैन्य बल के साथ टूट पडे। घुडसवारो की चीख-पुकार, उनके सोयिलो की टकराहट और घोडे की टापो की आवाजे—सब ने मिलकर एक आम शोरगुल का रूप धारण कर लिया।

बोजेय की छोटी-सी सेना जाडे के पडाव से नही हिली थी। सबने चोकमार और सोयिल उठा रखे थे, वे युद्ध मे टूट पडने को तत्पर योद्धाओ की टोली थे जो चाहे कुछ भी हो हार नही मानेगे। वे चारो ओर से घिरे थे।

"जाडे के पडाव की रक्षा मे जुट जाओ। दरवाजो पर डट जाओ। उन्हे बाहर रखो! हम आखिर तक लडेगे!" बायदालि चीखकर बोला और ओतावो की ओर बढ चला।

काउमेन के दोनो बेटो के नेतृत्व मे सबसे बहादुर और दृढ जिगितो से घिरे बायदालि और बोजेय ने मुख्य प्रवेश के आस-पास मोर्चा लिया।

लेकिन दुश्मनो की सख्या अपार थी। इर्गिजबाय के घोडे ऐन दरवाजे पर धमाचौकडी कर रहे थे और उनके घुडसवार हुक्म का इन्तजार।

अभी भी घोडे पर सवार कोनानबाय अपने आदमियो के बीच मे था।

इसी पल दर्केमबाय बोजेय और बायदालि को धकियाते हुए आगे बढ गया और पायो पर एक पुरानी पत्थरकला बन्दूक को टिकाते हुए निशाना साधने लगा। खुदा जाने उसे यह हथियार कहाँ से मिला। बहरहाल बन्दूक भरी थी और सिर्फ आग लगाने भर की देर थी। उच्छ्वास लेते हुए दर्केमबाय ने बोजेय को आवाज दी

"वह काना शैतान एकदम हृदयहीन है! वह फिर हमारा मजाक उडाने आया है लेकिन हम उसको इस बार चारो खाने चित्त कर देगे। एक ओर हट जाओ!" और अस्त-व्यस्तता मे उसने चकमक पत्थर से एक चिनगारी पैदा करने की कोशिश की।

बोजेय ने उसका हाथ पकड लिया।

"नही, ऐसा न करो! उसे सजा मुकर्रर करना हमारा काम नही है। हमारे पूर्वजो की रूहे उसे सजा देगी!"

इसी समय कोलाहल से ऊपर कोनानबाय की आवाज गूँजी:

"उन्हे उनके माँदो से खीच निकालो। उन्हे गुलामो की तरह जकड़कर बाहर खीच लाओ!"

मायबासार के नेतृत्व मे टुकडी दरवाजे की ओर तेजी से बढी। उन्हे हिचकिचाते देख कोनानबाय ने आगे बढने को प्रोत्साहित किया।

दर्कमबाय और उन लोगो ने जा बायदालि और बोजेय को घेरे हुए थे, जान की बाजी लगा दी लेकिन लडाई बडी ही बेमेल थी। इर्गिजबाय घर मे घुस पडे।

नीची छत के नीचे रक्षक अपने सोयिल तक घुमा पाने मे असमर्थ थे। चन्द मिनटो मे वे पराजित हो गये और उनके हथियार छीनकर उन्हे खीचते बाहर खुले मे ले जाया गया।

कराशा, उर्किमबाय और दूसरे जिगितो के बाहर आते न आते, उन पर फिर घूँसो की वर्षा होने लगी। लहूलुहान और खस्ताहाल उन लोगो ने गन्दी से गन्दी भाषा मे कोनानबाय को कोसते हुए प्रतिरोध जारी रखा लेकिन चारो ओर फैली खलबली मे उनके शब्द खोकर रह गये।

"उन्हे जरा कोडे का मजा तो चखाओ!" अपनी आँखे भयानक रूप से दहकाते हुए मायबासार गरज उठा। "उन्हे छोडो मत! उन्हे बता दो, किससे झगडा मोल लिया है उन्होने!"

दोनो सन्देशवाहको – कमिसबाय और जुमागुल के नेतृत्व मे जिगितो ने बिना मोह-माया कोडे फटकारने शुरू कर दिये।

कोनानबाय ने इस ओर कोई रुचि नही दिखाई – वह तीखी नजरो से घर से बाहर खीचकर लाये जा रहे लोगो का मुआयना कर रहा था। उसे उसकी तलाश थी जो वास्तव मे उसके गुस्से का शिकार था। वह था बेचारा बोजेय।

आखिर बोजेय नजर आया, लेकिन उसकी हालत तनिक भी दूसरो जैसी न थी। किसी ने भी उसपर हाथ डालने की हिम्मत नही की थी। उसकी लोमडी के फर की टोपी बेतरतीब न थी और न ही उसकी पोशाक अव्यवस्थित या फटी थी। वह बिना किसी मजबूरी से खुद बाहर निकल आया। इर्गिजबाय उसके चारो ओर तग घेरा डाले बस साथ-साथ चले आ रहे थे।

कोनानबाय अपने घोडे को एड लगाकर करीब आया। बायसाल भी अपने घोडो को हॉककर और करीब आ गया।

"कोडे!" कोनानबाय ने मायबासार को हुक्म दिया।

जुमागुल और कमिसबाय बोजेय पर टूट पडे और उसे जमीन पर गिरा दिया।

"उसे कोड़े लगाओ! उसकी धज्जियाँ उड़ा दो!" क़ोनानबाय गुस्से में चीख़ा।

"तुम्हारी यह आँख सड़ जाए! अरे, क़ोनानबाय, तुम्हारे पूर्वजों की रूहें तुम्हारा सर्वनाश करेंगी," गुस्से से बोजेय गरज उठा।

लेकिन उसे ज़मीन पर गिरा कर उसके फ़र का कोट और चापान* उतार डाले गये। क़मिसबाय अपना कोड़ा हवा मे झुलाते बोजेय के ऊपर खड़ा था। बोजेय की पीठ नंगी थी और उसका सफ़ेद जिस्म क़ोनानबाय के क़ुम्मैत के ठीक पैरों के नीचे पड़ा था। जन समूह पर गहरी चुप्पी छा गयी थी।

क़मिसबाय का कोड़ा हवा में लहराया, लेकिन सहसा ही एक आदमी भीड़ चीरकर बोजेय के ऊपर जा गिरा और उसे अपने शरीर से ढँक लिया।

यह क़ोतिबक़ का पुशरबाय था – बोजेय का हमउम्र और दोस्त।

"बहुत हुआ, बहुत हुआ, क़ोनानबाय! अराशा!.. आराशा!"** वह चीख़ा।

"उसे भी कोड़े लगाओ! मारो कुत्ते को!" गुस्से में क़ोनानबाय अपना कोड़ा घुमाने लगा था।

"ज़रा हिम्मत तो करो!" एक मज़बूत और आदेशात्मक आवाज़ गूँज उठी, यह बायसाल की आवाज़ थी। क़ोनानबाय तेजी से पलट पड़ा और पूरी तरह घूरकर उसके चेहरे को देखा। बायसाल की मुखाकृति काफ़ी कुछ कह रही थी लेकिन कोनानबाय पर कोई असर न पड़ा।

"मार गिराओ! दोनों को कोड़े लगाओ!" उसने आदेश दिया।

मायबासार की अगुआई मे इर्गिज़बाय ने हुक्म का पालन किया। बोजेय और पुशरबाय पर घूसों की वर्षा होने लगी।

बायसाल का घोड़ा सहसा हरकत में आते हुए सरपट बढ़ चला और उसके मालिक ने तेज़ी से झुककर मायबासार को एक ओर धक्का देकर गिरा दिया।

---

* चापान – रूईदार चोगा।

** अराशा – 'मैं मध्यस्थ बनता हूँ।' यह शब्द बोलनेवाला दूसरे का दोष अपने ऊपर ले लेता है। – सं०

"कोतिबक़! सारे क़ोतिबक़, मेरे साथ आओ!" यह क़बीले की एक गुहार थी और क़ोतिबक़ में एक तेज़ हलचल मच गयी। बहुत बड़े समूह मे वे क़ोनानबाय से अलग हो गये और जिगितेकों में आ जुटे।

पराजित और असहाय बोजेय बायसाल के लिए बहुत उपयोगी न होता लेकिन लड़ाई फिर शुरू न हुई। यह स्पष्ट था कि बोजेय, पुशरबाय तथा उसके सारे लोगो के साथ किये गये दुर्व्यवहार से बायसाल को गहरी चोट पहुँची थी और अपने गुस्सा और कड़वाहट में वह अकस्मात ही जिगितेक से जा मिला था।

यह बात जिगितों और मायबासार के सन्देशवाहकों के सामने साफ़ थी और उन्होने पिटाई रोक दी। इसके बजाय वे हट आये और बोजेय को खड़ा होने दिया।

"अरे, क़ोनानबाय!" जा रहे प्रमुख की ओर गुस्से से चीख़कर बोजेय ने कहा। "आज तुम्हें मैंने गोली लगने से बचा लिया और तुमने मुझे आग मे झोक दिया! मैं तुम्हें आज का दिन भूलने नही दूँगा!"

क़ोतिबक़ के अलाहदा होने के बाद जो उसके साथ रह गये थे उन सब को क़ोनानबाय ने एकत्र किया और अब भी बेशुमार सेना से घिरा क़ारा-शोक़ि की ओर लौट गया।

प्रयाण

१

ऊँचाई पर पहुँचकर गहरे धुँधले बादल में अभी-अभी सूरज डूब चुका था और रात की गहरी होती परछाँई कमरे के कोने-कोने से रेंगती चली आ रही थी।

आबाय अपनी माँ और दादी के साथ उलजान के मकान में रहता था। उलजान का मकान जिदेबाय के जाड़े के पड़ावों में सबसे बड़ा था। कुशादा और दिलपसन्द यह मकान क़ालीनों, नमदों व अलाशा* से सुसज्जित था।

दीपक अभी तक जलाया नहीं गया था। उसमें रहनेवाले अधिकांश लोग बाहर कई कामों में लगे थे और विशाल कमरा अपने सूनेपन में और भी विशाल लग रहा था।

खिड़की के पास घुटने के बल झुका आबाय चौकसी से चिगीज़ पर्वत श्रेणियों को देख रहा था। उसने कोहनी चौखट पर और ठुड्डी अपनी हथेलियों पर टिका रखी थी। उसकी दाहिनी ओर ज़मीन पर बिछे बिस्तरे पर बैठी ज़ेरे अपने घुटनों से हल्के-हल्के आयगिज़ की बेटी और अपनी पोती क़मशत का पालना हिलाये जा रही थी। आदतन बूढ़ी कोई लोरी भी गुनगुनाये जा रही थी। यह एक पुराना गीत था, शायद बुढ़िया से भी ज़्यादा पुराना और अब उस गीत को गानेवाली वही एकमात्र थी। आबाय को वह गीत दादी-अम्माँ जितना ही स्नेहपूर्ण और प्रिय था!

* अलाशा चमकीले साँचों से सुसज्जित ऊनी पलंग-पोश।

बहुत पहले, कभी उसे भी इसी लोरी की मधुर तान पर सुलाया जाता होगा। और तब से इसमें कोई परिवर्तन नहीं आया था—एक शब्द भी नहीं: अच्छा गीत माँ के हृदय की तरह शाश्वत और अद्वितीय होता है। यह गीत रजनी के शान्त उच्छ्वास की भाँति प्रशान्त था और दादी अम्माँ की कोमल आवाज़ ने सूर्यास्त के समय के सूनेपन को और गहरा कर दिया था। आबाय ने ज़ेरे के इतने स्नेहपूर्ण और इसके बावजूद कसक भरे गीत को सुनते हुए ऐसा महसूस किया जैसे वह उसे भी लोरी सुनाकर सुला रही है। वह इसे लम्बे समय तक, हमेशा-हमेशा सुनते रहना पसन्द करता।

जिस दिन वे यहाँ पहुँचे थे, उसी दिन से आबाय अपनी शामें दादी अम्माँ के साथ ही गुज़ारा करता था। वह उससे इतना आकृष्ट क्यों था, शायद पूछने पर वह ठीक-ठीक नहीं बता सकता। शाम के झुटपुटे में जब ढोर चरागाहों से लौट रहे होते थे, वह अपनी छोटी माँ आयगिज़ के यहाँ जाता और अपनी नन्ही बहन क़मशत को उठा लाता। फिर उसे दादी अम्माँ के पास ले आता, दुलारता और उसके साथ खेलता।

लेकिन क़मशत आसानी से नहीं सो जाती। गीत के हर विराम पर वह अपनी बड़ी-बड़ी, काले अंगूर जैसी आँखें खोल लेती और अपनी लम्बी-लम्बी बरौनियों को झपकाती, हल्की-सी चुसकती आवाज़ करती मानो गीत जारी रखने की माँग कर रही हो।

आम तौर से आबाय अपनी शाम का समय एकाकीपन में बिताया करता। अगर इस समय बाहर निकलता तो पास की ही एक पहाड़ी पर चढ़ना पसन्द करता। वह शाम की स्तेपियों को एक रहस्यमय, बाध्यकारी शक्ति से व्याप्त पाता जो उसके विचारों को आश्चर्यजनक रूप सेप्रभावित करती।

अब हृदय शीतल करनेवाले गीत को सुनते हुए, उसकी नज़रें पर्वतों पर, चिंगीज़ की ऊँची-नीची, असमान नुकीली चट्टानों को छूती सबसे दूर धुँधली, मुश्किल से दिखाई देनेवाली चोटियों पर भटक रही थी।

जिदेबाय से पहाड़ियाँ कोई पन्द्रह मील थी लेकिन घिर आये धुंधलके में वह क़रीब आ गयी प्रतीत होती थी। विशाल पर्वतश्रेणियों की गहरी काली व अनिष्टकारी, उदास बाह्याकृतियाँ ऐसी मालूम पड़तीं जैसे राक्षसगण पत्थरों में बदल गये हों। अचल और निर्वाक, वे धीरे-धीरे ख़ुद को अंधेरे के लबादे में छुपाये जा रहे थे।

पहाड़ियों में क्या कुछ हो रहा था? जिगितेक पर हुए हमले के बारे में ख़बरें अब तक आऊल में नहीं पहुँची थी लेकिन सन्देश मिला था, बोकेंशी क़ाराशोक़ि से खदेड़ दिये गये है, कि वे आठ-आठ आँसू बहाते जाड़े के अपने पड़ाव छोड़कर जा चुके है। सब जानते थे, बलखाती चिंगीज़ पर्वतमाला पर कोई भयानक आपदा आयी है और आबाय को भी इसका आभास हो गया था।

पहाड़ियों से आती ठंडी हवा वहाँ व्याप्त निष्ठुर जीवन का एक झोंका सा प्रतीत होती थी। लेकिन बर्फ़ीला झोंका दादी-अम्माँ के गीत के स्नेह-उत्ताप में गल गया लगता। किसी गीत में कितनी महान शक्ति छुपी होती है!

अपने ख़्याल से चौंक कर, आबाय ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठा लीं।

पूर्णिमा का चाँद वहाँ तैर रहा था, कभी किसी अकेले काले बादल को छू देता, कभी उसके पीछे छुप जाता और शरारत से उसके बीच से झाँकने लगता। विमुग्ध आबाय अपने ख़्यालों को भूल गया।

चाँद एक और बादल के नीचे ग़ोता लगा गया, पल भर के लिए फक् से बाहर आया और फिर गुम। ऐसा लग रहा था जैसे लुका-छिपी खेल रहा हो: कभी एक मिनट के लिए पूरी तरह छुप जाता। फिर चमकता, मुस्कुराता, अचानक ही काले पर्दे से बाहर निकल आता और अगले ही पल फिर ग़ायब हो जाता। कभी ऐसा लगता जैसे किसी को चिढ़ाने के लिए आँखें मार रहा हो, कभी चाँदी की तश्तरी की तरह स्थिर हो तैरने लगता और दुबारा धुँध में डूब जाता। अहा, चाँद कितना कौतुकी है! और जब वह पल भर को दमकता हुआ बाहर झाँकता, उसे यह कल्पना कर हँसी आती—क्या बच्चे की तरह चाँद खेल कर रहा था?

यह ऐसा देखने योग्य कौतुक था कि आबाय उसकी ओर घण्टों ताकता रह सकता था। लेकिन अकस्मात बाहर शोरगुल हुआ और उसने किसी को दरवाज़े तक दौड़कर आते सुना। ओस्पान अन्दर आया। वह ज़रूर किसी को चिढ़ा रहा होगा और हमेशा की तरह सिर पर पाँव रखकर भागा होगा। वह बहुत ज़ोर-ज़ोर से हँसता हुआ दौड़ता अन्दर आया था। उसके पीछे-पीछे अन्दर आनेवाला ओस्पान की ही उम्र का उसकी छोटी माँ आयग़िज़ का बेटा स्मागुल था, रोता, बिसूरता।

साफ़ तौर पर, ओस्पान ने किसी न किसी तरह स्मागुल को चिढ़ा दिया था। उछलकर आबाय ने ओस्पान को पकड़ लिया। आख़िर स्मागुल ने उसे पकड़ ही लिया था! लेकिन अपने घर में होने की भावना से बल पाकर उसने हमलावर का सामना बेहिचक किया।

"क्या चाहता है तू?" स्मागुल को कॉलर से पकड़ते हुए वह चीख़ा।

आबाय ने उन्हें अलग कर दिया।

"उसने क्या किया है?" आबाय ने स्मागुल से पूछा।

"उसने मेरा पाँसा ले लिया है!" यह कहकर वह पहले से भी ज़्यादा ज़ोरों से रो पड़ा।

"मैंने लिया है? पेंपियाहे कहीं के," ओस्पान ने चिढ़ाते हुए भाई की नक़ल उतारी, "मेरा पाँसा ले लिया है।"

"वापस दे दो," आबाय कठोरता से बोला।

लेकिन टेढ़े या सीधे, ओस्पान ने अपनी बात पर टिके रहने का फ़ैसला कर लिया था।

"वह झूठा है। उसके पास कोई पाँसा-वाँसा था ही नही!"

आबाय ने उसकी तलाशी लेने की कोशिश की लेकिन झटका देकर ख़ुद को छुड़ाते हुए वह अँगीठी के पास भाग गया और पीठ के पीछे हाथ किये बड़ी गुस्ताख़ी से एक कोने में जा चिपका। पास ही क़िमिज़ भरी एक बाल्टी रखी थी और उसने तय कर लिया, अगर आबाय ने पाँसा पाने के लिए दुबारा कोशिश की तो यह बाल्टी बड़े काम की साबित होगी। मामला बिगड़ा तो वह बाल्टी को ही लुढ़का देगा और ख़ुद आबाय ही चक्कर में पड़ जायेगा। लेकिन आबाय ने उसकी चाल भाँप ली थी। उसे पकड़ने, वह उसके पीछे दौड़ा ही नहीं, दूर ही रहा।

"मुझे अपने हाथ दिखाओ," अचानक ही झपट्टा मारकर ओस्पान के कान पकड़ते हुए उसने कहा।

चीख़कर ओस्पान ने बाल्टी पर लात जमा दी। बाल्टी लुढ़काने से तो आबाय ने उसे रोक लिया लेकिन झटका खाकर ढक्कन दूर जा गिरा। बुरी तरह बल खाते हुए ओस्पान ने पाँसा क़िमिज़ में फेंक दिया।

"ओय-बाय! ज़रा देखो तो! मेरे हाथ में तो कुछ भी नही!" उसने झींकते हुए कहा।

आबाय क़िमिज़ में उसे पाँसा फेंकते नही देख पाया था लेकिन स्मागुल ने अपने सतानेवाले पर ही नज़र टिका रखी थी। वह दौड़कर बाल्टी के पास पहुँचा, अपनी आस्तीनें चढ़ायीं और गन्दा हाथ क़िमिज़ में डाल दिया। आस्तीन भी फिसलकर क़िमिज़ में गिर पड़ी लेकिन स्मागुल उत्साह से तलाश करता रहा। यह देख आबाय को बड़ा गुस्सा आया। उसने उसे खीचकर हटाने के लिए ओस्पान को छोड़ दिया।

किसी बाज़ की तरह ओस्पान अपने छोटे सौतेले भाई पर टूट पड़ा, उसकी पीठ पर कई घूँसे जड़ दिये और चुहल मे उसका सिर बाल्टी के अन्दर घुसेड़ दिया। बेचारा स्मागुल अपना ख़ज़ाना फिर से पाने में सफल नही हो पाया। उसके मुँह में, नाक में क़िमिज़ भर गया और परेशान, बड़बड़ाते हुए बड़ी कठिनाई से उसने अपना सिर बाहर निकाला।

"चोर कही का," ओस्पान पर गालियों की झड़ी लगाते वह चीख़ा।

आबाय दहल उठा।

"बेवकूफ़! ऐसे शब्द तूने कहाँ से सीखे, सूअर?" उसने लड़के को एक तमाचा जड़ दिया।

शैतानी की शुरुआत करनेवाले ओस्पान की भी थोड़ी पिटाई-डॅटाई हुई। दोनों छोकरे बिसूरते हुए अलग-अगल दिशाओं में भाग खड़े हुए। ओस्पान भागकर अपनी दादी-अम्माँ के पैरों से जा लिपटा, स्मागुल अपनी माँ के पास।

स्मागुल के शब्दों को सुन आबाय को जैसे लकवा-सा मार गया, वह वही ज़मीन में गड़ा-सा खड़ा रहा। उसने फिर ओस्पान को पेंपियाते सुना लेकिन अब उसकी आवाज़ के साथ आयगिज़ की गुस्से भरी चीख़ भी घुल-मिल गयी थी जो अपने बेटे के साथ-साथ चली आ रही थी।

मुख्य ओताव का दरवाज़ा भड़ाक से खुला। आयगिज़ ने अपने लड़के को कमरे में धकिया दिया और अभी पूरी तरह ड्योढ़ी पार भी नहीं की थी कि वह चीख़ पड़ी:

"लो, यह रहा! जी भर नोच-खसोट लो। काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दो! ज़िन्दा चबा जाओ!" वह आबाय के क़रीब आ गयी।

"कशी-आपा,"* उसने शान्तिपूर्वक कहना चाहा।

---

* कशी-आपा – छोटी माँ, पिता की छोटी बीवियो के लिए सम्बोधन।

लेकिन आयग़िज़ ने उसे बोलने ही नहीं दिया। किसी अनन्त वेगवती धारा की तरह शब्द उसके होंठों से निकले जा रहे थे।

"ठीक है, उससे मज़बूत हो, इसका फ़ायदा उठा लो! तुम हो भी तो बहुत, एक ही माँ से चार!"

"क्शी-आपा, सुनिये तो ज़रा... जो शब्द उसने इस्तेमाल किये थे, काश आपने सुने होते!"

"भला मुझे क्यों सुनना चाहिए? अब तुम तो बड़े हो ही गये हो और अपने विषदन्त भी तो दिखाना चाहते हो? स्मागुल तुम्हारी माँ की सौत का बेटा है न, इसलिए तो तुमने उसे मारा!"

"ख़ुदा गवाह है, क्या कह रही हैं आप?"

"तुम्हें छोटों और कमज़ोरों को पीटने का शौक़ है, क्यों, नहीं है? ठहर जाओ कल तक! ख़लील भी तुम्हें ज़रा मज़ा चखा देगा!" वह आबाय को अपने बड़े बेटे का नाम लेकर धमका रही थी जो स्कूल में पढ़ने शहर गया हुआ था।

ऐसा लग रहा था मानो दोनों आऊल लड़ाई की तैयारी कर रहे हों।

"क्या सच में, हमारी माँ, आप हमें बस यही सब बता सकती हैं?"

"ज़बान पर क़ाबू रखो! बहुत हुआ। तुम ज्येष्ठ लोग हो और हम – तोक़ल*। हमारी क़िस्मत में झुकना और पिटना बदा है, है न?"

आबाय अपनी छोटी माँ के खुले भोंड़ेपन से हक्का-बक्का रह गया। वह पीला पड़ गया और गुस्से से काँपते हुए उसने न तो माफ़ी माँगने और न तो हार मानने का फ़ैसला किया।

"यह सब बन्द कीजिए! आप कैसी औरत हैं?" उसने ग़ुस्से से कहा और ज़्यादा कुछ बोल पाने में असमर्थ हो, खिड़की की ओर मुड़ गया।

बहरी ज़ेरे सारा झगड़ा सुन पाने में तो असमर्थ थी, लेकिन आयग़िज़ की भाव-भंगिमा से उसने इसका मतलब भाँप लिया था। आबाय को परेशान होते भी उसने देख लिया था। क़मशत को छोड़ वह ग़ुस्से से उठ खड़ी हुई।

---

* तोक़ल – छोटी बीवी।

"निकल जा यहाँ से, दूर हो जा मेरी नज़रों से!" अपनी बहू के पास जाते हुए वह ज़ोरों से चीख़ पड़ी। "किस लिए बकबक कर रही है? बच्चों में झगड़े का बीज बो रही है, और क्या? तेरा कुछ अनिष्ट हो, इससे पहले ही यहाँ से निकल जा!"

आयग़िज़ बूढ़ी के सामने पीछे तो हट गयी, लेकिन अपनी गुस्ताख़ी भरी शिकायतें उसने जारी रखी।

"मैं तोक़ल हूँ, इसलिए आप मेरे ख़िलाफ़ है। मुझे बेइज़्ज़त करने के लिए आप सब मिल गये है। लेकिन हम भी देखेंगे। कल उनके आने तक ठहर जाओ!"

वह क़ोनानबाय का हवाला दे रही थी। आयग़िज़ अपने शौहर की चहेती थी और उसका भरोसा कर सकती थी। फिर भी, वह बस इतने ही ज़ोर से बोल रही थी जिससे आबाय तो सुन ले, ज़ेरे नही।

सहसा एक शान्त आवाज़ उसके पीछे से आयी। यह उलजान थी। वह बहुत पहले ही आ गयी थी और चुपचाप आयग़िज़ को चीख़ते सुन रही थी।

"ख़ुदा के लिए यह सब बन्द करो। बहुत हुआ! बच्चों की सोचो... इससे मैं उन्हें बचा रही थी लेकिन लगता है, तुम्हें इसकी कोई परवाह नही," उसने कहा।

"क्या तुम मुझसे हमेशा ही शान्त रहने की उम्मीद करती हो–सब कुछ चुपचाप सह लूँ?"

"मेहरबानी करके इसे बन्द करो। जाओ! तुमने जो कुछ यहाँ कहा, मैं तुम्हें उसकी याद कभी नहीं दिलाऊँगी–लेकिन मेहरबानी करके यहाँ से चली जाओ और गुस्सा अपने तक ही रखो।" उलजान की आवाज़ हमेशा की तरह शान्त थी।

आँखें तरेरकर उसकी ओर देखते हुए आयग़िज़ अपने बेटे का हाथ पकड़ चलती बनी। उलजान उसे जाते देखती रही, फिर ठंडी साँस ली और अपना कोट उतारा। चक़मक़ पत्थर को हाथ बढ़ाकर उठाया और उसकी चिनगारी से दीपक जला दिया। बड़े कमरे में लगभग खो-सी गयी पतली लाल-लाल लौ की रोशनी में उसने आबाय का दुखी, तमतमाया चेहरा देखा।

"आबायजान, तुझे क्या हो गया है, मेरे बेटे?"

"आपा! रुशी-आपा बार-बार इतना झगड़ती क्यों रहती है?" उसने पूछा।

यह सवाल किसी वयस्क आदमी का सवाल था। दूसरे बच्चों से उलजान अपने ख़्यालात छुपाती थी; लेकिन आबाय से कुछ भी छुपाने का उसका दिल नहीं कर पाता। उसे अपने राज़ बताकर वह भरोसा कर सकती थी।

"मेरे लाड़ले," उसने कहा। "सौत सौत ही रहेगी। हम अपनी ज़िन्दगी ज़ख़्म सहलाते ही बिताती है। मेरे दिल में कौन-कौन से दर्द छुपे हैं, तुम कैसे जान सकते हो?"

कहीं दिल की गहराइयों में आबाय उसे समझ सकता था लेकिन शब्दों में ज़ाहिर करना कठिन था।

कोई दरवाज़े पर हँस पड़ा। नवागन्तुक थे आबाय के बड़े भाई तकेजान और मुल्ला ग़बितख़ान। उनके साथ यौवनपूर्ण आह्लाद आता प्रतीत हुआ।

तकेजान की उम्र कोई सोलह साल की थी। उस मेधावी, लतीफ़ों और हाज़िरजवाबी की कहानियों के बहुत बड़े चहेते ग़बितख़ान से किसी तरह उसकी दोस्ती हो गयी थी और उम्र में फ़र्क़ होने के बावजूद वह उसके साथ बराबरी का व्यवहार करता था। मुल्ला के पीछे-पीछे आते हुए उसने उसके अनूठे उच्चारण के लिए उसे हँसते हुए चिढ़ाया।

ग़बितख़ान तातारी था। कुछ साल हुए, सैनिक भरती से बचने के लिए वह क़रक़रालींस्क भाग आया था जहाँ उसे बेर्तिस क़बीले ने अपना लिया और इस तरह उसने ख़ुद को इर्गिज़बाय की एक सुदूरवर्ती शाखा के आऊल में पाया। कम उम्र होने के बावजूद वह सुसंस्कृत व्यक्ति के रूप में जाना जाता। क़ोनानबाय को उसके पिता की बरसी में देखकर इर्गिज़बाय प्रमुख ने यहाँ बुला लिया था।

ग़बितख़ान अब भी कज़ाख़ भाषा को बड़े हास्यास्पद ढंग से तोड़-मरोड़ कर बोलता था, लेकिन उसकी सादगी, भद्रता और विद्वत्ता ने सबका दिल जीत लिया था। जवान और बूढ़े सब उसके साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करते थे। सिर्फ़ तकेजान ही उसका मज़ाक उड़ाता।

इधर पिछले कुछ दिनों से शाम को ग़बितख़ान माताओं के ओताव में 'अरब की रातों' से कहानियाँ सुनाया करता था। चाय के बाद

उलजान के अनुरोध पर उसने तीन अन्धे आदमियो की रोमाचक कथा शुरू की थी लेकिन तभी खिड़की से आगे सरपट गुजरे किसी घुडसवार की टापो की आवाज से कहानी रुक गयी।

"अब यह कौन हो सकता है?"

"निश्चित रूप से वह जल्दी मे है!

तभी सन्देशवाहक जुमागुल भीतर आ पहुँचा।

मामूली दुआ-सलाम के बाद ही उसने एक दिन पहले तोकपामबेत मे हुई लड़ाई का विस्तृत वर्णन शुरू कर दिया। उसके बाये गाल का जख्म लड़ाई मे उसके भाग लेने की चुगली खा रहा था। जेरे भी सुन सके, इसलिए जोर-जोर से बोलते हुए, अपनी खुशी छुपाने की कोई भी कोशिश किये बिना बड़े आनन्दपूर्वक उसने बोजेय की पिटाई की कहानी सुनायी।

सारी बाते सुनने के बाद जेरे ने जुमागुल को फिर से सुनाने कहा। जब उसे सही-सही सुन लेने का विश्वास हो गया, वह तोखपन से बोलो:

"बोजेय हमारे बुद्धिमान बुजुर्गो मे अन्तिम है। तुम लोगो का जमीर मर चुका है! और बकबकिये राम, तुम बच्चो की मौजूदगी मे कैसी बाते कर रहे हो?"

बोजेय को सब लोग सम्मानित व्यक्ति के रूप मे जानते थे, शायद इस वजह से या फिर बूढी अम्माँ के रौब का अपना असर था, वे सब सकोच भरी चुप्पी मे डूब गये। सिर्फ तकेजान अपने पिता की बड़ाई जताये बिना न रहा।

"उन्हे जान लेना चाहिए, हमे चुटकियो में उड़ाया नही जा सकता! वह इसी लायक था!"

उलजान ने उसकी ओर सर्द निगाहों से देखा।

"अच्छा हो, तुम अपनी ज़बान पर काबू रखो! उसके साथ बहत बुरा व्यवहार किया गया है," वह बोली।

जुमागुल के साथ एक बूढा चरवाहा सतय भी आया था। पहले वह चुपचाप बैठा सुनता रहा लेकिन फिर बातचीत मे शरीक हो गया। उसने उन लोगो को बताया, उस दिन किस तरह दोपहर मे जब वह चरागाह मे था तो बोजेय, बायदालि तथा दूसरे लोगों को जो कुल मिलाकर दस थे—केंगिरबाय की क़ब्र पर घोड़ों से उतरते देखा था। उसने बताया,

वे बहुत देर तक पहाड़ी पर खड़े रहे थे और नौजवानों में से एक ने सतय को बताया था, "क़ोनानबाय के बारे में शिकायत करने बोजेय और उसके स्वजन क़रक़रालीस्क जा रहे है। अपने पुरखे की क़ब्र पर क़ुरान पढ़ने के लिए वे बस थोड़ी देर को रास्ते में रुक गये हैं।"

इस बात को सुनते ही जुमागुल को अपने अकस्मात आगमन का मक़सद याद आ गया: कोनानबाय ने उसे आबाय को बुला लाने के लिए भेजा था। क़ोनानबाय भी कल क़रक़रालीस्क जानेवाला था। वह अपने साथ आबाय को ले जाना चाहता था।

एक गहरी चुप्पी छा गयी। इस ख़बर से सभी असमंजस में पड़ गये थे।

दूसरे दिन आबाय को लम्बे सफ़र पर विदा करने पूरा परिवार बाहर जुट आया था। जुमागुल एक सफ़ेद घोड़े की रास पकड़े, तैयार खड़ा था। घोड़े पर चाँदी के काम वाला लक़दक़ ज़ीन कसा था।

आबाय पहले ज़ेरे के पास गया।

"अलविदा, दादी-अम्माँ," उसका सूखा हाथ अपने दोनों हाथों में लेते हुए वह बोला।

ज़ेरे ने उसकी भौहों से अपना चेहरा सटा दिया।

"ख़ुदा तुम्हारी रखवाली करे। तुम्हारा सफ़र ख़ुशगवार हो, मेरे लाड़ले आबाय!"

दूसरे लोगों से आबाय ने कही अधिक औपचारिक रूप से – सिर्फ़ "ख़ोश, ख़ोश!" कहकर विदा ली।

उलजान उसके घोड़े के पास खड़ी थी, उसने जुमागुल से रास अपने हाथों में ले ली थी।

"मेरे पास आओ," उसने अपने बेटे को बुलाया। "पिसमिल्दा",* उसने कहा और इस दुआ के साथ ही उसे घोड़े पर चढ़ने में मदद की।

आबाय अपने चोग़े की तहों को समेटकर विदा होने ही वाला था जब उलजान ने घोड़े के अयाल पर अपनी लम्बी, ख़ूबसूरत अंगुलियाँ रख दीं। वह कुछ और कहना चाहती है, यह महसूस कर आबाय ने उसकी ओर प्रश्न भरी दृष्टि डाली।

---

* पिसमिल्दा – "बिस्मिल्लाह" का कज़ाख़ी उच्चारण। इसका मतलब है "ख़ुदा के नाम पर"। किसी भी काम के शुरू में कहा जाता है।

"मेरे बेटे," वह बोली, "बुज़ुर्ग लोग प्राय: शान्ति छोड़कर झगड़ा पर उतारू हो जाते है। ऐसा कहा जाता है 'वैरियों की दुश्मनी उनके ज़र्रे-ज़र्रे तक में फैल जाती है'। लेकिन तुमको इससे दूर रहना चाहिए। जब भी तुम्हें बोजेकेन* दिखाई दें, उन्हें सम्मान दो और अपना सलाम कहो। अपने स्वजन के रूप में हमने उन्हें हमेशा सम्मान दिया है। कौन सही है, कौन ग़लत, यह तुम्हारे फैसला करने की चीज़ नही। अपने पिता की दुश्मनी उनके साथ ही रहने दो, बस तुम्हें न्यायपूर्ण होना चाहिए।"

आबाय ने अपने घोड़े को एड़ लगायी। बार-बार वह पीछे मुड़कर देखता – लोग अभी भी खड़े थे। अपनी माँ के शब्द उसके कानों में गूँज रहे थे। और फिर बोजेय उसका क़रीबी और प्रिय था – उसे उसके प्रति जितनी सहानुभूति थी किसी और के प्रति नही।

आबाय और उसके पिता बहुत अर्से से क़रक़रालीस्क में पहुँचे हुए थे। शरद् ने धरती को हिमाच्छादित कर दिया था।

क़ोनानबाय ने अपना डेरा छोटे-से शहर के केन्द्र में लोहे की हरी छतवाले लकड़ी के एक कुशादा मकान में डाल रखा था। मकान कज़ाख़ों का हमसोहबत-पसंद एक मेहमाननवाज़ तातार व्यापारी का था।

आग़ा-सुल्तान शहर अनगिनत स्वजन और नौकर-चाकरों की आवभगत में आया था। इर्द-गिर्द के मकानों पर उसके भाइयों, मायबासार और जाक़िप तथा दूसरे स्वजनों ने अपने विविध लगे-लिपटों व नौकर-चाकरों सहित क़ब्ज़ा जमा रखा था। क़ोनानबाय और मायबासार के मकान रात-दिन दुभाषियों और कर्मचारियों से भरे रहते। मायबासार के संदेशवाहकों – क़ामिसबाय और जुमागुल के अलावा मकानों में क़ोनानबाय का निजी संदेशवाहक क़ाराबास तथा न जाने कब ज़रूरत पड़ जाये,

---

* बोजेय का श्रद्धापूर्ण नाम।

इसलिए बतौर सावधानी नौजवानों का एक जत्था भी रह रहा था। तीस नौकर आठ मकानों में ठहराये गये थे।

शहर के स्थायी निवासियों से क़ोनानबाय का दल विलक्षण रूप से भिन्न था। इर्गिज़बाय-प्रमुख को बहुत से अलग-अलग क़बीलों के लोगों की भीड़ हमेशा घेरे रहती। उनमें तातारी मुल्ला ग़बितख़ान, क़िर्ग़िज़ इज़गुत्ति, अरब धर्मशास्त्री बेर्दिख़्वाजा और रक्षक का काम करनेवाले सरकेसियाई तक थे।

शहर का केंद्र किसी तोबिाक्त आऊल की भाँति दिखाई देता था और जब आबाय का मन अपने पिता के यहाँ ऊब जाता, मन बहलाने के लिए वह एक मकान से दूसरे मकान में भटकता रहता।

इस धूप भरे दिन, सुबह की चाय पीने के बाद उसने मायबासार के डेरे पर जाना तय किया। आस-पास की पहाड़ियाँ बर्फ़ के कोमल क़ालीन से ढंकी थी और शीतकालीन नीन्द में डूबी थी। शहर के बाह्य-वर्ती इलाक़ों के इक्के-दुक्के देवदार वृक्ष बर्फ़ के ढेर में गहरे डूबे थे और पर्वत सफ़ेद रोएंदार टोप पहने बूढ़े आदमियों-से लग रहे थे?

यहाँ दिन खुले पर ठंडे थे। उत्तरी हवा के झोंके नही के बराबर चल रहे थे। अपने कानों पर अच्छी तरह लोमड़ी के फ़रवाला टोप कसकर बाँधते हुए, आबाय अपनी दादी-अम्माँ की सलाह के बारे में सोच रहा था। विदा के समय उसने कहा था, अपने टोप को कसकर बाँधना कभी न भूलना। "बहरा हो जाने से बुरा कुछ भी नहीं," उसने उसे चेताया था। "देखते ही हो, मुझे कितनी मुसीबत है।" उसके बारे में जानने की उसे उत्सुकता हो आयी। आजकल उसकी तबीयत कैसी होगी? शायद हर बर्फ़ीले और ठंडे दिन वह शायद मेरे बारे मे परेशान होती होगी," उसने सोचा। और इस तरह वह जिदेबाय में अपने सब प्रिय जनों के बारे में सोच गया। उसे घर की याद सता रही थी।

पैर के नीचे बर्फ़ की परत चरमरा रही थी और जब-तब बर्फ़ीली सड़क पर आबाय का पतली नोकवाला नया जूता फिसल जाता। अब वह लड़के जैसा दिखाई न देता था—वह किसी नौजवान को सुशोभित करने योग्य पोशाक से सुसज्जित था। उसके सिर पर उम्दा क़िस्म का काले मखमल से ढंका लोमड़ी के फ़रवाला टोप था। बुज़ुर्ग लोग लोमड़ी के पंजों से बनाया गया टोप पहनते थे और उनसे अपनी पहचान अलग करने के

लिए तोबिक्ति के नौजवानों ने अभी हाल ही से लोमड़ी के रोएँदार चमड़े का बना टोप पहनना शुरू कर दिया था। रिवाज के मुताबिक़ आबाय चमकीले सलेटी रंग के नीचे गिलहरी का कोट पहने था। चौड़ी बग़लियों और लम्बी आस्तीनोंवाले चोग़े सिर्फ़ क़रक़रालीस्क के कज़ाख़ ही पहनते थे। उनके कॉलरों का आकार भी तोबिक्ति से भिन्न होता और उनके फ़र के टोप छह नही बल्कि चार हिस्सोंवाले होते। तोबिक्ति नौजवान कमर में चमड़े की पेटी नहीं बल्कि नीले कपड़े के स्कार्फ़ लगाते।

राह में आबाय को आऊल के कई कज़ाख़ मिले। उनमे से अधिकांश घोड़ों पर सवार थे और क़ोनानबाय के मकान की ओर जा रहे थे। वे अर्ज़ियों के साथ आये अत्क़ामिनेर और मुद्दई थे। वे आग़ा-सुलतान के मकान के आस-पास सुबह से रात गये तक बैठे रहते थे।

आख़िर आबाय मायबासार के मकान पर पहुँच गया।

आँगन में एक विशाल खुले सायबान में बहुत बड़ा जमाकड़ा लगा था। यहाँ अजनबी कोई भी न था, सिर्फ़ स्वजन और परिचित लोग ही थे—अधिकतर बुज़ुर्ग लोग। उनके बीच अपने कन्धों पर सफ़ेद भेड़ की खाल डाले विशालकाय, लाल-लाल चेहरेवाला मायबासार खड़ा था। यहाँ क़ोनानबाय से अलग रह रहे सारे तोबिक्ति जमा थे।

चार नौजवान एक चार साल की हल्के भूरे रंग की घोड़ी को नीचे गिराने की कोशिश में लगे थे। क़रक़रालीस्क में क़ोनानबाय के प्रवास के पहले दिन से ही मायबासार इर्गिज़बाय के नेता के लिए उपहार के रूप में मोटे-तगड़े भेड़ व अश्व-शावक तथा दूसरे मनपसन्द गोश्त इकट्ठा करने में लग गया था। शायद मायबासार ने दोस्तों के भोज के लिए अब चर्बीशुदा घोड़ों में से एक को काटना तय किया है।

क़रक़रालीस्क तक रास्ते भर और ख़ुद शहर में भी इर्गिज़बाय का गर्मजोशी और उदारतापूर्ण मेहमाननवाज़ी के साथ स्वागत किया गया था; इस तरह यहाँ इकट्ठा होनेवाले लोग क़ोनानबाय के प्रति कृतज्ञ थे जिसने उनके क़बीले के लिए इतनी श्रद्धा प्राप्त कर ली थी। मोटे हल्के भूरे रंगवाली घोड़ी को देख, वे और भी अधिक आभार महसूस कर रहे थे।

"मिर्ज़ा की यह यात्रा ख़ास तौर पर सफल रही है," क़ोनानबाय के भाई जाक़िप ने कहना शुरू किया।

क़रक़रालींस्क आये हुए अनगिनत फ़रियादी और मुद्दई की देखा-देखी सारे तोबिक़्ति क़ोनानबाय को बड़े आदरपूर्वक "मिर्ज़ा" कहकर सम्बोधित करने लगे थे।

"हमारे दुश्मन ईर्ष्या के मारे ज़र्द पड़ गये है। जब कल मस्जिद का उद्घाटन होगा, लोग मिर्ज़ा की प्रशंसा के गीत गायेंगे," मायबासार ने अहमियत के साथ कहा।

"और इसका कारण भी तो है! मस्जिद लाजवाब है!"

"क़रक़रालीस्क ने ऐसी मस्जिद कभी देखी नहीं होगी," दूसरों ने प्रसन्नतापूर्वक हाँ में हाँ मिलायी।

आबाय इस मस्जिद के बारे में शहर के निवासियों के साथ-साथ अपने पिता से भी काफ़ी कुछ सुन चुका था। इसकी नीव पिछले साल डाली गयी थी और उसका ख़र्च क़ोनानबाय ने अपने ज़िम्मे लिया था। इससे उसे सब लोगों की श्रद्धा और भक्ति प्राप्त हो गयी थी। आज क़रक़रालीस्क में पहली और एकमात्र मस्जिद प्रतिष्ठित की जानेवाली थी और शहर के मुल्ला तथा आऊलों के प्रमुख बुज़ुर्ग अल्लाह के निवास स्थान इस मस्जिद के लिए क़ोनानबाय की तारीफ़ करते न अघाते।

दो दिन पहले क़ोनानबाय से मिलने कोई और नहीं, ख़ुद इमाम मुल्ला हसन सराताऊ आया था। कज़ाख़ों के प्रति उसका सानुकूल रुझान था।

"मामूली आदमी से बढ़कर तुम ख़ान बन गये हो," इमाम ने कहा था। "क़ुरान में मस्जिद को 'अल्लाह का घर' कहा गया है। तुमने अज्ञानी, जहालत भरे लोगों के बीच परमात्मा का घर बनवाया है। परवरदिगार तुम पर मेहरबान रहेगा!"

इसके बाद अत्क़ामिनेरों की पूरी भीड़ की निगाहों के सामने उसने क़ोनानबाय को अपनी दुआएँ दी। ऐसे सम्मान के लिए इमाम को जाने से पहले यथोचित इनाम—सवारी के लिए घोड़ा और ऊँट आगा-सुल्तान की ओर से दिया गया।

किसी भी अत्क़ामिनेर के मुक़ाबले उसका पिता कही अधिक प्रभावशाली था, यह आबाय साफ़ देख सकता था। उत्सुकता से वह देखता रहता और यह सब कैसे हुआ, यह समझने की कोशिश करता। लेकिन अपने पिता के साथ वह जितनी ज्यादा देर रहता और उसकी कार्यवाहियों को देखता, उसे अपने पिता उतने ही अधिक रहस्यमय प्रतीत होते।

हलाल घोडी का गोश्त जब रसोई मे ले जाया गया, दूसरे मकानो के तोबिक्ति भी वोलोस्त-प्रमुख के साथ भोजन करने श्रा गये। श्रॉगन ठसाठस भर गया। मायबासार श्रपने स्वजनो को मकान के श्रन्दर ले जानेवाला था श्रौर मेहमान बैठने को ही थे तभी कोनानबाय के सन्देश-वाहक काराबास ने बाहर का फाटक भडाक से खोला।

वह बहुत जल्दी मे मालूम पड रहा था।

"श्रल्शेकेन* यहाँ जल्दी ही श्रानेवाले है! लोगो ने कहा है, वह मिर्ज़ा से मिलने घर से चल चुके है," वह मायबासार श्रौर जाकिप से बोला। "श्रापको मिर्जा बुला रहे है—जल्दी कीजिये!"

जल्दी से पोस्तीन डाल मायबासार जाकिप के पीछे हो लिया। श्राबाय ठहरना चाहता था, लेकिन मायबासार ने जोर डाला

"श्राबाय, तुम्हे हम लोगो के साथ जरूर चलना चाहिए! वह तुम्हारे भावी श्वसुर है श्रौर तुम्हे उनको सलाम करना चाहिए!" वह विनोदपूर्वक मुस्कुराया।

श्रल्शिनबाय के साथ कोनानबाय की दोस्ती दो साल पहले उस समय पक्की हो गयी थी जब श्रागा-सुल्तान ने श्राबाय से शादी के लिए श्रल्शि-नबाय की पोती दिल्दा का हाथ माँगा था। इस तरह श्रल्शिनबाय श्राबाय का भावी श्वसुर बन गया था।

करकरालीस्क मे कोनानबाय के प्रवास के दौरान श्रल्शिनबाय उससे मिलने कई बार श्रा चुका था। इलाके के बुजुर्ग श्रल्शिनबाय का बडा श्रादर करते थे। श्राबाय ने हमेशा उसके लिए सम्बोधन के रूप मे "श्रल्शेकेन" ही सुना था, कभी भी सिर्फ "श्रल्शिनबाय" नही। उसके कबीले का नाम काराकोक** था। श्रल्शिनबाय काजिबेक-बी के पोते विख्यात त्लेनशि-बी का बेटा था। इस तरह श्राबाय की मँगेतर दिल्दा पुराने श्रौर इज्जतदार कुल मे पली-बढी थी श्रौर ऐसी दुल्हन के लिए दहेज की माँग बहुत बडी होती थी। घोडो श्रौर ऊँटो के पूरे के पूरे ढोर कोनानबाय के श्राऊल से श्रल्शिनबाय के पास भेजे जा चुके थे। चाहे भावी विवाह के कारण श्रथवा शायद दूसरे कारणो से भी दोनो

---

* श्रल्शेकेन—श्रल्शिनबाय का श्रादर सूचक रूप।—स०

** काराकोक—दौड-विजेता, सम्मानजनक उपाधि।—स० 10 1085

नेता दिली दोस्त बन गये थे। अल्शिनबाय के करीब मे होने की बात सुनते न सुनते मायबासार और जाकिप उसकी छोटी-से छोटी आज्ञा के पालन को भी तत्पर हो उठते।

मायबासार अपने भतीजे को चिढ़ाने का कोई भी मौका हाथ से नही जाने देता।

"क्या लाजवाब श्वसुर है तुम्हारे। इलाके के सबसे प्रमुख व्यक्ति। उनके पास बेमतलब आना-जाना मत करो। उनसे मिलते समय अपना सिर झुकाना।"

इस तरह के मजाको के कारण आबाय अल्शिनबाय से कतराया करता। लेकिन दो दिन पहले ही उसे कोनानबाय और अल्शिनबाय ने बुलाया था और उसके शर्मीलेपन के लिए उसे लथाडा था। हालाँकि आबाय खुद को पूर्ण विकसित जिगित मानता था, श्वसुर की मौजूदगी मे वह अजीब-सी दुविधा मे पड़ जाता। खुद अल्शिनबाय तनिक भी उसकी पसन्द का न था और बेहिसाब मज़ाको के ताँते, सास-श्वसुर के लगातार उल्लेख, "विवाह," "दुल्हन," "दूल्हा" जैसे शब्दो की पुनरावृत्ति के कारण खुद दिल्दा के बारे मे उसे सोचना तक अरुचिकर लगने लगता।

लेकिन इस समय रास्ते मे चलते-चलते मायबासार ने उसकी ओर उत्सुकता से देखा और कहा:

"कुछ ऐसी बाते है जिन पर बिना किसी हँसी-मज़ाक के मै तुमसे विचार-विमर्श करना चाहूँगा। और किसी बच्चे की तरह मुँह मत बिचकाओ! तुम वयस्क आदमी हो और तुम्हे समझना चाहिए, इतने सारे घोड़े और ऊँट अल्शिनबाय के आऊल को बेमतलब ही नही हाँके जा रहे है। नयी मस्जिद के उद्घाटन और पुनीत दिवस के ख़त्म होने पर हम और अधिक गंभीरता से बाते करेगे।"

हमेशा की तरह आबाय ने कोई जवाब नही दिया।

"क्या तुम सोचते हो, आबाय समझता ही नही?" क़ाराबास भी बात मे शरीक हो गया। "वह बुद्धिमान है, सब कुछ समझता है।"

"तारीफ़ बन्द कीजिये! कारेके! शान्त रहिये—यह उपहार मे मिले घोड़े जैसा बेहतर होगा," आबाय ने क़ाराबास से लिपटते हुए कहा।

वह इस आदमी से खुलकर बात कर सकता था, मायबासार की तरह नही। क़ाराबास उसकी पसन्द का आदमी था। वह प्राय: उसके साफ मज़ाक कर लिया करता!

"ज़रा हमे अपना काम खत्म कर लेने दो। हम बाते करेगे और बड़ी लाजवाब बाते!" मायबासार अपनी बात पर बल देते बोला।

"पिताजी ने शायद शादी जल्दी निबटा देने का फ़ैसला कर लिया है। लगता है, इस बार उन्होने एकदम तय ही कर लिया है," आबाय ने परेशानी से सोचा। चिंता चेहरे पर झलक उठी थी। अगर उससे इसका कारण पूछा जाता तो वह शायद नही बता पाता लेकिन शादी का ख़्याल ही उसके अन्दर एक विरोध-भाव पैदा कर देता। दिल्दा का नाम ही उसे आज़ादी से वचित करके कैद मे डालने जैसा लगता।

उसकी भोहें चढ जाती, आँखे गुस्से से जल उठती, वह और कर भी क्या सकता था—उसे डर था, कही चाचा से झगड़ा न हो जाये।

वे चारों कोनानबाय के मकान पर पहुँचकर फाटक से अन्दर चले आये। घुडसवारों और खड़े लोगो से भरा आँगन असामान्य रूप से कोलाहलमय था। पाँच या दस के दलो मे चारों ओर मुकदमे की पैरवी करनेवाले और फरियादी खडे बहस कर रहे थे। एक ही तरह के शब्द बार-बार सुनाई देते: "वोलोस्त प्रमुख, बी... जाँच-पड़ताल, फ़ैसला... शर्ते, जुर्माना... अपराध, शान्ति, झगड़ा.." जैसा कि टोपियो से आसानी से पता लग रहा था, उनमे से अधिकांश बोशन लोग थे। तोबिक्ति की पोशाक और केरेय का पोस्तीन और छज्जेदार टोपियाँ भी दिखाई दे रही थी।

पोशाकों के अलावा कबीलो की दूसरी पहचाने भी थी। पिछले दिन काराबास ने आबाय को विस्तारपूर्वक विभिन्न घोड़ो और जानवरों की पहचान के बारे मे बताया था। आबाय इसी कारण अब आँगन के पास से गुजरते समय विभिन्न घोडो को देखने के लिए रुक गया था। उन घोड़ों के इर्द-गिर्द लोग गप मार रहे थे। गोल ठप्पेवाले जानवरो को "आँख" कहा जाता था और वे इर्गिज व बोशान लोगों के थे। "वृषभ काठी" वाले केरेय के थे। "वह भूरा घोडा किसका है? अरे, इस पर तो "करछी" का ठप्पा लगा है तो यह ज़रूर ही नैमन आऊल का

ोगा।" आबाय ने सोचा। कुछ घोड़ों पर महत्वपूर्ण व्यक्तियो का – तूरों का बहुत कुछ अरबी अक्षर "शिन" जैसा विशेष ठप्पा लगा था।

आबाय इसी तरह देर करना चाहता था लेकिन उसके साथी सीधे मकान के अन्दर चले गये थे। जाक़िप आगे-आगे था और उसने क़ोनानबाय का दरवाज़ा खोला। एक साथ अन्दर जाकर उन्होंने इकट्ठे ही सलाम किया।

विशाल देदीप्यमान् कमरा चमकदार, विलक्षण रूप से कलात्मक क़ालीनों से सजा था। शहरी रिवाज के मुताबिक़ दीवारो पर क़ीमती फ़र के चोग़े, कशीदावाले नमाज़ के क़ालीनों और किनारियों पर अरबी अक्षरों मे लिखी किंवदंतियों व कहावतोंवाले कपड़े टंगे थे। कमरे के कोनों में धातु के दमकते पलंग पर तकियो की भरमार थी। सिल्क के पर्दों से झिलमिलाते ओट बनाये गये थे। खिड़कियों और दरवाजों पर भी शानदार पर्दे लगे थे। तकियों पर पीठ के बल झुके क़ोनानबाय और अल्शिनबाय नीची, लेकिन मुड़ जानेवाली एक कुशादा मेज़ के पास नमदों के ढेर पर बैठे थे। स्पष्ट स्वर में, श्रद्धायुक्त सलाम का जवाब उन्होंने बिना किसी उल्लास के बस होंठ हिला कर दिये।

नवागन्तुक मेज़बान और मेहमान के दायें-बाये बैठ गये। उनके आने से पहले तक अल्शिनबाय कुछ बोल रहा था। दुबारा बात शुरू करने से पहले प्रश्न भरी दृष्टि से उसने क़ोनानबाय की ओर देखा। क़ोनानबाय ने इशारे से उसे बेखटके अपनी बात जारी रखने कहा।

अल्शिनबाय का शरीर भारी-भरकम, चेहरा लाल-लाल और दाढ़ियाँ सफ़ेद थी। अपने बेशमत* के ऊपर उसने लापरवाही के साथ कन्धो के चारों ओर लोमड़ी के फ़र का चोग़ा लटका रखा था। छोटी, गहरी भूरी कज़ाख़ टोपी उसकी खोपड़ी पर चुस्ती से टिकी थी लेकिन वह उसके गंजेपन को नही छुपा पा रही थी।

"बायमुरिन भी असन्तुष्ट है," उसने अपना विवरण जारी रखा। "वह क्रुद्ध है और बस यही कहता है।"

---

* बेशमत – एक तरह का चमड़े का कपड़ा। – सं०

कोनानबाय उसकी ग्रोर त्योरी चढाये पलटा, लेकिन उसने उसकी ग्रोर शान्तिपूर्वक देखा ग्रौर कहा

"उसने यही कहा था, 'लोग कहते है, बोजेय ग्रगर मेरा मेहमान बनता है तो कोनानबाय नाराज होगा। मेरे दस्तरखान के मालिक तोबिक्ति कब से बन गये'?"

"ग्रौर उसके लिए बायमुरिन सोयिल उठाने को तत्पर है, मेरे ख्याल से शायद वह यह बताने की परवाह नही करता?" कोनानबाय ने तीखेपन से पूछा।

वे किस चीज के बारे मे बाते कर रहे है, ग्राबाय जानता था। दो दिन पहले ग्रलिशनबाय के साथ उसके पिता की लम्बी बातचीत हुई थी ग्रौर कोनानबाय ने बोजेय के खिलाफ ऐसी धमकी दी थी। "बेहतर होगा, वह मेरे खिलाफ ग्रपनी शिकायत वापस ले ले। ग्रगर वह ऐसा नही करता तो मै तब तक चैन नही लूँगा जब तक उसे धूसर खफ्तान पहनाकर सुदूरवर्ती हिस्सो मे नही भिजवा दूँगा!" कोनानबाय ग्रौर बोजेय के बीच सुलह-वार्ता ग्रौर व्यग्योक्तियो का ग्रादान-प्रदान ग्रलिशनबाय ग्रौर बायमुरिन द्वारा होता। बायमुरिन करकरालीस्क के सर्वाधिक विशिष्ट कजाखो मे एक था। जाहिरी तौर पर ग्रलिशनबाय विरोधी पक्ष की सबसे नयी कार्रवाइयो की खबरे देने ग्राया था।

बायमुरिन बोजेय की मदद कर रहा है, इस बारे मे कोनानबाय को बहुत पहले से ही सन्देह था ग्रौर ग्रलिशनबाय की बाते उसके सन्देह की पुष्टि कर रही थी। कोनानबाय को बायमुरिन की कोई परवाह न थी। वह उसका मुख्य शत्रु न था। ग्रगर वह बेइज्जत होना ही चाहता है तो हो—इसकी चिन्ता सिर्फ ग्रलिशनबाय को हो तो हो, उसे नही। ग्रौर ग्रलिशनबाय ग्रपने स्वजन बायमुरिन के लिए कोनानबाय से झगडा करनेवाला न था। दोनो नेताग्रो के सम्बन्ध दृढ थे ग्रौर पिछले कुछ वर्षो मे इसकी कई बार परख हो चुकी थी। भावी विवाह ग्रौर उनकी दोस्ती उनके लिए पारिवारिक सम्बन्धो से कही ग्रधिक महत्वपूर्ण थे।

ग्रलिशनबाय ने गौर करना शुरू किया।

"पहले ग्रपनी धमकी के बारे मे बोजेय का जवाब सुनो," उसने ग्राखिर मे कहा। "दूसरी बातो पर हम बाद मे बहस करेगे। उसने कहा है, 'धूसर खफ्तान मिर्जा नही खुदा तैयार करता है ग्रौर ग्रभी

देखना बाकी है, किसकी किस्मत मे यह बदा है'। कोई उसे जरूर भडका रहा होगा। शायद बायमुरिन या ग्रौर ही कोई।"

बोजेय का मुहजोर जवाब सुनकर मायबासार ग्रौर जाकिप ने एक-दूसरे की ग्रोर देखा ग्रौर भौहे चढा ली मानो कहना चाहते हो, "यह ग्रादमी मुसीबत बुला रहा है।" ग्रलिशनबाय द्वारा ले जाये गये सन्देश का बोजेय क्या जवाब देगा, ग्राबाय सारा दिन इस बात की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था ग्रौर ग्रब जवाब सुनकर उतना ही चकित भी था। "उन शब्दो मे कितनी नफरत है!" वह सोचे बिना नही रह सका। "ग्रौर ग्रत्यत साहसी भी है!"

ग्रपना सिर सीधा ताने कोनानबाय कुछ देर चुपचाप बैठा रहा, उसकी ग्रकेली ग्रॉख शून्य मे खाली-खाली घूरती रही ग्रौर उसकी पीली, ढलती ग्राकृति ग्रौर भी ग्रधिक क्रुद्ध दिखाई देने लगी। शब्द, हाव-भाव या किसी भी प्रकार की ध्वनि द्वारा उसने ग्रपने ग्रदर चलती ग्रॉधी का सकेत नही दिया।

ग्रलिशनबाय बाहर की ग्रोर देखने लगा। कोनानबाय के चेहरे की भावाभिव्यक्ति देख उसे भी कुछ खटका हो ग्राया।

हर कोई चुप था। तभी सावधानी से दरवाजा खोलकर कारावास कमरे के ग्रन्दर ग्रा पहुँचा।

"मिर्जा, मयिर* ग्रा गया," उसने खबर दी।

कोनानबाय ने कोई हडबडी नही दिखाई। दरवाजा खुला ग्रौर मेजर का भारी-भरकम शरीर दिखाई पडा। उसके पीछे-पीछे एक पीला, सूखा-सा बकरदाढीवाला कजाख दुभाषिया कस्का था।

क़ोनानबाय ग्रौर ग्रलिशनबाय से हाथ मिलाने के बाद मेजर फर्श पर नही बैठा बल्कि कमरे मे रखी एकमात्र कुर्सी पर उनसे मुखातिब हो बैठ गया। उसकी रोएँदार पीली दाढी, बड़ी-बडी नीली ग्रॉखे थी जो थोडी-सी भेगी थी। उसकी गर्दन के पीछे रक्ताभ मासल तहे थी।

कज़ाख़ ग्रपने बीच "मेजरो" को उनके नाम से बुलाने के ग्रादी न

---

* चूकि पश्चिमी साइबेरिया मे ग्रधिकाश जारशाही कर्मचारी सेना के लोग थे, कज़ाख़ उन्हे ग्राम तौर से "मेजर" कहा करते। मयिर "मेजर" का ही बिगड़ा रूप है।—स०

थे बल्कि उन्होने उनके लिए पुकारू वर्णनात्मक उपाधियॉ रख ली थी—जैसे "गलमुच्छेवाला मेजर," "मोटा मेजर," जबकि चेचक के दागोवाले कर्मचारी को "शस्य कुक्कुटिका मेजर।" इस मेजर की आकृति ने कई तरह के नाम पा लिये थे। कुछ उसे "भेगी आँखवाला मेजर," कुछ "बालदार मेजर" या "तोदीला मेजर," कहते। कोनानबाय और अल्शिनबाय की उसकी बुद्धि के बारे मे कुछ बुरी राय थी और वे उसे "पिस्केन-बास-मयिर" यानी "गर्म दिमाग मेजर" कहा करते।

करकरालीस्क दुआन (कजाख एक जिला को "दुआन" और जिला-प्रमुख को "दुआन का प्रमुख" कहा करते) के प्रमुख कोनानबाय और मेजर थे। कोनानबाय जिला प्रमुख और "पिस्केन-बास-मयिर" उसका सहायक माना जाता था। इसी कारण कोनानबाय को आगा-सुलतान की उपाधि मिल गयी थी। छोटा सुल्तान—अधिकारियो मे तीसरा—उस समय कही बाहर गया हुआ था।

मेजर कोनानबाय से बोजेय के मुतल्लिक मिलने आया था और इर्गिजबाय प्रमुख बोजेय के जवाब से इतने गुस्से मे था कि उसे देखकर वह बहुत खुश हुआ। औपचारिकताओ मे उसने समय बर्बाद नही किया।

"मयिर, तुम्हारे पूर्वज तो तोबिक्ति के नही थे, लेकिन लगता है तुम्हे यहॉ, करकरालीस्क मे कोई स्वजन मिल गया है। क्या मैने नही कहा था, बोजेय को निष्काषित कर देना चाहिए और इससे सारा मामला ही हल हो जायेगा? लेकिन तुम गडे मुर्दे उखाड रहे हो और मामला किसी लम्बी बीमारी की तरह लटका हुआ है। माजरा क्या है? क्या वह तुम्हारे बाउर* मे समा गया है या वह तुम्हारा कोई निकटवर्ती स्वजन बन गया है? तुम उसे सहारा क्यो दे रहे हो?"

अपनी कानी आँख से उसने मेजर को अनिष्टकारी ढग से देखा। मेजर ने दुभाषिये की ओर प्रश्न भरी निगाह डाली।

कस्का भयभीत हो उठा था, उसकी निगाह कभी उस पर तो कभी इसपर जा टिकती। एक ओर कोनानबाय की बात को तेजी से अनूदित करने के लिए उसके पास रूसी शब्दो का भडार बहुत थोडा था तो दूसरी ओर, ऐसी गुस्से भरी बात एक प्रमुख से दूसरे प्रमुख को बताने

---

* शब्दो का कमाल बाउर का मतलब है जिगर और स्वजन।—स०

में उसे डर भी लग रहा था। गावदीपन से वह मुस्कराया और हिचकिचाते हुए कम्बल पर अंगुली से निशान बनाने लगा।

क़ोनानबाय गरज उठा:

"क्या दुभाषिया हो! मैंने जो कुछ कहा, उसे ठीक-ठीक बता दो! दुमछल्ले पक्षियों-सा चुलबुलाना छोड़ो!"

उपमा से मायबासार की हँसी फूट पड़ी, लेकिन क़ोनानबाय की ग़ुस्से भरी मुद्रा देखकर वह चुप हो गया। हालाँकि उसकी हँसी अभी तक रुकी नहीं थी। आबाय भी अपने पिता की अभिव्यक्ति पर मुग्ध हो उठा था: दुभाषिया इतना ही लज्जित था और वास्तव में वह बालू पर उछलनेवाला दुमछल्ला पक्षी जैसा लग रहा था।

क़स्क़ा ने धीरे-धीरे लेकिन ठीक-ठीक उन सब बातों का अनुवाद कर दिया जो क़ोनानबाय ने कही थी। लेकिन मेजर पर उसका कोई असर न हुआ। बिना किसी बेसब्री के शांत किन्तु ज़ोर आवाज़ में उसने समझाया:

"हम जिनसे झगड़ते है उनसे बदला लेने का हमें कोई अधिकार नही। बोजेय येरालिनोव ने बहुत-सी शिकायतें दर्ज करायी है। हमें उनकी जाँच-पड़ताल करनी चाहिए। और वह अकेला नही। बहुत से लोग उसका समर्थन करते है। फिलहाल, हम उसे निष्काषित नही कर सकते।"

इसके बाद गुस्से से भरी बहस चली जिसमें दोनों ने एक-दूसरे को मात देने की कोशिश की।

"क्या तुम चाहते हो, हम हमेशा झगड़ते रहें? क्या तुम्हारी यही इच्छा है?"

"यह मेरी कोई निजी राय नही," मेजर ने जवाब दिया। "भूतपूर्व आग़ा-सुल्तान क़ुस्बेक और जामानताय की भी यही राय है। बायमुरिन–अल्शिनबाय उसे जानता है–का भी वही ख्याल है जो मेरा है।"

"लेकिन वे होते कौन है? बस मुट्ठी भर लोग! वे अल्पमत हैं। वे बस ईर्ष्या से जल रहे हैं। लेकिन जनता मेरे साथ है। क्या तुम ख़ुद यह नहीं देख पाते?"

"अल्पमत? ठीक है, अगर वे अल्पमत है, तो क्या हुआ? याद रखो, क़ानून ज़ार ने बनाये हैं और क़ानून की निगाह में सब बराबर हैं। गवाह हैं और हमें उनकी बात सुननी पड़ेगी।"

"ग्रौर तुम कोई जज हो? बुराई करनेवालों की तुम हिमायत करोगे तो इसमें ग्राश्चर्य ही क्या। वे ढीठ बनेंगे ही!"

"क़ोनानबाय मिर्ज़ा, यह उलाहना दोनो पर लागू होता है।"

"मैं तुम्हारी सारी चालाकियाँ जानता हूँ!"

"ग्रागा-सुलतान, तुम ख़ुद को भूल रहे हो! हम दोनों को कार्प* ने नियुक्त किया है!" मेजर ने कहा।

पाइप सुलगाकर वह उठ खड़ा हुग्रा ग्रौर ग़ुस्से के मारे कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

ग्रल्शिनबाय को मध्यस्थता के लिए यही समय उपयुक्त लगा। ग्रगर दोनों प्रमुख बेकार ही इस तरह झगड़ा जारी रखे तो यह तू-तू-मैं-मैं वास्तविक मतभेद में बदल जायेगा। यह तनिक भी मुनासिब न था ग्रौर ग्रल्शिनबाय मामले को ऐसा मोड़ लेने नही दे सकता था जिससे क़ोनानबाय को या ख़ुद उसको नुक़सान उठाना पड़े। मेज़ पर कोहनी रखे वह ग्रत्यन्त चुप-सा बैठा था लेकिन ग्रब उसने तेज़ी के साथ ग्रपना सिर ऊपर किया।

"सुनो, मिर्ज़ा! सुनो, मयिर! ग्रपने-ग्रपने होश में ग्राग्रो।"

ग्रल्शिनबाय की इज़्ज़त सिर्फ़ क़ोनानबाय ही नही मेजर भी करता था। वह पहले भी उससे कई गंभीर मामलो पर सलाह-माशविरा कर चुका था। ग्रब तक उनके सम्बन्धों में कोई दरार नही ग्रायी थी। हालाँकि सरकारी तौर पर ग्रल्शिनबाय को कोई ग्रधिकार प्राप्त न था, वोलोस्त प्रमुखों, यहाँ तक कि ख़ुद ग्रागा-सुल्तान के चुनावों में भी वह एक निर्णायक हस्ती था। मेजर यह बात जानता था। ग्रल्शिनबाय के बोलते ही उसकी चहलकदमी थम गयी ग्रौर उसने गुपचुप क़ोनानबाय की ग्रोर देखा। ग्रल्शिनबाय के शब्दों का ग्रसर क़ोनानबाय पर भी पड़ा था।

मेजर फिर ग्रपनी जगह बैठ गया। वह खरखराते हुए थम-थमकर साँस ले रहा था।

"तुम दोनों दुग्रान के प्रमुख हो। इस तरह लड़ना तुम लोगों को शोभा नहीं देता है!" ग्रल्शिनबाय ने कहना शुरू किया।

---

* गवर्नर-जनरल कार्यालय का कज़ाख़ नाम।

मेजर की ओर झुकते हुए दुभाषिया ने तेज़ी के साथ रूसी में उसके शब्द दुहरा दिये।

"तुम दोनों को एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। अगर तुम दोनों में मेल है तो तुम न्यायपूर्वक शासन करोगे। झगड़े में पड़कर तुम कैसे शासन करोगे? झगड़े-विवाद तुम्हारे लिए सर्वनाश का कारण होंगे। तुमको सहयोग करना चाहिए। और अगर तुम सहमत नहीं हो सकते, तो हम जैसे लोगों से सलाह लो। यही मेरी सलाह है," यह कहकर उसने दोनों की ओर देखा। उसने महसूस किया कि वे दोनों कुछ शान्त पड़ गये है, "जहाँ तक बोजेय का सवाल है," उसने क़ोनानबाय की ओर मुड़कर फिर कहना शुरू किया, "क़ोनानबाय मिर्ज़ा, उसी के कारण मैं यहाँ हूँ। मयिर, क्या तुम अपना फ़ैसला शाम तक टाल सकते हो? क्या तब तक के लिए तुम मामला रोके रख सकते हो? मुझे हाँ या न कहो।"

तभी बाहरी कमरे से क़ाराबास क़िमिज़ का एक बड़ा मर्तबान लिये अन्दर आया। मायबासार, आबाय और दूसरों ने चुपचाप दस्तरख़ान बिछा दिया और प्रत्येक बुज़ुर्ग के आगे चमकदार रंगोंवाला एक-एक प्याला रख दिया।

जब अलिशनबाय ने अपनी बात पूरी की, क़ोनानबाय उसकी और मेजर की ओर मुड़कर दस्तरख़ान को इशारा करते हुए बोला:

"आओ, हम भोजन करें—अपने-अपने प्याले उठाओ!"

फिर अपने चेहरे पर हाथ फेरते हुए उसने दुआ की। जब से उसने मस्जिद बनवाना और मुल्लों से मिलना-जुलना शुरू किया था, बहुत धार्मिक व्यक्ति बन गया था। यद्यपि वह अरबी का एक भी शब्द नहीं जानता था, सारी औपचारिकताएँ निभाता और चेहरे पर हाथ फेरकर दुआएँ करता। कभी "बिस्मिल्लाह" कहना नहीं भूलता।

भोजन आ जाने से अलिशनबाय की बात में बाधा पड़ गयी थी लेकिन उसे कुछ और कहना भी न था। चूँकि समस्या के समाधान की ज़िम्मेदारी ख़ुद अलिशनबाय ने अपने ऊपर ले ली थी, आगे और बहस करने का कोई कारण मेजर को नहीं दिखा। अगर कठिनाइयाँ पैदा होंगी तो वह देखेगा, क्या किया जाये। अगर नही तो मामला अलिशनबाय पर छोड़ दिया जायेगा।

"तुम ठीक कहते हो," उसने अलिशनबाय से कहा, "मैं एकदम सहमत हूँ। मैं इन्तज़ार करूँगा।"

बातचीत ने दूसरा रुख़ ले लिया। मेजर क़िमिज़ पर पिल पड़ा और एक के बाद एक, पाँच प्याले गटक गया। फिर उसने भुने जिगर के कुछ टुकड़े चखे, अलविदा कहा और रवाना हो गया। दुभाषिया उसके पीछे हो लिया। दस्तरख़ान उठाया गया।

और तब क़ोनानबाय को अपने एक ख़्याल के बोझ से निजात पाने का मौक़ा मिला जो उसे परेशान कर रहा था।

"लगता है, इस "गर्म दिमाग़" का पेट घूस से भर दिया गया है। क्या तुम देखते हो, उन लोगों ने इसे किस तरह पालतू बना लिया है? बायमुरिन के ज़रिये बोजेय और बायसाल द्वारा इसका पेट भर दिया गया है।"

अलिशनबाय भी बहुत कुछ ऐसा ही सोच रहा था लेकिन वह अधिक दूर तक देख सकता था और उसके दिमाग़ में एक नया संदेह पैदा हो गया। वह कुछ देर तक सोचता-विचारता बैठा रहा।

"मेरे प्यारे क़ोनानबाय," आख़िर उसने शुरू किया, "क्या तुमने कभी ऐसे सरकारी कर्मचारी को देखा है जो घूस न लेता हो? जो कुछ पचा पाते हैं और जो कुछ उनकी राह में आता है, वे क्या पचा नहीं जाते, टिड्डियों की तरह निगल जाते हैं? यहाँ सिर्फ़ घूस की बात नहीं? . ."

अब अलिशनबाय ने वह विषय शुरू किया जिसके कारण वह क़ोनानबाय के पास आया था। आदतन उसने इस तरह त्योरियाँ चढ़ायीं जिससे माथे पर गहरी झुर्रियाँ पैदा हुई और फिर आँखें मिचमिचाकर बोलना शुरू किया :

"जो क़दम तुमने उठाये हैं, उन्हें और उनके नतीजों पर मैं नज़र रखे रहा हूँ। 'खेलनेवाले से तमाशाबीन खेल ज़्यादा अच्छी तरह देख सकता है,' मेरे पिता कहा करते थे। यह बहुत सच है और मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूँ! समय आ गया है जब तोबिक़्ति को खेल बन्द कर देना चाहिए। अगर वे ऐसा नही करते, उनके लिए हालात बुरे हो सकते है।"

क़ोनानबाय चौक पड़ा और सावधान हो गया।

"अल्शेके!" वह ज़ोर से बोल उठा। "स्तेपियों में तो बोजेय और बायसाल मेरे पैरों तले किटकिटा रहे थे और दुआन में तो मेरी गर्दन थामने की ही तैयारी कर रहे है! क्यों न मैं अपना सब कुछ इसके पीछे लगा दूँ?"

बेसब्री से अल्शिनबाय ने अपना बायाँ हाथ उठाया।

"बेशक, अगर तुम लड़ाई जारी रखने जा रहे हो तुम अपना सब कुछ उसमें होमकर डालोगे! लेकिन वे भी कुछ उठा नहीं रखेंगे। मयिर को मत भूलो! और बायमुरिन को पसंद करनेवाले थोड़े लोग नहीं जो हर तरह की बकवास और कुत्सा पर उतर आयेंगे। क्या तुम इस ख़्याल में डूबे हो कि उन्होंने आग़ा-सुलतान के ओहदे की हमेशा-हमेशा के लिए उम्मीद छोड़ दी है? नही। वे हर घटना पर इन्तज़ार करते रहे थे और तुम्हें गद्दी से उतार देने का उन्हें एक मौक़ा मिला है। इस पर ज़रा सोचो! तुम्हारे नाम को लेकर कोई क़ानूनी मुक़द्दमा चल पड़े, इसका नतीजा कुछ भी तो अच्छा नहीं निकलेगा।"

क़ोनानबाय समझ गया। मेजर और अल्शिनबाय, दोनों जानते थे, क़बीलों का झगड़ा व्यक्तिगत दुश्मनी से पैदा हुआ है। यह सवाल पैदा न होने की गारंटी कौन कह सकता है कि क़ोनानबाय ने यानी आग़ा-सुलतान ने कैसे बोजेय के आऊल पर हमला किया, लोगों को बांधकर उन्हें कोड़े से पीटा? कौन जाने, मामला कहीं सबसे ग़ैर-मुनासिब रुख़ न अख़्तियार कर ले? यहाँ-वहाँ अन्दर ही अन्दर आग सुलग रही थी: "बोजेय की शिकायत।" "हमें उसकी खोज-बीन करनी चाहिए।" "गवाह है!" सब उसी आग की चिनगारियाँ थीं।

क़ोनानबाय ने अपने साथी की ओर विचारपूर्ण मुद्रा में देखा लेकिन कुछ कहा नहीं; वह अपने दोस्त के मन की बातें जानना चाहता था। दूसरे ने शान्तिपूर्वक उसकी निगाहों की जवाब में उसकी ओर देखा।

"आज मस्जिद का काम पूरा हो जायेगा," उसने अर्थपूर्ण ढंग से आगे कहा। "तुम सारे दूसरे लोगों से ऊपर जा पहुँचे हो, सबकी ज़बान पर तुम्हारा नाम है। बहुत से लोग ऐसे हैं जो तुमसे ईर्ष्या करते हैं, उनमें सबसे ज़्यादा ईर्ष्या करनेवाले कार्प्स और मयिर हैं। अगर तुम ख़ुद झगड़े को ख़त्म कर लेते हो, तुम्हारा कोई अपमान नहीं होगा। सब यही समझेंगे, तुमने दुश्मन को माफ़ कर दिया है और ख़ुद को

दुनियावी मामलों के बोझ से अलग कर लेना चाहते हो और आख़िर तुम, क़ुरान के अनुसार अल्लाह् के घर के निर्माण में लगे हो। स्वजन उसके दुश्मन नही बनेंगे। बोजेय को अजनबियो के हाथों में चले जाने को मजबूर न करो। उसके साथ शान्ति क़ायम करने की कोशिश करो।"

क़ोनानबाय काफ़ी देर तक गंभीर विचार में डूबा रहा। अगर अल्शिन-बाय जैसा आदमी शान्ति की माँग करता है तो इनकार करने से पहले अच्छी तरह सोच लेना ज़रूरी था। क्या सारे क़रक़रालीस्क में सर्वाधिक प्रभावशाली बी वह न था? सारे क़बीलेवाले उसके पास अपने झगड़ों और मतभेदों के साथ आते थे। क्या अल्शिनबाय से अलग हो जाने पर तूरे क़ुसबेक को आग़ा-सुलतान के ओहदे से हटा नही दिया गया था?

तोबिक्ति किसी भी तरह क़रक़रालीस्क प्रदेश में सबसे शक्तिशाली या बहुसंख्यक न थे और क़ोनानबाय अपने आग़ा-सुलतान बनने के लिए अल्शिनबाय की मित्रता का ऋणी था... अगर वह बोजेय के ख़िलाफ़ लड़ाई जारी रखता है और अल्शिनबाय को अगर पराभूत भी कर दिया जाता है तो वह उसे तंग करना नही छोड़ेगा। तो मामला ऐसा था। अगर इसका विचार किया जाये कि किसने किसे नुक़सान पहुँचाया है तो यह स्पष्ट था, उसने यानी क़ोनानबाय ने बोजेय का नुक़सान किया था। वास्तव में बोजेय ने उसका नुक़सान करने के लिए किया ही क्या था? कुछ भी नही! अगर अल्शिनबाय की इच्छा सुलह की है–उसे राज़ी होना ही पड़ेगा। उसके इस फ़ैसले का, बेशक, यह मतलब नहीं था, वह अपना राग तुरंत छोड़ देनेवाला था और हार मान लेता।

अल्शिनबाय के अलावा अगर कोई दूसरा आदमी उसकी जगह होता तो आग़ा-सुलतान इतनी जल्दी अपने को इसके लिए तैयार नहीं कर पाता। लेकिन यह अल्शिनबाय था जिसने समझौते की माँग की थी–और क़ोनानबाय अधिक देर तक हिचकिचाहट में नहीं रहा।

"अल्शेके," उसने शुरू किया, "तुम ऐसे आदमी की तरह बोल रहे हो जिसने पहले ही सब कुछ माप-तोल लिया हो, सब कुछ समझ-बूझ लिया हो। तुम दोस्त की तरह बोलते हो। अगर मैं इसकी क़द्र नहीं करता, दोष मुझपर आयेगा। मैं हार मानना तो नहीं चाहता लेकिन तुम्हारा हुक्म टालकर कैसे जाहिलों की तरह अपनी राह चलता

रह सकता हूँ? मुझे खुदा और तुम पर विश्वास करना ही होगा— मेहरबानी करके मामला अपने हाथ में ले लो और ख़ुद ही इसे निबटा दो।"

बहस ख़त्म हो गयी और अलिशनबाय अपने मकान पर आराम करने चला गया।

बोजेय के साथ मामला सुलझा लेने की बात से आबाय को इतनी ख़ुशी थी कि न चाहते हुए भी अलिशनबाय के प्रति उसमे कुछ पसन्दीदा भाव आ गये। नफ़रत की जड़ें उखाड़ ली गयी थी और दुनिया में सब कुछ हार्दिक तथा मित्रतापूर्ण हो उठा था। इस मित्रता के अभिनन्दनस्त्र-रूप उसने राहत की साँस ली।

केवल दुख में ही नही, सुख में भी अकेलापन चाहनेवाला आबाय उस शाम शहर में इधर-उधर भटकता रहा।

दिवस का अवसान समीप था लेकिन सूर्यास्त अभी नहीं हुआ था और पश्चिम में पहाड़ियों के वृक्षों के ऊपर अभी भी अरुणिम किरणें पड़ रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे पहाड़ों में आँधी आयी हो जो कभी अलस भाव से बर्फ़ के बगूले ले आती, कभी सूर्य की अन्तिम किरणों से लाल-लाल हुए बादलों को उड़ाकर ऊपर ले जाती।

शहर में हवा नही चल रही थी लेकिन काट खाती ठंड इस तरह भटकते रहने को बढ़ावा नहीं दे रही थी। आज जैसे दिन आदमी में जान डाल देते, उदासी भाग खड़ी होती। ढलानें धीरे-धीरे अंधेरे में खो गयी और जैसे शुभरात्रि कहते हुए तराइयाँ आख़िर लुप्त हो गयी।

आबाय कोई तीन या चार गलियाँ पार कर चुका था जब उसे अपनी ओर बातें करती, हँसती, लोगों की भीड़ आती दिखाई पड़ी। उनमें एक भी उसका परिचित न था लेकिन चूँकि वे पैदल चल रहे थे, आबाय ने उन्हें नगरवासी ही समझा। उनमें जवान भी थे, बूढ़े भी और सब के सब इतने उल्लसित और मित्रतापूर्ण कि आबाय उनकी ओर आकृष्ट होने से ख़ुद को नहीं रोक पाया। मुस्कुराता, वह सड़क के बीच रुक गया। वे क़रीब आ गये, उनके असंख्य बूट से बर्फ़ चरमरा उठी, लेकिन कोई भी उसकी ओर नज़र डालने को नही ठहरा। अब उसे दिखाई पड़ा, उनके बीच एक वयोवृद्ध व्यक्ति था। वह भी हँस रहा था और स्पष्ट रूप से दूसरों का मनोविनोद कर रहा था।

लेकिन वे उसे इस अजीब ढंग से आख़िर क्यों ले जा रहे थे—दोनों ओर से सहारा देते हुए? और वह अपना सिर इस तरह एकदम सीधा क्यों ताने हुए है—चाहे जिस किसी से बात कर रहा हो, उसकी ओर देखने के लिए भी सिर नहीं मोड़ता। नज़दीक से देखने पर आबाय ने पाया, बूढ़ा अंधा था।

वह भी भीड़ में शामिल हो गया जैसा कि वहाँ से गुज़रते या दरवाज़ों पर खड़े सब लोग कर रहे थे।

सफ़ेद धारीदार दाढ़ियोंवाला एक वयोवृद्ध कुछ पीछे रुक गया था।

"वह बूढ़ा कौन है?" आबाय ने उससे पूछा।

दूसरा हैरान हो उठा था:

"क्यों, तुमने शोजेकेन को कभी नही देखा है? क्या तुम उसे नहीं जानते? वह शोजे है, आक़िन शोजे!"

आबाय ने बहुत पहले इस प्रसिद्ध आक़िन का नाम सुना था लेकिन उसे कभी देखा नहीं था। आक़िन को ज़्यादा अच्छी तरह देख पाने और सुन पाने की कोशिश में वह धकियाते हुए आगे बढ़ आया।

"शोजेके, मेहरबानी करके मेरे घर आ जाइये! यह बस यहीं पर है! यह मैं हूँ, बेकबेर्गेन!" लोगों में से एक ने कहा।

"नहीं, वह हम लोगों के साथ आयेंगे!"

"लेकिन उन्हें इतनी दूर से लानेवाला मैं हूँ।"

"तो इससे क्या होता है? शोजेकेन रात हम लोगों के साथ बितायेंगे! उनका घोड़ा हमारे पास है," दूसरे ने जवाब दिया।

शोजेकेन रुक गये और ज़ोर से हँस पड़े:

"अच्छा, दोस्तो, मैं क्या करना चाहता हूँ, आप लोगों को बताऊँ?"

भीड़ उनके हर शब्द पर चिपट जाती।

"बोलिये, शोजेके, जल्दी बोलिये! कहिये, आप कहाँ रात बिताना चाहेंगे!"

"मेरे बच्चो, तुम्हारी इच्छा है, मैं तुम लोगो के साथ भोजन करूँ और तुम्हारे घरों में रात बिताऊँ? तुम लोगों ने मेरा हृदय आह्लादित कर दिया है और जिस किसी ने मुझसे अनुरोध किया है, उन सब के यहाँ जाकर मैं इसे सिद्ध करूँगा। मैं तुम सबके यहाँ भोजन

करूँगा। मुझे उम्मीद है, शोजे का कंठ पाँच या दस दिन के बराबर कथावाचन का बोझ संभाल लेगा और अगर मेरा पेट भी उतना ही मज़बूत साबित हुआ तो मैं बारी-बारी से उन सबके यहाँ जाऊँगा जो यहाँ चीख़-पुकार मचा रहे थे। तो अब, ठंड हो आयी है—शायद शाम हो आयी है और मेरे इन बूढ़े पैरों को इधर-उधर घुमाते-फिरने की तत्काल कोई ज़रूरत नही। मेरे बच्चो, चलो, सबसे क़रीब के फाटक में अन्दर घुस चलें।"

सबने सुना और मुस्कुराते हुए सहमत हो गये। पास ही एक फाटक था और आक़िन का भावी मेज़बान उनके आवास की तैयारी करने जल्दी से चल पड़ा। लोग अभी तक जायेंगे नहीं—शोजे अब उस रात किसी दूसरे के यहाँ जानेवाले नहीं थे और कोई भी आदमी उनका कम से कम एक गीत सुने बिना जाने को तत्पर न था।

आक़िन के पास खड़े एक बुज़ुर्ग ने तब उसे प्रोत्साहित करने का फ़ैसला किया।

"शोजेके," उसने कहा, "आप अभी-अभी हमारे शहर में आये हैं। क्या हमारे यहाँ की ख़बरें सुनीं?"

"नही। बताओ, यहाँ क्या कुछ हो रहा है? लोगों में किस चीज़ की चर्चा है?"

बताने को बहुत कुछ था। क़ोनानबाय द्वारा बनवाई मस्जिद पूरी हो चुकी थी। अलिशनबाय और क़ोनानबाय इस मौक़े पर भोज देना चाहते है; फिर यह भी अफ़वाह थी, क़ोनानबाय अपनी बिरादरी के बोजेय से सुलह करना चाहता है।

आबाय चकित था; उसे यहाँ अपने पिता का नाम सुनने की उम्मीद न थी। "मस्जिद एक चीज़ है," उसने सोचा, "लेकिन लगता है, लोग उसके सारे मामले जानते है, उसके झगड़ों के बारे में भी!"

"अलिशनबाय सुलह के लिए किसी को भी राज़ी कर ले सकता है!"

"अरे धत्, उसे बस इसका डर है, कही क़ोनानबाय सबसे झगड़ता रहा तो उसकी आग़ाशाही न छिन जाये।"

"और तोबिक्ति को इतना सम्मान किसने दिलाया है, उसने नहीं तो और किसने? क्या आदर उन्हें प्राप्त है, कितना सम्मान है! बस अकेला वही तो है जिसके प्रति उन्हें शुक्रगुज़ार होना चाहिए!"

"अलिशनबाय उनका समर्थन करता है, पक्की बात!"

"हाँ, करता है! और तोबिक्ति ढोरो मे सबसे मोटे-ताजो को गटक जाते है, दुकानो मे सबसे अच्छी चीजे लूट जाते है!"

"जब तक यहाँ आस-पास मौजूद सभी मोटे-ताजे घोडो को वे निगल नही जाते, यहाँ से खिसकेगे नही।"

शोजे फीकी मुस्कान के साथ सब कुछ सुन रहे थे और सहसा ही उन्होने गाना शुरू कर दिया

काने बाज और लडूरे बिल्ले ने
दोस्ती की कटखने कुत्ते से जो था लगडा लेकिन तारीफ मे माहिर।
जो कुछ बाज के मुँह से गिरता, बिल्ले के हक मे आता,
बिल्ले के चले जाने पर बचे-खुचे से कुत्ते का पेट पलता।

चारो ओर हँसी फूट पडी, कुछ वाह्-वाह्कर उठे, बूढे आकिन के शब्द औचित्य और प्रत्युत्पन्नमतित्व पर सब चकित रह गये।

"निस्सन्देह, अलिशनबाय ही लडूरा बिल्ला है!"

"बाज कोनानबाय है!"

"और इमाम लगडा कुत्ता है, हम सब जानते ही है!"

"बूढे ने एक ही पद मे उन सब की ऐसी-तैसी कर दी है," सब सहमत थे।

आबाय शर्मिन्दा हो उठा और लौट पडा। तभी मकान का मालिक आ पहुँचा और उसने शोजे को अन्दर चलने के लिए आमन्त्रित किया। भीड छँट गयी और आबाय लम्बे डग भरते चला गया।

शोजे का गीत अब भी उसके कानो मे गूँज रहा था, इसने उसके मर्मस्थल को छू लिया था। उसे शब्द याद आ गये और उसने अनचाहे इस पद को दुहरा दिया जिसने दो दिग्गजो को एक ही प्रतिमान मे समेट लिया था।

जिसे "अल्शेकेन" के अलावा किसी दूसरे शब्द से सम्बोधित करने की हिम्मत कोई भी नही कर पाता था, वह "लडूरा बिल्ला" बन गया था—अलिशनबाय का गजापन मशहूर था। और उसका बाप—आगा-सुलतान, मिर्जा साहिब, बाज बन गया था। और वह भी कैसा बाज़!

वेह् आदमी जो प्रचुर सम्पदा से सजा-बजा था, महान तोबिक़्ति का शासक था, और कुछ नही एक हिंस्र पक्षी था—लोगो की नज़र में जो कुछ बहुमूल्य था, उन पर चोंच और पंजों से झपट्टा मारने को तत्पर!

निश्चित ही, धरती पर शब्द से बढ़कर क्या चीज़ है? कुछ भी नही! आबाय को हाज़िरजवाब व चतुर क़ाराताय की याद आ गयी; "शब्द दिल को वेध जा सकता है," उसने कहा था।

आबाय विचारों में खो गया था। उसे लगा, उसने दुनिया को हिला देने में समर्थ एक महान शक्ति पा ली है। अपने आस-पास की चीज़ों या सामने से गुज़रनेवालों से बेख़बर, वह लम्बे डग भरता चलता जा रहा था।

लेकिन एक नुक्कड़ पर मुड़ते ही उसका सामना तीन घुड़सवारों से हो गया। उसने ध्यान से देखा और पहचान लिया। पहला आदमी बोजेय था। लोमड़ी के फ़रवाले टोप के नीचे उसका पीला चेहरा मलिन हो उठा था और उसकी मूँछों पर हिम-तुषार चिपका था। उसकी बगल में घोड़ों पर सवार बायसाल और बायदालि थे।

आबाय अवाक् रह गया—शहर में बोजेय से मुलाक़ात का उसे अब तक कोई मौक़ा नही लगा था। लेकिन जल्दी ही अपने पर क़ाबू पाते हुए घुड़सवारों को बीच सड़क पर रोकने के लिए आगे बढ़ आया। उन लोगों ने अपने घोड़ों की रास खीच ली—या तो आश्चर्यवश या फिर उन्होंने उसे पहचान लिया था।

बड़े ही सम्मानपूर्वक आबाय ने अपना दायाँ हाथ सीने पर रखकर ज़ोरदार आवाज़ में सलाम कहा:

"अस्सलाम अलयकुम!"

मदरसा में उसे सिखाया गया था, ऐसा अभिवादन सिर्फ़ हज़रत को करना चाहिए। शायद क़रक़रालींस्क के लिए रवाना होते समय माँ के कहे अन्तिम शब्द उसे याद हो आये थे! लेकिन नहीं, यह अभिवादन स्वत: प्रेरित था, उसके दिल से निकला हुआ।

लड़के के असामान्य आचरण से चकित बोजेय ने अपने घोड़े को एकदम स्थिर रोक लिया।

"वअलयकुम अस्सलाम,* बेटे," उसने जवाब दिया।

लेकिन बायसाल ने आबाय को पहचान लिया और उसकी भौहे चढ़ गयी।

"अच्छा, तो यह है! चलो, हम आगे बढ़ें!" वह अपने घोड़े को एड़ लगाने ही वाला था, लेकिन बोजेय ने उसे रोक दिया।

"ठहरो।"

"क्यों? क्या तुम्हारे ख़्याल में उस शैतान की औलाद से सलाम सुनना आनन्ददायी है?" बायसाल ने रुखाई से आबाय को देखा।

आबाय गुस्से से सुर्ख़ हो उठा। उसका पूरा बदन जल उठा। उसने तनिक भी मीन-मेख नही किया था और बायसाल पर अपनी जलती आँखें टिका दी।

आबाय के दिल पर क्या गुज़र रही है, बोजेय ने भाँप लिया।

"बेटे, मुझे सच-सच बताओ। क्या तुम्हारे पिता ने तुमसे हम लोगों को सलाम करने के लिए कहा था या तुमने अपनी इच्छा से किया?"

"मेरे पिता को इससे कुछ भी लेना-देना नहीं। मैंने अपनी इच्छा से किया था।"

आबाय पर अभी तक उस प्रेम और शान्ति की आनन्ददायी अनुभूति का प्रभाव था जिसके साथ वह अपने पिता के घर से बाहर निकला था।

उनके साथ सुलह के बारे में क़ोनानबाय के फैसले की कोई भी जानकारी न तो बोजेय को थी, न बायसाल को। वे इस समय अल्शिन-बाय के घर की ओर जा रहे थे। अल्शिनबाय ने बातचीत के लिए उन्हें एक आदमी भेजकर आमंत्रित किया था। बातचीत के विषय की उन्हें कोई जानकारी न थी।

"अगर ऐसा तुमने अपनी इच्छा से किया था, अपने पिता की इच्छा से नही," बोजेय ने शान्तिपूर्वक कहा, "तो आगे आओ, जिससे मैं तुम्हें अपना आशीर्वाद दे सकूँ। बेटे, मुझे तुम्हारी आँखों में सचाई नज़र आ रही है!"

---

* जवाबी सलाम। सं॰

बायसाल ने फिर भौहे चढायी और अगर बोजेय ने उसे नही रोका होता, वह एक ओर अपने घोडे को बढा ले जाता।

"यह नौजवान काफी होनहार मालूम पडता है, बायसाल।" वह फिर आबाय की ओर मुडा, "बेटे, भविष्य की जिम्मेदारी तुम्हारे कधो पर है। खुदा तुमको सब कुछ दे, लेकिन तुम्हारे पिता की नृशसता न दे!" फिर हथेलियो को चेहरे से सटाकर अलग करते हुए उसने दुआ दी।

आबाय ने आशीर्वाद पा लिया, उसकी आँखे बोजेय पर टिकी थी और उसकी हथेलियाँ ऐसे ही, बिना दुआ की मुद्रा मे थी। फिर उसने भी अपने हाथ चेहरे से सटा लिये।

"उसकी आँखे जलते अगारो-सी है," जब घुडसवार आगे बढ गये, बायदालि ने बोजेय से कहा।

आबाय काफी देर तक सोचता खडा रहा।

क्या यह सब वास्तविक था? क्या बोजेय का व्यवहार निष्कपट था? बायसाल के निष्ठुर शब्दो के कारण शायद उसे लडके पर दया आ गयी थी? लेकिन इतनी हार्दिकता से उसे आशीर्वाद देने के लिए बोजेय को किस चीज ने प्रेरित किया था? पल भर मे ही वह लडके का दिल पढ लेने मे और उसके विचारो को भाँप लेने मे कैसे समर्थ हो गया? बोजेय तो शायद ही उसे जानता भी हो! लेकिन बूढे लोग अनुभवी, मर्मभेदी और चतुर होते है, आबाय ने चलते-चलते सोचा। अगर बोजेय को उसमे कोई अच्छी बात नजर आयी तो फिर आबाय उतना बुरा भी तो नही, जितना उसने खुद अपने बारे मे सोचा था।

आबाय उस घटना के बारे मे जितना ही सोचता, उसका यौवनपूर्ण स्वाभिमान उतना ही उबाल खाता, वह अपने आप पर फूला न समाता। उसने महसूस किया, उसका दिल बडे, शक्तिशाली डैनो पर ऊँचे आसमानो मे उड़ा जा रहा है।

तभी काफी अधेरा घिर आया है, यह महसूस कर आबाय ने अपने कदम तेज कर दिये। हठात् उसे पता चला कि वह जरूरत से दो गली ज्यादा ही बढ आया है तो वह लौट पडा।

आऊल मे हमेशा किसी पहाड़ी पर अकेले जाकर झुटपुटा होते देखने का उसे शौक था। शहर मे दिन और रात की मिलन-बेला ने उसे

और भी प्रभावित किया था। गर्मियों में वह अक्सर अपने शिकार पर झपट्टा मारते बाज़ को देखता। सूर्यास्त के समय, जब अंधेरा उजाले से जूझता होता, सूर्य की अन्तिम किरणों में ऊँचे उड़ता बाज़ आकाश में किसी रहस्यमय अंगारे-सा जलता और उसके पंख आग की लपटों से प्रतीत होते। आज की शाम उसका अपना दिल भी बाज़ जैसा हो उठा था, उसने महसूस किया। वह गर्वित और ताँत सरीखा अकड़ा हुआ था।

आज का दिन और दिनों से कितना भिन्न था! सवेरे अपने पिता और अलिशनबाय, शाम को शोजे और भीड़ और अभी-अभी अंधेरे में विलीन हो गये बोजेय व बायसाल! इस भीड़-भाड़वाले शहर क़रक़रालींस्क में कैसे-कैसे अजीब और भिन्न-भिन्न जीवन-व्यापारवाले लोग आ जुटे थे! उनके बीच कितनी अथाह खाई थी! पृथ्वी के किनारों की तरह वह एक-दूसरे से कितनी दूर थे! एक के पास ताक़त थी, दूसरे के पास कला और तीसरे के पास अपना हृदय। यह तीनों किसी एक में क्यों नहीं आ मिलते? अगर यह लोग एक साथ मेल-जोल से काम करें तो क्या होगा?

इस विचार ने आबाय को आकस्मिक शक्ति से झकझोर दिया और उसे प्रतीत हुआ, इस सम्बन्ध में उससे पहले कभी किसी ने कुछ सोचा ही नहीं था। "विवेक, स्वतंत्रता... शक्ति... गौरव, प्रतिष्ठा...।" उसने इनके बीच निरन्तर संघर्ष के बारे में किताबों मे पढ़ा था।

अब उसने वास्तविक जीवन में इनका संघर्ष देखा था। और वह एक नये नतीजे पर पहुँचा: यह सारे गुण एक ही व्यक्ति में समन्वित होने चाहिए।

इस शहर में जिन लोगों से उसकी मुलाक़ात हुई थी और यहाँ जो-जो विचार उसके दिमाग़ में आये थे, वे कितने और अलग-अलग थे! उसे सुप्रसिद्ध शोजे को देखने और सुनने का भी मौक़ा मिला था!...

ख़ुशी-ख़ुशी और प्रफुल्लचित्त जब वह मायबासार के निवास-स्थान पर पहुँचा, अंधेरा हो चुका था। रोज़ के मुक़ाबले आज कहीं ज़्यादा ज़ोर से अपने पाँव पटककर उसने अपने बूट में लगी बर्फ़ को हटाया और चटाई पर रगड़कर उन्हें पोंछा, फिर सीधे मेहमानों के कमरे में जा पहुँचा। पाला से उसके गाल अब तक लाल थे और उसकी काली-काली आँखों में एक नयी चमक थी।

कमरा स्वजनों से भरपूर था। मोटे घोड़े का दसवाँ भाग भी वे दिन में नही खा पाये थे, इसलिए अब दुगनी भूख के साथ वे उस पर टूट पड़े थे। काँसे का एक बहुत बड़ा समोवर भी लाया गया और सब ख़ुशबूदार तेज़ चाय पीने में व्यस्त हो गये। लड़के को देखकर मायबासार ख़ुश हुआ।

"आबाय-जान," उसने कहा, "तुम कहाँ थे? अपने कोट उतार डालो और थोड़ी चाय पीयो। अपने को गर्म करो!"

उसने अपनी बग़ल में आबाय के लिए जगह बना दी। बिना किसी हड़बड़ी के आबाय ने अपना कोट उतारा और बैठ गया। जाक़िप ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ करते हुए चाय सुड़क रहा था।

"हम जल्दी-जल्दी चाय ख़त्म करें," उसने दूसरों से अनुरोध किया, "मिर्ज़ा के पास जाने का समय हो गया है।"

"ठीक कहते हो," मायबासार ने कहा, "वहाँ सब कुछ तैयार हो चुका है, कमरे भी। लोग कह रहे हैं, मेहमान शाम की नमाज़ के बाद आयेंगे।"

"तो फिर ठीक है, जल्दी किस बात की? नयी मस्जिद में नमाज़ काफ़ी देर तक चलेगी।"

"बेशक! मुल्ला हसन को अभी-अभी इमाम बहाल किया गया है और वह अपनी प्रतिभा का ख़ूब कमाल दिखायेगा।"

"एकदम सच। वह नियमानुसार प्रार्थनाओं को धीरे-धीरे, गुनगुनाकर पढ़ेगा," क़ोनानबाय द्वारा दिये जा रहे भोज में मेहमानों की ख़ातिर-तवज़्ज़ो के लिए चुने गये नौजवानों ने टीका की।

"क्या बक़-बक़ लगा रखी है," जाक़िप ने बेताबी से एतराज़ किया, "नयी मस्जिद की आम नमाज़ में तुम्हें भी शरीक होना होगा! क्यों, मायबासार, तुम नहीं जाओगे?"

मायबासार में आम नमाज़ के प्रति कोई दिलचस्पी नहीं प्रतीत हो रही थी।

"उस भीड़ में हम लोगों की कोई जगह न होगी," मुस्कुराते हुए वह आबाय की ओर मुड़ गया। "अगर हम किसी तरह घुस भी जाते हैं, मेहमानों के आने से पहले हम किसी भी तरह बाहर निकलकर नहीं आ पायेंगे।"

"लेकिन तुम वहाँ गये बिना कैसे रह सकते हो? मिर्ज़ा इसके बारे में जान ही जायेंगे और गुस्सा करेंगे," जाक़िप ने अनिश्चितता से कहा। "हम दरवाज़े के पास ही बैठेंगे और सब से पहले विदा हो जायेंगे।"

"धत्, हम मिर्ज़ा से कहने को कुछ ढूँढ़ ही निकालेंगे," मायबासार मुस्कुराया। "और मुझे दरवाज़े के पास बैठने की तनिक चिंता नही। निस्सन्देह, मस्जिद मे हर जगह पाक होती है लेकिन चूँकि आम नमाज़ है, सिर्फ़ इसलिए मैं बोशन और क़ाराशोर के बूटो की पहरेदारी करता बैठा रहूँ और अपना सिर उस जगह पटकूँ जहाँ वे अपने गन्दे पैर साफ़ करेंगे?"

मायबासार का हँसोड़ लहजा आबाय को पसन्द आया और वह हँस पड़ा।

लेकिन जाक़िप को यह रुख़ नही भाया: जब इतनी लम्बी प्रतीक्षा के बाद मस्जिद के अधिष्ठान का समय आया, भला यह भी मज़ाक़ का वक़्त है। आम नमाज़ मे क़रक़रालीस्क के सर्वश्रेष्ठ लोग होंगे और सारा शहर क़ोनानबाय की प्रशंसा के गीत गा रहा है। "हमेशा की तरह ही वह बेवक़्त की शहनाई छेड़ रहा है," उसने सोचा। "कुछ भी दिमाग में आता है, बस बक जाता है।"

"अगर तुम्हें कुछ भी बुद्धि हो, तुम समझ सकते हो, मस्जिद मिर्ज़ा और हम लोगों की मान-मर्यादा लायेगी," जाक़िप ने अहमियत जताते हुए कहा।

मायबासार तुरन्त तत्पर हो, गंभीरता से बात मानकर बोल उठा:

"सच है, मस्जिद हमारे दुश्मनों के गले में अटककर रह जायेगी। बोजेय जल्दी ही यह समझ गया—तभी तो वह शान्ति की भीख माँग रहा है!"

शान्ति की दरकार किसे थी, यह अब कोई छुपी बात न थी। लेकिन क़ोनानबाय के आदमी बढ़ा-चढ़ाकर बोलने से बाज़ नही आ सकते थे: "बोजेय ने हिम्मत खो दी है! वह अपनी लाचारी महसूस कर चुका है और शान्ति की माँग कर रहा है!" ऐसी अफ़वाहें फैलाने में ख़ुद मायबासार ने पहलक़दमी की थी।

"जनाब अल्शेकेन सच्चे दोस्त है," जाक़िप ने उसका समर्थन किया। "वह तन-मन से मिर्ज़ा के साथ है। जानते हो, उन्होने आज क्या

कहा? 'मिर्ज़ा का यश बढ़ता ही जा रहा है और सब ईर्ष्या करने लगे हैं—क़बीले भी और शासन के लोग भी।' और वह ठीक ही कहते है। मयिर ईर्ष्या के मारे काला पड़ गया है क्योंकि मस्जिद बनवाने के कारण मिर्ज़ा को हर किसी का सम्मान और आदर प्राप्त हो गया है और मयिर धुंधला पड़ गया है।"

"'गर्म मिजाज़' के नाराज़ होने का सिर्फ़ यही कारण नही," मायबासार ने बीच में ही कहा। "उसे बोजेय और बायसाल से उसकी उम्मीद का घूस नही मिल पाया है, और इसी कारण वह मामले को लम्बा खीच रहा है। लेकिन, देखते हो, अब उसकी चल नहीं रही है?" मायबासार हँस पड़ा। "अब उसे घूस देनेवाला कोई बचा ही नहीं। आज शाम को बोजेय से सुलह हो जायेगी। क्या तुमने सुना, वह मस्जिद में आम नमाज़ में और मिर्ज़ा के भोज में भी भाग लेगा?"

न तो जाक़िप ने और न ही किसी दूसरे ने इसके बारे में सुना था और आबाय भी पहली दफ़ा ही सुन रहा था। इस बात से सब चकित हो गये थे।

मायबासार अपने शब्दों के प्रभाव से प्रसन्न हो उठा था।

"अल्शेकेन हमेशा भलमनसियत का साथ देते हैं," उसने कहा। "ऐसे ही थोड़े इतने सारे घोड़े उनके आऊल को हाँक दिये गये हैं!"

वह आबाय की ओर पलटकर, उसकी ओर साभिप्राय देखने लगा।

"तुम समझ रहे हो न? इस बार ज़रा बच निकलने की कोशिश तो करो!" हमेशा की तरह वह फिर अपने मज़ाक़ों पर लौट आ रहा था।

लेकिन इस बार आबाय इतनी जल्दी परेशान हो जानेवाला न था। पहले जैसी लज्जा का एक भी चिह्न उस पर न था।

"आप फिर वहीं पहुँच गये, मायके! क्या हो, अगर मैं अपनी दुल्हन के लिए जाऊँ ही न तो?" उसने सन्तुलित लहजे में जवाब दिया।

"आह, क्या बदक़िस्मती है! लड़का घबड़ा गया है। लेकिन मसल है न: 'अगर एक बार शादी के पैसे उसने अदा करने शुरू कर दिये तो दूल्हे को क़ब्र में भी चैन नही मिलती।' तुम्हें हो क्या गया है? बाज़ के कोमल रोओं जैसी गर्दनवाली एक दुल्हन तुम्हारी बाट जोह

रही है। और शायद वह सोच रही है, इस बार तो जरा मुझ तक न आने की कोशिश करके देखो, बच्चू!" आबाय को परेशान करके मायबासार अच्छे मनोरंजन को लालायित था।

लेकिन इस बार भी आबाय के चेहरे पर एक भी शिकन न आयी। मुस्कुराते हुए अपने पीछे रखे दोम्ब्रा को उसने उठा लिया और उसके तारों को झन-झनाकर देखा। मायबासार उसके जवाब की प्रतीक्षा करता रहा, फिर कोई जवाब न मिलने पर आगे बोला:

"तुम जवाब क्यों नहीं देते? अगर तुम सफ़र के लिए तैयार हो जाओ तो यह सारे नौजवान तुम्हारे साथ जायेंगे।"

"और मैं कहता हूँ, मायके, यह सब बन्द कीजिए!"

"मैं ऐसी कोई भी बात नही मानूँगा!"

"आपको इसमें क्या मज़ा मिलता है? यह तो मैं तब समझता जब आप कोई जेंगे* होते।"

"हालाँकि मैं जेंगे नहीं, मुझे मज़ा उतना ही आयेगा!"

आबाय हँस पड़ा।

"क्या आप सच में इसी तरह चालू रहेंगे?" उसने असामान्य रूप से शरारत भरे लहजे में पूछा।

उसने बाजे को नीचे रख दिया और अपने चाचा की ओर देखा— उसकी आँखों में एक चुहल भरी चमक थी।

"बेशक, मैं करूँगा! तुम दुल्हन के लिए जाओगे या नहीं?" मायबासार ने ललकारा।

आबाय ने अपनी उत्फुल्ल आँखों को सिकोड़ा—ठीक शोजे की तरह और अपना सिर ऊपर उठाकर गाना शुरू किया।

मैंने आपसे विनती की थी चुप होने को ...
लेकिन आप थे कहाँ मानने को; तो अब आप देखेंगे,
क्या मिलता है आपको, मुझसे सुनने को!
क्या जेब आपकी खाली है और बची नही कानी कौड़ी भी
हालाँकि लूटा है हर दूकान को आपने

---

* जेंगे—साली या कोई जवान औरत।—सं०

ऊपर से नीचे तक?
जिससे नही आपका कोई मतलब,
उसपर पड़ गयी है आपकी नज़र,
और अब तैयार है जाने को ख़ुद
मेरी दुल्हन के पास!
लेकिन अलिशनबाय
कोई छोटा नहीं कि आप गटक जायें
बेहतर हो आपके लिए
भूल जायें यह मामला ही सारा।
बात यह वाजिब नहीं—जैसे कि मैं कोई
ऊँची जाति का बैल होऊँ
दुल्हन के आऊल के वास्ते!
और फिर आप हैं किस क़ाबिल
अगर ऐसा ही आपका उछाह है?
आपको जैसा का तैसा मिल चुका;
अब दीजिए जवाब तो पद में, प्यारे चाचा!

हँसता हुआ आबाय मायबासार के कन्धे पर गिर पड़ा।

इस अप्रत्याशित परिणाम से जिसने सबको अत्यधिक प्रसन्न कर दिया था, सारे नौजवान भी ठहाका लगाकर हँस पड़े। मायबासार तो एकदम ही भौंचक रह गया था। आख़िर में उसने लानतों की झड़ी ही लगा दी।

"ठीक है, ठीक है, देख रहे हो, यह पाजी किस हद तक पहुँच गया। भला बताओ, इस पर मैं क्या कह सकता हूँ?" उसने खीसें निपोरने की कोशिश की।

"मायके, आप जवाब दे सकते हैं लेकिन सिर्फ़ कविता में ही। नहीं तो मैं सुनूँगा ही नही!" आबाय ने चिढ़ाया।

"जैसी करनी, वैसी भरनी," जाक़िप ने क़हक़हा लगाया, उसका चेहरा लाल-लाल हो उठा था। "तुम उसकी खिल्ली उड़ाये जा रहे थे और अब उसने तुम्हें तुम्हारी औक़ात दिखा दी है... एकदम ठीक, जैसी जुगत, वैसी भुगत!"

"अरे भई, हाँ, कोई भी कह सकता है, यह तो शंशार की औलाद हो गया है! यह अपनी माँ उलजान के खानदानवालों पर गया है। ज़रा आऊल पहुँचने तक ठहर तो जा बच्चू! मैं तुझे इसका मज़ा चखाऊँगा। मैं तेरी माँ से यह सब बता दूँगा," मायबासार ने धमकी दी।

दूसरे भी इशारा समझ गये।

"सच! वह तोन्ताय है!"

"सोलह आने वंशधर!"

"बेशक, वाह, क्या हाज़िरजवाबी थी–एकदम शंशार जैसी," कई दूसरे लोगों ने भी राय दी।

"तो हाँ, मुझे लगता है, कही न कहीं उसने यह गीत सुना है। यह नाचीज़ कभी ख़ुद बना ही नही सकता!" मायबासार अपने आश्चर्य पर क़ाबू नही पा सका था।

यह सच था, कभी किसी का ध्यान इस ओर नहीं गया था कि आबाय कविता करता है और ख़ुद आबाय भी अपने मज़ाक़ के प्रभाव से चकित था। वह कुछ-कुछ उलझ-सा गया था।

"यह मेरी रचना नहीं," उसने शरारत भरी मुस्कान के साथ कहा। "अभी-अभी मैंने शोजे को देखा है–यह उसी का गीत है।"

नौजवानों को विश्वास नही आ रहा था और उन्होंने सवालों की झड़ी लगा दी थी।

लेकिन आबाय अपनी बात पर टिका रहा।

"मैंने उनसे कहा, मेरे एक चाचा है–मायबासार," उसने शान्तिपूर्वक समझाया, "वह मुझे हमेशा चिढ़ाते रहते है और मैंने उनसे प्रार्थना की कि मुझे जवाब देना सिखाइये। चुनाँचे, उन्होने मुझे यह गीत गाकर सुनाया!"

सच ही आबाय अब भी शोजे की चुस्त हाज़िरजवाबी, उसके सुनिर्दिष्ट शब्दों और युक्तिपूर्ण उपहास के प्रभाव में था। इतनी होशियारी से मायबासार को चारों खाने चित करने की भी उसे ख़ुशी थी। "मेरा गीत वास्तव में शोजे जैसा था। शायद मुझे भी आक़िन बनना चाहिए?" उसका हृदय विचित्र स्पृहा और लालसा से भर उठा।

नौजवान शोजे के बारे में उसकी कहानी अविश्वासपूर्वक सुनते रहे। एकाएक दरवाज़ा भड़ाक से खुला और क़ाराबास दिखाई पड़ा। एकदम

चुप्पी छा गयी। अभी मुश्किल से दहलीज़ लाँघते न लाँघते सन्देशवाहक ने घोषणा की:

"जल्दी करो! आम नमाज़ ख़त्म हो चुकी है और मिर्ज़ा के निवास पर मेहमान जमा होने लगे है। तुम लोगों को तुरंत बुलाया गया है! सब कोई जल्दी करो!"

सब के सब जल्दी-जल्दी बाहर के कपड़े वग़ैरह डालने लगे।

आबाय, जायें या न जायें, तय नही कर पा रहा था।

"वे तुम्हें मेहमानों की तीमारदारी या खाना ढोने में नही लगायेंगे," जाक़िप ने उससे कहा, "और बुज़ुर्गों के बीच अपने पिता के साथ बैठे रहकर तुम्हें कुछ अजीब-सा भी लगेगा। वहाँ भीड़-भाड़ होगी। शायद तुम्हें यहीं रहना ठीक लगे।

आबाय एकदम वहाँ ठहरने को इच्छुक था लेकिन क़ाराबास और मायबासार ने कुछ और ही सलाह दी:

"कम-से-कम उसे मेहमानों से मिलने और अपना सलाम कहने तो दो!"

"आओ, देखो तो शहर में मेहमानों का स्वागत कैसे किया जाता है। तुम कुछ सीख सकते हो।"

आबाय के दिमाग़ में कुछ और ही बात आयी और बिना किसी हड़बड़ी के वह दूसरों के चले जाने के कुछ देर बाद बाहर निकला।

जब वह वहाँ पहुँचा, काफ़ी देर तक नमाज़ चलने के कारण मेहमानों को अच्छी भूख लग गयी थी और वे दस्तरख़ान के गिर्द बैठ चुके थे।

आँगन ज़ीन कसे घोड़ों से भरा था। नौकरों व बावरची में लगे रसोइयों के अलावा वहाँ कोई दिखाई नही दे रहा था। संध्याकालीन रुपहले तुषार में घोड़ों और उनके कलात्मक साजों की बाहर क़तार-सी लगी थी और सुसज्जित स्लेज गाड़ियों की फिसलन बल्लियाँ ठंड में चरमरा रही थीं। इधर-उधर स्लेज गाड़ी का चालक अपने बड़े-से भेड़ की खालवाले चोग़े में बैठा ऊँघ रहा था।

मकान के दालान में लकड़ी के एक बड़े-से ढाबे को रसोई के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था। मायबासार के यहाँ से अभी-अभी आये नौजवानों के बार-बार गर्म-गर्म माँस के ढो-ढोकर ले जाने से दरवाज़ा कभी खुलता, कभी बन्द होता। मायबासार और जाक़िप भोजन के

कमरों और रसोई के बीच चक्कर लगा रहे थे। मेहमानों से भरे इस मकान में उन्हें भी कोई जगह नहीं मिल सकी थी।

इज़गुत्ति खाना परोसने के काम की देखभाल कर रहा था।

"इधर! जल्दी से! हाँ, हाँ, इधर! ज़रा जल्दी करो!" उसने संक्षेप में आदेश दिया।

तेज़-तर्रार इज़गुत्ति अपनी आस्तीनें चढ़ाये फ़र की धारीवाले हल्के बेशमेत में किसी शिकारी जैसा लग रहा था। स्पष्ट रूप से वह मेज़बान और मेहमान दोनों को ख़ुश करने में अपनी कोई भी कसर बाक़ी नहीं रख रहा था।

झटके से दरवाज़ा खोलकर रसोई में क़ाराबास के घुसने के कारण आबाय को मजबूरन एक ओर हट जाना पड़ा। उसने फिर घुसने की कोशिश की लेकिन अपने पीछे से आनेवाली चिल्लाहट से वह सकपका गया। चिल्लानेवाला इज़गुत्ति था:

"रास्ते से हट जाओ!"

एक ही क़तार में चार नौजवान तेज़ी से रसोई से निकले। वे माँस की बड़ी-बड़ी गहरी कटोरियों को ले जा रहे थे। आबाय के पास से जब वे गुज़रे, हवा में चर्बी की, क़ज़ि* की ख़ुशबू भर गयी। भेड़ की दुमों की तहें और स्कन्ध प्रदेशों और थनों की पीली-पीली चर्बी पिघले हुए सोने की तरह चमक रही थी। तुषार में हर चीज़ से भाप निकल रही थी और हर दूसरी थाली में भेड़ का सिर शोभायमान था। आबाय ने अन्दर घुसने की एक और ज़ोरदार कोशिश की लेकिन अचानक ही दरवाज़े से क़ाराताय के निकल आने के कारण वह लगभग धकिया-सा गया।

"गोश्तवाली चटनी कहाँ है? तुमने कहा था, अलग से परोसेंगे!"

"बस एक मिनट! चटनी तैयार है। यह इधर है। ला रहे हैं वे लोग!" इज़गुत्ति ने ज़ोर से कहा।

देरी के कारण कुपित आबाय आख़िर भोजन कक्ष में घुस ही गया लेकिन संयोगवश इज़गुत्ति की बाँह से टकरा गया। इज़गुत्ति तश्तरियों में करछी से चटनी डाल रहा था। सो थोड़ी-बहुत चटनी फ़र्श पर गिर पड़ी।

---

* क़ज़ि – घोड़े के गोश्त की सलामी। सं०

"ओह, पाजी कहीं का! किसने किया यह?" वह गुस्से से पलट पड़ा लेकिन आबाय को देखकर उसने आवाज़ धीमी कर ली। "अरे, यह तुम हो। बेहतर हो, अगर तुम किसी कोने में खड़े हो जाओ। इस हंगामे में तुम्हें क्या चाहिए?"

आबाय दीवार से लगकर खड़ा हो गया और चारों ओर नज़र दौड़ाने लगा। फ़र्श पर जूतों पर के चमड़ों, घुटने तक ऊँचे बूटों और नमदे के मोज़ों की कतारें लगी थीं। कमरे से अलिशनबाय और मेजर के ज़ोर-ज़ोर से बोलने और हँसने की आवाज़ें आ रही थी। अलिशनबाय उस रात पूरे ज़ोर पर था और उसके फिकरों पर मेहमानों की हँसी बार-बार फूटी पड़ रही थी।

आबाय किसी कमरे के अन्दर नही गया लेकिन सब में झाँक भर ज़रूर आया। भोजन कक्ष में अपनी सुविधाजनक स्थिति के कारण वह सब कुछ देख और सुन सकता था। हाँ, सिर्फ़ चिड़चिड़े इज़गुत्ति ने अगर दख़लंदाज़ी न की तो! शोर-शराबे में खोया आबाय एक कुर्सी पर बैठ गया और नौजवानों को तेज़ी से इधर-उधर भागता देखता रहा।

चौका देनेवाली मात्रा में भोजन गटकते मेहमानों की तश्तरियों में भोजन डालने का काम आठ आदमी कर रहे थे। जनाज़े के भोजनभट्टों जैसे उत्साह के साथ एक-दूसरे को उत्साहित करते हुए, वे हर चीज़ पर टूटे पड़ रहे थे। जितनी देर आबाय उन्हें बैठा देखता रहा, उतनी देर में वे शायद एक दो साल की कई घोड़ियाँ और अनगिनत भेड़ निगल चुके थे।

नौजवान और भी व्यस्त हो उठे। ख़ाली तश्तरियों को कमरों से उठाकर रसोई में ले जाना था। और क़ोनानबाय जिस कमरे में बैठा था उससे आख़िर ख़ाली कटोरा के उठाते न उठाते गरमागरम पुलाव की रकाबियों और तश्तरियों की ताज़ा बाढ़ रसोई से आ पहुँची। लालच जगाती यह खाद्य सामग्री मानो कह रही हो, "ज़रा देखूँ, मुझे खाये बिना तुम कैसे रहते हो? तुम ठुकरा नही सकते, ठुकरा सकते हो?" कमरे में कोई भी ज़ोर से नहीं बोल रहा था—क़ोनानबाय ने अपने नौजवानों को दृढ़ता से आदेश का पालन करना सिखाया था। मायबासार और इज़गुत्ति दरवाज़े पर तैनात थे, वे दरवाज़े से गुज़रती हर तश्तरी की जाँच करते फिर हाथ हिलाकर इजाज़त देते।

फिर चाय की बारी आयी। आम तौर से सोने का वक़्त कब का बीत चुका था और सब लोग बहुत पहले ही सो चुके होते लेकिन तीनों कमरों में कोई भी ऐसा न था जिसने सामने लाये गये भोजन से इनकार किया हो और पहले की तरह जोशोख़रोश से भोज चलता ही रहा।

आबाय जंभाई लेता उठ खड़ा हुआ और मायबासार के निवास पर लौट चलने का फ़ैसला किया। शाम के समय किसी भी उसके स्वजन ने उसके साथ दोस्ताना बातचीत नही की थी और सारे समय नौजवान बहुत ही व्यस्त रहे थे।

विदा होने से पहले जब वह गिलहरी के चमड़ेवाला अपना चोग़ा डालने जा रहा था, उसने क़ोनानबाय के कमरे से आते गीत के बोल सुने। खाना परोसने में व्यस्त रहने के बावजूद नौजवान सुनने को ठहर गये थे। आबाय दरवाज़े के पास गया और हल्के से उसे थोड़ा खोल दिया। गायक लम्बी सफ़ेद होती नुकीली दाढ़ीवाला एक साँवला-सा आदमी था।

जैसे किसी विचित्र अदृश्य शक्ति से प्रेरित हो कवि-गायक ने दोम्ब्रा पर अपने गीत के विषय को झंकृत किया, फिर उसे अपने घुटने पर रख लिया और उसके शब्द स्तेपी की हवा की भाँति तेज़ी से तैर उठे।

"वह कौन है?"

"वह कवि कौन है?"

"यह आक़िन कौन-सा है?"

सारे कमरों में बैठे मेहमान और बाहर खड़े होकर सुन रहे नौजवान पूछ बैठे।

क़ाराताय ने क़ोनानबाय के कमरे में दरवाज़े से झाँककर घोषणा की:

"यह बाल्ता है! बाल्ता आक़िन!"

बिलाशक, यह बाल्ता ही था—आक़िन—अलिशनबाय का अभिन्न मित्र जो आशु कविता कर रहा था।

बहू पसन्द न आये अगर,
ढूँढ़ लो जाकर दूसरी बेहतर!
पड़ जाये बहुत छोटा अगर टोप,
जाकर मिलो जो बनाता है टोप!

हर वक़्त सही होने का अगर ख़्याल है तुम्हारा,
जान लो पक्का, जानता है बेहतर दोस्त तुम्हारा!
और अगर करते हो मुख़ालफ़त पूरे क़बीले का,
बेड़ियों में जकड़कर अन्त होगा आपका!
आख़िर कौन कहेगा कि आप है सही
हूबहू क़ानून के पालन में करते मनमानी नही?
लेकिन अगर बन जाते हैं दोस्त फिर से आज की रात,
तो फिर मिलेगी आपको सबकी कही ज़्यादा मुहब्बत!
दीजिये स्वजन को भरोसा अपनेपन का,
मिल सके जिससे उसे मुहब्बत सभी जन का!

बाल्ता आक़िन चुप हो गया।

"बहुत अच्छे!"

"मोती है, मोती!"

"पाक अल्फ़ाज़!" अलिशनबाय, क़ाराताय और दुभाषिया चीख़ पड़े।

शान्ति और सुलह की दलील करती, इतनी तेज़ी और उपयुक्तता से रची कविता ने आबाय को प्रसन्न कर दिया। वह और भी सुनना चाहता था, इसलिए अपनी कुर्सी दरवाज़े के क़रीब खींच लाया लेकिन गीत दुबारा शुरू नही हुआ। बातचीत कुछ और गंभीर मामलों की ओर मुड़ गयी थी।

आख़िर आबाय को बोजेय की एक झलक मिल गयी। उसके चेहरे-मोहरे से न तो गुस्से का कोई चिह्न दिखाई दे रहा था और न ही उससे उसके सन्तुष्ट होने या मैत्रीपूर्ण होने का पता चल रहा था—बस शांत, चौकस, संयमित प्रतीत हो रहा था।

आबाय ने क़ोनानबाय पर नज़र डाली। वह भी सावधान और तनिक भी मौज़-मज़ा करने को तत्पर नही प्रतीत हो रहा था।

गंभीर मामलों पर बातचीत की रहनुमाई अब अलिशनबाय और बायमुरिन कर रहे थे। लम्बी नाक और भूरे बालोंवाला भीमकाय बायमुरिन क़ोनानबाय के साथ सुलह कराने के लिए बोजेय को लाया था। अब सिर्फ़ वही दोनों, अलिशनबाय और बायमुरिन क़ोनानबाय और

बोजेय की ओर से आपसी भले के लिए बात कर रहे थे। उन दोनों का अपना कोई भी दावा न था।

आबाय ने निगाह हटा ली। अब गीत नहीं हो रहे थे और बातचीत में उसकी कोई रुचि न थी। तभी क़ाराताय ने बाहर आकर इज़गुत्ति व मायबासार को इशारा किया।

"सुलह हो गयी!" वह ज़ोर से बोला। "उन्होंने सुलह कर ली है! सम्बन्धित पक्षों की ओर से अलशेकेन और बायमुरिन ने बात की– और मिर्ज़ा व बोजेय ने शर्तें मान ली है।"

"कैसी शर्तें? उन्होंने क्या फ़ैसला किया?" और क़रीब झुकते हुए मायबासार ने पूछा।

"यह एक ग़ैरमामूली फ़ैसला है," क़ाराताय ने जवाब दिया। "उन्होंने जो बातें की, वह इस तरह है, 'अगर तुम लोग अलग-अलग क़बीले के होते, हम तुम्हें स्वजन बन जाने की सलाह देते। लेकिन तुम लोग स्वजन हो और वह भी तुम लोगों का ख़ून का रिश्ता है! इसलिए तुम्हें इस सम्बन्ध को मज़बूत बनाना है: बोजेय क़ोनानबाय से एक बच्चा ले ले और उसका पालन करे। इस बच्चे के ज़रिये तुम लोगों में सुलह होगी'।"

"ऐसा फ़ैसला किया है उन लोगों ने?"

"कौन-सा बच्चा? क़ोनानबाय का कोई अपना बच्चा?" मायबासार और जाक़िप ने पूछा।

"हाँ, यही मैं भी कह रहा था। बोजेय को क़ोनानबाय के ही किसी बच्चे को गोद लेना है," क़ाराताय ने समझाया और जल्दी-जल्दी मेहमानों के पास लौट गया।

आबाय यह ख़बर सुनकर हैरान भी हुआ, भयभीत भी।

"वह किसे गोद लेगा? हमें किससे जुदा होना पड़ेगा? ओस्पान? या स्मागुल?" उसे पूरा विश्वास था, उनका मतलब किसी छोटे बच्चे से ही होगा। भला कैसे कोई किसी बच्चे को उसकी माँ से अलग करके उसे अजनबियों के बीच रहने को मजबूर कर सकता है? यह विचार ही उसे दानवीय लग रहा था। एक निर्दोष, चिंताहीन बच्चे को उसकी माँ से छीन लेना ऐसा ही था मानो उसके किसी भाई को मौत ने ग्रस लिया हो।

तीन सप्ताह बाद क़ोनानबाय ने वापसी यात्रा की तैयारी के आदेश दिये।

"अगर ख़ुदा की मर्ज़ी हुई तो कल हम रवाना हो जायेंगे। रास्ते के लिए हर तैयारी कर लो और देखो, किसी तरह की देर नहीं होनी चाहिए। हम सवेरे यात्रा शुरू करेंगे," उसने क़ाराबास और जुमागुल को चेताया।

तोबिक़्ति तक ख़बर पहुँचते न पहुँचते क़ोनानबाय के मकान और जाक़िप व मायबासार के निवास-स्थानों पर बड़ी धमा-चौकड़ी मच गयी।

ऐसे तो जवान, बूढे सभी हर्षित हो उठे थे लेकिन घर के लिए सबसे ज़्यादा लालायित आबाय था। पिछले कुछ दिनों से वह लगातार अपने सपनों में अपनी माताओं और जिदेबाय आऊल को देख रहा था। सब इच्छापूर्वक काम में लगे थे और चारों ओर हँसी-मज़ाक़ का बाज़ार गर्म था।

"हम घर जा रहे है! घर!" पाँच दिनों से यह ख़बर गर्म थी। इसलिए घोड़े और ज़ीन तैयार थे।

लेकिन शहर में लम्बे टिकाव के कारण घोड़ों के काफ़ी चर्बी जम आयी थी और सफ़र से पहले उन्हें हफ़्ते भर इधर-उधर चलाने-फिराने की ज़रूरत थी। आबाय को सवारी के लिए दूधिया रंगवाले अयमन्दाय नाम का घोड़ा दिया गया था। काले-काले चमकदार अयाल और पूँछवाला यह बीजाश्व अपनी तेज़ चाल के लिए विख्यात था। तीव्रगामी और सुडौल इस शानदार पशु के लिए हर नौजवान लालायित रहता।

अयमन्दाय बुज़ुर्गो के घोड़ों के अस्तबल में बंधा था और वापसी की तैयारियों की ख़बर सुनते ही आबाय तुरंत उसे देखने चल पड़ा। अपने अस्तबल में बंधा घोड़ा बेताबी से सिर हिलाता खड़ा था। उसके सिर पर का सफ़ेद धब्बा पूनम के चाँद जैसा चमक रहा था। शहर में उसकी सवारी का कोई मौक़ा नही मिला था और काफ़ी दिनों से आबाय अस्तबल देखने नहीं आया था। अयमन्दाय को देखना उसकी आँखों को भला लगता। मुट्ठी भर घास की मदद से उसने उसकी पीठ और अयाल पर के तुषार को पोंछ डाला। फिर किसी अनुभवी नौजवान की तरह

उसने अपनी अंगुलियाँ उसके अयाल में डूबो दी; उसकी लम्बी पतली अंगुलियाँ अयाल के नीचे मुश्किल से समा पायी। अयमन्दाय के भी चर्बी हो आयी थी। बग़ल से देखने के लिए आबाय कुछ डेग पीछे खिसक आया: घोड़े का पुट्ठा पूरी तरह भर आया था।

आबाय फिर घोड़े के पास आया और उसने उसकी गर्दन बाँहों में ली। "कल क्यों?" उसने सोचा। "हम आज ही शुरू कर दे—इसी पल।"

उसने उसकी पीठ पर तेज़ी से ज़ीन चढ़ा दिया और इसे आरामदेह बनाने के लिए उस पर मख़मल का कपड़ा बिछा दिया। आबाय ने फ़र-वाली अपनी टोपी कस ली और घोड़े पर सवार हो बाहर निकल आया।

किसी हवा के झोंके-सा हल्का अयमन्दाय लगाम पाते ही तत्काल हमेशा की तरह अपनी लम्बी दोलायमान चाल के साथ चल पड़ा और हवा में नाचती डोंगी की तरह आसानी से भाग चला। वह इधर-उधर—शहर के परे, बाज़ार और स्वजनों के मकानों तक चक्कर लगाता रहा। जब आबाय घोड़े से उतरा लगभग शाम हो चली थी।

अपने पिता के साथ भोजन और चाय के बाद वह फिर घोड़े पर बाज़ार की ओर चल पड़ा। इस बार उसके साथ इज़गुत्ति था जो क़ोनानबाय के गृह-प्रबंधक का काम कर रहा था। भोजन के समय आबाय ने अपने पिता से कुछ पैसों की माँग की थी। इस पर उसके पिता ने इज़गुत्ति को आदेश दिया था, "इसके साथ बाज़ार चले जाओ और इसे अपनी माताओं और भाइयों के लिए मन-मुताबिक़ उपहार ख़रीद लेने दो। जो कुछ यह कहे, वह सब ख़रीद देना!"

सब तरह की चीज़ें ख़रीदते वे सूर्यास्त होने तक घोड़े पर बाज़ार का चक्कर लगाते रहे। उसकी दादी-अम्मा को कड़ी चाय पसन्द थी, यह आबाय जानता था। इसलिए सबसे पहले उसने इसी की फ़िक्र की। फिर उसने बड़े परिमाण में चीनी, मिठाइयों, मख़मल के कपड़े और रंगीन रेशमी कपड़ों की ख़रीददारी की।

जब उसके ज़ीन से लगे झोले ठसाटस भर गये, उसने अपनी ख़रीद-दारी अपने कोट की अन्दरूनी जेबों और अपनी पेटी में भर ली, बूट के अन्दर डाल ली या फिर इज़गुत्ति को सौप दी। जब वे लौटे, अंधेरा घिर आया था।

रवानगी के मौके पर कोनानबाय ने फिर सभी बुज़ुर्गो और बीग्रो को, मेजर और दुभाषियो को इकट्ठा किया। आबाय बैठक मे शरीक नही हुआ, बल्कि काराबास और इजगुत्ति की मदद से दूसरे कमरे मे अपने सफरी झोलो को ठीक-ठाक करता रहा।

रात मे जब सोने का समय हो चुका था, इजगुत्ति के साथ मेजर क़ोनानबाय के कमरे से बाहर निकला।

"कहाँ ऐसा आदमी है जो मिर्जा की जेब काटकर अमीर न बनना चाहता हो?" मेजर को विदा करके आने के बाद इजगुत्ति ने दीर्घ नि श्वास के साथ कहा। "गर्म दिमाग भी अपने साथ काफी माल हजम करके ले गया!"

"क्या मिला उसे धन या पशु?" काराबास ने पूछा।

"मिर्ज़ा ने उससे कहा, 'तुम एक शासक हो! लोग देखे, शासक कैसे शाही सवारी करते है!' और उन्होने उसे उपहार मे तीन असिताश्व दे दिये जो उन्हे खुद उपहार मे मिले थे। पाँच सौ रूबल देकर उसकी मुट्ठी भी गर्म कर दी गयी।"

कोनानबाय की रवानगी के मौके पर उपहार पानेवालो मे मेजर ही अकेला आदमी न था। उसके दुभाषिये को भी नही भूला गया और कोनानबाय की ओर से काराताय और मायबासार द्वारा पचास जानवरो का ढोर अल्शिनबाय के आऊल तक पहुँचा दिया गया। काराताय और मायबासार उसी रात जानवर पहुँचाकर लौटे थे।

अल्शिनबाय के आऊल की ओर रवाना होने से पहले मायबासार ने एक बार फिर आबाय को चिढाने की कोशिश की। इसके पहलेवाली कोशिश उसके लिए कितनी महगी साबित हुई थी, यह याद करके वह इस बार सीधे अपनी बात पर पहुँचने मे काफी सावधान था। इसलिए उसने बात कुछ घुमा-फिराकर शुरू की।

"इस बार फिर मुझे केलिन[1] के सामने शर्मिन्दा होना पडेगा," उसने इस तरह बात ही बात मे कहा, मानो खुद बुज़ुर्गो से मुखातिब हो और उनका समर्थन चाहता हो।

[1] केलिन – सास, लेकिन ज्यादातर किसी छोटी उम्रवाले सबधी की पत्नी। – स०

"मै नही जाऊँगा," आबाय ने उसकी बात बीच मे ही काट दी।

इसने सारा खेल ही खत्म कर दिया। और फिर अब तक आबाय को उसके श्वसुर के पास भेजने का कोनानबाय का कोई इरादा भी न था चूँकि वह अपने आऊल लौटने को उत्सुक था।

लेकिन जब मायबासार अतिशनबाय के आऊल से अपना काम निबटा कर लौटा, आबाय खुद को यह याद करने से नही रोक पाया कि दिल्दा उसी आऊल मे रहती है और जीवन मे पहली बार उसे अपने अन्तरतम मे कुछ अगम्य स्पन्दन-सा महसूस हुआ—अपनी मगेतर को देखने की इच्छा का एहसास-सा हुआ।

उसने उसे कभी नही देखा था और वह कैसी है, इसकी उत्सुकता उसे थी। "बाज के रोएँ जैसी मुलायम ग्रीवा," मायबासार ने कहा था। उसने किसी बाज या छोटे डैनोवाले बडे बाज के रोओ की कल्पना करने की कोशिश की। "शायद उसे वहाँ हो ही आना चाहिए था।" तेजी से उसके उडान भरते विचार मायबासार तथा उसके जैसे दूसरे लोगो के घटिया मजाको का ख्याल आते ही धूमिल पड गये। उसके दिल मे दिल्दा को देखने की चाह थी लेकिन उस तरह नही, इन जलालत भरे रिवाजो, किसी को शर्मिन्दगी मे डुबो देनेवाले इन धर्म सास्कारिक आवागमन के माध्यम से जाकर नही।

आबाय ने झटके से बिछावन पर करवट बदली और उसे गहरी नीन्द आने से पहले काफी रात गुजर चुकी थी।

कोनानबाय के आदेशानुसार सवेरे वापसी यात्रा शुरू हुई। अपने अलग-अलग घरो से शहर के सारे तोबिक्ति दल के दल सडक पर कोनानबाय के साथ होने बाहर निकल आये।

कोनानबाय और उसके तीस आदमियो ने विदाई के समय दुआ-सलाम मे तनिक भी समय बर्बाद नही किया और घर से बाहर निकलते ही यात्रा शुरू कर दी। सौ से अधिक बुजुर्ग, बी और कर्मचारी आगा-सुल्तान को विदा करने आ जुटे थे। चारो ओर उनके "खोश" की आवाज गूँज उठी थी। "यात्रा सुखद हो! शाति से घर पहुँच जाओ।"

करकरालीस्क से चिगीज पहाडियो तक का रास्ता किसी भी तरह छोटा न था और गहरी बर्फ के कारण इस साल यात्रा असाधारण रूप से कठिन थी। पहाड़ियाँ और तराइयाँ दोनो बर्फ की ठोस सफेद परत

से ढकी थी। इस वर्ष प्रचण्ड हवाओं का जोर भी कम न हुआ था। लगातार हफ्ते भर या उससे भी ज्यादा समय तक बर्फीला तूफान चलता रहा था और हवा को चुभती हिमकणिकाओं से भर दिया था। हवाओं ने हिमपुंजों को विलक्षण लहरदार नमूनों का रूप दे दिया था और यात्रियों के चलने के लिए कोई भी राह बच न रही थी।

तितर-बितर होता काफिला स्थानान्तरण करते सारसों अथवा पथ-भ्रष्ट आऊलों की तरह आगे बढ चला।

सफेद अयालवाले सुडौल, सुनहले कदमबाज घोडे पर सवार कोनानबाय काफिले का नेतृत्व कर रहा था। हृष्ट-पुष्ट व मजबूत यह घोडा दूसरों की तरह अपना सिर नीचे नही करता था। शरद्कालीन लम्बी यात्राओं मे यह बीजाश्व कोनानबाय का चहेता था।

रुपहली पेटीवाले अपने काले फरवाले चोगे और काले मखमल के चूडेवाला अपना लोमडी की खाल का टोप लगाये आगा-सुल्तान भी भव्य रूप से विशालकाय लग रहा था। तेज, दुलकी चाल से चलता उसका कदमबाज दूसरों को भी तेज चाल से चलने को मजबूर कर रहा था। जब कभी कोनानबाय अपने घोडे की चाल धीमी करता, आबाय का घोडा अयमन्दाय बडी आसानी से दुगामी चाल से चलता रहता। लेकिन कोनानबाय जैसे ही अपने घोडे की रास ढीली छोड देता, अयमन्दाय दुलकी चाल पकड लेता और आबाय को तकलीफदेह ढंग से हिलाकर रख देता। इसके कारण आबाय के लिए उसकी सवारी बडी असुविधा-जनक हो रही थी।

"यह तो सताना है। पिताजी को ऐसी जल्दी क्यों है। यह तो मुझे किसी कुन्दे पर बिठाकर हथौडे से पीटना जैसे मालूम हो रहा है।" आबाय ने काराबास से शिकायत की।

पहले दिन ही अयमन्दाय ने अपने सवार को इस तरह झकझोरकर रख दिया था कि वह अपनी सारी महारत गँवा बैठा था और अपने चोगे के बंधन भी संभाल पाने मे असमर्थ हो गया था।

"कोई बात नही! जल्दी ही इसके आदी हो जाओगे! चोगे को अपने चारों ओर से समेट लो!" काराबास ने सान्त्वना दी।

आबाय दिलोजान से आरामदेह, दुगामी चाल पसन्द करता। लेकिन कोनानबाय ने यात्रा के समय के एक-एक दिन की गणना कर ली थी

ग्रौर किसी की सुविधा के लिए वह ग्रपनी चाल मे परिवर्तन करनेवाला न था। चाहे सडक हो या नही, हवा हो या पाला, वह ग्रडियल की तरह ग्रपने पीछे-पीछे ग्रपने साथियो को घसीटता ग्रागे बढा जा रहा था।

दिन के समय कोनानबाय जितनी ग्रधिक दूरी तय करना सभव हो पाता, उतनी तय करने की कोशिश करता, लेकिन जब वह ग्राराम के लिए ग्राऊलो मे रुकता, बच निकलना कठिन हो जाता। जहाँ कही वह जाता, उसे लगभग ग्राराध्य भाव से सम्मान प्राप्त होता मानो वह मक्का से लौट रहा कोई हाजी हो।

सभी ग्राऊलो मे ग्रावसाकालो, बुजुर्गो ग्रौर ग्रन्ध भक्तो के होठो पर बस एक ही बात होती "मस्जिद! मस्जिद!" ऐसे भी बूढे थे जो चापलूसी के साथ उसे ग्राश्वस्त करते, "मामूली कबीले के बीच से उभरकर तुम खान बन गये हो!" "तुम लडाई मे बिना एक भी खरोच के जीतकर ग्राये हो!" "तुम बजते घटे के शक्तिशाली नार[1] हो!" उनकी चापलूसी का स्रोत कभी सूखता नही, ग्रागा-सुल्तान को खुश करने के लिए वे दूर-दूर की उडाने भरते।

जाडे मे बहुत से ग्राऊलो के ग्रत्कामिनेर विभिन्न विवादो के सम्बन्ध मे कोनानबाय की सलाह लेने करकरालीस्क ग्राय थे। उनमे कुछ ऐसे भी थे जिनकी मदद कोनानबाय ने उनके दुश्मनो से पुराना बदला चुकाने ग्रौर पहले उठायी गयी क्षति को पूरा करने मे की थी। ऐसे ग्राऊलो मे कोनानबाय को ग्रनिवार्य रूप से सलाह-मशविरा के लिए एक ग्रोर ले जाया जाता। बाद मे उसका काफिला ग्रतिरिक्त सवारीवाले घोडो ग्रौर हलाल करने के लिए चर्बीशुदा घोडियो से विस्तृत होता जाता।

दो काले बीजाश्व, एक भूरा ग्रौर तीन या चार दूसरे घोडे काराबास ग्रौर कुछ ग्रश्वपालो के घोडो के साथ बध गये। यद्यपि इन उपहारो से ग्राबाय पहले चकित हुग्रा था लेकिन फिर उसने इनके बारे मे ज्यादा सोचा नही। लेकिन जैसे-जैसे वे तोबिक्ति इलाके के करीब पहुँचते गये, उपहारो की सख्या उतनी ही ग्रधिक बढती गयी। कोनानबाय के काफ्ले मे शायद ही कोई ऐसा था जिसके कमद ग्रौर सरबद के साथ कोई घोडा न बधा हो। जब व तोबिक्ति की जमीन पर पहुँचे, उपहार मे मिले

---

[1] नार – ऊँट। शक्ति ग्रौर सत्ता का एक प्रतीक। – स

घोड़ों की संख्या इतनी विशाल हो गयी थी कि उन्हें ढोर के रूप मे पहले ही हॉककर ले जाना पडा।

यात्रा मे ग्रागा-सुल्तान को कैसा सम्मान प्राप्त हुग्रा, इस बात का इससे बेहतर सबूत क्या हो सकता था? ग्रौर उस समय कोनानबाय के ग्राऊल मे भेड़ की लीद से ग्रगर कोई भविष्यवाणी कर रहा होगा तो उसने ज़रूर कहा होगा: "यात्रियों की जेबे फूली हुई है ग्रौर वे लूट के माल से लदे है," मानो वे शहर से नही बल्कि दुश्मन के इलाक़े को लूटकर ग्रा रहे हो।

ग्रपनी यात्रा के सातवे दिन कोनानबाय ग्रौर उसका काफ़िला चिंगीज़ की पश्चिमी पहाड़ियों पर पहुँच गया। रात बिताने के ग्रलावा वह कही भी नही रुका था—दिन का भोजन करने के लिए भी वे नही रुके थे।

उस दिन काफिला उन तीन नौजवानो से ग्रा मिला जिन्हे ग्रग्रवर्ती क़ाफ़िले के रूप मे ग्रागे भेजा गया था—ग्राख़िर क्यो, ग्राबाय नही जानता था।

पीले रग के ढलानों पर तीन घुड़सवार दिखाई पडे जो घोड़ों का बहुत बड़ा ढोर हॉककर ले जा रहे थे।

"वे रहे, वहाँ," मायबासार ने कहा।

बिला शक—यह क़ोनानबाय के ही तीनो नौजवान थे ग्रौर ग्रपने ग्रागे-ग्रागे वे सौ से ज्यादा घोड़ों को हाँक ले जा रहे थे। स्पष्ट रूप से जानवरो को बड़ी सावधानी से चुना गया था—वे सुपुष्ट थे ग्रौर उनके स्कन्धप्रदेश ऊँचे थे।

उनकी जॉच के लिए क़ोनानबाय उनके बीच घोड़े पर जा पहुँचा।

सत्य का एक ग्राभास-सा ग्राबाय को ही ग्राया।

"यह कौन-से घोड़े है? कौन है उनका मालिक?" क़रीब पहुँचने पर ग्राबाय ने क़ाराबास से पूछा।

"यह उपहार है। तुम्हारे पिता को मिले उपहार के घोड़े।"

"किस तरह के उपहार? कहाँ से?"

"क्या तुम बच्चे हो? क्या तुम्हारे पिता के ग्रधीन कोई लोग नही? तुम्हारा क्या ख़्याल है, शहर मे तुम्हारे पिता के इर्द-गिर्द जो सारे लोग भीड़ लगाये थे, उनका क्या बना? क्या उनकी ग्रोर से किये गये प्रयत्नों के लिए उन्हे कुछ भी नही मिलना चाहिए था? क्या

बिना किसी इनाम के उन्हें उनके लिए काम करना चाहिए?" क़ारा-बास उसके सवाल पर चकित था।

आबाय ने कुछ और नहीं पूछा। अब वह सब कुछ जान गया था। हालाँकि इतने अर्से से वह अपने पिता के साथ रह रहा था, उसे अपने पिता की सम्पत्ति के स्रोत पर कभी संदेह नही हुआ था।

उसे शोजे की याद हो आयी। हालाँकि वह बहुत दूर रहता था, स्पष्ट रूप से बूढ़ा आक़िन क़ोनानबाय के बारे में उसके बेटे से कहीं ज़्यादा जानता था। वह ज़रूर ही उन्हें बहुत अच्छी तरह जानता होगा तभी तो वह उनका इतना सही चित्रण कर पाया था। "कितनी शर्म की बात है!" शर्मिन्दगी से डूबते हुए आबाय ने सोचा—उसे लगा मानो वह बूढ़ा आक़िन इस पल उसके सामने खड़ा हो...।

घुड़सवारों का दस्ता फिर अपनी राह चल पड़ा और रात होने से पहले क़ाराशोक़ि में क़ोनानबाय के आऊल तक पहुँच जाने की उम्मीद थी। आज ही के दिन आबाय अपने सारे मित्रों और सम्बन्धियों को देख पायेगा, लेकिन यह संभावना भी उसका दिल हल्का नहीं कर पायी।

जितना ज़्यादा वह सोचता, अपने पिता की धोखाधड़ी और जालसाज़ी उतनी ही अधिक उसकी समझ में आती जाती। तो ऐसे ही ढोरों में से पचास घोड़े अल्शिनबाय के आऊल में भी भेजे गये थे। दहेज! तो यह बात है, उसकी दुल्हन के लिए दिया जानेवाला धन भी इसी तरह एकत्र किया जा रहा था?

"बाज़ के रोएँ जैसी मुलायम है उसकी ग्रीवा।" ऐसे अल्फ़ाज़ों से वे उसके हृदय में अपनी मंगेतर के प्रति चाह बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। दिल्दा... उसकी मंगेतर... लेकिन इसका नतीजा क्या निकल रहा था? उसके यौवनपूर्ण सपनों का निश्छल, कलंकरहित संसार नष्ट हो चुका था। "मंगेतर!" यह सुन्दर, पवित्र शब्द था लेकिन अब इसने अपना पहला अर्थ गँवा दिया था। आबाय के हृदय में अपने और दिल्दा के प्रति आक्रोश मचलने लगा। यह आक्रोश से कहीं कुछ ज्यादा था—यह क्रोध था...

लूट-खसोटकर धन वसूलना, सब अपराधो में सर्वाधिक जघन्य था—ऐसा अपराध जिसके लिए कोई प्रायश्चित नही। यह बात उसने धार्मिक पुस्तकों में प्राय: पढ़ी थी। इसी अपराध ने तो पुराने ज़माने के मशहूर

बी कँगीरबाय का नाम सदा-सर्वदा के लिए कलंकित कर दिया था। ऐसा धन क़िस्मत के मारे कमज़ोर लोगों से नीचतापूर्वक बलात् छीना हुआ होता। बरलास और शोजे इसे प्रायश्चित न किया जा सकनेवाला गुनाह कहते। "ख़ुदा का घर," अर्थात् मस्जिद, जिसने क़ोनानबाय के सिर गौरव का सेहरा बाँध दिया था – क्या वह भी ऐसे ही साधनों से बनवायी गयी थी? घूस के धन से खड़ी की गयी मस्जिद टिकी कैसे है? अपने कलंक-बोझ से यह ग़ारत क्यों नहीं हो गयी? कितना घृणित है यह कि ऐसे ही घर में मुल्ला अतिशय बुख़ारा अंदाज़ में क़ुरान के अल्फ़ाज़ों को अत्यन्त अनुष्ठानपूर्वक ज़ोर-ज़ोर से पढ़ेगा, ख़ुदा के नाम पर मुहम्मद के धर्मादेशों तथा अन्य पवित्र उपदेशों को प्रचारित करे-गा...

उनके कुन्के के आऊल तक पहुँचते शाम ढल आयी थी, लेकिन आबाय अपने पिता के साथ वहाँ नहीं ठहरा और तुरंत ही जुमागुल के साथ जिदेबाय की ओर रवाना हो गया। वह बेताब था और कठिन घुड़सवारी करके उसने रास्ता तय किया।

हालाँकि देर हो चुकी थी, आबाय की माँ सोने तो क्या, जब यह दोनों घुड़सवार भौंकते कुत्तों के बीच अपने घोड़े दौड़ाते खिड़कियों के पास पहुँचे, रात का खाना तैयार करना भी उसने शुरू नहीं किया था।

यह एक लम्बा-तड़ंगा, मर्दानगी भरा नौजवान था, जिसने अन्दर पहुँचकर उन्हें सलाम किया। किसी यात्री जैसे उसके चेहरे पर आंधी-पाला मारने के चिह्न थे, उसके क़दम दृढ़ थे और बर्ताव संयमित था। उसे देखकर पूरा घर आनन्दित हो उठा।

"आबाय!"

"आबाय-जान!"

"मेरे लाड़ले!"

"मेरे बच्चे, मेरे मुन्ने! आबाय-जान!" उसकी माँ और दादी चीख़ पड़ीं। हर चेहरे पर ख़ुशी दमक रही थी।

सब भले-चंगे थे। दादी-अम्मा और माँ को वास्तव में बहुत अच्छा महसूस हो रहा था। बारी-बारी से उन्होंने उसपर चुम्बनों की बौछार कर दी। ओस्पान भी अब तक जाग रहा था और ख़ुशी से चीख़ता, ज़ाँघों को ठोकता इधर-उधर उछलता फिर रहा था।

"तुम लाये क्या हो? मिठाइयाँ कहाँ है? वे मुझे दो!" वह आबाय को माताओ, गबितखान और तकेजान से दुआ-सलाम करने ही नही दे रहा था। उसने तेज़ी से आबाय के सीने की तलाशी ली और उसकी जेबो मे एकदम अंदर तक हाथ डाल दिये।

। वापस आने के बाद कोई एक सप्ताह तक आबाय घर से बाहर नही निकला, यहाँ तक कि घूमने-फिरने के लिए भी नही—उसे खास तौर पर इस बात की चिन्ता थी कि कही पिता से मुलाकात न हो जाये। जिदेबाय में मालूम हुआ, क़ाराशोकि मे बहुत सारे लोग जमा हो गये और कुन्के का आऊल लोगों से भर गया—बहुत से लोग मिर्ज़ा के स्वास्थ्य के बारे मे जानने को आये थे। लेकिन जिदेबाय से कुन्के के आऊल को सिर्फ तकेजान रवाना हुआ। उसे अपने पिता को उपहार मे मिले घोड़ों की ख़बर मिल गयी थी।

"लोगों का कहना है, वे चुनिन्दा घोड़े है! कुदायबेर्दि निस्सन्देह सबसे अच्छे घोड़े ले लेगा।" तकेजान अपने बड़े सौतेले भाई कुन्के के बेटे के प्रति ईर्ष्यालु हो उठा था। "लेकिन मैं भी कुछ चुन ही लूँगा। हम देखेंगे, किसे सबसे अच्छा मिलता है!"

वह काराशोकि चला गया और वही ठहर गया।

क़रक़रालीस्क मे जो कुछ देखा-सुना था, वह सब कई दिनों तक आबाय अपनी माताओं और गबितखान को सुनाता रहा। उसकी छोटी माँ आयगिज भी वहाँ के बारे मे समाचार सुनने आ गयी।

आबाय ने बोजेय से हुई सुलह के बारे में तो बताया लेकिन उन्हे एक बच्चा सौप देने के बारे मे हुए समझौते के मुतल्लिक एक भी शब्द नही कहा। यह खौफ़नाक फ़ैसला उसे निरन्तर अपने बोझ से दबाये डाल रहा था। पिता ही इस सम्बन्ध मे बताये तो अच्छा। जिस उल्लास के साथ उसकी माताओ ने उसका स्वागत किया था, उस उल्लास को चौपट कर देने का दिल आबाय को नही हो रहा था। इस समाचार की उन पर क्या प्रतिक्रिया होगी, बाद मे देखा जायेगा। अगर इस सम्बन्ध मे वह अभी कुछ कह डालता है तो उनके आँसू फूट पड़ेंगे, उन्हे निराशा जकड़ लेगी और ऐसी बातें कह जायेगी जिनके कारण उन्हे बाद मे अफसोस करना पड़ेगा। बेहतर हो, वह उन्हे न सताये!

जिदेबाय आते समय रास्ते मे उसने फ़ैसला किया था, यही सबसे

अच्छा रहेगा और अपने साथी जुमागुल को इस सम्बध मे किसी से भी कुछ कहने से उसने मना कर दिया था।

पाँच दिन बाद बोजेय के आने की खबर आयी।

कोनानबाय ने तुरत ही कारावास को जिदेबाय की ओर रवाना कर दिया।

"मिर्जा ने सलाम भेजा है!" सन्देशवाहक ने जेरे और उलजान से कहा। "कल बहुत से मेहमान आयेगे। मुख्य ओताव मे यह बैठक और बोजेय के साथ आखिरी सुलह होगी। बोजेय और बायसाल यहाँ आयेगे। मिर्जा ने आप लोगो से मेहमानो के समुचित स्वागत के लिए तैयारी करने को कहा है।"

उलजान को इससे कोई परेशानी नही हुई। आयगिज की मदद से दिन खत्म होते-होते उसने सब कुछ तैयार कर लिया। उसने विशालकाय कालीनो और अलकृत नमदे के कम्बलो को खोलने का आदेश दिया। इससे और चमकते पर्दो के कारण तीनो घर निखर उठे—जेरे का मुख्य ओताव, अतिथि ओताव और आयगिज का ओताव। बावुरसको* का ढेर लगा दिया गया, पूरा का पूरा भेड भून डाला गया, बडे परिमाण मे पनीर तथा दूसरी चीजे तैयार करा डाली गयी। भोज के लिए मक्खन का चुनाव इस तरह किया गया जिससे ज्यादा नमक न होने से वह स्वादिष्ट लगे।

कोनानबाय और बोजेय दूसरे दिन आये। उनके नौकर-चाकर उनके पीछे-पीछे थे।

मुख्य ओताव की दहलीज बोजेय ने जैसे ही पार की, बूढी जेरे उठ खडी हुई, उसके पास गयी और सजल आँखो से उसे चूम लिया।

"अरे, मेरी आँखो की ज्योति! क्या तुम्हारे दिल मे हम लोगो के लिए कोई रजिश है? लेकिन तुम तो हमेशा से मेरे लिए बेटे जैसे रहे हो और मै तुम्हारे लिए माँ जैसी रही हूँ!" उसने पीडित आवाज मे कहा।

"ओह, जारिकतिक!** हमारी भोली माँ!" वृद्धा के शब्दो से

---

* बावुरसक—घी मे तली आटे की लोई।—सं॰

** जारिकतिक—वयोवृद्धाओ के लिए सम्मानजनक सम्बोधन, उनकी श्रेष्ठता और नैतिक गुणो पर बल देनेवाला शब्द। सं॰

गहन रूप से विचलित हो, बायदालि, सुयून्दिक तथा बोजेय के दूसरे साथी चीख पडे।

बोजेय खुद भी विचलित हो उठा था। गहरी ग्राह भरते हुए उसने दृढता से उसे गले लगा लिया। शब्दो के बिना, सिर्फ हाथ के इशारे से उसने उससे बैठने की प्रार्थना की और खुद उसकी बगल मे बैठ गया।

कुछ क्षणो तक वह मौन रहा फिर बच्चो की ओर मुड़ा। आबाय अपनी दादी के पास बैठा था। बोजेय ने उसे बुलाकर उसका माथा चूम लिया। फिर उसने ओस्पान और स्मागुल का चुम्बन लिया – इस तरह उसने जेरे के स्नेहपूर्ण स्वागत के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

बोजेय मुख्य ओताव को पूज्य मानता था। उसकी नजर मे यह मात्र क़ोनानबाय का घर न था बल्कि पूरे कबीले का था – सुखकर और आतिथ्य-पूर्ण।

जब बोजेय और उसके साथी बैठ चुके थे, काराताय, मायबासार तथा दूसरे लोगो के साथ कोनानबाय भी आ गया।

आबाय ठीक बोजेय की बगल मे अपने पिता को बैठा देख नही सका। बुजुर्गो के सम्मान मे जगह खाली करना ज़रूरी है, इस बहाने वह कमरे से बाहर चला गया।

वह न तो उस शाम और न ही दूसरे दिन सुबह मे वहाँ वापस आया। उसकी माँ ने उसे बताया, कोनानबाय और बोजेय एक दूसरे के प्रति नम्र तो रहे, लेकिन किसी तरह की गर्मजोशी नही दिखाई और बस हाँ-ना मे ही बाते की।

दिन मे बोजेय विदा होनेवाला था। भयावने फैसले को अमल में लाने का क्षण आ पहुँचा था।

आयगिज़ की तो सुबकियाँ बँध गयी और वह फर्श पर गिर पडी। काराबास ने कमशत को उसके हाथो से ले लिया और नन्ही लड़की को कपड़े पहनाकर मुख्य ओताव मे ले गया। छोटी, हल्के भूरे बालोवाली लड़की ने वहाँ एकत्र लोगो की ओर चमकती आँखों से देखा।

"आगा, अता! अता, आगा!" तुतलाते हुए उसने रुक-रुककर कहा।

उलजान बच्ची की ओर नजर नही उठा पायी। करुणा विह्वल हो, वह कमरे से बाहर चली गयी। चुपचाप रोती, जेरे फ़र्श पर गिर

पड़ी। ग्राबाय को लगा, बुजुर्ग हृदय-द्रावक रूखापन दिखा रहे थे, वह भी घर छोड़कर चला गया।

कोनानबाय अपनी अकेली आँख की चुभती दृष्टि से दुख के इन सकेतो और करुणार्द्र चेहरो को देख रहा था। वह करकरालीस्क के फैसले को अमल मे ला रहा था – उसने एक बच्चे को उसकी माँ से छीनकर बोजेय को सौप दिया था।

अपनी नियति से अनजान कमशत शान्तिपूर्वक बैठी थी। जब एक अपरिचित आदमी उठाकर उसे ले जाने लगा बस तभी उसने आवाज लगायी, "आपा, आपा! .. आजी! आजी! * " और रोने लगी।

उसके नन्हे दिल को भय ने दबोच लिया और वह ऐसा आर्तनाद कर उठी जैसे उसके नन्हे पैर अंगारो पर पड गये हो।

जब तक बोजेय और उसके आदमी दिखाई देते रहे, कलेजे के टुकडे कर देनेवाली उसकी आवाज सुनाई देती रही। उनके घोडे जैसे-जैसे आगे बढते जाते, वह आवाज किसी डूबते या खभे से बाँधकर जिन्दा जला दिये जानेवाले आदमी के आर्तनाद की तरह हृदयद्रावक और निराशा से भरी होती जाती।

---

* आजी – दादी। – सं०

भूल-भुलैया

१

ग्राबाय ग्रपनी माँ ग्रौर दादी के साथ जिदेबाय में ही रह रहा था। जिस दिन से वह लौटा था, उसने बस्ती नहीं छोड़ी थी।

वसंत ग्राने तक, इन महीनों में उसका मतलब सिर्फ़ पुस्तकों से ही रहा। स्कूल छोड़े काफ़ी ग्रर्सा हो चुका था, इसलिए वह कुछ-कुछ ग्ररबी-फ़ारसी भूलने लगा था। उसने ग़बितख़ान से शब्दकोश उधार माँग लिये थे।

मुल्ला ग़बितख़ान पुस्तकों का बड़ा शौक़ीन था। उसके संकलन में फ़िरदौसी ग्रौर निज़ामी, फ़ुज़ूली ग्रौर नवाई की कृतियाँ, जमशीद, ग्रलिफ़ लैला, ताबारी का "इतिहास", युसूफ़ ग्रौर ज़ुलेख़ा, लैला-मजनूँ ग्रौर कोरोग़लि जैसी पुस्तकें थी। बड़ी चाह के साथ वह दिन भर पढ़ता रहता ग्रौर शाम को चाय व रात के भोजन के समय ग्रपनी माँग्रों को उनके सर्वाधिक रोचक प्रसंग सुनाया करता।

"बेटे, यह बड़ी ग्रच्छी बात है," उसे पुस्तकों की ग्रोर ग्राकृष्ट देख ज़ेरे ने उससे कहा। "दुनिया में ऐसे ग्रसंख्य लोग है जो खाने ग्रौर सोने के ग्रलावा कुछ भी नही सोचते। वे ग्रपना जीवन बेकार ही गँवा देते है ग्रौर बेदिमाग़ निठल्ले रह जाते है! उनके जैसा मत बनो–ज्ञान के इन पृष्ठों से ग्रपने को मत ग्रलग करना!"

ग्रपनी पुस्तकों के प्रति दादी के ग्रादर-भाव ने ग्राबाय को हर्ष से भर दिया, पुस्तको में वह ग्रौर भी लीन हो गया। ग्रब हर रोज़ कही जानेवाली उसकी हृदयग्राही कहानियों को सभी सुना करते–माताएँ,

नौकर ग्रौर बच्चे। ग्रायगिज़ भी कभी-कभी ग्रा पहुँचती ग्रौर घण्टों बैठी सुनती रहती। क़मशत के उससे छीन लिये जाने के बाद से वह गुपचुप हो गयी थी, उसका चेहरा पीला ग्रौर मुरझा गया था; उसके ख़ुबसूरत नाक-नक़्श पर दुख ने ग्रपनी छाप लगा दी थी। ग्राबाय उसे ख़ूब ग्रच्छी तरह समझ पाया था। जब वह सुनने ग्राती, वह विशेष उल्लास ग्रौर सावधानी से कहानियाँ दुहराता।

ग्राबाय ग्राश्चर्यजनक कथा-वाचक बन गया था। ग़बितख़ान भी दिलचस्पी से सुना करता।

लेकिन दुर्भाग्य से वसन्त के ग्रारंभ तक सारी पुस्तकें ख़त्म हो गयीं।

ग्राबाय उन्हें सारी कहानियाँ फिर से सुना चुका था ग्रौर ग्रब ऐसी हालत थी कि सारा ग्राऊल ही गड़ेरियों ग्रौर "पड़ोसियों" की जान साँसत में डाले रहता जो बारी-बारी से ग्राबाय की कहानियों में जो कुछ याद रह पाता, सुनाते रहते। बहरहाल, ग्राबाय जितनी कुशलता से कोई भी नही सुना पाता।

"गर्मी ग्रानेवाली है ग्रौर घोड़ियाँ बियाने लगी है," उलजान ने मीठे ढंग से उनकी भर्त्सना की। "ग्रगर हम इसी तरह लगे रहे तो हम जाड़े को लम्बा खीच देंगे ग्रौर यह बुरी बात होगी!"

लेकिन जब वह ग्राबाय के साथ ग्रकेली होती, वह प्राय: सबसे ग्रच्छी लगनेवाली कहानियों को उसे दुहराने के लिए कहती।

ग़बितख़ान ग्रौर ग्राबाय ने मुल्लाग्रों ग्रौर धार्मिक पुस्तकप्रेमियों से दूसरी पुस्तकें प्राप्त की। किसी मौक़े पर ग़बितख़ान क़ाराशोक़ि में क़ोनानबाय के ग्राऊल गया ग्रौर पूरी बोरी भर के किताबें लेकर लौटा।

क़ोनानबाय को यह किताबें, क़रक़रालीस्क में मुल्ला हसन के ज़रिये हाथ लगी थीं। जब एक बार ग्राबाय ने उन किताबों की माँग की थी, उसने जवाब दिया था, "यहीं रुक जाग्रो ग्रौर मुझे पढ़कर सुनाग्रो। लेकिन ग्रगर तुम ग्रकेले ही उनका ग्रानन्द लेना चाहते हो तो मैं तुम्हें वे किताबें नही दूँगा।" ग्राबाय ग्रपने पिता के साथ नही रहना चाहता था, सो उसे किताबें भी नहीं मिली। लेकिन ग्रब ग़बितख़ान ने किसी न किसी तरह क़ोनानबाय को उन किताबों का मोह-त्याग करने को फुसला लिया था ग्रौर सच पूछिये तो ग्राबाय व पूरे घर को गड़ा हुग्रा

ख़ज़ाना ही मिल गया था। लेकिन बदक़िस्मती से शीघ्र ही आबाय को अपने पिता द्वारा क़ाराशोकि बुला लिया गया और उसे जाना पड़ा।

, उसके कुन्के के आऊल पहुँचते ही क़ोनानबाय ने उसे तोग़ाय के बुज़ुर्गों में से एक कुलिनशक़ के नाम एक सन्देश दे आने का काम सौंप दिया। आबाय ने सन्देश को दिमाग़ में बैठाया और उसी दिन संदेशवाहक क़ारा-बास के साथ रवाना हो गया।

कुलिनशक़ का आऊल बहुत दूर न था। पतझड़ में बोकेंशी की ज़मीन छिन जाने पर तोग़ाय को क़ाराशोकि की पश्चिमी ढलानें मिल गयी थीं जहाँ कभी क़ोदर जाड़ा व्यतीत करता था।

दुआ करने के लिए आबाय क़ोदर और काम्का की क़ब्र के पास रुका – वह भयावना दृश्य उसकी स्मृति में अब भी उसी तरह ताज़ा था मानो वह उसे आज ही देख रहा हो। याद ताज़ा हो उठी। संत्रास, पीड़ा और आँसू। फलत: जब वे कुलिनशक़ के आऊल पहुँचे और घोड़ों से उतरे, आबाय अतिवृद्ध-जनोचित रूप में मौन व संयमित था।

यहाँ लोग अब भी जाड़े के घरों में रह रहे थे। आम तौर से गर्मी के पहले संकेत पाते ही लकड़ी की रिहायशों की ठीक बग़ल में ओताव उठ खड़े होते थे। लेकिन कुलिनशक़ अभी भी अपने घर में ही रह रहा था।

क़ोनानबाय के संदेशवाहक के नाते किशोर होने के बावजूद आबाय का स्वागत वयस्कों की तरह किया गया। जब दुआ-सलाम व अन्य सामान्य औपचारिकताएँ समाप्त हुई, कुलिनशक़ ने अपनी बीवी से कहा:

"ख़ातिन,* मेहमानों के लिए कुछ तैयार करो!"

उसके पाँच बहादुर बेटों में, जो "दुस्साहसियों" के नाम से प्रसिद्ध थे, सिर्फ़ मनस ही घर पर मौजूद था। वह वास्तव में भीमकाय था – जवान और दृढ़काय – ख़ूबसूरत नाक-नक़्शवाला। इस समय वह चुपचाप एक दोम्ब्रे पर हाथ फिराता, आगन्तुकों पर ग़ैर-दोस्ताना निगाहें डालता बैठा था।

चाय शीघ्र ही तैयार हो गयी। मनस की जवान बीवी ने कपड़ा बिछा दिया और नाश्ते का सामान ले आयी। उसका चेहरा लम्बूतरा

---

* ख़ातिन – पत्नी। – सं०

था, पतली-सीधी नाक थी और शॉल के नीचे से उसके बाल के नीले-काले गुच्छे झाँक रहे थे। आबाय उसके प्रति अपने आकर्षण को रोक नहीं पाया क्योंकि उसकी सहज कुलीनता, सुघड़ता और मेहमानों के प्रति दोस्ताना रवैया कुछ वशीभूत कर लेने जैसा था। उसकी हर हरकत शालीन और गरिमामय थी। जब वह चाय दे चुकी, आख़िर आबाय ने अपने आने का मक़सद बताना शुरू किया।

"क़ुलिनशक़-आग़ा!"

क़ुलिनशक़ उसकी ओर मुड़ गया, एक छोटा-सा सींग निकाला, अपनी अंगुलियों के नाख़ून से उसे थपकी दी, एक चुटकी तम्बाकू लेकर बड़े आनन्द से उसे नाक में सुड़का।

"मेरे पिता ने आपको सलाम कहा है।"

"उन्हें भी अच्छी सेहत नसीब रहे।"

"उन्होंने मुझे आपको बेतकुदिक के खेतों के बारे में बताने के लिए कहा है जो पहले बोर्सक़ की मिल्कियत थे लेकिन अब जाड़े के मकानों सहित अक़बेर्दि को सौंप दिये गये हैं। पिछले साल बोर्सक़ से समझौता करके आपने यह ज़मीन ले ली थी लेकिन अब अक़बेर्दि ने मेरे पिता से कहा है, 'अगर वसन्त में कुलिनशक़ फिर वहाँ अपने ओताव लगाना चाहेगा तो क्या हो सकेगा? मैं कुछ समय तक ज़मीन को परती छोड़ देना चाहूँगा। मैं वहाँ पतझड़ में घास सुखाना चाहूँगा। कुलिनशक़ अपने आऊलों के लिए दूसरी जगह ढूँढ़ ले।' वह मेरे पिता के माध्यम से आपसे यह माँग करता है।"

"अक़बेर्दि मेरे लिए कुछ भी नहीं। तुम्हारे पिता का क्या ख़्याल है?"

"मेरे पिता अक़बेर्दि से सहमत हैं। मुझे उन्होंने आपसे कहने को भेजा है कि इस वर्ष आप बेतक़ुदिक़ को रवाना न हों।"

आबाय की आवाज़ दृढ़ थी। उसने किसी वयस्क की तरह शान्तिपूर्वक और सिलसिलेवार अपनी बातें कहीं। कुलिनशक़ ने सिर हिला दिया लेकिन उसकी मुस्कुराहट में ख़ुशी न थी।

"आओ, हम चाय पीयें," उसने अनुरोध किया।

आबाय ने अपना प्याला उठा लिया और मेज़बान के जवाब की प्रतीक्षा करने लगा।

दो प्याले खत्म हो गये फिर भी कुलिनशक कुछ नही बोला।

"बेटे, अब मेरी बात सुनो," सहसा वह लडके की ओर मुड गया। "बेतकुदिक के खेतो के साथ क्या मामला है, क्या तुम्हारे पिता जानते है? जब वे बोर्सक के कब्जे मे थे, हम बारी-बारी से उसे अपने-अपने अधीन लेते रहते थे और बराबर-बराबर घास बाँट लेते थे। क्या उन्हे यह मालूम है?"

"हाँ, उन्हे मालूम है। और उनका कहना यह है, 'मिल्कियत एक चीज है और समझौता एकदम ही दूसरी चीज है। बोर्सक खेतो के मालिक थे। कुलिनशक ने उनपर मालिक की हैसियत से कब्जा नही किया था बल्कि सिर्फ मालिको से समझौता करके। अगर वह ऐसा ही समझौता अकबेर्दि के साथ कर सकता है, वह जमीन को इस्तेमाल मे लाते रह सकता है। लेकिन उसे यह जरूर याद रखना चाहिए, यह ज़मीन अकबेर्दि की है,' आबाय ने अपनी बात पूरी की।

"दूसरे शब्दो मे घोडे का मालिक अकबेर्दि है। अगर उसे वाजिब लगे तभी हम उसके पीछे आ सकते है—अगर नही, हम चलते-फिरते नजर आये। क्यो न इसे सीधे इस तरह कहा जाये, 'चाहे वह मॅह पर ही क्यो न झुठलाये, तुम्हे बेतकुदिक उसे सौप देना है!'" कुलिनशक ने तीखेपन से कहा।

आबाय को उससे हमदर्दी थी और वह मामले पर जोर नही डालना चाहता था। उसे इस बात का कोई अहसास न था कि उसके पिता ने उस पर कितना नागवार काम सौपा था। सिर्फ अभी ही कुलिनशक के चिन्तित चेहरे को देखकर वह समझ पाया था, उसके पिता ने उसे कैसी भूमिका अदा करने का काम दिया था।

"मैने सिर्फ वही कहा है जो मेरे पिता ने मुझे आपसे कहने के लिए कहा था। बाकी आप पर निर्भर करता है। जो आपको सबसे अच्छा लगे, वही कीजिये"

"क्या किया जा सकता है," कुलिनशक ने ठडी आह भरी और कड़वी मुस्कान के साथ आगे कहा: "जहाँ अकबेर्दि वही मुसीबत—अगर एक नही तो दूसरी भी नही!"

कुलिनशक की बात से आबाय की कल्पना जाग उठी और उसने तत्क्षण सुनाया:

ज़मीन और चाँद,
सितारे और नदियाँ
है अल्लाह की देन
अपने सेवक अक़बेर्दि* को!

चुटकुले पर सब हँस पड़े। चाय डाल रही मनस की पत्नी ने चटखारे लिये और प्रसन्नता से उसकी ओर देखा। कुलिनशक हर्षित हो उठा।

"बहुत अच्छे, बेटे! काश, तुम्हारे अल्फ़ाज़ अक़बेर्दि भी सुने!"

फिर उसने बातचीत बदलते हुए आबाय से उसके परिवार और वृद्धा ज़ेरे व उलजान के बारे में पूछा।

"बेटे, मुझे बताओ, जो बच्ची बोजेय को दी गयी थी, उसके बारे में तुमने कुछ सुना है? लोगों का कहना है, आयगिज़ बहुत ही दुखी है।"

आबाय के लिए यह विषय पीड़ादायक था। उसने कोई जवाब नही दिया, लेकिन कुलिनशक ने अपनी बात जारी रखी:

"कहते है, जिगितेक असन्तुष्ट है, क्योंकि ठीक ढंग से उनकी क्षति-पूर्ति नही की गयी और मैने सुना है, तुम्हारी छोटी बहन के साथ वे दुर्व्यवहार करते है। बेचारी आयगिज़ शायद यह महसूस करती है। उसे कैसा लगता है?"

"आक़साक़ाल, कृपया मुझे बताइये, आपके बेटों को 'बेस-क़स्क़ा'** क्यों कहा जाता है?" विषयान्तर की कोशिश करते हुए आबाय ने पूछा। "कल ही की बात है, मै और आयगिज़ उसके बारे मे जानने को उत्सुक हो उठे थे।"

"बड़ा तेज़ छोकरा है," आबाय को सवाल का जवाब देने से कतरा जाते देख क़ुलिनशक़ ने सोचा। "बेशक, वह अपनी ज़बान पर लगाम लगा सकता है! उन लोगों ने इसे यह भी सिखा दिया है।" वह मुस्कुरा उठा।

"इनका अपने बारे में यही ख़्याल है—पाँच बहादुर! लेकिन इन्होने किसके दिल मे ख़ौफ़ पैदा किया, यह मुझे नही मालूम। थोथा चना, बाजे घना! जब बोकेंशी ने अपनी जाड़े की ज़मीन छोड़ने से इनकार

---

* कज़ाख़ भाषा में अक़बेर्दि का अर्थ होता है ख़ुदा की देन।—सं०

** बेस-क़स्क़ा शब्दों का कमाल है जिसके दो अर्थ होते है, "पाँच गंजे व्यक्ति" और "पाँच बहादुर व्यक्ति"।—सं०

13—3336

कर दिया और कहा, मर जायेंगे लेकिन काराशोकि नही छोडेंगे, मै अपने पाचो बहादुरो के साथ तुम्हारे पिता का आदेश मिलते ही, दौडता हुआ, वहाँ जा पहुचा! मुझे उम्मीद थी, कब्जे मे ली गयी जमीन का एक टुकडा तो मिलेगा। और हमे क्या मिला? बस गाल पर एक तमाचा – बस यही इन्हे भी मिला – मेरे पाँचो शूर-वीरो को!" आबाय को इतना परेशान करनेवाले विषय पर लौटते हुए कुलिनशक ने अपनी बात खत्म की।

"लेकिन एक कहावत है, 'जिसे भिखारी बना दिया गया हो, उससे रत्ती भर भी कुछ नही लेना चाहिए!' लुट गये बोकेशी से कुछ भी छीनकर भला, किसे लाभ होगा?" आबाय ने तीखेपन से पूछा। "और वे आपके लिए अजनबी भी तो नही – वे आपके स्वजन है!"

कुलिनशक की राय कुछ और ही थी। हालाकि मनस और उसकी पत्नी पूरी तरह आबाय से सहमत थे, वह अपने प्रति हुए अन्याय की रट लगाये रहा और बातचीत खत्म होने तक कोनानबाय की शिकायत करता रहा। आबाय ने देखा, कुलिनशक के नाराज होने का मुख्य कारण है कि लूट के बटवारे के समय उसे नजर अन्दाज कर दिया गया और वह किशोर ऐसे बेशर्मी भरे लालचीपन पर आश्चर्य किये बिना न रह सका।

वापस आने पर आबाय ने अपने पिता को कुलिनशक की अनुमति की सूचना दे दी लेकिन उसकी नाराजगी के बारे मे कुछ नही कहा। उसने सक्षेप मे, जितने कम शब्दो मे सम्भव हो सका, अपनी यात्रा का विवरण दे दिया।

तब कोनानबाय ने, काराबास को बुलाया और उसे एक-एक आदमी करके, विस्तृत विवरण देने को कहा। काराबास ने आबाय की प्रशसा शुरू की।

"आपके बेटे ने एक भी शब्द बर्बाद नही किया," उसने कहा। "उसने किसी वयस्क की तरह बहुत अच्छे ढग से सम्मानपूर्वक बाते की। वह तनिक भी परेशान नही हुआ और कुलिनशक के साथ बराबरवालो जैसी बातचीत की।"

काराबास और भी तारीफ करना चाहता था लेकिन कोनानबाय ने हाथ हिलाकर उसे चुप कर दिया।

वह अपने बेटे के आचरण से सन्तुष्ट था और दूसरे दिन उसने उसे एक और काम पर भेजा। फिर, काराबास के साथ आबाय सुयून्दिक के यहाँ चल पडा।

जब दोनो आदमी बोकेशी के मुखिया के आऊल मे पहुँचे, अँधेरा हो आया था। अपनी पुरानी जमीन से खदेड दिये जाने पर यह आऊल अब काराऊल की ऊपरी पहाडियो, ऊष्ट्र ककुद के नामवाली पहाडी पर बस गया था। बोकेशी अपने ओतावो मे रह रहे थे—इतने सारे लोगो के लिए ठोस आवासो को खडा करने का समय ही नही था।

सुयून्दिक का मुख्य ओताव गर्म था बाहर से इसकी हिफाजत के लिए नमदे की दो तहे चढायी हुई थी और अन्दर से भव्य कढाईवाले ऊनी कम्बल लगा दिये गये थे।

आबाय अभी भी जाडे के अपने कपडे पहने था—गिलहरी के फर के झालरवाली जाकिट और नमदे की परतवाले बूट—इस कारण उसे ठंड नही महसूस होती थी। आज के दिन, पहली बार उसने किसी ओताव मे प्रवेश किया था। यह उसे बडा ही ताजगी भरा और आश्चर्यजनक रूप से आनन्ददायी लगा—वसत की शुरुआत मे उसे तम्बुओ मे जीवन बिताना विशेष रूप से प्रिय लगता था—जहाँ आदमी स्तेपियो की स्वच्छ हवा ले सकता था।

विस्तृत ओताव मे एक दीपक हल्के-हल्के टिमटिमा रहा था। सुयून्दिक, उसकी बीवी और उसके दो बेटो—आदिलबेक और अमिलबेक के अलावा वहाँ एक और भी व्यक्ति मौजूद था, जिसकी उपस्थिति साक्षात वसत की कमनीयता-सी थी—वह और कोई नही सुयून्दिक की बेटी तोगजान थी।

सुयून्दिक की छोटी बीवी—अपनी माँ के छोटे ओताव से वह कभी अन्दर आ रही थी, कभी जा रही थी। उसके बालो मे लगी शोल्पि*, उसके हर पद न्यास पर बज उठती। उसके कानो के नन्हे-नन्हे बुंदे, उसके सिर पर की ऊदबिलाव की छोटी-सी टोपी और उसकी अगुलियो के जवाहरात—यह सब आबाय को रमणीक और भव्य लग रहे थे।

---

* शोल्पि—जवान औरत के बालो के सिर पर बाँधकर पहननेवाला सोने या चाँदी का एक किस्म का गहना। स०

उसका मुखडा कितना मनोहारी, कितनी तीखी नाक और काली आँखें थी। लम्बी, साफ बँटी हुई, उसकी भौहें कपोलास्थि के एकदम बीच में अबाबील के पंखो की तरह फैली थी। तोगजान जब ध्यान से कुछ सुनती होती, हँसती या उलझन में पड जाती, वे तीखी भौहें पल भर में तनी कमान-सी हो जाती तो दूसरे ही पल समतल वक्र रेखा हो ढीली पड़ जाती। शायद वे भोहे किसी अदृश्य पक्षी के डैने थी जो उड़ान भरने के लिए कभी फैल जाते – कभी बुलन्दियों पर पहुँचने के लिए सिमट जाते . . . । पक्षी ? नही – बल्कि कोई रूह है – अति सूक्ष्म, अति तीव्र। यह कही ऊँचे, दूर लपक ले जानेवाली चीज़ है, लुभावनी। आबाय उस पर से अपनी आँखें नही हटा पा रहा था। इस ओर ध्यान दिये बिना कि वह उसके बारे में पूर्व के कवियो के प्रतिमानों में सोच रहा है, वह उसकी ओर अभिभूत ताकता रहा।

तोगजान ओताव मे मेहमानों की ख़ातिर-तवज्जो के लिए आयी थी। उसने नौकर से कपड़ा बिछाकर चाय देने के लिए कहा और ख़ुद अपने पिता की बग़ल मे बैठ गयी।

"सुयून्दिक-आगा," आबाय ने अपने मेज़बान को सम्बोधित किया, "वहाँ खड़े उस एकाकी पहाड़ को क़ाराऊल* क्यों कहा जाता है ?"

"कौन कह सकता है, बेटे," सुयून्दिक ने जवाब दिया और आगे कहा: "एक समय की बात है जब तोबिक्ति और मामाय मे निरन्तर लड़ाई चलती रहती थी। निश्चय ही यह नाम पुराने जमाने से चला आ रहा होगा।"

"आपका ख्याल है यह नाम हम लोगो का दिया हुआ है – तोबिक़्ति का ?"

"और कौन हो सकता है ? यहाँ जितनी जगहे है, सबका नामकरण तोबिक्ति ने किया है।"

"चिंगीज़ के बारे मे आपका क्या ख़्याल है ? क्या तोबिक़्ति मे चिंगीज नाम का आदमी कभी हुआ है ?"

"नही ! तुम ठीक कहते हो। उस पहाडी को चिंगीज कैसे कहा जाने लगा ?" सुयून्दिक विचारमग्न हो उठा।

---

* क़ाराऊल – पहरे का मीनार। – सं०

असिलबेक अपने पिता को परेशान देख झुझला उठा और उसने जल्दी से उनका बचाव किया।

"लोगों का कहना है, यह नाम शिकिस¹ शब्द से बना है। यहाँ शरद् हमेशा बहुत ठंडा होता है।"

"बात ऐसी नही," आबाय ने एतराज़ किया। "चिंगीज़ एक मशहूर ख़ान का नाम था।"

"यह सच है। मैने उसके बारे में सुना है—क्या, मै ठीक-ठीक याद नहीं कर पा रहा हूँ, बेटे, उसके बारे मे हमे बताओ।"

आबाय ने चिंगीज़-ख़ान और उसकी विजयो के बारे मे जो कुछ जानता था, सब बता दिया और साहसपूर्वक कुछ अपने अनुमान भी जोड़ दिये:

"शायद इसी कारण पहाड़ी को चिंगीज़ और इसकी सबसे ऊँची चोटी को ख़ान कहा गया हो। दूसरों से अलग जो पहाड़ खड़े है, उसके सैनिक शिविर रहे होंगे। शायद इसी कारण इसे गिरोह कहा जाता हो। और यह संभव है, क़ाराऊल नाम भी उसी समय से चला आ रहा हो।"

सुयून्दिक दिलचस्पी से सुनता रहा। तोगजान ने देखा, उसके पिता आबाय की बातों मे इतने तल्लीन हो गये थे कि उनकी प्याली की चाय एकदम ठंडी पड गयी थी। लेकिन वह खुद भी आबाय पर से आँखे हटा पाना कठिन महसूस कर रही थी। बुजुर्ग अपनी अज्ञानता पर उद्विग्न हो उठे थे।

"शायद ऐसी ही बात होगी," असिलबेक और काराबास ने कहा।

आबाय की कहानी से पूर्णतया मुग्ध हो सुयून्दिक ने ख़ुद ही आबाय को चाय की प्याली पेश की।

"लो, आबाय, जल-पान तो करो," उसने जेन्त²*, मक्खन और बावरसाक आबाय की ओर बढाते हुए कहा।

किसी इतनी कम उम्र के मेहमान के प्रति यह समादर भाव देखकर तोगजान चकित हो उठी थी। उसकी चमकती आँखो की नजर कई बार

---

¹ शिकिस—वास्तविक जाडा (शिन—सच्चा, किस—जाड़ा)।—सं०

²* जेन्त—मक्खन और शहद मिश्रित घर मे तैयार पनीर।—सं०

आबाय ने खुद पर महसूस की और उसे उन आँखो मे मात्र जिज्ञासा ही नही बल्कि गहन एकाग्रता और समझ भी दिखाई पडी।

इतनी दिलचस्पी से आबाय ने अपने जीवन मे कभी किसी लडकी की ओर नही देखा था। तोगजान भी देर तक उसकी ओर देखते रही, लेकिन फिर उसने सकुचाकर अपनी आँखे दूसरी ओर फेर ली।

सुयून्दिक गहरे विचार मे डूबा था।

"जो ज्यादा दिनो तक जीवित रहा है, वही सब कुछ जानता है, यह बात नही, बल्कि वह ज्यादा जानता हे जिसने अध्ययन ज्यादा किया है।"

इस पर आबाय ने कहा

"सुयून्दिक-आगा, मै जो कुछ जानता हूँ, वह मैने आप जैसे आदरणीय लोगो से ही सीखा है। और अगर आप इजाजत दे," थोडी देर रुककर उसने कहा, "मै आपसे कुछ बाते समझना चाहूँगा—ऐसी बात जो कभी आपने ही कही थी।"

"वह बात क्या थी, मेरे बच्चे?"

"मुझे याद है, ओर्दा के पास की जमीन के बारे मे जब कोई फैसला ले लिया गया था, आपने कहा था, 'मै तुम्हारे भेडो से नही बल्कि ईश्वर के न्याय से निर्देशित हूँ'। ऐसा कहने से आपका क्या मतलब था?"

काराबास और सुयून्दिक के दोनो बेटे दिल खोलकर हँस पडे। स्पष्ट रूप से उन्हे जवाब मालूम था। सुयून्दिक फिर उद्विग्न लगने लगा।

"शायद यही बेहतर हो, इसका जवाब तुम अपने पिता से पूछो?" उसने सुझाया।

"लेकिन आप जानते है, आगा, मेरे पिता एक लडके के साथ बेकार की बाते करना पसन्द नही करेगे।"

"लेकिन इतना तो तुम जानते ही हो, इस बात का ताल्लुक तुम्हारे पिता से है?"

"मै बस इतना ही जानता हूँ, इससे ज्यादा नही," आबाय ने कहा।

"तो फिर, बेहतर होगा, तुम उन्हे ही इसके बारे मे बताने कहो।"

"नेक सलाह के लिए आपका शुक्रिया, सुयून्दिक-आगा—लेकिन आपने वे शब्द मेरे पिता से झगड़ा होने के बाद कहे थे।"

"एकदम ठीक।'

"इससे क्या भला होगा, अगर झगडे का कारण मै सिर्फ अपने पिता से और आपके बेटे सिर्फ आपसे सुने? इस तरह तो हम कभी सत्य तक नही पहुँच पायेगे। हम सब सिर्फ एकतरफा किस्सा ही जान पायेगे जो हमे गडबडझाला मे डाल देगा और हम नोजवान लोगो को एक-दूसरे को शका भरी दृष्टि से देखने को मजबूर कर देगा। लेकिन अगर वह किस्सा मै आपसे और आपके बेटे मेरे पिता से सुनेगे, हमारे सामने मामला साफ हो जायेगा और पैमाने बराबर हो जायेगे।"

आबाय का तर्क प्रभावशाली था और काराबास को खशी हुई।

"लडका ठीक कहता है," सुयून्दिक को जवाब देने के लिए अनुरोध करते हुए वह ज़ोर से बोला।

"मेरे बच्चे, तुमने तो मुझे चारो ओर से फँसा लिया है," सुयून्दिक मुस्कुरा पडा। अब भी जवाब देने से बचने की कोशिश करते हुए वह अपने बेटो की ओर मुडकर बोला, "ज़रा देखो, हमारा कम उम्र मेहमान जानने को कितना उत्सुक है!"

चाय खत्म हो चुकी थी लेकिन तोगजान ने नौकर को चाय के सामान ले जाने को नही कहा था। वह बैठी सुनती और मुस्कुराती रही। अक्सर उससे आँखे मिल जाने पर आबाय को महसूस होता, वह उसे पुराने परिचितो या किसी निकट के मित्र के आत्मविश्वास और मनोयोग से देख रही होती।

आखिर सुयून्दिक को हार माननी ही पडी।

"अगर तुम जोर डालते हो तो मै भी तुम्हे बता देता हूँ," उसने कहना शुरू किया। "अपने जवानी के दिनो से ही तुम्हारे पिता मामाय कबीले के कोजेकपाय के दोस्तो मे रहे हे। दो साल पहले कोजेकपाय ने जिसका अपने एक गरीब रिश्तेदार से जमीन के बारे मे मनमुटाव हो गया था, तुम्हारे पिता से मदद माँगी और सयोगवश तुम्हारे पिता के पास तीन सौ भेड भेज दिये। फिर मिर्जा ने मुझसे दोनो के बीच मध्यस्थता के लिए कहा। मैने मामले के सम्बन्ध मे दोनो पक्षो की बाते सुनी, ईमानदारी से अपना फैसला दिया और जमीन के उचित बँटवारे का निरीक्षण करने गया। तुम्हारे पिता भी आये थे और मेरे पीछे-पीछे अपने मित्र कोजेकपाय के साथ घोडे पर चल रहे थे। मै देख रहा था,

जिस ढग से मैने मामले को निबटाया, वह कोजकपाय को तनिक भी पसन्द नही आया था। वह बहुत गुस्से मे था – समझ लो उबल रहा था। मैने उसे मिर्जा से शिकायत करते सुना और आखिर तुम्हारे पिता ने मुझसे चीखकर कहा, 'ऐ, मतलबी, तुम कहाँ चले?' इस पर मुझे इतना गुस्सा आया कि मैने पलटकर कहा, "मै तुम्हारे भेडो से नही बल्कि ईश्वर के न्याय से निर्देशित हूँ

"फिर क्या हुआ?" आबाय ने पूछा।

"मेरे बच्चे, इसके बाद क्या हुआ, यह तुम्हे जानने की क्या जरूरत है? मामला बद से बदतर होता गया। एक के बाद दूसरी उलझने आती गयी..

सुयून्दिक ने अपना हाथ इस तरह झटका जैसे मामले को दिमाग से निकाल रहा हो, उसका चेहरा उदास हो उठा।

आबाय का चेहरा एकदम लाल हो उठा और अपने मैत्रीपूर्ण भाई से एकदम भिन्न सुयून्दिक का अक्खड और असस्कृत छोटा बेटा असिलबेक आबाय को व्याकुल देख उल्लसित हो उठा। "जैसा चाहता था, वैसा मिल गया," उसने सोचा। लेकिन आबाय ने खुद पर काबू पा लिया और फिर बूढे व्यक्ति से सवाल करने लगा। अब वह सुयून्दिक से उस पद का अर्थ जानना चाहता था जिसे उसने आबाय के दादा की बरसी के भोज पर गाया था और जब मायबासार बोजेय के साथ झगड पडा था। उसे पद के शब्द अच्छी तरह याद थे

> जो बोते है दुश्मनी और नफरत के बीज,
> नही लेने देगा उनको राहत की साँस खुदा,
> और कब्र मे पडे दादा को धिक्कारते है वे,
> जिन्हे चाहते थे वह सबसे ज्यादा।

"मेरे दादा ने कैसे और किनके बीच दुश्मनी और नफरत के बीज बोये थे?" आबाय जानना चाहता था।

"ओह, आबाय-जान, तुम मुझे अतीत को कुरेदने पर क्यो मजबूर करते हो?" सुयून्दिक ने झिड़की देते हुए पूछा। "तुम मेरी कहानियाँ सुनोगे और कल तुम्हारे पिता से मेरी ठन जायेगी!"

"क्यो, नही! सुयून्दिक-आगा, मेरा विश्वास कीजिये! मै यह सारी चीजे खुद अपने वास्ते जानना चाहता हूँ, शिकायत या झगडा खडा करने के लिए नही!"

"बहुत अच्छे, बहुत अच्छे, मेरे बच्चे। मै सोचता हूँ, इसके बारे मे भी मै तुम्हे बता सकता हूँ। तुम जानते ही हो, वाक लोग बहुत दूर नही रहते थे। तुम्हारे दादा ने फुसलाकर उनके एक हिस्से को अपने साथ मिला लिया और उनके बीच जबर्दस्त झगडा खडा करा दिया। फिर उन्होने तुम्हारे पिता को वाक नेता कोनाय की मदद के लिए भेजा। झगडा ज्यादा से ज्यादा कटु होता गया। जब कोनानबाय लोगो पर टूट पड़ा, उन्हे भागना पडा और वे झील के किनारे सनीठो की झाड़ियो मे छुप गये। तब कोनानबाय की सलाह पर कोनाय ने सनीठो मे आग लगा दी और बेचारे, खौफ के मारे लोगो को बाहर आने के लिए मजबूर होना पडा जहाँ उन असहाय, अरक्षित लोगो को गाजर-मूली की तरह काट डाला गया—लेकिन छोडो, इतना पहले हुई घटनाओ की चर्चा करने से क्या फायदा। आओ, हम भोजन करे—अभी-अभी गोश्त भी आ गया है।" सुयून्दिक विषय बदल देने की फिक्र मे था।

आबाय विचारमग्न हो उठा। दीपक की लाल-लाल लौ मे उसकी पुतलियाँ एक जिज्ञासा भरी, कही दूर से आती अपनी ही रोशनी से दमक रही थी। तोगजान अपनी स्नेहपूर्ण चितवन को अब और न छुपा सकी।

रात का भोजन परोस दिया गया और चूँकि मेहमान स्वजन ही थे, पूरा परिवार वहाँ मौजूद था। तोगजान आबाय के बहुत करीब अपने माँ-बाप के बीच मे बैठी। अब वह उसे पार्श्व से देख सकता था। उसकी नन्ही-सी नासिका पक्ति और भी लुभावनी लग रही थी और उसकी ठुड्डी छोटी-सी, महीन, हल्के गुलाबी सेब-सी थी। उसकी लम्बी लम्बी चोटियाँ उसकी गर्दन के गोरेपन को पूरी तरह नही छुपा पा रही थी और उसके कानो की लौर से लटकते गहने पानी की नन्ही-नन्ही बून्दो की तरह दमक रहे थे।

तोगजान को एक नयी भावना ने ग्रस रखा था जिसके कारण वह कभी लजा उठती और दूसरे ही पल सहसा पीली पड जाती। आबाय फिर मुग्धावस्था मे बैठा रहा।

सुयून्दिक का घर हार्दिक स्वागत और आतिथ्य-परायणता के लिए

प्रसिद्ध था उस रात भी व्यंजन नाना प्रकार के थे। सीग की पीली मूठवाला एक तेज़ चाकू हाथ मे लिये काराबास घोड़े के सॉसेजों और घोड़े की चर्बी के पिंड को तराशे जा रहा था।

सभी लोग इच्छापूर्वक खाने में जुटे थे लेकिन आबाय ने सुस्वादु भोजन को शायद ही छुआ। तोगजान भी कभी-कभार ही अंगूठियो और कंगनों से सुशोभित अपना नन्हा-सा हाथ खाने की ओर बढ़ा रही थी।

"मेरे बच्चे, तुम खा क्यों नही रहे? कुछ लो तो!" सुयून्दिक़ और असिलबेक ने आबाय पर ज़ोर डाला।

इन गरमागरम व्यंजनों के बाद क़िमिज़ की बारी आयी। क़िमिज़ पीते हुए वे काफ़ी देर तक बैठे रहे। बातचीत इतनी दिलचस्प थी कि समय भागता रहा।

आबाय इतना कम बोल रहा था कि मेज़बानों ने समझा, उसे नीन्द आ रही होगी। पुरुष ओताव रो बाहर चले गये और औरतें मेहमानों के लिए बिछावन लगाने लगी।

एकाकीपन की इच्छा से आबाय दिल हल्का करने बाहर चला गया। सुयून्दिक की कहानियो ने उसे बुरी तरह मर्माहत कर दिया था लेकिन दर्द कम गया था और कही गहरे जा पैठा था, एक नयी भावना जन्म ले रही थी। दूसरों से सुना और पुस्तकों में कई बार पढ़ा एक शब्द आबाय के दिमाग मे धमा-चौकड़ी कर रहा था—प्रेयसी। कितना उत्तेजक शब्द है यह! चाहे जो हो आज यह शब्द गीतों और पुस्तकों से निकलकर अपने पूरे आकर्षण, अपनी पूरी सार्थकता के साथ साक्षात उसके सामने आ पहुँचा था। यह उसके लिए एक नाज़ुक मुखड़े, सुकुमार आकृति और दिल को आपे से बाहर कर देती दृष्टिवाली एक किशोर बाला के हँसने, उसकी भाव-भंगिमाओं, मुस्कानो और साँसों मे वास्तविक हो उठा था।

अत्यन्त विचलित आबाय ने तारों को देखने के लिए अपना चेहरा ऊपर उठाया। वह पहाड़ियो से वसन्त की चलती बयार लोभी-सा पान करने लगा।

चाँद क्षयमान था। साफ़ बादलरहित विस्तृति में सुदूर और लुभावना चाँद धीरे-धीरे अपने शीर्षबिन्दु पर पहुँच रहा था। चाँद के प्रकाश ने आबाय के हृदय में आकर उसे आह्लाद और दुख से भर दिया।

उष्ट्र ककुद से कोई भी ग्रस्पष्टत चिगीज घाटियो को देख सकता था जिसकी ग्रनगढ ऊँचाइयाँ ग्रभी भी रुपहली नीद मे डूबी थी।

ग्राऊल के पास पशुग्रो के विशाल ढोरो मे शायद ही कोई हलचल हो रही थी। भेड़ गहरी नीन्द मे निशब्द, बेखबर सो रहे थे। ग्रसिलबेक ग्रौर ग्रादिलबक सोने को जा चुके थे ग्रौर सुयून्दिक व कारा-बास घोड़ो के साथ व्यस्त थे। ग्रोतावो के तुन्दुक ग्रच्छी तरह गिरा दिये गये थे ग्रौर तम्बू ग्रलौकिक व रहस्यात्मक ढग से दमकते खड़े थे। वसन्त की इस रात के हल्के झोको मे ग्राबाय सुबह के ग्रागमन – सिर्फ़ उसी के लिए जगमगानेवाली सुन्दर, शानदार सुबह के ग्रागमन को महसूस कर रहा था।

"क्या यही मुहब्बत है, वास्तविक मुहब्बत? ग्रगर हाँ तो यह रहा उसका पालना – रात की निस्तब्धता मे नीडस्थ ससार!" उसके हृदय से ग्रावाज़ ग्रायी।

चाँद दूध से नहाया लग रहा था। ग्राबाय ने ग्रपने सीने मे भावना की इस शक्तिशाली बाढ की कमी महसूस की ग्रौर उसकी नसो मे खून तेज़ी से दौडने लगा।

"मुझे हो क्या रहा है?" उसे ग्राश्चर्य हुग्रा।

तोगजान के गोरे-गोरे हाथ ग्रौर उसकी नाजुक गर्दन। वही-वही उसकी सुबह थी।

तेरा सबेरा मेरे दिल मे है, मेरे प्यार...

यह ग्राबाय नही, उसका दिल गा रहा था। यह प्यार का पहला गीत था – तोगजान का गीत। माधुर्य तो ग्राप ही ग्रा गया ग्रौर शब्द धीरे-धीरे, स्वच्छन्द तैरते हुए।

क़ाराबास के बुलाने की ग्रावाज ग्राबाय को कल्पना लोक से धरती पर ले ग्रायी। इन लोगो को छोड़ सब सोने जा चुके थे।

गीत विस्मृत हो चुका था। ग्रोताव मे जाते समय उसे सिर्फ एक ही पंक्ति याद रही थी.

तेरा सबेरा मेरे दिल मे है, मेरे प्यार

जब काराबास और आबाय ओताव मे पहुँचे। सुयून्दिक और उसकी पत्नी भारी रेशम के सुनहले पर्दे के पीछे अपने ऊँचे पलग पर सो चुके थे। शायद तोगजान भी लेट चुकी थी। शाम को प्यालियो मे जिस औरत ने चाय डाली थी, वही मेहमानो के लिए बिछावन लगा रही थी।

जैसे ही आबाय अपने बिस्तरे के पास पहुँचा, सहसा पर्दा हिल उठा और प्रवेश द्वार से तोगजान की गरिमामय आकृति के अन्दर आते ही शोल्पि की घटियाँ बज उठी। उसके हाथो मे एक रेशमी चादर थी और वह बिना किसी बेताबी के यू कहिए, धीरे-धीरे चल रही थी। हर कदम पर रुपहला सगीत मन्द-मन्द बज उठता।

नौकरानी ने आबाय के लिए दक्षता से कोमल, आरामदेह बिछावन लगाया था। लेकिन तोगजान ने, जिसके हाथो मे चादर अब भी थी, शान्तिपूर्वक कहा

"कृपया, पाँवो के पास इसे थोडा और ऊँचा कर लो!"

इन थोडे से शब्दो मे आबाय व्यग्रता महसूस कर सकता था—अपने प्रति! वह क्या बोले? वह कुछ कहना तो चाहता था लेकिन उसका हृदय लबालब हो रहा था। उसे शब्द ढूढे न मिले।

तोगजान रेशमी चादर बिछावन पर रख दबे पाँव, दरवाजे की ओर फिसलती-सी जाने लगी।

उसने निश्चित रूप से उसके प्रति बडी व्यग्रता दिखाई थी—शायद यह श्रद्धा के मौन लक्षण थे। क्या यह सब बस इतना ही था? वास्तव मे सब यही कुछ था? दरवाजे तक पहुँचने से पहले तोगजान ने मुडकर नही देखा, फिर हठात् ही बडी लचक के साथ वह मुडी, मुस्कुरायी और चली गयी।

उस मुस्कान का राज क्या था? शायद उपहास? शायद किसी न किसी तरह वह इसी के लायक था? आबाय उद्विग्न हो उठा। तेजी से कपडे उतारकर वह कबल के अन्दर जा घुसा।

मन्द से मन्दतर होती उस घटी की आवाज उसे अब भी सुनाई दे रही थी—अथवा, कहीं यह उसके दिल की धडकन तो नही, घोडे की टाप की तरह घोषपूर्ण—समस्त दूसरी आवाजो को बन्द करती? और फिर सहसा ही वह रुपहला मधुर सगीत विलीन हो गया मानो किसी अदृश्य हाथ ने उसे झटक लिया हो।

कारावास ने दीपक गुल कर दिया।

लेकिन दीपक जलता रहे या बुझा दिया जाये, आबाय का इससे कोई मतलब था? उसके लिए तो सारी दुनिया चकाचौंध रोशनी से नहायी थी। उसे तो अंधेरा महसूस तक न हुआ। हालाँकि उसकी आँखें बन्द थीं, दिमाग दौड़ रहा था–जैसे किसी वात्याचक्र में फँस गया हो।

वह सबेरा होने तक नहीं सो पाया था, लेकिन ओताव में जाग होते ही उसकी नीन्द खुल गयी और वह उठ बैठा–पीला और थका।

हवा में साँस लेने के लिए ओताव से निकलने पर उसे उत्सुकता हुई, तोगजान सोयी किस ओताव में थी? ठीक सामनेवाले ओताव में तो निश्चित रूप से नहीं? वह असिलबेक का ओताव होगा। निस्सन्देह इसके पीछे छह-कोनोंवाला ओताव सुयून्दिक की छोटी बीवी का था। तुन्दुक नीचे गिरे थे, तोगजान और उसकी माँ जरूर ही सो रही होंगी।

सुयून्दिक जाग चुका था और वह ओताव से बाहर आ गया। आबाय ने उसे सलाम किया और पिता का सन्देश दिया। बातचीत मुख्तसर रही और सुयून्दिक किशोर मेहमान को चाय के लिए अन्दर ले आया।

तोगजान दिखाई नहीं दी और न ही असिलबेक या आदिलबक। सुबह की ठंड रहते ही वापसी यात्रा पर चल पड़ने को चिन्तित कारावास चाय के बाद सीधे घोड़ों पर जीन कसने चला गया।

लेकिन आबाय की जाने की इच्छा नहीं हो रही थी। यहाँ रहनेवाले लोग आतिथ्यपरायण व सहृदय थे, उनका घर किसी गर्म, आरामदेह नीड़ जैसा था। "अगर मैं कोई निकटवर्ती स्वजन होता," सहसा उसके दिमाग में यह बात आयी, "मैं यहाँ अक्सर आया करता, बहुत जल्दी-जल्दी, जब भी मेरी इच्छा होती. ।" पर जाना जरूरी था।

सुयून्दिक ने उससे उलजान और जेरे के बारे में पूछा।

"बेटे, अपनी माताओं को मेरी बंदगी कह देना," उसने कहा।

बायबिशे[1] ने जो बीती रात एक भी शब्द नहीं बोली थी, इस समय उसे अपनी बंदगी उलजान को पहुँचाने के लिए कहा, फिर उसने आय-गिज और नन्ही कमशत की चर्चा की।

"मेरे प्यारे, मुझे बताओ, जो बच्ची बोजेय को दी गयी थी,

---

[1] बायबिशे–बड़ी बीवी।–स०

क्या तुमने उसके बारे मे कुछ सुना है? आयगिज जुदाई कैसे बर्दाश्त करती है? और एक रोती बच्ची को छीनकर अजनबी के हाथो मे सौपना तुम्हारे यहाँ के लोग कैसे सहन कर सके?"

उसके शब्दो मे आश्चर्य और निन्दा के भाव थे। आबाय ने थोड़े मे जवाब दिये, लेकिन इससे वह हतोत्साह नही हुई।

"बोजेय की बीवी कड़े दिलवाली है। उसकी अपनी बेटियाँ है और वह उस बेचारी बच्ची की ज्यादा देखभाल करनेवाली नही," उसने दुख के साथ आगे कहा।

"लेकिन बोजेय को भला क्या हुआ है? अगर वह बच्ची पर कोई ध्यान नही देती, वह तो इस पर ध्यान रखेगा," उसके शब्दो की कठोरता कम करने के लिए सुयून्दिक ने बीच मे कहा।

"अरे, मै नही जानती। मैने सुना है उनके आऊल मे यह बात आम है, 'हमारे लिए उनके पास देने को कोई जानवर न था और बदले मे यह छोकरी पकड़ा दी', और बच्ची के साथ बुरा सलूक किया जाता है। वे उसे उसकी माँ से छीन लाये और वह भी बेमतलब! बेचारी आयगिज को बच्चे के वियोग मे तड़पना पड़ रहा है," और बायबिशे करुणा से रो पड़ी।

आबाय द्रवित हो उठा। स्पष्ट रूप से उसकी निश्छलता और हमदर्दी वास्तविक थी। इन अफवाहो ने उसे बेचैन कर दिया। जिदेबाय मे इन खबरो से पीड़ा की नयी लहर दौड़ जायेगी। उसे आयगिज और अपनी दादी का रुदन याद आ गया। लेकिन तब यह सिर्फ वियोग का दुख था। जब यह ताजा अनिष्टकारी खबरे उन्हे मालूम होगी, उनके हृदय पर वज्रपात ही हो जायेगा! कल कुलिनशाक इसके बारे मे कह रहा था और आज इस आऊल के लोग। हर कोई कह रहा था, कमशत का परित्याग कर दिया गया है, अपमानजनक और असहाय रूप से दासता की बेड़ियो मे डाल दिया गया है। इन बातो मे निश्चित रूप से सत्य का कोई न कोई अंश तो होगा ही। उसने नन्ही कमशत के बारे मे जो कुछ सुना है, वह सब जिदेबाय मे बता देगा। उसके पिता जो मन मे आये कहते रहे, लेकिन उसने ऐसा करने का निश्चय कर लिया।

रवाना होने से पहले मेहमानो को एक बार फिर क्रिमिज पिलाया गया और उन्हे समृद्ध और पूर्ण भोजन से पहले जाने नही दिया गया।

उन्होने मुख्य ओताव के बुज़ुर्गो से विदा ले ली थी और घोडे चल पड़े थे लेकिन आबाय अभी तक छोटे ओताव पर से अपनी आँखे नही हटा पा रहा था – उसके तुन्दुक पहले की ही तरह बन्द थे।

"तोगजान मुझे फिर से देखने की कोई जरूरत नही समझती ' वह अलविदा कहने भी बाहर नही आयी।" गुस्से से उसने घोडे पर चाबुक फटकार दी, लेकिन एक बार फिर मुडकर देखने से खुद को नही रोक पाया। एक औरत छोटे ओताव के बगल मे खडी थी। उसने एक काला गाउन पहन रखा था और सफेद परिधान फहरा रहा था। क्या वह तोगजान तो नही? शायद वह अभी-अभी जागी होगी। उसके बालो मे लगी शोलिप की टनटनाहट उसे सुनाई देती प्रतीत हुई: या शायद फिर यह और कुछ नही, उसका दिल ही गा रहा हो? लेकिन अब रुकना अनुचित होगा।

उष्ट्र ककुद, आऊल का नाम भी आबाय को अब प्रिय लगने लगा था। शीघ्र ही आऊल बहुत पीछे छूट गया। चिंगीज पर्वतमाला के पाद पर्वतों का चक्कर लगाते हुए, घुडसवार काराऊल नदी के तट के साथ-साथ आगे बढ गये। आबाय ने घोडे की चाल एकदम मद कर दी थी।

सहसा उसे पीछे से घोड़ो की टाप आती सुनाई दी और उसका हृदय आशा से भरकर अन्दर ही अन्दर हिलोडे लेने लगा – ठीक पिछली रात की तरह। उसने जल्दी से पीछे मुडकर देखा घुडसवार एक लम्बे-चौडे आकारवाला नौजवान था पर सुयून्दिक के आऊल का नही था। उसके क़रीब पहुँचने पर आबाय ने देखा वह एकदम ही नौजवान था। उसके ऊपरी होंठो पर रोओ की एक हल्की-सी धारी भर थी। उसकी काली-सी घोड़ी के तीन सालवाले घोडो की तरह बाल कतरे थे। उल्लसित भाव से मुस्कान बिखेरते हुए उसने अपना सलाम कहा।

अकेले घुडसवारी उसे खल रही थी, इसलिए उसने तेजी से घोड़ा दौड़ाकर उन दोनो को आ पकडा था जिससे उसे बात करने के लिए तो कोई मिल जाये। उसकी घोड़ी का सीना धोकनी की तरह चल रहा था, उसके मुँह से झाग उठ रहा था और नथुने फैले हुए थे।

नवागन्तुक का अभिवादन-स्वागत किया गया और सामान्य परिचयों का आदान-प्रदान हुआ। पता-चला नौजवान कोमेनबाय का बेटा येरबोल था और सुयून्दिक के आऊल का ही था।

क़ाराबास शीघ्र ही उसके साथ इस तरह हँसने-बोलने लगा मानो वे एक-दूसरे को बहुत समय से जानते हो। आबाय ध्यान से उनकी बातें सुनता रहा और नोजवान के प्रति उसे तीव्र लगाव महसूस हुआ। येरबोल सुयून्दिक़ का निकटवर्ती स्वजन था, उसकी माँ तोगजान की माँ की चचेरी बहन थी और जब जी चाहे वह सुयून्दिक के घर जा सकता था। वह बातूनी और मोदमय था, उसने तुरंत ही आबाय का दिल जीत लिया।

इस इलाके मे शिकार की प्रचुरता थी और आबाय ने महसूस किया, शिकार अच्छा रहेगा।

"क्या तुम्हारे पास कोई बाज़ है?" येरबोल ने तत्परता से पूछा। "अगर है, हमारे यहाँ आ जाओ। मै तुम्हें वह जगह दिखाऊँगा जहाँ बहुतायत से बत्तख़ और मुर्ग़ाबी है।"

घर पर आबाय के पास तकेजान का एक बाज़ था और येरबोल का निमंत्रण उस के लिए बडा प्रलोभनकारी था। उष्ट्र ककुद से आगे होने न होने तक, वह ख़ुद को प्रताडित करता रहा था—वह तरह-तरह की योजनाएँ बनाने का प्रयास करता रहा था—कब और किस बहाने वह वापस आ सकता है? यह निमंत्रण एक अच्छा मौक़ा था।

शिकार सम्बन्धी बातो ने उन्हे तेजी से एक-दूसरे के करीब ला दिया। उन्होंने पुराने मित्रो की तरह बाते शुरू कर दी और ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे बातचीत हमेशा-हमेशा ऐसे ही चलती रहेगी।

लेकिन आखिर वह घाटी भी आ गयी जहाँ उनकी राहे अलग होती थी—येरबोल को दायी ओर और आबाय व काराबास को बायी ओर—चिंगीज़ पर्वतमाला के पादतल मे कुन्के के आऊल की ओर जाना था।

येरबोल से अलग होने की इच्छा आबाय को नही हो रही थी।

"शायद तुम्हे कोलकयनर पहुँचने की ऐसी कोई जल्दी नही? तुम हम लोगो के साथ क्यो नही आ जाते?" उसने अनुरोध किया।

"मैं कैसे आ सकता हूँ? अगर मुझसे पूछा गया, किस लिए आये हो, तो मै क्या कहूँगा?" दूसरे ने हँसते हुए जवाब दिया।

"कोई नहीं पूछेगा। तुम कुछ समय तक हम लोगों के साथ ठहरोगे और हम बाज़ लेकर शिकार खेलने जायेंगे।"

येरबोल हिचकिचाया।

"मेरी भी बस यही ख़्वाहिश है।" उसने थोड़ा सोचा। "नही! मैं नही जा सकता," उसने फ़ैसलाकुन ढंग से कहा। "मुझे बहुत से काम करने है।"

उसने विदा ली और कोलक़यनर की ओर रवाना हो गया – वह उतना ही हँसमुख और ताज़ा था जितना मुलाक़ात के समय था। कितनी ईर्ष्या है उसे उससे – येरबोल हर रोज जब देखना चाहेगा, तोगजान को देख सकता था। क्या क़िस्मत है! और शायद येरबोल अक्सर ही उससे मिलता था और इस सम्बन्ध में कुछ नहीं सोचता था। येरबोल उसकी अन्तिम आशा था और वह बहुत दूर था। अभी-अभी वे कितने घनिष्ठ थे और अब वह जा चुका था।

वे क़ाराशोकि में दोपहर के बाद पहुँच पाये। कुन्के के मुख्य ओताव से लेकर रसोई के काम आनेवाले छोटे ओताव तक चाँदी जड़ित ज़ीनोंवाले बहुत से घोड़े बाँधे थे। क़ोनानबाय ने शायद कोई बैठक बुलायी थी। जानवरों पर लगे टीकों से क़ाराबास जान गया, एकदम पड़ोस मे ही रहनेवाले लोग यहाँ एकत्र हुए थे।

"इर्ग़िज़बाय, जुवान्तयाक़ और तोपाय लोग है – वही सामान्य बैठक होगी," उसने कहा और फिर कुछ कड़ुवाहट से बोला: "उनके घोड़ों के ज़ीन कसे है, वे जानेवाले ही है। हम भोजन का मौका चूक गये!"

आबाय ने ओताव के अन्दर जाकर अपना सलाम पेश किया। ओताव भरा हुआ था। क़ोनानबाय एक सोफ़े के साथ लग कर बैठा था, उसके कन्धे दूसरों के मुकाबले ऊँचे थे और उसकी सफ़ेद क़मीज़ का अगला हिस्सा खुला था जिससे उसका बालों भरा सीना दिखाई दे रहा था। मेहमान अपने

भारी कपड़े डाल चुके थे और अपने मुखिया के आखिरी शब्दों को सुनते क़िमिज़ ख़त्म कर रह थे। कुछ लोग थोड़ा उठकर, कुछ झुके रुक गये थे, वे सब फ़र के टोप पहने थे। कुन्के कोच के परे, दरवाज़े के पास बैठी थी और उसकी बग़ल मे किमिज़ को चला-चलाकर प्यालों में डालता बूढ़ा जुमाबाय खड़ा था। आबाय उनके पास जा बैठा और अपने पिता की बातें सुनने लगा।

"मुझे भ्रम हो जाने की चेतावनी दी गयी है। उनका कहना है, वे किसी तरह की नयी दुश्मनी को बढ़ावा नहीं दे रहे। बहुत अच्छा, मैं इसे ध्यान में रखूगा; चाहे मुझे नुकसान ही क्यो न हो, मैं इसका विश्वास कर लूँगा।" उसने अन्तिम शब्दों पर गंभीरता से ज़ोर दिया। "जब तक मै अपनी आँखों से सारी चीज़ें नही देख लेता, मैं धैर्य रखूँगा। और जो मेरे सच्चे मित्र है," – उसकी अकेली आँख इस छोर से उस छोर तक फिर गयी और जुवान्तयाक़ व तोपाय क़बीलों के बुजुर्गो पर जा टिकी – "वे भी मेरी तरह ही धीरज रखें। लेकिन चौकस रहें। और जैसे ही मैं अपने घोड़े पर जा बैठता हूँ, वैसे ही आपको मेरे साथ हो जाना है। अगर आप ऐसा करते हैं, ख़ुदा की निगाहों में वाजिब करेगे और मुझसे समर्थन प्राप्त करेंगे! मेरा आप से कोई और अनुरोध नही, कोई और माँग नही," उसने अन्त में इस तरह कहा मानो कह रहा हो, "जो तैयार है, जा सकते है।"

वहाँ सहमति की आम ध्वनि फैल गयी।

"ऐसा ही हो!"

"जैसा आप कहते है, वैसा ही होगा!"

आबाय ने सोचा, "यह तो क़सम खाने जैसी बात है! पिता ने शायद और कस के लगाम देने के लिए उन्हें एक साथ बुलाया।"

क़ोनानबाय ने अभी-अभी "मित्र" शब्द का प्रयोग किया था। चारों ओर देखकर आबाय यह महसूस किये बिना नही रह सका कि जिन लोगों को मेरे पिता ने मित्र कहा था, उन्हें वह या तो जानता ही नही या फिर बहुत कम जानता है। कभी उसके पिता ने अपने दोस्तों में बायसाल, क़ाराताय, बोजेय, सुयून्दिक और तुसिप जैसे लोगों की गिनती की थी। आज उनमे से कोई भी यहाँ न था। यहाँ तक कि क़ुलिनशक भी, जिसके यहाँ आबाय अभी हाल ही मे गया था, वहाँ मौजूद न था। यह तो कुछ

अजीब सी बात थी। यह नये दोस्त कौन लोग थे? और पुराने कहाँ गये? क्या कोई नयी गोपनीय चीज होने जा रही है?

जब वे करकरालीस्क से लौटे थे, आबाय को विश्वास था, अभागी बच्ची को अपनाने के बाद सुलह पक्की हो चुकी थी और सारे झगडे और मतभेद खत्म हो चुके थे। उसने कोई भी अफवाह या ऐसी-वैसी बात नही सुनी थी और लोगो के बीच कानाफूसी पर कोई ध्यान नही दिया था।

अब तक अधिकाश मेहमान जा चुके थे। कोनानबाय ने कुछेक बुजुर्गो को रोक लिया था। लेकिन इस छोटे जमावडे मे भी वह गभीर और तनावग्रस्त प्रतीत हो रहा था और आबाय के लिए सुयून्दिक के यहाँ की अपनी यात्रा के बारे मे बताने का मौका निकाल पाना कठिन हो रहा था। लेकिन आखिरकार उसने अपने पिता को उसकी जानकारी देने का मौका निकाल ही लिया। उसे यहाँ ज्यादा समय तक टिके रहने की इच्छा नही हो रही थी। उसे जिदेबाय मे अपनी माँ के पास पहुँचने की चिन्ता थी। लेकिन उसके पिता ने उसे फटकार दिया।

"क्या गुडियो से खेलनेवाली तुम कोई छोटी-सी लडकी हो?" उसने पूछा। "हमेशा ही अपनी माँ के पास भाग जाने को तैयार रहते हो? मेरे साथ रहने से ज्यादा तुम्हे औरतो के बीच रहना अच्छा लगता है। यहाँ तुम लोगो से मिल सकते हो, बुद्धिमत्तापूर्ण बाते सुन सकते हो और जीना सीख सकते हो। वहाँ तुम क्या सीख सकते हो?"

व्यक्तिगत रूप से आबाय ऐसा नही मानता था। "आप मेरे पिता है तो वह मेरी माँ है," उसका ख्याल था। "लडको का पालन-पोषण दोनो करते है।" लेकिन बात काटने की उसकी हिम्मत न हुई।

"घर पर मेरे पास एक बाज है," उसने हिचकिचाते हुए समझाया। "वहाँ आस-पास काफी शिकार है और मेरा ख्याल जिदेबाय के आस-पास कुछ शिकार करने का था।"

यह कोनानबाय को उचित प्रतीत हुआ और उसने अधिक आपत्ति नही की।

"जरा एक-दो दिन और ठहर जाओ। कल मै तुम्हे बायदालि के यहाँ भेजना चाहूँगा और उसके बाद तुम जिदेबाय जा सकते हो।"

आबाय प्रसन्न और आश्वस्त हो गया लेकिन ओताव से बाहर आने पर वह फिर विचारमग्न हो उठा।

कोनानबाय ने पहले उसे कुलिनशक के पास भेजा जिसके साथ उसकी फूट पड चुकी थी। फिर सुयून्दिक के पास भेजा जिसके साथ पुराने वैमनस्य की बात सभी जानते है। दोनो वृद्ध व्यक्तियो मे से किसी से भी आबाय ने अपने पिता के बारे मे कुछ भी प्रशसनीय नही सुना था। अब वह उसे बोजेय के मित्र और समर्थक बायदालि के पास भेजना चाहता था।

इसका क्या मतलब है और उसे ही क्यो इन लोगो से मिलने के लिए भेजा जा रहा है? यह तो स्पष्ट था कि कोनानबाय जानबूझ कर उसे उन लोगो के पास भेज रहा है जिनसे उसका झगडा हो चुका था। "अच्छा है वह मेरे दुश्मनो को देख ले, उन्हे अच्छी तरह जान ले और उसमे समझ आ जायेगी और वह मेरी ज्यादा इज्जत करने लगेगा!" शायद उसके पिता का यही ख्याल था।

क्या यही बात थी या कुछ और? आबाय फिर विचारमग्न हो गया। क्या उलझाव है—एक ऐसी भूल-भुलैया जिसके बीच निस्सहाय, निहत्थे भटकने के लिए आबाय को निष्ठुरतापूर्वक मजबूर कर दिया गया था।

दो दिन बाद आबाय और काराबास फिर स्तेपियो मे थे। इस बार उनका रुख बायदालि की ओर था।

कुलिनशक और सुयून्दिक की तुलना मे यहाँ उनका स्वागत एकदम भिन्न ढग से किया गया। वहाँ न तो कोई आवभगत की गयी और न व्यजन परोसे गये। अभी विशाल ओताव की दहलीज उन्होने पार भी नही की थी, उन्हे बायदालि की गुस्से से भरी, डॉट-डपट करती आवाज सुनाई पडी।

ओताव असुखद रूप मे गर्म, दमघोट और अस्त-व्यस्त था। ठीक दरवाजे के पास एक नौकर भेड का पनीर तैयार कर रहा था और ओताव के बीच मे एक कडाह उबलता पडा था। बायदालि एक छोटी-सी पीली लडकी पर घूँसे बरसाये जा रहा था।

"भाग जा यहाँ से! तनिक चैन नही लेने देती, मुसीबत कही की!" उसने बच्ची को धक्का दे दिया। भयभीत लडकी आग पर गिरते-गिरते बची और फूट-फूटकर रोने लगी।

"इस नाचीज को ले जाओ यहाँ से! मै इसे देख नही सकता!" बच्ची को ओताव से निकाल बाहर करते हुए बायदालि ने अपनी बीवी से चीखकर कहा।

आबाय और काराबास ने अन्दर आकर अपना सलाम कहा। बायदालि ने बेदिली से जवाब दिया।

जब पनीर तैयार किया जा रहा हो, कडाह उबल रहा हो – जो अपने मेहमानो का स्वागत मॉस से करना नही चाहते हो, उनके लिए बडा सुविधाजनक बहाना हो सकता था। लेकिन इस शोर-गुल और अस्त-व्यस्ततावाली जगह पर ठहरने की आबाय की कोई इच्छा नही हो रही थी। "अगर यहॉ खाना-पीना न हो, अच्छा ही रहेगा," उसने सोचा और चुपके से काराबास की शोचनीय अवस्था पर हॅस पड़ा जिसे जीवन मे सबसे ज्यादा भोजन से लगाव था। दिन या रात के भोजन मे पर्याप्त मॉस पाने की सभावना, उसके लिए बडा मायने रखती थी और प्राय: ऐसा होता कि जब आबाय को कही से चल पड़ने की जल्दी होती काराबास सिर्फ़ इसलिए देर करा देता क्योकि भोजन मे गरमागरम गोश्त मिलने की उम्मीद रहती।

काली दाढीवाले उनके गभीर बने मेजबान ने उनकी ओर एक बार भी नही देखा बल्कि दरवाजे को घूरता खडा रहा। आखिर उसने अपनी बीवी की ओर एक गोल-मटोल इशारा किया, मानो कहना चाहता हो "क्या हम इन्हे थोडा किमिज़ पिला दे?

काराबास अपनी कमर की पेटी ढीली कर चुका था और आराम से बैठने की तैयारी कर रहा था लेकिन मेज़बान के मनोभावो को समझते हुए, आबाय का वहॉ ज्यादा देर तक ठहरने का कोई इरादा न था। बायदालि ने खुद ही किमिज को मिलाकर, प्यालो मे ढाल कर उन्हे दिया।

"कहॉ का सफर है?" आखिर उसने पूछ लिया। "और मकसद क्या है?"

आबाय ने अपने पिता का सन्देश तुरंत ही उसे सुना दिया।

यह मामला भी किसी चरागाह का ही था। पिछले साल जयलाव से रवाना होते समय कोनानबाय ने बोकेशी को काराशोकि मे उनसे चरागाह छीन लेने पर बदले मे बायदालि के चरागाहो से लगी ज़मीन दे दी थी। अब उसने बायदालि से सुयून्दिक और सुगीर को इजाज़त देने की प्रार्थना की थी कि वे अपने चरागाहो को उपयोग मे लाने दे।

जब आबाय ने अपनी बात पूरी की, बायदालि की त्योरी पर बल पड गये और काफी देर तक उसने कुछ भी नही कहा। उसने फाड खाती

निगाहें आबाय पर टिका दी लेकिन आबाय शान्त बना रहा। उसके चेहरे पर सहज आश्चर्य का भाव था मानो वह पूछना चाहता हो, "आप मुझे इस तरह क्यों घूर रहे है?"

अन्त में बायदालि ने अपना जवाब दिया।

"ऐसा ही हो! सुयून्दिक और सुगीर मेरे चरागाहों पर अपने आऊल बसा लें। मैं और क्या कह सकता हूँ?"

यह एक साहसी और कृतसंकल्प व्यक्ति का निर्णय था। उसने बहस करने या दलीलें देने में तनिक भी समय बर्बाद नहीं किया था हालाँकि स्पष्ट रूप से उसका हृदय कुपित था। आबाय ने अपना क़िमिज़ ख़त्म किया, अपने मेज़बान का शुक्रिया अदा किया और जब अलविदा कहने ही वाला था, बायदालि दुबारा बोल उठा:

"मैंने प्रस्ताव तो मान लिया है लेकिन मैं तुम्हारे पिता से कुछ और भी कहना चाहता हूँ। मैं जो कुछ तुम्हें कहूँगा, क्या तुम एकदम सही-सही अपने पिता से कह दोगे?"

"कृपया अपने मन की बात साफ़-साफ़ कह डालिये, आक़साक़ाल। मैं आपके शब्दों को हूबहू दुहराने का वादा करता हूँ।"

बायदालि पर गहरा प्रभाव पड़ा।

"अगर मैं किसी और को सन्देश देता, कानाफूसी और झूठी अफ़वाहों का अन्देशा रहता। तुमसे मैं उसी तरह कह सकता हूँ जैसे तुम्हारे पिता से कह रहा होऊँ।" वह फिर मौन हो विचारमग्न हो गया।

"क्या यह कल की ही बात नही," उसने कहना शुरू किया, "क़रक़रालीस्क में एक बड़े जमाकड़े में हम सहमत हुए थे, 'हमारे बीच शान्ति और दोस्ती बरक़रार रहे'? लेकिन अब हमारी शान्ति का क्या हश्र हो रहा है? अगर क़ोनानबाय इसी तरह मुझे तंग करता रहा तो उसकी शान्ति और दोस्ती में तथा मनमुटाव और दुश्मनी में किस तरह अन्तर रह पायेगा? मैंने उसका अपमान किस तरह किया है? जिगितेक ने तुम्हारे पिता के साथ किस तरह बुरा सलूक किया है? हमारे पूर्वज केंगिरबाय ने एक बार तुम्हारे पूर्वज इर्ग़िज़बाय को अपने बाद बी पद का उत्तराधिकारी घोषित किया था। क्या तुम सोचते हो, उनके अपनी कोई औलाद न थी? इस पर भी उन्होने कहा था, 'इर्ग़िज़बाय मुखिया बनेगा'। और अब क़ोनानबाय हम सब के ऊपर है – उसके पास सत्ता और यश है। वह हमारे

लोगों को अपने पैरों तले रौंदना बन्द क्यों नही करता? वह हमें कोई चैन नहीं लेने देता – वह लगातार उकसाता रहता है, 'तुमसे ठनी रहेगी। जब तक मेरी मर्ज़ी नही चलती, मैं तुम्हें चैन नही लेने दूँगा!' उसे जवाब चाहिए? तो फिर यह शब्द उस तक पहुँचा देना, 'अगर वह मुझे तंग करना बंद नहीं करता, उस पर मुसीबत आयेगी'। उससे कहना, यह सन्देश सिर्फ़ मेरी ओर से ही नहीं बल्कि सारे जिगितेक की ओर से सलाम है। जहाँ तक ज़मीन का सवाल है, ले ले वह! सिर्फ़ यही नहीं सारी की सारी!"

बायदालि ने अपना हाथ झटका।

कड़ाह के नीचे चटकती आग के अलावा ओताव निस्तब्ध-सा था। जिस बड़े कड़ाह में पनीर उबल रहा था, आग की लम्बी-लम्बी जिह्वा उसे चाटे जा रही थी। मट्ठा जम चुका था, ज़ोरदार उफ़ान उठ रहा था और तल में बड़े-बड़े बुलबुले उठ रहे थे। बायदालि बोल रहा था और आबाय मुग्ध दृष्टि से उबलते कड़ाह को देखे जा रहा था। दीर्घकालीन दमित क्रोध का विस्फोट! कड़ाह में पड़े पिण्ड की तरह यह चारों ओर जमा हो रहा था और एक ही बार में कई जगह फट पड़ने को तत्पर था। कुलिनशक़ की नाराज़गी, सुयून्दिक़ के कटु शब्द, बोजेय की घृणा। और अब – बायदालि ...

बायदालि के शब्द तो नियंत्रित थे लेकिन कितने गहरे ज़ख्मों की पीड़ा थी उन में! कितने कटु विचार वे जगा रहे थे – और पेचीदगियाँ! यह छोटा-सा सन्देश वर्षों की असहमति, मलामतों और पूर्णतया प्रमाणित किये जा सकनेवाले अकाट्य आरोपों का परिणाम था...

आबाय गंभीर बना था। वह नहीं चाहता था कि बायदालि यह जान सके, उसकी हमदर्दी उसके साथ है या नहीं और वह तत्परतापूर्वक उसकी बातें सुनने और उन्हें दिमाग़ में बैठा लेने में लगा था। शिकारी चाबुक और टोप उठाकर वह विदा होने ही वाला था जब बायदालि उसकी ओर मुख़ातिब हो गया और आबाय ने अपनी चीज़ें फिर रख दी।

बूढ़े लोग आत्मसंवरण में निपुण होते हैं और अपने गूढ़तम विचारों को भी मन की गुप्त, अनजान गहराइयों में दफ़न करके रखना जानते हैं, लेकिन उठती आँधी से प्रशान्त स्थिति में सहसा परिवर्तन, आत्म-नियंत्रण की यह शक्ति आबाय के लिए सर्वथा नयी थी। बायदालि जो अभी कुछ देर पहले ही फट पड़ने को था, सहसा शान्तिपूर्वक, कोमलता से बोला:

"तुम काराताय से अक्सर मिलते होगे? वह विलक्षण आदमी है! अफ़सोस की बात है वह निर्धन कोक्शे है। अगर वह इर्गिजबाय होता, बहुत ऊपर पहुँच गया होता।"

"एक दिन," पल भर चुप रहने के बाद उसने आगे कहा, "काराताय, बोजेय, बायसाल और मैं, सब बातें कर रहे थे जब हममे से किसी ने पूछा, 'हम जिन लोगों को जानते है, उनमें सबसे उदार कौन है?' बायसाल बनबिलाव की तरह गुजुर-गुजुर देखता रहा और काराताय ने जवाब दिया, 'कोनानबाय'। तुरत दूसरा सवाल पूछा गया: 'सबसे ज्यादा वाक्पटु कौन है?' फिर क़ाराताय ने जवाब दिया, 'क़ोनानबाय'। और हमने तीसरा सवाल किया, 'हम मे सर्वश्रेष्ठ पुरुष कौन है?' और तीसरी बार भी काराताय ने ही जवाब दिया, 'कोनानबाय!' इस पर बायसाल ने तकिये से अपना सिर उठाया और कहा, "ऐ, लोमड़! क्या बकवास कर रहे हो? कोनानबाय उदार है, कोनानबाय वाक्पटु है, कोनानबाय सर्वश्रेष्ठ है! तो फिर हम नाक चढ़ाकर उससे क्यों झगड़ते रहते है?' इस पर काराताय ने मुस्तैदी से जवाब दिया, 'कोनानबाय के खोटेपन की किसे परवाह है? उनसे हमे क्या परेशानी? तनिक भी नही। उसमे सारी ख़ूबियाँ है, सिर्फ़ एक को छोड़कर—सदयता! इसी कारण हम में झगड़ा बना रहता है'।" बायदालि ने तीक्ष्णता से आबाय की ओर देखा। "मुझे लगता है, तुम उन लोगों मे से हो जो शब्दों की क़ीमत जानते है। शायद तुम्हारे पिता को हम लोगो की उस बातचीत के बारे मे कभी मालूम नही हो पाया। उन्हे इसके बारे मे बता देना। क़ाराताय को एकाधिक बार से ज्यादा उनके अत्याचारो को सहना पड़ा है—कई बार! और दिन-ब-दिन जिगितेक भी देखने और समझने लगे है कि वह किस तरह का आदमी है। यह स्पष्ट है 'मुआफ' शब्द उसके मरने के दिन तक उसके मुँह से नही सुना जा सकेगा।"

बायदालि मौन हो गया।

लौटते समय आबाय की कही भी रुकने की कोई इच्छा न थी। जो कुछ उसने सुना था, वह असह्य तो था ही, शिक्षाप्रद भी था।

"आओ, हम घुड़दौड़ करे," अभी वे आऊल से बाहर आये ही थे कि आबाय ने सुझाव दिया।

क़ाराबास को ऐसे खेल एकदम पसन्द न थे, लेकिन हर हालत मे

उन्हें शाम होने से पहले क़ाराशोक़ि पहुँचने के लिए जल्दी करनी थी और फिर उसकी काली घोड़ी किसी भी तरह आबाय के अयमनदाय से घटिया न थी।

"तो फिर ठीक है, हो जाये!" और एड़ लगाकर वह आगे बढ़ गया।

काफ़ी देर तक वे ज़ोरदार घुड़सवारी करते रहे, कभी कोई आगे बढ़ जाता, कभी कोई, लेकिन दोनों हार नहीं मान रहे थे।

एक बार आगे बढ़े जाने पर क़ाराबास अपने घोड़े की चाल धीमी कर देना चाहता, लेकिन तभी आबाय अपने अयमनदाय पर उसके बराबर आ पहुँचता और चिल्ला पड़ता, "आगे बढ़ो, आगे! नहीं तो मैं आगे बढ़ जाऊँगा!"

"बायदालि ने इसकी ज्वाली भड़का दी है, अब इस पर कोई नियंत्रण नहीं!" क़ाराबास सोच रहा था।

उनके झाग-झाग होते घोड़े ठीक सूर्यास्त से पहले क़ाराशोक़ि पहुँचे।

गाँव से परे एक पहाड़ी टीला था और आबाय ने अपने पिता को मायबासार के साथ वहाँ बैठे देखा। ज़ीन से छलांग लगाकर नीचे उतरकर घोड़े की रास क़ाराबास की ओर फेंक वह तेज़ी से पिता की ओर बढ़ गया।

क़ोनानबाय ने तुरंत भाँप लिया, उसका बेटा रास्ते भर सरपट घोड़ा दौड़ाते आया है। क़ुम्मैत ज़ोर-ज़ोर से हाँफ़ रहा था, उसकी बग़लियाँ फूल-पिचक रही थीं—और क़ोनानबाय की अनुभवी आँख के लिए यह काफ़ी था।

लेकिन इसकी उसे कोई चिन्ता न थी। क़ोनानबाय तंग दिल न था और उसने अपने बच्चों पर कभी भी ऐसी झिड़कियों की वर्षा नहीं की थी: "अब तुमने घोड़े का सत्यानाश कर दिया।" अगर उनके घोड़े लंगड़े-लूल्हे हो जाते या मर भी जाते तो उसे कोई शिकायत न होती। चाहे लोग कुछ भी कहते रहें, नौजवान तेज़ घुड़सवारी करते ही रहेंगे।

क़ोनानबाय की दिलचस्पी किसी और चीज़ में थी—आबाय घर नहीं गया था बल्कि सीधे टीले पर अपने पिता के पास आया था। क़ोनानबाय अपने बेटे की ओर तत्परता से देख रहा था। नौजवान की आँखें चमक रही थीं, कपोल दहक रहे थे और नासिका फूली हुई थी। क्या अद्भुत परिवर्तन था! यह सामान्य रूप से शान्त और ख़ामोश आबाय न था।

"माजरा क्या है? तुम इतने उत्तेजित क्यों हो? क्या हुआ, मुझे बताओ?" आबाय के क़रीब आने पर उसने पूछा।

उसकी मन:स्थिति को उसके पिता ने कितनी अच्छी तरह समझा था, यह देखकर आबाय को आश्चर्य हुआ। आबाय बैठ गया और बायदालि के साथ हुई बातचीत शब्दश: सुनाने लगा।

बोलते समय आबाय चुपके से अपने पिता की ओर भी देखे जा रहा था। पहले तो क़ोनानबाय काफ़ी संयत प्रतीत हुआ, लेकिन "हम जिगितेक लोगों ने किस तरह अपमान किया है?"—इन शब्दों पर उसकी त्योरी चढ़ गयी और अपने बेटे की ओर इस तरह देखा मानो हैरान हो उठा हो: आबाय इस सब के बारे में क्या सोचता होगा।

अपने पिता की एकटक दृष्टि से आबाय तनिक भी विचलित नहीं हुआ और उसने जिगितेक के आक्रोश को न सिर्फ़ पूरी तरह सुना डाला, बल्कि अपने कुछ निष्कर्ष भी जोड़ दिये। बाप को बेटे का सामना करने का क्षण आ पहुँचा था।

आबाय ने घुड़कियों से भरे जिगितेक के सलाम से अपनी बात शुरू की। क़ोनानबाय अब भी मौन था। फिर आबाय ने क़ाराताय के शब्दों से सम्बन्धित बायदालि की कहानी सुनायी। "अब तो उन्हें बोलना ही पड़ेगा," आबाय ने सोचा। "लेकिन वह कहेंगे क्या?" बेताबी से वह प्रतीक्षा करता रहा।

क़ोनानबाय ने उसके विचारों को भाँप लिया—वह जानता था, उसे न तो क़ाराताय को और न ही बायदालि को बल्कि वहाँ बैठे अपने बेटे को जवाब देना था। उसे केवल इसलिए जवाब देना था जिससे उसका बेटा अपने पिता के दुश्मनों की सारता समझ ले।

"क़ाराताय," उसने कहा, "अनुभवी घुड़सवार है। उसे मालूम है कब तेज़ और कब धीमे चलना चाहिए*। शायद वह ठीक कहता है। लेकिन मुझे लगता है, किसी आदमी में बहुत से गुण होने पर बुराइयाँ निकल आ सकती हैं। मेरी राय में अडिगता और लक्ष्य-प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशीलता किसी आदमी के सर्वश्रेष्ठ गुण हैं। जब मैं कुछ शुरू

---

* इसका मोटा-मोटी मतलब है: "वह थोड़ी-बहुत जानकारी रखता है।"—सं०

करता हूँ, दृढ़ता से अन्त तक उसके लिए प्रयत्नशील रहता हूँ। यह संभव है, मुझसे ग़लतियाँ इसी वजह से हुई हों।"

वह पल भर मौन बैठा रहा, उसके चेहरे पर रंग आता-जाता रहा।

"लेकिन आदमी तो ख़ुदा का ग़ुलाम है। और ग़ुलाम में न जाने कितने दोष ढूँढ़े जा सकते हैं?" उसने अत्यधिक शांतिपूर्वक कहा।

और आबाय को हठात् महसूस हुआ, उसका पिता वास्तव में बहुत ऊँचाईवाला आदमी था। चाहे अप्रत्यक्ष रूप से ही सही, उसने अपना ग़लत होना स्वीकार तो कर लिया था। इस मामले में वह बायदालि की तरह नहीं था जो दूसरों पर दोषारोपण तो तुरंत कर सकता था, लेकिन अपनी ग़लतियों को वह आसानी से नही मानता। उसका पिता अपनी वाक्-पटुता दिखाने के लिए यह सब नहीं बोला था: उसके शब्द सारगर्भित थे। जिस तरह टेढ़ी-मेढ़ी पहाड़ियों में रास्ता पाना कठिन हो जाता है, उसी तरह क़ोनानबाय के हृदय को जान पाना कठिन था।

पिता के अपने लक्ष्य थे, अपना रास्ता था—और उसके बेटे का अपना। अपने उन्हीं निराशाजनक उलझन भरे ख़्यालों में खोया आबाय घर चला गया।

३

जिदेबाय लौटने से पहले आबाय ने पिता से पूछा, इस वर्ष हम गर्मी कहाँ व्यतीत करेंगे। पता चला, सबसे पहले सफ़र पर रवाना विशाल आऊल होगा, लेकिन उस दिशा की ओर नही जिधर वह आम तौर से जाया करता था। इस बार जयलाव की स्थापना दर्रे के पार, बकानास घाटी में की जानेवाली थी।

बकानास और बायकोश्क़ार तोबिक्ति चरागाहों की बड़ी नदियाँ थीं। पहले क़ोनानबाय के आऊल गर्मियों में बायकोश्क़ार की ओर जाया करते थे जबकि बकानास पर कोक्शे लोगों का क़ब्ज़ा रहा करता था। लेकिन अब क़ोनानबाय का क़ाराताय से झगड़ा हो गया था और क़ोनानबाय ने उसके चरागाहों पर क़ब्ज़ा कर लेना तय कर लिया था।

इस मामले मे दूसरी बातो पर भी गौर किया गया था। बोकेशी, जिगितेक और कोक्शे– तीनो कबीने एक साथ गर्मी बिताने की तैयारी कर रहे थे। आबाय द्वारा प्रेषित बायदालि की धमकी निरर्थक न थी और यह स्पष्ट था, वह अपने इर्द-गिर्द समान-विचारोवाले लोगो को इकट्ठा कर रहा था। कोनानबाय अपने कुछ आऊलो को जिगितेक के इलाके मे पैठा देना चाहता था – तब जिगितेक की हर कूट चाल, उनकी हरेक गुप्त घात की बात उसके कानो मे तुरत पहुँच जाया करेगी।

मुख्य ओताव को सबसे पहले रवाना करना सुविधाजनक भी था, क्योकि जेरे के खेमे को सब जानते थे और सारे तोबिक्ति उसके प्रति श्रद्धा भी रखते थे। इसके अलावा, उलजान आतिथ्यपरायण, मुक्त-हृदया और उदारमना थी – कुन्के से एकदम ही भिन्न। अपने मित्रतापूर्ण व्यवहार से वह सबको आकृष्ट कर लेती थी, कठोर दिल को भी नरम बना देना और दुश्मनी खत्म करना जानती थी। इन सब बातो पर गौर करते हुए कोनानबाय ने मुख्य ओताव को पहाडी दर्रे के ठीक पार बकानास नामक स्थान की ओर रवाना होने और बोकेशी के पास-पास खेमे लगाने का आदेश दिया।

आबाय अपने पिता के गुप्त विचारो को नही भॉप सका। वह इतना ही जानता था, दूसरे आऊलो के बिना अकेले किसी आऊल का सफर करना कही कठिन होता है। फिर भी उसे बहुत खुशी थी क्योकि काराऊल के किनारे-किनारे बकानास की ओर आगे बढते रहने पर वे सुयून्दिक के आऊल के करीब पहुँच जायेगे। वह बहुत मायूस हो गया था क्योकि उसे डर था अब उसकी राह कभी तोगजान की राह से नही मिल पायेगी और वह उसके करीब तक भी कभी नही पहुँच पायेगा। लेकिन अब जीवन की अद्भुत राहे उसे फिर उसके आऊल की ओर ले जा रही थी।

पिछले कुछ दिनो से तोगजान के बारे मे उसके खयालात इतने गमगीन हो उठे थे कि जब उसने अपने पिता के आदेश सुने तो वह अपनी खुशी छुपा नही सका और उसके गाल बुरी तरह लाल हो उठे। कोनानबाय ने इसे महसूस तो किया लेकिन कहा कुछ भी नही। आबाय ने इस विचित्र यात्रा के प्रति कोई आपत्ति प्रकट नही की लेकिन अपनी राय जरूर दे दी कि किसी आऊल का अकेले प्रयाण करना ठीक भी रहेगा या नही।

लेकिन कोनानबाय इन सब बातो पर पहले ही अच्छी तरह गौर कर चुका था।

"तुम अकेले नही होगे। मैने कम से कम दस आऊलों को तुम्हारे पीछे-पीछे कूच करने का आदेश दिया है," उसने जवाब दिया।

विस्तारपूर्वक विचार-विमर्श करने के बाद आबाय जिदेबाय लौट आया।

वह तोगजान से दुबारा मिल पायेगा। वह उसे देख पायेगा और एक बार नही, कई बार। सौभाग्य की अनमोल, अप्रत्याशित देन! अब उसके ख़यालो मे बस तोग़जान ही विचर रही थी, उसके दिमाग़ में उसी की झलकियाँ थी। "मेरी एकमात्र! मेरी आशा!" वह बार-बार दुहराये जा रहा था। अयमन्दाय के हर उठते पग के साथ तालमेल बैठाते हुए शब्द बार-बार अपने-आप आ रहे थे। ऐसे क्षण फिर नही आयेगे। यह दहकती, बौरायी, पंखो पर उड़ी जाती जवानी थी!

आबाय ने पूरी राह तेज़ घुड़सवारी की। इससे पहले उसे यह राह कभी इतनी छोटी नही लगी थी, वह अपनी माँ के आऊल कैसे पहुँच गया, उसे इसका भी पता नही चला।

जिदेबाय मे काफ़ी पहले से सब लोग ओतावों मे रहने लगे थे। उस साल क़ाराऊल नदी के तटबंध दूर तक डूब गये थे और आस-पास के चरागाह सान्द्र घास से ढंके थे। आऊल के असंख्य श्वेत ओताव इतने उल्लासमय प्रतीत हो रहे थे मानो वे दीर्घ प्रतीक्षित, अभिनन्दनीय अतिथियो की प्रतीक्षा कर रहे हो। इसके चारों ओर भेड़ों के बाड़े लगे थे, मेमने अपनी माताओ के लिए मे-मे कर रहे थे और कुत्ते भौक रहे थे। कामों मे लगे, शोर-गुल करते चारों ओर लोग ही लोग नज़र आ रहे थे। आबाय ने मुख्य ओताव के सामने घोड़ा रोका, अपनी माताओ का अभिवादन किया और उन्हे अपने पिता के आदेश सुना दिये। जयलाव की भूमि इस वर्ष के शुरू में ही घासों से भर गयी थी और चिंगीज़ पहाड़ियो मे अवस्थित आऊलो को पादपर्वतों की ओर जाने की ज़हमत नही उठानी पड़ी थी, बल्कि वे तुरंत ही ग्रीष्मकालीन चरागाहो की ओर कूच कर गये थे। चुनाँचे, मुख्य ओताव को भी निश्चित रूप से पीछे नही रहना चाहिए।

उलजान सहमत थी। उसकी एकमात्र आपत्ति थी, अभी तुरंत कूच करना असंभव था। रवाना होने से पहले जाड़े के घरो को व्यवस्थित करने और सामानों को बाँधने के लिए उसे पाँच या छह दिनो की जरूरत थी।

आबाय चिन्तित था। कहीं सुयून्दिक़ का आऊल पहले ही पहाड़ियों के पार चला गया और बहुत आगे बढ़ गया तो उन्हें पकड़ पाना असंभव होगा! और दोस्तों के आऊलों के साथ सफ़र करना कितना आनन्ददायी था! दिन-रात साथ ही बढ़ना और साथ ही ठहरना! जयलाव सफ़र के दौरान छोटे ओतावों, झोंपड़ों और हल्के तम्बुओं में रहने का रिवाज था। अगर ऐसे में कोई मन-मीत हो तो उससे चाँदनी रात में किसी तम्बू में मिला जा सकता है! बड़ी उम्र के नौजवानों से आबाय ने प्राय: ऐसी बातें सुनी थी।

लेकिन उसकी माँ ने अटल फ़ैसला कर लिया था। घर के मामलों में उलजान हमेशा अपने ही मन की करती थी, क़ोनानबाय की भी एक न चलती। न चाहते हुए भी आबाय को सहमत होना पड़ा।

रात्रि-भोजन के समय बिना कुछ छुपाये, जो कुछ उसने नन्ही क़मशत के बारे में सुना था, विस्तारपूर्वक ज़ेरे और उलजान को बता दिया। चाहे वे रोयें या शोक मनायें, अब वह उस नन्ही लड़की की दुर्दशा छुपा नहीं सकता था।

ज़ेरे ने ठंडी आह भरकर क़ोनानबाय पर ग़ुस्से भरी मलामतों की बौछार शुरू कर दी। उलजान कुछ देर तक मौन बैठी रही फिर आबाय से बोली:

"इस बारे में आयग़िज़ से कुछ मत कहना। उसका दिल पहले ही टूट चुका है। आज सवेरे ही उसने हमें बताया है कि सपने में उसने क़मशत को आग में गिरते देखा था।"

"सुयून्दिक़ की पत्नी वास्तव में माँ है," पल भर मौन रहने के बाद उसने आगे कहा, "दयालु और करुणामय। वह अकारण ऐसी बातें नहीं कहेगी। चिंगीज़ पहुँचने के बाद किसी प्रौढ़ आदमी को साथ लेकर क़मशत को देखने चले जाना। जब हम पूरी जानकारी हासिल कर लेंगे, तुम्हारे अब्बा से बात करेंगे। फिर हम आयग़िज़ को बता सकते है।"

यह बात सबने मान ली।

दस दिन बाद क़ोनानबाय का विशाल आऊल पहाड़ी पार कर जिगितेक व बोकेंशी के पड़ोस में जा बसा।

ठीक क़ोनानबाय के पूर्वकथन के अनुसार कोई दस आऊलों ने यात्रा की थी। सफ़र कर रहे जिगितेक और बोकेंशी को पकड़ पाना आख़िरी दिन तक असंभव रहा। वे चिगीज़ पाद-पर्वतों से पहले ही जा चुके थे।

ज़ाहिरी तौर पर विशाल आऊल ने दूसरों के मुक़ाबले कही धीमी गति से यात्रा की थी।

विशाल आऊल के स्वागत के प्रतीक स्वरूप ज़ेरे को आगमन के पहले दिन से ही गोश्त और क़िमिज़ के रूप में परम्परागत उपहार मिलने शुरू हो गये। विशाल ओताव में औरतों के झुंड के झुंड आते रहे – किसी ने भी वृद्धा ज़ेरे को नज़र-अन्दाज़ नही किया था। क़ोनानबाय के साथ अपने झगड़ों के बावजूद बोजेय, बायदालि, सुगीर और सुयून्दिक़ को छोड़कर आस-पास के समस्त स्वजन अपना सम्मान प्रकट करने आये थे। ज़ेरे के पास आनेवाले हर किसी का गर्मजोशी से स्वागत किया गया और जो नहीं आ पाये, उनके नाम चतुराई से ज़बान पर नहीं लाये गये।

अपने आगमन के दिन ही आबाय ग़बितख़ान के साथ बोजेय के आऊल चला गया। उसका आऊल पश्चिमवर्ती हरी-भरी पहाड़ियों के उस पार, ताज़ा जलवाली एक झील के किनारे रह रहा था। वे दोपहर के भोजन के समय वहाँ पहुँचे। पहली नज़र में ही आबाय ने समझ लिया, यह कोई समृद्ध आऊल न था – वहाँ सिर्फ़ दो या तीन ही सुन्दर नये ओताव थे, बाक़ी जरा-जर्जर हो गये थे।

बोजेय के ओताव के पास आबाय और ग़बितख़ान घोड़ों से उतरे। वहाँ पता चला, ओताव का मालिक झील के पार एक स्वजन से मिलने गया हुआ था।

घोड़ों को बाँधकर जब वे तम्बू के पास पहुँचे, उन्हें एक अशक्त क्रन्दन की आवाज़ सुनाई दी – ऐसी करुण आवाज़ जो सिर्फ़ किसी बीमार बच्चे की ही हो सकती थी।

आबाय ने क़मशत की आवाज़ पहचान ली और उसका दिल भारी हो उठा। तम्बू का चक्कर लगाते हुए जब वे प्रवेशद्वार के पास पहुँचे, उन्हें बच्ची को कटुतापूर्वक डाँटती हुई एक कठोर आवाज़ सुनाई दी। यह बोजेय की बायबिशे थी और उसका हर शब्द आबाय को दर्दनाक प्रहार-सा लगा।

"अब पें-पें न कर! बेमतलब क्यों चिंचिया रही है, नीच, माँ-बाप की छोड़ी औलाद!"

पर्दा हटाकर आबाय ग़बितख़ान के साथ अन्दर गया। कुशादा ओताव बाहर जैसा न दिखाई देता था, उसके मुक़ाबले कहीं ज़्यादा समृद्ध था

ग्रौर कई बहुमूल्य चीजे थी, कीमती नमदे ग्रौर पर्दे। लेकिन हर चीज ग्रस्त-व्यस्त थी. फ़र्श साफ नही किया गया था, बिस्तरे लगाये नही गये थे ग्रौर चीजे हर कही, इधर-उधर बिखरी थी। बिछावन के पास चरखे के सामने बडे से कलछौहे चेहरेवाली एक ग्रौरत बैठी थी। उसकी फड़क-ती नासिका-पंक्ति ग्रौर होठो की लगातार हरकत उसके कर्कश स्वभाव का सकेत दे रही थी।

बिछावन की दूसरी ग्रोर कशीदाकारी करती बोजेय की दोनो बेटियाँ फ़र्श पर बैठी थी; दोनो ग्रधिपक्व कुमारियाँ कुरूप ग्रौर भोड़ी थी ग्रौर ग्रपनी माँ की तरह ही बद-दिमाग लग रही थी।

क्रन्दन की ग्रावाज़ ग्रब भी ग्रा रही थी।

हाँ, यह कमशत ही थी। वह एक फटी-चिटी चटाई पर पड़ी थी ग्रौर उसके सिर के नीचे तकिये की जगह एक पुराने कोट की बाँह रखी थी। उसका रुदन क्षीण ग्रौर डर से भरा था—ग्रपने ग्रास-पास की निर्दयता ग्रौर निष्ठुरता पर ग्रार्तनाद करता हुग्रा।

किसी समय की लाल-लाल गाल ग्रौर मुटल्ली कमशत दुबली ग्रौर पीली पड़ गयी थी मानो लम्बी बीमारी से उठी हो ग्रौर उसके नन्हे-नन्हे हाथ-पाँव ग्रविश्वसनीय रूप से क्षीण पड़ गये थे। उसके चेहरे से बेबस पीड़ा का सकेत मिल रहा था, उसके गालो मे गड्ढे पड गये थे। उसके सूखे-पिचके चेहरे पर मात्र बरौनियाँ ही उभरी दिखाई दे रही थी—वह ज़बर्दस्त शोक या उपवास झेलनेवाली किसी वयस्का की तरह दिखाई दे रही थी। वह एकदम बेजान, मार्मिक रूप से परित्यक्त बच्ची लग रही थी।

ग्राबाय ग्रौर गबितखान तेज़ी से उसकी ग्रोर बढे, लेकिन कमशत उन्हे पहचान नही पायी ग्रौर भय से चेहरा घुमा लिया।

गबितख़ान दहल उठा ग्रौर खुद पर काबू नही रख सका।

"हाय, मेरी ग्रसहाय लाड़ली। तूने कितना दुख उठाया है, मेरी बेगुनाह बच्ची," फूटते ग्राँसुग्रो के साथ वह चीख पडा।

ग्राबाय स्याह पड़ गया ग्रौर गुस्से से काँप उठा।

ग्रौरतो ने जल्दी-जल्दी ऊलजलूल, बेमतलब सफाई देनी शुरू कर दी।

"ग्रौर सब ठीक है, यही बेचारी ठीक नही रहती—उसके पेट में दर्द रहता है," बायबिशे ने शहद भरी ग्रावाज़ मे कहना शुरू किया।

"'अगर तुम्हारे पेट मे दर्द हो तो मुह मे कुछ भी नही जाना चाहिए'! लेकिन क्या वह समझती है? नही! जरा सी अच्छी हुई, बस सब कुछ झपट लेती है! भला वह ऐसे कभी ठीक हो सकती है! खुद तबीयत खराब कर लेती है," आकुलता प्रदर्शित करने की बेताबी मे दोनो कुमारियाँ कूजती आवाज मे बोल उठी।

आबाय के गले से आवाज नही फूटी। दहलीज पार करते जैसे ही उसकी नजर इन औरतो पर पडी, उसके हृदय पर तुषारपात हो गया था।

बोजेय की बीवी ने समोवर चढाने का आदेश दिया, लेकिन आबाय ने चाय पीने से इनकार कर दिया।

"हम नही पीयेंगे," उसने कहा। "हम जा रहे है।"

जब नन्ही कमशत बेबसी से तडप रही हो, कोई भला खाने की बात कैसे सोच सकता था! "हाय, मेरा अपना, एकदम अपना" किसी स्वजन के मरने पर इन्ही शब्दो से मृत्यु शोक मनाया जाता था। किसी स्वजन के मर जाने पर रोने से क्या लाभ! उसे तुरत तम्बू से बाहर आ जाना था नहीं तो बच्ची को अपनी बाँहो मे ले लेने से वह खुद को नही रोक पायेगा और फिर कभी उसे नही जाने देगा। "हाय मेरी लाचार, बेसहारा लाडली!" वह लगभग चीख-सा पडा।

बोजेय की बेटियो के झूठे शब्दो से मर्माहत आबाय उन पर आक्रोश से चीत्कार कर उठनेवाला था, उनपर अपना सारा गुस्सा निकाल देनेवाला था, लेकिन क्रोध के मारे उसका गला ही रुँध गया था। इन निष्ठुर प्राणियो से कुछ न कहना ही बेहतर था। अगर वह कुछ कहता तो निश्चित रूप से कमशत की शोचनीय स्थिति और भी बदतर हो जाती और हो सकता है, उसे मार ही डालते। वह कुछ नही कर सकता।

बायबिशे ने उसे एक प्याला किमिज दिया, लेकिन वह पी कैसे सकता है? उसने बिना छुये प्याला फर्श पर रख दिया। वह किस पर गुस्सा करे? वह किस पर आरोप लगा सकता हे या किसे दोष दे सकता है? क्या अकेले बोजेय का परिवार ही दोषी था? बेशक नही! ओताव मे बाहर आते हुए आबाय के दिमाग मे यही ख्याल उमड रहे थे।

वह इतना क्रुद्ध कभी नही हुआ था! अपने आऊल वह शाम होने से पहले पहुँच गया था, लेकिन क्रोध उसके दिल को अभी भी काटे डाल रहा था।

मुख्य ओताव और अतिथि ओताव के बीचवाले खंभे से एक ओर घोड़े के साथ क़ोनानबाय का दीर्घ स्कन्धवाला क़ुम्मैत बँधा था। दोनों के ज़ीन कसे थे। स्पष्ट रूप से उसका पिता अभी-अभी आया था। बहुत ही अच्छा! आबाय ने नन्ही क़मशत के मार्मिक क्रंदन का बोझ उसके साथ बँटाने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। वह ओताव के अन्दर आया और वहाँ निस्सन्देह क़ोनानबाय ही था। वह जुमाबाय के साथ यात्रा तय करके आया था।

आबाय के पीछे-पीछे ही आयग़िज़ ने ओताव में प्रवेश किया। उसके मातृ हृदय को किसी नये शोक का पूर्वाभास हो गया था। कोई दुर्निवार शक्ति उसे खींच लायी थी। उसे मालूम था, आबाय बोजेय के यहाँ गया था और अभी उन्होंने दहलीज़ पार ही किया था, उसने अनुनयपूर्वक कहा:

"आबाय-जान! क्या तुमने अपनी लाचार छोटी बहन के बारे में कुछ मालूम किया?"

उसके जवाब की प्रतीक्षा करती ज़ेरे और उलजान भी उसी की ओर देख रही थी।

आबाय ने अपने पिता को देखा। क़ोनानबाय आयग़िज़ को सर्द निगाहों से देखता, मौन बैठा था।

"मैंने अपनी आँखों से देखा है," किशोर आबाय ने कहा। "क़मशत बीमार है, मौत उसकी आँखों में फिर रही है। वह हम लोगों को नही पहचान सकी। वह अजनबियों, दुश्मनों के बीच पड़ी है... और क्या कहूँ?"

क़ोनानबाय ने उसपर एक अनिष्टकारी दृष्टि डाली लेकिन कुछ कहा नहीं।

औरतें धक से रह गयीं और रोने-कलपने लगीं।

आयग़िज़ पीली पड़ गयी। उसकी आँखें सजल हो उठीं।

"मेरी आँखों की रोशनी! माँ से बिछुड़ी मेरी नन्ही-मुन्नी, मेरी बदनसीब बच्ची!" वह बिलख पड़ी। "जिस दिन पैदा हुई, किसकी बददुआ लग गयी तुझे?"

न जाने चुप रहने के लिए आदेश देने अथवा शायद एक माँ की बददुआ से ख़ुद को बचाने के लिए क़ोनानबाय ने अपना हाथ झटका।

आयग़िज़ जो हमेशा उसके सामने काँपती रहती थी, तुरंत ही शान्त पड़ गयी। वह चुपके-चुपके रोती रही, उसकी घिग्घी बँध आयी थी।

“बन्द करो यह सब, नही तो पछताना पड़ेगा!” वह उस पर चीख़ पड़ा। “जहन्नुम में जाओ तुम और तुम्हारा गुस्सा!”

उसे जवाब देने की हिम्मत न हुई। लेकिन आबाय की बग़ल में बैठी उलजान ने किसी तरह आँसुओं पर क़ाबू पाकर पूछा:

“इसका क्या मतलब है? शोक से मर जाओ लेकिन दर्द पर कराहो मत? क्या यही चाहते हैं आप?” हताशा से उसने आगे कहा, “क्या आप समझते हैं हमारा दुख आज ही उमड़ा है? हम काफ़ी दिनों से क़मशत के लिए रोते रहे हैं। लेकिन हम किससे शिकवा करे? कौन समझता इसे?”

क़ोनानबाय ने उसे बीच में चुप कर दिया लेकिन अब ज़ेरे भड़क उठी थी।

“मेरी बहुओं को भयभीत करने की कोशिश न करो!” उसने अधिकारपूर्ण स्वर में कहा। फ़र्श पर अपने हाथ टिकाये, वह आग-बबूला हुई बैठी थी और अपने बेटे की आँखों में देख रही थी। आबाय ने अपनी दादी का इतना भयंकर रूप कभी नही देखा था।

“अगर वे अपना दुख-सुख तुमसे न कहे तो किस से कहे?” उसने ज़ोर डालते हुए कहा। “अगर तुम निष्ठुर ही बनना चाहते हो तो अपने दुश्मनों के साथ बनो! अपने दोस्तों, अपने परिवारवालों के साथ निष्ठुरता करने से तुम्हें क्या लाभ होगा? तुम भले ही ख़ुद को धरती पर ख़ुदा समझो लेकिन तुम आसमान से नही टपक पड़े थे। तुम आम इनसान की संतान हो और तुम्हारा जन्म किसी माँ के पेट से हुआ है: यह मै ही थी जिसने तुम्हें जन्म दिया था! वे भी माँ है और तुम्हारे साथ अपना दुख बँटाना चाहती है। तुमने मारने-काटने के लिए कमशत को किसी को सौप दिया है और हमारे पास दुख और निराशा ही बच रही है। अपना गर्जन-तर्जन बन्द करो—तसल्ली मिलने, भूल को सुधारने के कुछ उपाय करो! उस अनाथ बच्ची को उसे सतानेवालो के बीच से निकालो!”

ज़ेरे के बोलने का लहजा आदेशात्मक था।

सब चुप थे। आवेश के मारे क़ोनानबाय से भी बोला नही जा रहा था। पिछले बहुत सालो से किसी ने उससे इस तरह बोलने की हिम्मत नहीं की थी। लेकिन उसकी माँ की आवाज़ उसके चेतन की, न्याय की आवाज़ थी और उसके शब्द दग्धकारी थे।

“मैं क्या कर सकता हूँ? क़बीलों के बुज़ुर्गो का ऐसा ही फ़ैसला था!” उसने ख़ुद को न्यायसंगत ठहराने की कोशिश की।

ग्राबाय उस घृणित फैसले के बारे मे काफी पहले सोच चुका था।

"ग्रौर यह कितना निर्मम, निष्ठुर ग्रौर ग्रमानवीय फैसला था!" वह सहसा फट पडा। "लोगो मे सुलह कराने का यह भी कोई तरीका है? क्या ऐसे फैसले से किसी को शान्ति मिल सकती है? यह दिल मे कडवाहट ही पैदा करेगा। यह माताएँ जिगितेक के बारे मे क्या सोचेगी ग्रौर समझेगी जिन्होने जबर्दस्ती इनसे बच्चे को छीन लिया है? ऐसी स्थिति मे जब जिगितेक की माँग पशुग्रो की थी, बदले मे उन्हे एक बच्चा दे दिया गया जिसके लालन-पालन के लिए चौकसी ग्रौर ध्यान देने की ग्रावश्यकता होती है, शाति की क्या बात चल सकती है? कमशत की जान से पाँच घोडियो की कीमत ज्यादा ग्राँकनेवाले वे ग्रमानवीय ग्रौर निष्ठुर हो सकते है। लेकिन हमे क्या हो गया था जो हमने तुच्छ पिल्ले की तरह एक बेसहारे बच्चे को उन्हे सौप दिया!"

उसका पिता बडे ध्यान से सुन रहा था। यह एक नयी बात थी। इससे पहले किसी ने कभी ऐसे विचार प्रकट नही किये थे। लेकिन कोई इस तरह दलील नही दे सकता ग्राबाय सदियो पुरानी राह पर नही बल्कि किसी ग्रपनी ही ग्रनजान राह पर चल रहा था।

"ऐ, मेरे बेटे, मेरे छोटे! तुम्हारा हृदय तो ठीक कहता है लेकिन तुम ग्रपने लोगो के रिवाजो को भूल रहे हो," उसने जोर से कहा।

उसका लहजा भिन्न था, ग्रब वह ग्रादेशात्मक नही था—वह उस समस्या पर विचार-विमर्श करने का इच्छुक प्रतीत हो रहा था जो उन सब लोगो को सता रही थी। हालाकि उसने ग्राबाय को "छोटा" कहा था, यह स्पष्ट था, वह ग्रपने बेटे के शब्दो को वजन दे रहा था। वह ग्रायगिज ग्रौर उलजान को भी तरह दे रहा था, उसके उत्तर से यह भी जाहिर हो रहा था।

"हमारे पूर्वजो के रिवाज हमे कुछ ग्रौर ही सिखाते है," कुछ देर रुकने के बाद उसने कहा। "झगडे पडे लोगो के बीच सुलह कराने के लिए शत्रुतापूर्ण परिवारो के बीच विवाह सम्बन्ध कायम कराने का रिवाज है। लडकी भेट-स्वरूप, गुलाम ग्रौर बधक के रूप मे दी जाती है। लेकिन हमने कमशत को ग्रपनी बेटी की तरह पालने के लिए बोजेय को दिया है। क्या इसका मतलब यह होता है कि हमने उसे उस लडकी को यन्त्रणा देने के लिए सौपा है? यह पूरी तरह बोजेय पर निर्भर करता है। ग्रगर

उसमें तनिक भी समझ है, वह मेरी बच्ची की देखभाल अपनी बच्ची की तरह क्यो नही करता? अगर वह उसके साथ अजनबियो-सा व्यवहार करता है तो इसका मतलब है, वह हमारे बीच हुए समझौते के नियमो का उल्लंघन कर रहा है और हम लोगो के प्रति अपने कर्त्तव्य के पालन में असफल रहा है। वह मुझसे नफ़रत कर सकता है लेकिन क्या वह मेरी बच्ची को जिसे मैने यूँ ही पट्टियोवाले कपडो मे उठाकर उसे सौप दिया था, किसी भी तरह कसूरवार समझ सकता है? अगर वह ऐसी मामूली सी बात भी अपने परिवार के दिमाग मे नही बैठा सकता तो उन्हे चुल्लू भर पानी मे डूब जाना ठीक होगा।

इन शब्दों से क़ोनानबाय ने बोजेय को परास्त कर दिया था।

बोजेय के यहाँ जाने के बाद आबाय के हृदय मे पहली बार जिगितेक नेता के प्रति तीव्र आक्रोश पैदा हो गया था। अब उसके प्रति उसमे तनिक भी विश्वास न था। "अगर उसकी पत्नी इतनी अमानुषिक है, वह उसे उसके कर्त्तव्य क्यो नही जताता?" रास्ते मे लौटते समय आबाय ने ग़बितख़ान से पूछा।

क़ोनानबाय ने फ़ैसला कर लिया और दूसरे ही दिन वृद्ध जुमाबाय ने बोजेय के आऊल मे क़ोनानबाय का सलाम पेश किया। आयगिज ने भी एक वृद्ध पड़ोसन को बोजेय की बायबिशे के पास भेजा था:

"उससे कहना, वह मेरी बच्ची को मारे डाल रही है। क्या कोई भी ठीक दिमाग और विवेकवाली औरत ऐसा करेगी?"

दुखी और खिन्न जुमाबाय बोजेय के यहाँ से लौट आया। उसने बताया, बोजेय बायदालि और तुसिप के साथ बैठा था। अपनी बायबिशे से आयगिज की शिकायत मालूम होने पर बोजेय ने अपने दोस्तो और परिवारवालो से सलाह-मशविरा किया था और कोनानबाय को इस तरह का कठोर उत्तर भेजा था, "क़ोनानबाय ने एक बार मेरी इज्ज़त मिट्टी मे मिला दी थी। क्या वह सोचता है, मेरी क्षतिपूर्त्ति हो गयी है? जख्म भर गया है? अगर उसके साथ ऐसा होता तो मुझे क्या पीड़ा हुई होती? जब तक उसकी छोटी से छोटी इच्छा भी पूरी नही हो जाती, चाहे हम खाक मे मिल जाये, वह ऊफ़ तक नही करता! कोनानबाय का क्या नुकसान हुआ है? उसके भण्डार का एक नन्हा-सा कण ही तो। वह मुझे अकेला छोड़ दे—मेरे सब्र का इम्तहान लेने की कोशिश न करे!"

बस इतना ही बोजेय को जुमाबाय से कहना था – पुरानी नफरत से भरे अल्फाज। ऐसा प्रतीत हो रहा था, लडाई और प्रतिकार ने फिर अपना सिर उठा लिया हो और चीख-चीखकर कह रहे हों, "सावधान, हम अभी जिन्दा है!" बोजेय के उत्तर से उसकी अन्तिम आशा भी खत्म हो गयी। आबाय अत्यन्त व्याकुल हो उठा।

उनकी सदयता कहाँ गयी? स्पष्ट रूप से बायबिशे और उसकी बेटियो मे तो दया नाममात्र को भी न थी – वे मूर्ख और नादान थी। लेकिन खुद बोजेय को क्या हो गया? घुला-घुलाकर मौत की सजा उसने एक बच्ची को कैसे दे दी है? ऐसी निष्ठुरता – और वह भी जिसके लिए कोई प्रायश्चित नही! क्या उसकी वह मानवीयता, सज्जनता और दयालुता सिर्फ ऊपरी थी जो उसने बिना प्रतिकार का प्रयास किये, मार सहन करते हुए दिखायी थी। तो फिर वह कोनानबाय से किस तरह बेहतर था जिस पर उसने निष्ठुरता का दोषारोपण किया था?

नजर ऊपर उठाये बिना कोनानबाय ने बोजेय का जवाब सुना। उसका चेहरा स्याह पड गया था और वह कठिनाई से साँस ले पा रहा था। लेकिन स्वाभाविक तीक्ष्ण वाक्कृपणता ने उसका साथ नही छोड़ा। सिर्फ आबाय से उसने कटुतापूर्वक कहा

"उसके लिए मेरी बेटी कोई इनसान नही बल्कि भेडिये का मेमना है। उसकी नफरत कब्र मे ही उसके साथ खत्म होगी। अगर मेरा कोई बेटा उसके हाथ पड जाये तो वह या तो उसकी आखे निकाल लेगा या उसे दो टुकडे कर देगा! इसमे कोई सन्देह नही। फिर ठीक है। मै इस स्थिति को स्वीकार करता हूँ। चोट करने से पहले मै इन्तजार करूँगा।"

कुछ ही दिनो मे एक भयानक खबर मिली – कमशत मर गयी।

उसकी मौत सुबह मे हुई थी और उसी दिन दोपहर मे उसे दफन कर दिया गया था। उसकी मौत की खबर किसी को नही दी गयी थी – न तो कोनानबाय के आऊल को और न ही उसकी माँ आयगिज को। उलजान के आऊलवालो ने सिर्फ गुजर रहे एक चरवाहे से सुना था।

सभी उदास और कडवाहट से भरे थे – सबसे ज्यादा जेरे और आबाय। ऐसी निरर्थक पाशविक नृशसता का क्या औचित्य हो सकता था? कमशत बेचारी एक छोटी बच्ची ही तो थी। जब जीवन का मूल – इसानियत – ही खतरे मे हो तो वैमनस्य और दुश्मनी को कोई स्थान नही मिलना चाहिए।

बोजेय ने स्पष्ट रूप से इसे कुछ हद तक महसूस कर लिया था – जब क़मशत मर गयी, उसने अपनी बीवी से आथगिज के पास सान्त्वना भेज देने का आदेश दिया था। लेकिन बायदालि ने उसे प्रभावित कर दिया था कि यह ज़रूरी नही। फलतः, उन्होने बच्ची को उसके स्वजनो को बुलाये बिना दफ़न कर दिया था।

जब से कोनानबाय ने जिगितेक की गर्मियों के चरागाह छीन कर बोकेंशी को दे दिये थे दोनों क़बीले जो हमेशा से शान्तिपूर्वक रहते आये थे, परस्पर सन्देह और अनवरत रोष-भाव से भर उठे थे। चरने की जमीने, नदियों के साथ लगे चरागाह, सब तरह की चीज़ें तीक्ष्ण वैमनस्य को बढ़ावा दे रही थी, बायदालि और तुसिप इस बात को अच्छी तरह समझ रहे थे और यह सोच-सोचकर लगातार परेशान होते रहते थे कि क़ोनानबाय द्वारा रोपे गय वैमनस्य के बीज समय आने पर बोकेंशी के साथ पूर्णरूप से सम्बन्ध विच्छेद करा देंगे। इस तरह इर्गिज़बाय के साथ संघर्ष में जिगितेक अपने अन्तिम सहयोगियो से वंचित हो जायेगे।

क़ोनानबाय के प्रति नफ़रत के कारण ही बायदालि ने क़मशत को उसके स्वजनों को बुलाने तक की औपचारिकता किये बिना दफ़न कर देने की सलाह दी थी। क़ोनानबाय को इस तरह अपमानित करना कितना बुरा होगा, इसका पूरा अहसास बोजेय को था लेकिन फिर भी इसके परिणामों के पूर्ण पूर्वाभास के बावजूद वह सहमत हो गया था। क़ोनानबाय के प्रति अपनी ज़बर्दस्त नफ़रत के कारण ही उसने बदला लेने का इतना अच्छा मौक़ा गॅवाना ठीक नही समझा।

क़मशत को इस तरह दफ़न कर दिये जाने की खबर सुनकर क़ोनानबाय तो क्रोध से पागल हो उठा। बिना हिचकिचाये लेकिन गुप्त रूप से उसने इर्गिज़बाय, तोपाय और जुवानतयाक़ के बुज़ुर्गो की बैठक बुला ली, उन्हे बोजेय की कारगुज़ारी सुनायी और फ़ैसले के लिए मामला उनके सुपुर्द कर दिया।

इस बार बात करने के लिए जुमाबाय को नहीं भेजा गया। उसकी जगह क़ोनानबाय ने अपने सदा के सुख-दुख के भागीदारो, अपने दत्तक भाई इज़गुत्ति और भाई जाक़िप को भेजा।

बोजेय के साथ दुआ-सलाम में उन्होंने तनिक भी समय बर्बाद नही किया।

"तुमने क्या किया है?" इजगुत्ति ने जवाब-तलब किया। "क्या उस बच्ची को तुमने लूट में हाथ लगा गुलाम भर समझा था? क्या वह खुद कोनानबाय की ही सन्तान न थी? क्या तुम उसकी माँ को खबर नही कर सकते थे जिससे बेचारी कम से कम कब्र पर मुट्ठी भर मिट्टी तो डाल पाती? क्या पागलपन, बेवकूफी भरा बदला है!"

बायदालि और तुसिप की मौजूदगी मे बोजेय ने मुँहतोड जवाब दिया

"निस्सन्देह, घुसपैठ शुरू करने के लिए कोनानबाय एक और बहाना ढूँढ रहा है! मुझे मेरे अगूठे बराबर उस शिशु की मौत की घोषणा करने और मृत्यु-भोज आयोजित करने की क्या जरूरत थी? और जो वह मुझपर चढ दौडना चाहता है, क्या इससे वह रुक जाता! अगर मै कसूरवार हूँ तो खून बहाकर वह उचित बदला ले ले। हम भी देख ले, वह किस तरह ताकतवर है!"

चराई ज़मीन सम्बन्धी झगडा अपने चरम पर पहुँच गया था। बोजेय की चुनौती से प्रकट था, वह हर चीज के लिए तैयार था।

बायदालि और तुसिप ने दृढता से उसका समर्थन किया और इजगुत्ति के रवाना होते ही, उन्होने अपने स्वजनो को बुला भेजा। बोकेशी के साथ अपने मतभेद बिसरा दिये गये मुसीबत के क्षण मे सब जिगितेक के साथ श्रेणीबद्ध थे।

और उसी शाम जब कोनानबाय ने अपने सहयोगियो को सम्बोधित किया और फिर से खटपट शुरू करने की मगल कामनाएँ दी, बोजेय के आऊल मे उसी तरह बायसाल, काराताय, सुयून्दिक तथा दूसरे लोगो ने सघर्ष करने का दृढ सकल्प किया और जिगितेक नेता की शपथ लेकर अपने फैसले पर मुहर लगायी।

अभी गर्मी की शुरुआत ही थी और बहुत से आऊलो ने, जिन्होने चिगीज अभी पार ही किया था, अपने ओताव स्थापित करना शुरू किया था। जितनी जल्दी सभव हो सके, बकानास और बायकोश्कार नदियो के किनारे के ग्रीष्मकालीन चारागाहो तक पहुँचाने के लिए दोनो पक्षो ने अब अपनी तैयारियाँ तेज कर दी। इस बार मौसम के झगडे-फ़साद से भरे होने का अदेशा था। इर्गिजबाय और जिगितेक दोनो ही गुपचुप तथा दूसरी तरह की लडाई की तैयारी कर रहे थे।

तोबिक्ति के विशाल आऊल तेजी से आगे बढ रहे थे, सोयिल और

चोकमार हमेशा तैयार रखे जाते और सवारी के लिए चुने घाडो का अवेग होने पर खाने को कुछ नही दिया जाता जिससे वे चुस्त-दुरस्त रह सके।

क्रोध और दुश्मनी की लपटे दूर-दूर तक फैल गयी थी। आऊल आऊल मे चिन्ता और भय की व्याप्ति थी। अचानक हमले, खून-खराबा और मौत की गोलमोल अफवाहे फैली थी और इर्गिजबाय व जिगितेक दोनो ही लोग खबरदारी से सोते, हमेशा तनाव भरे और कुछ हो जाने की आशका मे रहते।

तनाव भरे उस सकट काल मे जेरे का आऊल दिन-रात सफर करता रहा जब तक वह बकानास नदी नही पहुँच गया। दिन भर मे ही दस आऊल नही बल्कि चालीस आऊल इसके चारो ओर एकत्र हो गये। सुबह से रात देर गये तक, उलजान और आयगिज के ओताव हथियारबन्द लोगो से घिरे रहते।

सफर के दौरान कोनानबाय निरन्तर विशाल आऊल के साथ-साथ चलता रहा था, बुजुर्गो को बुलाता, आदेश और हिदायते देता। बकानास पहुँच जाने पर उसने सारे बीओ, बुजुर्गो और सन्देशवाहको को एक साथ बुलाया। उसके एकदम निकटवर्ती इलाके के तीस या चालीस आऊलो मे असाधारण जमाकडे होते रहते और यह जमाकडे नये कर्मचारियो या बुजुर्गो के चुनाव के लिए, किसी मृत व्यक्ति की याद मे अथवा विवाह समारोह मनाने के लिए नही होते, बल्कि ऐसा कोई भी जाहिरा कारण नही होता। आखिरकार ऐसे विशाल जमाकडे रोज की घटना बन गये।

आबाय अपने पिता की योजनाओ के बारे मे कुछ भी नही जानता था। कोनानबाय सदा वृद्ध व्यक्तियो के साथ होता और वास्तव मे उस तक पहुँच पाना कठिन था। आबाय अपने दिन अपनी माताओ के साथ शोक बँटाता व्यतीत कर रहा था।

जिगितेक, बोकेशी और कोतिबक को बकानास के पास गर्मियो की अपनी जमीन पर आ बसना चाहिए था। बहरहाल, किसी कारणवश वे वहाँ नही आ पाये और पता चला, दर्रे के पास ही कही, वे पीछे ठहर गये है। और रास्ते मे दोनो विरोधी पक्षो के लिए एक-दूसरे के आदमियो पर काबू कर लेना या परेशान करना, आम बात हो गयी और इन आरम्भिक कार्यवाहियो से यह प्रकट हो गया कि जिगितेक अपनी परम्परागत चालबाजियो को दुहराना चाहते है। उन्हे हो क्या गया था? वे पीछे

क्यों रह गये थे? उनके इरादे क्या थे? कोई भी सन्तोषजनक उत्तर नहीं ढूँढ़ पा रहा था।

और तभी सहसा ही बोकेंशी क़बीले से आये तीन आगन्तुकों द्वारा बोजेय के गंभीर रूप से बीमार होने की चौकानेवाली ख़बरें मिलीं और यह भी पता चला कि पिछले दिनों उसकी हालत और भी ख़राब हो गयी है। शायद उसे अपने अंत के क़रीब होने का अहसास हो गया था या फिर शायद किसी और कारण से इसके पहलेवाली शाम को उसने अपने स्वजनों को अपने पास इकट्ठा करके उनसे विदा ली थी। आगन्तुकों ने बताया कि उन्होंने यह सब अपने कानों से सुना है।

झगड़ा-फ़साद, अचानक हमलों और मार-काट की हर रोज़ आस लगाये रहनेवाले इर्गिज़बाय और बकानास के किनारे के उनके सहयोगी आऊल अब और कुछ नही, सिर्फ़ बोजेय की बीमारी की चर्चा कर रहे थे।

दूसरे दिन बोजेय की मौत की दुखद ख़बर मालूम हुई। पिछली शाम उसने अपनी आख़िरी साँस ली थी।

आबाय, ओस्पान और तकेजान के साथ जब उल्जान, क़ोनानबाय और ज़ेरे सुबह की चाय पी रहे थे, जुमाबाय यह ख़बर लेकर आया। वहाँ बैठे सब लोग हक्का-बक्का हो गये।

क़ोनानबाय अपनी अकेली आँख से दरवाज़े के पार सुदूर हरी पहाड़ियों को देखता, ज़र्द पड़ा शोकपूर्ण मुद्रा में बैठा रहा। चुपचाप उसके होंठ दुआ करते रहे।

शोकार्त ज़ेरे की कमर और भी झुक गयी, आँखों में आँसू भर आने से एक भारी आह निकल आयी।

आबाय का हृदय पीड़ा से विदीर्ण हो उठा।

इर्गिज़बाय के आऊल धैर्यपूर्वक सन्देशवाहक की प्रतीक्षा करते रहे। जिगितेक नेता की मृत्यु की ख़बर देने उसे निश्चित रूप से आना चाहिए था। रिवाज के मुताबिक़ एक तेज़ घुड़सवार को उनके आऊलों को जनाज़े में भाग लेने का निमंत्रण देने आना चाहिए था।

चाहे रोज़मर्रे के जीवन में कितनी भी कड़वाहट भरी दुश्मनी हो, इस कहावत से इनकार नही किया जा सकता: "शानदार भोज या किसी ताजा क़ब्र की ओर सबको राह देनी चाहिए।" बोजेय जिन्दा था तब क्या

हुआ था, इसे ध्यान में लाये बिना हरेक स्वजन को जनाज़े में मौजूद रहना चाहिए, हरेक को दूसरों के साथ मिलकर उसकी मौत पर शोक करना चाहिए।

तदनुसार बड़ी मात्रा में क़िमिज़ तैयार किया गया था; ज़बह करने के लिए चर्बीशुदा घोड़े एक ओर कर दिये गये थे; ओताव तहिया दिये गये थे और बिना किसी निमंत्रण की प्रतीक्षा किये रवाना हो जाने की चर्चा थी। उस शाम तक सन्देशवाहक की प्रतीक्षा की गयी लेकिन कोई भी नही आया।

यह नाक़ाबिले यक़ीन था: जनाज़े मे क़ोनानबाय को आमंत्रित नही किया गया था, यह तो जानबूझकर उसका और उसके आऊल का अपमान था।

अपनी मृत्यु से पहले बोजेय ने ही ऐसी इच्छा प्रकट कर दी थी अथवा उसके स्वजन बायदालि, बायसाल और तुसिप ने ऐसा फ़ैसला किया था, यह अटकल की बात थी। क़ोनानबाय इसे घोरतम अपमान समझता था। भ्रातृघाती कलह जो ख़त्म तो नही, हाँ कुछ समय के लिए थम ज़रूर गया था, फिर अपना सिर उठा मृत व्यक्ति के शरीर से परे धमका रहा था। न सिर्फ़ बोजेय के निकटतम स्वजनों बल्कि असंख्य तोबिक्ति लोगों के सुदूरतम आऊलों को भी आमंत्रित किया गया था। क़ोनानबाय को छोड़कर किसी को भी नही भूला गया था।

पहले तो क़ोनानबाय विषण्ण हो उठा फिर तुरंत ही अदम्य, कुढ़नभरी नफ़रत के साथ गुस्से से भर उठा। मृत व्यक्ति से बदला चुकाना तो असंभव था लेकिन अपने अपमान के लिए बायदालि और बायसाल से हिसाब चुकाने का उसने कृत-संकल्प कर लिया था। ऐसा अपमान तोबिक्ति लोगों के बीच अभूतपूर्व था।

क़ोनानबाय जानता था, फिलहाल खुली झपटों का तो सवाल ही नही उठता और उसने उलजान सहित बकानास के किनारे के सभी आऊलों को नये आदेश दिये: "अपने घरेलू कामकाज में लगे रहो, चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नही!" फिर अभी-अभी बायकोश्क़ार में आये जुमाबाय के साथ कुन्के के आऊल की ओर रवाना हो गया।

जीवन सामान्य होने के साथ-साथ जो आऊल हर रोज़ सशस्त्र मुठभेड़ की उम्मीद करते थे, शान्त पड़ गये। शोकपूर्ण दिनों में अपने पड़ोसियों पर हमला करने के लिए घोड़े पर जा बैठने की हिम्मत भला कौन करेगा?

बोजेय के जनाजे मे हिस्सा लेने का निमंत्रण न मिलने पर ज़ेरे और उलजान बहुत दुखी थी, लेकिन कुछ किया भी तो नही जा सकता था। अपमान और दुख के कारण उनके आँसू नही थम रहे थे। हफ्ते भर से वे जनाजे के रिवाजी नान पकाते रहे थे और अब दस्तरखान बिछाकर ओताव मे बैठे आबाय और गबितखान से उन दुआओ को पढते सुन रही थी जिन्हे उनको खुद बोजेय की कब्र पर पढना था।

जिगितेक, बोकेशी और कोतिबक एक शानदार जनाजे की तैयारी कर रहे थे। उनके असख्य आऊल स्त्री-पुरुषो, जवान-बूढो – असख्य आगन्तुको से भरे थे। यह सब बोजेय के लिए मातम मनाने आये थे। चारो ओर शोकपूर्ण रुदन क्रन्दन की कराहे थी। बोजेय के स्वजन, मित्र और निकटतम सहयोगी अपने ओतावो, नौकरो और उपहारस्वरूप चर्बीशुदा पशु लेकर आये थे। लम्बे अर्से से ऐसा जनाजा देखने मे नही आया था।

बोजेय की मृत्यु के कारण बहुत से आऊलो का अपने सुदूरवर्ती ग्रीष्म-कालीन चरागाहो की ओर जाना, जहाँ वे पतझड तक रहते थे, रुक गया था। इस लिए फैसला किया गया कि वे निर्धारित चालीस दिनो तक जहाँ थे, वही ठहर जाये और उन सब का स्वागत करे जो उनके साथ मातम मनाने और सातवे व चालीसवे दिन के जनाजे के रिवाजी समारोहो को मनाने आये थे।

बोजेय की बीमारी लम्बी न थी। वह सहसा बीमार पडा था और फिर ठीक नही हो पाया। उसकी मृत्यु पहले ही दिन स्पष्ट हो गयी थी। तीसरे दिन तक मृत्यु की छाप साफ दिखाई देने लगी थी – वह बेचैनी से करवटे ले रहा था और उसे शान्ति नही मिल पा रही थी।

बायसाल ने मरते हुए दूसरे लोगो को भी देखा था। उसने बोजेय के सीने पर अपना हाथ रखा, उसे हृदय की मन्द पडती धडकन महसूस हुई और उसने जान लिया, अन्त करीब है। बोजेय के अन्तिम शब्दो को सुनने की प्रतीक्षा करते बायदालि, तुसिप और सुयून्दिक पास ही बैठे थे। एक दिन शाम को बायसाल ने गोपनीय लहजे मे कहना शुरू किया था

"उसे ठड लग गयी है, ऐसी ठड जो किसी को भी मार डाल सकती है। अगर एक बार भी उसे खूब अच्छी तरह पसीना आ जाये तो वह ठीक हो जायेगा।"

सहसा उन्होने देखा, बोजय की त्योरी चढ गयी है और वह अपने दाँत चबा रहा था, उसका पीला चेहरा गुस्से के मारे स्याह पड गया था। उसने अपनी बची-खुची शक्ति बटोरी और अटक-अटककर आवेशपूर्वक बोलना शुरू किया। साँस फूल जाने के कारण उसकी आवाज कभी तेज हो जाती, कभी मुश्किल से सुनाई पडती।

"एक अचानक आघात कहाँ से? कही से नही या अन्दर से, जहाँ साँप मेरे दिल को डँसे जा रहा है? लेकिन अब इससे फर्क ही क्या पडता है? कोनानबाय को और सुयोग मिल जायेगा मुझे अहसास हो रहा है, मै अब इस दुनिया से जानेवाला हूँ अब मै उसकी राह का रोडा नही रह जाऊँगा मै तो चला जाऊँगा लेकिन तुम? तुम्हारे आगे क्या है?"

बोजेय के चारो दोस्तो मे सिर्फ सुयूदिक फफक कर रो पडा। दूसरे एकदम स्तब्ध, म्लान और लकवा मारे से बैठे रहे।

यह बोजेय के आखिरी शब्द थे। कुछ ही घण्टो मे वह मर चुका था।

ऐसे उनके नेता की मौत तो शाम को ही हो चुकी थी, चारो बूढे, उनकी बीवियाँ और बच्चे रात देर गये तक विलाप करते रहे। अश्रुमय आखो से बायमाल ओताव मे आनेवाले सभी आगन्तुको से मिला और आखिर खुद पर नियंत्रण गवाकर जमीन पर गिर पडा। बायदालि, तुसिप और सुयून्दिक उसे भीड भरे ओताव से ले गये, उसे आराम से लिटा दिया और उसकी बगल मे घुटनो के बल बैठ गये। सबसे पहले बायदालि बोला

"काश, हमारे आँसू उसे वापस ला सकते! क्या हम काफी रोये नही? उधर देखो!" और उसने आऊल की ओर, बिलखते, कलपते स्त्री-पुरुषो के झुडो की ओर इशारा किया। उसने एक गहरी आह भरी जो सिसकने जैसी थी, लेकिन फिर भी दृढता से कहा "होश मे आओ, बायसाल! आओ, हम अपने मन को मजबूत करे और जनाजे के बारे मे बाते करे।"

बैठक मे कई अन्य बुजुर्गो को बुला लिया गया और बायदालि ने पहले कदम के तौर पर यह फैसला लिया कि जनाजे मे कोनानबाय के किसी भी आऊल को आमंत्रित न किया जाये।

खबर को दूर-दूर तक पहुँचाने के लिए चालीस घुडसवार मध्य रात्रि

तक तैयार हो गये। श्रेष्ठ घोडो पर सवार हो वे समस्त दिशाओ मे — दूर दूर अवस्थित तोबिक्ति आऊलो, केरेय के पडोसी इलाको, ममाय के गाँवो और यहाँ तक कि करकरालीस्क के पास विचर रहे सुदूरतम कबीलो की ओर सरपट दौड गये।

बायदालि तथा दूसरे बुजुर्ग उस दिन सारी रात नही सो पाये और भिनसरे ही कस्बे का सबसे बडा ओताव — सुयून्दिक का अष्टकोणीय तम्बू — बोजेय के ओताव की बगल मे लगा दिया गया। चलन के मुताबिक इसकी साज-सज्जा तो नही हो पायी थी, लेकिन हमेशा की तरह फर्श को कालीनो से ढक दिया गया था। प्रवेश-द्वार की दाहिनी ओर काला नमदा बिछाया हुआ, हाँथी दाँत से सुसज्जित एक विशालकाय खूबसूरत सोफा रख दिया गया था। यही पर जनाजे के सारे अनुष्ठान खत्म होने तक बोजेय की लाश रखी जानेवाली थी।

ओताव से जब लाश ले जायी जाने लगी, उसकी बेटियो और दूसरी औरतो का बिलखना पहले से कही ज्यादा तेज हो गया। उसे सोफे पर रख दिया गया, बायदालि ने अपने हाथो से तम्बू की दाहिनी ओर मातमी झंडा लगा दिया। भाले की नोक पर लहराता मातम का परचम — यह सम्मान का सबसे बडा चिह्न था। अगर बोजेय खानो का वारिस होता, परचम कुछ और ही ढग का होता सफेद या नीला अथवा आभिजात्य का प्रतीक धारीदार परचम। लेकिन सामान्य जनता के बीच के किसी व्यक्ति का झडा उसकी उम्र पर निर्भर करता था। बायदालि ने सुयून्दिक से सलाह ली थी जो रीति-रिवाजो के बारे मे अपनी जानकारी के लिए विख्यात था और सुयून्दिक ने समझाया था — जवान आदमी के लिए झडा लाल होना चाहिए और वृद्ध व्यक्ति के लिए सफेद। मध्यम आयु के बोजेय के लिए दो रगोवाले झडे की जरूरत होगी — काला और सफेद।

बोजेय की मृत्यु के दूसरे दिन ओताव की दाहिनी ओर बायदालि द्वारा लगाया गया झंडा इस बात का सकेत था कि मृतक की स्मृति को विशेष निष्ठा के साथ मनाया जायेगा, कम से कम साल भर तक थोडे-थोडे अन्तराल से अनुष्ठान दुहराये जायेगे और इसका समापन एक स्मृति-भोज के साथ होगा।

एक और रिवाज के मुताबिक विपरीत दिशाओ से दो घोडे मातमी ओताव के प्रवेश द्वार की ओर चक्कर लगवा कर लाये गये और आम

नमाज़ो के बाद दरवाजे के चौखट से बाँध दिये गये। उनमे से एक सुन्दर चापवत गर्दन, सुपुष्ट गहरे भूरे रगवाला कुम्मैत था जिस पर जाड़े के दौरान बोजेय ने सवारी की थी और दूसरा एक खूबसूरत काले रंग का कर्बूराश्व था जिस पर उसने उस गर्मी के शुरू में सवारी की थी।

इन घोड़ो को देखकर जीवित बोजेय की याद – उस व्यक्ति की याद – जिसका वे इतना सम्मान करते थे, ताज़ा हो जाती और लोग बार-बार बिलख पडते। कुछ अपनी छड़ी के सहारे झुककर सुबकने लगते, कुछ घुटनों के बल गिरकर जमीन पर अपने सिर नवाते।

"हाय, बोजेय, पुरुषो मे अद्वितीय! हमारे शेर! हमारे बहादुर, विश्वासी शेर!"

सबसे पहले खुद पर नियंत्रण बायदालि ने किया और वह दरवाज़े के चौखट की दाहिनी ओर बधे कुम्मैत के पास जा पहुँचा।

"हाय, अनमोल जानवर," वह चीख़ पड़ा। "तुम्हारा मालिक ख़ुदा को प्यारा हो गया। तू अनाथ, अकेला खड़ा है।" फिर उसने जानवर की चोटी काट ली और उसकी हिलती पूँछ को एक साथ मिलाकर थाम लिया, अपने चाकू पर उसे फड़फड़ाने दिया और घुटने की ऊँचाई तक काट लिया। दूसरेवाले घोडे के साथ भी ऐसा ही किया गया और फिर उन्हे ढोर मे छोड़ दिया गया। वे एक साल तक पुष्ट होते रहेगे फिर अपने मालिक की बरसी मे जबह कर दिये जायेगे।

बायदालि जा रहे जानवरो को देखता रहा। काले अयाल और पूँछवाला काला कर्बूराश्व मातम के घोड़े के काम भी आ सकता था। यात्राओ के दौरान काले कफन से लिपटा अपने मालिक का ज़ीन ले जाया करेगा।

मातमी झण्डे के नीचे ही बुजुर्गो ने जनाज़े के लिए जानवर और धन का भी निर्धारण कर दिया।

"मौत अमीरो के झोले खाली कर देती है और ग़रीबों की पीठ नंगी कर देती है!" बोजेय अमीर नही था, लेकिन वह गरीब भी नही था। वह हो भी कैसे सकता है – एसे स्वजन और दोस्तों के रहते! और जो हमेशा उसके जिन्दा रहने पर उसके सुख-दुख में हिस्सा बँटाते थे, अब उसे छोड़ नही देगे। अभी तो उसकी कब्र पर घास भी नही उगी है, वे उसे कैसे भूल सकते है?

मुँह से कोई भले नही बोला हो, सबके दिमाग में यही विचार थे।

बोजेय के स्वजनो ने जनाज़े की व्यवस्था की सारी जिम्मेदारी अपने कन्धो पर ले ली। जिगितेक प्रमुख के परिवार को एक बकरे तक से वंचित नही होने दिया जायेगा। साल भर तक हरेक भूखे, थके, गृह-विहीन यात्री को, चाहे वह क़रीबी या दूर का स्वजन हो या एकदम ही अजनबी, उसे बोजेय के घर मे आश्रय और विश्राम उपलब्ध होगा। उनकी कृतज्ञता और दुआओ से दूसरी दुनिया मे बोजेय के सुख मे निस्सन्देह वृद्धि होगी।

उसी सुबह बैठक ने मातमी तम्बू को सर्वाधिक मूल्यवान और सुन्दर आभूषणों मे सज्जित करने का भी निर्णय लिया। सुयून्दिक़, बायसाल और बायदालि ने क़ीमती कालीने, पर्दे, चमकदार अलंकरणवाले नमदो के कम्बल तथा अन्य बेशक़ीमती चीज़े दी।

तम्बू के अन्दर दुख से लगभग पगु-सी बोजेय की बायबिशे बैठी थी। उसका पीला, विवर्ण मुखड़ा एक सफ़ेद रुमाल मे लिपटा था। उस रुमाल मे उसके काले बालों के नही समा पा सकने के कारण वे उसके कन्धो पर बेतरतीबी से बिखरे थे। उसके थके, विवर्ण चेहरे पर धड़कती नीली नसें दिखाई दे रही थी। शोक के प्रथम दौर में उसने अपने नाख़ूनों से जो घाव कर लिये थे, वे अब भी ताज़ा थे।

बोजेय की दोनों लड़कियो ने अपनी टोपियों का त्याग कर काली शॉलें ओढ ली थी। पिता की मृत्यु के बाद से ही जो भयानक क्रन्दन उन्होने शुरु किया था, वह अन्तिम श्रद्धांजलि प्रकट करने के लिए आनेवाले हर किसी का स्वागत करता।

विस्तृत वादियों, सुदूर ग्रीष्मकालीन शिविरो और चिंगीज़ के पार की पहाड़ी तराइयों से आगन्तुको का विशाल ताँता लगा था। धरती घोड़ों की टापों से काँप रही थी। बिलखने और रोने की आवाज़ें लगातार कई दिनों तक आऊलो पर मडलाती रही।

बोजेय की लाश ग्रीष्मकालीन भूमि पर दफ़न नही की गयी, बल्कि उसे चिंगीज के पार तोकपामबेत में उसके शरदकालीन आवास-स्थल पर ले जाया गया।

जनाजे मे समस्त तोबिक़्तियों मे सिर्फ क़ोनानबाय ही अनुपस्थित था।

तराइयो मे

१

अभी दोपहरी मे काफ़ी देर थी लेकिन उस दिन की दमघोट गर्मी असह्य हो रही थी। आसमान मे बादल का एक टुकड़ा तक न था। उस झुलसाती, अशक्तकारी पूरी गर्मी मे पानी की एक बूद भी नही पड़ी थी। धरती दरारों के रूप मे मुँह बाये थी। लेकिन बकानास जल-बहुला नदी थी और इसके किनारे समृद्ध रूप से गुल्मवाटिकाओं, जंगली बबूलों, जंगली घासों और नागदौन पौधों से आच्छादित रहते। इसी कारण आऊल यही गर्मी बिताने के ख्वाहिशमन्द रहते थे। अगर यह पीड़ादायक गर्मी न होती तो इससे अच्छे चरागाह कही न थे।

पसीने से तर-ब-तर आबाय ओताव से बाहर निकला।

उस कड़ी धूप मे आऊल के लोग बिरले ही इधर-उधर निकलते। मुख्य ओताव के सामने पड़ा विशालकाय, चितकबरा, पीला आवारा कुत्ता बुरी तरह मुँह फाड़े था। वह ज़ोर-ज़ोर से हाँफ़ रहा था, उसकी जीभ बाहर लटक रही थी।

पशुओं के ढोर चरागाहो से जा चुके थे और एक सुदूरवर्ती पहाड़ी की नंगी चोटी पर एकत्न कर दिये गये थे, जहाँ उन्हें अथक, दुष्ट डाँस मक्खियों ने काट भगाया। चरागाहों से लौटते भेड़ नदी के पास कीचड़ में पंगु से लोट गये। गाये पानी मे उतरकर ऊँघती खड़ी थी, सिर्फ उनका सिर ही पानी से ऊपर दिखाई दे रहा था। किनारे रह गये बछड़े डाँस मक्खियो से बचने के लिए पागलों की तरह इधर-उधर दौड़ रहे थे।

पूँछ फटकारते, नथुने फुलाते और सूजी हुई आँखो के साथ वे इधर-उधर भागते फिर रहे थे मानो ज़बह होने से बचना चाहते हो।

श्रोतावों के तुन्दुक गिरे थे और नमदेवाले निचले हिस्से सब कही ऊपर की ओर उठे थे।

कहाँ राहत मिले, आबाय समझ नही पा रहा था। काफी देर तक वह बदहवास खड़ा रहा, फिर जंभाई ली और नदी की ओर धीमे-धीमे बढ गया। उसके नासिकाग्र से पसीने की बून्दें ढुलककर चेहरे पर गिर रही थी, उसका सिर दुख रहा था और वह बकानास व उसकी मूर्च्छित कर देनेवाली गर्मी को कोसने को तत्पर हो उठा था।

लड़कों ने नदी को छा लिया था और उनमे सबसे ज्यादा शोर-गुल मचानेवाले ओस्पान और स्मागुल थे। उनसे कुछ दूर हटकर आबाय ने ग़ोता लगा लिया। विस्तृत बकानास को दो बार तैरकर पार करने के बाद आबाय का मन शीतल और उल्लसित हो उठा और उसने सूँस की तरह गोते लगाने शुरू कर दिये। ओस्पान क़रीब आ, प्रसन्नता व ईर्ष्या से देखने लगा।

"फिर करो! सिर्फ़ एक बार!" अपने कूल्हे ठोकता वह चीख़ पड़ा। सहसा वह शैतान छलाग लगाकर स्मागुल की पीठ पर जा बैठा। स्मागुल ने उसे उछाल फेंकने की निराशा भरी ज़ोरदार कोशिश की।

"अगर सिर-मुँडे * मुझे नही गिरा सके तो तुम भी नही गिरा पाओगे! ज़रा लताड़ लगा के तो देखो!" ओस्पान स्मागुल को गर्दन से पकडे, अपनी एड़ियों को उसकी पसलियो मे घुसड़े उसपर विजेता-सा बैठा था, मानो किसी टट्टू की सवारी कर रहा हो।

स्मागुल ने जूझना बंद कर दिया। आज्ञाकारिता से ओस्पान को खुद पर सवार कराये वह उस जगह की ओर दौड़ पड़ा जहाँ आबाय नहा रहा था और पानी मे सवार-सहित गड़ाप से जा रहा।

ओस्पान की शैतानियो से आबाय काफ़ी पहले से आजिज आ चुका था। दो साल पहले उसे अपने छोटे भाई के साथ उछल-कूद करना बुरा नही लगता लेकिन चंचल छोकरा तो मुसीबत ही बन गया था और अब

---

* दो वर्षीय अश्व-शावक। दो वर्षीय अश्व-शावको के अयाल तराश दिये जाते थे। —सं॰

जब कभी भी वह नन्हा पाजी उसे आफत मे डालता, वह उसे धमकाकर भगा देता। वह किनारे आ गया और आराम से कपडे पहन घर लौटने की तैयारी करने लगा।

लेकिन सहसा तभी उसे पानी के किनारे घोडे पर सवार, वास्तविक नौजवान-सा अलकृत व सुसज्जित तकेजान दिखाई दिया। उसकी कलाई पर एक बाज था। उसका काले अयालवाला कुम्मैत झाग-झाग हुआ, लगाम के दहाने पर जोर लगाता, कुदान भर रहा था।

उसके जीन से दो जगली बत्तख और एक धब्बेदार पीला हँस लटक रहे थे। शिकार को देखते ही बच्चे उसकी ओर टूट पडे – हरेक दूसरे से ज्यादा जोर से चीखने की कोशिश कर रहा था

"अरे, आगाताय,* वे सारे मुझे दे दीजिये!"

"नही! मुझे! मुझे!"

आम तौर से तकेजान अपने शिकार बच्चो को दे दिया करता लेकिन पहले उनसे काफी याचना और मिन्नते कराता। छोकरे इसके आदी थे और वे चापलूसी मे लगे रहे।

तकेजान ने आबाय को कुछ-कुछ क्षुद्र मुस्कान से देखा। वह हमेशा अपने भाइयो पर अपनी श्रेष्ठता का रोब डालने की कोशिश करता। क्या वह यानी तकेजान, बाज से शिकार करने योग्य पूर्ण विकसित नौजवान नही था? आबाय उसकी तुलना मे क्या था – बस एक किशोर बालक ही तो था! इसी गर्मी मे तकेजान अपनी मँगेतर से मिलने गया था। वास्तविक नौजवानो में उसके दोस्त थे और क्या वह झाडियो मे छुपकर लडकियो की बाट जोहने जितनी उम्र का नही हो गया था? नही, आबाय उससे बहुत नीचे था।

ओस्पान और स्मागुल तकेजान की नाक मे दम किये थे और वह बदले मे उन्हे झिडकियो और गालियो से जवाब दे रहा था जो उसे बहुत प्रिय लगता। अपने पिता की मौजूदगी में चूहा बना, उनके नजरो से ओझल होते ही बच्चो, गडेरियो और मजदूरो पर गालियो की बौछार कर देता। यह उसकी आदत बन गयी थी। अन्त मे उसने बच्चो को यह कहते हुए पक्षी सौप दिये

---

* बडे भाई के लिए प्यारसूचक शब्द। – स०

"नदी को गन्दा करने की बजाय तुम, नीचो, बेरी चुनने जाग्रो।" इसके साथ उसने अपनी कई प्रिय गालियाँ जोड दी।

"बेरी? कहाँ?" रमागन ने जानना चाहा।

बच्चे गर्मियो मे हमेशा बेरियाँ चुना करते थे लेकिन बकानास के आस-पास वे मिलती ही नही थी। आबाय भी उत्सुक था। तकेजान ने समझाया, जब वह शिकार खेल रहा था, उसने किसी से सुना था, पहाडी के पार पडोसवाली नदी के आस-पास काफी बेरियाँ है।

लडके शोर-गुल मचाते तेजी से भागने लगे।

"चलो, अभी चले!"

"कोई घोडे ले आओ!"

तकेजान ने उन लोगो के साथ जाने का फैसला किया। दोनो बडे भाई बच्चो को जमा कर चल पडे। उनके पीछे-पीछे अकेले या जोडो मे बैठे नन्हे-नन्हे घुडसवारो का झुंड था।

ओस्पान कुछ पीछे था। किसी सीधे घोडे को चुनने की चरवाहे की सलाह को न मानते हुए, उसने एक दो वर्षीय कर्बूराश्व को चुना था जिसे उसी दिन सधाया गया था।

यह घोडा लडके को बहुत पहले ही भा गया था। ऊँचे और मनोहारी इस घोडे को किंचित भी रास का भास न था। इसे जन्म देने और पोषित करनेवाली एक जगली घोडी थी जिसे साल भर तक कोई भी नही दूह पाया था। दूसरे वर्ष भी कर्बूराश्व-शावक अपनी माँ का दूध पीता रहा था और ऐसा प्रतीत होता था, उत्तराधिकार के रूप मे उसने उसका पर्याप्त जगलीपन भी पा लिया था। जिस क्षण से घोडे की खूबसूरती उसके मन मे घर कर गयी थी, ओस्पान ने नौजवान मसकबाय को तग करना नही छोडा था। मसकबाय सर्वाधिक जगली घोडो की भी सवारी कर सकता था। आखिर उस सुबह मसकबाय ने उस कर्बूराश्व-शावक के फदे डाल ही दिये थे।

वह अश्व-शावक जगली और दुष्ट दोनो ही साबित हुआ। अनभ्यस्त बोझ से खुद को मुक्त करने के प्रयास मे उसने अत्यधिक अविश्वसनीय छलागे लगायी, अपनी पिछली टाँगो से प्रहार किये या उन पर ऊँचे उछल गया या अलफ हो गया, उसकी पीठ बावलेपन से चापवत हो गयी। मसकबाय को उसने दो बार धूल चटा दी – इससे पहले ऐसा कभी नही हुआ था –

नौजवान क्रोध से भर उठा और उसने हर कीमत पर घोडे को सधाने की ठान ली। उसने झपटकर अश्व-शावक के कान पकड लिये, फदे से उसका गला आधा घोट दिया, जबर्दस्ती लगाम को उसके मुँह मे घुसेड दिया और आखिर जीन की जगह किसी तरह उसकी पीठ पर कम्बल डालने मे सफल हो उस पर फिर से जा बैठा। अपने ऊपर घूसो की बौछार झेलते हुए दो वर्षीय अश्व-शावक बदहवास चाल से भाग चला। जब अश्व-शावक थक गया और जाहिरा तौर पर शान्त पड गया, मसकबाय ओस्पान के पास लौट आया जो बडे मजे लेते हुए देख रहा था। बेहिचक लडका खुद कर्बूराश्व पर उछल जा बैठा। घोडा थक जरूर गया था, लेकिन अभी किसी भी तरह सधा नही था और वह जानबूझकर ऐसे हल्के-फुल्के, मामूली सवार से पिण्ड छुडाने को पिल पडा। अलफ होते हुए, उसने सभी दिशाओ मे हुडदग मचायी लेकिन छोकरे को उछाल फेकने मे असफल रहा। वह आखिर घोडे को दुबारा शात करने मे सफल रहा और यही बात उसने स्मागुल से रोब झाडते हुए कही थी।

दूसरे सब आगे जा चुके थे लेकिन अश्व-शावक की चालबाजियो के कारण ओस्पान को देर हो गयी· जानवर ने फिर कभी इस ओर, कभी उस ओर उठा-पटक की, छटपटाया, पलटा और वार किये। घूसे बरसाता, खीसे निपोडता ओस्पान उसे कस के पकडे रहा। अपने पीडक से छुट्टी पाने मे असमर्थ कर्बूराश्व पागलो की तरह सरपट आगे भाग चला — ठीक इसी की प्रतीक्षा तो ओस्पान को थी। जानवर पर बुरी तरह कोडे फटकारता ओस्पान पूरी स्तेपी मे चीखता जा रहा था, "अरवाह! अरवाह!" दूसरे बच्चे जो बहुत आगे जा चुके थे, तेजी से पीछे छूट गये लेकिन कर्बूराश्व मे थकान का कोई चिह्न नही दिखाई दे रहा था। लगाम की परवाह किये बिना तेजी से भागते घोडे ने सडक के किनारे की ओर कुदान भरी और सीधे तकेजान के घोडे से जा टकराया।

बच्चे सभी दिशाओ मे बिखर गये। ओस्पान ने घोडे को गतव्य दिशा की ओर सभालकर मोड लिया लेकिन अश्व-शावक के दिमाग मे कुछ और ही बात थी। सिर ऊँचा उठाकर वह जोरो से झटका देते हुए उन्माद-पूर्वक हिनहिनाया। उसने कई उल्टी-सीधी छलागे लगायी और सीधे खडा हो या बिल्ली की तरह अपना शरीर मोडते हुए फिर लडाई शुरू कर दी।

आबाय पहले ओस्पान के लिए भयभीत हो गया लेकिन उसका चेहरा

देखकर चकित था। उसकी चमकती आँखो मे भय का कोई चिह्न तक न था। स्पष्ट रूप से लडका तनिक भी भयभीत नही बल्कि सघर्ष से रोमाचित था और ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वह घोडे से अधिकाधिक विरोध की इच्छा रखता था। यह कोई उजड्ड बहादुर नही था बल्कि तीखे सघर्ष मे जूझा एक अनुभवी लडाकू था। मुक्त होने की जी जान से कोशिश करते हुए जब-जब घोडा चारो पैर समेटकर, पीठ मोडकर ऊपर की ओर उछलता और सीधा खडा हो जाता, ओस्पान पहले से ही उसकी चाल समझ निदान कर लेता।

सब के सब मत्रमुग्ध से देख रहे थे, सिर्फ तकेजान अपनी जीभ चटखारता, भद्दी फब्तियाँ कसता उल्लास प्रकट कर रहा था।

"चट्टान है, चट्टान है," उसने कहा। "उसे कुछ भी नीचे नही गिरा सकता।" अपने कुम्मैत को एड लगाता, वह बढ रहा था।

बच्चे पीछे आने को मुडे लेकिन जगली कर्बूराश्व उन सबके बीच से गुजरता आगे चला गया। ओस्पान उस पर घूँसो की बौछार करता, आह्लादपूर्वक चीखता जा रहा था, "अरवाह! अरवाह! मसकबाय! मसकबाय!" ऐसा लग रहा था, मानो वह उस आदमी के नाम से अश्व-शावक को वश मे करना चाहता था जिसने उसे सबसे पहले सीधा किया था।

पहाडी के किनारे वे काफी देर तक बेरी चुनते रहे—चारो ओर घास पर से जगली स्ट्रॉबेरी की मीठी खुशबू फैल रही थी। दिन खत्म हो रहा था और टीलो की छाया लम्बी होती जा रही थी। कन्दराओ और घाटियो मे शीतल बयार थपेडे ले रही थी लेकिन ऐसा लग रहा था मानो बच्चे सदा-सर्वदा स्ट्रॉबेरियाँ चुनते रहे तो भी वे खत्म होने को न थी। उन्होने भर पेट खाने के बाद अपनी टोप-टोपियो मे, झोलो-जेबो मे भर ली।

सहसा पहाडी की दूसरी ओर से अजीब चरमराहट की आवाज सुनाई पडी, मानो स्तेपियाँ जल उठी हो या कोई बडी सेना कूच कर रही हो। लडके तकेजान और आबाय पर प्रश्न भरी दृष्टि डाले स्तब्ध खडे हो गये।

पहाड की चोटी पर घोडो का एक विशाल जत्था दिखाई दिया जिसने तराई मे उतरना शुरू कर दिया था। फुनफुनाते, हिनहिनाते सफेद और भूरे घोडे सतत आगे बढ रहे थे। बछेडे और अश्व-शावक हिनहिनाते हुए

जत्थे से अलग होकर घास पर इधर-उधर दौड़ते खेलने लगे। जिन घोड़ों पर बच्चे आये थे, वे शान्त हो गये। उनके कान खड़े हो गये और वे थके तो थे ही, सो उन्होंने आते जत्थे में शरीक हो जाने की भोंडी कोशिशें शुरू कर दीं। बच्चे इनकी ओर बढ़े।

इस सुनसान जगह पर ऐसे जत्थे का दिखाई देना इसी बात का संकेत था कि सफ़र कर रहा कोई आऊल आ पहुँचा है और जब बच्चे दुबारा घोड़ों पर बैठे तो उन्हें पहले ख़ानाबदोशों की छायाकृतियाँ देखकर कोई आश्चर्य नही हुआ।

जत्थे के एकदम आगे पन्द्रह ऊँट थे, उनके पीछे आठ, दस या पन्द्रह ऊँटों की लम्बी कड़ी थी। फिर सोयिल और चोक़मारों से लैस नौजवान थे। एक नौजवान जिसके हाथों में एक हुडदार चील थी, इधर-उधर फिर रहा था।

लेकिन घुड़सवारों के पीछे चले आ रहे कारवाँ ने उन सबको अचंभित कर दिया।

इसके इर्द-गिर्द घोड़ों पर सवार अनगिनत औरतें थीं—समृद्ध रूप से सज्जित और सर्वश्रेष्ठ घोड़ों पर सवार हर उम्र की लड़कियाँ और औरतें। उनके घोड़ों के ज़ीन, लगाम और सीने पर के गहने रुपहली आभा से चमक रहे थे। घोड़ों पर बैठी लड़कियों की एक संतुलित पंक्ति तराशे गये अयाल और पूँछवाले एक गहरे भूरे घोड़े को ले जा रही थी। उसके पीछे काली पोशाक में एक दुबली-पतली, पीली-सी प्रौढ़ महिला थी। इस जत्थे के पन्द्रहों ऊँटों के गट्ठर काले नमदे, काले कशीदा किये कपड़ों और रंगीन पृष्ठभूमि पर काले डिज़ाइनोंवाले बहुत-से क़ालीनों से ढँके थे।

इस भव्य रूप से निष्ठा व शोकपूर्ण जुलूस की राह काटने की हिम्मत लड़कों को नही हुई और अपने घोड़ों पर अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक शांत बैठे रहने के अलावा उनके पास कोई चारा न था।

अगली पाँत की लड़कियाँ जब क़रीब पहुँचीं, वे एक-दूसरे से सलाह मशविरा करती प्रतीत हुई। फिर उन्होंने अपने आगे बढ़ने का क्रम बदल दिया—ज़ीन कसे कर्बूराश्व की रास थामे उनमें से दो आगे बढ़ आयीं।

ओस्पान आबाय के क़रीब आ गया।

"कौन हैं वे? इन सब का क्या मतलब है?" वह अपने ज़ीन पर कुलबुलाया और उसने अपने बड़े भाई की बग़ल में अपने चाबुक से टहोका

लगाया। हठात् वह हँसने लगा, "या खुदा! जरा उनके टोप की ओर तो देखो। आबाय! जरा देखो तो!"

आबाय गुस्से से उसपर पलट पडा

"चुप हो जाओ!"

जिस दृश्य ने ओस्पान को शान्त कर दिया था, आबाय के लिए भी वह विचित्र था।

उसने और तकेजान, दोनो ने समझ लिया था, यह बोजेय के जनाजे का जुलूस है। स्पष्ट रूप से बाल कटा घोडा जो जीन और लाल चोगा ले जा रहा है, वह उसके मृत मालिक का होगा। बोजेय का घुडसवारी का चाबुक जीन की काठी के उभरे हुए अग्र भाग मे लगा हुआ था और उसके ऊपर उसका लोमडी के फरवाला टोप टँगा था। लेकिन सबसे अजीबोगरीब चेहरे सामने घोडे पर बैठी दो लडकियो के थे। दोनो ने बारीक काले प्रक्षालित मेषचर्म और काले मखमल के पुरुषो के टोप लगा रखे थे। उन्होने टोप पहन रखे थे, यह सर्वाधिक विलक्षण बात नही थी बल्कि यह टोप उलटकर पहनने के कारण उनके चेहरे पूरी तरह ढँक गये थे।

जब उन्होने देखा, कुछ लोग खडे होकर उनके गुजर जाने की प्रतीक्षा कर रहे है तो उन्होने जनाजे का शोकपूर्ण रोदन आरभ कर दिया। उनके पीछे की पाचो लडकियाँ भी रुदन मे शामिल हो गयी। मातम के दौरान सफर कर रहे आऊल की लडकियो के लिए यह रिवाज था कि जब कभी वे किसी गाव या कुछ अनजान मुसाफिरो के पास से गुजरे, इस तरह का रोदन शुरू कर दे।

लेकिन इन रीति-रिवाजो की भला ओस्पान को क्या परवाह थी? जहाँ तक उसे याद था, घर मे कोई भी मरा नही था और उसे इस तरह के जुलूस का मतलब समझाना तो एकदम ही बेकार था। वह शायद समझ भी नही पाता। उसे सब कुछ बेकार लग रहा था और वह अपनी हँसी नही रोक पा रहा था। आबाय के डर से उसने अपना सिर ऊपर तो नही उठाया था लेकिन हँसी रोकने के कारण उसके कधे हिल रहे थे।

आबाय की नजर लडकियो पर पडी और वह जम-सा गया, उसका बायाँ हाथ उसके चाबुक की चर्म-पट्टी से निकलता हुआ ऊपर उठ गया, मानो वह चीख पड़नेवाला हो, "काश, पल भर के लिए ही रुक जाओ!"

लेकिन उसके गले से कोई ग्रावाज नही निकली। वह फक पड गया, साँस दूभर हो गयी ग्रौर उसका हाथ घोडे के ग्रयाल पर गिर पडा।

पास से घोडो पर गुजरती पाँच लड़कियो मे बीचवाली तोगजान थी जिसे ग्राबाय ने वसन्त मे हुई पहली मुलाकात के बाद से नही देखा था। वह रेशमी-से ग्रयालवाले एक सफ़ेद कदमबाज़ घोड़े पर सवार थी।

बिना ग्रास्तीनवाले उसके काले साटन के लबादे की तहे हर गति पर हल्के से सरसरा उठती। घर मे काते रेशम की बनी टोपी उसके सिर पर शोभायमान थी ग्रौर एक झिल्लीदार शॉल उसकी गर्दन के चारो ग्रोर किसी जाली की तरह फहरा रही थी। उसके कर्ण सपुटों से लटकते बडे बड़े सोने के कर्णफूल झूल रहे थे। समवयस्क लड़कियो से घिरी, वह हल्के धूमिल ग्राकाश मे भोर के तारे की तरह चमक रही थी। काले साटन को घेरे पीले कटिबध पर उसके हाथ टिके थे, उसका घोड़ा धीरे-धीरे ग्रागे बढ रहा था ग्रौर वह नाक की सीध मे देखती विलाप गीत – मृत्यु-गीत – गाती जा रही थी। उसकी स्पष्ट, स्वच्छन्द भौह, मुलायम गौराग बदन ग्रौर पीठ पर लहराते काले बाल – उसकी ग्राँखो के सामने हृदय को छू लेनेवाली पवित्र, ग्रलौकिक कमनीयता का दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे।

ग्राबाय साँस रोके, बिना पलक झपकाये देखे जा रहा था। उसने विलाप की ऊँची, गूँजती ग्रावाज़ सुनी। क्या यह तोगजान थी या दूसरी गाती लडकियो मे से कोई? उसे लगा, ऐसी ग्रावाज़ लेकिन ग्रौर किसी की हो नही सकती।

पल भर के लिए उसे कुछ भी दिखाई नही दिया। ऐसा प्रतीत हुग्रा मानो क्षितिज सहसा फट गया ग्रौर स्तिमित सौन्दर्य से जगमगाता, चाँदनी बिखेरता चाँद उग ग्राया हो। पल भर के लिए उसके होश उड गये। इस भव्य, ग्रभूतपूर्व, ग्रश्रुतपूर्व दृश्य के सामने वह नतमस्तक हो गया।

लेकिन यह पल भर के लिए ही था। जिस दृश्य ने उसके दिमाग में बगूले उठा दिये थे, ग्रब उसने उसके ग्रन्दर एक नयी पीड़ा भरी भावना पैदा कर दी।

तोगजान का विलाप, बोजेय की बेटियो का रोदन, जनाज़े का जुलूस, मातमी रंग, सवार-रहित घोडा जिसके ग्रयाल ग्रौर पूँछ के बाल तराश दिये गये थे – यह सब एक पूरे कबीले का शोक प्रकट करते थे। उन्होने

जनाज़े में क़ोनानबाय को आमंत्रित नहीं किया था, उसे माफ नहीं किया था, उसे अपना शोक आम शोक नहीं बँटाने दिया था। यह जुलूस जिसका सबसे शानदार रत्न तोगजान थी, उसकी उपेक्षा करता आगे बढ़ गया था मानो कह रहा हो, "तुम और तुम्हारा अत्याचारी बाप दूर हट जाओ। तुम हमें देखने के क़ाबिल नहीं!"

उसकी प्रेयसी का विलाप, मृत्यु को प्राप्त एक निकटवर्ती स्वजन बोजेय के लिए मातम – उसके लिए भी एक मलामत-सा था। "क्या मैं दोषी हूँ?" वह खुद को निर्दोष सिद्ध करना चाहता, लेकिन उसकी अवसन्नता ने उस पर अधिकार कर लिया। नज़रें झुकाये न तो वह कुछ देख रहा था और मृत्यु के शोक गीत के अलावा न तो कुछ सुन रहा था।

किसी ने उसकी पीठ में टहोका लगाया, "आओ, चलें!" आबाय ने अपनी अचेतावस्था से चौंककर तेज़ी से पीछे देखा। यह नाक-भौं चढ़ाये तकेजान था:

"तुम किस लिए ठुनक रहे हो?"

आबाय ने काँपकर अपने हाथ के पिछले भाग से गाल छुआ। अपना चेहरा आँसुओं से तर पाकर वह चकित हो गया।

मातमी जुलूस आगे जा चुका था और इसके व बाक़ी कारवाँ के बीच काफ़ी फ़ासला था। तकेजान का अनुसरण करके बाक़ी बच्चों ने अपने घोड़ों को एड़ लगा दी थी। ओस्पान एक लड़के से टोप छीन, उसे उलटकर पहन, हँसी के ठहाकों से डोलता, घोड़े को सरपट दौड़ा ले चला।

हँसी-खेल में वह अनसधे घोड़े पर बैठे होने की बात भूल गया। उसने पैरों से अच्छी तरह जकड़े बिना घोड़े को हाँक दिया था। अनसधा घोड़ा झपटकर आगे बढ़ा और लगाम कस सके, इससे पहले ही ओस्पान ज़मीन पर जा रहा। लेकिन लड़के ने अपने होश नहीं गँवाये। घोड़े की टाँगों से लुढ़क कर खिसकते हुए, उसने लगाम पकड़े रखा और तेज़ी से उठकर ज़ोरदार झटका दिया। हँसी से उसका चेहरा गुलाबी हो गया था और उसने ऊँचे घोड़े पर इस तरह छलाँग लगायी मानो कुछ हुआ ही न हो और तुरंत ही घोड़े पर घूँसों की बौछार कर दी। दो वर्षीय घोड़ा उछलकर आगे भाग चला। दूसरे बच्चों के घोड़े पीछे थे।

तकेजान और आबाय पीछे रह गये। तकेजान ने हमेशा की तरह अपना बड़प्पन झाड़ना शुरू कर दिया।

"तुम्हे क्या हो गया है? तुम अपने को मर्द कहते हो? ठुनकते क्यो फिर रहे हो?"

आबाय को गुस्सा आ गया

"तुम पूरे वयस्क हो, है न? लेकिन तुममे किसी बच्चे से ज्यादा बुद्धि नही। क्या बोजेय कोई अजनबी था? तुम्हे बाकियो के साथ आँसू बहाने चाहिए थे।"

"हमे? हम क्यो रोये? हमे तो उन्होने जनाजे तक मे नही बुलाया!"

"तुम्हे जीवित लोगो ने आमन्त्रित नही किया, मृत ने तो नही। मृतक को क्यो दोष दिया जाये?"

"उसे क्यो दोष दिया जाये? बेशक, मै उसको दोष देता हूँ। उसके पिता जी के साथ अच्छे ताल्लुकात नही थे।"

"और इसका दोष किस पर है?" आबाय ने पूछा। "तुम सब कुछ जानते प्रतीत होते हो – जरा बताओ तो कौन ठीक है, कौन गलत?"

"मै जानूँ या न जानूँ, मै पिताजी के साथ हूँ! उनके दोस्त, मेरे दोस्त और उनके दुश्मन, मेरे दुश्मन है।"

"क्या भेडिये के पीछे शावक का दौडना तुम बहुत बुद्धिमानी समझते हो?"

"बकवास मत करो! तुम्हारे ख्याल मे दादी से ज्यादा बुद्धिमान कोई नही – बुढापे के साथ जिनका दिमाग भी सठिया गया है!"

"और तुम पिताजी की तरफदारी करते हो। क्या तुमने उनसे बहुत बुद्धिमानी पा ली है?"

"क्या मतलब है तुम्हारा? लगता है तुम मुझे मूर्ख समझते हो!" तकेजान ने गालियाँ बकते हुए कहा।

"देखो, देखो, यही तो है तुम्हारा बडप्पन! तुम सिर्फ गाली बकने के लिए ही तो बडे हुए हो। वाह, क्या अच्छा बडप्पन है! तुमसे लोग बस गरेडियो, ग्वालिनो और मजदूरो को गालियाँ देते ही सुनते है!"

"और तुम अपने को बहादुर आदमी समझते हो, है न? जरा ठहर जाओ, मै इसके बारे मे पिता जी से कहूँगा।"

"जो तुम्हारे जी मे आये, उनसे कह दो लेकिन मै दादी को बता दूँगा, तुमने उन्हे कमजोर दिमाग कहा है।"

तकेजान ने कोई जवाब नही दिया। वह हमेशा गभीर मुकाबले से बचता था – उसमे दृढ सकल्प की कमी थी। उसके पिता दूर थे और कौन जाने वह किसका पक्ष लेंगे। यह सच है, दादी बिरले ही गुस्से मे आती थी, लेकिन जब आती थी, बहुत खतरनाक हो उठती थी। इसी वसत मे तकेजान ने अपने आऊल की किसी औरत को भद्दी गालियाँ देकर अपमानित कर दिया था और इसका नतीजा बडा दुखदायी रहा था। जब वह औरत रोती-कलपती जेरे और उलजान के पास पहुँची, दादी गुस्से से आग बबूला हो उठी थी। उन्होने तकेजान को बुलाया और उसकी अच्छी खासी पिटाई कर दी। और बदकिस्मती से यह तब हुआ था जब तकेजान – पूर्ण वयस्क नौजवान – अपनी मँगेतर से मिलने जाने की तैयारी कर रहा था।

आबाय से मै-मै तू-तू करते हुए, यह सारी बात उसके दिमाग मे कौध गयी और वह किसी तरह झगडे को खत्म करने की चिन्ता मे लग गया।

"बन्द करो यह सब, क्या तुम बन्द नही कर सकते?" गालियो की एक और झडी के साथ अनुरोध करते हुए घोडे को एड लगा वह आगे बढ गया।

उससे छुटकारा पा आबाय खुश हुआ। उसने अपने घोडे को कदम-ब कदम चलाना जारी रखा।

"भेडिये के पीछे शावक का भागना कोई बुद्धिमानी नही।" झगडे की गहमागहमी मे उसने यह शब्द कह दिये थे लेकिन उसका वास्तविक अभिप्राय अब उसकी समझ मे पूरी तरह आया था। लकीर का फकीर तो कोई भी बना रह सकता है, अपने बाप-दादो द्वारा तय रास्ते पर तो कोई भी चल सकता है! लेकिन काश, कोई मजबूत हो और अपनी राह ढूँढ सके । विचारो मे खोये आबाय को यह पता नही चला, वह कब बकानास पहुँच गया था।

बोजेय का आऊल अपनी ग्रीष्मकालीन जमीन पर आ पहुँचा है, आबाय से यह समाचार सुनते ही जेरे और उलजान ने शीघ्रतापूर्वक कोनानबाय के पास एक सदेशवाहक भेज दिया। "मातमी आऊल एकदम करीब मे है," सन्देश मे उन्होने कहा था। "अगर हम अभी वहाँ नही जाते तो हम बाद मे लोगो से निगाहे कैसे मिला पायेगे? हमे क्या करना है, कोनानबाय तुरत फैसला करे।"

ग्रौर कोनानबाय ने फैसला कर लिया। कुन्के, दस बुजुर्गो ग्रौर नौजवान के साथ वह उसी शाम बकानास ग्रा पहुँचा। फिर पडोस के बीस ग्राउलो ने किमिज़ तैयार कर, चर्बीशुदा पशुग्रो को जबह किया।

कोई पचास मर्द, चालीस ग्रौरते ग्रौर बच्चो की एक छोटी-सी मडली जिसमे ग्राबाय, तकेजान ग्रौर ग्रोस्पान भी थे, दूसरे दिन दोपहर मे रवाना हो गयी। गाडी पर जेरे ग्रौर उलजान के ग्रलावा सारि ग्रापा के नाम से जानी जानेवाली एक ग्रौर बूढी ग्रौरत थी। कोनानबाय के ग्रादेशानुसार गाडी घुडसवारो के पहले ही रवाना हो गयी थी।

कोनानबाय के साथ उसके भाई मायबासार व जाकिप, उसके निकटतम स्वजन ग्रौर उसकी तरफदारी करनेवाले जुवानतयाक, काराबातिर, तोपाय ग्रौर तोर्गाय कबीलो के दूसरे बुजुर्ग लोग थे। कुन्के, ग्रायगिज, छोटी माँ तानशोलपान तथा ग्रन्य लोग पीछे थे। पूरा जत्था ग्रागा-सुल्तान के पीछे पीछे छोटी-छोटी टोलियो मे चल रहा था।

मातमी ग्राऊल के करीब ग्राने पर सारे लोग स्तेपियो को गुजा देनेवाली ग्रावाज मे चीखते-चिल्लाते ढलान से तेजी से नीचे की ग्रोर बढ चले।

एक पुराने रिवाज के मुताबिक किसी मातम के दौरान किसी ग्राऊल या गाँव मे ग्रानेवाले सब लोगो को सरपट चाल से यह चीखते हुए ग्राना चाहिए, "हाय, मेरे ग्रपने, एकदम ग्रपने!" बुजुर्ग शुरू करते थे ग्रौर पीछेवाले उनके सकेत की प्रतीक्षा मे रहते। कोनानबाय ग्रौर उसके साथी रोते कलपते तेजी से ग्रागे बढे ग्रौर दूसरो ने उनका ग्रनुसरण किया।

ग्राबाय बीचवाली टोली मे घोडे पर सवार था। उसकी बगल मे उसका सबसे बडा भाई, कुन्के का बेटा कुदायबेर्दि, सन्देशवाहक जुमागुल ग्रौर बूढा जुमाबाय था। उनके पीछे घोडो पर तकेजान, ग्रोस्पान तथा दूसरे लोग थे।

"ग्रोय-बाय[1], मेरे ग्रपने, एकदम ग्रपने! मेरे भाई! मेरे ग्राशाश्रृग, मेरे एकदम सहारे," ग्राबाय के चारो ग्रोर वे चीख रहे थे।

जुमागुल ग्रौर तकेजान ग्रपने जीनो पर इस तरह निरतर डोल रहे थे मानो ग्रब गिरे कि तब। उन्हे देखकर कोई भी ग्रादमी यही सोचता, बेचारे दुख से मरे जा रहे ह लेकिन ग्राबाय की ग्रॉखो को धोखा नही हो पाया।

---

[1] ग्रोय-बाय – हाय-हाय का मतलब देनेवाला शब्द। – स०

उसने भी मातमी गुज़ारिश शुरू की लेकिन उसे दुख का स्वांग नही आता था और उसकी बग़ल में क़ुदायबेर्दि भी उसी की तरह स्वांग रहित था। हालाँकि उनमे बहुत कम मुलाक़ात हो पाती थी, आबाय को अपना यह भाई बहुत प्रिय था। अब उसने रस्मो-रिवाज पूरे होने तक उसी के साथ लगे रहना तय किया।

ज़ेरे की गाड़ी बोजेय के मुख्य ओताव के पास पहुँच चुकी थी। यह दूसरे ओतावों से ऊँचा और आऊल के एकदम मध्य में स्थित था। जनाज़े का सफ़ेद ओताव एक ओर था, काला-सफ़ेद झंडा एक बड़े से डंडे पर फहरा रहा था।

आऊल के सामनेवाली पहाड़ी पर चढ़ते ही क़ोनानबाय और उसकी टोली ने मातमी झंडा देख लिया और उसकी ओर वसंत के जल-प्रवाह की तरह बढ़ चले। वे चीख़ते, विलाप करते आगे आये। सफ़ेद ओताव के सामने कोई तीस आदमियों को आबाय ने अपने सफ़ेद डंडों पर झुककर रोते देखा। यह लोग मेहमानों से मिलने की तैयारी करते बोजेय के स्वजन थे।

घुड़सवार घोड़ों से उतरे। तम्बू के सामनेवाली टोली की अगुवाई बाय-दालि, बायसाल, तुसिप और क़रशा कर रहे थे। उनके पीछे अपने सफ़ेद डंडों पर झुके, सुबकते दूसरे सम्बन्धी थे।

मेहमानों का स्वागत करने तेज़ फुर्तीले नौजवानों की भीड़ आगे बढ़ आयी, उनके घोड़ों को उन्होंने बाँध दिया और फिर उन्हें बुज़ुर्गो के पास ले गये। आम दुआ-सलाम की जगह मेहमान अपने मेज़बानों को गले लगाकर रोने लगे। जब आबाय ने बायदालि, बायसाल तथा अन्य बुज़ुर्गो को इस तरह रोते देखा तो वह ख़ुद पर क़ाबू नही रख पाया और घोड़े पर से उतरते ही उसने सुबकना शुरू कर दिया। और इस तरह सबों को रोते कलपते मुख्य ओताव में ले जाया गया जहाँ शोकपूर्ण क्रन्दन अविराम रूप से चल रहा था।

मुख्य ओताव औरतों से भरा था। दरवाज़े से लेकर सम्मानजनक स्थान तक क़तारों में बैठी वे अपने कूल्हों को मातमी गुज़ारिशें बोलते हुए पीटते जाती थी। मातम करनेवाली सभी औरतो मे सबसे ज़्यादा तेज़ और अवसादपूर्ण आवाज़ बीच में बैठी बोजेय की बायबिशे की थी। वह एक काली शॉल से पूरी तरह छुपी थी, उसकी आँखो से आँसुओं का अजस्र

प्रवाह जारी था। पास बैठी पाँच लडकियाँ भी उसी तरह विलाप कर रही थी और ऐसा प्रतीत हो रहा था, ओताव का विशाल कक्ष उतना गम शायद ही सह सकेगा।

ओताव के अन्दर आने पर मर्द घुटने के बल झुक गये और औरतो के गले लगकर रोने लगे।

आबाय कुदायबेर्दि के साथ लगा-लगा अन्दर आया और अपने आस-पास के सब लोगो के गले मिला। लेकिन सबके साथ यह रस्म निभाना उसे असभव प्रतीत हुआ। आँसुओ से ओतप्रोत चेहरे के साथ कुदायबेर्दि जोर-जोर से सुबकता हुआ सबसे पहले बायबिशे से गले मिला।

"आगा-एकेम, मेरे एकदम अपने," वह बिलख पडा।

आबाय भी सबसे पहले बायबिशे के पास ही जा पहुँचा और फिर कुछ दूर बैठी लडकियो की ओर मुड गया।

आखिर लम्बा-चोडा रोना-कलपना समाप्त हुआ। सिर्फ बायबिशे का रोना जारी रहा जब कि पाँचो लडकियाँ उसके शब्दो पर सुबक-सुबक पडती। बायबिशे अपनी अपूरणीय क्षति पर क्रन्दन करती रही और नियति की कठोरता का रोना रोती ओताव मे सब किसी का हृदय विचलित कर रही थी। धीरे-धीरे, वह भी शान्त पड गयी।

लेकिन बोजेय की दोनो बेटियो का रोना बन्द नही हुआ। उनका विलाप अब मरसिया के रूप मे बदल गया था और दोनो के स्वर एक हो गये थे। स्पष्ट रूप से हरेक शब्द का उच्चारण करती हुई, वे एक साथ ही ठडी आह भरती या क्रन्दन करती, लेकिन हमेशा इतना जरूर कहती

"हाय, अब्बा! काश, आप हम लोगो के बडे होने तक तो जिन्दा रहते! आपने हमे अनाथ और तनहा कर दिया। कौन देख-भाल करेगा हमारी? हमे आँसुओ की कडवी घूँट पीने क्यो छोड दिया?" और सुननेवाले फिर खुद को सुबकने से नही रोक पाते।

आबाय के लिए यह क्षण सबसे कठिन थे।

लडकियो का शोक-गीत धीरे-धीरे अपने पिता के जीवन, उनकी बहादुरी, सम्मान और सुकृत्यो के गीत के रूप मे बदल गया। उनकी आवाज अधिकाधिक शोकपूर्ण होती गयी।

लेकिन वे सिर्फ बोजेय के बारे मे ही नही गा रही थी. उसके इर्द-

गिर्द के सब लोगो के नाम वे ले रही थी, उसके समस्त समकालीनों को वे याद कर रही थी। सहसा क़ोनानबाय का नाम श्रा गया।

मुख्य श्रोताव श्रत्यन्त निस्तब्ध हो उठा।

क़ोनानबाय मौन बैठा था, उसका टोप उसकी भौंहों तक झुका था, सिर नीचे था। लड़कियों का विलाप उसके गाल पर तमाचा-सा था।

लेकिन रिवाज के मुताबिक़ कोई भी विलाप में बाधा डालने की हिमाक़त नहीं कर सकता था: यह धर्म ग्रन्थ जितना पाक था। कोई उसे चुप करा या रोक नही सकता – यह क़ानून से ऊपर की बात थी। श्रौर श्रल्फ़ाज़ पहले से कहीं श्रधिक तीखे हो उठे:

क़ोनानबाय हमारा दुश्मन हो गया,
श्रपनी ग़लती के लिए हमें श्रपना एक बच्चा सौंप दिया।
क़ोनानबाय श्रब हमारा दुश्मन है
वहशी कुलान* जैसे वह डग भरता है,
किसी साँप से भी ज़्यादा ख़तरनाक!

निर्मम शब्दों ने क़ोनानबाय पर निष्ठुरता से प्रहार किये – जैसे उसकी श्रकेली श्राँख पर सीधे चोट की गयी हो।

उसके श्रास-पास बैठे बूढ़े किसी बबेला के डर से मूक पड़ गये। उनके गले बैठ गये, उन्होंने श्रपनी नाक झाड़ी श्रौर बेचैनी से इधर-उधर देखने लगे। लेकिन क़ोनानबाय श्रपने दाँत चबाता, मौन बैठा रहा।

श्राबाय का सिर लटक गया, उसे साँस लेना दूभर लगने लगा। बहुत पहले जब बाथबिशे ने विलाप शुरू किया था, लड़कियों के बीच उसे तोग़-जान दिखाई दे गयी थी। उसका चेहरा ढँका था श्रौर वह उसे सिर्फ़ बगल से ही देख पाया था। "काश, धरती हमें निगल जाये," उसने सोचा, "ऐसा श्रपमान सहन करने से तो यही बेहतर होगा।"

सहसा पास ही में किसी ने हैरत से जीभ बजायी। श्राबाय ने सिर उठाकर देखा: यह सारि-श्रापा थी। भौहें चढ़ाये वह उठ खड़ी हुई श्रौर श्रोताव के बीच में चली श्रायी, फिर घुटनों के बल बैठती हुई उन्होंने श्रपना काला लबादा सिर पर डाल लिया श्रौर श्रपना ही गीत शुरू किया।

---

* कुलान – वहशी घोड़ा। – सं॰

पहले उन्होंने सिर्फ़ बोजेय के बारे में गीत गाया, उसकी मृत्यु पर शोक प्रकट किया लेकिन ग्राख़िर में जोड़ दिया:

अरी बेटियो, शर्म नहीं तुमको कोई
बदी की याद बनाये रखती हो जो?
तुम्हारे बाप का करते थे सब सम्मान—
छुपाकर दफ़न किया क्यों उनको, बोलो तो?

उन्होंने इन शब्दों को ज़ोर से और साफ़-साफ़ गाकर कहा, फिर मौन हो गयीं।

विरोधी पक्षों की भावनाओं की अभिव्यक्ति औरतों के इन दो शोक-गीतों से बेहतर कुछ भी नही हो सकती थी। इससे ज्यादा कहने को कुछ भी न था। ज़ेरे की बग़ल में बैठे ग़बितख़ान ने बुख़ारा ढंग से गुनगुनाती आवाज़ में कुरान पढ़ना शुरू कर दिया। सब एकदम चुपचाप सुनते बैठे रहे।

इस तरह क़ोनानबाय ने बोजेय को अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि दी।

जब क़ुरान का गायन ख़त्म हो गया, औरतों को वहीं छोड़कर मर्द दूसरे तम्बू में भोज के लिए जा बैठे। आऊल के सम्माननीय बुज़ुर्गों सहित सबके सब, बायदालि, तुसिप मेहमानों की तीमारदारी में लगे रहे। लेकिन चाय, किमिज़ और गोश्त बोजेय के स्वजनों तथा मेहमानों के बीच के मन-मुटाव को समाप्त करने में असफल रहे। जब बायदालि और क़ोनानबाय में बातें हुई, शब्द नम्रता से कहीं कोसों दूर और सावधानी से चुने थे। बायदालि ने ख़ुद क़ोनानबाय को चाय पेश की और हर तरह की तवज्जो दिखाई। लेकिन जैसे ही उन्होंने बात करने की कोशिश की, वही अस्वाभाविक नम्रता उनके बीच आ जाती और उनके पास एक-दूसरे से कहने के लिए कुछ भी नहीं बच रहता।

उस साल जानवरों और चारे की क्या स्थिति रही, केरेय और नैमन के बीच हुई भिडंतों और किस तरह उन्होंने एक-दूसरे को तबाह कर रखा है, इन सब चीज़ों के बारे में थोड़ी बातचीत हुई। लेकिन इससे ज़्यादा कुछ भी नहीं। उसी शाम मेहमान रवाना हो गये—शांत और पराभूत।

लेकिन क़ोनानबाय को एक बड़ा-सा बोझ उतर गया महसूस हुआ।

एक बार कुन्के के घर पर कुछ देर मौन बैठे रहने के बाद उसने ज़ोर देते हुए कहा:

"सारि-आपा का बड़ा आदर-सम्मान करना चाहिए!"

२

पतझड़ शुरू हो चुकी थी। तीन दिनों से बूँदाबाँदी हो रही थी। आऊल चिंगीज़ पहाड़ियों के पार अपने ग्रीष्मकालीन स्थलों से लौट चुके थे, उन्होंने जाड़े के लिए चारे की घास जमा की और बिना समय बर्बाद किये सीधे पतझड़ के चरागाहों की ओर बढ़ गये।

जिदेबाय के घास के मैदानों और आस-पास की दूसरी जगहों में बहुत से आऊल इकट्ठे हो गये थे। उन्होंने चिंगीज़ घाटियों, पाद-पर्वतों और तराइयों में जमघट लगा दी थी।

गर्मियों के बड़े-बड़े तम्बू उखाड़कर बाँधे जा चुके थे: आऊलों ने छोटे, लेकिन गर्म ओताव लगा लिये थे। हर कोई, अपना घर जितना हो सके, ज्यादा गर्म रखना चाहता। तम्बुओं और नमदे की परतवाली दीवारों के पास आग जलायी जाती। इस मौसम में सिर्फ़ नमदे के बने ओताव सबसे अच्छे होते, क्योंकि धुएँ से उनका कोई नुक़सान नहीं होता।

आऊल ग्रीष्मकालीन स्थलों को छोड़कर पतझड़ के चरागाहों को चले गये हैं, इसकी पक्की पहचान क्या है—यह कि अब भेड़ को दूहा नहीं जा रहा। मेमने बड़े हो भेड़ों के साथ चरने चले जाते।

घोड़ों पर बैठे एक आऊल से दूसरे आऊल गपशप या वाद-विवाद करते फिरते मर्द पहले की अपेक्षा एकदम ही भिन्न दिखाई देते। ठंडी रातों और कीचड़ से मजबूर हो उन्होंने ऊँचे बूट, नमदे के मोज़े और मेष चर्म के कोट चढ़ा लिये थे। उनके घोड़े भी भिन्न होते। गर्मी में सवारी करते दुबले पड़ गये घोड़ों को ढोर के साथ चरने छोड़ दिया गया था।

गर्मियों में आराम कर रहे घोड़ों को लोग काम में ला रहे थे—थकान से बचाने के लिए वे उन्हें क़दम-ब-क़दम चाल से चलाते और मोटे हो गये धावक घोड़ों को प्राय: रात भर बिना भोजन दिये छोड़ दिया जाता।

पतझड़ का मौसम कारोबारी होता – ऐसा समय जब घोड़े ख़रीदे, बदले या उधार लिये जाते। अगर मौसम के परेशानियों और तकलीफ़देह कार्यकलाप से भरे होने अथवा सफ़र और अधिक घुड़सवारी से भरे होने की संभावना होती, मज़बूत और विश्वसनीय घोड़ों की माँग कहीं बढ़ जाती और उन्हें उनके मालिकों से अनुरोध करके, छल करके – यहाँ तक कि धमकी देकर प्राप्त किया जाता।

एक शाम, ऐसे ही एक मामले के सिलसिले में बर्षा में अपने घोड़ों पर झुके हुए मायबासार और कुदायबेर्दि तोग़ाय लोगों के मुखिया क़ुलिनशक़ के आऊल की ओर जा रहे थे। उनके साथ जुमाबाय और जुमागुल थे। जल्दी से जल्दी अपनी मंज़िल तक पहुँचने के उतावलेपन में चारों तेज़ी से अपने घोड़ों को हाँक रहे थे।

स्पष्ट रूप से क़ुलिनशक़ के आऊल में उनके आने की प्रतीक्षा की जा रही थी। आऊल के चरागाहों में चारों के दिखाई देते ही क़ुलिनशक़ टीले से उठ खड़ा हुआ।

"वे आ रहे हैं," उसने अपने "बेस-क़स्क़ों" से कहा।

"तेज़ी से घोड़े दौड़ाते आ रहे हैं," उसके सबसे बडे बेटे तुर्सिनबाय ने कहा।

"अब तो चक्कर में पड़ ही गये हैं। मनस, घोड़ा लो और पुशारबाय के पास चले जाओ। हमें उसे ख़बर कर देनी चाहिए। हर किसी को चेताने का समय मिलेगा नहीं। पुशारबाय ही दूसरे कोतिबक़ों को ख़बर करा देगा," क़ुलिनशक़ ने आदेश दिया।

"और दूसरे लोग जिगितेक व बोकेंशी को बता दे सकते हैं," तुर्सिन-बाय ने सुझाया।

"उन्हें बता देना, अगर वे सचमुच चंगुल से निकलने में मेरी मदद करना चाहते हैं तो तुरंत आ जायें!"

"अगर वे अपना वचन रखना चाहते हैं तो आज की ही रात आ जायें," क़ुलिनशक़ के दूसरे बेटों ने ज़ोर डाला।

मनस ने चुपचाप अपने पिता और बड़े भाइयों की हिदायतें सुनीं। उसे तुरंत चला जाना था, लेकिन वह कुछ देर रुककर आ रहे घुड़सवारों को देखता रहा।

जब मायबासार और उसके साथी क़ुलिनशक़ के ओताव के पास पहुँचे,

वह टीले से उतर चुका था। उसने औपचारिकता से उनका अभिवादन किया और अप्रिय मेहमानो को मुख्य ओताव के अन्दर ले गया।

मनस तुरत ही उचककर घोडे पर जा बैठा और काराऊल की ओर रवाना हो गया। मायबासार पर नजर पडते ही वह समझ गया, अब समय गँवाना उचित नही।

मायबासार की भाव-भगिमा ही स्पष्ट रूप से अनिष्टकारी थी। उसने न तो अपनी पेटी खोली और न ही टोप उतारा। पीला चेहरा, नाक फडकाता, घुडसवारी का चाबुक थामे, दोनो हाथ कमर पर चढाये खडा वह घृणा और तिरस्कार से कुलिनशक व उसके बेटो को घूरता रहा।

"यह मै क्या सुन रहा हूँ, स्वजनो? तुम लोगो ने मेरे सन्देशवाहक को पीट-पाटकर भगा दिया? अगर उसने गलती की, तुम लोगो ने मिर्जा से शिकायत क्यो नही की? या तुम कितने ताकतवर हो, यह दिखाने को उत्सुक थे? क्या यह कल की ही बात नही, तुम हम लोगो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर खडे थे? तुम चाहते क्या हो? बोलो! तुम अपनी शिकायत दायर कर सको, इसके लिए मिर्जा ने विशेष रूप से मुझे भेजा है। तुम देख ही रहे हो, उन्होने अपने बेटे कुदायबेर्दि को भी भजा है।"

मायबासार ने बुझ रही चिनगारियो पर थूका और कुलिनशक की ओर रुख कर लिया।

कुलिनशक फर्श पर बिछे एक बिस्तरे पर बैठा था। कुलिनशक के बेटो ने अपने सिर इस तरह झुका रखे थे मानो उन्होने कुछ सुना ही न हो। अपने पिता के पास बैठा अकेला कादिरबाय ही अपनी निगाहे नही चुरा रहा था बल्कि मायबासार की निगाहो का सामना भी कर रहा था।

कुछ पलो के लिए कुलिनशक अपनी आँखे बन्द किये चुपचाप बैठा रहा।

"तुम्हारा कहना है, हमने तुम्हारे सन्देशवाहक को पीटा है," उसने कहना शुरू किया। "लेकिन नेक मायबासार, तुम अपनी करनियो के बारे मे कुछ क्यो नही कहते? अगर मिर्जा इतने ही चौकस है तो फिर उनपर क्यो नही ध्यान देते जो लूट-पाट मचाते है? वह तुम पर ध्यान क्यो नही देते?"

"बकवास न करो, आकसाकाल! दोषी कौन है, यह तय करने और ऐसी बाते फिर न हो, यही देखने तो मै यहाँ आया हूँ।"

"दूसरे शब्दो मे, मै चुप रहूँ, यही बेहतर होगा। तुम यही सुझाना

चाहते हो न? लेकिन मैंने तुम लोगों से अलग होकर उनके साथ मिल जाने का फ़ैसला कर लिया है, जिन्हें मेरी ज़रूरत है। इससे तुम्हारा क्या जाता है?"

"अरे, लेकिन इसके लिए राज़ी ही कौन होगा? तुम्हें जाने कौन देगा? मिर्ज़ा ने तुमसे हम लोगों के साथ ही रहने का अनुरोध किया है। उन्होंने वायदा किया है, वह ख़ुद सारी जाँच-पड़ताल करेंगे।"

"ख़ुदा उन पर मेहरबान हो! लेकिन अगर मैं अपनी राह चलता हूँ तो उन्हें न तो बुरा ही मानना चाहिए और न ही मुझे डाँटना-फटकारना चाहिए।"

"लेकिन क्यों? क्या बात हो गयी है, आक़साक़ाल?" क़ुदायबेर्दि बीच में ही बोल उठा। "पिता जी का कहना यह है, 'अगर वह मुझे छोड़ जाता है, समस्त तोग़ायि लोगों को वह मेरे ख़िलाफ़ कर देगा। इससे अच्छा होगा, हम एक जगह बैठकर सारी बातों पर विचार करें और कौन दोषी है, इसका पता लगायें। वही कोई जगह बताये जहाँ हम विचार विमर्श कर सकते हैं। वह बताये, वह क्या चाहता है, उसे मुआवज़ा चाहिए, ले ले। लेकिन उसे हम लोगों से अलग होने मत कहो। उसे हमारे दुश्मनों से नहीं जा मिलना चाहिए! यही आपसे पिता जी ने अनुरोध किया है!"

क़ुलिनशक़ के जवाब देने से पहले ही मायबासार बोल उठा:

"ज़रा बताओ, तुम मुझे किस बात का दोष देते हो? तुमने तो ख़ुद मेरे संदेशवाहक की पिटाई कर दी थी," उसने ज़ोर डालते हुए कहा।

"मेरे बेटों के पास एक ही तो क़दमबाज़ घोड़ा है। जब तुमने उसकी माँग की, मैंने उसे देने में अपनी असमर्थता समझाने की कोशिश की, उसे समझना कठिन था क्या? उस पर तुमने ज़बर्दस्ती घोड़ा ले आने के लिए अपना सन्देशवाहक भेज दिया, वह भी ऐसा कटखना जो भेड़िये से भी कहीं ज़्यादा दुष्ट था। तुमने आऊल को लूट लेने की कोशिश की है। उसमें औचित्य रह ही कहाँ गया, मायबासार?"

"घोड़े की माँग मैंने नहीं, मिर्ज़ा ने की थी। इसी क़ुदायबेर्दि को घोड़ा भा गया था, सो मैंने सोचा: लड़के ने पहली बार घोड़े की इच्छा जतायी है—इसकी मदद करनी चाहिए। क़ुलिनशक़ इस छोटी-सी चुहल से नाराज़ नहीं होगा। इसी कारण मैंने सन्देशवाहक को भेजा था।"

"चुहल! क्या चुहल थी वह?" क़ुलिनशक़ के बहादुर बेटों में से सबसे बड़े तुर्सिनबाय ने हैरत जताते हुए कहा।

"क्या आप हमारी आँखों में धूल झोंकने की कोशिश कर रहे हैं? वह कोई चुहल न थी बल्कि सीधे ज़बर्दस्ती थी – ऐसा सिर्फ़ ऐरे-ग़ैरों, ग़ुलामों और उनके साथ किया जा सकता है जो अपनी हिफ़ाज़त ख़ुद नहीं कर सकते हैं," क़ुलिनशक़ का तीसरा बेटा क़ादिरबाय बोल उठा।

समझौता असंभव था, भरी-भरी-सी चुप्पी छा गयी। मायबासार ने जिगितेक से जा मिलने की उसकी इच्छा के लिए क़ुलिनशक़ को फिर बुरा-भला कहना शुरू कर दिया।

जो सन्देश क़ोनानबाय ने मायबासार और क़ुदायबेर्दि के मार्फ़त भेजा था, उसका ताल्लुक सिर्फ़ इसी मामले से था। क़दमबाज़ और सन्देशवाहक को पीटने की बात तो बाद में जानबूझकर जोड़ दी गयी थी। मायबासार क़ुलिनशक़ को झाँसा देना चाहता था लेकिन क़ुलिनशक़ किसी भी तरह ग़लती मानने को तैयार न था।

कुछ दिन पहले घोड़े को जबरन हथिया लेने की मायबासार की कोशिश से क्रुद्ध हो क़ुलिनशक़ ने उसके सन्देशवाहक की पिटाई कर दी थी और क़ोनानबाय से अलहदा हो जाने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। अपने क़बीले में शामिल कर लेने और क़ोनानबाय के चंगुल से निकलने में मदद की प्रार्थना करते हुए, उसने एक घुड़सवार को जिगितेक के पास भेजा था। उसी सुबह क़ोनानबाय को इसके मुतल्लिक़ उड़ती ख़बर मिली थी। तोग़ाय जैसे क़रीबी क़बीले का अलहदा हो जाना क़ोनानबाय को अपमानजनक और ज़बर्दस्त नुक़सान-सा प्रतीत हुआ।

बोजेय की मौत के बाद से गर्मी भर कोई खुली झड़प नहीं हुई थी लेकिन दोनों पक्ष अपने दोस्तों और सहयोगियों की गोटियाँ बैठाने में कोई क़सर नहीं रख रहे थे। छुपे-दबे तौर पर ही सही लेकिन दुश्मनी और गहरी ही होती जा रही थी। दोनों पक्षों में नफ़रत और ग़ुस्सा उस बिन्दु पर पहुँच गये थे जहाँ विस्फोट अनिवार्य होता है।

तोकपाम्बेत की लड़ाई अन्तिम सबसे बड़ी मुठभेड़ थी जिसकी समाप्ति बोजेय की द्वेषपूर्ण पिटाई के साथ हुई थी। तबसे ही जिगितेक, कोतिबक़ और बोकेंशी क़ोनानबाय के साथ अपना हिसाब चुकाने के लिए दृढ़ संकल्प हो जवाबी कार्रवाई की तैयारी में लगे थे। ऊपरी तौर पर तो ऐसे बोजेय

की मौत के बाद से शान्ति थी लेकिन यह भ्रान्तिपूर्ण शांति थी। बोजेय की मौत ने क़ोनानबाय के विरोधियों को एकजुट और उनके संकल्प को दृढ़ बनाया था। और सर्वाधिक दुर्धर्ष बोजेय के निकटतम मित्र थे: बायदालि, बायसाल, क़ाराताय, तुसिप और सुयून्दिक़।

क़ोनानबाय ने क़िस्मत के मारे घोड़े की मांग ग़लत घड़ी में की थी। किसी दूसरे समय क़ुलिनशक़ घोड़ा दे देता – इनकार करने की दिलेरी उसमें न थी। लेकिन अब उसे मददगार मिल गये थे – बायसाल और पुशारबाय ने एकाधिक बार कोतिबक़ की रक्षा का वचन दिया था। क़ुलिनशक़ ने अच्छा मौक़ा देखा और इनकार कर दिया।

मायबासार नयी स्थिति को समझ पाने में असफल रहा था। "भला, वह मुझे घोड़ा नहीं देगा," उसने सोचा था। "यह क्या बकवास है! अगर हम अपनी मनपसन्द चीज़ तोग़ाय से भी नहीं ले सकते तो हमारी हैसियत ही क्या? और अगर हम ले ही लें तो वह कर क्या सकता है?"

क़ुलिनशक़ के घोड़ा न देने से मायबासार ग़ुस्से से भर उठा था और उसने ताक़त का इस्तेमाल किया था जिसके कारण तोग़ाय ने इर्गिज़बाय से अलहदा हो जिगितेक व क़ोतिबक़ के साथ जा मिलने का फ़ैसला कर लिया था।

मायबासार ने क़ुलिनशक़ को फुसलाने की अपनेतथा काफ़ी कोशिश की, लेकिन उसकी दलीलें ठुकरा दी गयीं। आख़िर वह आपे से बाहर हो उठा और पहले की तरह स्वभाववश धमकियों पर उतर आया।

"अब, क़ुलिनशक़-अक़साक़ाल, मैं तुम्हारे सामने अलहदा न होने का मिर्ज़ा का अनुरोध रख चुका हूँ। और मैं भी तुम्हें अलहदा न होने के लिए कह रहा हूँ। मैं सब कुछ कह चुका हूँ और बक-बक करते नहीं रहना चाहता। तुम अलहदा नहीं होगे, इसका वचन मुझे दो। नहीं तो आज तुम्हें पछताना पड़ेगा!"

क़ुलिनशक़ ने ग़ुस्से से मायबासार की ओर देखा।

"अच्छा, तो यह मतलब है? तो फिर ठीक है, मैं भी अब और कुछ नहीं कहूँगा। मैंने काफ़ी देखा, सहा है। यह रहा मेरा जवाब: मैं अलहदा होऊँगा!" उसका लहजा फ़ैसलाकुन था।

मायबासार के साथी व्यग्र हो उठे और उन्होंने एक-दूसरे को सवाली निगाहों से देखा।

फट पड़ते हुए मायबासार ने अपना चाबुक कुलिनशक के बिस्तरे पर दे मारा। गुस्से से वह बेदम हो रहा था।

"मै जानता हूँ, तुम किसके साथ जा मिलना चाहते हो! मै जानता हूँ, कौन तुम्हे बहकाकर ले जा रहे है। बेशक, उन्होने तुमसे वायदा किया है: 'हम तुम्हारी रक्षा करेगे! डरो मत!' ज़रा मेरे चगुल से तुम्हे छुड़ाकर ले जाने की कोशिश तो करे। बायदालि और बायसाल अपना सीना ठोकते है और ख़ुद को बड़ा व मज़बूत समझते है! बहुत अच्छा, हम भी देखेगे! मै उन मिर्ज़ाओ की पिछाड़ी मे भाला ठोकने ज़िन्दा ही रहूँगा!" मायबासार सिर से पॉव तक कॉप रहा था और उसकी ऑखो मे शैतानियत चमक रही थी। "उन्हे इसकी कीमत चुकानी होगी। पिछाड़ी खोलकर उन्हे क़ीमत अदा करनी होगी! उन्हे तोकपाम्बेत की याद आ जायेगी!"

क़ुलिनशक़ के पाँचो बेटो मे सबसे ज्यादा उत्तेजित और झगड़ालू क़ादिरबाय ख़ुद पर क़ाबू नही रख पाया।

"बहुत हो गया, जनाब वोलोस्त प्रमुख, बहुत हो गया! तोकपाम्बेत जैसी लज्जाजनक घटनाओ को याद न करना ही बेहतर होगा।" वह भी ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहा था।

सहसा दो नौजवानो के साथ पुशारबाय अन्दर आ गया। यह वही पुशारबाय था जिसने पिछले साल तोकपाम्बेत की लड़ाई मे बोजेय को बचाने की कोशिश की थी और क़ोनानबाय के कोड़े खाये थे। वह एक विशालकाय, मज़बूत, दढ़ियल आदमी था। वह उस चोट को नही भूल पाया था और उसी की बदौलत बायसाल और कोतिबक क़ोनानबाय से अलहदा हो जिगितेक से जा मिले थे।

उसके अन्दर आते ही कुलिनशक के बेटो मे उत्तेजना छा गयी और किसी घटना की संभावना से वे तनावपूर्ण हो उठे। बाहर अधिकाधिक क़दमो की आहट सुनाई दी। "कौन हो सकता है?" जुमाबाय सोच रहा था। "क्या होनेवाला है?" उसने प्रश्न भरी दृष्टि मायबासार पर डाली।

"क्या घर पर कोई है?" दरवाज़े के बाहर से आवाज़ आयी।

"मैं यही हूँ," पुशारबाय ने ज़ोर से कहा।

मनस के नेतृत्व मे दस नौजवान तम्बू में श्रा धमके। बेताबी से उनका इन्तज़ार कर रहे उसके भाई मायबासार श्रौर उसके साथियों पर टूट पड़े।

"भाग निकलो," श्रपने चाबुक से प्रहार करने की कोशिश करते हुए, बोलोस्त प्रमुख गरज उठा। वह श्रभी श्रपने पैरों पर उठ भी नहीं पाया था। लेकिन क़ादिरबाय उससे गुँथ गया श्रौर उसे चारों खाने चित्त करके उसके सीने पर जा बैठा। दूसरे तीनों की भी यही गति हुई।

उसके बाद जो कुछ हुश्रा, वह मायबासार के सन्देशवाहक की हुई पिटाई से भी कही बुरा था।

पुशारबाय, क़ादिरबाय श्रौर मनस मायबासार की उस समय तक ठुकाई करते रहे जब तक वे खुद बेदम नही हो उठे। क़ुदायबेर्दि को छोड़कर बाकी दोनों के साथ भी वैसा ही किया गया। क़ुदायबेर्दि को क़ुलिनशक़ ने बचा दिया था। उसने उस किशोर को एक श्रोर खीच लिया श्रौर श्रपनी पोशाक की तहों से छुपा लिया। सहसा मायबासार की नि.शब्द ठुकाई कर रहे नौजवान एक साथ चीख़ पड़े, "उसे श्रोताव से बाहर ले चलो! उसे घसीटकर बाहर ले चले!"

जब वे मायबासार को घसीटकर बाहर ला रहे थे, क़ादिरबाय विद्वेषपूर्ण उल्लास से भर उठा।

"वह हमे कपड़े उतरवा लेने की धमकी दे रहा था! वह सिर्फ़ बक बक कर सकता है लेकिन हम उसे दिखायेंगे, यह कैसे किया जाता है। उसे नंगा कर दो, सब कुछ उतार लो!" मायबासार को पकड़कर उसने उसका लबादा, उसके बूट, उसकी पतलून – सब कुछ उतार लिया। उसकी नंगी पीठ पर घूँसों की छाप पड़ने लगी। उसने मायबासार पर टूटते हुए ज़ोरदार ठोकर लगायी। "तुमने हम लोगों के साथ क्या नही किया है!" हरेक ठोकर पर क़ादिरबाय हाँफ उठता। "तुम्हें यह बदतमीज़ी मिली कहाँ से? मैं तुम्हारी श्रौर भी ऐसी-तैसी करूँगा!"

उसने मायबासार को पलट दिया।

"क्या तुमने कहा था, हमारी पिछाड़ी में तुम भाला घोंप दोगे, क्यों? श्रब भी कहते हो? तो, फिर यह रहा तुम्हारा भाला!" श्रौर उसने श्रोताव के पास ही पड़े ऊँट के सूखे गोबर के दो-तीन गोले उसकी नंगी पिछाड़ी में डाल दिये। "श्रगर तुममे तनिक भी हया होगी, तुम डूब मरोगे," श्रौर उसने उसे एक श्रौर ठोकर लगा दी।

क़ोनानबाय के भाई और बेटे को ज़लील करने के बाद क़ुलिनशक़ का आऊल उसी रात अपने नये सहयोगियों के पास रवाना हो गया। आऊल के रवाना होते ही मनस द्वारा बुलाये गये जिगितेक और कोतिबक़ लोगों की एक रक्षा-पंक्ति उसके इर्द-गिर्द आ जुटी। उसी रात बहुत से तोग़ाय आऊल जिगितेक से जा मिले।

जब तोग़ाय काफ़ी दूर जा चुके थे तभी मायबासार और उसके साथी छुटकारा पा सके। जब तक वे अपने घोड़े ढूंढ़ पाये, सुबह हो चुकी थी और दोपहर होने से पहले वे क़ोनानबाय के पास जा पहुँचे। ऐसी घटना होने पर क़ोनानबाय के सारे समर्थक जिदेबाय में एकत्र हुए और इर्ग़िज़बाय, तोपाय, जुवानतयाक़ और क़ाराबातिर के आऊलों ने दस मील तक चारों ओर से स्तेपियों को छा लिया।

"जिगितेक ने मायबासार और क़ुदायबेर्दि को पीटा और बेइज़्ज़त किया। वे क़ुलिनशक़ के आऊल को ज़बर्दस्ती ले गये।" ऐसी ख़बर आऊल आऊल में फैल गयी।

क़ोनानबाय ने फौरी आदेश दिये और पलक झपकते डेढ़ सौ नौजवान अपने घोड़ों पर जा बैठे। उनका नेतृत्व क़ोनानबाय, उसका दत्तक भाई इज़गुत्ति और भतीजा आक़बेर्दि कर रहे थे।

क़ोनानबाय ने आगे बढ़ रहे जिगितेक को एक बार भी आँखों से ओझल नहीं होने दिया था। उसने दोपहर में एक नया आदेश दिया:

"उन्हें हमले व लूट-पाट पसन्द हैं। ज़रा उन्हें भी इसका स्वाद लेने दो। हमला करके उस जिगितेक कारवाँ को वहीं रोक लो!"

बेहिचक वह अपने आदमियों को मुसाकुल घाटी से गुज़र रहे एक बड़े कारवाँ के ऊपर झपट पड़ने को बढ़ा ले चला। वे किस पर हमला बोल रहे हैं, इसका तनिक भी विचार किये बिना घुड़सवारों ने सहसा और वहशियाने ढंग से यात्रियों पर धावा कर दिया। क्रोधाभिभूत क़ोनानबाय में ध्यानपूर्वक सब बातों पर विचार करने की ताक़त ही नहीं रह गयी थी। "यह जिगितेक का कारवाँ है, बस यही काफ़ी है!"

यह वास्तव में जिगितेक कारवाँ ही था लेकिन यह बोजेय के जनाज़े का ओताव ले जानेवाला कारवाँ था।

क़ोनानबाय की सेना कारवाँ के अग्रभाग पर टूट पड़ी, पुरुषों को तितर-बितर कर दिया और घोड़े व ज़ानवरों के साथ चंपत हो गये। इर्ग़िज़बाय

कारवाँ पर भी क़ब्ज़ा कर लेना चाहते थे, लेकिन आगे-आगे चल रहे जाक़िप और इज़गुत्ति ने बोजेय के कारवाँ को पहचान लिया और घुड़सवारों को पीछे ही रोक लिया। बोजेय की दोनों बेटियाँ, अयाल व पूँछ कटे घोड़े को आगे-आगे लिये, मानो उन्हें अपने आस-पास की कोई ख़बर ही न हो, शोकपूर्ण क्रन्दन करती जा रही थीं। बोजेय की बायबिशे ने अपने घोड़े को लगाम दे, ऊँटों को रोक, हमलावरों को सम्बोधित किया :

"हाय, हाय! बेशर्मी! तुम जनाज़ेवाले कारवाँ पर चढ़ आये हो! तुझे क़ब्र में भी चैन न मिले, नीच कुत्तो!"

यह बोजेय का कारवाँ है, यह मालूम होने पर क़ोनानबाय ने तुरंत ही अपने आदेश बदल दिये :

"उस कारवां को सिर्फ़ छोड़ दो! बस उन्हें वहीं अपने ओताव खड़े कराकर रोक दो।"

क़ोनानबाय की सेना के लौट जाने के बाद बोजेय का कारवाँ एकत्र हो घाटी में अपने तम्बू गाड़ने लगा।

जिगितेक के आऊलों में यह ख़बर तेज़ी से पहुंची · "क़ोनानबाय ने बोजेय के जनाज़ेवाले कारवां पर हमला कर दिया है! उसने बोजेय की स्मृति को कलंकित कर दिया है!"

जिगितेक सारी रात अपने हथियार व दूसरे साज़-सामान ठीक करने में लगे रहे। उनका हरेक आदमी घोड़े पर सवार हो, बोजेय के आऊल में आ पहुँचा। धावा बोलने का समय आ गया है, आख़िर इसका फ़ैसला करते हुए बायसाल ने कोतिबक़ की सेना पंक्तिबद्ध की। बोकेंशी को सुयून्दिक़ ने एकत्र किया। उसी रात जिदेबाय में क़ोनानबाय के समर्थकों का भी ताँता लगा रहा। लड़ाई तीन मील से भी कम दूर पर स्थित मसाकुल घाटी में होनेवाली थी। सिर्फ़ पड़ोसी क़बीलों से ही क़ोनानबाय ने अपने समर्थक नहीं बटोरे थे बल्कि अतिरिक्त घोड़ों के साथ अपने सन्देशवाहक तोबिक्ति की सर्वाधिक दूरवर्ती शाखाओं को भी भेज दिये थे।

बायदालि और बायसाल ने भी ऐसा ही किया था। उन्होंने अपने सन्देशवाहक कोक्शे के क़ाराताय के आऊलों और मिर्ज़ा व ममाय क़बीलों की असंख्य शाखाओं को रवाना कर दिये थे।

सावधानीवश बायदालि ने एक और भी क़दम उठाया था। क़ोनानबाय के विरुद्ध शिकायतें और फ़रियादें तैयार करके उनपर विभिन्न क़बीलों की मुहरें लगा दी। शिकायत में कहा गया था, आगा-सुल्तान और शासक क़ोनानबाय ने आऊलों को लूटा और एक मातमी कारवाँ पर हमला किया है, उसने तोबिक्ति के लोगों को भ्रातृघात में फँसा दिया है। अन्त में उसने यह सब कुछ मुस्तैदी से रवाना कर दिया। फिर बायदालि ने फ़रियादों को तुसिप के सुपुर्द कर दिया, उसे पाँच नौजवान दिये और रुपयों से उसकी जेब भर दी। बहुत से अतिरिक्त घोड़ों के साथ यह टोली क़रक़रालीस्क की ओर रवाना हो गयी।

बायदालि को धैर्यपूर्वक लड़ाई की प्रतीक्षा अधिक नही करनी पड़ी।

पौ फटते ही क़ोनानबाय की सेना युद्ध के नारे लगाते, ढोल पीटते आगे बढ़ चली।

बायदालि, बायसाल और सुयून्दिक़ ने तुरंत घोड़ों पर सवार हो अपने आदमियों को एकत्र किया। जिगितेक के घोड़ों के ज़ीन कसे थे और वे तैयार खड़े थे, सोयिल और चोक़मार जल्दी से हाथों में थाम वे चल पड़े। कुछ ही पलों में क़ोनानबाय के घुड़सवारों को अपने विरोधी सिर ताने सामने खड़े मिले। इर्गिज़बाय और जिगितेक एक-दूसरे पर निर्मम भाव से प्रहार पर प्रहार करने लगे, धूल के बड़े-बड़े बादल उड़ चले।

बाद में मुसाक़ुल की लड़ाई के नाम से मशहूर हुए, इस द्वन्द्व की याद तोबिक्ति लम्बे अर्से तक करते रहे। दोनों ओर से हज़ार-हज़ार घुड़सवारों ने इसमें भाग लिया था। क़ोनानबाय के पास सेना की अधिकता न थी और उसके हमले अनवरत रूप से निष्फल कर दिये जाते। हर बार की मुठभेड़ मे दस या पन्द्रह आदमी घायल होते और उन्हें तुरंत मैदान से हटा लिया जाता।

दूसरे दिन भी भयानक लड़ाई हुई लेकिन किसी पक्ष को श्रेष्ठता नहीं प्राप्त हो सकी।

यह अद्भुत लड़ाई जब तीसरे दिन चल रही थी, क़ोनानबाय ने अपने श्रेष्ठतम घुड़सवारों मे से डेढ़ सौ को चुने हुए घोड़ों पर सोयिलों के बदले फरसों और तेज़ भालों से लैस हो, सवार होने का आदेश दिया। जिगितेक के भयानक प्रतिरोध और साहस से कुपित हो, साधन की परवाह किये बिना, क़ोनानबाय ने उन्हें कुचल डालने का दृढ़-संकल्प कर लिया।

उसने दुश्मन के लिए एक जाल बिछाने का फ़ैसला किया। सिर्फ़ सोयिलों से लैस कई दस्ते उसने लड़ाई में उतार दिये और जब लड़ाई पूरे ज़ोरों पर थी, भाग खड़े होने का स्वांग करते उसके आदमी लौट चले। उसे उम्मीद थी, ऐसा करने पर विरोधियों के सर्वश्रेष्ठ नौजवान आगे बढ़ आयेंगे।

चाल सफल रही। जिगितेक और क़ोतिबक़ घुड़सवारों के दुर्धर्ष जत्थे जिनमें क़ुलिनशक़ के पाँचों शक्तिशाली बेटे और पुशारबाय व करेके भी थे, अपने भाग रहे दुश्मनों का पीछा करने निकल आये। इर्गिज़बाय की चाल में आये, वे अनवरत रूप से उस पहाड़ी तक बढ़ते चले आये, जहाँ खड़ा क़ोनानबाय उन पर नज़र रखे था। इसी की प्रतीक्षा में वह था। सहसा फरसों व भालों से लैस नौजवानों की सेना को बढ़ाते हुए, घनघोर लड़ाई में वह पिल पड़ा।

इज़गुत्ति के नेतृत्व में दुश्मनों की पाँत को काटते हुए, उन्होंने उन्हें भागने पर विवश कर पीछा शुरू कर दिया। दस नौजवानों ने मुक़ाबला की कोशिश की तो उन्हें वहीं धराशायी कर दिया गया। फरसे लिये इज़गुत्ति ख़ुद पुशारबाय पर टूट पड़ा, लेकिन वृद्ध व्यक्ति की सहायता के लिए करेके के सामने आ जाने पर, वह उसी नौजवान पर पिल पड़ा। फरसा भयानक शक्ति से उस पर आ रहा। सिर बचाने के लिए करेके ने झटका दिया तो फरसा उसकी नाक सफ़ाचट कर गया। उसके चेहरे से ख़ून का फ़ौवारा फूट निकला और वह पुशारबाय की आँखों के सामने ही अपने सरपट दौड़ रहे घोड़े से नीचे गिर पड़ा। उसके साथी उसे अपने साथ नहीं ले जा सके – उन्हें अपनी जान बचानी ही मुश्किल लग रही थी।

लड़ाई ऐसी मंज़िल पर पहुँच गयी थी जब आम तौर से कहा जाता था: "दुश्मन भाग खड़े हुए।"

ज़ोरदार पीछा करते क़ोनानबाय जब बढ़ा जा रहा था, उसे जिगितेक मोर्चे के पीछे धूल के बड़े बादल उड़ते दिखाई दिये। विस्तृत पहाड़ी नये घुड़सवारों से ज़रख़ेज मालूम पड़ रही थी।

इर्गिज़बाय के जासूसों ने पहले ही सूचना दी थी: "जिगितेक ने अपना एक संदेशवाहक कोनिर लोगों के यहाँ भेजा है। ममाय योद्धा भी आनेवाले है।" ममाय लोगों के आने से जिगितेक मैदान मार जायेंगे, क़ोनानबाय यह स्पष्ट रूप से जानता था। यह वास्तव में सबसे बड़ा ख़तरा था। और

अब जब कि उसने दुश्मन को भागने पर विवश कर दिया है, ममाय आ गये हैं। इज़्ग़ुत्ति और उसके दस्ते के लोगों ने पेशोपेश में पड़कर अपने घोड़ों की रास थाम ली। धूल के बादलों से उन्होंने यही अन्दाज़ लगाया, कम से कम पाँच सौ नये घुड़सवार तो पहाड़ी से ज़रूर ही चले आ रहे होंगे।

क़ोनानबाय की सेना पलट पड़ी, लेकिन सबसे विलक्षण बात थी, जिगितेक ने उनका पीछा करने में कोई रुचि नहीं दिखाई। युद्धरत क़बीले ठीक उसी समय मैदान से हट गये जब लड़ाई के चरम सीमा पर पहुँचने की उम्मीद थी।

यह बात क़ोनानबाय के भी दिमाग़ में नहीं आ पायी कि उसे भी पूरी तरह धोखा दिया गया है। बायदालि ने भी एक चतुराई भरी चाल चलायी थी। उसी ने कोनिर और ममाय फौजी दस्तों के आने की ख़बरें फैलायी थीं और निकटतम आऊलों को अपने ऊँट जमा करके उन्हें पहाड़ी के ऊपर ले जाने का आदेश दिया था। उसने उन्हें अधिक से अधिक धूल उड़ाने कहा था। जिस भीषण टुकड़ी ने क़ोनानबाय के योद्धाओं के हौसले पस्त कर दिये थे, वह कुछ और नहीं बल्कि ऊँटों का एक ढोर भर थी।

इसका तनिक भी संदेह किये बिना क़ोनानबाय ने पीठ दिखा दी थी और बायदालि ने पीछा करने का ख़तरा नहीं उठाया।

तीन दिनोंवाली मसाकुल लड़ाई का यही परिणाम हुआ था; क़ोनानबाय अपने विरोधियों को हराने में असफल रहा था और जिगितेक ने आग़ा-सुल्तान को खदेड़ देने और हाथों में हथियार लेकर अपने अधिकारों की रक्षा कर सकने की क्षमता सिद्ध कर दी थी।

लड़ाई ख़त्म हो चुकी थी, लेकिन पूरे इलाक़े को अपने चंगुल में ले लेनेवाली आग के धुएँ की तरह अनन्त अफ़वाहें, झूठे-सच्चे, अलग-अलग विवरण, गरमागरम बहसें और अनगिनत कहानियों का बाज़ार गर्म हो उठा।

जहाँ तक बायदालि और उसके दोस्तों का सवाल था, उनकी आवाज़ें आत्मविश्वासपूर्ण हो उठी थीं; वे अधिक भव्य और प्रभावशाली प्रतीत होते थे। दूसरी ओर, क़ोनानबाय के समर्थक संयमित और मौन थे—वे पराजित हो गये हैं, ऐसा उनके मौन भरे प्रचण्ड रोष से ही प्रकट होता था।

क्या किया जाये? हाथों में हथियार लेकर अपने विरोध करनेवालों और उसके विरुद्ध अपनी शक्ति की आज़माइश करनेवालों को क़ोनानबाय कैसे अपने वशीभूत करेगा? यह विचार क़ोनानबाय को तनिक चैन नहीं लेने दे रहा था।

फिर शान्ति और ख़ामोशी के दस दिन बीत गये। क़ोनानबाय के दुश्मन धूम मना रहे थे। "क़ोनानबाय का क़िला ढह गया; उसकी ताक़त हिल गयी," वे बार-बार कहते। भोज पर भोज होते, घोड़े पर घोड़े, भेड़ पर भेड़ काटे जाते। दुआएँ की गयीं। नयी दोस्तियाँ क़ायम हुई और आम आनन्द-उत्सव के बीच विवाह और वाग्दान सम्पन्न किये गये।

जिगितेक के आनन्द मनाने का एक अन्य कारण भी था। तुसिप के रवाना होने के बाद दस दिन भी नहीं बीते थे, क़रक़रालींस्क से पन्द्रह सशस्त्र कोस्साक आ पहुँचे। उस समय तक तुसिप भी लौट आया था और यह आम धारणा थी कि मुख्य प्रशासक सशस्त्र सेना लेकर क़ोनानबाय से ज़िरह करने आया था।

दस्ते में सचमुच ही कॉर्प्स द्वारा भेजा एक अधिकारी चेर्नोव भी शामिल था। जिदेबाय और मुसाकुल के बीच दस ओताव उनके लिए लगा दिये गये थे। चेर्नोव ने तीन दिनों तक छानबीन की और नतीजे के तौर पर क़ोनानबाय के प्रति अत्यन्त ही कड़ा रुख़ अख़्तियार किया। यद्यपि उसने ऐसा कुछ भी नहीं कहा था लेकिन यह स्पष्ट था, वह क़ोनानबाय को आग़ा-सुल्तान के पद से हटा देना पूर्व निश्चित परिणाम समझता था। इर्ग़िज़बाय नेता के साथ उसका व्यवहार कोई विशेष प्रकार का नहीं था, सब इसे महसूस कर सकते थे। जिगितेक, बोकेंशी, बोर्साक़ और कोतिबक़ ने इसका शीघ्रतापूर्वक लाभ उठाने की कोशिश की और अधिकारी के पास फ़रियादों का अम्बार लगा दिया।

बहरहाल, क़ोनानबाय के समर्थक भी इसमें पीछे नहीं रहे थे और इस प्रकार जवाबी कार्रवाई कर रहे थे: "वे लोगों की हत्या कर रहे थे, आऊलों को लूट रहे थे और चारागाहों को जला रहे थे!" जिगितेक के बुज़ुर्गों और उनके सहयोगियों के विरुद्ध सर्वाधिक वहशियाना शिकायतें दर्ज करायी गयीं। क़ोनानबाय न्याय के लिए लड़ रहा था और वास्तविक अपराधी झूठ बोलकर बदला लेने की कोशिश में थे, यह साबित करते हुए विस्तृत विवरण तैयार कराये गये।

अधिकारी ने अपने फैसले प्रकट नही किये। दोनो पक्षो की बाते सुनने के बाद तीसरे दिन शाम को उसने कोनानबाय से कहा

"तुम हमारे साथ करकरालीस्क चलोगे। हम एकदम सवेरे रवाना हो रहे है। देखो, तैयार रहना।"

लक्षण बुरे थे।

अधिकारी के तम्बू से बाहर आने के बाद कोनानबाय ने फौरन ही अपने दस निकटतम मित्रो और स्वजनो को बुला भेजा। उनमे बुजुर्गो मे इजगुत्ति जाकिप और मायबासार तथा नौजवानो मे कुदायबेर्दि व आबाय थे।

कोनानबाय ने खुद सभा की अध्यक्षता की और सिर पर मँडरा रहे खतरे के बारे मे बताया। उनमे से कुछ लोगो के काटो तो खून नही और उनके आँसू फूटने को हो गये लेकिन कोनानबाय उन्हे सहन नही कर पाया।

"रोने-धोने को कुछ भी नही! अगर कुछ दे सकते हो तो अपनी सलाह दो। मेरी मदद करो।"

जब असली कार्रवाई की जरूरत थी, वाक्पटुता से कोई लाभ न था। फिर भी कोई उपयोगी सुझाव सामने नही आ रहा था और कोनानबाय अपने दोस्तो की लाचारी समझ गया।

"मामला अधिकारियो के सामने पेश किया जायेगा और सारी बुराई कागजो मे है," उसने कहा। "और तुम जानते ही हो कागज़ किसी आदमी की इज्जत, अच्छी प्रसिद्धि या ऊँचे ओहदे पर रहम करना नही जानते। तुम्हे बारी-बारी से आ रही उन शिकायतो को बन्द करने, मेरे पैर खीचने से रोकने की कोशिश करनी चाहिए। चाहे जैसे भी हो, उन्हे रोकना है!"

लेकिन क्या किया जाये, यह बात उसके दुविधाग्रस्त व अकल्पनाशील स्वजनो की बुद्धि के बाहर था। समाधान सुझाने के लायक कोई भी न था। अपने पिता को घेरे बैठे इन लोगो की निपट निस्सहायता पर आबाय चकित था। उसने पहले कभी भी कुछ कहने या सलाह देने की हिम्मत नही की थी लेकिन अब अपनी बात कहने का उसने फैसला कर लिया।

"शिकायतो को बन्द करने के लिए उनका समर्थन पाना जरूरी है जिनसे आपने झगडा किया है।"

उसके पिता ने सख्ती से उसे देखा

"तुम्हारा सुझाव है, मै उनके पैरो पर गिडगिडाऊँ?"

"नही, क्यो? लेकिन उनसे छीनी गयी चीज़ें आप वापस कर सकते है, उनकी क्षतिपूर्ति कर सकते है। कोई दूसरी चीज़ उन्हें चुप नही कर सकती।"

क़ोनानबाय के दिमाग मे यह बात अच्छी तरह बैठ गयी, लेकिन दूसरों की राय जानने की इच्छा से उसने कोई जवाब नही दिया।

आबाय के सुझाव का सबने समर्थन किया। पर वे अपना मुँह खोलने से डरते, अपना सुझाव अस्पष्ट रूप से प्रकट करते, आख़िर बात वही जाकर अटक जाती।

"जिगितेक, बोकेशी और कोतिबक – सब के सब सिर्फ़ चरागाह और जाड़े का पड़ाव ही तो चाहते है। ठीक है, हम उनके साथ ज़मीन की भागीदारी कर ले। और हम क्या कर सकते है?"

यह जिगितेक के सामने अपना कसूर मान लेने जैसा था और क़ोनानबाय के स्वाभिमान को गहरा धक्का था। अपनी लाचारी पर वह कुपित था लेकिन ऊपर से वह शान्त, संयमित था। कोई दूसरा चारा न था। "उन्हें ज़मीन और पशु ही चाहिए तो दे दो, शान्त हो जायें!" वह सोच रहा था। "कोई क्या कर सकता है? भाग्य निष्ठुर होता है और ज़बर्दस्त तौहीन कराता है।"

दूसरों को विदाकर जिगितेक से बातचीत शुरू करने के लिए, किसी सबसे अच्छे तरीके पर सोच-विचार करने के लिए उसने सिर्फ़ जाक़िप, मायबासार और इज़गुत्ति को रोक लिया।

दुश्मन को समझा-बुझा लेना आसान न था। वह ख़ुद तो बायदालि के पास जा नही सकता था – यह तो तौहीन से भी ज़्यादा होता – ऐसा अपमान जिसे कभी मिटाया नही जा सकता। दूसरी ओर, उसके गावदी स्वजन किसी काम के न थे। कोनानबाय ने उनकी लाचारी पहले ही भाँप ली थी और मध्यस्थों के नाम उसने ख़ुद सुझाये।

उनमें सबसे पहला बायगुलाक़ था – नौजवानों में सर्वाधिक सम्मानित। दूसरा था कोक्शे का क़ाराताय। निम्सन्देह, क़ोनानबाय के साथ उसका झगड़ा हो गया था लेकिन जिगितेक का साथ देने से उसने इनकार कर दिया था। चुनाँचे, क़ोनानबाय ने उसके पास अपना सलाम भेजने की इच्छा प्रकट की: "अगर हम ज़िन्दा रहे तो फिर मिलेंगे। जीवन में सब कुछ हो सकता है – दुश्मनी भी, दोस्ती भी। हमारी मुलाक़ात का दिन ख़ुशगवार साबित हो! बस यही मेरी इच्छा है!"

दूसरे दिन क़ोनानबाय चुपचाप अपने दोस्तों, बच्चों और बीवियों से विदा ले क़रक़रालींस्क के सफ़र पर रवाना हो गया। उसके साथ पाँच नौजवान थे। उनमें सर्वाधिक विश्वसनीय मिर्ज़ाख़ाँ था। उसने लड़कपन से क़ोनानबाय की सेवा की थी और इर्गिज़बाय नेता के प्रति अपने अत्यधिक प्रेम के कारण वह उसके लिए ख़ुशी-ख़ुशी अपनी जान भी दे सकता था। एकमात्र वही ऐसा आदमी था जिस पर क़ोनानबाय ऐसे नाज़ुक समय में पूरी तरह विश्वास कर सकता था।

स्वाभिमानी मिर्ज़ा की क़िस्मत में क्या बदा है, कोई नहीं जानता था। उसे अपने पद से हटा दिया जायेगा अथवा वह आग़ा-सुल्तान बना रहेगा? बहरहाल, एक बात तो निश्चित ही थी: आऊलों को दहशतज़दा और लूट लेनेवाले निरंकुश शासक को उसकी इच्छा के विरुद्ध शहर जाने के लिए मजबूर कर दिया गया था।

जिगितेक, बोकेंशी और कोतिबक़ में एक बार फिर महान आनन्द की लहर दौड़ गयी और लगातार कई दिनों तक वे समारोहपूर्वक मौज-मज़े मनाते रहे मानो यह कोई दीर्घ-प्रतीक्षित उत्सव हो। समारोहों व खेलकूद में बूढ़े-जवान – दोनों ने भाग लिया। फ़िलहाल, ऐसा प्रतीत होता था मानो क़ोनानबाय के विरुद्ध उनके सफल संघर्ष ने उन तीनों क़बीलों को मिलाकर एक कर दिया था और वे ख़ुद को ऐसे स्वजन महसूस करते थे जिनके दिल एक साथ धड़कते हों।

"अब वह फिर कभी लौट कर नहीं आयेगा," वे बाग़ बाग़ होकर कहते। "उसे हम निर्वासित कराकर रहेंगे, अपनी शिकायतों से उसे मटियामेट करके बोजेय का बदला लेंगे!"

नयी शिकायतें और फ़रियादें तैयार कर के तुसिप को फिर शहर भेजना तय किया गया।

तैयारियों की ऐसी गहमागहमी में ही बायग़ुलाक़ और क़ाराताय आ पहुँचे। लम्बी-चौड़ी बातचीत और बहसों के बाद आख़िर उन्हें शिकायतों को रोक पाने में सफलता मिल सकी। बायदालि जिगितेक की ओर से बातचीत कर रहा था। इस लिए क़ाराताय ने उसे ही अपनी वाक्पटुता का शिकार बनाया।

"अगर तुम किसी भी तरह मानने को तैयार नहीं तो हम सहमत नहीं होंगे," उसने एलान कर दिया। "इस मामले में हम किसी के साथ नहीं।

क़ोनानबाय को सब को अपने दुराग्रह की क़ीमत देनी है और तुम्हें अपना सब कुछ फिर से हासिल करने का मौक़ा मिला है। तुम्हारे आदमियों को जो नुक़सान झेलना पड़ा है, उसके बदले में उससे ज़मीन ले लो!"

बातचीत तीन दिनों तक चलती रही। क़ाराताय का प्रस्ताव गरमागरम बहस के बाद आख़िर में स्वीकार कर लिया गया।

बायदालि ने अपनी शर्तें रखी। उसने उन पन्द्रह शरद्कालीन स्थलों की माँग की जिन्हें क़ोनानबाय ने धूर्तता या ज़बर्दस्ती से उसके पड़ोसियों से अतीत मे छीन लिया था। जिगितेक, बोकेंशी, कोतिबक़ और तोग़ायि – चारों क़बीलों को विभिन्न चरागाहें और शरद्कालीन स्थल प्राप्त होने थे।

लेकिन नतीजे के तौर पर ज़मीन सिर्फ़ सर्वाधिक प्रमुख बुज़ुर्गों और समृद्ध आऊलों को ही प्राप्त हुई। बातचीत तो उन्होंने "समस्त लोगों की हुई क्षति की पूर्ति" और "लोगों के लाभ के लिए" ज़मीन के हेतु की थी, लेकिन उसके फलस्वरूप चरागाह और शरद्कालीन स्थल सिर्फ़ बायदालि, बायसाल, सुयून्दिक़ और उनके दोस्तों के हिस्सों में आये। दूसरे आऊलों को उपहार के रूप में चर्बीशुदा जानवर, वक़्ती तौर पर घोड़ों के इस्तेमाल की इजाज़त देकर या बछड़ों के रूप में छोटे-मोटे उपहार देकर बहला दिया गया। इतना ही नहीं, इस ऋण का बोझ सिर्फ़ क़ोनानबाय और उसके समृद्ध बुज़ुर्गों को ही नही बल्कि समस्त इर्गिज़बाय लोगों को सहन करना पड़ा।

क़ोनानबाय के रवाना होने के दस दिन बाद क़बीलों ने सुलह कर ली। अब शिकायतें नही भेजी जा रही थी। पर्याप्त ज़मीन और पशु प्राप्त कर क़बीलों के प्रमुख अपनी विजय पर फूले नहीं समा रहे थे और इस विजय का आनन्द मनाते समय उन्होने अपने क़रीबी स्वजनों को उपहारस्वरूप पशु दिये। ख़ुदा के और पूर्वजों के नाम पर असंख्य मेमने काटे गये जिन्होंने कठिन संघर्ष में क़बीलों पर अपनी कृपा दिखाई थी। काफ़ी समय तक सभाएँ, समारोह और दौड़ें, खेलकूद और गाना-बजाना के कार्यक्रम होते रहे। ख़ुशी की आम लहर एक नये आत्मविश्वास को अभिव्यक्त कर रही थी – अब स्थायी रूप से अच्छे दिन आ गये थे।

३

झगड़ा-फ़साद खत्म होने और जीवन सामान्य होने पर आऊल जिदेबाय और मुसाकुल से पहाड़ियो के नीचे पतझड़ के चरागाहो की ओर रवाना हुए।

मौसम की दृष्टि से असामान्य ठड थी। बर्फ़ानी हवा चलती रहती, बूँदा-बाँदी होती रहती और आकाश मेघाच्छन्न रहता। और जब जाड़े की शुरुआत के आसार इतने करीब हो, जाडे के आवासो के निकट रहना ही अच्छा था। उलजान को अपनी बूढी सास और बच्चो की चिन्ता थी। उसने तीन अन्तरालो मे ओसेमबाय पहुँचने और वही भेडो से ऊन कतरने के बाद तुरत ही जाड़े के आवास की ओर रवाना हो जाने का फ़ैसला किया।

अपने पिता की रवानगी के बाद से आबाय कही भी नही गया था, लेकिन उसने जिगितेक लोगो के बीच हो रहे समारोहो और मौज-मजो के बारे मे सुना था। उसे यह भी मालूम था कि जो पन्द्रह शरद्कालीन स्थल उसके कबीले ने दिये थे, वे सिर्फ कुछ बुज़ुर्गो के अधिकार मे आये थे। शीघ्र ही और भी ख़बरे मिली थी. यही बुज़ुर्ग नयी मिली जमीन को शातिपूर्वक बॉटने मे असफल रहे थे। पहले गरमागरमी हुई और आखिर झगड़े तक हो गये। यह जानकर उसे तनिक भी आश्चर्य नही हुआ था—इस साल उसने बहुत कुछ देखा था।

"लोग कष्ट मे पड़े है। वे एक असह्य बोझ तले कराह रहे है। उन्हे ज़मीन चाहिए!" पहले तो बुज़ुर्ग ऐसी ही बाते कह रहे थे। फिर उन्होने लोगों के साथ मिलकर ज़मीन की भागीदारी क्यो नही की थी? उन्होने बोजेय के सम्मान के लिए लड़ाई की थी, लेकिन उस लडाई की कीमत ही क्या रह गयी जब ज़मीन और चरागाहो के लिए उसका सौदा किया जाये? बुज़ुर्गो के प्रति शर्मिन्दगी से भरा आबाय सोच-विचार करता रहा। मै-मै-तू-तू और बुरी भावनाओ का बाजार तभी तक गर्म रहा था, जब तक कबीलो के नेताओ का पेट नही भर गया, यह आबाय ने ख़ुद अपनी आँखो से देखा था। उनकी क्षुधातृप्ति हुई और सब कुछ भुला दिया गया।

उसी पतझड़ में ग्राबाय बीग्रों ग्रौर ग्राक़साक़ालों की वास्तविकता समझ पाया – ऐसी वास्तविकता जिसे छुपाये रखने के लिए उन्हें इतना कष्ट उठाना पड़ता था। पहले, जब वे उसके पिता को निरंकुश कहा करते थे, वह समझता था, वे लोगों के बारे में ईमान्दारी से सोचते हैं। "क़ोनान-बाय ग़रीबों को लूट रहा है; उसने उनकी ज़मीन छीनकर, उन्हें रोने पर मजबूर कर दिया है," ग्रतीत में यही उनकी शिकायत थी। लेकिन ग्रब, जब ताक़त उनके हाथों में थी, जो कुछ क़ोनानबाय ने छीन लिया था, उसे फिर से लौटा देने की तो बात ही दूर थी, वे लोगों को कहीं ग्रौर ज़्यादा लूट रहे थे। क़ोनानबाय की लूट के माल को बस पाँच छोटे क़ोनानबायों ने बाँट लिया था। उन्होंने बोजेय के सम्मान के लिए लड़ाई की थी, लेकिन क़ोनानबाय को हराने के बाद शरद्कालीन स्थलों के बदले उसका सौदा कर लिया था।

ग्राबाय ने ग्रब महसूस किया, लोगों को धोखा दिया गया था ग्रौर उनके साथ उसे भी। "चोर-चोर मौसेरे भाई होते हैं" – ग्रौर इस कहावत से स्पष्ट था, लोग ऐसे "लोगों" को जानते रहे हैं। ऐसे लोग कभी वा-स्तविक रक्षक नहीं हो सकते। वास्तविक रक्षक इन बुज़ुर्गों में से कभी पैदा नहीं हो सकते जो कल क़ोनानबाय के ख़िलाफ़ थे ग्रौर ग्राज उसके साथ। वास्तविक रक्षक कुछ एकदम ही भिन्न क़िस्म के लोगों के बीच से उभर कर ग्रा सकता है।

एक शाम घुड़सवारी से लौटने के बाद हमेशा की तरह वह ग्रपनी माताग्रों से मिलने गया ग्रौर ग़बितख़ान, तकेजान, ग्रोस्पान तथा बहुत से चरवाहों के सामने ही ग्रपना दोम्ब्रा उठा लिया। उसने बड़े उल्लास के साथ उसे बजाना शुरू किया ग्रौर ग्राख़िर में बायदालि व बायसाल के प्रति प्रच्छन्न व्यंग्यों से परिपूर्ण एक गीत गाया जो किसी तरह लड़-झगड़कर ज़मीन हासिल कर के तुरंत ही इसके चलते ग्रापस में झगड़ पड़े थे।

गीत सुनकर प्रशंसा व हँसी की लहर फूट पड़ी।

"यह किसका गीत है?" उलजान ने पूछा।

"बायकोक्शे का," ग्राबाय ने बरलास के साथ एक बार उनके यहाँ ग्राये बायकोक्शे की याद दिलाकर शांतिपूर्वक उत्तर दिया। "यह उसकी ही रचना है।" वास्तव में यह गीत ख़ुद ग्राबाय ने रचा था।

सारी पतझड़ ग्रौर ख़ासकर जाड़े के पड़ाव में ग्रा जाने के बाद से ही

आबाय प्राय: दोम्ब्रा पर सुमधुर धुन और गीत गाकर अपनी भावनाओं, अपने विचारों को अभिव्यक्त करता। उसने उन पुराने दोम्ब्रावादकों से मुलाक़ात की जिन्होंने अतीत में बित्केनबाय और तात्तिमबेत जैसे प्रसिद्ध संगीतकारों के सामने अपने प्रदर्शन किये थे। अपने वादन में निरन्तर सुधार करते हुए, वह आम तौर से हास्यपूर्ण व व्यंग्यात्मक गीत भी गाया करता जिन्हें वह हमेशा बायक़ोक्शे की रचना बताया करता।

जाड़े के पड़ाव में भी आबाय कई-कई घंटे पुस्तकों में डूबा रहता। बाबर, नवाई और अल्लायार की कविताओं से कल्पना प्रवण हो, काग़ज़-क़लम ले उसने उनके अनुकरण का प्रयास करते हुए, कविता लिखना शुरू कर दिया।

इस समय उसे सबसे ज़्यादा प्रेम और प्रेमी सम्बन्धी विषय ही आकृष्ट कर पाते। वास्तविक जीवन में अभी उसने इन भावनाओं का अनुभव नहीं प्राप्त किया था तथापि पुस्तकों में पढ़कर उसने इनकी अच्छी जानकारी हासिल कर ली थी। प्रेम ने उसे न तो अपने मीठे बोल सुनाये थे और न ही अपना कोई राज़ उसके सामने खोला था, लेकिन वह अपने पूरे दिल से प्यार के लिए ललकता था और उसके बुलावे को समझता था। उसकी स्मृति किसी की जीवन्तता से स्पन्दित हो उठती जिसने हमेशा-हमेशा के लिए उसका दिल जीत लिया था। तोग़जान – रक्तरंजित लड़ाई के मैदानों और घृणा भरी झड़पों के कारण उससे कितनी दूर चली गयी थी। अब उनके बीच न जाने कितने पहाड़, कितनी खाइयाँ थीं! आबाय के दिमाग़ में उसके बारे में कितने ख्याल आते रहे थे! दिल के वे सारे लजीले, संवेदनशील गीत – उस शरद की व सारी रचनाएँ, सब उसी को समर्पित थीं। उसी शरद काल में उसने गीतों के छोटे-से संग्रह की रचना कर डाली और उसका नाम रखा, "तुम्हारी भव्य सुषमा के प्रति: पहले मधुर गीत।" और आख़िर उसे अपनी बहुत पहले की गयी रचना को पूरी करने के लिए शब्द मिल ही गये। "तेरा सबेरा मेरे दिल है, मेरा प्यार" कभी-कभी वह यह गीत दोम्ब्रा पर गाकर तकेजान और ग़बितख़ान को भी सुना देता।

अपने हल्के-पीले-लाल रंग और काले जबड़ेवाले कुत्ते के साथ वह कभी-कभार ही ख़रगोश के शिकार पर जाता। एक या दो बार वह अपने भाई क़ुदायबेर्दि से मिलने क़ाराशोक़ि में कुन्के के आऊल गया था। क़ुदाय-

बेर्दि का विवाह कम उम्र में हो गया था – उसी शरद में उसके चौथा बेटा पैदा हुआ था।

क़ोनानबाय के बारे में ख़बरें सबसे पहले कुन्के के आऊल में पहुँचती थीं। पहले आग़ा-सुल्तान यही रहता था और इर्गिज़बाय व दूसरे क़बीलों के आऊल पास ही चिंगीज़ की तराइयों में रहते थे। इस लिए सबसे पहले नयी ख़बरें हमेशा कुन्के के पास ही आती थीं। ख़ास तौर पर जब उसकी दादी और माँ उसके पिता के बारे में अत्यधिक चिन्तित हो उठती, आबाय अपने पिता के बारे में ख़बरें जानने क़ाराशोक़ि चला जाता।

जब-जब वह यहाँ आता, उसे प्राय: कुन्के की ग़ैर-वाजिब फटकार सुननी पड़ती। क़ोनानबाय के जाने के बाद से ही वह, यहाँ तक कि आबाय की मौजूदगी में भी, हमेशा उलजान को कोसती रहती।

"उलजान शायद मिर्ज़ा को भूल गयी है! अगर उसे वास्तव में उनकी चिन्ता होती, उसके स्वजन और मित्र उसके यहाँ एकत्र होते रहते और मुख्य ओताव हमेशा मेहमानों से भरा रहता। लेकिन नहीं, उसके आऊल मनमानी से सफ़र करते है और वह ख़ुद भी अकेली जिदेबाय में रहती है। उसे अपने पति की क्या परवाह है? उसे सिर्फ़ अपनी चिन्ता है। सारी परेशानी और ख़र्च तो हमें सहन करना पड़ता है। उसने सारा बोझ हमारे कन्धों पर डाल दिया है!"

यह सच था, उलजान शायद ही कभी अतकामिनेरों को आमंत्रित करती थी जब कि बहुत-से आऊलों से घिरे क़ाराशोक़ि में कुन्के का ओताव स्वभावत: मेहमानों से भरा रहता। चाहे उसे पसन्द हो या नहीं, मेहमानों के भोजन के लिए कुन्के को बहुत से जानवर ज़बह कराने पड़ते थे। जैसे-जैसे ख़र्च में बढ़ोतरी होती, वैसे-वैसे कुन्के का ग़ुस्सा भी बढ़ता जाता और वह उलजान की शिकायत उसके स्वजनों, उसके पड़ोसियों, बूढ़ों और बच्चों तक की मौजूदगी में करती रहती।

आबाय उसके अपशब्दों का कोई जवाब नही देता बल्कि बिना क्रोध के सुनता रहता और उसके कहे शब्दों को जल्दी से जल्दी भुला देने की कोशिश करता। क़ुदायबेर्दि अपनी माँ की बकवास का न तो समर्थन ही करता, न दुहराता और हमेशा आबाय का स्वागत अत्यन्त प्रिय दोस्त की तरह करता।

आबाय कुन्के की बाते उलजान से भी नही कहता। क़ाराशोक़ि की

अपनी प्रत्येक यात्रा के बाद वह किसी ऐसे सुविधाजनक मौक़े की तलाश में रहता जब उसकी दादी अकेली होती और तब वह उससे लम्बी बातचीत करता। कुन्के की शिकायतें उस वृद्धा पर कोई असर नही डालती।

"कोई ध्यान मत दो," वह कहती। "उसकी सलाह के बिना ही हम सब बन्दोबस्त करेंगे। यह वह नहीं, उसका सौतपन बोल रहा है। क्या तुम सोचते हो, कुन्के और आयग़िज़ कभी चुप रहेंगी? इसके बारे में अपनी माँ से कुछ न कहना, बाक़ी मैं सब कर लूँगी!"

ज़ेरे ने जैसा कहा, वैसा किया भी। इज़गुत्ति को बुलाकर उसने उसे कुन्के के पास सख़्त सलाह देकर भेज दिया: "बेहतर होगा, वह बकबक करना और अपने पति के स्वजनों और मित्रों की ज़रूरतों की दलीली करना बन्द कर देगी। काफ़ी बकबक कर चुकी है!"

क़ोनानबाय की वापसी की वे काफ़ी प्रतीक्षा करते रहे। बायदालि, बायसाल और उनके मित्र उससे मिले उन पन्द्रह जाड़े के पड़ावों पर काफ़ी समय से बस चुके थे जो कभी उनके बीच ज़बर्दस्त झगड़े का कारण बन गये थे। पतझड़ आयी और गयी, जाड़ा भी आधा बीत चुका था, लेकिन क़ोनानबाय अभी तक वापस नही आया था। हरेक महीने वह अधिक चर्बीशुदा जानवर अपने पास लाने का आदेश देकर, अपने निर्देश और स्वास्थ्य व अपने काम-धाम के बारे में ख़बरें देकर एक नौजवान को भेजा करता।

उसके भेजे सभी सन्देशो से सिर्फ़ एक ही बात स्पष्ट थी: क़रक़रालीस्क पहुँचते ही उसे आग़ा-सुल्तान के पद से हटा दिया गया था। क्या वह अपने मामले जल्दी ही निबटा लेगा? कौन कह सकता है? सरकारी तौर पर जाँच-पड़ताल चल रही थी और उसे घर आने की इजाज़त नही मिली थी।

क़रक़रालीस्क में नया आगा-सुल्तान चुना जा चुका था—वह तूरा बोकेय का वंशज क़ुस्बेक था। कुस्बेक पहले भी एक बार आग़ा-सुल्तान रह चुका था, लेकिन उसे अपना पद छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया गया था। पुन: अधिकार-प्राप्ति के बाद, पहले दिन से ही क़ोनानबाय के प्रति अमैत्रीपूर्ण होने के कारण पिछले चुनाव में अपनी पराजय का उससे बदला लेने को वह तत्पर हो उठा। बायमुरिन के ज़रिये उसने जोश के साथ बोजेय के साथियों का समर्थन किया।

आग़ा-सुल्तान तो बदल गया था लेकिन मेजर वही था। वह भी

क़ोनानबाय के प्रति ग़ैर-दोस्ताना था। क़ुस्बेक की मदद से उसने मामले को बेहद लम्बा खीच लिया था और क़ोनानबाय की जानकारी के बिना ही कॉर्प्स को लिखना शुरू कर दिया। उसने कॉर्प्स से मुक़द्मा ओम्स्क मे चलाने का अनुरोध किया था। अगर वे सफल हो जाते, क़ोनानबाय का निर्वासित किया जाना लगभग निश्चित-सा ही था।

लेकिन फिर भी क़ोनानबाय की नज़र से यह चालबाज़ियाँ छुपी नही रह सकी और उसने तुरंत ही अपने सर्वाधिक व सर्वोपरि हमदर्द अल्शिनबाय से मदद माँगी।

अल्शिनबाय के बीच में आते ही क़ुस्बेक ने अपना हाथ मामले से खीचना शुरू कर दिया। इससे जॉच-पड़ताल का काम सहल होता गया। इसके बावजूद बहुत-सी शिकायतें ओम्स्क पहुँच चुकी थी। इस सिलसिले में जिस अधिकारी को क़रक़रालीस्क भेजा गया, वह लालची साबित हुआ और अब इस मामले की जाँच-पड़ताल में मेजर ही अकेला नहीं था। उनका समर्थन प्राप्त करने और जाँच-पड़ताल ख़त्म कराने का काम अल्शिन-बाय को सौप दिया गया। इसके लिए घूस की बड़ी रक़मों और बहुमूल्य उपहारों की आवश्यकता थी। क़ोनानबाय और अल्शिनबाय दोनों को जल्दी ही पैसों की ज़रूरत आ पड़ी।

जाड़े के बीच मे सेमिपलातीस्क का एक अमीर व्यापारी तिनिबाय कमाया चमड़ा ख़रीदने क़रक़रालीस्क आया करता था। गाड़ियों के विशाल समूह पर कपड़ों के बड़े-बड़े बण्डल तथा अन्य बहुमूल्य सामग्रियाँ होती।

यहाँ अपने व्यापार के दौरान वह हमेशा ही क़ोनानबाय और अल्शिनबाय पर पर्याप्त रूप से निर्भर करता। पशुओं के बंधक पर कपड़े उधार देने अर्थात् व्यापारिक ऋण का काम केवल तभी फल-फूल सकता था जब क़बीलों के प्रमुखों और स्थानीय शासकों की सहायता उपलब्ध की जाये। इस तरह वह एक भेड़ के लिए एक बधिया बछड़ा, बधिया बछड़े के लिए साँड़ और मेमने के लिए भेड़ प्राप्त कर सकता था। बकाया कैसे वसूला जाये, यह मुखियों और प्रशासकों का सिरदर्द होता। पिछले साल तिनिबाय ने क़ोनानबाय से अपने परिवारों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने का हार्दिक अनुरोध किया था। उस समय क़ोनानबाय को ऐसा सम्बन्ध अपमानजनक लगा था। उसे बेपर की बातों और अफ़वाहों का डर था।

लोग यही कहेंगे, क़ोनानबाय ने अपनी बेटी एक नीच ख़ानदान को सौंप दी है, उसे धन के लिए बेच दिया है। फिर भी दुनियादारी के नाते कोई जवाब दिये बिना उसने तिनिबाय को उसकी उम्मीदों के सहारे छोड़ दिया था।

और इस समय जब क़ोनानबाय को पैसों की बुरी तरह ज़रूरत थी, तिनिबाय ने दोनों परिवारों को वैवाहिक सम्बन्ध-सूत्रों से जोड़ देने का पुन: अनुरोध उससे किया। बातचीत में अलिशनबाय ने भी भाग लिया। इसके फलस्वरूप क़ोनानबाय तिनिबाय के बेटे की शादी उलजान से पैदा हुई और कुन्के के आऊल में लालित-पालित अपनी छोटी बेटी माकिश से करने को राज़ी हो गया। तब व्यापारी ने अपने ख़ज़ाने की थैली ढीली कर दी और मेजर अधिकाधिक क़ाबू में आता गया। फिर भी क़ोनानबाय परेशान था: क्या ओम्स्क से आया अधिकारी चेर्नोव भी घूंस लेता है? अलिशन-बाय और उसके दुभाषियों ने दो शाम उसे ख़ूब खिलाया-पिलाया और फिर ख़ुशख़बरी के साथ अलिशनबाय क़ोनानबाय के पास आया, उसका चेहरा ख़ुशी से दमक रहा था।

"मैं भी डर रहा था, कहीं यह अधिकारी तुम्हारे लिए मौत का चंगुल न साबित हो जाये। लेकिन अल्लाह उस पर मेहरबान रहे! वह भी पूरा लालची है। उसका तो पेट भरना ही किसी के लिए मुश्किल है। बस आँखें बन्द किये बैठा रहता है और जो मिलता है गटाक से निगल जाता है। वह कुछ भी इनकार नहीं करेगा। मालपुआ न हो, रूखा-सूखा ही सही – बस वह होंठों पर जीभ फेर लेगा!"

क़ोनानबाय का मामला सुधरने लगा। सिर्फ़ एक ही काम बाक़ी रह गया था – कॉर्प्स के साथ लिखा-पढ़ी बन्द कराना और बच रहे सारे काग़ज़ों को नष्ट कराना। तभी सहसा ओम्स्क से नये आदेश आ गये – पहले प्राप्त सूचना के आधार पर कॉर्प्स ने मेजर को क़ोनानबाय और उससे सम्बन्धित काग़ज़ों को ओम्स्क भेजने की सलाह दी थी। घूंस खाये क़रक़रालीस्क के अधिकारियों के लिए यह बात बड़ी परेशान करनेवाली थी, लेकिन कॉर्प्स के आदेशों के उल्लंघन का तो सवाल ही नहीं पैदा होता था।

जल्दी-जल्दी क़ोनानबाय ने एक सन्देशवाहक अपने आऊल को भेजा। समाचार ने निराशा पैदा कर दी, सब को निश्चय हो गया, क़ोनानबाय पर मुक़द्दमा चलेगा और उसे निर्वासित किया जायगा। जिगितेक और बोकेंशी

तो यहाँ तक कह रहे थे कि क़ोनानबाय पर मुक़द्दमा चलाया जा चुका है और उसे सुदूर उत्तर में जहाँ घोड़ों की जगह कुत्ते काम में लाये जाते हैं या क़ाफ़* पहाड़ी की ओर निर्वासित कर दिया गया है।

अपने सलाम में क़ोनानबाय ने परिवार से चिन्ता न करने का और अपनी बूढ़ी माँ के भय को कम करने का अनुरोध किया था। "मुझे ओम्स्क जाना पड़ेगा, लेकिन अंत में सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा," उसने उन्हें आश्वस्त किया था। फिर भी मौन दुख ने ज़ेरे को जकड़ लिया था और वह पहले से कहीं ज़्यादा दुआएँ पढ़ती और ठंडी आहें भरा करती। अनजाने ही वह कभी-कभी दुआओं के बीच में चौंककर बोल उठती: "मेरे वही तो एक बेटा था, इकलौता और वह भी इतना बदनसीब..." वह शब्द उसके दुख के बोझ को प्रकट कर देते।

कॉर्प्स के आदेशों पर विचार-विमर्श करने के बाद अलिशनबाय, मेजर, चेर्नोव और तिनिबाय इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि आदेशों को न मानना, बुद्धिमत्तापूर्ण न होगा। चुनाँचे, मेजर ने "उड़ती डाक"** से कॉर्प्स को एक संक्षिप्त-सा सन्देश भेज दिया, "हम आ रहे हैं।" वह और क़ोनानबाय दस्तावेज़ों के साथ जानेवाले थे। मेजर ने स्वयं ही व्यक्तिगत रूप से जाने का फ़ैसला किया जिससे मुक़द्दमा ख़ारिज करा सके।

क़ोनानबाय के पास एक आरामदेह स्लेज गाड़ी थी और उसने बहुत ही अच्छी क़िस्म के घोड़े मँगवा लिये थे। सफ़र के लिए प्रचुर सामग्रियाँ और एक अतिरिक्त अश्वसज्जा की व्यवस्था की गयी थी। जेब और बूट को रुपयों से ठसाठस भरकर वह दो नौजवानों और अपने विश्वासपात्र मिर्ज़ाख़ाँ के साथ रवाना हो गया।

यात्रा के प्रथम दिन से ही सन्देहों ने उसे घर कर लिया था। उसे "गर्म दिमाग़" का कोई भरोसा न था, हालाँकि उसने लम्बा-चौड़ा घूंस लिया था और बार-बार आश्वस्त किया था। अतएव, शहर से रवाना

---

* क़ाफ़ – "दुनिया के अन्तिम छोर" का एक प्रतीक, यह "काकेशस" शब्द का बिगड़ा हुआ कज़ाख़ रूप भी है। – सं०

** द्रुतगामी डाक – डाक फ़ौरी है, उस के प्रतीक-स्वरूप उल्लू के पंखों का एक गुच्छा डाक ले जानेवाले के टोप पर या उसकी गाड़ी की निचली जोत पर लगा दिया जाता। – सं०

होने से पहले उसने अलिशनबाय और तिनिबाय से तत्परतापूर्वक मेजर पर अत्यंत निकट से नज़र रखने और स्लेजगाड़ी के पीछे ही एक सन्देशवाहक भेजने का अनुरोध किया था।

तीसरे दिन क़ोनानबाय के पास अलिशनबाय का भेजा एक सन्देशवाहक आ पहुँचा। वह नौजवान अपने साथ अतिरिक्त घोड़े भी लाया था। कड़ी सर्दी होने के बावजूद सूरज चमक रहा था। दोनों कुम्मैतों के पाले से ढँके घने अयाल, ललाट पर के बाल और पूँछें दमक रही थीं। दोनों घोड़े हाँफ़ रहे थे, झाग से भरे थे। स्पष्ट था, संदेशवाहक अपनी सामर्थ्य भर उन्हें तेज़ी से दौड़ाता आया था।

नौजवान ने क़ोनानबाय को नीचे उतरने में मदद की और एक ओर ले जाकर धीमी आवाज़ में अपना सन्देश दिया, फिर यात्रियों को अच्छी यात्रा की शुभकामना करके तेज़ी से लौट पड़ा। स्लेजगाड़ी आगे बढ़ चली।

क़ोनानबाय ने ख़बर के बारे में सिर्फ़ मिर्ज़ाख़ाँ को बताया।

"अलिशनबाय ने हमें पव्लोदर में मेजर के आने तक प्रतीक्षा करने कहा है।"

"इसका मतलब है, वह अपना वायदा पूरा करेगा?" मिर्ज़ाखाँ ने पूछा।

"क्यों नहीं करेगा? वह हमें धोखा क्यों देगा? इसके अलावा हम उस पर दबाव भी डाल सकते हैं," उसने आगे कहा। "समय आने पर मैं आज्ञा दूँगा।"

मिर्ज़ाख़ाँ सन्तुष्ट नहीं हुआ था; अगर "गर्म दिमाग़" अपनी बात का पक्का ही होता तो वह क़ोनानबाय को ओम्स्क क्यों भेजता?

क़ोनानबाय ने शान्तिपूर्वक समझाया:

"दूसरा कोई चारा ही नहीं था। उसे यह तो दिखाना ही था कि कॉर्प्स के पहले ही बुलावे पर वह मुझे भेजने और ख़ुद ओम्स्क आने को तत्पर हो गया था। महत्वपूर्ण बात है बरी होना। सफ़र कोई मायने नहीं रखता। ओम्स्क पास ही है।"

पव्लोदर में क़ोनानबाय ने "गर्म दिमाग" की चार दिनों तक प्रतीक्षा की। आख़िर वह आ ही गया। उसने पहले ही दिन शाम को इर्गिज़बाय नेता को मिलने के लिए बुलाया। क़ोनानबाय सिफ़ मिर्ज़ाख़ाँ के साथ आया।

मेजर एक रूसी व्यापारी, अपने मित्र सेर्गेय के यहाँ ठहरा था जो

कज़ाखों के प्रति मैत्रीपूर्ण था। उसने अकेले ही एक विशाल, समृद्ध रूप से सज्जित कमरे में क़ोनानबाय और मिर्ज़ाख़ाँ का स्वागत किया। मेजर ने काफ़ी मुक्त रूप से कज़ाख़ भाषा बोलना सीख लिया था। लेकिन अभी भी करक़रालीस्क में उसने एक दुभाषिया बहाल कर रखा था।

"हाँ, तो क़ोनानबाय ओस्केनबायेविच," उसने कहना शुरू किया, "शायद तुम अपने विरुद्ध तैयार किये गये काग़ज़ों को देखने के लिए बेताब होगे, क्यों?"

"मुझे देखने दो उन्हें! मैं उन्हें अक्षर-अक्षर तक देखना चाहूँगा।

"बहुत अच्छा, मैं कुछ भी छुपा नहीं रखूँगा। मैंने तुम्हें दिखाने का अल्शिनबाय से वायदा किया था—इस लिए मैं तुम्हें दिखा दूँगा!" मेजर ने कहा।

उसने दरवाज़े में कुंडी लगा दी और एक सफ़री झोले से मोटे से फोलियो में एक साथ नत्थी किये काग़जों का एक ढेर बाहर निकाला। क़ोनानबाय उसे ध्यान से देखता रहा।

"यहाँ इतनी ठंड क्यों है, मेजर? मैं तो बस जम-सा गया हूँ। उन्हें आग तो जलाने कह दो," अपना हाथ रगड़ते, वह कपकपा उठा।

मेजर ने उसकी ओर ध्यान से देखा, फिर नौकर को आवाज़ देकर आग जलाने का आदेश दिया। जब नौकर हाथ भरकर लकड़ी ले आया, मेजर ने मेज़ पर कोन्याक की दो बोतलें रख दीं, कुछ चटपटी चीज़ों का इन्तज़ाम किया, क़ोनानबाय का गिलास भरा और फिर अपना गिलास उठा लिया।

क़ोनानबाय मिर्ज़ाख़ाँ का गिलास भरना नहीं भूला। वह लगातार मेजर को पीने के लिए ललकारता रहा और बातचीत जारी रखी। अन्ततोगत्वा चिनगारियों के दमकते ढेर पर आग भयानक रूप से जलने लगी। मेजर लगातार पीता रहा था और उसका असर दिखाई देने लगा था।

क़ोनानबाय ने मेज़ पर रखे काग़ज़ों के बंडल को अंगुली से टहोका लगाया।

"मेजर, हमने काफ़ी समय तक एक साथ काम किया है। हम एक साथ मेज़ पर बैठकर, हर तरह का विचार-विमर्श करते रहे है। अब चलो इस बंडल को खोलो, इसके तथा दूसरे काग़ज़ों को दिखाओ! यही हमारी दोस्ती की पहचान होगी!"

"लेकिन इसके अलावा और कोई काग़ज़ात नहीं, क़ोनानबाय," मेजर ने आपत्ति की। "ख़ुदा गवाह है, बस इतना ही है, एक टुकड़ा भी फालतू नहीं!"

क़ोनानबाय उठ खड़ा हुआ और क़रीब से देखने के लिए मेजर पर झुक गया—लेकिन सहसा मुश्कें बाँधकर पीछे से उसे दबोच लिया और मिर्ज़ाख़ाँ को आवाज़ दी:

"जल्दी करो, मिर्ज़ाख़ाँ! वह सब आग में झोंक दो!"

मेजर ने ज़ोरदार संघर्ष किया, लेकिन जवानी के समय से अपनी ताक़त के लिए क़ोनानबाय मशहूर रहा था और अभी भी काफ़ी ताक़तवर था। मेजर ने बहुत हाथ-पाँव मारे लेकिन हिल भी नहीं सका।

मिर्ज़ाख़ाँ ने दहकती आग में फोलियों को फेंक दिया। अपनी लाचारी महसूस कर मेजर गिड़गिड़ाने लगा।

"बहुत हो गया, क़ोनानबाय, इसे रोक दो! वे सरकारी काग़ज़ है! तुम जानते हो, क्या कर रहे हो? इसके बाद मैं क्या करूँगा?"

कुछ मिनटों में काग़ज़ जलकर राख हो चुके थे। मिर्ज़ाख़ाँ और क़ोनानबाय ने आग बुझाकर एक-दूसरे की ओर मुस्कुराते हुए देखा। मेजर अपनी कुर्सी में धँस गया था, उसकी आँखें बन्द थीं। वह ऊँघते-ऊँघते गहरी नींद में सो गया प्रतीत होता था...।

उसी शाम क़ोनानबाय ने पव्लोदर छोड़ दिया और अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

लेकिन मेहमानों के जाते ही मेजर तत्क्षण अपनी जगह से उछल खड़ा हुआ। सिर हिलाते हुए, जल्दी-जल्दी उसने कोन्याक के कई पेग चढ़ाये और अपने मेज़बान से मिलने चल पड़ा।

सेर्गेय एक विश्वसनीय मित्र था और मामला तुरंत ही सुलझा लिया गया। चुपचाप आँगन में स्थित कई छोटे-छोटे मेजर के लाये स्लेज रखे थे। स्लेजों पर पहले से पुराने-फटे नमदे तथा काग़ज़ों के ढेर डाल दिये गये थे। एक या दो मिनट में ही छावनी ज़ोर-शोर से जलने लगी।

चाहे कुछ भी हो, मेजर की छलपूर्ण चालबाज़ियों के लिए इस छोटी सी आग ने पहली बार परदा डालने का काम नहीं किया था। जहाँ तक सेर्गेय का सवाल था, वह तो बस अपनी एक कृतज्ञता का बदला भर चुका रहा था। पिछले साल जब उसने सरकारी सम्पत्ति हड़प ली थी

ग्रौर दिवालिया हो गया था, मेजर ने उसके लिए बहुत-कुछ इसी तरह के एक "अग्निकांड" की व्यवस्था की थी। फिर आवश्यक दस्तावेज़ें तैयार करायीं, ज़रूरी मुहरें लगायीं और उसे फल भुगतने से बचाया। यह नया "अग्निकांड" उसी पिछले साल की उसकी सेवाओं का बदला भर था।

सुबह में सेर्गेय ने आसानी से शहर के लालची प्रशासकों को पटा लिया। उन्होंने गवाहों को बुलाकर हलफ़नामा लिया। हलफ़नामा में बयान दिया गया कि क़ोनानबाय के मुक़द्दमे से सम्बन्धित सारे काग़ज़ात उस समय जल गये जब सेर्गेय के घर में आग लग गयी थी।

यात्रा के छठे दिन क़ोनानबाय और जेब में हलफ़नामा लिये मेजर, अलग-अलग ओम्स्क पहुँचे।

दो हफ़्ते तक कॉर्प्स ने क़ोनानबाय के मामले की जाँच की, उससे थोड़े-बहुत सवाल किये और उसे बरी कर दिया।

सन्तुष्ट हो मेजर अपने प्रदेश में लौट आया।

अब पूरी तरह अपराध-मुक्त क़ोनानबाय के क़रक़रालींस्क में पहुँचते ही एक के बाद दूसरे घुड़सवार तोबिक्ति की ओर द्रुतगति से रवाना हो गये। सबके सब यह ख़ुशख़बरी देने में प्रथम आकर सुयूंशि* जीतना चाहते थे। लेकिन क़ोनानबाय को लौटने की कोई जल्दी न थी और वह काफ़ी समय तक क़रक़रालींस्क में टिका रहा।

मिर्ज़ाख़ाँ ने ग्रलिशनबाय के आदमियों तथा दूसरे विश्वसनीय मित्रों को यात्रा की एक-एक बात का विवरण सुनाया। उसकी अत्यन्त बढ़ा-चढ़ाकर कही गयी बातों के अनुसार मेजर का व्यवहार बड़ा ही वैमनस्यपूर्ण था और उसने काग़ज़ों और क़ानूनों के उद्धरण दे-देकर क़ोनानबाय को बहुत धमकाया था। "इनकी मदद से मैं तुम्हें बर्बाद कर दूंगा! इनकी मदद से धरती पर से मैं तुम्हारा नामोनिशान मिटा दूंगा! तुम इससे कैसे ख़ुद को बचा पाओगे?" मेजर ने बड़ी ढिठाई से क़ोनानबाय से सवाल किया और नीचतापूर्वक एक के बाद एक काग़ज़ निकाल-निकालकर उसे दिखा रहा था। मिर्ज़ाख़ाँ ने मेजर का वर्णन नीच और क्रूर व्यक्ति के रूप में किया था लेकिन इसके साथ ही उसके मन्दबुद्धि, गोबर-गणेश होने का भी पता चलता था। फिर भी, उसके किसी भी श्रोता ने सपने में भी उसके

---

* सुयूंशि – अच्छी ख़बर देनेवाले को मिलनेवाला उपहार। सं.

विवरण के असत्य होने की बात नहीं सोची – उन्होंने जो कुछ कहा गया, उसे उसी रूप में ख़ुशी-ख़ुशी मान लिया। मिर्ज़ाख़ाँ ने हर तरह से क़ोनानबाय की बहादुरी, चुस्ती और सूझ-बूझ का गुण-गान किया। आख़िर घुड़सवार मिर्ज़ाख़ाँ की कहानियाँ अपने साथ क़ोनानबाय के आऊलों तक ले आये और उनमें कुछ अपनी ओर से जोड़कर, बढ़ा-चढ़ाकर सुनाया।

वसंत के आगमन तक क़ोनानबाय शहर में ही रहा। आग़ा-सुल्तान बनने की बात तो अब सपने में भी नहीं सोची जा सकती थी, लेकिन मेजर और क़रक़रालीस्क के समस्त अधिकारियों के एक बार फिर से मित्र बन जाने पर उसने कोई ओहदा हथियाने की कोशिश की।

बर्फ़ पिघलने के बाद जब पहली घास उग आयी, क़ोनानबाय आख़िर मायबासार की जगह वोलोस्त-प्रमुख बनकर क़रक़रालीस्क से रवाना हो गया।

अभी वह शहर से रवाना ही हुआ था कि ख़बर उसके आऊलों को पहुँच चुकी थी।

४

उस वसंत में आबाय की मानसिक स्थिति कुछ विचित्र-सी थी। वह आऊल के जीवन-व्यापार, स्वजनों व मित्रों के सुख-दुख के प्रति अन्य-मनस्क-सा हो उठा था। उसके विचार, उसकी भावनाएँ – सब उसकी अपनी ही दुनिया में लीन हो गयी थी। उसके भाव-प्रवण गीतों और पदों को अंकित करने में दोम्ब्रा और काग़ज़ दोनों ने ईमानदारी से उसका साथ दिया। यह रचनाएँ एक तीव्र आन्दोलित युवक के हृदयानुभूत स्वीकरण थीं। फिर भी अभी बहुत कुछ अनकहा था, बहुत से गीत अनगाये थे! उसके दिल के सारे भेद खुल नहीं पाये थे। और जो कुछ उसने कहा, गाया था, वह अपेक्षातया बेकार, ख़ाली-ख़ाली प्रतीत होता। काश, उसे कोई सच्चा दोस्त मिल जाता, वह उसके सामने अपनी सारी उत्कंठाएँ – वह सब कुछ जिसे वह स्वर नहीं दे पाया था – उंडेलकर रख देता।

"मैं क्या करूँ?" वह दुखी हो सोचा करता। "शब्द इतने अकिंचन और भाषा इतनी निरर्थक है!" उसे अपनी लाचारी डस रही थी।

अब तक उसने जितने पद लिखे थे, वे सब उसी तक सीमित रहे थे। जिसे वे समर्पित थे, उस तक तो उनमें से एक भी नहीं पहुँच पाया था। उम्मीद? उम्मीद क्या की जा सकती थी? उसके पास सिर्फ़ म्लान, वीरान सपने ही बच रहे थे।

जब-तब, बहुत दूर, उसे ऐसा प्रतीत होता मानो वह वही परिचित रजतोपम रुनझुन सुन सकता है—कभी एकदम साफ़, कभी दूर जाता हुआ... आशा की यह धुँधली गूँज बड़ी दुखदायी थी। आरज़ू? इसकी सुनहली किरणें बहुत दूर चमक रही थीं—उसकी दृष्टि के परे भोर था, सुबह थी—चमचमाती सुबह। यह प्रतिबिंब पल भर के लिए भी उसके मस्तिष्क से कभी अलग नहीं होता।

सूर्य की पहली किरण जैसे ही धरती को चूमती और ऊष्मा फैल जाती, आबाय ख़ुद को घर पर रोक रखने में असमर्थता महसूस करने लगता। वह अपने घोड़े पर ज़ीन कस, इधर-उधर निकल पड़ता। और उसके इस निरुद्देश्य भटकाव के लिए बहाना प्रस्तुत करता उसका हल्के भूरे रंग व काले चेहरेवाला शिकारी कुत्ता।

आऊल की नज़रों से ओझल हो जाने के बाद आबाय अपना घोड़ा रोक लेता और कुत्ते को ख़ुद ही ख़रगोश ढूँढ़ने छोड़ देता। सच तो यह था कि वह शीघ्र ही कुत्ते के बारे में सब कुछ भूल जाता, काफ़ी समय तक उसे उसकी याद ही नहीं आती, फिर एकाएक याद आ जाने पर उसे आवाज़ लगाता। कभी-कभी कुत्ता झाड़ियों में किसी ख़रगोश पर झपट पड़ता और उसे खुले में दौड़ा लेता, लेकिन आबाय उसकी ओर पहले की तरह ही उदासीन-भाव से, खोये-खोये अन्दाज़ में देखता रहता। आख़िर कुत्ता किसी खरहे को पकड़ लेता और अभिमानपूर्वक उसे अपने एक पंजे से दबाये, मालिक की प्रतीक्षा करता रहता। पहले जब ऐसे अवसर आते थे, उसका मालिक हमेशा अपने घोड़े से उछलकर शिकार को क़ाबू में ले लेता था। लेकिन अब बस आबाय ध्यान दिये बिना गुज़र जाता। पल भर के लिए कुत्ता उसे ख़ाली-ख़ाली निगाहों से घूरता फिर इधर-उधर उछलकर भौंकने लगता। लेकिन किसी ग़ैर-मामूली कारण से उसका मालिक यह भी नहीं देख पाता। अपनी मेहनत के लिए कोई तवज्जह नहीं पाकर

कुत्ता ज़ाहिरी तौर पर क्रुद्ध हो आबाय और खरहे के बीच विक्षिप्ततापूर्वक तेज़ी से दौड़ना शुरू कर देता। जब उसका धीरज जवाब दे जाता, वह मामला अपने ही ढंग से सुलझा लेता: मालिक को अपने हाल पर छोड़कर वह पेट भर ख़रगोश को गटक जाता और अपनी नाक व जबड़ों में ख़ून लगाये आबाय को जा पकड़ता। और तभी इस अनोखे शिकारी को अपनी ग़लती का अहसास होता।

इतना होने पर भी आबाय कभी-कभी ख़्यालों की दुनिया से वापस नहीं आ पाता और तोग़जान के हृदय को समर्पित कोई लम्बा-सा, हृदय-स्पर्शी गीत गाने लगता।

जब ठंडी बयार से घास ज़मीन पर लोट जाती, अपने सिर से टोपी उतारकर वह सुवासित सुरभि अपने सीनों में गहरे भर लेता। शायद उसे ऐसे लग रहा हो जैसे चिंगीज़ से, उष्ट्र ककुद से, क़ाराऊल से आ रही यह हवा उसकी प्रिया की हार्दिक आदरणीय श्वास है। कहीं यह वह स्नेह भरी हवा तो नहीं अपने झोंके से उसकी आत्मा को उदात्त बना दिया था। यह, हाँ, सचमुच यह हवा वैसी ही है। यथार्थ और सपने, ज़िन्दगी और उम्मीद ने अपनी शाश्वत सीमाएँ पारकर एक अविभाज्य समग्रता में विलीन हो, उसे अव्यक्त संवेदना से भर दिया था।

सहसा, एक दिन उसके अकेलेपन पर हमला हो गया। उन विशाल, वीरान स्तेपियों में न जाने कहाँ से एक घुड़सवार आ पहुँचा। आबाय तो चकित था, उसके मोहक सपने जा चुके थे।

दोनों घुड़सवार आमने-सामने आये, उनके चारों ओर दूर-दूर तक सपाट मैदान फैला था। अजनबी पर खीझ भरी दृष्टि डाल आबाय पलट ही पड़नेवाला था कि तभी दूसरा उल्लासपूर्वक मुस्कुरा उठा और पुराने परिचितों की तरह आवाज़ देकर उसे बुलाया। तब आबाय उसे पहचान गया और ख़ुशी से दमक उठा।

यह येर्बोल था—वही नौजवान जिससे उसकी मुलाक़ात पिछले साल सुयून्दिक़ के आऊल से लौटते समय हुई थी। पल भर के लिए आबाय सकपका गया, उसे डर लगा, कहीं गहन उत्तेजना भरे स्वागत से उसका राज़ न खुल जाये, लेकिन ऐसा प्रतीत हुआ, येर्बोल कुछ भी महसूस नहीं कर पाया था।

"शिकार कर रहे हो?" उसने पूछा। "तुम्हारा कुत्ता कहाँ है?"

"कहीं झाड़ियों में होगा," आबाय ने इधर-उधर देखते हुए कहा।

कुत्ता झाड़ियों में से बाहर आया और येर्बोल ठहाका लगाकर चीख़ पड़ा।

"बड़े अच्छे शिकारी हो तुम! क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता, कुत्ता ख़ुद ही शिकार हज़म कर गया है! तुम्हें शिकार की भी सुध नहीं रही, आख़िर क्यों? और अब कुत्ता उसे खा गया!"

आबाय ने विषय बदल डालने की पूरी कोशिश की। वे एक साथ घुड़सवारी करते रहे और अपने मित्र से बिछड़ना न पड़े, इस लिए उसने येर्बोल को अपने आऊल में चलने का निमंत्रण दे दिया।

पाँच दिनों तक आबाय येर्बोल को अपने आऊल में रखे रहा; दोनों ने एक-दूसरे को कहानियाँ सुनायीं और शाम को एक साथ ही गीत गाये, मज़ाक किये। आबाय ने येर्बोल को कुछ अपने गीत सुनाये। उन्हीं कुछ दिनों में येर्बोल आबाय का घनिष्ठतम मित्र बन गया और अन्ततोगत्वा आबाय ने उस पर पूरा भरोसा करते हुए, उसके सामने अपने दिल के राज़ खोल दिये।

"तोग़जान को यह गीत सुना देना," उसने उससे अनुनय किया।

येर्बोल सारे गीतों को कंठस्थ कर, तोग़जान को उन्हें सुनाने का वायदा कर, अपने आऊल को रवाना हो गया।

आबाय को एक ही ख़्याल परेशान किये था: वह कैसे तोग़जान से मिले और उससे कुछ बतिया सके। येर्बोल ने अपना वायदा पूरा किया और तीन दिन बाद – यह तीन दिन आबाय को अनन्त प्रतीत हुए थे – वह लौटा और अपने दोस्त को जिदेबाय से चिंगीज की ओर, सीधे उष्ट्र ककुद की ओर ले गया!

येर्बोल ने सबसे पहले असिलबेक की बीवी और तोग़जान की भाभी क़ाराशाश को अपने विश्वास में लिया। उसने उसे वे सारे गीत सुना दिये थे जिन्हें आबाय ने बतौर सलाम अपनी प्रियतमा को भेजे थे। पहले तो तोग़जान की अन्यतम सहेलियों में एक क़ाराशाश ने ऐसी मुलाक़ात की व्यवस्था करने से हठपूर्वक इनकार कर दिया था लेकिन आबाय के गीतों और येर्बोल की आग्रहपूर्ण वाकपटुता से विचलित हो, वह राज़ी हो गयी थी। उन दोनों ने मिलकर सारे गीत तोग़जान को सुना दिये थे।

बेकली में आबाय को उष्ट्र ककुद तक पहुँचने का पता भी नहीं चला। झुटपुटा होने तक दोनों पहाड़ियों के बीच अवस्थित येर्बोल के आऊल में पहुँचे।

इस छोटे, अकिंचन जाड़े के पड़ाव में सिर्फ़ येर्बोल का ही झोंपड़ा था। सुयून्दिक़ का आऊल नदी के पार, एक मील से भी कम दूरी पर था और साफ़-साफ़ दिखाई देता था। समृद्धि ने वहाँ घर कर रखा था। चिमनियों से घना काला धुँआ उठ रहा था और झोंपड़ों के बीच मोटे-तगड़े कुत्ते अपनी ही बेधड़क शान के साथ भौकते मटरगश्ती कर रहे थे।

लेकिन दूसरे किनारेवाले आऊल के रास्ते आबाय के लिए बन्द थे। वह उनके दुश्मन क़ोनानबाय का बेटा था। अगर उसके यहाँ आने की मंशा कोई जान ले तो बड़ा बुरा होगा। आदिलबेक और असिलबेक दोनों ही घमंडी और प्रतिशोध से भरे नौजवान थे। अगर उन्हें आबाय के इरादों का पता चल जाता तो वे क्रोध से भर उठते। इस लिए, दोनों दोस्तों ने रात होने से पहले नदी पार न करने का फ़ैसला किया।

निश्चित समय पर जब पूरा अंधेरा घिर आया, आबाय और येर्बोल अपने घोड़ों को छोड़ बर्फ़ पर से नदी पार कर गये। सुयून्दिक़ का आऊल चैन की नीन्द सो रहा था। एक कुत्ता तक नहीं जागा।

येर्बोल ने चुपके से जानवरों के अहाते का फाटक खोल दिया और आबाय को ऊँटशालाओं में ले जाकर ग़ायब हो गया। अंधेरे में अकेले आबाय को साँस लेने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी; उसे अपने दिल की धड़कनें सुनाई दे रही थी।

लेकिन येर्बोल जल्दी ही लौट आया और अपने दोस्त का हाथ थाम बुदबुदाकर बोला:

"अल्लाह हम पर मेहरबान है... आसिलबेक घर पर नहीं है। मेरे साथ आ जाओ!"

समृद्ध रूप से सुसज्जित कमरे की दहलीज़ लाँघकर शिष्टतापूर्वक सलाम करने के बाद आबाय ने जब सिर उठाया तो बिछावन के पास क़ाराशाश को खड़ी और फ़र्श पर बिछी चादर पर तोग़जान को बैठी देखा। दरवाज़े से प्रतिष्ठित स्थान तक नमदे बिछे थे। दीवारों पर विविध डिजाइनों के धुस्से और रेशमी पर्दे टँगे थे। एक सफ़ेद रेशमी पर्दे से हाथी दाँत से आभूषित लम्बा पलंग आधा छुपा था।

सलाम-दुआ के बाद क़ाराशाश आबाय को टोप उतारने और उसे अपना पटका ढीला करने में मदद करने आगे बढ़ आयी।

तोग़जान उलझकर रह गयी थी। उसने कठिनाई से उसके अभिवादन का जवाब दिया और शर्म से लाल हो उठी, फिर पीला पड़ गयी। उसकी धमनियों में ख़ून तेज़ी से दौड़ने लगा और वह अपने दिल के राज़, अपनी व्याकुलता, अपने भय, अपनी उम्मीदें छुपा पाने में असमर्थ हो उठी।

येर्बोल अपने दोस्तों को अपनी उपस्थिति से परेशान नहीं करना चाहता था।

"मैं नदी पार घोड़ों को देखता रहूँगा," उसने कहा।

आबाय ने सिर हिला दिया।

क़ाराशाश चाय लाने गयी तो फिर लौटी ही नहीं।

अपनी प्रिया को पूरी तरह एकान्त में पाकर आबाय पहले तो किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा रह गया और उसने देखा तोग़जान भी किसी बच्चे की तरह लजा रही थी। वह उसकी ओर झुककर कुछ देर तक उसे एकटक देखता रहा।

"तोग़जान... क्या तुमने मेरा सलाम सुना था?" आख़िर उसने पूछा। "वे तुम्हारे लिए मेरी तड़पन के, मेरे ख़्यालों के शब्द हैं... क्या तुमने उन्हें सुना था?"

तोग़जान की मानो समस्त भाव-भंगिमा कहती प्रतीत हो रही थी: "फिर मैं यहाँ हूँ कैसे? क्या यह तुम्हारी आवाज़ मुझे यहाँ नहीं खींच लायी?" लज्जा भरी मुस्कान के साथ उसने कहा:

"मैं उन्हें सुन चुकी हूँ, आबाय! तुम्हारे गीत बहुत ही सुन्दर हैं!"

"मैं कोई आक़िन नहीं लेकिन तुम्हें देखने के बाद से मैं अपने होश ही गँवा बैठा। मैं तुम्हें एक पल के लिए भी भुला नहीं पाया हूँ।"

"फिर तुम मुझसे मिलने क्यों नहीं आये?"

"मैं कैसे आ सकता था? तुम जानती ही हो, क्या कुछ होता रहा है। हम सिर्फ़ अपने ख़्यालों में ही मिल सकते थे!"

"ठीक कहते हो," तोग़जान बोली और शर्म से लाल हो उठी। "लेकिन मैंने तुम्हें एक बार देखा था... सफ़र के दौरान... मुझे नहीं मालूम, तुमने देखा या नहीं।"

आबाय उसके शब्दों से रोमांचित हो उठा।

"वाह, तोग़जान, वाह! तुमने यह बताकर बहुत अच्छा किया! मैं उस समय लगभग चीख़-सा पड़ा था, 'रुक जाओ! पल भर के लिए

ही ठहर जाओ!' मैं बड़ी मुश्किल से ख़ुद पर क़ाबू रख सका था! मुझे पूरा विश्वास था, तुमने मुझे नहीं देखा। लेकिन अगर तुमने देखा, मैं अवश्य ही इस क़ाबिल था। तोग़जान, क्या तुम समझती हो, तुम्हें भूलना तनिक भी संभव है?" आबाय ने उसका गोरा नाज़ुक हाथ थाम लिया।

काँपते हुए, तोग़जान ने अपना हाथ खींच लिया।

उस शाम के लमहों ने दोनों नौजवान दिलों को मज़बूत बन्धनों से जकड़ दिया। वे और कुछ नहीं चाहते थे—बस एक-दूसरे को देखते रहें, बातें करते रहें। उनकी बातों का कोई अन्त ही न था मानो वे किसी चिर-तृषित प्यास को बुझाना चाहते हों।

सूर्य की किरणें फूटने को हुई, तभी क़ाराशाश वापस आयी और चाय तैयार करके फिर चली गयी। तब आबाय ने तोग़जान को अपनी बाँहों में भरकर चूम लिया। तोग़जान ने अपने कोमल हाथ नरमी से उसके चेहरे से लगाकर, सावधानी से उसे अपने से परे कर दिया लेकिन यह प्रतिरोध कम बल्कि नम्रता, मनोहरता और व्याकुलता अधिक था। भावावेशवश आबाय ने उसे फिर खींच लिया और उसकी आँखों पर अपने होंठ रख दिये। पल भर के लिए उसका चेहरा तोग़जान के उत्तप्त मुखड़े से सटा रहा लेकिन फिर वह उसकी बाँहों से फिसलकर निकल गयी।

"मेरी नयन-प्रभा," आबाय ने ज़ोर से कहा लेकिन तभी क़ाराशाश हठात वहाँ तेज़ी से आ धमकी।

"ख़ुदा हम पर रहम करे, मेरे प्यारे आबाय! नदी पर हिम-विगलित हो गया है! बर्फ़ खिसक रही है! तुम्हारा घोड़ा कहाँ है?"

आबाय को उसकी घबड़ाहट भरी बातें सुनाई दीं लेकिन भावावेग में वह उन्हें समझ नहीं सका। लेकिन तोग़जान चिन्तित, भयभीत हो गयी।

"क्या कह रही हो तुम? वह नदी कैसे पार करेगा? तुम्हें जाना चाहिए!" उसकी सुरक्षा के प्रति चिन्तित हो उसने याचना की।

आख़िर आबाय की समझ में बात आ गयी। उसका घोड़ा दूसरे किनारे पर था और इसका मतलब था, भागने का कोई तरीक़ा न था। आऊल में ठहरना असंभव था क्योंकि शीघ्र ही वह पहचान लिया जायेगा। अगर वे उसे तुरंत न भी पकड़ लें तो सुबह तक तो पा ही लेंगे और नदी के इस पार उसका भला चाहनेवाला कोई भी न था। और सबसे बड़ी बात थी, घर से निकल जाना ज़रूरी था जिससे तोग़जान और उसकी भाभी

पर कोई आँच न आये जिन्होंने इतनी सदयता से उसका स्वागत किया था।

अपना कोट डालते हुए, फिर से धीरज दिलाने के अन्दाज़ में उसने तोग़जान का हाथ दबाया:

"डर की कोई बात नहीं, तोग़जान। मैं किसी न किसी तरह नदी पारकर जाऊँगा। और मेरे संदेश येर्बोल से लिया करोगी।"

तोग़जान ने अपनी गोरी-गोरी अंगुलियों से आबाय के सीने का स्पर्श किया और उसकी ओर सिमट आयी।

"अलविदा! भूलना मत!"

फिर सहृदय, नम्र व्यवहार क़ाराशाश एक अंधेरे गलियारे से आबाय को खुले में ले आयी।

"हाँ, तो मेरे प्यारे," उसने कहा। "तुम बहुत समय तक हमारे साथ नहीं रहे लेकिन तुम देख सकते हो, हमारे बीच तुम्हारे ऐसे दोस्त हैं जिनकी हर साँस में तुम बसे हो। हमें भूलना मत! नदी पार करते सावधान रहना! ख़ोश! अलविदा!"

आबाय ने उसके हाथ थाम लिये।

"मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगा, जेंगेशताय! * जो कुछ तुमने मेरे लिए किया है, वह मैं मरने के दिन तक नहीं भूलूंगा," इतना कहकर वह जाने के लिए मुड़ गया।

जमी बर्फ़ के स्खलन व पिघलन की गरज उसके कानों तक पहुँच रही थी लेकिन उसे तनिक भी यह महसूस नहीं हुआ। उसके ख़्याल अभी भी उन भले लोगों के पास थे जिनसे विदा ले वह आ रहा था। ख़ुशी के आवेग से वह भरा था। क़ाराशाश की छू जानेवाली सहानुभूति और तोग़जान के कोमल आकर्षण की याद उसे अब भी पराभूत कर रही थी।

नदी के किनारे पहुँचकर उसने देखा, पहाड़ी झरने के किनारे टूट चुके हैं। चट्टानें गड़गड़ाकर टूट रही थीं और टूटी बर्फ़ सोते के सब कुछ बहाकर ले जाते तेज़ प्रवाह के कारण गरज-तरज रही थी।

आबाय एकदम निस्तब्ध खड़ा रह गया। क्या करें, उसकी समझ में नहीं आ रहा था। पार करने की कोशिश करना तो पागलपन ही होता।

---

* जेंगेशताय – भाभी के लिए एक स्नेहपूर्ण शब्द। – सं॰

लेकिन सुबह होनेवाली थी और कुछ करना ज़रूरी था। वह नदी के किनारे-किनारे तब-तक चलता गया जब तक उसे एक छोटी-सी झाड़ी नहीं मिल गयी। वह तेज़-तेज़ चल रहा था फिर दौड़ता हुआ पीछे लौटा, लेकिन कोई रास्ता न था। वह सिर्फ़ समय गँवा रहा था, धीरे-धीरे अंधेरा कम हो रहा था—वह अपने आस-पास की सभी चीज़ें देख सकता था। आऊल के जाग पड़ते ही लोग पिघलती बर्फ़ देखने आ पहुँचेंगे। पहले आनेवालों में चिन्तित बूढ़े लोग होंगे और यहाँ, सुयून्दिक़ के आऊल के पास अकेला, बिना घोड़े के वह, क़ोनानबाय का बेटा खड़ा था। उनका सन्देहमात्र भी उसके लिए ख़तरनाक साबित हो सकता था।

इसके बावजूद आबाय भयभीत न था। उसके हृदय का उल्लास अभी तक क्षीण नहीं पड़ा था और वहाँ भय के लिए कोई जगह न थी। इतने बड़े ख़तरे से दो-चार होने के बावजूद उसका दिमाग़ बेक़ाबू नहीं हुआ या वह निरुद्देश्य इधर-उधर दौड़ने-फिरने नहीं लगा। वह शान्त, आत्म-नियंत्रित था—अब वह कोई किशोर नहीं, बल्कि एक पुरुष था—परिपक्व, आत्मविश्वासपूर्ण !

किसी तरह छुटपुट झाड़ियों में ख़ुद को छुपाये हुए, वह येर्बोल के शरद्‌कालीन झोंपड़े पर तेज़ नज़र रखे था। शीघ्र ही उसे अपने छुपने के स्थान के कुछ ऊपर किसी आदमी के तेज़ी से किनारे तक आने का आभास हुआ।

"येर्बोल ! येर्बोल !" वह चीख़ पड़ा।

यह वास्तव में येर्बोल ही था। आबाय की आवाज़ पर वह तेज़ी से पलट पड़ा और उसने उसे छुपकर बैठने का इशारा किया। लेकिन आबाय इन्तज़ार करता खड़ा रहा।

क़ाराऊल थी तो छोटी-सी नदिया लेकिन उसकी धारा बड़ी तेज़ थी। येर्बोल दूसरे किनारे पर आबाय के छुपने के स्थान के ठीक सामने दौड़कर आया। वह एकदम पीला पड़ गया था और चिन्ता के कारण वह लगभग आपे में न था मानो वह ख़ुद ख़तरे में पड़ा हो। आबाय के लिए काँपता वह सोच रहा था कि उसका दोस्त बस लाचारी और दहशत से निस्तब्ध खड़ा रह गया है।

लेकिन आबाय शीघ्र ही पानी के पास आ खड़ा हुआ। उसके हँसने से उसके सफ़ेद दाँत चमक उठे थे।

"येर्बोल, कोई रास्ता निकालो! क़ाराऊल ने तो मेरे साथ दग़ा करने की ठान ली है," उसने ज़ोर से कहा।

येरबोल ऊँचे कगार से कूदकर नीचे पानी के किनारे आ ज़ोरों से जवाब देते हुए बोला:

"झाड़ियों में छुपे रहो। जहाँ थे, वहीं रहो! मैं अभी लौट आऊँगा! डरने की कोई ज़रूरत नहीं।"

वह ग़ायब हो गया, लेकिन जल्दी ही एक विशालकाय लाल रंगवाले भैंसे पर सवार लौटा। आबाय विस्मित था। उसका दोस्त घोड़े कसकर क्यों नहीं लाया था? येर्बोल पानी में उतर पड़ा और भैंसे को धारा में कोंचा लगाया। बर्फ़ीले सोते में जाते जानवर को डर लग रहा था और वह गावदी की तरह इधर-उधर पलट पड़ता। लेकिन आख़िर येर्बोल अपने मन की बात पूरी करके रहा। एक बार पानी में घुस आने के बाद भैंसा आनाकानी करने की बजाय सीधे दूसरे किनारे की ओर चल पड़ा। यहाँ नदिया गहरी नहीं थी, लेकिन धारा तेज़ और बर्फ़ भी बड़ी-बड़ी थी। भैंसा धीरे-धीरे लेकिन लगातार आगे बढ़ने लगा और येर्बोल ने आख़िर बड़े रस्से का छोर दूसरे किनारे पर फेंक ही दिया। आबाय ने उसे ज़मीन पर गिरने से पहले ही थाम लिया और काफ़ी ज़ोर लगाकर खींचने लगा। पीठ पर सवार आदमी की पिटाई से मजबूर हो आख़िर भैंसा ऊपर किनारे पर चढ़ ही आया।

येर्बोल ने ख़ुद को सच्चा दोस्त साबित कर दिया था। वह अपनी जान की बाज़ी लगाकर उसकी मदद के लिए आया था। आबाय दौड़कर उसकी गर्दन से लिपट गया।

"मेरा घोड़ा कहाँ है? तुम्हें यह भैंसा कहाँ मिल गया? तुम अपने घोड़े पर क्यों नहीं आये?"

"मैं तुम्हारे घोड़े के लिए अगर आऊल में जाता तो लोग तुम्हें बहुत पहले ही पकड़ चुके होते," वह हँस पड़ा। "हम बिना घोड़ों के काम चलायेंगे।"

दोनों भैंसे की पीठ पर जा बैठे और उसे सोते की ओर मुख़ातिब कर दिया; लेकिन लाख कोशिशों के बावजूद वे उसे पानी में नहीं ले जा सके। भैंसे को और उसकी सतहत्तर पीढ़ियों को कोसने के बाद निराश हो येर्बोल नीचे उतर गया और छुटपुट झाड़ियों के परे जायज़ा लेने लगा।

पूर्व में लाली छा गयी थी और दिन की तरह सब कुछ स्पष्ट गोचर हो उठा था। क़िस्मत से आऊल अभी भी शान्तिपूर्वक सोया था।

सहसा येर्बोल दौड़ पड़ा।

आबाय को ज़्यादा प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। येर्बोल शीघ्र ही एक मज़बूत भूरी घोड़ी लेकर आ पहुँचा।

"यह तुम्हें कहाँ मिली?" आबाय ने पूछा।

"यह वहाँ चर रही थी। यह सुयून्दिक़ के आऊल के गरेड़िये की घोड़ी है।"

"उसे निश्चित रूप से इसकी ज़रूरत पड़ेगी।"

"तुम्हें चिन्ता की क्या ज़रूरत है?"

"वह भेड़ों को कैसे चरायेगा? वह पैदल तो यह काम कर नहीं सकता।"

"भाड़ में जाये! उसे पैदल टापने दो – उसे भी और उसके ढोर को भी! मैं तुम्हें यहाँ कैसे छोड़ सकता? चढ़ो! जल्दी से!" और उसने अपने दोस्त को अनकसी घोड़ी पर चढ़ने में मदद की।

आबाय विचलित हो उठा।

"येर्बोल, मेरे दोस्त! तुमने मेरी बड़ी भलाई की है! तुम मेरे सबसे अच्छे दोस्त हो! मैं इसे कभी नहीं भूलूंगा!"

येर्बोल भैंसे पर जा बैठा था।

"बकबक बन्द करो! आगे बढ़ो!" उसे रास थमाते हुए उसने कहा।

अपने खुरों से नदिया के अनिश्चित तले की थाह लेने की कोशिश करती, नथुने फुलाये घोड़ी ने बर्फ़ीली धारा में अपना सन्तुलन ठीक रखा और आगे बढ़ चली। भैंसा पीछे-पीछे चला और दोनों दोस्त जल्दी ही सुरक्षित दूसरे किनारे पहुँच गये।

दूसरे किनारे पर नौजवानों ने घोड़ी और भैंसे दोनों को छोड़ दिया और नज़रों से बचने के लिए झाड़ियों में कमर तक झुके-झुके दौड़ पड़े। नदिया से काफ़ी दूर आ जाने के बाद ही खुले में आने का ख़तरा उन्होंने मोल लिया।

आबाय येर्बोल के झोंपड़े में नहीं गया बल्कि उसने उसे जल्दी से जल्दी अपने घोड़े पर ज़ीन कसने के लिए कहा। अपने दोस्त की ख़ैरख़्वाही से अभिभूत आबाय उससे किसी आजन्म दोस्त की तरह विदा हुआ और नदी तट के साथ-साथ अपने घर की ओर चल पड़ा।

करकरालीस्क से कोनानबाय के वापस आने तक कुछ आऊल अपने शरदकालीन आवासो से निकलकर ओतावो मे रहने लगे थे और शरद-कालीन स्थल के आस-पास हरी-भरी स्तेपियाँ सफेद, सलेटी मुकुटो से सुशोभित हो चुकी थी। हालाँकि बूढे-बुढियोवाले परिवार मकानो मे ही रह रहे थे, वसन्त के तरोताजा करनेवाले कुशादा ओतावो मे सारे नौजवान लोग रहने चले आये थे। नयी ऋतु की चमकीली सजधज मे आऊल वास्तव मे ही युवा, कोलाहलपूर्ण और अत्यधिक जीवन्त प्रतीत हो रहे थे। चितकबरे मेमनो और बछेडो ने धूप मे धमाचौकडी करते हुए, अपने मे-मे से पूरे माहौल को भर रखा था। रोएँदार उष्ट्र-शावक अपनी बडी-बडी भूरी आँखे मटकाते इधर-उधर चौकडी भर रहे थे। घोडो के ढोर मे अनगिनत लोमश, लम्बे कानवाले शावको ने चहल-पहल मचा रखी थी। बछडे भी बडे हो गये थे और बाये-दाये अपनी पूँछ हिलाते हुए घास पर सरपट दौड लगा रहे थे। समस्त प्रकृति ही एक अदम्य जीवन्तता भरे कोलाहल मे शरीक हो उल्लासमय समूहगान गाती प्रतीत हो रही थी, "शिव, सुन्दरम के निर्माण के लिए हम सहजोद्भूत इस धरती की खुशियाँ है।" निस्सन्देह यह वसत ही था — द्युतिमान, कुसुमित और जीवन से स्पन्दित।

कोनानबाय के दोनो आऊल जिदेबाय मे आ बसे थे। साल भर अपने शावको के साथ चरते रहने के बाद घोडियो को दुहा जा रहा था और सुबह-शाम काले चमचमाते मशको मे घर्र-घो के साथ किमिज मथा जाता।

कोनानबाय का स्वागत विशेष सम्मान के साथ न केवल अपने ही आऊल मे बल्कि इर्गिजबाय, तोपाय और जुवान्तयाक के सभी आऊलो मे किया गया। उसके स्वजनो और मित्रो का जिन्होने घोडो पर सवार हो यह खुशखबरी आऊल-आऊल मे पहुँचायी थी, जिदेबाय मे उनका ताँता लग गया, उन्होने कोनानबाय को अपना सलाम पेश किया और उन्हे उसके तम्बुओ मे भोज दिया गया। बदले मे वे उसे अपने आऊलो मे ले गये जहाँ सुबह से रात तक भोज चलता रहता।

उसके अधिक समृद्ध स्वजनों ने सिर्फ़ क़ोनानबाय को ही नहीं बल्कि उसके पूरे परिवार को आमंत्रित किया – उसकी माँ, बीवियों, बच्चों और निकटतम सम्बन्धियों को।

ज़ेरे ने सबसे अच्छे भेड़ों को ज़बह कराया। अपने बेटे के सही-सलामत लौट आने के लिए यह भेड़ उसने चढ़ावे के तौर पर बहुत पहले से रख छोड़ा था। कुन्के के आऊल में भी क़ोनानबाय ने एक घोड़ा ज़बह किया जिसे उसने अपने मुक़द्दमे के सुखद अन्त के लिए चढ़ावा के तौर पर रख छोड़ा था। यह समारोह भी क़ोनानबाय के कार्यक्रम का एक आवश्यक अंग थे – ऐसे जमाकड़ों से उसे अपनी स्थिति का जायज़ा लेने में मदद मिली, कौन उसके साथ है, कौन नहीं, यह देखने का मौक़ा मिला, मुसीबत के बाद कौन उसका स्वागत किस तरह करता है, इसका पता लगाने में मदद मिली।

भीड़-भाड़ भरे जमाकड़ों में सारे आक़साक़ाल और क़ारासाक़ाल* मौजूद थे।

कोकशे के मुखिया क़ाराताय ने जिसने पतझड़ में अपनी स्थिति इतनी चौकसी-भरी और सन्दिग्ध रखी थी, अब क़ोनानबाय का स्वागत पुरशोर उत्साह के साथ किया और हमेशा उसकी बग़ल में ही रहा।

कुछ ही दिन पहले तक आऊल अफ़वाहों से भरे थे। ऐसा कहा जाता था, क़ोनानबाय की मिट्टी पलीद हो गयी, उसे निर्वासित कर दिया गया, पद-च्युत कर दिया गया, सत्ता छीन ली गयी। लेकिन अब वह पूरी तरह निर्दोष और वोलोस्त-प्रमुख के रूप में सत्तासम्पन्न होकर लौटा था। उसके बुरा चाहनेवालों के मुँह बन्द हो गये।

क़ोनानबाय की बहादुरी और हिम्मत के बारे में मिर्ज़ाख़ाँ की कहानियाँ सब जगह पहुँच गयी थीं और बच्चे भी उन्हें दुहरा रहे थे। क़ोनानबाय द्वारा दिये जा रहे रोज़ाना और उदारतापूर्ण भोज का मात्र समारोह से कहीं अधिक महत्व था: वह अपने आदमियों को जमा कर रहा था, पहले की तरह उन्हें दृढ़तापूर्वक सूत्रबद्ध करते हुए अपने स्वजनों को पंक्तिबद्ध कर रहा था, उनकी आँखों में पुन: अपनी पूर्व-प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा था।

---

* क़ारासाक़ाल – (काली दाढ़ी) – मध्यम आयु का व्यक्ति। – सं०

आऊल शरद्कालीन स्थलों को छोड़ चुके थे और पहाड़ियों से नीचे विभिन्न वसंत के पड़ावों की ओर बढ़ रहे थे। धीरे-धीरे क़ोनानबाय के मेहमानों की संख्या जब कम होने लगी, उसे अपनी बीवियों और बच्चों के साथ व्यतीत करने के लिए अधिकाधिक ख़ाली समय मिलने लगा। उलजान के आऊल में अपने पिता के तीन दिनों के लिए आने पर आबाय यह महसूस किये बिना नहीं रह सका कि वह पहले से अधिक बूढ़ा हो गया है और उसके चेहरे पर अधिकाधिक झुर्रियाँ दिखाई देने लगी हैं।

एक दिन जब उलजान के साथ भोजन करने के लिए कुन्के, क़ुदायबेर्दि और आयगिज़ इकट्ठे हुए, क़ोनानबाय हालाँकि ज़ेरे को सम्बोधित करते हुए बोल रहा था, उसकी कुछ बातें पूरे परिवार से ताल्लुक रखती थीं। उसके शब्द हाल के दुखद अनुभवों से उत्पन्न कटुता से परिपूर्ण थे। उसने ख़ुद को इससे पहले कभी इतना अकेला नहीं महसूस किया था, उसने कहा। न तो उसे बड़े-बूढ़ों में और न ही नौजवान स्वजनों में एक भी ऐसा आदमी मिल सका था, जिसपर वह निर्भर कर सकता। उसने अपने वयस्क बेटों की शादी में देर कर दी थी और उसे अपने पोते-पोतियों के लालन-पालन और उनकी निर्दोष धमा चौकड़ी को देखने के आनन्द से वंचित रह जाने का दुख था।

ज़ेरे सहित सभी माताओं ने हामी भरी और उसकी बातों पर ख़ुशी ज़ाहिर की। इसका अभिप्राय था वयस्क बेटों का विवाह और पोते-पोतियों का जन्म – उन सब को अपनी चिर-प्रतीक्षित ख़ुशी मिल गयी थी।

क़ोनानबाय ने यह भी कहा कि विपत्ति के क्षणों में अल्लाह का ही सबसे बड़ा आसरा रहा लेकिन आदमियों में उसके समर्थक बच्चों के दोनों भावी श्वसुर ही रहे थे। उनमें उसे सच्ची दोस्ती और हमदर्दी मिली थी। वे थे अल्शिनबाय और तिनिबाय। इसके अलावा ओम्स्क जाते समय तास-बोलात क़बीले के बुज़ुर्ग बायतास ने उसका स्वागत मैत्रीपूर्ण रुचि के साथ किया था।

फिर क़ोनानबाय ने यात्रा के दौरान पहुँचे एक नतीजे के बारे में बताया। बायतास के एक नन्हीं-सी बेटी है येर्केजाँ और क़ोनानबाय ने ओस्पान के लिए उसका हाथ माँगने का फ़ैसला किया था। बातचीत तय हो चुकी है – उसके इस नटखट बेटे की वह दुल्हन थी। इस सूचना का सबने, ख़ास तौर पर माताओं ने उल्लासपूर्वक स्वागत किया। वे हँस पड़ीं

ग्रौर यह ख़बर उस पाजी को जिसे ग्राख़िर बेड़ियों में जकड़ ही देना था, किस तरह दी जाये, इस पर बहस करने लगीं।

फिर क़ोनानबाय ने उलजान के बाक़ी दो बेटों की बात शुरू की। पिछले साल तकेजान ग्रपनी मँगेतर के यहाँ जा चुका था ग्रौर उसके श्वसुर को विवाह-सम्बन्धी सारा धन दिया जा चुका था। फिर ग्रब देर क्यों की जाये? तकेजान ग्रपना युवा ग्रोताव क़ायम कर ले। दूसरा फ़ैसला ग्रत्यधिक महत्वपूर्ण था ग्रौर इसमें समस्त उपस्थित लोगों की दिलचस्पी ग्रौर मदद की ज़रूरत थी। ग्राबाय को ग्रपनी मँगेतर के यहाँ जाने के लिए तैयार करना था। क़ोनानबाय इस सम्बन्ध में ग्रलिशनबाय से बातचीत कर चुका था ग्रौर वसंत में विवाह-सम्पन्न करने का फ़ैसला उन्होंने कर लिया था।

भावी सम्बन्धों में क़ोनानबाय सर्वाधिक महत्व ग्रलिशनबाय को दे रहा था। मित्रता के ग्रपने घनिष्ठ सम्बन्धों के ग्रलावा ग्रलिशनबाय क़ाज़िबेक का एक सुपुत्र ग्रौर समस्त ग्रर्गिन में विख्यात त्लेन्शि का वंशज था ग्रौर बहुत हद तक इलाक़े का सर्वाधिक प्रभावशाली व्यक्ति था। उसकी बेटी का हाथ माँगने के लिए लड़के को पहली बार भेजना कोई ग्रासान न था ग्रौर ज़बर्दस्त तैयारी की ज़रूरत थी। पशुधन तथा ग्रन्य प्रकार की सम्पत्ति का पर्याप्त व्यय होना था।

माताग्रों ने इसे स्वीकार कर लिया लेकिन ज़ेरे ने विचारपूर्वक कहा:

"हम उसे ग्रपने ग्रीष्म के पड़ावों पर पहुँचकर जब सफ़र की तथा दूसरी परेशानियाँ ख़त्म हो जायें, तब भेजें, क्या यह बेहतर नहीं होगा?"

"ग्रलिशनबाय का जयलाव हमारे ग्रीष्मकालीन स्थलों से काफ़ी दूर है ग्रौर वहाँ पहुँचना कठिन होगा" क़ोनानबाय ने समझाया। "जानवर रास्ते में ही थककर दुर्बल हो जायेंगे। इसके ग्रलावा, ग्राबाय के साथ बड़ी उम्र के स्वजन जायेंगे। उनके लिए यात्रा कठिन होगी। थोड़े में, उसे ग्रगले पाँच या छह दिनों में रवाना हो जाना है।"

फिर वह उलजान को ग्रोर मुख़ातिब हो गया। "तुम भी जाग्रोगी। ग्रपने बेटे को उसके नये परिवार में ले जाग्रो।"

क़ोनानबाय को देर से नफ़रत थी ग्रौर उसने तत्काल वहीं ग्राबाय के साथ जानेवालों के नाम गिना दिये, जानवरों की संख्या, कपड़ों, पैसों,

गहनों, सोना-चाँदी, चाँदी की तश्तरियाँ तथा भेजे जानेवाले अन्य उपहारों की मात्रा निश्चित कर दी।

इस यात्रा को लेकर अनन्त बहसें शुरू हो गयीं।

उसी रात इज़गुत्ति और क़ुदायबेर्दि को आवश्यक ख़रीदारी के लिए सेमिपलातींस्क भेज दिया गया। उन्हें शहर में तिनिबाय से सलाह लेने, जो कुछ मिले वह सब ख़रीदकर जल्दी से जल्दी, चार दिनों के अन्दर ही अन्दर, लौट आने कहा गया था।

इन फ़ैसलों के बारे में क़ोनानबाय के प्रत्येक बेटे ने अपने ढंग से प्रतिक्रिया व्यक्त की। जब आयग़िज़ और इज़गुत्ति ने ओस्पान से हँसते हुए कहा, "तुम्हारी मँगनी हो चुकी है और तुम्हारी दुल्हन आयेगी," तो लड़का पहले तो कुछ समझ ही नहीं पाया।

"दुल्हन? किस लिए?"

इज़गुत्ति ने तब उसे पूरी बात समझाकर उसकी राय माँगी।

"मैं उसे ले आऊँगा। क्यों नहीं! बीवी काम की चीज़ हो सकती!" उसने तत्क्षण जवाब दिया। सब ठठाकर हँस पड़े।

लेकिन उलजान ने जब आबाय को उसके पिता के फ़ैसले के बारे में बताया तो उसकी भावाकृति देख वह चिन्तित हो उठी। "शायद वह शर्मीला है," उसने ख़ुद को संतोष दिलाया।

आबाय ने मूकभाव से यह ख़बर सुनी। उसका पूरा अस्तित्व ही तनाव से भर उठा मानो उसके हृदय पर तुषारपात हो गया हो। तोग़जान उसके दिमाग़ में कौंध गयी; उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह उसके प्रति कोई अपराध कर रहा हो।

अपने आप में सिमटा वह कई दिनों तक विचारों में डूबा रहा। अनिष्ट की आशंका उसे चैन नहीं लेने दे रही थी। अब उसके एक दुल्हन थी। और तोग़जान का भी मँगेतर था जिससे उसके विवाह का वायदा बहुत पहले किया जा चुका है। वह अपनी मँगेतर के यहाँ जाने से, शादी करने से इनकार नहीं कर सकता था। माँ-बाप की इच्छा ही क़ानून थी। और वहाँ न जाने के लिए वह कौन-सा बहाना भला ढूंढ़ सकता था? वह अपने पूरे दिल से तोग़जान को चाहता था लेकिन जिस बुरी तरह वह जाल में फँस गया था, उससे ख़ुद को बचा लेना असंभव था।

शोकपूर्ण चुप्पी के साथ वह अपनी मँगेतर का हाथ माँगने रवाना हो गया।

उत्थान

१

बारात आख़िर भावी श्वसुर के आऊल में आ ही पहुँची।

अलिशनबाय अभी हाल ही में विपुल झरनों और चरागाहोंवाली इस विस्तृत घाटी में आया था। उसके आऊल के इर्द-गिर्द बोशन क़बीले के अन्य चालीस तम्बू थे। वे एक-दूसरे से एक ही पुरखे क़ाज़िबेक के वंशधर होने के कारण जुड़े थे। उनमें से हर कोई मेहमानों की प्रतीक्षा उत्सुकतापूर्वक कर रहा था, उनके लिए ओताव लगा दिये गये थे तथा भोजन-पान की व्यवस्था कर दी गयी थी। जिस दिन दूल्हे को आना था, घोड़ियों को समय से पहले ही दूहने के लिए बाँध दिया गया था।

चिर-प्रचलित रिवाज के मुताबिक़ तीस नौजवानों और महिलाओं की एक टोली के साथ उलजान व बुज़ुर्ग आधा दिन पहले ही आ गये थे। दूल्हे की ओर से मुख्य अगुआ का काम क़ोनानबाय का भाई इज़ग़ुत्ति कर रहा था। उसके साथ आक़साक़ाल, गायक, नौजवान और घोड़ों को देखने के लिए चरवाहे थे। आबाय की मण्डली में इर्ग़िज़बाय की युवा पीढ़ी के बारह नौजवानों के साथ हँसमुख मिर्ज़ाख़ाँ, सन्देशवाहक जुमागुल और निकटतम स्वजन तकेजान था। आबाय ने येर्बोल को भी आमंत्रित किया था और कोई हफ़्ते भर से भी अधिक लम्बे सफ़र में उसी के साथ बना रहा।

उलजान अपने साथ बहुमूल्य उपहार लायी थी: घोड़े और ऊँटों के ढोर, महिलाओं के लिए विविध प्रकार के वस्त्र तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ। दो ऊँटों पर दुल्हन के उपहार लदे थे: चमकीले रेशमी कपड़ों, मखमल

तथा अन्य सामग्रियों के गट्ठर तथा बहुत से दुशाले। अन्य दो ऊँटों पर बिना आस्तीनवाले लबादों, कमीज़ों, रूमालों, कफ़्तानों, बहुविध सामग्रियों, जूतों तथा रिवाज के मुताबिक़ अन्य उपहारों के गट्ठर लदे थे।

उपहारों में सर्वाधिक बहुमूल्य ख़ुद अल्शिनबाय के लिए लायी गयी चाँदी की सिलें थीं।

दस साल पहले जब विवाह के लिए दिल्दा का हाथ माँगने क़ोनानबाय आया था, दुल्हन के माँ-बाप ने उपहार के रूप में उसे भारी-भरकम तायतुयाक़* दिया था। और अब उलजान उससे कहीं अधिक आश्चर्यजनक परिमाणवाला और कुछ नहीं बल्कि बेसिक-जाम्बा** ही लेकर आयी थी। इस तरह क़ोनानबाय के उपहार ने अल्शिनबाय के उपहार को धूमिल कर दिया था और दूल्हे के पहुँचते न पहुँचते सारे के सारे आऊल किसी दूसरी चीज़ के बारे में नहीं सिर्फ़ उसके पिता की उदारता और बहुमूल्य उपहारों की ही चर्चा कर रहे थे। शीघ्र ही पता चला, अल्शिनबाय भी इसी तरह प्रतिदान करने जा रहा था।

दूल्हे और उसके परिजनों के लिए भव्य रूप से सुसज्जित तीन विशालकाय हिम-धवल ओताव लगा दिये गये थे। अभी-अभी घोड़ियों से अलग हुए एक-एक साल के अश्व-शावक, तीन साल के भेड़ और बड़ी संख्या में मेमने ज़बह करने के लिए चुन लिए गये थे। उलजानवाले ओताव के लिए ख़ास तौर पर एक मोटा-तगड़ा अश्व-शावक अलहदा कर दिया गया था।

आबाय की मण्डली आऊल के क़रीब पहुँचकर ठहर गयी और तकेजान, मिर्ज़ाख़ाँ तथा अन्य लोगों सहित कुछ नौजवान उसके आगमन की सूचना देने आगे बढ़ गये। स्वागत के लिए आऊल से आनेवाली लड़कियों और युवा स्त्रियों से मिलने के लिए आबाय और येर्बोल अपने घोड़ों से उतर गये। यह बेहिसाब, जटिल रस्मों की शुरुआत थी और आबाय ने जुमागुल को अपने पास रोक लिया क्योंकि अपने समय में वह इस तरह की

---

* तायतुयाक़ (अश्व-शावक का ख़ुर) – विशेष आकार की चाँदी की सिलें। – सं॰

** बेसिक-जाम्बा – पालने के शक्लवाला चाँदी का ढाँचा। – सं॰

सभी रस्मों की परेशानियाँ झेल चुका था और इस तरह उसके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता था।

"दूल्हे और उसके माँ-बाप के लिए विवाह एक आनन्ददायी अवसर समझा जाता है," आबाय ने येर्बोल से कहा। "फिर इन बेहिसाब रस्मों से वे लोगों को सताते क्यों है?"

जुमागुल हँस पड़ा:

"तुम्हें भी सताया जायेगा–और बहुत जल्दी ही! तुम्हारे टोप में पंख भी नही–शुरुआत तो यही से होगी। और तुम्हारे गालों में तमाचे पड़ें, इससे बेहतर होगा, पहले ही लाल लबादा डाल लो!" अच्छी तरह आँखों पर झुके दूल्हे के परम्परागत फ़र के टोप पर उक़ाब-उल्लू की कलँगी होनी चाहिए थी। उसके अलावा, अपने साथियों में स्पष्ट रूप से पहचाने जाने के लिए उसे लाल कपड़े का एक लबादा और ऊँची एड़ियोंवाला जूता पहने होना चाहिए। सफ़र से पहले ही आबाय के लिए यह सारा परिधान ज़ेरे के आदेश पर तैयार किया गया था और वृद्धा ने हमेशा ही अपने पोते को मनमानी करने की छूट दे रखी थी, इसके बावजूद, इस अवसर पर उसने उसकी कोई भी आपत्ति नही मानी थी।

"यह तुम्हारे पुरखों का रिवाज है," उसने दृढ़तापूर्वक बार-बार कहा था। "वे तुम्हें नही, हमें दोष देंगे। 'क्या उनके बाप कभी दूल्हे नही बने या उनकी माताएँ कभी बहुएँ नही बनी?' वे पूछेंगे। इसे फ़ौरन पहन लो!" उसने अपने हाथों से उसे पोशाक पहनने मे मदद की थी।

इस विचित्र पहनावे में आबाय ख़ुद को एक ओझा या किसी फेरी लगानेवाले जादूगर जैसा महसूस कर रहा था। जैसे ही सब लोग आऊल से बाहर आये, वह अपना घोड़ा उलजान की तरफ़ ले गया और उससे विनती की:

"ख़ुदा के वास्ते, ज़रा बताओ, मैं रास्ते भर जताता चलूँ कि मैं दूल्हा हूँ, इसकी क्या ज़रूरत है? मुझे अपने आम कपड़े पहन लेने दो। दूल्हे की पोशाक वहाँ पहुँचने पर मै पहन लूँगा।"

बड़ी आनाकानी के बाद उलजान ने उसे सहमति दी थी। और इस तरह आबाय ने अब तक एक बार भी अपनी "मदारियों" वाली वह पोशाक नही पहनी थी। कलँगीवाला फ़र-टोप और लाल लबादा अब तक

क़ोर्जुन* में छुपा पड़ा था। जुमागुल ने उसे इन्ही चीज़ों की याद दिलायी थी।

"तुम जानते ही हो, एक बार बरक-बातिर ने कहा था, 'मेरा दिल हथियारबन्द दुश्मन के सामने भी नही काँपा था, लेकिन यह उस समय काँप उठा था जब मैं अपनी मँगेतर के माँ-बाप से मिलने गया'।" आबाय वास्तव में घबड़ा उठा है, यह महसूस करके उसने जल्दी से आगे कहा, "बेशक, ऐसी बहुत-सी दहशत भरी बातें है लेकिन अपने मन को मज़बूत करो और आख़िर में सब कुछ ठीक हो जायेगा। यह मैं अपने अनुभव से जानता हूँ।"

दोस्त हँस पड़े और एक बार फिर येर्बोल ने जुमागुल को नसीहत दी :

"मेहरबानी करके इसे प्रोत्साहित कीजिये—कब और कैसे झुकना चाहिए, कब बैठे या खड़ा हो, आख़िर कब अपनी आँखों से टोप हटाये और चैन की साँस ले।"

जिस उत्साह से येर्बोल उस पर ध्यान दे रहा था, वह आबाय के दिल को छू गया। उसका दोस्त हर उन छोटी-मोटी बातों पर भी ध्यान दे रहा था जो उसे अब तक ख़ुद भी अनुभूत नही हुई थी। क्या इससे भी ज़्यादा सच्चा, समर्पित दोस्त हो सकता है?

इससे पहले तक आबाय अपनी दोस्ती के श्रेष्ठतम क्षण उन्हें मानता था जब येर्बोल ने भैंसे की पीठ पर सवार हो जलमग्न भयावह पहाड़ी नदिया पार की थी। लेकिन अब वह एकदम ही भिन्न व्यक्ति प्रतीत होता था। उसका पूर्व-परिचित येर्बोल कहाँ था? वह पुराना दोस्त और यह—दोनों दो थे। कौन उसके ज़्यादा क़रीब—ज़्यादा प्यारा था?

सफ़र के शुरूवाले दिन येर्बोल आबाय के लिए जो ख़बर लाया था, वह उसके लिए बड़ी ही दुखदायी थी। येर्बोल आबाय के साथ उसकी मँगेतर के यहाँ जाने वाला है, यह मालूम होने पर तोगजान ने अपने प्रियतम तक यह सन्देश पहुँचा देने की उससे प्रार्थना की थी: "चाँदनी में एक हल्की झलक-सी दिखाकर वह चला गया। मैं तो अन्धेरे में ही रह गयी। लेकिन उसकी यात्रा सुखद हो, वह सुखी और भाग्यशाली

* क़ोर्जुन—घोड़े के ज़ीन पर लादा जानेवाला झोला, ख़ुरजी।—सं०

रहे – उसके प्रति यही मेरा सलाम है!" और रवाना होने के लिए जब येर्बोल ने अपने घोड़े को एड़ लगायी, वह अपनी आँखों पर रूमाल रखकर रो पड़ी।

इस दृश्य की कल्पना आबाय को रास्ते भर पीड़ित करती रही। मजबूरी का कैसा कुचल डालनेवाला बोझ उसे महसूस हुआ था, किसी और की इच्छा के जुए में जोत कर उसे सफ़र करने पर मजबूर कर दिया गया था। उदासीनता से अब वह दिल्दा से अपनी पहली मुलाक़ात की प्रतीक्षा कर रहा था।

शोल्पी की टन-टनन के साथ लड़कियों की हँसी की क्वणित आवाज़ सहसा उसके कानों में सुनाई दी। सिर पर अलंकृत हिम-धवल वस्त्र डाले महिलाओं और गृहोत्पादित रेशम के लबादे पहने लड़कियो की टोली दूल्हे के स्वागत के लिए चली आ रही थी। उनके इर्द-गिर्द बच्चों की भीड़ लगी थी।

उनमें से कुछ जब आबाय तथा अन्य नौजवानों के पास पहुँची तो चौककर बोल पड़ी:

"आबाय कोन है?"

"दूल्हा कौन है?"

"क्यो, यह सब तो एक ही जैसे है! दूल्हों की तरह उसने पोशाक नही पहन रखी है!"

आबाय परेशान हो उठा लेकिन उसने जबरन हँसने की कोशिश की।

"जो तुम लोगों को सबसे अच्छा लगे, उसे चुन लो और उसे आबाय बना दो," उसने कहा।

लड़कियाँ हँस पड़ी और जल्दी ही दूल्हे को पहचान गयी। उन में से एक ने उसे फिर भी डाँट पिला ही दी:

"नही, मेरे प्यारे! तुम अपने आऊल में भले ही तोबिक्ति टोप पहन सकते हो! हमारे यहाँ तो तुम्हें विवाह की पोशाक पहननी ही पड़ेगी!"

उसने नौजवानों से सवाल करना और आबाय के छुपाये गये विवाह के कपड़ों की तलाश शुरू कर दी। जुमागुल को आख़िर हार मान कर क़ोर्जुन निकालना ही पड़ा।

"क्या मैने उससे नही कहा था, 'पहन लो!' लेकिन उसने कान

ही नहीं दिया! अब उसे एकाध पाठ पढ़ा दो तो ज़रा! उसके कपड़े, यह मेरे पास रहे!" उसने झोला लड़कियों को थमा दिया।

जब आबाय कपड़े पहन रहा था, बच्चे घोड़ों पर दो-दो, तीन-तीन करके चढ़ गये और आऊल की ओर रफूचक्कर हो गये। लड़कों का एक झुण्ड प्रशंसापूर्वक आबाय के सफ़ेद अयालवाले दुगामा घोड़े को देखता खड़ा रहा।

"यह दुगामा है!"

"ओय-बाय, कितना बढ़िया है!"

तीन छोकरे ज़ीन पर उछलकर जा चढ़े और घोड़े को हाँक ले गये। स्वागत के लिए आयी टोली और दूल्हे सहित दूसरे लोगों को पैदल आऊल जाना था।

दूसरे तम्बुओं की अपेक्षा दूल्हे के लिए लगाया गया ओताव चकाचक सफ़ेद था। अन्दर से तम्बू को अधिक न सजाने का फ़ैसला किया गया था जिससे यह कुशादा महसूस हो। फिर भी, ढाँचे को महंगे रेशमी पर्दों और अलंकृत क़ालीनों से ढँक दिया गया था और अनेक प्रकार के कपड़ों के विविध रंगों ने रिहायश को मनमोहक लालित्य प्रदान कर दिया था। ऊनी और भव्य रूप से अलंकृत नमदे प्रवेशद्वार से प्रतिष्ठित स्थान तक बिछा दिये गये थे। ऊपर से रेशमी चादरो और तकियों का ढेर लगा था। दायी ओर हाथी दाँत का काम किया एक सोफ़ा पड़ा था। उस पर रेशम की पन्द्रह तहें डाली हुई थी। चकाचक सफ़ेद तकिये भी रखे थे। बिस्तरे के सिरे पर लाल और नीले डिज़ाइनोंवाले साटन का एक परदा–शिमिल्दिक़ पड़ा था।

बिस्तरे के पास बैठे आबाय को चारों ओर से उसकी भावी सालियाँ घेरे थी। लड़कियों के बीच थोड़ी दूर पर येर्बोल, जुमागुल तथा दूसरे नौजवान बैठे थे।

अभी सब लोग बैठे ही थे कि तीन युवा औरतें दौड़ती, आवाज़ लगाती तम्बू में आ पहुँची:

"शिमिल्दिक़! शिमिल्दिक़ गिराओ!"

आबाय की बग़ल मे बैठी लड़कियों ने उछलकर खड़ी हो शिमिल्दिक़ गिरा दिया जिससे वह प्रवेश से छुप जाये। फिर उन्होंने दरवाज़े का झूलना ऊपर उठाया।

"आओ, आ जाओ," उन्होंने दरवाज़े के परे किसी आदमी से कहा और इसके साथ ही दूल्हे की ओर भी देखा। "सासु जी, स्वागत है!"

आबाय तथा दूसरे सारे लोग उछलकर खड़े हो गये।

तीनों बुज़ुर्ग-सी महिलाओं के अन्दर आने के बावजूद शिमिल्दिक़ उठाया नही गया। पहलीवाली सबसे बड़ी सास थी – अल्शिनबाय की धूसरवर्ण की मोटी-तगड़ी बायबिशे। उसकी बग़ल में असली सास, दुल्हन की माँ खड़ी थी।

"हाँ, तो माताओ, मुँह दिखाई। मुँह दिखाई कहाँ है? या नहीं तो हम तुम्हें बेटे का मुँह नहीं देखने देंगे," अपने हाथों में शिमिल्दिक़ का झालर थामे युवा स्त्रियों ने विनोदपूर्वक कहा।

"शिमिल्दिक़ तो उठाओ! यह रही तुम्हारी मुँह दिखाई," अपने साथ लाये शाशू* की ओर इशारा करते हुए बायबिशे ने जवाब दिया।

शिमिल्दिक़ ऊँचा उठा दिया गया और दूल्हे का ख़ामोश विनीत चेहरा दिखाई पड़ा। उसका सिर लज्जापूर्वक झुका था।

"तुम्हें लम्बी, सुखद जिन्दगी नसीब हो! मेरी आँखों की रोशनी, अल्लाह तुम्हें ख़ुशनसीबी दे," बायबिशे ने लड़कियों की ओर मिठाइयाँ फेंकते हुए कहा।

सूखी ख़ूबानियों, मुनक्कों और मिठाइयों की वर्षा होने लगी और युवा स्त्रियों ने हँसते हुए उन्हें या तो बीच हवा में पकड़ लिया या क़ालीन से उठा लिया।

"ख़ुदा तुम्हें पहले दिन से ही ख़ुशियाँ दें," दुल्हन की माँ ने सुरीली आवाज़ में कहा। "तुम्हें चिर उल्लास और सुख प्राप्त हो, मेरे प्यारे आबाय।"

दूल्हे को कोई जवाब देना न था। उसे बस चुपचाप, विनयपूर्वक मौन खड़ा रहना था। अल्शिनबाय की बीवियाँ एक-एककर उसके गाल का चुम्बन ले बिना किसी होहल्ला के ओताव से रवाना हो गयीं।

ख़ुद को अपनी नयी स्थिति के अनुकूल बनाने में असमर्थ आबाय पूरी शाम परेशान रहा। आँखों पर लटकते दूल्हे के अपने टोप के कारण वह पसीना-पसीना हो रहा था और इसके साथ ही उसे ग़ुस्सा भी आ

---

* शाशू – उपस्थित लोगों पर बिखेरी जानेवाली मिठाइयाँ। – सं०

रहा था। लेकिन उसे सबसे अधिक असह्य लग रहा था लोगों का घूरना। चारों ओर से बेशर्मी के साथ लोग उसे घूर रहे थे। "क्या वह ख़ूबसूरत है? क्या वह हमारी लड़की के योग्य वर है? उसका हाव-भाव कैसा है?" हर उत्सुक नयन-युग्म यही कह रहे थे। बेचारे नौजवान को दूल्हे की पोशाक पहनाकर काठ का उल्लू बना दिया गया था और अब उसका मज़ाक उड़ाते प्रतीत हो रहे थे: "ज़रा देखो तो उसे! देखो तो कैसा लग रहा है!"

शीघ्र ही लोगों को चाय दी जाने लगी लेकिन बातचीत शिथिल पड़ गयी। जुमागुल और येर्बोल जिनके मज़ाकों पर हमेशा ठहाके पर ठहाके पड़ते, अब सुस्त पड़कर अपने आस-पास की लड़कियों से नम्रतापूर्वक बातें करते, मजबूर से बैठे थे। आबाय का ध्यान विशेष रूप से तीन लड़कियों के चेहरों की ओर आकृष्ट हुआ था जो बहुत ही लकदक से कपड़े पहने थीं और उनके चेहरे कृत्रिम रूप से सफ़ेद और गाल लाल-लाल थे। बोशन लोगों में वयस्क लड़कियों के चेहरे रँगने का रिवाज है, यह आबाय को नहीं मालूम था।

बड़ी उम्रवाले नौजवान – मिर्ज़ाख़ाँ, तकेजान और उनके दोस्त चाय के बाद ओताव में जमा हुए। अपने साथ वे बोशन क़बीले के गायकों और लतीफ़ेबाज़ों को लाये थे। लोगों के चेहरे खिल उठे और बातों व लतीफ़ों का उल्लासमय शोरगुल मच गया। लड़कियों व औरतों के हँसते-किलकते एक झुंड ने दूल्हे को घेर लिया। सब वहाँ थीं – सिर्फ़ दिल्दा यानी दुल्हन ही नहीं आयी थी।

दूल्हे के प्रथम आगमन को "औपचारिक यात्रा" या कभी-कभी "उपहार यात्रा" या "दहलीज़ लँघाई" या "हथ-छुलाई यात्रा" कहा जाता। चूँकि यह प्रथम आगमन था, इसलिए वह शायद ही अपनी दुल्हन को देख पायेगा।

प्रथम आगमन के उपलक्ष्य में माँ-बाप पहले एक तोय* का आयोजन करते, फिर विवाह सम्बन्धी इकरारों को अन्तिम रूप देते। तोय का आयोजन कोई मामूली काम न था। बिना किसी जल्दबाज़ी के सम्यक रूप से इसकी व्यवस्था की जाती। इसके बाद दूल्हे-दुल्हन के बीच

---

* तोय – दावत। सं

"हथ-छुलाई" होती। इस तरह आबाय अपनी दुल्हन को पहले दिन नहीं देख पाया। दूसरे दिन भी वह नहीं देख पाया और इस तरह वह उसकी हल्की-सी झलक भी पाये बिना उसके आऊल में ठहरा रहा। अपने आगमन के दूसरे दिन सिर्फ़ येर्बोल दिल्दा के पास अपना सलाम पेश करने गया था। उसकी सुन्दर मुखाकृति देख आबाय के लिए उसे प्रसन्नता हुई और आबाय को अपनी राय बताने वह लौट आया। लेकिन आबाय ने बीच में ही उसकी बात काटकर विषय बदल दिया।

जिस दावत की प्रतीक्षा नौजवान इतनी बेसब्री से कर रहे थे, वह दूल्हे के आगमन के बाद तीसरे दिन हुई। सुबह से रात तक आबाय के ओताव में असंख्य औरतों–सासों, जवान पत्नियों, सख़्त व शोरग़ुलपसन्द सालियों की जमघट लगी रही। जुमागुल और येर्बोल ने उन सब का स्वागत बड़ी ही शालीनता व सम्मान के साथ किया। उन असंख्य औरतों में से प्रत्येक के साथ उन्होंने दुआ-बंदगी की। आबाय उन दोनों से बुरी तरह परेशान था।

"खड़े हो जाओ! अब बैठ जाओ!" वे लगातार कहते रहते। "लो, और आ गयीं! ओय-बाय, बहुत-सी है!" और वे उसे फिर सारी रस्में पूरी करने को मजबूर करते।

दूल्हे के ओताव में अनवरत गायन चलता रहा। हास-परिहास ज़ोरों पर था, मिठाइयाँ अबाध रूप से खायी जा रही थीं। लगातार दौड़ते-भागते नौकर मेहमानों के लिए क़िमिज़ व चाय की कमी नहीं होने देते और मेजपोश कभी हटाये नहीं जाते।

"तोय शुरू हो गयी, तोय!" दिन का भोजन ख़त्म होने पर दरवाज़े के बाहर से आवाज़ सुनाई दी।

"घोड़े थामो। घोड़ों पर सवार हो!" दूसरे चीख़ पड़े।

आबाय और उसके साथ के सभी लोग तेज़ी से ओताव के बाहर निकल आये। दूल्हे की टोली के लोगों के ज़ीन कसे घोड़े बँधे थे। दूसरे लोगों की तरह दूल्हे को भी घोड़े पर सवार हो भोज देखने की इजाज़त थी। लड़कियाँ और युवा स्त्रियाँ आऊल में रह गयीं और आबाय के साथ पन्द्रह आदमियों की टोली घोड़ों पर सवार हो, दूसरे लोगों से कुछ अलहदा एक सुविधाजनक जगह पर खड़ी हो गयी।

उस ख़ुशहाल वादी के अनगिनत आऊल जितने लोगों को वे बुला सकते थे, उन सब को भोज में बुलाकर असाधारण उदारता के साथ उत्सव मना रहे थे। अल्शिनबाय अद्भुत, भव्य तोय द्वारा सब को चकित कर देने को कृत संकल्प था और इतने मेहमानों को आमंत्रित किया गया था कि उनके घोड़े विशालकाय ढोरों के रूप में इधर-उधर विचर रहे थे।

निस्सन्देह, यह एक विशाल तोय थी – मेहमानों के लिए पाँच या छह दर्जन ओताव लगाये गये थे जो दो क़तारों में कम से कम एक मील तक फैले हुए थे। रसोई के लिए ओताव आऊल के दूसरे किनारे पर लगाये गये थे।

आबाय और उसकी टोली जिस समय बाहर आयी, रसोई से मेहमानों के ओताव तक खाना ले जाते नौकरों की पंक्ति लगी थी – उनमें से प्रत्येक व्यक्ति घोड़े पर सवार था। सिर पर सफ़ेद कपड़ा लपेटे होने के कारण स्पष्ट रूप से पहचाने जा रहे कोई बीस भोज-भट्ट, रसोई के तम्बुओं के बाहर प्रतीक्षा करते खड़े थे।

मेहमानों की सेवा में तैनात नौजवान सर्वाधिक द्रुतगामी घोड़ों पर सवार थे – यह तोय की भव्यता प्रकट कर रहा था। झाग-झाग हुए छरहरे, सजे-धजे घोड़े सरपट यहाँ से वहाँ भाग रहे थे। दाँतों से घोड़े की रास थामे बीस नौजवान, दोनों हाथों में एक-एक गहरी रका-बी लिये मेहमानों के ओतावों की ओर उड़ चले। दूसरे भी इसी तरह उनके पीछे-पीछे थे। यह घुड़सवार बैरे अपने-अपने ओतावों तक बाँकेपन से घोड़े को तीव्रगति से उछलाते पहुँचते और सहसा निश्चित स्थान पर आ रुकते, लेकिन शोरबे की एक बून्द भी छलककर नीचे नहीं गिरती। उतनी ही होशियारी के साथ आक़साक़ाल और क़ारासाक़ाल उनके हाथों से गरमागरम रक़ाबियाँ थाम तम्बू के अंदर दूसरे लोगों को थमा देते।

सदा की तरह मेहमान छककर खाते और बैरे रसोई तथा मेहमान ओतावों के बीच दौड़ लगाते रहे। जब आबाय ओताव में ही था, भोज शुरू हो चुका था। वह अपने नौजवानों के साथ स्तेपियों का दूर तक चक्कर लगा चुका था लेकिन खाना-पीना अभी भी चल रहा था। मेहमान अपने घोड़ों पर क़िमिज़ के असंख्य मशकों को सुड़कने और गोश्त की अनगिनत रकाबियों को साफ़ करने के बाद ही सवार हुए।

इसके बाद खेल शुरू हुए: दौड़, कुश्ती, उलाक़*, घोड़े पर मुठभेड़ और घुड़सवारी प्रतियोगिताएँ। देखने के लिए आये बूढ़े लोग दाद देते नहीं थक रहे थे।

"यह एक महान् तोय है," वे कहते।

"दूल्हे की ओर से दिये गये सौगत बहुत अच्छे थे लेकिन अल्शिनबाय ने भी कोई कसर नहीं रखी है!"

उसी शाम आबाय ने पहली बार अपनी दुल्हन को देखा।

दूल्हे का ओताव मेहमानों की भीड़ से फट पड़ रहा था। ख़ुद अल्शि-नबाय, उलजान और इज़्गुत्ति के नेतृत्व में दूल्हे-दुल्हन के सारे रिश्ते-दार आये हुए थे। अपनी टोली सहित आबाय एक पर्दे द्वारा अलहदा किये हिस्से में बैठा था और सिर्फ़ बुज़ुर्ग लोग ही खुलकर बोल-हँस रहे थे। पर्दे के पीछे बैठे नौजवान बुदबुदाकर बातें कर रहे थे—अपने आऊल में ही होने के कारण ज्यादा सुविधाजनक स्थिति में होने से सिर्फ़ लड़-कियाँ ही हँसने की हिम्मत कर रही थीं। आख़िर दरवाज़े के पीछे कुछ हलचल हुई और नौजवान स्त्रियों ने दरवाज़े का झूलन ऊपर उठा दिया। कुछ लड़कियाँ अन्दर आ गयी।

उनमें से एक दिल्दा थी। उसका चेहरा एक लाल चापान से ढँका था जिसके कारण जब वह अपने बाहर के जूते उतार रही थी, आबाय और उसके दोस्त सिर्फ़ उसकी आकृति ही देख सके। दुल्हन दुबली-पतली, लेकिन लम्बी और सुगठित प्रतीत होती थी।

उसे आबाय की बग़ल में अपनी जगह पर ले जाकर बैठा दिया गया। लेकिन उसने चापान नहीं उतारा। आबाय उससे बंदगी के तौर पर दो-चार शब्द कहना चाहता था पर दिल्दा ने उसकी ओर देखा ही नहीं और उसे अपनी ज़बान रोक लेनी पड़ी।

दुल्हन के आते ही गोश्त की रकाबियाँ पेश की जाने लगीं। सम्मानित मेहमान और शिमिल्दिक़ के पीछे बैठे नौजवान भोजन करने में जुट गये लेकिन दूल्हा-दुल्हन ने उसे छुआ तक नहीं। खाना ख़त्म होने के बाद एक मुल्ला ने जिसे आबाय शिमिल्दिक़ के पीछे से देख नहीं पा रहा था,

---

* उलाक़—बकरे का धड़ क़ब्ज़े में लेने के लिए घुड़सवारों के बीच मुक़ाबले का एक खेल।

विवाह सम्बन्धी दुआएँ पढ़नी शुरू कर दीं। फिर ठंडे पानी का एक पात्र लाया गया और बारी-बारी से सबके पास ले जाया गया – पहले सम्मानित मेहमानों के पास, फिर सब से आख़िर में आबाय के पास, जिसने उससे एक घूँट पीकर दिल्दा को सौंप दिया।

फिर दुल्हन की दो नौकरानियाँ मुस्कुराते हुए दूल्हे-दुल्हन के पास आ बैठीं और हल्के रेशमी कपड़े में दिल्दा का दायाँ हाथ लपेटकर उस पर आबाय का दायाँ हाथ रख दिया। उसे उसकी नाज़ुक अंगुलियों का अहसास हो रहा था। उसके सामने बैठी नौकरानियों में से एक ने मज़ाक़ के साथ कहा:

"अरे, यह जितना दिखाई देता है, उससे कहीं अधिक तेज़ है। क्या तुम्हारा अहाथ उसके हाथ से चस्पाँ हुआ? अब अपना हाथ मुझे दो। उसके बाल पर अपना हाथ फेरो," उसने हुक्म दिया।

उसके पीछे बैठी लड़कियाँ ज़ोर-ज़ोर से हँस पड़ीं। नौकरानी ने आबाय का हाथ उठाकर उसे जताया, जिससे वह अपनी हथेली से दुल्हन की चोटी पर हाथ फेर सके। हथ-छुलाईवाले रेशमी कपड़े का फिर इस्तेमाल किया गया। आबाय को उसकी चोटी पर दो बार हाथ फेरना था।

इस प्रकार विवाह "हथ-छुलाई" और "चोटी पर हाथ फेरनेवाली" इस चिर प्रचलित रस्म के साथ सम्पन्न हो गया। इस आख़िरी रस्म के बाद नौकरानियों को इनाम देने का रिवाज था। चतुर लड़कियाँ दिल्दा से भी अपना इनाम पाने में सफल रहीं।

विवाह-सम्पन्न होने की आख़िरी दुआ के रूप में बुज़ुर्गों ने अपने हाथ ऊपर उठा लिये:

"वे सदा सुखी रहें! वे दीर्घायु हों! ख़ुदा उन्हें अमित धन-सम्पदा दे!" उन्होंने एक साथ दुआ की।

अपने स्वजनों के यह आशीर्वचन आबाय और दिल्दा को शिमिल्दिक़ के पीछे से सुनाई पड़े। फिर बुज़ुर्ग उठकर ओताव से चले गये। नौजवान लोग भी ज़्यादा देर नहीं रहे। दूल्हे को अपनी दुल्हन के पास छोड़कर वे अपनी-अपनी राह चलते बने।

आबाय दिल्दा से अब तक एक भी शब्द नहीं बोल पाया था। उन्होंने एक-दूसरे को ठीक से देखा तक नहीं था। अपनी आंख के कोनों से चुपके-चुपके दिल्दा ने उस पर तो एक नज़र डाल ली थी लेकिन ख़ुद शिमिल्दिक़ और चापान से छुपी उसकी बग़ल में बैठी थी।

ओताव कुशादा लगने लगा था। नौकरानियों में एक ने, जिसे "चोटी छुलाई" के लिए अपना इनाम मिल चुका था, आबाय की ओर मुड़ते हुए कहा:

"हम बिस्तर ठीक करेंगे! अच्छा हो, अगर तुम थोड़ी देर के लिए बाहर चले जाओ। थोड़ा ताज़ा हो लो!"

उसकी ढिठाई से आबाय धक-सा रह गया। तेज़ी से उठकर वह ओताव से बाहर चला गया। बाहर एक भी प्राणी दिखाई नहीं दे रहा था, यहाँ तक कि येर्बोल भी ग़ायब हो गया था। वह अकेला था। शाम से बादलों के जमा होने के कारण रात अधिक काली लग रही थी। आबाय तम्बू से दूर निकल गया।

लड़कियाँ भी दिल्दा को छोड़कर चली गयीं। सिर्फ़ दुल्हन की दो नौकरानियाँ ही रह गयीं—वही दोनों जो शाम से ही उसके साथ चिप की रही थीं। उन में से एक उसे तम्बू से बाहर ले आयी और दूसरी शिमि-ल्दिक़ को गिराकर रात के लिए सोफ़े की नयनाभिराम चादरों को ठीक करने लगी।

नौकरानी ने दिल्दा को गले लगा कर हँसते हुए पूछा:

"तुम्हें वह कैसा लगा?"

उसने शान्तिपूर्वक जवाब दिया:

"मैं कैसे बता सकती हूँ—मोटा भी है, साँवला भी, है न?"

उसके शब्दों में निराशा का पुट था।

"बेकार की बात! तुमने उसे ठीक से देखा नहीं है! वह साँवला और सुन्दर है," नौकरानी ने उसे आश्वस्त किया।

दूल्हे का दिल भी भारी हो उठा।

यह सारा धन-धान्य, चमक-दमक, दोस्तों, स्वजनों की टोली—सब के सब निस्सन्देह एक सुखद समारोह के अंग थे। आमोद-प्रमोद, अच्छा भोजन, मेहमानों की भीड़, ठाठ-बाट, शान-शौकत हर क़दम पर मौजूद थी। दो युवा लोगों के भावी सुख के निमित्त ही तो दुआएँ और शुभकामनाएँ थीं। लेकिन क्या यह सच था? क्या इन्हें बुज़ुर्गों ने मात्र औपचारिकता निभाने और एक-दूसरे के प्रति सम्मान-प्रकट करने, युगों पुरानी परम्पराओं को बनाये रखने के लिए नहीं आयोजित किया था?

आबाय और दिल्दा ने एक दूसरे को नहीं देखा था लेकिन बुज़ुर्गों को

इसकी कोई चिन्ता न थी। उनके विश्वास के मुताबिक़ दूल्हा-दुल्हन की मुलाक़ात पहली बार विवाह की सेज पर ही होनी चाहिए।

आबाय ने बहुत-सी किताबें पढ़ी थीं। "मेरी प्रियतमा, मेरी प्रेयसी" —अब वह इन शब्दों की पूजा करता था! वे उसके हृदय में निर्मल, पवित्र रूप में कुसुमित हुए थे। तोग़जान का कान्तिमान सौन्दर्य उसे व्याकुल कर रहा था। वह उसे पल भर के लिए नहीं भूल सकता था। लेकिन तोग़जान बहुत, बहुत दूर थी—वह उसकी कल्पना में पंख लगाये अभी उड़ी क्यों नहीं आ जाती?

सहसा रजतोपम आवाज़ हुई—आबाय पलट पड़ा। यह नौकरानियों में एक थी।

"क्या तुम वास्तव में ख़ुद को अमूल्य समझते हो?" उसने मज़ाक़ करते हुए कहा। "तुमने उससे इतना इंतज़ार क्यों कराया?" यह कहते हुए वह उसे ओताव के अन्दर ले गयी।

शिमिल्दिक़ गिरा था, सेज तैयार थी। दिल्दा और नौकरानी कहीं भी दिखाई नहीं दे रही थी। आबाय ने अपना कोट उतारा जिसे तत्परतापूर्वक युवा लड़की ने रख दिया। फिर उसने उसके बूट उतारे तो उसे आख़िरी रस्म की याद आ गयी। उसे "बूट उतराई" के रूप में उपहार देना था। आम तौर से ऐसे अवसर पर इनाम काफ़ी देना होता और आबाय की जेब ऐसे मौक़े के लिए उसकी विचारवान माँ ने काफ़ी भर दी थी। उसने लगभग जुगुप्सा के साथ पैसे लड़की की ओर फेंक दिये।

कपड़े उतारते ही वह बिस्तरे पर गिर पड़ा और रेशमी चादर के अन्दर सिमट गया। दिल्दा अब तक नहीं आयी थी लेकिन आबाय को रह-रहकर उसकी शोल्पी का क्वणन सुनाई दे रहा था। कहीं यह भी कोई रस्म तो नहीं? काश दीपक के प्रकाश में ही वह अन्दर आये! लेकिन आबाय को अच्छी तरह बिस्तरे पर लेट जाते देख, नौकरानी दीपक अपने साथ बाहर ले गयी और दरवाज़ा खोल दिल्दा को अंदर ले आयी।

उसकी दुल्हन उसके पास अन्धेरे में आ रही थी। वह दिन भर झल्लाया रहा था लेकिन अब सहसा ख़ामोश, उदासीन हो उठा था। निस्तब्ध पड़ा वह उसकी हर आहट, उसके क़रीब आने की हर सरसराहट

सुन सकता था। उसने अपना बेशमेत उतारा, अपने नन्हें बूट उतार फेंके और पल भर के लिए वह बिस्तरे के पास खड़ी रही। तनिक भी लजाये बिना उसने अपने लिए जगह टटोलकर ढूँढ़ी। वह एकदम किनारे में लेटा है, आबाय को इसका ध्यान ही नहीं रहा था। सहसा उसने उसे कुछ-कुछ रूखेपन से कहते सुना:

"थोड़ा और खिसक जाओ!"

तो ऐसी थी नौजवान जोड़े की पहली मुलाक़ात जिनका मिलन-समारोह कई दिनों से शानदार ठाठ-बाट से, नौकरों द्वारा छककर भोजन करा के, पैसों को पानी की तरह बहाकर मनाया जा रहा था। इतना निरर्थक, इतना तुच्छ, इतना साधारण। आबाय दीवार की ओर खिसक गया।

वह अपनी उदासीनता, अपनी रुखाई पर क़ाबू नहीं रख पाया। दिल्दा में भी कोई उत्साह न था। रिवाज के मुताबिक़ जब उसे दूल्हे के पास ले जाया गया, उसने सहन कर लिया लेकिन उसका दिल उसके प्रति बेगाना था। उसका स्वाभिमान बार-बार कह उठता: अगर दूल्हा क़ोनानबाय का बेटा था तो वह भी प्रतिष्ठित व सम्मानित अल्शिनबाय की पोती थी। लज्जा और भीरुता तो मामूली लोगों की चीज़ होती है। नौकरानियों ने जो कुछ कहा था, उसने शान्तिपूर्वक पूरा कर दिया था।

आबाय अल्शिनबाय के आऊल में और दो हफ़्तों तक रहा। उलजान अपने बेटे के विदा होने से पाँच दिन पहले रवाना हो गयी लेकिन नौजवान दूल्हे के साथ ही रुक गये।

आबाय के रवाना होने तक नौजवान जोड़ा एक-दूसरे के प्रति कुछ-कुछ अभ्यस्त हो गया था। कभी-कभी वे एक-दूसरे से हँस-बोल भी लेते थे। आबाय को दिल्दा आकर्षक और सलोनी भी लगती। वह भी उसके रंग-ढंग की आदी हो गयी थी। लेकिन वे एक-दूसरे के क़रीब नहीं आ पाये थे, उनके हृदय उदासीन थे।

बुज़ुर्गों की नज़र में दूल्हे का प्रथम आगमन एक नये जीवन में उसके पदार्पण की दीक्षा था। आबाय इससे गुज़र चुका था लेकिन उसके हृदय में एक जोत तक प्रज्वलित नहीं हुई थी। इसके विपरीत जब वह घर वापस आया, उसे अपने अन्दर कोई चीज़ कचोटती-सी प्रतीत हुई और सहसा उसे लगा, उसकी उम्र कई साल बड़ी हो गयी है।

२

घर पर आऊल चिंगीज़ के पार अपने ग्रीष्म के पड़ावों को जा चुके थे। कुन्के का आऊल, जहाँ अब क़ोनानबाय रहा करता था, हमेशा मेहमानों से भरा रहता। अपने नौजवानों के साथ आबाय ने भीड़ में खड़े क़ोनानबाय के पास पहुँचकर सलाम पेश किया।

अपने बेटे के वापस आने से पहले ही क़ोनानबाय उलजान से शादी के बारे में ब्योरेवार पूछ चुका था। अत: उसने आबाय का मित्रतापूर्वक स्वागत किया और उसके साथियों को एक दावत दी। फिर भी आबाय ने महसूस किया, उसे देखकर वास्तविक ख़ुशी सिर्फ़ कुदायबेर्दि को ही हुई है।

कुदायबेर्दि ने बोशन लोगों के रीति-रिवाजों के बारे में बहुत-से सवाल पूछे और ख़ास तौर पर अपने लिए आबाय और येर्बोल से वहाँ सुने नये गीत सुनाने का अनुरोध किया।

"ऐसा लगता है, बोशन लोग हमसे ज़्यादा अच्छा गाना जानते हैं," दोम्ब्रा उठाते हुए आबाय ने कहा।

कुदायबेर्दि ने मुस्कुराकर यह कहते हुए आपत्ति की:

"यह तो इस पर निर्भर करता है कि गा कौन रहा था – बोशन लोग या जवान दूल्हे का दिल जो अभी-अभी अपनी दुल्हन से मिलकर लौटा है। शायद, ऐसा लगता है, वहाँ तुम्हें विशेष रूप से गीत आकर्षक लगे हैं?"

यह सुनकर सब हँस पड़े लेकिन आबाय हार माननेवाला न था।

"यह सच है, बाके!" कुदायबेर्दि को वह इसी नाम से पुकारता था।

"बोशन लोगों की तारीफ़ के पुल बाँधने के बदले, तुम ख़ुद ही उनके कुछ गीत गाकर सुना दो।"

"यह ठीक है। गीत ख़ुद अपनी तारीफ़ सुना देंगे। तो आओ येर्बोल, शुरू करें!"

आबाय ने एक पद गाया जिसकी तर्ज़ येर्बोल ने पकड़ ली और फिर दोनों की आवाज़ें एक साथ मिल गयीं। गीत का शीर्षक था "रंग तुरंग" और तोबिक़्ति इससे अपरिचित थे। श्रोताओं पर इसका अनुकूल प्रभाव पड़ा है, यह देखकर आबाय को सन्तोष हुआ।

"यह कैसा लगा तुम्हें?" उसने पूछा।

सब वाह-वाहकर उठे और कुदायबेर्दि भी उनके साथ था।

"यह एक अच्छा गीत है," उसने हामी भरी।

"तो फिर, यह रहा दूसरा!" और आबाय व येर्बोल "सुन्दर बाला" शीर्षक गीत गाने लगे।

यह भी कुदायबेर्दि को बहुत पसन्द आया। फिर आबाय और येर्बोल धीमे-धीमे एक-दूसरे से सलाह करने लगे।

"अब हम अन्तिम बचा गीत गायेंगे," उन्होंने कहा और अपने तीसरे गीत "सफ़ेद भूर्ज" के मार्मिक पदों को एक साथ लोगों के कानों में उँडेलना शुरू कर दिया।

तीन पदों के बाद सब के सब मंत्र-मुग्ध हो उठे और आबाय ने अपने वाद्य यंत्र के तारों को काँपकर, एक गहन, मृदुल स्वर के साथ मौन कर दिया।

"हाँ, तो बाके, अब आप क्या कहते हैं?" उसने पूछा।

"मेरे ख़्याल से तुम ठीक ही कहते हो," कुदायबेर्दि ने स्वीकार किया, "तुम अपने साथ हम लोगों के लिए बहुत अच्छे गीत लेकर आये हो।"

फिर आबाय ने उन्हें बताया, "हरी वादी" और "जैतूनी लड़की" नामक जो गीत वे अलिशनबाय के आऊल ले गये थे, उन्हें तनिक भी सफलता नहीं मिली थी। इसका पहला कारण था—वे पुराने थे और बच्चे-बच्चे उन्हें जानते थे, दूसरे, बोशन उन्हें एकदम ही दूसरी ताल-लय से गाने के आदी थे। आबाय के मुताबिक़, तोबिक्ति गीतों के माहिर न थे और प्राय: दूसरे क़बीलों से गीत लेकर उन्हें अपने गायन द्वारा बिगाड़ देते थे। इस तरह कुदायबेर्दि की आपत्तियाँ बेमानी हो गयी और बड़े भाई ने छोटे को गर्वपूर्वक देखा; उसने महसूस किया, आबाय में यात्रा के बाद से कहीं बड़ी अन्तर्दृष्टि विकसित हो गयी है और वह अपने आप बातों का जायज़ा लेना सीख चुका था।

जब दूसरे दिन वह अपनी माताओं के आऊल में लौटा, पूरे आऊल ने अत्यन्त उल्लासपूर्वक उसका स्वागत किया। बूढ़ी ज़ेरे तो अपनी स्नेह भरी आँखें उस पर से हटा ही नहीं पा रही थी। उसके छोटे भाई उसकी गर्दन से लटक गये, उसकी बग़लियों में अपने सिर घुसेड़ दिये और

अपनी प्रसन्नता जाहिर करने के लिए जो कुछ बन पड़ा, करते रहे।

उलजान के आऊल ने अपने आवास विपुल खेतों, चरागाहों और सोतोंवाले एक विस्तृत इलाक़े में बना लिये थे। आस-पास के सारे तोबिक्ति किसी बहुत बड़ी घटना का पूर्वानुमान लगाये थे। आबाय ने कुछ-कुछ इस सम्बन्ध में सुन रखा था लेकिन अब उसे विस्तृत जानकारी मिली थी। बच्चे, जवान, बूढ़े और बुज़ुर्ग आक़साक़ाल भी सिर्फ़ एक ही चीज़ के बारे में सोच रहे थे: आगाभी कुछ दिनों में बोजंय की याद में होने जा रहा भव्य मातमी भोज।

बोजेय के स्वजन जाड़े से ही भोज की तैयारी कर रहे थे। वसन्त में ही हर किसी को निमंत्रण भेज दिया गया था और समारोहों के लिए दिन और स्थान निर्धारित किये जा चुके थे। कोई एक साल से मैत्री-बंधनों से जुड़े जिगितेक, कोतिबक़, बोकेंशी और तोग़ाथि लोगों ने काज़बाला के विस्तृत, हरे-भरे ग्रीष्म के पड़ावों में अपने ओताव लगा दिये थे। समारोहों का एक महत्वपूर्ण अंग था महान बायगा* और दौड़ों के लिए क़ाज़बाला के विस्तृत मैदानों से अधिक उपयुक्त और कोई जगह न होती।

घर वापस आकर आबाय और येर्बोल दोनों प्रसन्न हुए थे – दोनों ही घर के लिए तरस गये थे। येर्बोल अपने आऊल को लौट जाने का इच्छुक था। उसे भी अपने आऊल के स्मृति भोज में भाग लेने की बात मालूम हुई।

आऊल वापस आने के दूसरे दिन आबाय की अपनी माँ के साथ लम्बी बातचीत हुई। उसकी अनुपस्थिति में जो कुछ हुआ था, उन सब की जानकारी उसने हासिल की।

उलजान ने बताया, वसन्त की शुरुआत से ही क़ोनानबाय बड़ी-बड़ी बैठकें करता रहा था और किसी ऐसी चीज़ के बारे में विस्तृत तैयारी करने में लगा था जिसकी उन लोगों को कोई जानकारी न थी। बेहिसाब भोज देकर क़ोनानबाय ने बहुत से क़बीलों को अपने पक्ष में कर लिया था। कुछ को उपहार देकर, दूसरों के साथ वायदे करके तथा अन्य

---

* बायगा – दौड़; इनाम भी। – सं०

लोगों को अनिष्टकारी सलाम भेजकर उसने क़ाबू में कर लिया था। मुश्किल से एक महीने के अन्दर ही अन्दर उसने बहुत से नये समर्थक प्राप्त कर लिये थे जिनमें क़ाराताय जैसे महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली व्यक्ति थे। क़ोनानबाय आख़िरकार उन लोगों को भी अपने पक्ष में कर लेने में सफल रहा था जिनकी आत्मीयता दोनों पक्षों के प्रति बराबर थी। इर्ग़िज़बाय-प्रमुख का विरोध अब सिर्फ़ तीन या चार क़बीले कर रहे थे: कोतिबक़, जिगितेक तथा अन्य।

बहरहाल, यह सारे लोग जाड़े से ही स्मृति भोज की तैयारियों में संलग्न रहे थे। क़ोनानबाय यह जानता था और जाड़े के पड़ावों की ओर कूच करने से पहले ही उसने उन पन्द्रह ऐसे पड़ावों की माँग कर दी थी जो उन्हें उससे अभी हाल ही में प्राप्त हुए थे। पतझड़ तक उन्हें अपने माल-असबाब हटा लेने थे और यह पड़ाव फिर क़ोनानबाय के अधिकार में आ जानेवाले थे, वहाँ कोई भी आदमी नही रहना चाहिए था।

प्रत्येक आऊल को अलग-अलग सूचना दी गयी थी। कारण कोई भी नहीं बताया गया था, सिर्फ़ आदेश दिये गये थे। इस तरह क़ोनानबाय ने चौदह जाड़े के पड़ाव हासिल कर लिये थे। सिर्फ़ पन्द्रहवें में उसे विरोध का सामना करना पड़ा।

यह बायसाल का जाड़े का पड़ाव था।

जब क़ाराताय और जुमाबाय ने उसे क़ोनानबाय का संदेश दिया, बायसाल ने शान्तिपूर्वक अपनी बात स्पष्ट कर दी:

"वोलोस्त-प्रमुख को मेरा सलाम ले जाओ। उससे कहो, हम एक दूसरे को बचपन से जानते हैं और मेरे पास कोई ज़मीन नहीं, यह बात उससे ज़्यादा अच्छी तरह कोई नहीं जानता। कुनेकेन के पास ज़मीन की कोई कमी नहीं। पन्द्रह में से चौदह जाड़े का पड़ाव तो वह हासिल कर ही चुका है। वह मेरा हिस्सा मुझे छोड़ दे। मैंने उस ज़मीन पर अपना धन लगाया है और अपने मन मुताबिक़ वहाँ बन्दोबस्त किया है।"

ऐसा जवाब सुनकर क़ोनानबाय आग-बबूला हो उठा और उसी रात फिर क़ाराताय और जुमाबाय को बायसाल के यहाँ भेज दिया। उन्हें उससे आनाकानी बन्द करके तुरंत जाड़े का पड़ाव छोड़ देने के लिए कहना था।

क़ोनानबाय की स्वेच्छाचारिता पर अब बायसाल को ग़ुस्सा आ गया। उसने जवाब में क़ोनानबाय को मुक़ाबले की चुनौती दे डाली।

"मैं उसे अपनी दलीलें दे चुका हूँ लेकिन वह समझने को तैयार नहीं," उसने कहा। "वह ज़मीन छीन रहा है, यह सब से बड़ी ग़ुस्ताख़ी नहीं बल्कि यह है कि उसकी आँखों में मैं कुछ भी नहीं। जब मैं चुपचाप बैठा था, तब भी उसने मुझे कुरेदना जारी रखा जब तक मैं सिर उठाने पर मजबूर नहीं हो गया। ज़मीन को ही लेकर वह बोजेय को घुन की तरह चाट गया और वह क़ब्र में जा पहुँचा। क्या मेरी स्थिति बोजेय से बेहतर है? मेरे पास गँवाने को कुछ भी नहीं। जो मेरा है, मैं कदापि नहीं दूँगा! मैं जाड़े के पड़ावों से टस से मस नहीं होऊँगा!"

फिर से झगड़ों की शुरुआत की आशंका से क़ाराताय ने क़ोनानबाय को बायसाल के जवाब के बारे में बताते समय उसमें से कटु बातों को निकाल देने का फ़ैसला किया। लेकिन इर्गिज़बाय - प्रमुख को झाँसा देना कठिन था। "बायसाल इस तरह बातें नहीं करता," उसने दृढ़तापूर्वक कहा और पूरा विवरण माँगा। इस तरह क़ाराताय को मजबूरन बायसाल की पूरी बातें सही-सही बतानी पड़ीं।

उसी दिन से बायसाल और बायदालि के प्रति क़ोनानबाय का क्रोध फिर ताज़ा हो उठा। फ़ैसलाकुन क़दम उठाने में आगामी स्मृति भोज एकमात्र बाधा था। उलजान जानती थी, जैसे ही क़बीले अपने ग्रीष्म के पड़ावों को रवाना हुए थे, क़ोनानबाय और बायसाल के आऊलों में अन्तहीन झगड़े-फ़साद शुरू हो गये थे। क़ोनानबाय ने अपने आऊल एक कोतिबक़ आऊल के एकदम क़रीब में लगाये थे और लगातार अपने दुश्मनों को परेशान कर रहा था, चरागाहों से उनके जानवरों को खदेड़ रहा था। बायसाल भी जैसे का तैसा जवाब दे रहा था और कोतिबक़ के नौजवान दिन-रात अपने आऊल की पहरेदारी कर रहे थे।

कोतिबक़ कुन्के के आऊल के बहुत क़रीब बसे थे और मामूली-सा बहाना भी आम कलह के लिए चिनगारी का काम कर सकता था। क़ोनानबाय लगातार बलप्रयोग पर उतारू था और जानबूझकर झगड़ा मोल लेना चाहता था। उसकी योजनाओं को भाँपकर जेरे दूसरों से पहले रवाना हो गयी थी और उसने ठीक बायसाल के पार्श्व में अपना आऊल

लगा लिया था। वह चरवाहों और अपेक्षातया अधिक लड़ाकू नौजवानों पर क़ाबू रखना और कुन्के के आऊल द्वारा लादे जा सकनेवाले इसी तरह के दूसरे अन्यायों को रोकने को कृतसंकल्प थी।

इन अचानक हमलों और बोजेय की स्मृति के प्रति क़ोनानबाय की उदासीनता से उलजान बहुत दुखी थी। वह एक बार भी जिगितेक नेता की क़ब्र पर नहीं गया था। निस्सन्देह, बोजेय की मौत के एक साल बाद भी वह अपनी कटुता नहीं छोड़ेगा। ठंडी आह भरकर उलजान ने बताया था।

आबाय की भौहों में बल पड़ गये और इन सारी बातों पर उसने ग़ौर करना शुरू कर दिया। वह दिन भर कुछ भी नहीं बोला और रात में बेचैनी से करवटें बदलते रहा। पहली बार उसकी माँ ने उसके पिता के झगड़ों और अत्याचारों के बारे में उससे तफ़सीली बातचीत की थी। शायद उसकी माँ का मतलब यह था कि आबाय को बुज़ुर्गों के मामले में हाथ बँटाने का समय आ गया है। उसने अपनी बातें बड़ी स्पष्टता और थोड़े गुस्से से कह दी थी।

येर्बोल दूसरे दिन भोजन के समय वापस आया और क़िमिज़ पीने के लिए दोनों दोस्त तुरंत ही मुख्य ओताव में चले गये। उनकी बातचीत के बीच में ही सहसा क़ोनानबाय की ज़ोरदार आवाज़ आ टपकी। वह अकेला आया था और स्पष्ट रूप से क्रुद्ध था। घोड़े से उतरते ही उसने किसी को झिड़की दी।

"ऐ, जुमागुल, मिर्ज़ाख़ाँ! इधर आओ!" ओताव में घुसते हुए उसने आवाज़ दी।

दोनों जवान आज्ञापूर्वक आ पहुँचे और क़ोनानबाय लम्बे डग भरते हुए प्रतिष्ठित स्थान पर जा पहुँचा।

"बायसाल ने अपना आऊल मेरे आऊल के ठीक सामने स्थापित किया है, यह कोई संयोग नहीं," उसने बैठे बिना कहा। "वह अपने ढोर हमारी ओर हाँक रहा है। ठीक है, देखेंगे कौन ज़्यादा मज़बूत है! चोक़मार और सोथिल लेकर ढोरों को चरागाहों के आख़िरी छोर तक खदेड़ दो।"

नौजवान तुरंत रवाना हो गये और कुछ ही मिनटों में हथियारों की खनखनाहट और बाहर आते घोड़ों की टापों की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। आबाय बाहर निकल आया।

"ठहर जाओ!" उनके पास पहुँचकर वह चीख़ पड़ा।

नौजवान घोड़ों पर सवार हो चुके थे और अपने टोप बाँध रहे थे।

"तुम क्या करने जा रहे हो?" आबाय ने पूछा।

"हमला करेंगे और क्या? इसमें अजीब बात क्या है?" जुमागुल ने ख़फ़ा होते हुए जवाब दिया।

"तुम ऐसा कुछ भी नहीं करोगे! सुन लिया!" आबाय ने कहना शुरू किया।

"क्या तुम हमें मिर्ज़ा की आज्ञा न मानने की सलाह दे रहे हो?" जुमागुल ने बीच में ही उसकी बात काट दी।

आबाय क्रुद्ध हो, उनके और क़रीब आ गया।

"जहाँ तुम हो, वहीं ठहर जाओ। एक भी शब्द आगे मत बोलना!" वह चीख़ पड़ा। उसकी आँखों में ख़ून उतर आया था, पीला चेहरा स्याह पड़ गया था, मुक्के बँध गये थे। नौजवान आपे से बाहर होते हुए भी रुक गये।

"तुम घोड़ों को छुओगे भी नहीं, न उन्हें पीटोगे और न ही उन्हें कहीं हाँक ले जाओगे! बस चरवाहों को उन्हें यहाँ से दूर ले जाने के लिए कहकर लौट आओगे!"

"और हमारे आदेशों का क्या होगा?"

"मैं तुम्हें तुम्हारे आदेश दे चुका हूँ! ज़रा-सा भी इधर-उधर किया तो तुम्हारे लिए बहुत महँगा साबित होगा!" आबाय ने धमकी दी।

उसकी ऐसी असाधारण आवाज़ और भावाकृति के कारण मिर्ज़ाख़ाँ और जुमागुल दोनों ही जाते-जाते आशंका से भर उठे। आबाय ओताव में लौट आया।

"पिता जी," उसने दृढ़ता से कहा, "हमारे ग्रीष्म के पड़ावों में ज़रूरत से कही ज़्यादा चारा है। फिर इतनी कृपणता क्यों जिससे हमारे स्वजन नाराज़ हो जायें?"

क़ोनानबाय ने उसकी ओर रूखेपन से देखा।

"शायद तुम्हारा ख़्याल है बायसाल को किसी वकील की ज़रूरत है?" उसने तीखेपन से कहा। "या शायद उसे मेरा पड़ाव वापस नहीं करना चाहिये?"

"वह तो जाड़े का पड़ाव था लेकिन यह तो जयलाव है," आबाय ने ज़ोर डाला।

"क्या हम जयलाव मे शरद्कालीन झगड़े ग्रीष्म मे तय नही करते? क्या तुम्हारे ख़्याल मे मेरी मुसीबत से फ़ायदा उठाकर और मेरी ज़मीन हथियाकर उसने ठीक किया था?"

आबाय पल भर के लिए चुप रहा, फिर जितना संभव था, उतने शान्तिपूर्ण ढंग से बोला:

"सच कहा जाये तो झगड़ा हमने शुरू किया था, बायसाल ने नही। क्या वह वर्षो से शरद्कालीन ज़मीन के एक टुकड़े भर के लिए याचना नही कर रहा था? क्या शरद्कालीन ज़मीन के लिए ही उसने बोजेय पर प्रहार करने मे आपका हाथ नही बॅटाया था? उससे ज़मीन का एक मात्र टुकड़ा छीन लेना ग़ैर वाजिब है। इन्ही सब के कारण तो..."

"बहुत बक-बक कर चुके!" अपने गुस्से पर काबू पाने की भरसक कोशिश करते हुए क़ोनानबाय ने उसकी बात बीच मे ही काट दी। "तुम मुझ से बहस मत करो।"

आबाय बोलते-बोलते ठहर तो गया लेकिन एकदम से चुप नही हुआ:

"हमारे पास बहुत-से जयलाव है, उनके रहते एक चरागाह के लिए झगड़ा करना बेकार है।"

जब कबीले के मामलो पर बहस होती, आबाय अपने मन की बातें कहने से हमेशा भय खाता और बड़ी सावधानी भरी, हिचकिचाती हुई राय देता मानो उसकी ज़बान बेकाबू हो जायेगी। लेकिन उसकी आवाज़ के नये स्वर ने कोनानबाय को अब ध्यान देने पर बाध्य कर दिया।

ज़ेरे और उलजान भी ध्यानपूर्वक सुन रही थी। क्या वे भी अपने बेटे की तरह सोचती है लेकिन कहने से डरती है? कोनानबाय विचार करता बैठा रहा। कुछ क्षणो तक वह निश्चेष्ट रहा, फिर पहलू बदलकर हथेली से सिर थामकर टिक गया। आबाय ने तुरंत उसे तकिया पेश किया। क़ोनानबाय ने उसे अपनी बगल मे समेटकर दबा लिया, बेटे की ओर पीठ फेरे वह सोचता रहा।

कोई तीव्र विरोध या फटकार न पाकर आबाय ने एक और मामला उठाने की हिम्मत की।

"बच्चो को, परिवार के सारे सदस्यों को अपनी चिन्ताएँ आपके

साथ बँटानी चाहिए। क्या यह उचित है, वे बोलते भय खायें और उन्हें सब कुछ छुपाना पड़े? आपको उनकी बाते सुननी चाहिए, उनकी राय जाननी चाहिए।"

किसी धार्मिक पिता से बाते करते समय क़ुरान की भाषा मे बोलना और पहले तथा दूसरे धर्मादेशो को याद रखना सबसे अच्छा था। आबाय ने सोचने मे ग़लती नही की थी। स्पष्ट रूप से क़ोनानबाय सुनने को तैयार था और नौजवान ने अधिक स्वच्छन्दता से बोलना शुरू किया:

"मुझे एक और मामले पर बोलने की इजाज़त दीजिए—वह है बोजेय का स्मृति भोज। हम लोगो पर, उनके स्वजनों पर बहुत से ऐसे दायित्व है जिन्हें हम लोगो ने अब तक पूरा नही किया है। बीती बातों की चर्चा मे तो बहुत देर हो चुकी है लेकिन इस समय वे आख़िरी भोज की तैयारी कर रहे है और यह सिर्फ़ जिगितेक की ही नही, ख़ुद आदमियत की, आत्मीयता की और अन्तरात्मा की परीक्षा भी होगी। बोजेय की मौत के समय भी हम अलग-अलग रहे। लेकिन अब उसकी स्मृति भोज मे हमे अवश्य अपना योगदान करना चाहिए!"

पिछले साल के अपमान क़ोनानबाय की स्मृति मे कौध गये।

"मुझे क्या करना है? बिना निमंत्रण के उनके गले जा पड़े? पिछले साल की तरह उनकी लताड़ खाने जाऊँ?" उसने कटुता से पूछा।

"आपको ख़ुद जाने की ज़रूरत नही—आप हम लोगो को भेज सकते है। हम जलसो में भाग लेगे और यही काफ़ी होगा। अगर आप इजाज़त दें, मै ख़ुद इसकी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले लूँगा। सिर्फ़ इज़गुत्ति को मेरे साथ कर दे और आवश्यक जानवरो व अन्य दूसरी चीजो की स्वीकृति दे दें," आबाय ने अनुरोध किया।

क़ोनानबाय ने सिर ऊपर उठाया, टोप पहना और उठ खड़ा हुआ। सब की आस व याचना भरी आँखे उसकी ओर उठ गयी।

"जो मन मे आये करो!" उसने अनमनेपन से गुर्राकर कहा। "तुम चाहो तो बायदालि और बायसाल के पाँव चाटो, मुझे इसकी कोई परवाह नही!" यह कहकर वह तम्बू से निकल गया।

लेकिन इसके बावजूद उसने अपनी सहमति दे दी थी: चाहे उसने मजबूरन ऐसा किया हो अथवा ग़ुस्से मे कह दिया हो। आबाय अबाध

सोचता रहा। उसकी राह में पिता द्वारा रोड़े नही अटकाये जायेंगे, यही काफ़ी था। सावधानी से अच्छी तरह सोच-विचारकर उसने अपनी योजनाओं को समझाते हुए, माताओं से तुरंत सलाह-मशविरा शुरू कर दी।

इज़गुत्ति उसका सबसे अच्छा मददगार होगा, इस बात पर ज़ेरे और उलजान दोनों एकमत थीं। उसी दिन इज़गुत्ति को बुला भेजा गया। अपने भाइयों में आबाय ने सिर्फ़ क़ुदायबेर्दि को आमंत्रित किया और उससे सभी बातों पर विचार-विमर्श किया। क़ुदायबेर्दि ने हर समय ज़रूरत पड़ने पर मदद देने का वायदा किया।

विदा होने से पहले येर्बोल आबाय को एक ओर ले जाकर बोला:

"आबाय, मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूँ, तुम्हारी अपने पिता से बातचीत सुनकर मैं आह्लादित हुआ हूँ। इसके कारण मुझे तुम्हारी दोस्ती पर नाज़ है। अभी तो मैं घर जाऊँगा लेकिन तुम्हारी मदद करने लौट आऊँगा।"

दूसरे दिन आबाय जुमाबाय और मिर्ज़ाख़ाँ के साथ घोड़े पर क़ाज़बाला चोटी की ओर रवाना हो गया। जिगितेक और क़ोतिबक़ के असंख्य आऊलों को पीछे छोड़ वह बोजेय के तम्बू की ओर जा पहुँचा।

आऊल स्मृति भोज की तैयारी में लगे थे और बोजेय के आऊल के नीचे पहाड़ी की ओर ओतावों का एक ताँता-सा लग गया था। महान भोज में कुछ ही दिन शेष रह गये थे और सब जल्दी में थे। हर आदमी घोड़े पर सवार था। चारों ओर पहाड़ियों-से तम्बू लादे ऊँटों का लम्बा सिलसिला चला आ रहा था।

आबाय और उसके साथी सबसे पहले मातमी ओताव के पास दुआओं के लिए रुके। मुख्य ओताव को बदला नहीं गया था। दायीं ओर वही काला-सफ़ेद झण्डा फहरा रहा था और अन्दर भी वही सम्पूर्ण सुसज्जा थी। पवित्र और उदास ओताव अपने मालिक की पहली बरसी की प्रतीक्षा करता खड़ा था। उसके मालिक के सूने-सूने कपड़े अन्दर समृद्ध रूप से अभिकल्पित एक नमदे पर पड़े थे।

इस मौक़े की ब्योरेवार व्यवस्था के लिए आये लोग आऊल के बाहर जमा हुए थे। बोजेय के ओताव में क़िमिज़ पीकर तरोताज़ा हुए आबाय और उसके साथी घोड़ों पर सवार हो नीचे पहाड़ी की ओर चल पड़े

जहाँ सभा हो रही थी। वही से घुडसवार सर्वथा भिन्न-भिन्न कामो से लगातार रवाना किये जा रहे थे। बैठक के प्रमुख लोग तीन बुजुर्ग थे— बायदालि, बायसाल और सुयून्दिक।

पिछले एक साल मे बायदालि काफी बूढा हो गया था और उसकी दाढी से सिर के बाल एकदम सफेद हो गये थे। जब आबाय अपना सलाम पेश करने पास पहुँचा, आकसाकालो ने रचमात्र भी पिछले वैर-भाव के बिना उसका स्वागत दोस्ताना ढग से किया। बायदालि और सुयून्दिक ने जेरे और उलजान का हाल-चाल पूछा और उसे अपनी बगल मे बैठने को आमन्त्रित किया। बुजुर्गो के आदेशो की प्रतीक्षा करते सौजन्य-पूर्वक खडे नौजवानो मे जिरेशे भी था जिससे आबाय बहुत पहले से परिचित था। फिर भी बायसाल की कोनानबाय से लडाई के बाद वह उसे पहली बार देख रहा था। जिरेशे ने भी उसका स्वागत दूसरो की तरह ही गर्मजोशी के साथ किया।

आबाय के आगमन से बुजुर्गो ने अपनी बातचीत बन्द कर दी थी। कुछ देर चुप्पी छायी रही फिर आबाय बायदालि की ओर मुखातिब हो गया

"बायदाश आगा," उसने अपनी बात शुरू की।

बिना किसी उतावलेपन के इने-गिने शब्दो मे उसने अपने आने का मकसद बता दिया।

जेरे के नेतृत्व मे उसकी माताओ ने यहाँ एकत्र हुए लोगो से अपना सलाम कहने की इच्छा प्रकट की है और उन्हे आश्वासन दिया है कि वे भी अपनेतया जितनी अच्छी तरह हो सकेगा, बोजेय की बरसी मे भाग लेने की ख्वाहिश रखती है। पिछली बार काफी देर हो गयी थी लेकिन इस बार वे देर नही करना चाहती और सच्चे हृदय से उन्होने आबाय को भेजा है।

बायदालि ध्यानपूर्वक सुनता रहा।

"मेरे बेटे, तुम्हारे स्वजन तुमसे सन्तुष्ट है," उसने कहा। "खुदा तुम्हे सफलता दे! मेहरबानी करके हमे बताओ, तुम कैसे-क्या करना चाहते हो?"

आबाय ने वह सारी बाते दुहरा दी जिन के बारे मे पिछले दिन वह अपनी माताओ, इजगुत्ति और कुदायबेर्दि से विचार-विमर्श कर चुका था।

उसने मेहमानो के स्वागतार्थ घाटी मे ग्रोताव खडे करने के लिए किसी जगह की इच्छा प्रकट की। उसने तीन सौ लोगो के रहने लायक काफी कुशादा दस विशालकाय तम्बू उसी शाम तक लगा देने का वायदा किया। वह भोजन, प्लेट तथा ग्रन्य ग्रावश्यक चीजे लायेगा। ग्राकसा-काल उस पर भरोसा करते हुए ग्रन्य निर्देश दे। उसे मालूम था, ग्रास-पास के सारे ग्राऊल एक या दूसरे कबीले के मेहमानो का स्वागत करने-वाले थे, इसलिए उसे किसका स्वागत करना है, यह बुजुर्ग लोग उसे बता दे। इसके ग्रलावा, उसने ख्वाहिश प्रकट की, उन्हे उसका विश्वास करके कुछ सम्मानित मेहमानो की देखभाल का काम सौपा जाये।

बायदालि, बायसाल ग्रौर सुयून्दिक ने फिर ग्राबाय के साथ ग्रन्य बातो पर विचार-विमर्श किया।

भोज मे सुदूरतम स्थानो पर रहनेवाले सबसे बडे कबीले के प्रतिनिधि ग्रानेवाले थे—कर्करालि से, जेतिसू से, इर्तिश की निम्न विस्तृतियो तथा बाल्खाश की तटो से। उनमे से विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण मेहमान होगे नैमन कबीले के बोजेय के ममहर के स्वजन। वहाँ बहुत ग्रर्से पहले बोजेय नाम का एक प्रसिद्ध नैमन नेता हुग्रा करता था। केगिरबाय से उसकी मित्रता हो गयी ग्रौर उसने ग्रपने बेटे येरालि का विवाह नैमन नेता की बेटी से कर दिया था। उसी के बेटे बोजेय का नामकरण ग्रपने प्रसिद्ध नाना के नाम पर किया गया था। शरद मे ही बायदालि ने नैमन लोगो को बरसी के बारे मे सूचित कर दिया था ग्रौर हाल मे खबर मिली थी कि बोजेय के वे स्वजन ग्रा रहे थे।

"ग्रगर वह मेहमानो की ग्रावभगत करना चाहता है तो क्यो नही उसे बोजेय के इन स्वजनो की देखभाल का काम सौप दिया जाये," किसी ने सुझाव दिया।

ग्राबाय ने बात पकड ली। स्पष्ट रूप से उसने सभा का विश्वास प्राप्त कर लिया था क्योकि ऐसे मेहमानो की देखभाल के लिए ग्रत्यधिक कुशलता ग्रौर सावधानी की जरूरत थी।

"बहुत खूब, बायदाश ग्रागा," उसने कहा। "हम नैमन के बोजेय के स्वजनो की देखभाल करेगे। उनकी जिम्मेदारी हम लोगो पर सौप दे।"

सभा ने कोई ग्रापत्ति नही की। नैमन लोगो ने कोनानबाय ग्रौर

बोजेय के झगडो के बारे मे बस सुना भर ही था। वह भी देख ले, मृत जिगितेक नेता की स्मृति का सब किस तरह सम्मान करते है। तथापि किसी ने कुछ भी नही कहा था, यह बात सभा के सभी लोगो के साथ खुद ग्राबाय के दिमाग मे स्पष्ट थी।

फिर ग्राबाय ने दो ऐसे नौजवानो की माँग की जो दूसरे ग्राऊलो की तैयारियो से पूर्ण परिचित हो। बायदालि ने येर्बोल ग्रौर जिरेशे के नाम दे दिये।

ग्रब एक भी क्षण बर्बाद करने को न था ग्रौर ग्राबाय उछलकर उठ खडा हुग्रा। सुयून्दिक ने सन्तोषपूर्वक उसकी ग्रोर देखा।

"क्या बुरी मिसाल से भी ज्यादा सक्रामक कुछ है?" उसने पूछा। "जो बुराई चाहते है, वह ऐसा ग्रत्यधिक बुद्धिमत्ता के कारण नही करते ग्रौर बुराई न कभी उन्हे लाभ पहुँचायेगी, न ही समृद्धि लायेगी। चुनाँचे, हमे उसे ही सम्मान देना चाहिए जो भलाई चाहता है। मेरे बेटे, मुझे तुम्हारे इरादो मे ईमान्दारी ग्रौर तुम्हारी राह सच्ची दिखाई देती है। खुदा तुम्हे सफलता दे," उसने ग्रपनी बात समाप्त की।

ग्राबाय सभा से प्रसन्न था। उसे भगाया नही, बल्कि ग्रपनो मे से एक की तरह स्वागत किया गया था। सोत्साह वह घोडे पर सवार हो जिरेशे व येर्बोल के साथ उस जगह का सर्वेक्षण करने गया जहाँ ग्रोताव खडे किये जानेवाले थे। ग्रपने नौजवानो के साथ सलाह-मशविरा करके उसने ग्रपने तम्बुग्रो ग्रौर रसोई के लिए जगह निर्धारित की। येर्बोल ग्रौर मिर्जाखाँ ने उन जगहो पर चिह्न लगा दिये ग्रौर उन लोगो से मिलने के लिए वही रुक गया जिन्हे ग्राबाय बादवाले दिन ग्रावश्यक जानवरो, ग्रोतावो ग्रौर बर्तनो के साथ भेजनेवाला था।

ग्राबाय ने तेजी से फैसले किये, शान्ति व निश्चितता के साथ निर्देश दिये। उसके चले जाने के बाद जिरेशे ने टिप्पणी की, "ग्राबाय तो पूरा वयस्क ग्रादमी हो गया है! खुदा करे, वह ग्रपने वायदे पूरे करे।"

"वह ग्रपने वायदे पूरे करेगा। जो कुछ उसने वायदा किया है, वह सब पूरा करेगा! तुम देखोगे ही!" येर्बोल ने उसे ग्राश्वस्त किया।

उलजान के ग्राऊल से रवाना होने से पहले ग्राबाय ने ग्रपनी ग्रनुपस्थि-

ति में ही तैयारियाँ शुरू कर देने के लिए कह रखा था और वहाँ कार्य सुचारु रूप से चल रहा था। उलजान, इज़गुत्ति और क़ुदायबेर्दि सारी हिदायतें दे रहे थे। रवाना होने से पहले आबाय ने अपने सुनहले क़ुम्मैत पर मेहमानों के लिए ओतावों का चुनाव करने इर्गिज़बाय के सारे आऊलों का चक्कर लगाया था। फटे नमदेवाले दो ओतावों को निकालकर उनकी जगह दूसरे चुन लिये गये थे।

उसके वापस आते ही दसों ओताव गिराकर बाँध दिये गये थे। शाम तक बँधे ओतावों का झूलता अम्बार, अलंकृत कम्बलों, पर्दों, चादरों और तकियों के विशालकाय बंडलों के साथ एक लम्बा कारवाँ रवाना हो गया। उलजान ने ख़ुद ही चकाचक सफ़ेद तौलियों का चुनाव और तश्तरियों व रसोई के बर्तनों को अलग से बाँधने का इंतज़ाम किया था। कारवाँ के साथ वे नौजवान थे जिन्हें ओताव लगाने, उन्हें सजाने और मेहमानों की तीमारदारी के लिए चुना गया था।

पहले क़दम उठाये जा चुके थे। कारवाँ के रवाना हो जाने पर सब लोग मुख्य ओताव में आगे के कार्यक्रमों: ज़बह किये जानेवाले जानवरों की संख्या, क़िमिज़ कैसे भेजा जाये, इन पर विचार करने के लिए जमा हुए। बहुत अधिक कौशल की ज़रूरत होगी, यह आगाह करते हुए उलजान ने रसोई का इंतज़ाम और भोजन तैयार कराने का काम अपने हाथ में ले लिया। अन्त में उसने बताया, उसके साथ आयग़िज़ और सारि-आपा भी कल काज़बाला जायेंगी।

"तुम्हें जो फ़ैसले लेने थे, तुमने ले लिये," ज़ेरे ने एलान किया। "अब सब कुछ इस ढंग से करो जिससे मेरे बच्चों को दूर से आये अपने मेहमानों के सामने शर्मिन्दा न होना पड़े। अगर तुम में से हरेक अपना काम सम्मानपूर्वक करने को इच्छुक है, पुराने झगड़ों को भूल जाओ। अगर बोजेय के ज़िन्दा रहते हम उससे दोस्ती बनाये नहीं रह सके, हमें अपने ऊपर मृतक का अभिशाप नहीं लगने देना चाहिए! मेरे बेटे, बेटियो, अपने मेहमानों के प्रति शिष्ट और विनम्र रहो! सच्चा आदमी सिर्फ़ लड़ाई-झगड़ों में ही अपनी उत्तमता नहीं सिद्ध करता बल्कि दूसरे आदमियों के साथ अपने व्यवहार में भी प्रदर्शित करता है। थकान से चाहे तुम मरते रहो, इसे ज़ाहिर मत होने देना! अपने मेहमानों की तीमारदारी उल्लासपूर्वक, ख़ुशी-ख़ुशी करो लेकिन पुरशोर मत बनो,

कभी अमर्यादित न बनो! शान्त, मितभाषी और नम्र रहो। अगर तुम ऐसा करने में असफल रहते हो तो मैं कहे देती हूँ—ख़ुदा मुझे मौत दे!"

मुख्य ओताव सारी रात ज़ोरदार ढंग से कार्य करता रहा और सवेरे तक रसोई ओताव के साथ एक दूसरा कारवाँ स्मृति भोज के स्थल की ओर रवाना हो गया। तड़के ही उलजान, आयगिज़ और सारि-आपा भी चल पड़ीं। सबसे आख़िर में आबाय और इज़गुत्ति रवाना हुए।

पहले से भेजे गये ओताव काज़बाला मैदान में खड़े किये जा चुके थे। उन्हें सजा भी दिया गया था। नौजवान दरवाज़ों के पास अपनी जगहों पर जा खड़े हुए और प्रत्येक प्रवेश-द्वार पर क़िमिज से लबालब एक-एक विशाल पात्र रख दिया गया था।

फिर उलजान अपने काम में जुट गयी। आबाय के ओताव अन्य सब को मात कर दें और सम्मानित मेहमानों को दिये जानेवाले भोजन मन-पसंद और सुस्वादु हों, इसका उसने कृत संकल्प कर लिया था। नदी के किनारे मोटे-ताज़े जानवरों को काटा और वहीं उन्हें कड़ाहों में सिझा-या-पकाया गया।

अभी भी आबाय के ओताव सबसे सुन्दर थे। वे भीतर-बाहर से बहुत शानदार थे और सर्वाधिक विशिष्ट मेहमानों के सर्वथा स्वागत योग्य थे। सुयून्दिक़ और बायदालि ने तम्बुओं का निरीक्षण किया। फिर वे रसोई के पास उलजान से दुआ-सलाम करने घोड़ों से उतरे। उसकी परिश्रमसाध्य तैयारियों से वे प्रभावित व प्रसन्न थे।

"मेहमानों के लिए भोजन और उनकी उचित देखभाल एक चीज़ है," उसने बायदालि को एक ओर ले जाकर कहा। "लेकिन कल घुड़दौड़ और कुश्ती प्रतियोगिताएँ होंगी, विजेताओं को इनाम दिये जायेंगे। मुख्य पुरस्कार के रूप में ऊँट को रखकर आपने नवों* पुरस्कारों की घोषणा कर दी है। मेरा बेटा भी इसमें योगदान करना चाहता है और उसने मुझे यह लाने के लिए कहा था।" उलजान ने रेशमी फीते में

---

* विजेता घोड़े के मालिक को दिये जानेवाले पुरस्कार में नौ चीज़ें शामिल थीं—ऊँट, उक़ाब, घोड़ा, गाय, अश्व-शावक, भेड़, बकरा, कम्बल और चोग़ा या कोई भी दूसरी नौ बहुमूल्य चीज़ें।—सं.

बंधा एक बंडल निकाला। "नौ उपहारों में से किसी एक का मुख्य उपहार इसे बना दीजिए।"

यह चाँदी का एक बहुत बड़ा ढाँचा था – तायतुयाक़।

सूर्यास्त तक भोजन तैयार हो चुके थे जब क़ाज़बाला घाटी में पहले मेहमानों ने आना शुरू किया।

आऊल के बाहर एक टीले पर बायदालि, सुयून्दिक़ और इज़गुत्ति काफ़ी देर से नवागन्तुकों से दुआ-सलाम करते खड़े थे। वे चारों ओर से चालीस-पचास की संख्या में आकर उसी जगह पर उनसे आ मिलते। उनके आते ही उनमें से प्रत्येक को एक घुड़सवार नौजवान बीच में ही रोक लेता और वे कहाँ से आये हैं, यह पूछकर उन्हें बुज़ुर्गों के पास ले जाता। रिवाज के मुताबिक़ नवागन्तुकों को पहले स्मृति भोज के मेज़बानों का अभिवादन करके, अपनी शुभकामनाएँ देने के बाद ही अपने निर्धारित तम्बुओं में जाकर आराम करना चाहिए।

आबाय और उसके चालीस नौजवान जेतिसू से आनेवाले सर्वाधिक विशिष्ट मेहमानों के स्वागतार्थ अतिथि ओतावों के पास तैयार खड़े थे।

सूर्यास्त तक कई हज़ार लोग आ चुके थे। जिगितेक, कोतिबक़ और बोकेंशी द्वारा स्थापित ओताव जल्दी ही भर गये लेकिन आबाय के मेहमान संध्या होने पर ही पधारे।

आकर्षक व्यक्तित्ववाले आक़साक़ाल, बोजेय के मामा अनगिनत संबंधियों के साथ आये थे। टीले के पास घोड़ों से उतरकर वे अपने मेज़बानों से गले मिले और एक ओर जा खड़े हुए। उनके इर्द-गिर्द बोजेय के ममहर के कुल मिलाकर कोई साठ निकटतम स्वजन थे। उनके पीछे शावक-चर्म के टोप लगाये नैमन क़बीले के लोगों की एक बड़ी भीड़-सी खड़ी थी।

इज़गुत्ति और सुयून्दिक़ सम्मानित मेहमानों को लेकर उनके ओतावों की ओर चल पड़े। बाक़ी लोग उनके पीछे-पीछे थे। उनका हार्दिक स्वागत किया गया और आबाय और उसके नौजवानों ने उन्हें अपने घोड़ों से उतरने में मदद की। फिर सुयून्दिक़ ने आबाय को आक़साक़ाल के समक्ष क़ोनानबाय के बेटे के रूप में परिचित कराया और आबाय ने सिर झुकाकर उनका स्वागत किया।

घोड़ों से उतरने से पहले ही बोजेय के स्वजन अपने लिए निर्धारित दसों ओतावों की भव्यता देखकर चकित रह गये थे। जिन लोगों का

स्वागत अन्य ओतावों में किया गया था, वे यह पूछने से ख़ुद को नहीं रोक पा रहे थे, "वे किसके ओताव हैं? वे किसके लिए लगाये गये हैं?"

बोजेय के वृद्ध मामा तथा अन्य बहुत से आक़साक़ालों की आगवानी कर आबाय उन्हें बीचवाले सर्वाधिक भव्य ओताव में ले गया। नौजवान अन्य मेहमानों का भी जोश के साथ स्वागत कर उन्हें उल्लासपूर्वक दूसरे ओतावों में ले गये। बोजेय के नैमन लोगों के स्वजन आगामी दिन की घुड़दौड़ के लिए एक काला और दो भूरे घोड़े भी साथ लाये थे। उनके अयाल और पूँछ की अच्छी तरह चोटी की हुई थी और सिर के बालों में पँख लगाये हुए थे। तीन फुर्तीले लड़के उन पर सवार थे और आबाय ने घुड़सवार तथा घोड़ों को अपने नौजवानों को देखभाल में सौंप दिया।

आनेवाले मेहमानों का ताँता लगा रहा और उनकी पोशाक में भेद करना या घिर आये अंधेरे में उनके क़बीलों की पहचान करना कठिन हो गया। कुछ काले, कुछ भूरे घोड़ों पर सवार थे और जब कभी रोशनी की कोई किरण उन पर पड़ती तभी उनके ज़ीन चाँदी-से चमक उठते। घुप्प अंधेरा होने तक दस में से छह ओताव भर चुके थे।

धीरे-धीरे कोलाहल थम गया और अन्तिम मेहमान सुबह तक आयेंगे, यह मानकर आबाय ने भोजन का आदेश दिया। उसी समय येर्बोल ने उसे रोक लिया:

"बहुत से लोग अभी-अभी आये है!"

आबाय और उसके नौजवान तत्क्षण ही उनका स्वागत करने बाहर निकल आये। वहाँ पास ही के सिबान क़बीले के मेहमानों की भीड़ खड़ी थी। आबाय उन्हें उनकी जगहों पर अन्दर ले गया और फिर तुरंत ही अपने आदमियों के साथ भोजन की व्यवस्था करने चला गया। क़िमिज़ के बाद चाय दी गयी, फिर गरमागरम गोश्त की रकाबियाँ आ गयीं। गोश्त की रकाबियाँ यहाँ घोड़ों पर लायी गयी थीं।

अपनी लम्बी याता की थकान से चूर बोजेय के मेहमान शीघ्र ही विश्राम करने लगे और आबाय सिबान के मेहमानों पर ध्यान देने आ गया। उनमें सबसे बुज़ुर्ग थे सुविख्यात, वाक्पटु आकतयलाक़ के सुपुत्र आक़िन क़ादिरबाय। यह वही क़ादिरबाय थे जिन्होंने अपनी जवानी में कविता और गीत प्रतियोगिता में प्रसिद्ध आक़िन सादिक़ को हराया था

श्रौर "बाल श्राक़िन" के रूप में नाम कमाया था। उनके बहुत से गीत सुविदित थे श्रौर श्राबाय जिसे उनमें से अधिकांश कंठस्थ थे, उन्हें अपने मेहमानों में पाकर हर्षित हो उठा था।

वृद्ध को बताया गया था कि जिन श्रोतावों में उसे श्रौर उसके साथियों को ठहराया गया था, वे क़ोनानबाय के थे। उसने मनपसन्द भोजन, क़ीमती तश्तरियों श्रौर मिठाइयों की प्रचुरता देखकर भी यही अन्दाज़ लगाया था। लेकिन अब उसे मालूम हुआ था, यह सारी व्यवस्था एक नौजवान ने, क़ोनानबाय के बेटे ने की है। जब श्राबाय वहाँ पहुँचा, वृद्ध श्राक़िन ने अत्यंत हार्दिकता से उसका स्वागत किया।

नौजवान को इशारे से अपने पास बैठाकर उसने अपने हाथों से उसे एक प्याला क़िमिज़ पेश किया। श्राबाय इस सफ़ेद दाढ़ीवाले वृद्ध से, उसकी निश्छल मैत्रीपूर्ण मुखाकृति से अत्यंत प्रभावित था। क़ादिरबाय ने उसके माता-पिता के स्वास्थ्य के बारे में पूछा श्रौर ख़ातिर-तवज्जह के लिए उसे धन्यवाद दिया।

श्राबाय ने कोई भी सवाल नहीं पूछा, सिर्फ़ क़ादिरबाय के सवालों का मुख़्तसर, संगत जवाब देता रहा। सम्मानित अतिथि स्पष्ट रूप से प्रसन्न था श्रौर उसे अपनी बातें कहने को बढ़ावा दे रहा था।

"बरलास-श्राक़िन ने," उसने कहना शुरू किया, "एक बार मुझे बताया था कि अभी-अभी स्कूल से लौटा कुनेकेन के एक बेटा है। अगर मुझे सही-सही याद है तो उसने कहा था, वह उलजान का बेटा है श्रौर उसका लालन-पालन ज़ेरे ने किया है। वह गीतों का बड़ा प्रेमी है। क्या वह नौजवान तुम्हीं हो?"

श्राबाय झेंपता हुश्रा मुस्कुरा पड़ा।

"बरलास-श्राक़िन एक बार हमारे यहाँ श्राये थे," क़ादिरबाय की श्रोर देखते हुए उसने जवाब दिया।

"तुम्हारे पिता गीतों के प्रति अपने प्रेम के कारण प्रसिद्ध नहीं," वृद्ध ने श्रागे कहा, "लेकिन, देखो, बुरा मत मानना। मैं उसी की उम्र का श्रादमी हूँ श्रौर खुलकर अपने मन की बातें कह सकता हूँ। मुझे बताश्रो, तुम्हें गीतों का शौक़ कैसे हुश्रा?"

श्राबाय जवाब देने ही वाला था — अल्फ़ाज़ उसकी ज़बान पर श्रा गये थे लेकिन मेज़बान के लिए ज़्यादा बोलना उचित न समझ या श्रद्धेय श्राक़-

साक़ाल को लम्बा-चौड़ा जवाब देना मेहमानों की नज़र में उद्दंडता न हो जाये, यह सोचकर वह हिचकिचा रहा था।

क़ादिरबाय की निगाहों से यह बात छुप न सकी।

"मैं देख रहा हूँ, तुम कुछ बोलना चाहते हो। बोल भी डालो," उसने उत्साहित किया।

"जैसी आपकी मर्ज़ी, क़ोदेके," आबाय ने अन्त में कहा। "मेरे शब्द यदि आपको असंगत लगें तो माफ़ कीजिएगा, लेकिन क्या कोई ऐसा आदमी ज़िन्दा है, हाँ दिल-दिमाग़ से बहरा हो तो और बात है, जो गीत से प्रेम नहीं करता? यक़ीनन मैं जानता हूँ, ऐसे भी गीत हैं जो मेरे पिता को प्रिय हैं। शायद आप सिर्फ़ अपने इस गीत के बारे में उनकी राय से परिचित हैं:

> ऐसा रण तुरंग अब तक अज्ञात था
> ऐसे सम्मान, ऐसी ख्याति बटोरनेवाला!"

आबाय शरारत से मुस्कुरा उठा, दूसरे चकित हो एक दूसरे की ओर देखने लगे। क़ादिरबाय ने हँसते हुए उनकी आशंकाएँ दूर कीं:

"या ख़ुदा! तुमने भी इस बारे में सुन रखा है?" क़ादिरबाय अपने साथियों की ओर मुख़ातिब हो गया। "यह सच है, एक बार मैंने सोल्ताबाय की अति प्रशंसा कर दी थी और जब कुनेकेन ने यह गीत सुना, उसने मुझे यह कहते हुए झिड़की दी, 'बेशक, सोल्ताबाय समृद्ध है, ताक़तवर है लेकिन तुम उसके सामने ख़ुद को इतना तुच्छ क्यों बनाते हो?' देखो, इस नौजवान ने मेरी कैसी अच्छी ख़बर ली है!" क़ादिरबाय जी खोलकर हँस पड़ा।

इस ओताव में बातचीत थमी नहीं और काफ़ी देर तक किसी को सोने की सुधि नहीं आयी। अन्ततोगत्वा, जब आबाय और उसके नौजवान मेहमानों के लिए बिस्तरे लगाकर, ओताव का झूलन नीचे गिराकर बाहर आये, पूर्व दिशा में मद्धिम रोशनी हो आयी थी और क़ाज़बाला की सुसुप्त दक्षिणी पहाड़ियाँ प्रकाशमान हो रही थीं। तारे फीके पड़ गये थे और भोर की मंद रोशनी में ऊँची-नीची पहाड़ियों और अभी तक अदृश्य निम्न-

वर्ती दर्रों व घाटियों ने जागकर पहरेदारी करती एकाकी चोटी को त्वरित आराम दिया।

रसोई ओतावों की ओर जाते हुए आबाय, येर्बोल और इज़गुत्ति ने धीमी आवाज़ में विचार-विनिमय किया:

"यह तो भोर हो गया! अब हम सो नही पायेंगे!"

"हाँ, हमें और भी काम निबटाने है!"

उन्होंने अगले दिन की तैयारी में लग जाने का फ़ैसला किया जो निस्सन्देह सबसे अधिक मुश्किल साबित होनेवाला था।

आबाय के मेहमान अपने ओतावों में दोपहर के भोजन तक ठहरे रहे। उस समय आबाय ने एक नयी युक्ति काम में लायी जिसे देखकर सब के सब – मेहमान, दर्शक तथा रसोई ओतावों में काम कर रहे लोग प्रसन्न हो उठे। भोजन लानेवाले नौजवान द्रुतगामी घोड़ों पर सवार थे, उनके ज़ीन रजत जड़ित थे। उनमें से हरेक के सिर पर एक सफ़ेद रेशमी रूमाल बँधा था और जब वे लचक के साथ अपनी भाप छोड़ती गोश्त की रकाबियाँ लेकर रसोई से मेहमानों के ओतावों की ओर सरपट घोड़ों पर भागते, उनके चाँदी जड़ित ज़ीन स्तेपियों में चमकते प्रतीत होते। बोजेय के स्वजन अपने मेज़बानों में कोई दोष नही ढूँढ़ सके; भोज उम्मीद से भी अधिक बढ़-चढ़कर रहा था।

भोजन ख़त्म होने पर अपने पन्द्रह नौजवानों के साथ एक पताका ऊँचे फहराये बायसाल पहाड़ी की चोटी पर जा चढ़ा। यह हर आदमी के लिए घोड़ों पर सवार हो, पीछे-पीछे आने का संकेत था। महान बायगा शुरू होनेवाला था: घुड़दौड़ भोज का मुख्य आकर्षण थी, उसके बाद कुश्ती प्रतियोगिताएँ होनेवाली थी। दौड़ों के लिए चुने घोड़े रैली मैदानों की ओर शान्तिपूर्वक, सुशोभित ढंग से आगे बढ़ गये, उनके अयालो और पूँछों की सावधानीपूर्वक चोटी की गयी थी। भीड़ में बहस-मुबाहसो का उत्सुकतापूर्ण कोलाहल मचा था।

कितने लोग दौड़ों में जा रहे है, यह देखने तक का अवसर आबाय के पास न था। वह औरों के साथ बाहर नही जा सकता था क्योंकि उसके दूरवर्ती मेहमान उस दिन शाम को नही जा सकते थे और उनके लिए रात का भोजन तैयार कराना ज़रूरी था। वह और इज़गुत्ति दोनों ज़ोरदार ढ़ंग से काम में लगे थे। नौजवान भी उनकी मदद कर रहे थे। उन्हें

बायगा देखने जाने की इजाजत नही दी गयी थी। सिर्फ येबोंल लालच नही रोक पाया।

"चाहे कुछ भी हो, मै तुम्हे जानकारी देता रहूँगा! वहाँ क्या हो रहा है, तुम्हे बताता रहूँगा!" घोडे को एड लगाते हुए उसने चीखकर कहा। समय-समय पर वह ताजा समाचार देने लौट आता। हालाँकि कुल मिलाकर कितने लोग आये थे, यह बताना तो मुश्किल था लेकिन कम से कम कई हज़ार तो होगे ही।

सकेत की प्रत्याशा मे आबाय के मेहमान अपने घोडो पर सवार हो चुके थे। आखिर बायसाल रैली का जोरदार नारा लगाते, झण्डे को ऊपर लहराते, सरपट काराशोकि की ओर चल पडा। वहाँ के लम्बे-चौडे मैदान दौडो के लिए सर्वथा उपयुक्त थे। सकेतक झण्डे आगे बढते ही सारे घुडसवार उसके पीछे-पीछे चल पडे। आबाय ने देखा, उनकी सख्या अनगिनत थी। श्रोतावो के बाहरवाली जगह से उलजान, आयगिज और उनके नौकर हैरत से घुडसवारो के अनन्त प्रवाह को देखते रहे।

लेकिन घुडसवारो के विशाल झुड का एक ही हिस्सा उन्हे दिखाई दे रहा था – उनकी सख्या इतनी थी कि दूसरे आँखो से ओझल हो गये थे। हवा से उडाये लिये जा रहे बादलो की तरह उनकी लहर पर लहर गुजरती जा रही थी। जिसे थोडा बहुत भी घोडा चढने आता था, वह घर से बाहर निकल आया था।

येबोंल ने खबर दी, दसो नौ उपहार-माला के लिए डेढ सौ घोडे प्रतियोगिता करनेवाले थे। पहली उपहार-माला का मुख्य पुरस्कार ऊँट था और दूसरी का उलजान द्वारा दिया गया चाँदी का साँचा। पहलवानो को नौ-नौ तरह के पुरस्कार मिलने थे।

दोपहर मे उलजान ने आबाय को बुलाकर बताया कि अगर मेहमान एक दिन और ठहर गये तो भोजन की कमी पड जायेगी। अत आबाय दौड देखने नही जा सका और उसने मिर्जाखाँ व इजगुत्ति को घर – कुदाय-बेर्दि के पास पाँच मोटे-ताजे दो-दो सालवाले घोडे तुरत माँग कर ले आने के लिए भेज दिया। उसने यह भी कहा कि दूसरे दिन किमिज की भी कमी हो सकती है। मेहमानो मे से अधिकाश शाम को जानेवाले थे लेकिन आबाय के मेहमान एक और दिन ठहरनेवाले थे। उसके लिए स्मृति समारोह दिन-रात चौकसी और कठिन कार्य का समय साबित हुआ था।

सूर्यास्त के समय मेहमान थके-प्यासे वापस ग्राये। पिछली शाम की ही तरह उनका स्वागत दोस्ताने, सहायक नौजवानो ने किया। ठडे किमिज से सब मेहमानो ने ग्रपनी प्यास बुझा ली, चाय पेश की गयी। दो-दो नौजवान बडे-बडे भाप छोडते समोवर ग्रन्दर ले ग्राये ग्रौर ग्रोताव तुरत ही उल्लासमय व ग्रारामदेह हो उठे। ग्राबाय द्वारा परोसे गये व्यजन पहलेवाले दिन से भी कही ग्रधिक मनपसन्द ग्रौर बहुल थे। ग्रधेरा घिर ग्राने पर बायदालि, बायसाल ग्रौर सुयून्दिक उसके मेहमानो मे ग्रा मिले। उलजान ग्रौर ग्राबाय ने उन्हे विशेष रूप से खुद ग्राकर यह देखने के लिए ग्रामत्रित किया था कि भोजन कितना समृद्ध तथा पूर्ण है ग्रौर इर्गिजबाय की मेहमाननवाजी कितनी हार्दिकता भरी है।

ग्राबाय उस रात भी एक झपकी तक नही ले सका—पहली रातो की तरह ही तीसरी रात भी उतनी ही कामकाजी ग्रौर परेशानियो से भरी थी।

दूसरे दिन ग्राबाय ने दिन का भोजन ग्राम रोज से पहले कराने का ग्रादेश दिया। भोजन खत्म होने के बाद बोजेय के मामा ने ग्राबाय को बुलाया, स्नेहपूर्वक उसे धन्यवाद दिया ग्रौर ग्रपनी हार्दिक दुग्राएँ दी।

पिछले दिनो मे ग्राबाय मे ग्राये परिवर्तनो से उलजान, इजगुत्ति ग्रौर येर्बोल चिन्तित थे। उसका चेहरा पीला ग्रौर मुरझा गया था मानो लम्बी बीमारी से उठा हो। न सो पाने के कारण उसकी ग्राँखे लाल हो गयी थी।

इजगुत्ति ग्रौर येर्बोल भी पूरी तरह थक गये थे ग्रौर तीनो ग्रपने चेहरो पर खुद ही मजाक किया करते।

"हमारी सूरत बीच तपती दोपहरी मे घुडदौड मे भेजी कराशा की बूढी घोडी-सी हो गयी है," येर्बोल ने हँसी की।

"मै जहाँ खडा हूँ, वही चारो खाने चित्त सो जाने को तैयार हूँ। इसके ग्रलावा मै कुछ नही सोच सकता," ग्राबाय ने हामी भरी।

लेकिन उसी समय उन्हे बायदालि ने बोजेय के ग्रोताव मे बुला भेजा। ग्रभी भी कुछ नेम बच रहे थे मातमी घोडो को जबह करना ग्रौर बोजेय के ग्रोताव के ग्राभूषणो को बाँटना था।

मृतक के निकटतम स्वजन इसमे भाग लेने से इनकार नही कर सकते थे। सो, बोजेय के मामा के नेतृत्व मे सारे तो।बिक्ति अन्तिम रस्मो के लिए तैयार हो गये। असख्य स्वजनो से घिरा बायदालि जब बोजेय के तम्बू के पास पहुँचा, साल भर मातम मनाती औरते उनसे मिलने बाहर आ गयी। फिर बायदालि ने काला-सफेद झडा उतारकर बायसाल के हाथो मे सौप दिया जिसने रिवाज के मुताबिक उसे ज़मीन पर पटककर उसका डडा तोड डाला। यह साल भर के मातम की समाप्ति का सकेत था।

बायदालि के सकेत पर सुयून्दिक के नेतृत्व मे कुछ लोग मातम के आभूषणो को हटाने के लिए ओताव के अन्दर चले गय। मातम खत्म होने का यह दूसरा सकेत था। बोजेय की बायबिशे और बेटियो ने लोगो की ओर पीठ फेरकर मातमी विलाप शुरू कर दिया। सुननेवाले चुपचाप रोते बैठे थे। बोजेय की मौत पर यह अन्तिम विलाप था। कुरान के अन्तिम पाठ के बाद आखिरी दुआएँ की गयी। फिर सब उठकर ओताव से बाहर चले गये।

मोटे और भडकीले हो गये दोनो मातमी घोडो को तम्बू के सामने लाया गया। आँखो मे आँसू भरे कुछ स्वजनो ने उन्हे जमीन पर गिरा दिया और तब बायदालि ने खुद अपने हाथो से उन्हे जबह किया।

तीनो ही – बायसाल जिसने मातमी झडे का डडा तोडा था, सुयून्दिक जिसने आभूषण उतारे थे और बायदालि जिसने घोडो को जबह किया था – बोजेय के सर्वाधिक पुराने और निकटतम मित्र रहे थे। अन्तत, आखिरी रस्मो का समापन भी उन्ही के हाथो हुआ।

आखिरी मातमी भोजन – जबह किये गये घोडो का गोश्त खाये बिना, किसी को जाने की इजाजत नही थी। आबाय के लिए रुका रहना कठिन हो रहा था।

मातमी ओताव मे आखिरी भोज समाप्त होने के बाद बुजुर्गों से विदा लेकर जब आबाय अपने आऊल को रवाना होनेवाला था, उसे बायसाल ने अपने पास बुला लिया और उसके ललाट से अपना कपोल चिपका लिया।

"मेरे बेटे, मै अब तक तुमसे बात करके अपने जजबात प्रकट नही कर पाया था लेकिन मुझे याद है करकरालीस्क मे एक बार तुम्हारे

व्यवहार से प्रभावित हो बोजेकेन ने तुम्हें अपनी दुआएँ दी थीं। क्या तुम्हें उसके शब्द याद है? उसे तुमसे बड़ी उम्मीद थी और इसी कारण उसने तुम्हें आशीर्वाद दिया था। मैं तब तुम्हारे साथ रुखाई से पेश आया था। लेकिन तब से मैं कई बार सुन चुका हूँ कि तुमने किस तरह न्याय की रक्षा के लिए बातें की हैं और इन पिछले कुछ दिनों में भी तुमने ख़ुद को बोजेकेन का सच्चा बिरादर साबित किया है। अपने बड़े-बूढ़े स्वजनों की उम्मीदों को सही साबित करने की कोशिश करो! मेरी आँखों की रोशनी, मुझे यक़ीन है, तुम ऐसा कर सकोगे। बस सिर्फ़ यह अभिशप्त जीवन तुम्हें ग़लतियाँ करने पर मजबूर न कर दे। तुम्हारा भविष्य तुम्हारे सामने है और तुम्हारी राह न्याय की है। ख़ुदा तुम्हें सफलता दे!" और बायसाल ने आबाय को आशीर्वाद दिया।

बायदालि, सुयून्दिक़ और क़ुलिनशक़ ने भी बायसाल का साथ दिया और अपने आशीर्वाद दिये। आबाय ने आक़साक़ालों को उनकी मैत्रीपूर्ण शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद दिया और उनसे विदा ली।

वह येर्बोल के साथ घोड़ों पर रवाना हो गया – उलजान उनसे पहले ही अपनी गाड़ी में रवाना हो चुकी थी। अपने घोड़ों पर थकान के कारण झूलते हुए आबाय और येर्बोल कभी धीमे से, कभी सरपट चाल से आख़िर बोताकान पहुँच गये। उलजान पहले ही अतिथि ओताव और उनके लिए बिस्तर तैयार करने का आदेश दे चुकी थी।

"सोना, सोना! .. आपा, मैं सोना चाहता हूँ!"

उलजान दोनों दोस्तों को क़िमिज़ के प्याले दे, उन्हें अतिथि ओताव में ले गयी और मातृत्वपूर्ण लगाव के साथ बिस्तरे पर सुला दिया।

तकिये पर सिर रखने से पहले ही उनकी नाक बजने लगी थी और दूसरे दिन दोपहर से पहले वे नहीं जाग पाये। क़िमिज़ पीकर तरोताज़ा हो, वे फिर लेट गये और शाम तक सोये रहे। झुटपुटा होने पर उनकी नीन्द खुली लेकिन कुछ देर तक दोनों दोस्त खुमारी से लेटे रहने के बाद गहरी नीन्द में डूब गये। तीसरे दिन कहीं दोपहर में उन्हें ताज़गी महसूस हुई।

आबाय को इसका तनिक गुमान न था कि आम बातचीत और चर्चा ने उसे दूर-दूर तक प्रसिद्ध बना दिया था। वह एक अत्यन्त प्रसिद्ध और आदरणीय जिगित हो गया था।

३

सारा जयलाव सिर्फ़ बोजेय के स्मृति-भोज के बारे में अपने अनुभवों की चर्चा में ही लगा था। इसके आयोजक, असंख्य सहभागी और वे लोग भी जो अपने घरों में ही रहे थे और इसके बारे में सिर्फ़ सुनी-सुनाई बातें ही जानते थे, बस इसी की चर्चा कर रहे थे। तोबिक्ति के आऊलों को पार करके इसकी ख़बरें न सिर्फ़ दूर-दूर स्थानों पर रहनेवाले स्वजनों तक ही बल्कि दूसरे क़बीलों के सुदूरतम आऊलों तक जा पहुँची।

यह उस पूरे क्षेत्र में एक अद्वितीय घटना बन गयी थी। मेज़बानों की सज्जनता और मित्रता तो वास्तव में कई पीढ़ियों के लिए आदर्श बन गयी थी।

बातूनी बुढ़ियों, उत्सुक, उत्तेजित नौजवानों, औरतों और बच्चों – सब की ज़बान पर इसी की चर्चा थी। इससे सम्बन्धित कथाएँ, कहानियाँ इतनी थी कि पूरी गर्मियों, पतझड़ और पूरे जाड़े भर चलती रहीं। भला कौन ऐसा होगा जो पहलवानों में चैम्पियनों, बायगा के विजेता, घोड़ों के नाम, कहकहे पैदा करनेवाले लतीफ़ों और समारोहों के दौरान अपने मज़ाक़ों व वाक्-चातुर्य से मशहूर हो जानेवालों को भूल पायेगा।

इस समारोह के बाद तोबिक्ति के माँ-बाप अपने नवजात बच्चों को बोजेय का नाम देकर हर्ष महसूस करेंगे। समय बीतने के साथ स्मृतिभोज की प्रसिद्धि इतनी हो जायेगी कि लोग बच्चों की उम्र इसकी तारीख़ से हिसाब लगाकर बताया करेंगे – सिर्फ़ उनकी ही नहीं जो उस साल पैदा हुए थे, बल्कि लोग कहा करेंगे, "उसका जन्म बोजेय के भोज के पाँच साल पहले हुआ था" या "उसका जन्म बोजेय के भोज के दो साल बाद हुआ था।" सगाई, दूल्हे के ससुराल-गमन की रस्मों, विवाहों, सुन्नतों, मौतों की तारीख़ों की गणना बोजेय के भोज के साल से की जायेगी। आगे के बायगा में जीतनेवाले सर्वश्रेष्ठ धावक घोड़ों के बारे में इस तरह कहा जायेगा, "बोजेय के भोज के समय यह दो साल का था" या "वह उस समय चार साल का था।" मशहूर स्मृति-भोज हमेशा ही स्मरणीय तारीख़ का और कभी-कभी तो एक युग की शुरुआत का काम करते थे और पीढ़ियों तक लोगों की स्मृति में बने रहते थे। न जाने कब, कितना

अर्सा पहले अब्लाय और बोपा की स्मृति मे भोज हुए थे लेकिन लोग आज तक उनकी याद करते थे।

स्मृति भोज की ख्याति चिगीज भर मे, विस्तृत जयलाव, घाटियो, तराइयो और दर्रो के पार तक फैल गयी।

सज्जनता व मेहमाननवाजी, समृद्ध व्यजनो और मेहमानो के प्रति समर्पित लगन के कारण मशहूर हुए लोगो के नाम आम प्रशसा के साथ-साथ सब की जबान पर थे। उन्हे अक्षय कीर्त्ति प्राप्त हो गयी थी।

भोज के आयोजको—बायदालि, बायसाल और सुयून्दिक को विशेष ख्याति प्राप्त हुई थी लेकिन उनसे भी अधिक प्रसिद्धि तरुण आबाय को मिली थी। उसके बारे मे कहानियॉ, यहॉ-वहॉ, सब जगह कही-सुनी जा रही थी।

कहनेवाले सबसे पहले बताते, किस तरह आबाय ने कोनानबाय के समक्ष प्रस्ताव रखा, फिर किस तरह बहादुरी के साथ अपने निष्ठुर पिता को, जिसका हृदय कभी नही पिघलता, बहादुरी के साथ लथाडा। आबाय के ओताव मे मेहमानो की जितनी मैत्रीपूर्ण आवभगत और सौजन्यपूर्ण तवज्जह की गयी, वह हजारो लोगो के जलसे के सामने सबसे बढकर और निस्सन्देह सबके लिए उदाहरणस्वरूप थी। आबाय ने अपने प्रत्येक मेहमान का स्नेह पा लिया था और उसे सबने अपनी दुआएँ दी थी। जन-कल्याण की भावना से ओत-प्रोत वह एक शानदार नौजवान था।

जेरे और उलजान के बारे मे बाते करनेवाले भी बहुत से वृद्ध लोग थे। वे कहते, "वृद्ध जेरे एक बुद्धिमान मॉ है जिसने अपनी जिन्दगी के आखिरी साल लोगो की भलाई मे अर्पित कर दिये है और हर किसी की सुख-शान्ति की कामना करती है। उसी ने अपने पोते का पालन-पोषण किया है, बडी उम्मीद से बच्चे की तरह अपने सीने से लगाया—और उसकी उम्मीदे पूरी हुई है!" उलजान की प्रशसा मे भी कोई कसर न थी जो अपने बेटे की सहायता करने भोज मे गयी थी।

आबाय अभी गहरी नीन्द सोया ही था, जब प्रशसा की लहरे मुख्य ओताव मे पहुँची। जिगितेक, कोतिबक और बोकेशी के आऊलो से आनेवाले दूसरे कबीलो के लोग भी अपने साथ खबरे लाये। बकानास नदी के साथ-साथ कोक्शे का चक्कर लगाकर लौटे काराताय ने बताया कि खबरे वहॉ भी लोगो को मालूम है। यह खबरे बकानास की निम्नवर्ती विस्तृ-

तियों में संचरण कर रहे केरेय लोगों और एकदम ही भिन्न इलाक़े बाय-कोश्क़ार तक पहुँच गयी थी।

तीसरे दिन आबाय और येर्बोल आख़िर उठे, नदी में स्नान करके तरोताज़ा हुए और भोजन करने लौट आये।

ज़ेरे ने आबाय को अपनी बग़ल में बैठाकर ख़ुद अपने हाथों से चाय पेश की।

"मेरे नन्हें लाड़ले," उसके कन्धे पर थपकियाँ देते हुए उसने कहा।

उलजान ने उसके सामने भेड़ का उबला हुआ सिर और रान* लाकर परोसा।

"तुम्हारे पूर्ण वयस्क नौजवान होने की ख़ुशी में तुम्हारी माताओं ने एक पूरा भेड़ उबाला है," उसने कहा।

"ऐसा क्यों, आपा?" आबाय चकित था।

"सोये रहने के कारण तुम दोनों को कुछ भी नहीं मालूम! हर जगह लोग तुम्हारी तारीफ़ कर रहे हैं और कह रहे हैं, तुम वयस्क हो गये हो। हमारे स्वजन तुमसे प्रसन्न हैं," उसने समझाया।

"लेकिन आख़िर क्यों? लोग सोचते हैं, मैंने कोई पहाड़ उलट दिया है! सच तो यह है, बेचारे मेमने को काटने के लिए तुम्हें कोई बहाना चाहिए था! फिर ठीक है, आओ येर्बोल, हम खायें!" हँसते हुए आबाय ने गोश्त को काटना शुरू किया।

पाँच दिन बीत गये। येर्बोल अपने आऊल लौट गया था लेकिन सहसा एक दिन झाग-झाग हुए घोड़े को दौड़ाते फिर आ पहुँचा। आबाय का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। बहुत समय से उसके दोस्त ने उसे तोग़जान के बारे में कुछ भी नहीं बताया था। तेज़ी से उसकी ओर आकर येर्बोल ने विनोदपूर्वक आबाय के सिर से उसका टोप उछाल दिया।

"सुयूंशि!" उसने ज़ोर से कहा।

आगे एक भी शब्द कहे बिना दोनों एक-दूसरे की बात समझ गये।

"क्या सुनहरा मौक़ा हाथ लगा है," येर्बोल ने कहा। "सुयून्दिक़ का छोटा बेटा आदिलबेक अभी-अभी अपनी मँगेतर के यहाँ रवाना हुआ

---

* सिर और रान – रिवाज के अनुसार भेड़ का सिर सबसे बड़े को परोसा जाता है। सं०

है। सारे मर्द उसके साथ गये हैं। तुम जानते ही हो, काफ़ी समय से मैं तोग़जान या क़ाराशाश से नहीं मिल पाया था–किसी कारणवश ग्रादिलबेक को मुझ पर सन्देह हो गया था। लेकिन ग्राज सारी बातों पर मैंने जेंगे से बातचीत की है। तोग़जान तुम्हारे लिए तरस रही है ग्रौर क़ाराशाश का कहना है, वह प्राय: तुम्हारे बारे में बातें करती है। स्मृतिभोज के बाद से हर कोई तुम्हारी प्रशंसा कर रहा है–हर जगह तुम्हारी ही चर्चा है। जेंगे ग्रौर तोग़जान दोनों का यही कहना है: ग्राबाय का मुक़ाबला करनेवाला कोई भी दूसरा नौजवान यहाँ नहीं। ग्रब तय कर लो! ग्राख़िर ग्रपना मुखड़ा दिखा ही दो! इसी कारण मैं ग्राया हूँ। बाक़ी बातें हम बाद में करेंगे–जल्दी घोड़ा कसो ग्रौर चल पड़ो!"

ग्राबाय का चेहरा ख़ुशी से दमक उठा ग्रौर वे शीघ्र ही गहन होते धुँधलके में बोकेंशी के जयलाव की ग्रोर रवाना हो गये।

ग्राबाय ग्रपने सुनहले सफ़ेद ग्रयालवाले क़दमबाज़ ग्रौर येर्बोल एक हल्के भूरे घोड़े पर सवार था। दोनों ने बिना ग्रास्तीनवाले भूरे चोग़े ग्रौर टोप पहन रखे थे। उनके घोड़े ग्रौर कपड़े ग्रंधेरे में एकाकार हो गये। उन ग्राऊलों से बचने के लिए जहाँ दोनों नौजवानों की उपस्थिति सन्देहास्पद हो सकती थी, उन्होंने लम्बा चक्करदार रास्ता चुना।

स्तेपियाँ ग्रौर चिंगीज़ पहाड़ियाँ इस तरह कुहरे में सोयी थीं मानो नीले रेशम में लिपटी हों। सारा संसार शान्त, उदास था ग्रौर राह तय करते एकाकी चाँद को देखकर ग्राबाय की ठंडी ग्राह निकल ग्रायी। तोग़जान का ख्याल ग्राते ही उसमें ग्रसह्य लालसा भर उठी।

ग्रब वह पूर्ण वयस्क नौजवान था लेकिन ज़िन्दगी ने उसके यौवन का प्रभात तोग़जान के सौन्दर्य ग्रौर मसृणता से किया तो उसके साथ ही बीच में पहाड़ भी खड़े कर दिये–ग्रपार ग्रवरोध। बेहिचक उनकी ग्रात्माएँ एक-दूसरे में लीन हो चुकी थीं ग्रौर उन्होंने विश्वासपूर्वक ग्रपने हाथ मिला लिये थे लेकिन उनके सपने कभी साकार नहीं होनेवाले थे। क्या उसे बेड़ियों में जकड़ नहीं दिया गया ग्रौर उसे भी तो? सारी बाधाग्रों के बावजूद वे बेरोक एक-दूसरे से खिंचे चले गये लेकिन ग्रपने बंधनों में जकड़नेवालों को भूलना उनके लिए ग्रसंभव था ग्रौर हसरतों की हर लहर दर्द, पछतावे ग्रौर उदासी को ताज़ा कर देती।

ग्रपनी दुल्हन के यहाँ से लौटकर ग्राने के बाद से ग्राबाय तोग़जान तक

अपना सलाम भेजने में सिर्फ़ एक बार सफल हो पाया था। उसने उससे मिलने की प्रार्थना की थी लेकिन उसने काँपते हुए अपना एतराज़ ज़ाहिर किया था।

"क्यों? वह मुझसे क्यों मिलना चाहता है? क्या वह समझता नहीं?" उसे कितनी चोट पहुँची है, उसके शब्द बता रहे थे।

वह कोई औचित्य नहीं ढूँढ़ पा रही थी। आबाय को दिल्दा से कोई प्यार नहीं, यह तो सच था लेकिन आख़िर वह उसके यहाँ से होनी के सामने हार मानकर लौटा तो था। तोज़जान के भी एक मंगेतर था जिसकी उसे तनिक परवाह न थी। जब से वह आबाय से मिली थी, उसके सारे ख्याल उसने अपने दिमाग़ से निकाल दिये थे। उस अजनबी के बारे में सोचने भर से उसका दिल बैठ जाता। लेकिन आबाय तो अपनी दुल्हन से मिल भी चुका था! उसने एक ऐसी सीमा पार कर ली थी जो उन्हें हमेशा-हमेशा के लिए अलग कर देनेवाली थी। उन दिनों वह कितना रोयी-तड़पी थी!

अपने घोड़े आगे बढ़ाते आबाय और येर्बोल लोगों के सोने से एक घण्टा पहले बोकेंशी के जयलाव में पहुँचे। ख़ुद को बतौर मेहमान पेश करने का समय तो कब का बीत चुका था।

घास का विस्तृत मैदान दोनों ओर से पहाड़ियों से घिरा था। जब वे पश्चिमी ढलानों के पास पहुँचे, आबाय को सहसा दूर से आती गाने की आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ काफ़ी स्पष्ट थी–यह एक लम्बा, सुमधुर समूहगान था, मवेशियों की पहरेदारी करती औरतों के गीत जैसा। नौ-जवान धीरे-धीरे अपने घोड़ों को नीचे चरागाहों की ओर ले गये। हरित मैदान में ओतावों के झुंड और भेड़ों के ऊँघते ढोर धब्बों की तरह दिखाई दे रहे थे। बत्तियाँ गुल हो चुकी थी और तम्बुओं के सफ़ेद गुम्बद किसी निर्जन द्वीप में असंख्य घोंसलों में पाँच या छह या कहीं-कहीं दस-दस की संख्या में पड़े बत्तख़ या हंसों के अण्डों की तरह नज़र में आ रहे थे।

गीत सो रहे आऊलों के ऊपर तरंगायित होता रात की कुहा में लीन हो जाता। घुड़सवारों के नज़दीक पहुँचने के साथ आवाज़ साफ़ होती गयी। घाटी के बीच बहते सोते के किनारों पर झाड़ियों की पाँत लगी थी। आबाय और येर्बोल सोते के निचले हिस्से को अपने पीछे छोड़ आगे बढ़ चले।

येर्बोल को अब यकीन हो गया था, गाने की आवाज़ सुयून्दिक के आऊल से आ रही है। यह ठीक उसके अपने आऊल के सामने था जिसका मतलब था, उन्हे उस जगह से गुजरकर जाना पडेगा। ऐसी जगह पर पहुँचकर जहाँ सोते को पैदल पार किया जा सकता था, वे दूसरे किनारे पर जा पहुँचे और सघन गुल्मो के बीच आगे बढते रहे।

सामने, मैदान के पार सुयून्दिक का आऊल दिखाई दे रहा था। अब आवाज बहुत करीब से आ रही थी और उन्होने धुन पहचान ली – यह "रणतुरग" शीर्षक गीत था जिसे आबाय और येर्बोल दिल्दा के आऊल से लाये थे। निश्चित रूप से यहाँवालो ने भी उसे अपना लिया होगा, हालाँकि अपनी कोमल आवाज मे जिस लय से लडकियाँ गा रही थी, उसमे कुछ अन्तर पड गया था।

"वे बस्तनगि * मना रही है," येर्बोल ने तुरत अनुमान लगाया। "देखो! वे रहे झूले।" उसने घोडे को लगाम दी। "आओ, हम उनके पास चलते है!"

आबाय हिचकिचाया।

"क्या ख्याल है तुम्हारा, हमे जाना चाहिए?" उसने पूछा।

"हम किसी खास मकसद से आये है, इसका कभी वे अनुमान भी नही कर पायेगी," येर्बोल ने उसे पुन आश्वस्त किया। "मैं कोई बहाना ढूँढ निकालूँगा। आओ, चले!" उसने अपना घोडा आगे बढाया।

आबाय पूरी तरह आश्वस्त नही हुआ था लेकिन अपने मित्र की निष्क-पटता पर भरोसा कर पीछे-पीछे चल पडा।

आऊल के पासवाले मैदान के झूलो को नौजवानो ने घेर रखा था लडकियाँ घर मे बनाये रेशमी टोप और रेशम व मखमल के बिना आ-स्तीनोवाले चोगे पहने थी और नौजवानो मे से कुछ ने कधो पर झूलते गद्देदार जैकिट पहन रखे थे। लडकियो के बालो मे गुँथे छल्लो से निकलती हल्की, मधुर आवाज हवा मे भरी थी। फूलदार रूमाल लगाये जवान औरते बारी-बारी से लगातार हँसे जा रही थी। नौजवान तो बहुत थोडे

---

* बस्तनगि – परिवार के किसी सदस्य के यात्रा पर जाने से पहले नौज-वान शाम के समय बाहर जाकर क्रीडा व मनोरजन करते है। – स०

से थे, लेकिन शोर मचाते बच्चों का एक बड़ा झुण्ड वहाँ था। एक झूले पर पेंगे खाती दो लड़कियाँ "रणतुरंग" गीत गा रही थीं।

एक कुंज से निकलकर आबाध और यर्बोल तेज़ी से अपने घोड़ों को दौड़ाते झूलों की ओर बढ़ गये। जब वे लगभग वहाँ पहुँच ही चुके थे, लड़कियों की नजर उन पर पड़ी।

"सदा सुख-मौज रहे।" अभिवादन की आवाज़ आयी।

लड़कियाँ देखने को पलट पड़ी, खेल बन्दकर वे नौजवानों के पास जा पहुँची। उनमें से एक असिलबेक की बीवी क़ाराशाश थी।

येर्बोल को तुरंत पहचान लिया गया।

"येर्बोल! क्यों, यह येर्बोल ही है!"

"तुम कहाँ रहे?" औरतों ने पूछा।

फिर क़ाराशाश ने आबाय को पहचान लिया ।

"आबाय!" वह ख़ुशी से चीख़ पड़ी।

आबाय का नाम सुनकर नौजवान लोग झूलों से उतर पड़े और गाना बन्द हो गया।

तोग़जान, जिसकी झलक आबाय को बहुत पहले मिल चुकी थी, अपनी सहेली कोरिमबाला के साथ वहाँ आयी। दूसरों के सामने सलाम-बंदगी करने में आबाय और तोग़जान दोनों लजा रहे थे लेकिन कोरिमबाला तनिक भी परेशान नहीं थी। अपने कान की बालियों को चमकाते हुए उसने उल्लास भरी स्पष्ट आवाज़ में आबाय का अभिवादन किया।

"तुम स्वांग के चरम पर आये हो तो इससे अलग-थलग मत रहो," उसने अनुरोध किया। "घोड़ों से उतरकर झूलों में हमारा साथ दो।"

"उतर आओ," क़ाराशाश ने मुस्कुराते हुए प्रार्थना की।

आबाय और येर्बोल अब भी झिझक रहे थे और किसी भी तरह का सन्देह न हो, येर्बोल ने ज़ोर से कहा:

"बकानास के किनारे संचरण कर रहे कोक्शे के आऊलों को हम जा रहे थे लेकिन अब देर हो गयी है, इस लिए हमने अपने आऊल में रात बिताने का फ़ैसला किया है।"

"अच्छी बात है। तो हम सब मिलकर मौज मनायेंगे। हमारे आऊल में रात बिताओ! घोड़ों से उतरो!" चारों ओर से युवा औरतों ने उनसे अनुरोध किया।

"घोड़ो को यहाँ से कही ओर ले जाओ और जल्दी से वापस लौट आओ," काराशाश ने दृढता से कहा।

"मै सच मे नही जानता . . . " येर्बोल ने कहना शुरू किया लेकिन कोरिमबाला ने बीच मे ही उसकी बात काट दी:

"आबाय, क्या तुम अभी हाल मे ही अपनी दुल्हन के यहाँ से नही लौटकर आये हो? मेहरबानी करके हमे कुछ नये गीत सिखा दो!"

उसके सुझाव पर चारो ओर से ठहाके पड गये।

सिर्फ तोगजान नही हँस सकी। आबाय को चमकती आँखो से देखती, वह निस्तब्ध-सी खड़ी रही। उसने बिना आस्तीनवाला एक झीना चोगा पहन रखा था जिसके नीचे से काली बनियान और सफेद कमीज दिखाई दे रही थी। उसके शावक-चर्मवाले टोप के ऊपर रुपहले रेशम का चूडा लगा था। उसका चेहरा कितना क्षीण पड गया है, यह चाँदनी मे भी दिखाई दे जाता। चाँदी-जडित घोड़े पर सवार, इतने सुन्दर व नयनाभिराम रूप से सुसज्जित आबाय को इस तरह अचानक देखकर उसे लगा, उसके हृदय को वह आज भी उतना ही प्रिय लग रहा था जितना पहले।

तुरंत लौट आने का वायदा कर दोनो दोस्त रवाना हो गये। बेसब्री से इधर-उधर कुदान भरता आबाय का सफ़ेद अयालवाला कदमबाज घोडा तेज़ी से दुगामा चाल चल पडा। चाँदनी मे जीन व लगाम मे जडित रजत मद्धिम-मद्धिम दमकते हुए अन्धेरे मे लीन हो गया। नीली रोशनी मे घोड़े की चकाचक सफेद पूँछ पल भर के लिए रजत-प्रपात-सी लगी और फिर घुडसवार जा चुके थे। झूले पर झुकी, तोगजान वहाँ खडी रही।

काराशाश ने लडकी के चेहरे पर आये परिवर्तन को तुरंत भाँप लिया और दूसरो की नजर न पडे, इस लिए उसे अपनी बाँहो मे भर लिया। बहुत-सी सहेलियो को आते देख उसने तोगजान से रात के भोजन के बारे मे बाते करने का बहाना किया और उसके कान मे फुसफुसाया:

"अच्छा हो तुम कोई गीत गाना शुरू कर दो, नही तो दूसरी लडकियाँ भाँप लेगी . . सावधान रहो।"

कोरिमबाला दौड़कर आयी और तोगजान का हाथ पकड़कर झूले पर खीच लिया।

"तो यह आबाय है? इसे मैने पहले कभी नही देखा। उसके आने

से मै खुश हुई हूँ। मै उसे अपने नये स्वजनो के यहाँ सीखे गीत सुनाने कहूँगी और सारे गीत सीख लूँगी, क्यो?"

तोगजान ने कोई जवाब नही दिया और कोरिमबाला ने मजाक उडाते हुए पूछा

"वह कोई आकशाश नही, क्या वह है? फिर हम उससे क्यो लजाये? तुम वह कहावत जानती हो: जो सोया, सो खोया।' आबाय कहाँ है? मै उसे अभी गीत गाने पर मजबूर कर दूँगी!"

शीघ्र ही आबाय और येर्बोल आ पहुँचे।

येर्बोल ने आते ही खेलो की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली और अपनी सुविधा के मुताबिक इसे पुन: व्यवस्थित किया। काराशाश की मदद से उसने आबाय को कोरिमबाला के साथ एक झूले पर बैठाया।

लडकी के साथ झूले पर बैठने के बाद किसी नौजवान के लिए गाना जरूरी था, यही रिवाज था और कोरिमबाला ने आबाय से "रणतुरग" गीत गाने का अनुरोध किया। उसने भी साथ दिया लेकिन तुरत ही स्वर और यहाँ तक कि शब्दो को भी इधर-उधर मिला दिया। इस पर तुरत ही प्रतिक्रिया हुई।

"आबाय एकदम ही अलग ढग से गा रहा है!"

"कोरिमबाला, तुम गड़बड झाला कर रही हो!"
"पहले स्वर जान लो, फिर उसके साथ गाओ!"

लेकिन कोरिमबाला तनिक भी हतप्रभ नही हुई।

"तो फिर तोगजान को गाने दो!" उसने मुस्कुराते हुए उलटकर कहा और जब तक तोगजान यह सब समझ पाती, उसे कोरिमबाला ने पकड़कर अपनी जगह पर बैठा दिया था। फिर झूले को दूसरो की मदद से जोरो से धक्का लगा दिया।

झूला जितना ऊँचा जा सकता था, जा पहुँचा और आबाय ने गाना शुरू कर दिया। पहले दो बदो को ध्यान से सुनने के बाद तोगजान ने अपने आऊल मे बिगाड़ डाले गये स्वरो को ठीककर, साथ देना शुरू किया।

"बेहतर है!"

"उसने तुरंत स्वर पकड़ लिया।"

"कुछ और गाओ!" लड़कियाँ चीख़ पड़ीं।

पल-पल भर के लिए जब-जब चाँद की रोशनी तोग़जान के चेहरे पर पड़ती, आबाय की आँखें प्यार से उसे चूम लेतीं। उसके गालों की हल्की लाली उसके दिल के राज़ खोल रही थी और जब-जब झूला ऊपर जाता, ऐसा प्रतीत होता जैसे तोग़जान का मन ख़ुद पंख लगाये अपने प्रियतम से मिलने उड़ा चला आ रहा हो और बार-बार शाश्वत लय से कह रहा हो: "मैं सदा-सर्वदा तुम्हारे साथ हूँ! कौन हमें अलग-अलग कर पायेगा?" गीत ने उन्हें आलिंगन से भी अधिक एक-दूसरे से जोड़ दिया था—यह स्वयं उल्लास का गीत था—दो दिलों के एक होने का विजय गीत था। "हमें देखो! और ज़रा हमारी निंदा की हिमाक़त तो करो!" गीत में कहा गया था। यह उन सब के लिए एक चुनौती थी जो उन्हें देख रहे थे—सितारे, चमकता चाँद और ख़ुद यह सारा जहान।

तोग़जान की आवाज़ दृढ़ता से, दुर्निवार प्रवाहित हो रही थी और उसके चेहरे पर एक पवित्र ख़ुशी की चमक थी। आबाय पर से एक बार भी अपनी आँखें हटाये बिना भावना की कोमलता और पवित्रता बिखेरती, अपने प्रियतम को दुआ देती, मुस्कुरा रही थी, उसके प्रियतम ने उसे उदासी से उबार लिया था।

आबाय ने पहले तराने में अपने दिल के सारे जज़बात उँड़ेल दिये। फिर सप्राण, सबल और स्पष्ट शब्द—गीत के निर्मल प्रवाह में एक आह्लादमय स्रोत की तरह उन्मुक्त होने लगे। "बहुत दिनों से दिल की गहराइयों में उसने एक गुपचुप बात छुपा रखी थी—वह अपने मित्र के लिए लालायित थी। क्या अब वह उसकी मलामत छोड़ देगी? दृढ़ भावना, उल्लास से प्रमुदित वह लौट आया है—उसने अपने सारे ख़्याल, सारी ख़ुशी और याचनाएँ, उसके हाथों में दे दी हैं। अब वह उसे क्या कहेगी? अगर वह उसे निर्ममता से भगा देती है तो फिर दया कहाँ मिलेगी, न्याय कहाँ मिलेगा? क्या वह उसकी उम्मीदों के नाज़ुक धागे को तोड़ देगी? क्या उसका प्रियतम इतना बड़ा अपराधी है, इतनी बुरी तरह सज़ा का भागी है?"

गीत आबाय के गुप्त भावों से भरा था। उसके सुर में सुर मिलाते हुए, इन नवजात, सद्यः प्रसूत शब्दों को सुनकर तोग़जान को सिहरन हो

आयी। वह उन शब्दों का अभिप्राय अच्छी तरह समझ गयी थी और सिर झुकाकर उसने गाना बन्द कर दिया था।

आबाय अकेला गाता रहा। स्पन्दित कर देनेवाले "सफ़ेद भूर्ज" के चार बंद गाने के बाद कोमल निम्न स्वर के साथ उसने गीत समाप्त कर दिया। कवि की ललक और प्रेमी की उदासीनता के साथ आबाय ने अपने दिल के सारे राज़ उँडेलकर रख दिये थे। येर्बोल अपने मित्र को नहीं पहचान पा रहा था – उसका मित्र तो एकदम ही बदल गया था। वह उसे अति विशाल, शक्तिशाली डैनों पर आकाश की ओर उड़ान भरता प्रतीत हो रहा था।

गीत ख़त्म हो गया था, आबाय झूले से उतर आया। क़ाराशाश ने उसे बधाई दी लेकिन आबाय बस मुस्कुराकर रह गया। क़ाराशाश के शब्द दूर-दूर उड़ते उसके ख़्यालों को नहीं भेद सके।

झूले के इर्द-गिर्द मनोरंजन होता रहा। येर्बोल भी कुछ नये खेलों के बारे में सोच रहा था: आकसुयक – पाँसा फेंकना और फिर सेरेक कुलाक – भेड़िया और मेमना। मेमनों को उठा ले जानेवाले भेड़िये के रूप में उसने ख़ुद को पेश किया। लड़कियों से हँस-बोल रहा आबाय भी मेमना बनने को राज़ी हो गया।

येर्बोल धूर्त भेड़िया साबित हुआ। दो या तीन लड़कियों को उठा ले जाने के बाद उसने आबाय को गिरफ्त में ले लिया और अपने शिकार को ले भागते हुए उसने बुदबुदाकर कहा:

"घनी झाड़ी में छुप जाओ और मेरी प्रतीक्षा करो। मैं जाकर तोग़जान को चुरा लाऊँगा..."

तोग़जान के अपहरण की ज़्यादा प्रतीक्षा आबाय को नहीं करनी पड़ी। येर्बोल ने उसे तुरंत ही जा पकड़ा था लेकिन इस बार उसे नाकों चने चबाने पड़े। ज़ोर-जोर से चीख़ते हुए कोरिमबाला के नेतृत्व में पीछा करने-वालों की एक भीड़ ने उस पर धावा बोल दिया। तो भी चतुराई से येर्बोल तोग़जान को ले भागा। आबाय के पासवाली जगह पर उसने उसे नीचे उतार दिया और कुछ बुदबुदाकर अकेले दौड़ता हुआ वापस आ गया।

सहस्रों-सहस्र रुपहले धब्बों के रूप में झाड़ियों से गुज़रकर चाँदनी आ रही थी। आबाय महसूस ही नहीं कर सका, वह तोग़जान तक कैसे जा पहुँचा।

लड़की रोती हुई उसके बाँहो में जा गिरी। उसके कन्धे किसी अव्याख्येय भय से काँप रहे थे।

"अपने आँसू पोंछ डालो, तोग़जान," आबाय ने विनती की। उसने उसे चूमकर अपने सीने से लगा लिया।

तोग़जान ने अपनी आँखें उसकी ओर उठायी:

"मुझे कस के पकड़ लो... मैं इतनी अकेली..."

"तोग़जान! तुम कहाँ हो! मैं भेड़िये को तुम्हें नही हड़प करने दूँगा! लौट आओ!" कोरिमबाला की स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी।

आबाय ने अपने होंठ उसके विह्वल मुखड़े से सटा दिये। कोरिमबोला की हँसी की आवाज़ क़रीब आती सुनाई दे रही थी।

"कल मेरी प्रतीक्षा करना..." अपना टोप ठीक करते हुए उसने फुसफुसाकर कहा।

पत्तों से झर-झरकर आती चाँदनी तोग़जान की आँखों और उसकी बरौनियों पर डोलते अश्रुकणों में झलक रही थी। लेकिन जब कोरिमबाला उनके पास पहुँची, दोनों ने भावावेश के एक भी चिह्न के बिना शान्ति से उसकी ओर देखा। नाज़ुक और ख़ुशमिज़ाज, टोप टेढ़ा किये, कोरिमबाला ने शरारत भरी मुस्कान बिखेरी।

"अच्छा, तो तुम यहाँ हो! मुझे डर था, मेरे मेमने को भेड़िया खा जायेगा लेकिन लगता है, दूसरा मेमना ही उसे खा डालेगा!" उसने अपना सिर हँसते हुए तोग़जान के कंधे पर रख दिया।

उसके मज़ाक़ में कोई चुभन न थी लेकिन कोरिमबाला वास्तव में गपोड़ थी और दूसरों के सामने भी बक जा सकती थी। आबाय यह सोचकर काँप उठा।

"कोरिमबाला, हमें क्यों दोष देती हो? भेड़िये को दोष दो," उसने मज़ाक़ करने की कोशिश की। "हम बदनसीब थे जो भेड़िये के चंगुल में पड़ गये। अब जब तक वह हमें नही खा डालता, हमें इन्तज़ार करना पड़ेगा!"

लेकिन कोरिमबाला इतनी आसानी से हार नहीं माननेवाली थी।

"तुम हमें कहानियाँ सुना रहे हो," उसने उन्हें झिड़की दी। "तुम लोग मुझसे कुछ छुपा रहे हो, है'न?"

यह शब्द और भी ख़तरनाक प्रतीत हुए और तोग़जान ने उसे टोका।

"बन्द करो, कोरिमबाला! क्या वाहियात बातें कर रही हो!"

कोरिमबाला तुनुकमिजाज़ी से उसकी ओर पलट पड़ी। आबाय ने समझाने का फ़ैसला किया।

"प्यारी कोरिमबाला, कुछ लोगों को बेपर की बात उड़ाने की आदत होती है! बिना सोचे-समझे कहा गया एक भी शब्द तुम्हारी सहेली को बड़ा नुक़सान पहुँचा सकता है। ऐसे मज़ाक़ न करना, क्या बुद्धिमानी न होगी?"

कोरिमबाला तुरंत समझ गयी और हँस पड़ी लेकिन इस बार कुछ परेशान-सी – किसी दयालु नन्ही लड़की की तरह जिसे शैतानी करते पकड़ लिया गया हो और वह भयभीत हो। क्या उसने सच में तोग़जान को ठेस पहुँचायी थी? तोग़जान की कमर में हाथ डाले, याचना करते हुए वह उसके साथ चल पड़ी:

"अब और ग़ुस्सा न हो! मैं फिर ऐसा नहीं करूँगी! कभी नहीं!"

तीनों शीघ्र ही पुनः मंडली में शामिल हो गये। खेल अभी भी चल रहे थे। लेकिन आबाय और येर्बोल अब और नहीं रुक सकते थे। उन्होंने बताया कि वे जल्दी उठना चाहते हैं और मैत्रीपूर्ण स्वागत का शुक्रिया अदा करके जलपान की प्रतीक्षा किये बिना चलते बने।

अपने शब्दों को वास्तविकता का पुट देने के लिए वे सुबह में ही बकानास नदी की ओर रवाना हो गये और पूरा दिन उन्होंने क़ाराताय के आऊल में बिताया। अंधेरा घिर आने के बाद, जब आऊल शान्त हो गये और लोग ओतावों में चले गये, उन्होंने फिर लौटने की हिम्मत की।

वे चुपके से आये, यहाँ तक कि कुत्ते भी उन्हें नहीं देख पाये और आऊल के एक किनारे येर्बोल के ओताव में सरक गये।

जब सब गहरी नीन्द में सो गये, आबाय और येर्बोल चुपके से कभी लगभग रेंगते, कभी कमर तक झुकते, असिलबेक के ओताव की ओर बढ़ चले। तम्बू के बाहरी झूलन को उन्होंने मोड़कर ऊपर उठाया फिर सावधानी से अन्दर के दरवाज़े को खोलना शुरू किया। ओताव के अन्दर अभी तक कोई जाग रहा था। वहाँ से शोल्पि का क्वणन सुनाई दे रहा था और उन्हें मालूम था तोग़जान व उसकी भाभी क़ाराशाश के अलावा परिवार की कोई भी दूसरी सदस्या शोल्पि नहीं लगाती थी।

दोस्तों ने भूल नहीं की थी। एक परिचित आवाज़ तुरंत फुसफुसाती आयी:

"शान्त रहो!" और एक जवान औरत ने दरवाज़ा खोला।

"आबाय?"

आबाय ने अपना हाथ बढ़ा दिया। क़ाराशाश ने उसका हाथ थाम लिया और अन्दर ले गयी।

"अच्छा हो, तुम लौट जाओ। वह अकेला लौटेगा," उसने धीमे से येर्बोल से कहा।

येर्बोल जितने चुपके से आया था, उसी तरह चला गया।

आबाय के रेशमी पर्दे के स्पर्श करते ही, तोग़जान की गर्म अंगुलियाँ उसके गालों को छू गयीं... वे एक-दूसरे की बाँहों में समा गये, उनकी साँसें एक हो गयीं मानो उनके होंठ फिर कभी अलग नहीं होंगे...

गर्मी की निस्तब्ध रात जा चुकी थी और पूर्व में हल्की लाली छा गयी थी जब आबाय और येर्बोल जानिबेक से विदा हुए।

आऊल शीघ्र ही बहुत पीछे छूट चुका था। चाँद डूब चुका था, तारे मद्धिम पड़ गये थे। स्तेपियों का चक्कर काटते लवा पक्षियों ने अपने समवेत गान से वातावरण को भर दिया था।

आबाय तरोताज़ा और दिल से हल्का महसूस कर रहा था। साफ़, उमंग भरी आवाज़ में वह एक कोमल गीत गा रहा था—गीत में उल्लास भी था और उदासी भी। सुर सहजता से, निरंतर प्रवाहित हो रहा था और अश्रुतपूर्व शब्द किसी असीम स्रोत से निकलते चले आ रहे थे।

वे कहाँ जा रहे हैं, क्यों जा रहे हैं, उन्हें नहीं मालूम था और न उन्हें इसकी परवाह थी। सहसा उसे तोग़जान के तम्बू के सफ़ेद गुम्बद दिखाई दिये। गीत ख़त्म करके वह येर्बोल की ओर मुड़ गया।

वह मुस्कुरा रहा था। वह उस गीत के प्रत्येक स्वर के महत्व को समझता था! आबाय ने घोड़े को रोककर अपने दोस्त को गले लगा लिया।

"मुझे दोष मत देना, येर्बोल," उसने कहा। "मैंने ख़ुशी और उल्लास के बारे में प्राय: सुना है लेकिन उन्हें सिर्फ़ इसी रात में जान पाया। लेकिन बोलना क्या है? तुम साफ़ देख सकते हो—मैंने अपने सारे छुपे अहसास अपने गीत में उँड़ेल दिये हैं।"

लेकिन वह दुबारा तोग़जान से नहीं मिल पाया। शायद आदिलबेक ने अफ़वाहें सुनी थी या बस यूँ ही उसे सन्देह हो आया था। चाहे कारण

कुछ भी रहा हो जब अपने आऊल में लौटकर आने के बाद शाम के खेलों में आबाय की उपस्थिति के बारे में उसे मालूम हुआ, वह रोष से भर उठा:

"वह किस लिए आया था? वह क्या चाहता था? अगर मैं यहाँ रहता, वह ज़िन्दा वापस नहीं लौट पाता!"

आबाय उदास हो उठा, उसके चाँद को बादलों ने ढँक लिया था। जिनकी उसके पिता से अनबन थी, उन्हें क्रुद्ध करना ख़तरनाक़ था। आख़िर आऊल अपने ग्रीष्म के पड़ावों से रवाना हो गये और एक-दूसरे से बहुत दूर इलाक़ों में जा बसे।

आबाय ख़ुद को बदक़िस्मत और एकाकी महसूस कर रहा था। उसका जीवन अंधकारमय था – जैसे किसी ने उसके हाथों का दीपक गुल कर दिया हो। वह क्षीण पड़ने लगा मानो कोई रहस्यमय बीमारी लग गयी हो।

उसके आत्मीय चिन्तित हो उठे और उसे एक बार फिर अपनी दुल्हन के पास भेजना बेहतर होगा, यह उन्होंने तय किया। आबाय चुपचाप सहमत हो गया लेकिन उसका दिल निरुत्साह और स्तब्ध था। निष्क्रिय निराशा से निर्वासन को जाते किसी निष्कासित-सा वह बोशन की ओर रवाना हो गया।

डेढ़ महीने बाद वह दिल्दा के साथ वापस आ गया।

फिर जाड़े के पड़ावों को रवाना होने का समय क़रीब आ पहुंचा। बहुत दिनों तक बाहर रहने और ख्यालों की अपनी ही दुनिया में खोये होने के कारण, उसके आऊल में क्या कुछ हो रहा है, आबाय को नहीं मालूम हो पाया।

पतझड़ में क़ोनानबाय ने फिर अपने धावे शुरू कर दिये थे। उसका पहला शिकार क़ुलिनशक़ हुआ। भला वह उसे कैसे माफ़ कर सकता था जिसने उसके भाई मायबासार की पिटाई की थी। क़ुलिनशक़ निर्णायक घड़ी में कोतिबक़ से जा मिला।

वह उस समय तक इन्तज़ार करता रहा था जब तक क़ुलिनशक़ का आऊल अपने जाड़े के पड़ावों को रवाना नहीं हुआ। जिगितेक और कोतिबक़ से बहुत दूर जब उसका आऊल संचरण कर रहा था, क़ोनानबाय सहसा उसके कारवाँ पर टूट पड़ा और सारे जानवरों सहित क़ीमती सामानों पर क़ब्ज़ा कर लिया।

लेकिन क़ोनानबाय इतने से ही सन्तुष्ट नहीं हुआ। अपनी साज़िशों की

बदौलत उसने क़ुलिनशक़ के "पाँच दुस्साहसी बेटों" में से दो – क़ादिरबाय श्रौर नादानबाय को जेतिसू निष्कासित करा दिया श्रौर तीसरे बेटे को बतौर बंधक जाक़िप के श्राऊल के उपान्त में बसने को मजबूर कर दिया। "क़ुलिनशक़ ने मेरे बेटे को पीटा श्रौर मेरे भाई को श्रपमानित किया," क़ोनानबाय श्रपने श्रौचित्य में कहता। ऐसे मौक़ों पर हमेशा की तरह, उसने क़बीलों के सारे बुज़ुर्गों को श्रपने पास इकट्ठा किया, उन्हें सबसे मोटे-ताज़े भेड़ों श्रौर मेमनों को ज़बह करके दिल खोलकर शानदार भोज कराया।

जब श्राबाय लौटा, सब कुछ शान्त दिखाई दे रहा था लेकिन कहीं गहरे, स्वजनों के हृदय में नफ़रत सुलग रही थी। एक तूफ़ान श्रानेवाला था।

उत्कर्ष

१

कई वर्ष बीत चुके थे। आबाय और दिल्दा के प्रथम पुत्र आक़िलबाय का जन्म उनके विवाह के एक वर्ष बाद हुआ था। फिर उनकी पुत्री गुलबदन पैदा हुई जो अब एक साल की हो चुकी थी। दिल्दा के तीसरा बच्चा होनेवाला था।

आबाय ख़ुद को एक परिवार के मुखिया के रूप में सोच ही नहीं पाता और इसी कारण उलजान ने आक़िलबाय को गोद ले अपने बेटे की तरह पालने का फ़ैसला किया। लड़का बोलना तो सीख गया था लेकिन आबाय को अपने पिता के रूप में पहचान नहीं पाता—वह एक अजनबी-सा था जो मुख्य ओताव में सिर्फ़ भोजन करने आता और फिर ग़ायब हो जाता। जहाँ तक आबाय का सवाल था, वह भी बच्चे के प्रति किसी तरह का स्नेह या लगाव नहीं महसूस कर पाता। लड़के का जन्म बहुत जल्दी हो गया था और आबाय की किशोरावस्था की समाप्ति का प्रतीक बन गया था।

आबाय तब सिर्फ़ सत्रह साल का था जब उसके पहले बच्चे का जन्म हुआ था। वह विवाह को एक ऐसी दैवी विपदा समझता था जिसे सहन करना ही था। पितृत्व का यह सिलसिला उसे भाग्य का एक क्रूर मज़ाक़—अपने ऊपर पड़ती मार की तरह प्रतीत होता। आक़िलबाय जिस दिन पैदा हुआ था, उसे बधाइयाँ और चीख़-पुकार सहन नहीं हो सकी थीं।

"तुम्हारे एक बच्चा है! तुम पिता हो! ख़ुदा की मेहरबानी है!" आबाय के स्वजन उसे छोड़ ही नहीं रहे थे।

लाल-पीला होता वह तेज़ी से बाहर आया और उछलकर घोड़े पर

सवार हो स्तेपियों में ग़ायब हो गया। वह पाँच दिनों तक—तब तक बाहर रहा जब तक उसके परिवार का हर्षोन्माद कम न हो गया।

न तो नन्ही गुलबदन का आबाय पर कोई असर हुआ। वह भी माताओं के प्रेम में पगी हमेशा मुख्य ओताव में ही रहती। वह दिल्दा पर गयी थी, हमेशा बिसूरती-सी, आबाय से उसकी शक्ल-सूरत तनिक भी नहीं मिलती थी। यह शोर मचानेवाली बच्ची सिर्फ़ अन्धेरा होने पर ही युवा ओताव में पहुँचा दी जाती और फिर रात रोती ही बिताती मानो इस तरह उसे अपने पिता का ध्यान आकृष्ट कर लेने की उम्मीद हो। लेकिन आबाय सिर्फ़ ठंडी आहें भरता रहता।

"इसका रोना सुनकर रात में कोई भी छलाँग लगा लेना चाहेगा मानो बिच्छू ने डंक मार दिया हो," वह शिकायत करता। और इस तरह उसने उस नन्ही लड़की को "पीला बिच्छू" कहना शुरू कर दिया।

एक दिन शाम को जब दिल्दा ने उसे बिस्तरे पर सुला दिया, वह बुरी तरह क्रन्दन कर रही थी। सूर्य डूब चुका था और कमरे में लगभग अंधेरा-सा था, दिल्दा ने न तो दीपक ही जलाया था और न ही बिस्तर ठीक किया था। वह बच्ची के सोफ़े के पास ही एक कम्बल पर लेटी आराम कर रही थी। गुलबदन अभी-अभी बड़ी माताओं के मुख्य ओताव से आयी थी और नहीं सोना चाहते हुए भयानक क्रन्दन किये जा रही थी।

आबाय कुछ दोस्तों के साथ कमरे में आया। हिमतूफ़ान चल रहा था और नौजवानों के कपड़े बर्फ़ से भरे थे। एक के बाद एक अन्दर आते हुए वे अपने साथ बाहर की भयानक ठंड भी लेते आये। दिल्दा ने अपना सिर उठाया: उसे क़दमों की आहट सुनाई दी थी और ठंड भी महसूस हुई थी।

"रोशनी करो, दिल्दा," दरवाज़े पर अपने लबादे से बर्फ़ झाड़ते हुए आबाय ने कहा। "और या तो उस शोर मचाती लड़की को शान्त करो या उसे मुख्य ओताव में लौटा आओ।"

तेल का दीपक जला, मेहमानों के लिए कम्बल बिछा दिल्दा गुलबदन की ओर बढ़ गयी। तभी नौकर अन्दर आया, मालकिन से धीमे-धीमे बात की और खाना तैयार करना शुरू कर दिया।

आबाय के साथ उसके पुराने दोस्त थे—येर्बोल, जिरेंशे और तोग़जान का भाई असिलबेक जिसकी पिछले कुछ सालों में आबाय से मैत्री हो गयी

थी। दूसरा मेहमान क़ाउमेन का बेटा बाज़ाराली था। हालांकि वह जिगितेक था जो क़ोनानबाय के दुश्मन थे और उस मनहूस दिन जब जिगितेक नेता पर कोड़े पड़े थे, हाथों में हथियार लेकर उसने इर्गिज़बाय के विरुद्ध बोजेय की रक्षा की थी। आबाय के साथ उसके दोस्ताना ताल्लुक़ात थे। आबाय उसके साहस, बुद्धि चातुर्य और आस्थाओं के प्रति दृढ़ता से प्रभावित हुआ था। तीस वर्षीय बाज़ाराली आबाय के दोस्तों में सबसे बड़ा था।

बाज़ाराली अन्दर आया और लबादा उतार फ़र्श पर अपने लिये बिछाये कम्बल पर बैठ उदासी से बोला:

"तुषार क्या ग़ज़ब कर रहे हैं हम लोगों के साथ! आज भी एक और हिम-तूफ़ान! सारा समय हिम-तूफ़ान। जुत किसी को नहीं छोड़ेगा। यह ग़रीबों के आऊल का नाश कर देगा!"

वह चुप हो गया। उसने अपने हाथ से अपनी लम्बी काली दाढ़ी पकड़ रखी थी।

दिल्दा ने एक नीची गोल मेज़ रख दी थी जिसके चारों ओर ज़िगित अपनी जगहों पर बैठे थे।

पिछले सालों में आबाय में काफ़ी परिवर्तन आ गया था। उसके कन्धे चौड़े और शक्तिशाली हो गये थे। उसका लम्बा, सुडौल शरीर उसके तीखे नाक-नक़्श के सर्वथा अनुरूप थे। सीधी पतली नाक अब और भी बड़ी प्रतीत होती थी और ललाट के पास उसकी घनी भौंहें चौड़ी हो गयी थीं। उसकी लम्बी-पतली आंखें हमेशा की तरह चमक रही थीं और उनमें धधकती ज्वाला नौजवान को ऐसी अभिव्यक्ति प्रदान कर देती जिससे वह दूसरे से एकदम ही अलग लगता। ठंड से लाल हुए उसके साँवले चेहरे पर मूँछों के संकेत थे।

आबाय ख़ूबसूरत तो शायद ही था लेकिन जो भी उसके सम्पर्क में आता, तुरंत ही उसे पसन्द करने लगता।

नौजवान युवा ओताव में शायद उल्लास भरी शाम बिताते लेकिन बाज़ाराली के चिन्ता भरे शब्दों ने उन्हें सोचने पर विवश कर दिया था।

बाज़ाराली को छोड़कर, तीनों नौजवान तीन दिन एक साथ बिता चुके थे। बाज़ाराली उस दिन उन पर्वतीय आऊलों से लौटा था, जहाँ बहुत से जाड़े के पड़ाव थे और आबाय उनके बारे में अधिक जानकारी चाहता था:

"क्या वहाँ जुत बहुत भयानक है? सभी या सिर्फ़ कुछ श्राऊलो को नुकसान पहुँचा है? क्या लोग अत्यन्त दारुण स्थिति मे है?"

आसिलबेक, जिरेशे और येर्बोल बाज़ाराली की ओर देखने लगे। उसके जवाब मे निराशा का पुट था :

"क्या जुत भी कभी लोगो को मारने से पहले चुनता है? हर जगह मुसीबत है। जुत भयानक है और मवेशियो को मारे डाल रहा है। जब मै लोग शब्द इस्तेमाल करता हूँ तो उसका मतलब है व्यापकतम हिस्सा और मैं तुम्हे बता सकता हूँ, लोग इस समय पीड़ित है। हिम-तूफ़ान तीन दिनों तक चलता रहा। लोग वसन्त की प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्हे उसके साथ गर्म मौसम के आगमन की उम्मीद थी। लेकिन पाला और तूफ़ान के कारण तो निकृष्टतम शरद लौट आया है। इसे बहुत लोग नही झेल पायेगे ... "

"लेकिन ज्यादातर भेडो की तो मृत्यु हो रही होगी। जानवरों की क्या स्थिति है?" जिरेशे ने आशा से पूछा।

बाज़ाराली ने अपने कन्धे उचका दिये।

"तोबिक्ति के ढोर मुख्य रूप से भेड़ों और घोडो के है। और गाय तो भेड़ो से भी ज़्यादा कमज़ोर साबित हुई है। ऊँटो को भी जुत गाजर-मूली की तरह काटे डाल रहा है। अनाहत कैसे कोई निकल सकता है?"

वे पूरी शाम उसी आपदा की चर्चा करते रहे। जानवर मर रहे थे लेकिन यही बस न था। लोगो ने भी फाके करने शुरू कर दिये थे। चिंगीज़ मे बाजाराली ने गरीबो को रोटी के लिए आऊलो मे मारे-मारे फिरते देखा था। कुछ तो यहाँ भी, जिदेबाय तक आ पहुँचे थे। बूढे मर्द-औरतो को आबाय की माताओ के घर पर सहायता दी गयी। उन्हे दो जून के लिए काफ़ी गोश्त, अनाज और बाजरा दिया गया था।

"जुत सबको खत्म ही कर देगा क्या?" जिरेशे ने आह भरी। "क्या इससे कोई भी नही बच पायेगा?"

बाज़ाराली ने उसकी ओर गंभीरता से देखा :

"निस्सन्देह, कुछ तो बच ही जायेगे। सबसे काले घोड़े पर भी एकाध सफ़ेद धब्बा हो सकता है ... इर्गिज़बाय, क़ोतिबक़ और जिगितेक मे ऐसे आऊल है जिनके पास अच्छे चरागाह और प्रचुर ज़मीन है। इन्हे डरने की कोई ज़रूरत नही।"

येर्बोल भी इस बात से सहमत था: इसका सबसे कम असर इर्गिज़बाय पर पड़ेगा। उनके पास जाड़े के पड़ावों की बहुतायत है और उसने यह देखा था। उन्होने पतझड़ में काफ़ी भूसा, सूखी घास जमा कर ली थी।

अब आबाय भी बातचीत में शामिल हो गया।

"लेकिन इससे दूसरों को क्या लाभ होगा? इससे किसे दिल-जमाई होगी?" उसने पूछा।

"जो सबसे मज़बूत हैं, वही सबसे बड़े सूरमे हैं," बाज़ाराली मुस्कुराया। "कुनेकेन द्वारा हथियाई ज़मीन आज इर्गिज़बाय की रक्षा कर रही है।"

"ज़मीन!" आबाय ने पलटकर जवाब दिया। "ज़बर्दस्ती हथिया ली गयी ज़मीन! तुम उसे ज़मीन कहते हो? वे ज़मीन नही, लूटे गये लोगों के आँसू है!"

उसके शब्दों में दमित क्रोध था और असिलबेक व जिरेंशे प्रशंसा में मुस्कुरा पड़े।

"यह सच है, आबायजान! तुमने वह बात कह दी है जो महसूस तो सब करते है लेकिन कहने से डरते हैं।"

निराशापूर्ण विचारों से पीड़ित बाज़ाराली भी ख़ुश प्रतीत हो रहा था।

आबाय दिल से बोल रहा था। इन जिगितों को वह अपना दोस्त समझता था और लम्बे अर्से से उनके साथ—विशेष रूप से येर्बोल के साथ उसने अपने अन्तरतम की बातों में हिस्सा बँटाया था। पिछले कुछ वर्षों मे वह येर्बोल के साथ तो अभिन्न ही रहा था। जिरेंशे और असिलबेक भी उसके घनिष्ठ मित्रों मे से थे और प्राय: उसके साथ रहते। निस्सन्देह यह मित्रता क़ोनानबाय को तनिक भी पसन्द न थी। "वह जानबूझकर भेड़िये की औलादों को ऐसे आऊलों से चुनता है जो हाल-फिलहाल तक हमारे दुश्मन रहे है। क्या अच्छे दोस्त है।" गुस्से से नाक-भौह चढ़ाते हुए वह अपने बेटे के बारे में कहता।

जब से वह अपने पिता की कार्रवाइयों का विश्लेषण करने लगा था, आबाय उन आऊलों के सर्वश्रेष्ठ लोगों की ओर आकृष्ट होता चला गया था जिनके विरुद्ध क़ोनानबाय ने ज़ोर-ज़बर्दस्ती की थी। उनकी बदौलत वह लोगों की ज़िन्दगी, उम्मीदों और आकांक्षाओं के बारे में अधिकाधिक जानकारी हासिल कर पाया था। जिरेंशे और असिलबेक उससे पाँच साल

बड़े थे लेकिन इससे उनकी मित्रता में कोई बाधा नहीं पड़ी थी और वे खुलकर एक-दूसरे से बोलने में हिचकिचाते नहीं थे। बिना किसी छिपाव दुराव के वे उसे वह सब बता देते थे जो वे बूढ़े लोगों से सुना करते थे और उसके साथ निर्भीकतापूर्वक अपनी परेशानियों के बारे में विचार-विमर्श करते।

आज की शाम से पहले सिर्फ़ बाज़ाराली ने ही इन दोस्ताना बातचीतों में भाग नहीं लिया था। उसे पक्का विश्वास था कि लोगों के दुख-दर्द के लिए सबसे ज़्यादा दोषी क़ोनानबाय ही था। क़ोनानबाय का समर्थन पाये आऊल अपने जानवरों के ढोर इर्ग़िज़बाय के चरागाहों में हाँककर ले आये थे और निस्सन्देह, वे उन्हें बचा लेंगे। लेकिन छोटे, भूमिहीन क़बीले निराशा भरी लड़ाई लड़ रहे थे। उनके जानवर निष्प्राण स्तेपियों में भूखे मारे-मारे फिर रहे थे। अब तक उसने अपने आवेशपूर्ण शब्द अपने अन्दर ही छुपा कर रखे थे लेकिन अब आबाय के शब्दों को सुनकर वह ख़ुदपर और अधिक क़ाबू नहीं रख सका। उसने आम आपदा के कारण ढूंढ़ने की कोशिश की।

"लोग? लोग क्या हैं? एक ऐसी ताक़त जिसे दुश्मनों से लड़ते समय तो इस्तेमाल किया जाये लेकिन जब उन्हें ख़ुद ज़रूरत हो, बस धकिया दिया जाये। लड़ाई जीतनेवाले तो लोग ही होते हैं लेकिन जब लड़ाई जीत ली जाती है, उन्हें हाँक ले जा रहे जानवरों के ढोरों की धूल ही फ़ाँककर रह जाना पड़ता है। इस तरह लोग बेनाम और गुमनाम रहकर मर-मिट जाते हैं। आज भी स्तेपियों में वे अपनी हड्डियाँ बिछा रहे हैं। क्या उनके दुख से उनमें से एक का भी दिल पसीज सकता है जो उन्हें कल तक "अपने सपूत", "अपना समर्थक और रखवाला" कह रहे थे? कहाँ है वह इनसान जो उनके लिए दुखी होगा, उनका पक्ष लेगा?"

आबाय बाज़ाराली के शब्दों की निश्छलता से प्रभावित था। उत्साहपूर्वक, वाग्मिता से व्यक्त उन शब्दों की निपट सचाई पर वह मुग्ध था। बाज़ाराली दृढ़ गठन का व्यक्ति था—साहसी और ज़बान का तेज़। वह एक अच्छा गायक भी था लेकिन बुज़ुर्ग उसे झगड़ालू समझते। वे उसे "रस्सी तुड़ाकर भागनेवाला घोड़ा" कहते। "उसके शब्द खोखले हैं, हाँ, काट खानेवाले और द्वेषपूर्ण ज़रूर हैं," वे कहते। यह सच नहीं था, अब आबाय को महसूस हुआ था।

नौजवान गंभीरता से सुनते बैठे थे। बाज़ाराली के शब्द उनके लिए फटकार-जैसी थे।

"सच्चा आदमी यानी सम्मान और दृढ़ संकल्पवाला आदमी इस समय आँधी से खदेड़े लोगों की हिफ़ाज़त करेगा," उसने कहा। "अच्छे समय में तो कुनेकेन से लोगों को कुछ देने की उम्मीद ही नहीं की जा सकती थी। लेकिन जब चारों ओर मुसीबत ही मुसीबत आयी हुई हो, ऐसे समय में उन्हें कम से कम लोगों के साथ उन चीज़ों में भागीदारी करनी चाहिए जो उनके पास बहुतायत में हैं। उन्हें लोगों को जानवरों के लिए चरागाह और आदमियों के रहने के लिए अपने शरदक़ालीन घर दे देने चाहिए। उन्हें अपने खाद्य भंडार में उनके साथ हिस्सा बँटाना चाहिए। इर्ग़िज़बाय के अलावा, अगर सिर्फ़ बायसाल, बायदालि और सुयून्दिक़ बच निकलते हैं, उन्हें कोई शान्ति नहीं मिल पायेगी। लोग, जिनके हाथों में अपने जानवर के पगहों के अलावा कुछ भी नहीं बचा रहेगा, अपना हिसाब चुकाये बिना कहीं नहीं जायेंगे। वे जायेंगे तो बेशक लेकिन झंझावत की तरह–अपनी राह में आये सभी श्रोतावों को चकनाचूर करते हुए। और अगर वे ऐसा नहीं करते तो मर्द नहीं, खरहे होंगे।"

नौजवान फिर विचारमग्न हो गये लेकिन असिलबेक को बाज़ाराली की बातें अतिशयोक्तिपूर्ण लगीं।

"जुत तो हमेशा से आते ही रहे हैं," उसने आपत्ति की। "यह तो अपरिहार्य आपदा है। इसके लिए तुम मामूली इनसान को दोषी शायद ही ठहरा सकते। तुम सारा दोष सिर्फ़ एक आदमी के सिर मढ़ देते हो और यह ग़ैर-वाजिब है।"

असिलबेक की बातों से बाज़ाराली निराशा से भर उठा। "अपने बाप सुयून्दिक़ की तरह ही बेपेंदे का लोटा है," उसने सोचा। बहस करने के बदले बस अपनी भौंहें चढ़ाकर उसने असिलबेक की ओर देखा और तिरस्कारपूर्वक अपना सिर हिला दिया।

सहसा तीन आदमी लड़खड़ाते हुए कमरे में घुस आये, वे मुश्किल से अपने पैरों पर खड़े हो पा रहे थे। उनके कपड़े बर्फ़ से ढँके थे, उनकी मूँछ-दाढ़ियों पर जमी ओस चमक रही थी। शावक-चर्म का कोट पहने एक लम्बे, प्रौढ़ से व्यक्ति की जो सबसे पहले अन्दर आया था, भौंहों तक पर बर्फ़ की परत जमी थी।

यह दर्केमबाय और उसके दो पड़ोसी बोकेंशी थे। यह वही दर्केमबाय था जो तोकपाम्बेत में जब बोजेय पर कोड़े पड़े थे, क़ोनानबाय को गोली का निशाना बनाना चाहता था। यह बात सारे तोबिक़्ति जान गये थे और जहाँ कहीं, जब भी इग़िंज़बाय को उसे परेशान करने और नुक़सान पहुँचाने का मौक़ा मिलता, वे कभी नही चूकते।

दर्केमबाय ने अपना कोट नहीं उतारा। वह एक निहायत ज़रूरी काम से आया था।

"आबाय, मेरे बेटे," उसने कहना शुरू किया। "मैने सुना है, तुम अपने स्वजनों के प्रति नेक रहे हो और इसी कारण मैं आया हूँ। अगर तुम तकेजान होते, मैं यहाँ नहीं आता। बदनसीबी मुझे यहाँ ले आयी है। मेरे पास कुछ भेड़ हैं और उनके पास," उसने अपने साथियों की ओर इशारा किया, "कोई बीस-तीस जानवर हैं लेकिन इतने कम मवेशियों के बावजूद हमें कहीं सिर छुपाने की कोई जगह नहीं मिल सकी। हमें खदेड़ा जा रहा है, हम मुश्किल से चल भी पा रहे हैं। हमारे चरागाहों में एक तिनका तक नहीं। भूख के मारे भेड़ें मरी जा रही हैं और यहाँ आते-आते पाँच तो मर भी गयीं।"

"तुम चिंगीज़ की ओर क्यों नहीं बढ़ जाते?" असिलबेक बीच में ही बोल उठा। "कम से कम वहाँ तुम हिम-तूफ़ान से तो बच जाओगे।"

"लेकिन हवा चिंगीज़ की ओर से बह रही है और थके जानवरों को ठीक हिम-तूफ़ान की सीध में हाँका नहीं जा सकता। और फिर चिंगीज़ दूर भी कितना है। लेकिन मुसाक़ुल और जिदेबाय क़रीब और हवा की उलटी दिशा में हैं। अगर वे हमें इजाज़त दें, हमें बहुत से जानवरों को खिलाने भर पर्याप्त चारा मुसाक़ुल और जिदेबाय में मिल जायेगी! बर्फ़ हटा-हटाकर मैं भेड़ों को चराऊँगा और जानवर वहाँ मरने से बच जायेंगे। यहाँ हिम-तूफ़ान का उतना ज़ोर नहीं। यह हमारी अन्तिम आशा है—शायद वे मुझे जानवर वहाँ ले जाने देंगे?"

आबाय उसकी दु:स्थिति पूरी तरह समझ रहा था।

"तुम ठीक कहते हो, अपने जानवर वहाँ ले आओ!" उसने तुरंत ज़ोर देकर कहा।

"मेरे बेटे, कहना आसान है लेकिन मैं क्या करूँ? मेरे मुसाक़ुल पहुँचते ही तकेजान ने हमें वापस खदेड़ दिया और वह भी हत्यारा जुमागुल

के साथ। उन्होंने हमें अपने कोड़ों से धमकाया और वहाँ से भाग जाने का आदेश दिया। इसी कारण मैं तुम्हारे पास आया हूँ। अगर मुझे सब कुछ गँवाना ही है तो मैने सोचा, कम-से-कम आबाय तो जान ले कि उसके स्वजन मर रहे है।"

और कुछ सुनने की प्रतीक्षा किये बिना आबाय ने येर्बोल को संक्षिप्त सा आदेश दिया:

"येर्बोल, अच्छी तरह गर्म कपड़े पहन लो और घोड़े पर सवार हो जाओ।" "और तुम" वह दर्कमबाय की ओर मुख़ातिब हुआ, "अपने जानवरों के पास लौट जाओगे! दिल्दा, इन्हें रास्ते के लिए भोजन दे देने कहो!"

दिल्दा तुरंत कमरे से बाहर चली गयी।

फिर आबाय ने येर्बोल से तकेजान को अपना सलाम देने कहा: उसे दर्कमबाय की राह में रोड़े अटकाने मत कहो। जानवरों के छोटे से झुंड के लिए उसे कोई चरागाह दे दे और जुमागुल को क़ाबू में रखे। येर्बोल जल्दी से कपड़े पहन दर्कमबाय के साथ रवाना हो गया।

तकेजान मुसाक़ुल में जाड़ा बिता रहा था। आबाय से पहले विवाहित हो उसने उसी वर्ष ख़ुद अपना ओताव क़ायम कर लिया था। वह बड़ा कंजूस, अपनी ज़मीन की चौकसी से रखवाली करनेवाले व्यक्ति के रूप में साबित हुआ था। चरवाहों का कहना था, जब कोई नही देख रहा हो, वह अपनी माताओं के जानवरों के ढोर से भी पशु हाँक ले जाता। उस साल आबाय तकेजान के दुष्कर्मों के बारे में काफ़ी सुन चुका था और अपने बड़े भाई से ख़फ़ा था।

येर्बोल काफ़ी रात बीते, जब हिम-तूफ़ान चरम पर था, वापस आया। वह बर्फ़ से ढँका था, उसकी नन्ही-सी घनी दाढ़ी पाले से सफ़ेद और उसकी चौड़ी नाक ठंड से लाल हो गयी थी। उसकी काली आँखों में अपमान व गुस्से की झलक थी। अपना टोप उतारे बिना वह एक घुटने पर झुककर अपनी दाढ़ी से बर्फ़ झाड़ने लगा।

"शैतान ख़ुद तकेजान के सिर पर सवार है," उसने कहा। "दूसरे लोगों का कोई भी जानवर मुसाकुल या जिदेबाय में अपने पैर नही रख सकता, वह लगातार चीख़-चीख़कर कहता रहा। और उसने जुमागुल को दर्कमबाय पर कोड़े बरसाने और उसके जानवरों को हाँके देने का आदेश

दिया: सच पूछो तो जुमागुल को मन की मुराद ही मिल गयी। कुफ़्र टूटे उस पर। वह घोड़े पर सवार हो चढ़ दौड़ा, और अभी भी भेड़ों को हाँके जा रहा है।"

"दर्केमबाय का क्या बना? वह क्या करने जा रहा है?"

"वह क्या कर सकता है? ऐसी रात में और वह भी हिम-तूफ़ान में, भला वह कहाँ जा सकता है?"

"इस तरह भटक-भटककर मरने से अच्छा तो जुमागुल के कोड़े खाकर मरना था!" अपने ग़ुस्से पर और अधिक क़ाबू रख पाने में असमर्थ जिरेंशे और बाज़ाराली चीख़ पड़े।

"जुमागुल जैसा दूसरा कुत्ता कहीं भी ढूंढ़े नहीं मिलेगा," येर्बोल ने आगे कहा। "'ज़रा समझने की तो कोशिश करो' मैंने विनती की 'सुबह तक तो ठहर जाओ,' लेकिन वह बस मुझे लथाड़ता रहा।"

येर्बोल ने पूरी घटना नहीं सुनाई थी। वास्तव में तकेजान ने आबाय को सबसे गन्दी गालियाँ दी थी और जुमागुल ने तो येर्बोल पर भी हाथ उठाने की कोशिश की थी। वह ऐसा कर भी चुका होता अगर चीख़ते हुए दर्केमबाय उसकी राह रोककर नहीं खड़ा हो जाता, "अपने हाथ रोक लो अन्यथा हममें से कोई उसके लिए अपना ख़ून बहा देगा!" जुमागुल ने तब अपना घोड़ा एक ओर कर लिया था।

अगर वह आबाय को इसके बारे में बताता, भाई एक दूसरे की जान लेने पर उतारू हो जाते। येर्बोल स्वजनों के बीच दुश्मनी के बीज रोपने का ख़्वाहिशमन्द न था और ऐसे मौक़ों पर वह आम तौर से शान्ति से काम लेता। आबाय को कोई उग्र क़दम उठाने पर मजबूर न करने का उसने दृढ़तापूर्वक फ़ैसला कर लिया था। कभी-कभी ऐसी घटना के काफ़ी अर्से बाद जब आबाय को पता चलता, उसके दोस्त ने उससे कुछ छुपाने की कोशिश की थी, वह उसकी ज़ोरदार मलामत किया करता। लेकिन हर बार येर्बोल उसी पुराने ढंग से अपना काम निबाहता – वह आबाय को दुखी होने से बचाने की कोशिश करता।

लेकिन इस समय भावनाएँ कुछ इतनी प्रबल थीं कि वह उन्हें छुपा नहीं पा रहा था। आबाय अपने मित्र को जानता था और उसने कोई सवाल नहीं किया। जितना उसने बताया था, बात उससे कहीं ज़्यादा है, तकेजान और जुमागुल ने कहीं बढ़कर अपनी निष्ठुरता और बदमिजाज़ी

दिखाई है, आबाय यह समझ चुका था। उसका चेहरा बुरी तरह ज़र्द पड़ गया। वह एकटक येर्बोल को घूरता, सोचता रहा और फिर सहसा उछलकर उठ खड़ा हुआ।

दूसरे नौजवानों ने उसे सवाली निगाहों से देखा। वह क्या करने जा रहा था? .

आवेशपूर्वक वह तेज़ी से बोल उठा:

"येर्बोल, उठो! मेरे साथ चलो!" फिर जल्दी-जल्दी वह कपड़े पहनने लगा। एक हल्का लबादा पहन उसने अपना कमरबंद कसा, चाबुक उठाया, दरवाज़ा को धक्का देकर खोला और कमरे से चला गया। येर्बोल उसके पीछे हो लिया।

दो क़र्बूराश्व दीवार से चिपके खड़े थे। उन्होंने अपने सिर हवा के विपरीत मोड़ लिये थे। दोनों को ज़ीन कसके तैयार किया गया था। आबाय ने पहले घोड़े को खोल, धीरे से उछलकर ज़ीन पर बैठ घोड़े को हिम-तूफ़ान में सरपट दौड़ा लिया। येर्बोल उसके पीछे था।

जुमागुल दर्कोमबाय और उसके साथियों की सभी भेड़ों को इकट्ठा करने में सफल रहा था और अब उन्हें चरागाह से खदेड़ देने पर बुरी तरह पिल पड़ा था। लेकिन ठंड से जमे और भूखे जानवर इस तरह एक साथ मिलकर गड्डमड्ड हो गये थे कि हिल ही नहीं रहे थे। ग़ुस्से से पागल जुमागुल उनपर और दर्कोमबाय पर गालियों की वर्षा किये जा रहा था। हिम-अपसरण में डगमगाते दर्कोमबाय के साथियों की ओर तो उसने नज़र उठाकर देखा तक नहीं।

भूख और ठंड के मारे थककर चूर एक वर्ष की बहुत-सी भेड़ें नीचे गिरकर निस्पंद पड़ गयी थीं, उनके सिर बर्फ़ में गड़े थे। दर्कोमबाय ने ख़ुद जुमागुल के सामने आकर डटने की कोशिश की लेकिन सुपुष्ट घोड़े पर बैठा तेज़-तर्रार जुमागुल हवा की-सी तेज़ी से कोड़े को एक ओर दौड़ाता भेड़ों के बीच चला गया। वह निर्ममता से कभी एक ओर तो कभी दूसरी ओर भेड़ों पर उस समय तक चाबुक फटकारता जाता जब तक वे गिर नहीं पड़ते। अगर वे कमज़ोर जानवर ख़ुदा से प्रार्थना कर पाते तो उस बर्फ़ीली हवा में अपने दुश्मन के निर्मम प्रहार सहन करने की जगह सिर्फ़ मौत ही माँगते।

जब मायबासार वोलोस्त-प्रमुख नहीं रहा, जुमागुल भी सन्देशवाहक

के ओहदे पर बरक़रार नही रह सका और सहसा बधिये घोड़े जैसा अबल बन गया था। "जुमागुल का दिमाग़ काम नही कर रहा," बूढ़े जुमाबाय ने मज़ाक़ में कहा था। "अगर उसका किसी से झगड़ा हो जाये तो वह ख़ुदा के नाम पर एक भेड़ तक चढ़ाने का वायदा कर चुका है लेकिन क़िस्मत अब तक उसका साथ नहीं दे रही। "पिछले दो साल से जुमागुल को अपनी पसन्द की एक भी जगह नही मिल पायी थी। तकेजान ने उसे अपना नौकर बहाल कर लिया था! यह सच था, तकेजान के हाथों में उतनी सत्ता न थी जितनी पहले मायबासार के हाथों में हुआ करती थी। लेकिन पतझड़ और जाड़े में उसने ज़मीन की रखवाली एकदम ज़ंजीर में बंधे कुत्ते की तरह की थी। शान्तिपूर्ण, निरीह आऊलों के प्रति उतनी ही नृशंस क्रूरता इस जोड़े ने दिखाई थी जितनी पहले के किसी भी वोलोस्त-प्रमुख और उसके सन्देशवाहक ने कभी न दिखाई होगी। वे चरवाहों पर कोड़े बरसाते, जानवरों को खदेड़ ले जाते और दूसरों के ढोरों से घोड़े फँसा लाते। तकेजान के स्वजन उसके सामने काँपते रहते और प्राय: दया की भीख माँगा करते।

दर्कोमबाय के रूप में जुमागुल और तकेजान को मन की मुराद मिल गयी थी। लड़ाई के लिए हमेशा उतारू, यह वही आदमी था जिसकी उन्हें तलाश थी, वही दर्कोमबाय जिसके पीछे वे इतने दिनों से थे। जुमागुल पर उसे निबटाने का दायित्व सौंप तकेजान ने तैश किया, "ख़ुद ख़ुदा ने मेरे पुराने दुश्मन दर्कोमबाय को मेरे हाथों में सौप दिया है।"

और इस तरह दर्कोमबाय और उसके सारे पुरखों को कोसता हुआ जुमागुल भेड़ों पर टूट पड़ा। लेकिन जैसे ही उसने एक भेड़ को मार गिराया था, हिम-तूफान से निकलकर दो घुड़सवार उस पर टूट पड़े मानो तूफ़ान के सफेद पर्दे के पीछे वे प्रतीक्षा करते खड़े थे।

दोनों में से एक भी कुछ नहीं बोला था। वे सवाल करने, नाराज़गी प्रकट करने या जुमागुल से झगड़ा करने नही आये थे। उनमें से पहला घुड़सवार उड़ता हुआ आया और जुमागुल के घोड़े की रास थाम ली। जुमागुल ने गरजकर विरोध किया और अपना चाबुक उठा लिया।

"क्या कर रहे हो तुम, बदमाश कहीं के!" आबाय ने चीख़कर कहा। क्रोध की अधिकता से उसका गला रुँध गया था।

जमागुल ने तत्क्षण ही आबाय को पहचान लिया लेकिन इस बार दोस्त

दुश्मन से भी बुरा साबित हो रहा था। आबाय का चाबुक सड़ाक से उसके माथे पर आ रहा। उसकी पहुँच से दूर हो जाने के लिए जुमागुल ने रास पर झटका दिया लेकिन आबाय ने रस्से को अपनी बायी कलाई मे लपेटकर बाँध लिया था और वह जा नही सका। चुपचाप वह तड़ातड़ उस पर प्रहार करता रहा – चाबुक डंडे से भी ज्यादा पीड़ादायक साबित हो रहे थे। ऐसी बेइज्ज़ती से तो मौत ही अच्छी थी! जुमागुल ने अपना हाथ उठाया लेकिन इसी की प्रतीक्षा करता येर्बोल उछलकर आगे बढ़ आया और उसे कसकर पकड़ लिया।

"ख़ुदा तुम्हें ख़ुशी दें," उनके पीछे से दर्कमबाय ज़ोर से बोल उठा। "सारे इनसान भेड़िये नही हो गये है। ज़रा मुझे भी तो उस पर हाथ आज़माने दो, बस एक बार!" फिर जुमागुल के लबादे का किनारा पकड़कर उसने उसे इतना ज़ोरदार झटका दिया कि वह कटे पेड़-सा बर्फ़ पर गिर पड़ा।

आबाय ने जानवरों को मोड़कर एक बार फिर से मुसाक़ुल की ओर ले जाने का आदेश दिया। भेड़ और उनके परेशान मालिक आख़िर पाले से सुरक्षित उस चरागाह में जा पहुँचे जहाँ घास पर हिम-अपसरण न के बराबर था।

एक घास का गँजहर पास ही में था। आबाय ने जानवरों को वहीं ले जाने का आदेश दिया। घास देखकर भेड़ें बेताबी से उस ओर दौड़ पड़ी लेकिन दर्कमबाय भयभीत हो उठा; लोग कहेंगे, वह बिना इजाज़त भेड़ों को न सिर्फ़ चरागाहों में हाँक लाया बल्कि क़ोनानबाय का गँजहर भी चरा दिया।

"भेड़ों को पीछे हाँक लाओ! उन्हें घास चरने मत देना," उसने अपने चरवाहों से चीख़कर कहा।

लेकिन आबाय ने रूखेपन से बीच में ही उसकी बात काट दी:

"उन्हें छोड़ दो – घास खाने दो! ऐ, उन्हें गँजहर में ले जाओ तुम डर क्यों रहे हो?"

भेड़े घास में मुँह गड़ाये, घास खाने पर भुक्खड़ों की तरह टूट पड़ीं। वे ज़रा भी टसमस होनेवाली न थी।

"सुबह तक उन्हें कही भी न ले जाना! जब तक हिम-तूफ़ान खत्म नही होता, उन्हें यही रहने दो। इस गँजहर पर जितना हक तकेजान का

है, उतना ही मेरा भी है," आबाय ने उन्हें फिर से दिलासा दिया। "अपने दोनों पड़ोसियों को यहीं भेड़ों के पास छोड़ दो। वे भेड़ों को इकट्ठा रखेंगे। और तुम किसी घोड़े पर सवार हो जाओ – वही जो वहाँ खड़ा है, कंजूस और दुष्ट तकेजान के घोड़ों में से एक पर सवार होकर जितनी तेज़ी से जा सकते हो, रवाना हो जाओ। आस-पास के आऊलों को ख़बर कर दो। उन्हें बता देना, मैंने तुम्हें भेजा है। उन्हें बेलचे और कुदाल लाने कहो। जानवर वहीं बच सकते हैं जहाँ हवा नहीं चल रही हो। बर्फ़ खोदकर उन्हें चारा प्राप्त करने कहो। तुम्हारे जैसे जितने भी हैं, उन सबको तोग़ाय, जिगितेक, क़ाराबातिर, बोकेंशी और आस-पास के सब लोगों को। अगर हमें दुख उठाना है तो हम सब एक साथ दुख उठायेंगे। अब रवाना हो जाओ। जितनी तेज़ी से जा सकते हो, जाओ! और सबको ले आओ!"

दर्केमबाय उछलकर घोड़े पर जा बैठा और आबाय जुमागुल पर बरस पड़ा।

"तुम जो दुष्ट कुत्ते की तरह लोगों पर टूट पड़ते हो, अब इसके बाद फिर कभी ऐसा न करना, यह आख़िरी बार है, समझ लिया, कमीने कहीं के! और तकेजान भूखों को न सताये, उसे आगाह कर देना! अगर उसे नहीं मालूम कि अपनी ताक़त का वह क्या करे, तो उसकी आज़माइश मेरे ख़िलाफ़ करे! चाहे वह आग-बबूला ही क्यों न हो जाये, यही उसे ठीक से बता देना! चलते बनो! तुम वहाँ पैदल जाओगे," उसने आदेश दिया।

जुमागुल बर्फ़ के ढेर पर गिरता-पड़ता आगे बढ़ गया।

फिर आबाय और येर्बोल जिदेबाय की ओर रवाना हो गये। हवा सीधे उनके चेहरे से टकरा रही थी। हिम-तूफ़ान पहले जैसी प्रचंडता से चल रहा था, बर्फ़ उनके चेहरों पर प्रहार करती, उन्हें अंधा बनाये डाल रही थी।

सुबह तक हवा थम गयी थी और बर्फ़ कहीं अधिक धीमे-धीमे गिर रही थी। दर्रे के पार से लाल-लाल सूर्य इस तरह दिखाई दिया मानो किसी कठिन परीक्षा से गुज़रकर आया हो। उसकी दोनों ओर से निकलती लाल-लाल रश्मियाँ ठंडी सुबह के धुंधलके में ख़ून की लकीरों-सी लग रही थीं। कुछ दिनों तक निर्दयता से स्तेपियों में बहने के बाद हवा पूरी तरह

थमने का नाम ही नही ले रही थी और रुक-रुककर आते हवा के झोके बर्फ़ के चूरो को अपने मे लपेट ले जाते। लेकिन आख़िर हिम-तूफान थम गया और खौफनाक चुप्पी छा गयी जब वही हवा कुहरे मे स्वनन करती प्रतीत होने लगी।

दर्कमबाय आबाय की हिदायतो का महत्व जानता था। चुनाँचे, वह रात भर कठिन घुड़सवारी करता रहा। "तुम्हारे जैसे जितने भी है, उन सबको बता दो..." आबाय के यह शब्द उसके मर्म को छू गये थे। वह इस सन्देश के साथ क़ाराबातिर, तोर्गाय, बोर्साक और जुवानतयाक क़बीलो के सारे गरीब लोगो के यहाँ सरपट भागता फिरता रहा। वह उन सबके यहाँ गया जिनके पास थोड़े से – तीस या चालीस से अधिक भेड़े नही थी। वह उन ज़रूरतमद लोगो के यहाँ भी जाना नही भूला जो मुसाकुल और जिदेबाय की समृद्ध ज़मीन के पास रहते थे।

हिम-तूफ़ान की रात मे जब कोई अजनबी ख़बर लेकर आता तो वह आम तौर से अरुचिकर ख़बर ही होती लेकिन दर्कमबाय ख़ुद आशा का रूप धारण कर लोगो के दरवाज़े खटखटा रहा था।

तीन दिनो मे हिम-तूफ़ान ने एक-एक चरागाह को बर्फ़ से ढँक दिया था और लोगो ने भारी मन से मान लिया था, हिम-तूफ़ान अब बचे-खुचे भेड़ो को भी चट कर जायेगा। हवा साँय-साँय चीत्कार करती, खिड़कियो को खड़खड़ाती, हर आदमी को जागते रहने पर मजबूर कर रही थी। ग़रीब किकर्त्तव्यविमूढ़ थे और बूढे ख़ुदा से दया की भीख माँग रहे थे। कोई मर्द, औरत या बच्चा अपने कपड़े उतारने की हिम्मत नही कर पा रहा था और न ही कोई दिन-रात सो ही पा रहा था। दिन-रात लगातार वे उन शालाओ पर ध्यान लगाये थे जिनमे उन्होने अपनी मुसीबत की मारी भेड़ो को रख छोड़ा था।

बर्फ़ से बाहर उभर आये बबूल के एक-एक अँखुवे को सावधानी से घर लाया जाता। यही स्थिति बर्फ़ की परत से उभरी झाड़ियो की टहनियो की थी। यहाँ तक कि लोग पुराने अनाजघरो की छतो से सिवारो को उतारकर जानवरो को खिलाने के लिए घर ले आये थे। लेकिन यह पक्षी के पख पर लाये गये पानी के बराबर था। वह बून्द किसे दी जाये – असमय माँ बननेवाली भेड़ को या दूध देनेवाली गाय को? या एक मात्र ऊँट को? उनका अकिचन सचयन उन मवेशियो की जान नही बचा सकता था जिनपर उनका जीवन निर्भर करता था।

विस्तृत चरागाहों तथा घास व अन्य क़िस्म के चारों के प्रचुर भंडारों के स्वामियों से मदद मिलने की बात तो किसी के दिमाग़ में आयी ही नही थी।

और निराशा की ऐसी ही रात में दर्केमबाय चक्रवात की तरह आऊलों में नष्ट हो गयी उम्मीदों को जीवित करता आ पहुँचा।

सुबह तक चारों दिशाओं से मवेशियों के ढोर क़ोनानबाय के चरागाहों की ओर बढ़ने लगे। घोड़ों पर बैठे आबाय और येर्बोल लोगों व उनके ढोरों का स्वागत करने आ गये थे – उन्हें हर कहीं कुछ थोड़ी-सी भेड़ें, तीन या चार गायें और उनके पीछे-पीछे चले आ रहे थके-हारे मर्दों, औरतों और बच्चों के झुंड दिखाई देते।

भेड़ों की स्थिति शोचनीय थी। उनकी चमड़ियाँ लटक गयी थीं और उनके पार्श्व जमे हिमकणों से फूले थे। लड़खड़ाते बकरे अन्तिम बार मंद मिमियाहट के साथ गिर-गिरकर मर रहे थे। अधिकांश आऊलों के पीछे उनके जाड़े के पड़ावों से इर्गिज़बाय के चरागाहों तक दुख का एक आलम-सा फैला था – दमकती बर्फ़ जानवरों की लाशो से पटी थी।

ऐसा कहा जाता है, भेड़ें छह दिन तक भूखी रह सकती हैं। लाशों की संख्या को देखते हुए, यह स्पष्ट था, जानवर उस स्थिति को पार कर चुके थे – वे पूरी तरह थक चुके थे। दो-तीन दिनों में एक भी जीवित न बचता।

गहरी बर्फ़ में से गुज़रना भेड़ों के लिए कठिन था। इसलिए चरवाहे पहले किसी घोड़े, किसी ऊँट या किसी गाय को आगे बढ़ा ले जाते जिससे छोटे जानवर उनके पीछे-पीछे चल सकें। भेड़ों की भूख की पीड़ा इतनी तीव्र थी कि वे अपने आगे चल रही गाय या घोड़े की पूँछ चबाने लगते।

पीछे-पीछे चल रहे स्त्री-पुरुषों की स्थिति कोई कम ख़राब न थी: पीताभ, निस्तेज, निरुत्साह वे अपने थोड़े से जानवरों के पीछे-पीछे रक्त-हीन पिशाच की तरह चले जा रहे थे। बूढ़ों के चेहरों की झुर्रियाँ गहरी हो गयी थीं, उनके फटे-चीथड़े हवा में लहरा रहे थे। सिर्फ़ औरतों ने ही नहीं, बूढ़ों ने भी अपने सिर पुराने कम्बलों में लपेट रखे थे और उनमें से अधिकांश ने बिना बूट के नमदे के मोज़े पहन रखे थे। लेकिन चरागाहों तक पहुँचते ही हर मर्द, औरत और बच्चा-बच्चा तक बर्फ़ हटाने में जुट जाता।

क़ोनानबाय के तीनों चरागाह सनीठों, सुगंधिपूर्ण फूलों व पत्तियोंवाले जंगली गुलाबों तथा अन्य गुल्मों के लिए प्रसिद्ध थे। तूफ़ान में चरागाहों के किनारे-किनारे ही बर्फ की तहें जम पायी थीं। बीच में बर्फ़ गहरी न थी और पैरों के नीचे बालू की तरह धसक जाती थी। जहाँ कहीं बर्फ़ हटा दी जाती, हरी-भरी घास या पौधे निकल आते।

किसी तरह चारा तक पहुँच पाने के बाद जानवर उस पर टूट पड़े। पचास से अधिक आऊल आ पहुँचे थे और दोपहर तक आबाय और येर्बोल ने उन सब के लिए जगह की व्यवस्था कर दी। जिन चरागाहों की रखवाली तकेजान ने इतनी चौकसी से की थी और बेचारी एक गाय तक को फटकने नहीं दिया था, अब वहाँ एक हज़ार से अधिक भेड़ें चर रही थीं। मवेशी तो थोड़े-से ही थे।

आबाय इन काँपते जानवरों और थककर चूर हुए लोगों को देखकर दुख से भर उठा था। गर्मियों में विस्तृत जयलाव में वे सुख में जीते और हृष्ट-पुष्ट दिखाई दे रहे थे लेकिन जुत ने उनकी ग़रीबी और लाचारी की सीमा प्रकट कर दी थी।

अधिकांश घरों में बीस से तीस भेड़ और तीन या चार मवेशी थे। इनके मालिकों को साल भर इन्हीं का सहारा रहता। उन्हें सामान ढोने, गोश्त के लिए ज़बह करने, तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए बेचने, उनकी खाल से पोशाक बनाने तथा कई तरह के काम में लाया जाता। जब भेड़ या जानवरों को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा था, तब भी वे कितने ग़रीब, कितने ज़रूरतमन्द थे। और उनके जैसा जीवन व्यतीत करनेवाले को "लोगों के लिए वैभवशाली जीवन!" कहा जाता। अब लोग इसे क्या कहेंगे? आज चारों ओर जुत के कारण हाय-हाय मची थी—और आबाय ने पहली बार देखा, उसके अपने लोग कितनी दयनीय ज़िन्दगी बसर कर रहे थे।

उन अभागे लोगों के लिए उसके दिल में नश्तर-सा लग रहा था जो अपने ढोरों की देखभाल के बाद उनके साथ ही खरहों की तरह झाड़ियों में गट्ठर-से बने पड़े थे।

एक बार फिर घोड़े पर उसने चरागाहों का चक्कर लगाया और बूढ़े लोगों को आगाह कर दिया:

"अगर आपको ठंड लगती हो, आप सबसे क़रीब के आऊलों में चले

जायें। वहाँ आप ख़ुद को गरमा सकते हैं और कुछ खाने को पा सकते हैं। आपके चारों ओर आपके स्वजन ही स्वजन हैं! वे आपको भगा नहीं देंगे। आप डरें मत!"

आबाय का किस तरह शुक्रिया अदा करें, बूढ़े स्त्री-पुरुष नहीं समझ पा रहे थे—उनके सारे मुश्किलात ख़त्म हो गये हैं, यह अहसास उसने उनके दिलों में भर दिया था।

घर लौट जाने के बदले आबाय ने चरागाहों के आस-पास सारे इर्ग़िज़-बाय आऊलों का चक्कर लगाया और हर कहीं बुज़ुर्गों या खाना पकानेवाली औरतों को बुलाकर कहा:

"अपने स्वजनों की मदद कीजिए। वे मुसीबत के मारे हैं। सारे देगों में गरमागरम भोजन उनके लिए तैयार कीजिए और कम से कम दिन में एक बार उन्हें खिलाइये।"

भूखे लोगों की देखभाल की जाने लगी—प्रत्येक आऊल अपने सबसे क़रीब के लोगों की देखभाल करने लगा।

आख़िर में आबाय और येर्बोल तकेजान के आऊल में जा पहुँचे। उसका आऊल मुसाक़ुल में जाड़ा बिता रहा था। लेकिन तकेजान घर पर नहीं था। सारी घटनाओं की जानकारी जुमागुल से पाकर वह आबाय के साथ बहस करने को रुका नहीं रहा बल्कि आबाय के बेलगाम कामों की शिकायत अपने पिता से करने उसी रात क़ाराशोकि रवाना हो गया था।

आबाय ने तकेजान के घर के पास घोड़े से उतरने के बजाय येर्बोल को उसकी बीवी को बाहर बुला लाने भेज दिया। क़ाराजान तुरंत ही बाहर आ गयी, उसके जबड़े भिंचे थे। चेहरा पीला व कुपित। वह बड़नक्की, लम्बी-सी औरत थी। वह स्वभाव से झगड़ालू और जली-कटी बातें सुनाने-वाली थी। उसका शौहर भी इससे बच नहीं पाता जो अच्छी तरह उसकी मुट्ठी में था। कम उम्र होने के बावजूद वह निष्ठुर, हृदयहीन और कंजूस गृहस्वामिनी थी। वास्तव में तकेजान को इससे अच्छी संगिनी नहीं मिल पाती और विवाह के बाद उसने तेज़ी से धन बटोर लिया था। इसके अलावा, काराजान को उलजान की उदारता नापसंद थी और उसी ने तकेजान को मुख्य ओताव से अलग हो जाने को प्रेरित किया था। आबाय को जो प्रसिद्धि और लोकप्रियता प्राप्त हो गयी थी और उसने अपने बड़े भाई तकेजान को अपनी प्रसिद्धि के कारण पूर्णतया गौण बना दिया था,

इस बात का भी उसे बड़ा दुख था: अपने देवर के प्रति उसकी नफ़रत उसे नासूर की तरह सालती रहती थी।

आबाय अपनी भाभी को अच्छी तरह समझता था। उसने उसका अभिवादन तक नहीं किया हालाँकि वह उसका स्वागत करने आगे बढ़ आयी थी। कोई भी बकवास उसे सहन नहीं होगी, ऐसा अहसास कराते हुए, वह अपना घोड़ा उसके क़रीब ले आया – ठीक उसी तरह जिस तरह रात को उसने जुमागुल के साथ किया था और तुरंत ही अपना मक़सद बयान कर दिया।

"मैंने सुना है, तुम्हारा पति मेरी शिकायत करने गया हुआ है। अगर मैं कसूरवार हूँ, इसे मैं ख़ुद भुगत लूँगा। लेकिन इस समय मैं तुम पर एक महत्वपूर्ण काम की ज़िम्मेदारी सौंपने आया हूँ – और तुम इसे ईमानदारी से पूरी करोगी?

"क्या काम?"

"इर्द-गिर्द के आऊल जुत में मर-खप रहे हैं। इन स्वजनों ने तुम्हारी हर तरह से सेवा की है – तुम्हारे लिए घास की कटाई की है, घास जमा की है, कुएँ खोदे हैं, तुम्हारे जानवर चराये हैं। इस समय वे दुख में हैं और तुम्हें उनकी मदद करनी है। हमने उन्हें चरागाह दे दिये हैं – उनके अपने जाड़े के पड़ाव बहुत दूर हैं और ठंड भयानक है। हम उन्हें भोजन भी दे रहे हैं। तुम्हारा काम चार आऊलों से बीस आदमियों को दिन में एक बार गर्म भोजन देना है!"

"हम कैसे कर सकते हैं, आबाय? हमारे पास ख़ुद खाने को कुछ भी नहीं।"

"झूठ! एकदम हाल ही में कारवाँ तुम्हारे लिए आटे के तीन बोरे लाया था और तुम्हारे पास गेहूँ के बोरे हैं ही। तुम्हारे गोश्त का भंडार ज्यों का त्यों पड़ा ही है। मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ – मैं मज़ाक नहीं कर रहा, क़ाराजान! भूखों के साथ अपने भंडार का कुछ तो हिस्सा बँटाओ! अगर तुम ज़िद पर टिकी रही, तुम्हारे लिए मुसीबत होगी।"

"और तुम सोचते हो, हमें ख़ुद भूखों रहना चाहिए?"

आबाय क्रुद्ध हो उठा:

"तुम चाहो तो जहन्नुम में जाओ लेकिन ज़रा इनकार करके तो देखो! मैं हर शाम यहाँ जाँच करने आऊँगा! अगर तुम इनकार करती हो, तुम्हें

ख़ुद इसके परिणाम भुगतने होंगे। जब तक मैं यहाँ हूँ, अपनी इच्छा के मुता-बिक़ तुमसे काम कराने के लिए काफ़ी ताक़त रखता हूँ। मैं तुम्हें यह करने पर मजबूर कर दूँगा – अगर अपमानित करने की ज़रूरत पड़ी तो वह भी करूँगा! क्या, समझ में बात आ रही है?"

उसने उसे घूरकर देखा, उसके हाथ में चाबुक था। क़ाराजान इशारा समझ आगे कुछ न बोली।

आबाय ने दर्कमबाय और उसके साथियों को क़ाराजान के यहाँ पिछली शाम को ही निर्दिष्ट कर दिया था। अब उसने उन्हें बुलाकर फिर अपनी भाभी से ग़ुस्से के साथ कहा:

"यह दर्कमबाय है! तुम्हारे आऊल में भोजन के लिए जिन्हें मैं भेजूँ-गा, उन्हें यह लेकर आयेगा। तुम ख़ुद उनके लिए हर चीज़ सिर्फ़ तैयार ही नहीं करोगी बल्कि सारे आऊल को उनकी देख-भाल के लिए मजबूर भी करोगी!

"और तुम वहाँ किस लिए अनाथ-से खड़े हो?", आबाय दर्कमबाय पर बरस पड़ा। "मीन-मेख मत करो, सुन रहे हो। चरागाहों में काम के बाद लौटते ही तुम खाना माँगो! अगर वे इनकार करें या हील-हवाला करें, तुम तुरंत मेरे पास आओ! और अगर तुमने इन्हें बचाने की कोशिश की, तुम दर्कमबाय नहीं बल्कि कोई बूढ़ी औरत होगे! समझ गये?"

आबाय घोड़े को एड़ लगा सरपट दौड़ा ले गया।

येर्बोल के साथ मिलकर वह दिन भर काम में जुटा रहा और सूर्यास्त के समय घर लौटा। माँ के घर पर उसने तकेजान और वृद्ध जुमाबाय को अपनी प्रतीक्षा करते पाया। तकेजान क़ोनानबाय के आदेश लेकर आया था।

उलजान के यहाँ से बुलावा आने पर मुख्य ओताव की ओर आते समय आबाय ने हर कहीं व्यापक तैयारी होते देखा – मकानों के इर्द-गिर्द, भंडार गृहों में, रसोइयों में। बड़े-बड़े कड़ाहों से भाप निकल रही थी, तीन बड़ी-बड़ी ओखलियों में औरतें गेहूँ डाल रही थीं। स्पष्ट रूप से भूखे लोगों की देखभाल की ज़िम्मेदारी उलजान ने ख़ुद पर ले ली थी।

भूखे लोगों की पहली खेप, क़रीब बीस लोगों को गरमागरम भोजन कराया जा चुका था। अपनी उपस्थिति से उन्हें परेशान न करने की इच्छा से आबाय मुख्य ओताव की ओर चल पड़ा।

उसने जुमाबाय का अभिवादन कर अपना सलाम पेश किया। भाइयों की मुलाक़ात में कोई सरगर्मी न थी, आबाय तो तकेजान की ओर देखने की भी ज़रूरत नहीं समझ रहा था। जुमाबाय ने आबाय को क़ोनानबाय का सलाम कह सुनाथा।

स्पष्ट रूप से पिछली रात ग़ुस्से के मारे तकेजान, आबाय ने जो कुछ किया था, उसकी खोज-बीन के लिए भी नहीं रुक पाया था और क़ोनान-बाय को सिर्फ़ दर्केमबाय और जुमागुल के चलते हुए झगड़े के बारे में ही बताया था। सुबह से ही आस-पास के आऊलों के ग़रीब लोग उसके चरा-गाहों पर चढ़ आये हैं, उसकी जानकारी क़ोनानबाय को अब तक नहीं हो पायी थी। अपनी ज़मीन पर दर्केमबाय का दिखाई देना ही तकेजान को नाक़ा-बिलेयक़ीन लग रहा था। बहुत से दूसरे लोग भी दर्केमबाय की तरह यहाँ आ सकते हैं, यह विचार तो उसके दिमाग़ में आया ही नहीं था। इसका तो सवाल ही नहीं उठता! लेकिन अब उसे सारा क़िस्सा मालूम हो चुका था और वह वस्तुत: गुस्से के मारे पागल हो उठा था।

दर्केमबाय को पनाह देना क़ोनानबाय की नज़र में ग़लत है, यह समझाते हुए जुमाबाय ने आबाय को सन्देश दिया। "किसी नालायक आदमी के प्रति दया दिखाने से कोई लाभ नहीं होगा," उसने कहा था। "दर्केमबाय ने एक बार मुझे बन्दूक का निशाना बनाना चाहा था। मैंने उसे अकेला छोड़ दिया है, उसे इसी से संतोष करना चाहिए। अगर आबाय दया दिखाना ही चाहता है तो मित्रों पर दिखाये, ऐसे कमीनों पर नहीं। वह दर्केमबाय को निकाल बाहर कर दे।" उसके पिता ने यही आदेश दिया था।

चुपचाप स्वीकार कर लेने की बात तो दूर रही, आबाय ने बहाना बनाने या माफ़ी माँगने की भी कोई कोशिश नहीं की:

"मेरे पिता जी का कहना है, एक सच्चे मुसलमान की तरह वह सबका भला चाहते हैं। किसी सच्चे मुसलमान का पहला गुण मुसीबतज़दा लोगों की मदद करना है। मैं लोगों को अपना वचन दे चुका हूँ। मैं उन्हें भोजन दे रहा हूँ। मेरे पिता इसे स्वेच्छाचारिता न समझें बल्कि अपने आशीर्वाद दें," उसने दृढ़तापूर्वक कहा।

तकेजान ख़ुद पर क़ाबू नहीं रख सका।

"अगर तुम इतने धर्मात्मा हो तो फिर मुल्ला का साफा सिर पर डालकर दर्कमबाय के लिए कुशीर * जमा करना शुरू कर दो।" वह फट पडा।

"अगर ज़रूरत पडी तो ऐसा भी करूँगा। लोग पीडित है और मैं बलिदान को तैयार हूँ।"

"तो फिर शुरू हो जाओ! उनके लिए भीख माँगने निकल पडो।"

"ऐसा करने से पहले मै लोगो को वह सब दे डालूँगा जो मेरा है और वह भी जो तुम्हारा है।"

"यह तो तुम कर ही चुके हो। तुमने न सिर्फ दर्कमबाय को बल्कि सब किसी को हमारे चरागाह दे डाले है। तुम्हे खुद कगाल हो जाने से सन्तोष थोडे ही होगा–तुम हम सब को अपने साथ ही कगाल बना देना चाहते हो! तुम हम लोगो का सर्वनाश कर देना चाहते हो, चाहते हो न–अपनी माताओ को भूखो मारना!"

"तुम्हे मेरी माताओ के लिए चिन्तित होने की कोई ज़रूरत नही!" आबाय बीच मे ही बोल उठा। "सुन रहे हो? मेरी माताएँ तुम्हारी उस मक्खीचूस चुडैल की तरह अपनी माँदो मे छुपी रहनेवाली गिलहरियाँ नही! ज़रूरत पडने पर वे पूरे दिल से लोगो के दुख बँटा सकती है, उनके साथ पीड़ा झेल सकती है। जो कुछ मैने किया है, वह सब उन्ही की इच्छाओ के अनुरूप किया है। उनके लिए परेशान होने की कोई जरूरत नही!"

उसकी बाते ऐसी थी मानो कोई बाप अपने बेटे से कह रहा हो आबाय के शब्दो मे आदेश का पुट था। तकेजान शायद और भी बहस करता लेकिन उलजान बीच मे आ गयी।

"अब यह बन्द करो। बहुत मैं-मै तू-तू कर चुके," वह तेज़ी से बीच मे बोल पडी और जुमाबाय की ओर मुखातिब होते हुए उसने कहा.

"अच्छा हो, तुम वापस लौट जाओ। तुम्हारे आने से पहले ही आबाय सारे भूखे लोगो को बुला चुका है। जो कुछ हमारे पास है, हम उन्हे देगे–जहाँ तक भोजन का सवाल है, हमे उसकी कमी नही। कुनेकेन को कहना वे चिन्तित न हो; लोगो को हम अपना कौर देगे। वह अपने बेटे को वचन तोडकर शर्मिन्दा होने पर मजबूर न करे।"

तकेजान ने आगे तो कुछ नही कहा लेकिन उसके विचारो मे तनिक भी

---

* कुशीर–गिरजाघर के लिए जमा किया जानेवाला दशमाश। –स०

परिवर्तन नहीं आया था। टोप पहन वह जाने को था तभी उलजान ने उसमें दमित क्रोध को महसूसकर ज़ोरदार आवाज़ में कहा:

"रुको एक पल! क़ाराजान को अपना दिमाग़ ठिकाने रखने और जिस तरह खिलाया जाता है, उसी तरह भूखे स्वजनों को खिलाने कहना! वह अपना दहेज नहीं बाँट रही। वह अपने होश में रहे और अपने बारे में कोई ग़लतफ़हमी न पाले!"

तकेजान और वृद्ध जुमाबाय अपने घोड़ों पर रवाना हो गये। चरागाहों के निरीक्षण और उन्हें काम में ला रहे आऊलों की गिनती कर वे क़ारा-शोक़ि की ओर चल पड़े।

क़ोनानबाय ने उनकी बातें ध्यान से सुनीं। आबाय और उसकी माताओं को अपने-पराये का अहसास नहीं रह गया है, यह सोचकर वह ग़ुस्से से भर उठा था। आबाय के दुराग्रहपूर्ण कार्यों से स्पष्ट था, वह उचित-अनुचित समझ पाने की शक्ति गँवा चुका था, वह किसी की बात मानने को तैयार न था।

दूसरे दिन आबाय को क़ोनानबाय का सलाम देने जाक़िप जिदेबाय आ पहुँचा।

जाक़िप को सिर्फ़ महत्वपूर्ण मामले निबटाने ही भेजा जाता था और क़ोनानबाय ने अपना दूसरा आदेश अपने भाई जाक़िप के मार्फ़त भेजा था यानी मामला संगीन था। क़ोनानबाय के स्वजन उसके सलामों की अहमियत का अन्दाज़ा सन्देशवाहकों द्वारा लगाने के आदी थे। जब किसी आदमी को कुचलकर उसकी जायदाद पर क़ब्ज़ा जमाना होता, वह क़ाराबास और कामिसबाय को भेजा करता। अगर "उसे बता दो, या कह दो," जैसा सन्देश होता, जुमाबाय को भेजा जाता, हालाँकि कभी-कभी आबाय या क़ुदायबेर्दि भी ऐसे सन्देश ले जाया करते थे। अगर बात "धमकाने, डराने या बुरी तरह डाँट-फटकार" की होती, मायबासार को चुना जाता। "समझाओ और आगाह करो!" जैसा सन्देश जाक़िप के सुपुर्द किया जाता। यह काम उसे तभी सौंपा जाता जब सारे क़बीलों से सम्बन्धित अत्यन्त महत्वपूर्ण मामले होते। लेकिन अगर क़बीलों के बीच उठ खड़े विवादों से सम्बन्धित सचमुच कोई असाधारण सवाल हो तो यह काम क़ाराताय को सौंपा जाता।

चुनाँचे, जाक़िप को देखते ही आबाय समझ गया, क़ाराशोक़ि से आने-वाले आदेशों का परिमाण और महत्व बढ़ रहा है। बहरहाल, वह इसके

लिए तैयार था और जाक़िप की ओर एक बार भी नज़र डाले बिना चुप-चाप उदासी से बैठा सुनता रहा।

क़ोनानबाय की हिदायतें देने से पहले जाक़िप ने ख़ुद अपने कई विचार सामने रखे। वह ख़ुद अपनी ओर से बोलता प्रतीत हो रहा था लेकिन वे अल्फ़ाज़ कहाँ से आये है, आबाय अच्छी तरह जानता था। उसने अपने पिता के सलामों मे छुपे गूढ़ अर्थो को समझना सीख लिया था।

जाक़िप ने समझाया, कुछ मामले ऐसे होते है जिनमें पहलक़दमी की ज़िम्मेदारी पिता पर छोड़ देनी चाहिए और पुत्र को सिर्फ़ उसका समर्थन करना चाहिए। इसे स्पष्ट रूप से दिमाग़ में बैठा लेना चाहिए। पिता के अच्छे कार्य पुत्र को सम्मान प्रदान करते है लेकिन हठधर्मिता, माँ-बाप की इच्छा के प्रति अनादर, स्वेच्छाचारिता के लिए दुराग्रहपूर्ण संघर्ष करना पुत्र को शोभा नही देता।

आबाय टस से मस न हुआ था। निश्चित रूप से ऐसे भी पिता थे जो अपने बेटों के कार्यो का समर्थन और उन्हें सम्मान व श्रद्धा प्राप्त करने में हर तरह से मदद करते थे।

"ऐसे भी पिता है जो अपनी माँगों, योजनाओ और इच्छाओ के बोझ से बेटो को कुचल नही डालते," उसने ऊँची आवाज़ में अपने विचार प्रकट कर दिये।

लेकिन जाक़िप ने अपनी बात जारी रखी: अगर किसी को मदद और अपनी ज़मीन के इस्तेमाल की इजाज़त देनी ही है तो अल्पकालीन मुसीबत के दौरान खाते-पीते आऊलों को, उनको जिनके पास पर्याप्त पशु, धन हो, देनी चाहिए। हो सकता है, ऐसा समय आये, जब उनकी मदद की दरकार हो। लेकिन वे लोग भला है किस क़ाबिल जिनके लिए आबाय ने इतनी परेशानी मोल ले ली है? वे सब मिलकर भी इस क़ाबिल नही हो सकते कि एकाध घोड़ा या ऊँट दे पाये। उसके पिता की यही राय थी और उनके विचार वही है जो उन्होने जुमाबाय द्वारा भेजे गये अपने पहले सलाम मे व्यक्त किये थे।

इस दलील का आबाय पर कोई असर नही पड़ सका। जाक़िप जिस चीज़ के बारे मे कह रहा था, वह मदद नही थी बल्कि मित्रों अथवा निकटतम सम्बन्धियों के बीच पारस्परिक सहायता थी। आबाय ने अपना मत प्रकट किया और अपना विरोध भी स्पष्ट कर दिया – रंच मात्र भी वह अपनी बात से नही डिगा।

"क्या तुम जमीन और पशुओ के मालिक हो?" जाकिप बीच मे ही बोल उठा। "यह सब जमा करने मे क्या तुम्हारी मेहनत लगी है? जो कुछ तुम्हारे पिता ने जमा किया है, क्या तुम उन्हे उडा देना चाहते हो? हो सकता है, कल जुत का प्रकोप तुम्हारे या तकेजान के जानवरो पर हो जाये। तुम्हारी माताएँ है—कम से कम उनका ख्याल तो करो!"

यह भी कोई नयी बात न थी। लेकिन इस सवाल पर वही जवाब जाकिप के सामने दुहरा देना जो उसने तकेजान को दिया था, अशिष्टता होती।

"आप ठीक कहते है, हो सकता है मै अपनी माताओ के मुँह का कौर छीन रहा होऊँ," उसने व्यग्यपूर्वक स्वीकार किया और ज़ेरे पर नजर डाली। "लेकिन मेरी माताओ मे एक यहाँ बैठी है। वह सिर्फ़ मेरी ही माँ नही बल्कि आपकी और मेरे पिता की भी है। हमारी जायदाद की असली मालकिन वही है। दूसरे शब्दो मे—हमे उसकी इच्छाओ का पालन करना चाहिए। वह क्या कहती है, हमे सुनना चाहिए, क्या ठीक है?"

और आबाय अपनी दादी के क़रीब आ गया।

पिछले कुछ वर्षो मे बूढ़ी जेरे हड्डियो का ढाँचा भर रह गयी थी और उसके चेहरे की झुर्रियाँ बहुत गहरा गयी थी। आबाय को अपनी ओर झुकते देख, उसने अपना कान उसकी ओर कर दिया। उसके पोते ने थोड़े मे लेकिन साफ-साफ सब कुछ ज़ोर-ज़ोर से कहकर समझा दिया और आखिर मे कहा, जो कुछ वह कहेगी, वही अन्तिम होगा।

ज़ेरे ने जाकिप पर अपनी भौहे चढा ली।

"मेरे बेटे को मेरा सलाम देना," उसने कहा। "मुझे बहुत दिन नही जीना है। क्या मेरी किस्मत मे अपने उन स्वजनो को नष्ट होते देखना बदा है जो भूखे और बेघर है! क्या मै अब भी अनाथो और विधवाओ को आँसू बहाते देखूँ? जब मै मरूँगी तो क्या मेरा बेटा उन लोगों को नही खिलायेगा जो उसकी माँ के जनाज़े मे इकट्ठा होगे? तो फिर कह दो, वह इन गरीब, असहाय लोगो को न खदेड़े; उन्हे मेरे जनाजे मे मातम मनानेवाले लोग समझ ले।"

ज़ेरे के शब्दों से वह पूरी तरह किंकर्त्तव्यविमूढ हो गया। लेकिन अपनी दादी को इतना व्यथित देख आबाय जाकिप पर नाराज हो उठा।

"अगर वास्तव मे आपको माँ ज़ेरे की चिन्ता है तो उसे मौत की बात छेड़ने पर मजबूर न करें," उसने कहा।

"जिन लोगों को मैंने शरण दी है, उन्हें किसी भी तरह किसी को भगाने नहीं दूंगा," फिर उसने दृढ़तापूर्वक एलान किया।

जाक़िप को ज़ेरे से बहस करने की तो हिम्मत नहीं हुई लेकिन वह अपने भतीजे को शर्मिन्दा करने को कटिबद्ध था।

"तुम्हें अहसास है, तुम क्या कह रहे हो? क्या तुम सच में इस बेशर्मी पर टिके रहना चाहते हो? तुम्हारे शब्द तुम्हें कहाँ ले जा रहे हैं, यह देखकर मुझे बहुत बुरा लग रहा है।"

"अब और अधिक कैफ़ियत की कोई ज़रूरत नहीं," आबाय ने कहा। वह अब भी क्रुद्ध था। "आपने काफ़ी अच्छी तरह मुझे समझ लिया है। हम बच्चे नहीं! अगर लोग वहाँ अपने नव-प्राप्त सुख का भोग कर रहे हैं तो उन्हें हमें भी शान्ति से रहने देना चाहिए, वे हमें अपनी पसन्द से जीने छोड़ दें!"

अपने पूरे जीवन में जाक़िप को इर्ग़िज़बाय में एक भी ऐसा आदमी नहीं मिला था, जिसने क़ोनानबाय पर इतनी तीखी चोट करने की हिम्मत की हो।

"बहुत हुआ, बेटे! अब कुछ न कहना! मैं तुम्हारे अल्फ़ाज़ तुम्हारे पिता तक कैसे पहुँचा पाऊँगा? मैं कभी नहीं भूलूंगा, मैंने अपने जीवन में सबसे ज़्यादा भयानक शब्द सुने हैं—तुमने ऐसे शब्द कहे हैं जिन्हें कहते हुए कोई दूसरा आदमी काँप उठता!" इतना कहकर जाक़िप उठ खड़ा हुआ।

आबाय के शब्दों में एक विशेष अर्थ था। उसने जाड़े में क़ोनानबाय द्वारा किये एक अविचारपूर्ण कार्य की याद दिला दी थी।

जाक़िप अन्तिम सन्देशवाहक था; फिर क़ाराशोक़ि से कोई भी नहीं आया। अगर हालात कुछ और होते, इन वार्ताओं का अंत भी कुछ और होता। लेकिन सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो इसका निश्चित कारण जाड़े में क़ोनानबाय का अप्रत्याशित आचरण ही था। अपनी वृद्धावस्था के बावजूद—वह साठ से ऊपर हो चुका था—क़ोनानबाय एक जवान बीवी ब्याह लाया था।

पिछले दो महीनों के अन्दर उलजान तथा उसके इर्द-गिर्द के सारे लोग क़ोनानबाय से कट-से गये थे। जिदेबाय में उलजान और आयग़िज़ थीं, क़ाराशोक़ि में उसकी बायबिशे कुन्के थी, इसके बावजूद उसने एक और

शादी की थी – सत्रह साल की नूरगानिम से। उसने विवाह की अपनी इच्छा क़ाराताय के अलावा किसी को नहीं बतायी थी।

पिछले साल ग्रीष्म में क़ाराताय की बीवी मर गयी थी। एक दिन क़ोनानबाय ने उससे मुलाक़ात होने पर पूछा :

"तुम दुबारा शादी क्यों नहीं कर लेते?"

ऐसा लगा, क़ाराताय ने ख़ुद इस मामले पर विचार किया है।

"आह, क़ोनानबाय," उसने जवाब दिया। "मुझे औरत की क्या ज़रूरत है? जब कि मैं ख़ुद औरत जैसा बन चुका हूँ।"

लेकिन क़ोनानबाय ने उसकी बात न मानी।

"यह सच नहीं, क़ाराताय," उसने आपत्ति की। "जवानी में हरेक हसीना को चाहे वह परायी ही हो, हाथ बढ़ाया जा सकता है लेकिन बुढ़ापे में उसे अपनी बग़ल में रखना ही बेहतर है।"

उसने क़ाराताय को तब तक नहीं छोड़ा जब तक उसका घर फिर से नहीं बस गया। लेकिन अपनी शादी के दिन क़ाराताय ने बदले में क़ोनानबाय को तंग करना शुरू कर दिया।

"अगर तुम सच कहते हो तो फिर तुम ख़ुद क्यों नहीं एक और बीवी ब्याह लाते? तुम मेरे आराम की फ़िक्र कर रहे हो लेकिन तुम्हें भी तो आराम चाहिए। तुम्हारी सारी बीवियाँ बच्चों में और अपने-आप में लगी रहती हैं। तुम्हें किसी जवान प्राणी की ज़रूरत है जो सिर्फ़ तुम्हारी देखभाल कर सके," उसने ज़ोर डाला।

बेहिसाब बहस-मुबाहसे के बाद दुल्हन का – सत्रह साल की नूरगामिन का चुनाव किया गया।

वह सिबान क़बीले के साथ रहनेवाले हाजी बेर्दिख़्वाजा की बेटी थी। हाजी के तुर्किस्तान से आकर सिबान लोगों के साथ रहते बहुत अर्सा नहीं हुआ था। उसके क़ोनानबाय और क़ाराताय से बहुत अच्छे ताल्लुक़ात थे। क़ोनानबाय मुक़द्दस किताबों के बारे में उसकी जानकारी, चतुरतापूर्ण कथनों और क़ुरान की व्याख्याओं के कारण उसे पसन्द करता था और प्राय: उसके साथ अपनी शामें बिताया करता था।

नूरगानिम की अब तक सगाई नहीं हुई थी। किशोरावस्था के बावजूद वह सुगठित लड़की थी। उसके नाक-नक़्श आकर्षक और बाल घने काले थे।

उसके चेहरे पर कोमल मृदुता श्रौर श्राँखों में बुद्धिमानी व सजीवता की चमक थी।

क़ाराताय की सलाह पर क़ोनानबाय ने नूरग़ानिम से विवाह करने श्रौर बेर्दिख़्वाजा के पास श्रगुश्रा भेजने का फ़ैसला किया। हाजियों में बहु-विवाह का प्रचलन न था श्रौर पहले तो वह भयभीत हो उठा। उसके श्रलावा नूरग़ानिम उसकी सबसे छोटी श्रौर लाड़ली बेटी थी–ऐसी जिसके लिए वह सब कुछ सह सकता था। जब उसने क़ोनानबाय का सलाम सुना, वह वृद्ध व्यक्ति तैश से चीख़ पड़ा:

"क्या उनका ख़्याल है, मैं श्रपनी बच्ची बूढ़े क़ोनानबाय को सौंप दूँगा!"

लेकिन उसके बेटे जिनके विचार में क़ोनानबाय का निकटतम स्वजन होना श्रच्छी बात थी, उससे सहमत नहीं थे श्रौर वे तीन दिनों तक श्रपने पिता को दिक करते रहे। श्राख़िर मजबूर हो उसे शादी के लिए श्रपनी स्वीकृति देनी ही पड़ी। बेर्दिख़्वाजा की स्वीकृति पाते ही क़ोनानबाय ने दहेज भेज दिया श्रौर इस तरह उसी वर्ष जाड़े में नूरगानिम से विवाह कर लिया।

नये तोक़ल के बारे में उलजान श्रौर श्रायग़िज़ को कुन्के के जान-बूझकर भेजे एक श्रादमी से जानकारी मिली। उलजान को तनिक भी ईर्ष्या न थी। उसके चार बड़े-बड़े बेटे थे, पोते-पोतियाँ थीं श्रौर वह भड़क उठनेवाले लोगों में न थी। श्रब वह क़ोनानबाय को श्रपने पति के रूप में नहीं बल्कि बस श्रपने बेटों के बाप के रूप में देखा करती थी। वह उसे एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा करती थी जिसके साथ-साथ बिताये श्रनेकानेक वर्षों में घनिष्ठता हो गयी थी। उसके प्रति श्रन्य सारी भावनाएँ उसके दिल में कब की मर चुकी थीं।

इसके बावजूद वह इस नये विवाह के विरुद्ध थी। उसने जुमाबाय को बुला भेजा।

"काश, वह जीवन में कम से कम एक बार भी हमसे सलाह ले लेते," उसने कहा, "तो विवाह नहीं करते। इसके कारण बेहिसाब विवाद उठ खड़े होंगे। उन्हें श्रपने बच्चों के सामने थोड़ी शर्म तो महसूस करनी चाहिए।"

जब उलजान ने यह ख़बर श्राबाय को दी, वह नफ़रत से भर उठा।

"हम उन्हें पिता के रूप में आदर करना छोड़ दें, यही वह चाहते हैं–वह हमें बैरी बना देना चाहते हैं," वह गुस्से से सोचता रहा। "वह उन लोगों से विचार-विमर्श क्यों नहीं करते जो उनके क़रीबी हैं, प्रिय हैं–जैसे दादी-अम्माँ ही या फिर मेरी माँ भी तो है जो उनकी जीवन-संगिनी रही है? क्या वह नहीं समझ पाते कि हम, उनके बच्चे ऐसी नयी माँ पाकर शर्मिन्दा होंगे जो हम में से किसी से भी उम्र में कम है?" उलजान से उसने सिर्फ़ इतना ही कहा कि पिता का यह काम उसे पसन्द नहीं और जुमाबाय के मार्फ़त यह सन्देश भेजने की सलाह दी: "चूँकि उन्हें हमारे प्रति कोई सम्मान नहीं, वह अपनी आग में ख़ुद जलते रहें लेकिन इतना जान लें, उन्होंने हमें बहुत शर्मिन्दा किया है।"

उलजान का जवाब सुनने के बाद क़ोनानबाय कुन्के के पास जा पहुँचा। उससे अपनी बात मनवाना वह जानता था।

"उन्हें पागल होने दो," उसने कहा, "लेकिन तुम तो वैसा व्यवहार नहीं ही करोगी। तुम ख़ुद ही फ़ैसला करो और मेरा साथ दो!"

कुन्के हमेशा से ही अपने व्यक्तिगत छोटे-मोटे फ़ायदों को देखने में माहिर थी। उलजान के कई बच्चे थे और ज़ेरे के रूप में उसे एक संरक्षक भी प्राप्त था। क़ोनानबाय और उलजान में अगर झगड़ा हो तो उसे ही लाभ होता। स्वजन हमेशा उलजान को घेरे रहते हैं और उसका घर अच्छी चीज़ों से भरा रहता, यह बात ख़ास तौर से उसे लगातार सालती रहती।

"बस संख्या में अधिक होने के कारण वे फ़ैसलाकुन स्थिति में बने रहते हैं," वह सोचा करती, "विरासत भी उन्हें ही मिलेगी।" इसी कारण वह भीतर ही भीतर उलजान से डाह किया करती। क़ोनानबाय विवाह करना चाहता है, यह बात पूरे परिवार के लिए महान घटना थी और वह निरसन्देह इसका सबसे अधिक लाभ उठाना चाहती थी। हालाँकि पहले तो उसके दिल में विवाह की अनुमति न देने की इच्छा हुई थी लेकिन बुद्धिमत्ता-पूर्वक वह उलजान की राय जानने तक इन्तज़ार करती रही। अगर उलजान सहमति दे देती तो वह बड़ी मुश्किल में पड़ जाती और हो सकता था, वह अपने पति का समर्थन भी खो बैठती। इसी कारण धूर्ततापूर्वक उसने सारी चीज़ों से उलजान को अवगत करा देने का फ़ैसला किया। उससे मिला उत्तर उसके लिए अत्यन्त सन्तोषजनक था: स्वीकृति की बात तो दूर रही, मुख्य श्रोताव ने क़ोनानबाय के कार्य की तीव्र निन्दा की थी। फिर कुन्के

ने अपने पति की आँखों में उलजान को तुच्छ बनाना शुरू कर दिया और ऐसी विवेकपूर्ण पत्नी का स्वांग रचते हुए उसका पक्ष लिया जो क़ोनानबाय को अच्छी तरह समझती थी और उसके कार्य का पूरी तरह अनुमोदन करती थी।

"नूरग़ानिम को मेरे पास ले आइये," उसने व्यग्रतापूर्वक कहा। "उसे मेरे साथ रहने दीजिए। उलजान तो उसका जीवन दूभर कर देगी!"

सब कुछ कुन्के की इच्छा मुताबिक़ ही हुआ और क़ोनानबाय नूरग़ानिम को क़ाराशोक़ि ले आया। वह दो महीनों से जिदेबाय नहीं गया था और अब भी जब जुमाबाय और जाक़िप आबाय के साथ बातचीत करने आये थे, वह मुख्य ओताव से खिंचा हुआ था।

जाक़िप से हुई बातचीत ने आबाय की दुखती रग छू ली थी। लोगों की आम दुर्दशा देखकर पुराना घाव हरा हो उठा था। दोनों मर्मभेदी घटनाओं ने उसे अपने पिता के विरुद्ध कर दिया था। नौजवान भड़क उठा था और उसका प्रयास अप्रत्याशित रूप से सफल रहा था। क़ोनानबाय ने अब उसे तंग करना छोड़ दिया था।

यूँ तो सिर्फ़ पन्द्रह दिन बीते थे, वे महीनों की तरह प्रतीत हो रहे थे। जाड़े के इस छोटे से आख़िरी दौर में लोग भयावह जुत से चीत्कार कर उठे थे। अप्रैल की शुरुआत में जब पौधों के पहले कोंपल फूटते थे, यही महीना सबसे कठिन साबित हुआ था। असामान्य कुहरे और हिम-तूफ़ान ने लोगों को अचानक ही धर दबोचा था। इस प्राकृतिक आपदा से अपार क्षति हुई थी। इस अल्पकाल में ही इतनी बर्फ़ गिरी थी कि लोग इसे हमेशा "अप्रैल का जुत" या "आख़िरी जाड़े का जुत" कहकर याद किया करेंगे।

मुसीबत के मारे आऊलों के जानवर पन्द्रह दिनों तक क़ोनानबाय के चरागाहों पर रहे लेकिन फिर मौसम में परिवर्तन आ गया और स्तेपियों में गर्म दक्षिणी समीर बहने लगा। काश, यह एक माह पहले आया होता तो इसका स्वागत वसंत के अग्रदूत के रूप में उल्लासपूर्वक किया जाता। लेकिन अब यह शरद द्वारा छायी मुसीबत की समाप्ति का सूचक मात्र रह गया था।

क़ोनानबाय के आग्रहपूर्ण आदेशों की अवहेलना करते हुए, आबाय और उलजान तन-मन से भूखों की सेवा में, उन्हें आराम पहुँचाने और

उनके ढोरों की देखभाल में लगे रहे। आबाय लगातार घोड़े पर उनका चक्कर लगाता रहा। वह दुबला हो गया था, ठंड से उसका चेहरा सुर्ख और पहले से कहीं अधिक साँवला पड़ गया था। लेकिन उसकी मेहनत बेकार नहीं गयी; पचासों आऊल के मवेशी जुत से सही-सलामत बच गये।

२

वसंत की पहली हवाओं ने बर्फ़ तेज़ी से पिघला दी। सिर्फ़ पहाड़ियों ने ही नहीं, घाटियों ने भी अपने हिम-आवरण उतार दिये थे। इतने समय तक सुस्ती में पड़े रहने से मानो शर्मिन्दा हो बर्फ़ को उन दिनों के आने से पहले चल देने की जल्दी मची थी जिनके बारे में कहा जाता है, "धरती ने अपनी बाँहें आलिंगन को फैला दी हैं।" सूरज चमकने लगा, आकाश नये मौसम के मुलायम-मुलायम बादलों से भर उठा।

जिदेबाय में शरण पाये आऊल अपने भिन्न-भिन्न जाड़े के पड़ाव की ओर रवाना होने के लिए अलाहदा हो गये। लोगों को जीवन बचाने में ज़ेरे और उलजान ने जो मदद की थी, उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए शब्द न थे।

उनके चले जाने के बाद उलजान ने अपने जाड़े के समय काम आनेवाले गोश्त के भंडार के ख़त्म हो जाने की सूचना दी। उसी दिन बूढ़े चरवाहे सताय ने मर-खप गयीं भेड़ों की गिनती की – उन पन्द्रह दिनों में दो सौ भेड़ें काल-कवलित हुई थीं।

जिदेबाय और मुसाकुल में जाड़ा व्यतीत कर रहे तीन आऊलों में सिर्फ़ ज़ेरे के मुख्य आऊल को ही इतना बड़ा नुक़सान झेलना पड़ा था। तकेजान को एक भी भेड़ का नुक़सान नहीं हुआ था और गर्मियों में उसके ढोर एकदम सही-सलामत बाहर आये।

जुत की भयावहता का प्रभाव सिर्फ़ आऊलों के पास चर रहे मवेशियों पर ही नहीं बल्कि ग्रीष्म के पहले आसार नज़र आते ही शरद्कालीन चरागाहों से लौट आये घोड़ों पर भी पड़ा था।

क़ोनानबाय के थके-माँदे घोड़ों की शोचनीय स्थिति थी, वे बड़ी कठिनाई से किसी प्रकार जिदेबाय तक पहुँच पाये थे। सबसे मज़बूत बीजाश्व घोड़े-घोड़ियाँ भी छाया-मात्र रह गयी थीं, उनके चमड़े झुलझुले, आभाहीन हो गये थे, पैर सूज गये थे, जोड़ उभर आये थे। ढोरों में एक भी शावक न बचा था, सिर्फ़ सबसे मज़बूत घोड़े ही जीवित रह पाये थे।

तोबिक़्ति के असंख्य पशु-ढोरों में सामान्य रूप से क़ोनानबाय और इर्ग़िजबाय के तथा बायदालि, सुयून्दिक़ व बायसाल के ढोर ही कमोबेश बच पाये थे। और जो बचे थे, वे भी शायद ही जाड़े के पड़ाव तक पहुँच सके थे। स्तेपियों के पार खड़े अस्थियों के जीवित ढाँचे क़यामत का आभास दे रहे थे (जैसा कि आबाय ने मदरसे में पढ़ा था) जब मृतक अपनी क़ब्रों से निकलकर, कफ़न में लिपटे अनादि काल तक भटकते फिरेंगे।

क़ोनानबाय, बायसाल और उनके स्वजनों ने अपने जानवरों की हिफ़ाज़त के लिए सब कुछ किया था। उन्होंने ग़रीब परिवारों की ज़मीन अपने क़ब्ज़े में कर ली थी, अपने जानवर बर्फ़ से प्रभावित चरागाहों से हाँक लाये थे और उन्हें एक चरागाह से दूसरे में चराते रहे। दूसरों के मुक़ाबले वे कहीं अच्छी तरह बच निकले थे। उनके घोड़े चाहे पतले भले हो गये हों लेकिन जीवित तो बचे थे। जाड़ा ख़त्म हो चुका था और दुर्बल पशु तेज़ी से मोटे होने लगे।

दूसरे क़बीले अपने को ख़ुशक़िस्मत समझते अगर उनके पशुओं की स्थिति भी ऐसी ही रह गयी होती लेकिन उनमें से बहुतों ने तो अपने ढोरों का आख़िरी जानवर तक गँवा दिया था। तोग़ाय, जुवानतयाक़, तोपाय, जिगितेक और बोकेंशी पतझड़ में शरद्‌कालीन चरागाहों में चराने के लिए ले गये प्रत्येक एक हज़ार घोड़ों में से सिर्फ़ सत्तर से अस्सी तक ही लौटाकर ला पाये थे। दूसरे जानवरों के मुक़ाबले जुत ने उन्हें कहीं अधिक बड़े पैमाने पर नष्ट कर डाला था।

आऊल अत्यधिक शोकग्रस्त थे। लोगों ने एक-दूसरे के यहाँ जाना-आना छोड़ दिया था और इस तरह जीवन बिता रहे थे मानो भीषण तूफ़ान के ध्वंसावशेषों के बीच रह रहे हों। उन्हें सिर्फ़ एक ही बात की चिंता थी—वसन्त की शुरुआत में हत्यारी हवाओं से बच रहे जानवरों की रक्षा करने की।

सिर्फ़ एक ग्राऊल को अपने घोड़ों के बारे में कोई चिन्ता न थी: जिदेबाय में ज़ेरे के ग्राऊल को। क़ोनानबाय ने शरद्कालीन चरागाहों से लौटे सारे घोड़ों को चिंगीज़ की ओर ले जाने का ग्रादेश दे, उनकी देखभाल का ज़िम्मा अपने ऊपर ले लिया था।

फिर गर्मियों का मौसम आ पहुँचा, हरी-भरी घासें उग ग्रायीं। जिदेबाय के ग्रास-पास सड़ रही लाशों ने हवा को दूषित करना शुरू कर दिया और संक्रमण व बीमारियों का ख़तरा पैदा कर दिया। चुनाँचे, उलजान ने शरद्कालीन घर छोड़ ग्रोतावों में रहने का फ़ैसला किया।

ग्रोतावों में जाने से पहलेवाली शाम, ज़ेरे अचानक ही बीमार हो गयी। अत्यन्त कारुणिक रूप से वह कराहने लगी, वृद्धा के लिए साँस लेना दूभर हो गया और सवेरे तक तो इतनी कमज़ोर पड़ गयी कि वह हिल-डोल भी नहीं सकती थी। ग्राबाय और उलजान ख़ौफ़ के मारे उसके बिस्तर के पास ही बनी रहीं। उन्होंने उसे पानी दिया, ग्राराम से लिटाया और किसी के ग्रानेजाने से उसे थकान होगी, इस डर से किसी को भी घर के अन्दर नहीं ग्राने दिया। दूसरे दिन शाम तक उलजान की ग्राशा निराशा में बदल गयी। ग्राबाय से कुछ कहे बिना उसने एक सन्देशवाहक क़ाराशोक़ि भेज दिया। बहू और पोता अपनी वृद्धा माँ के पास रात भर बैठे रहे और सुबह में ज़ेरे की साथ न देती आंखों ने उनकी ग्राख़िरी बार तलाश की। पल भर को ग्राबाय का हृदय उम्मीद से भर उठा और वह ग्राशा भरी निगाहों से अपनी दादी की ओर देखता उठ खड़ा हुग्रा जो कुछ कहने की कोशिश कर रही थी। ग्राबाय तो न समझ सका लेकिन उलजान उसके होठों के हर जुंबिश को समझ रही थी। वे दोनों मर रही वृद्धा पर झुक पड़े जो अस्पष्ट रूप से कुछ बुदबुदाकर कह रही थी।

उसकी ताक़त जवाब दे चुकी थी लेकिन उसका दिमाग़ साफ़ था। सिर्फ़ उसकी ग्रावाज़ न सुनाई देने लायक़ हो गयी थी।

"क्या मैं... क्या मैं... जीवन में तुम लोगों के सामने... कोई अच्छा... उदाहरण रख पाने... में... सफल रही? जब तक मेरे कान काम करते रहे... क्या मैं... तुम्हें... सही राह पर... चलाते रहने में... सफल रही?.. अब मैं... क्या कर सकती हूँ? अब तुम मुझसे... क्या उम्मीद करते हो... अब तो मेरी बची-खुची... ताक़त भी... जवाब दे रही है? तुम लोग... मुझपर झुके हो... तुम मुझसे... क्या चाहते हो?"

एक-एक शब्द बोलने में उसे बड़ी ताक़त लगानी पड़ रही थी।

जवाबों से उसे और न थकाना ही बेहतर था और झुकते हुए आबाय ने अपने हाथ उसके सीने से लगा दिये। "मेरी पवित्र माँ, जो कुछ अच्छाई मुझमें है, मेरे दिल में जो कुछ पवित्रतम है, वह सब तुम्हारा ही तो है," उसकी मौन मुद्रा कहती प्रतीत हो रही थी। उसने दुर्बल वृद्धा के हाथ अपने हाथों में थाम लिये, फिर उसकी छोटी-छोटी सूखी अंगुलियाँ अपने गाल पर रख, उन्हें चुम्बनों से भर दिया। उन्हें अपने गर्म आँसुओं से तर कर दिया।

"मेरी आँखों की रोशनी... मेरी आँखों के तारे।"

फिर उलजान की ओर आँखें मोड़ते हुए उसने कहा:

"अपनी माँ की देख-भाल करो... उसकी आज्ञा का पालन करो।"

उसके प्राण क्षीण पड़ चुके थे। पल भर चुप रहने के बाद वह फिर बोल उठी:

"आख़िर... वह मेरा इकलौता बेटा है... उसे मेरी क़ब्र पर... मुट्ठी भर मिट्टी डाल लेने देना..."

यह शब्द साफ़-साफ़ कहे गये थे। ज़ेरे ने और कुछ भी नहीं कहा। आबाय उसकी बात अच्छी तरह समझ गया था। क़ोनानबाय के मुतल्लिक़ यह उसकी आख़िरी ख़्वाहिश थी। उलजान ने चुपचाप सिर हिला दिया। "सब कुछ होगा, परेशान मत हों..."

उसके लिए इतनी प्रिय उस वृद्धा ने सूर्य की पहली किरणों के निकलने से पहले ही आख़िरी साँस ले ली।

पूरी तरह सवेरा हो जाने से पहले न तो उलजान के और न ही आबाय के होठों से कोई शब्द फूट पाया। चिरनिद्रा में सोयी वृद्धा के विलक्षण चेहरे से वे अपनी आँखें नहीं हटा पा रहे थे, दोनों ही अपनी माँ के विचारों में खोये थे। वे एक गहरे दुख के बोझ से दबे थे।

जहां तक आबाय याद कर पाता था, पहली बार उसका कोई इतना प्यारा व्यक्ति दुनिया से उठ गया था। हालाँकि उसकी वृद्धा दादी की आकृति फीकी पड़ गयी थी, वह अब भी हमेशा की तरह उज्ज्वल, प्रशान्त प्रतीत हो रही थी, मानो मौत ने उसे अपने पंजों में नहीं दबोचा है बल्कि ज़ेरे ने आख़िर अपनी चिर-प्रतीक्षित आकांक्षा पूरी कर ली हो और स्वयं शान्ति का रूप धारण कर लिया हो।

सूर्यास्त तक बूढ़े से लेकर जवान तक, सबके सब घर में आ जुटे। पोते-पोतियाँ, बहुएँ चुपचाप रोती रहीं। घर के तथा आस-पास के लोगों ने गहरी आहें भरीं। सुबह में क़ाराशोक़ि और चिंगीज़ में रहनेवाले सारे स्वजन घर में आ पहुँचे। सबसे पहले कुन्के के साथ क़ोनानबाय आया। दोपहर तक इर्गिज़बाय का पूरा क़बीला वहाँ उपस्थित था।

ज़ेरे की मौत सबकी क्षति थी, फिर भी, जैसा कि आम तौर से होता था। कोई भी ज़ोर-ज़ोर से सुबकियाँ नहीं ले रहा था बल्कि मृतक के प्रति विशेष श्रद्धाभरी ख़ामोशी थी। उन पचासों आऊल के ग़रीब लोग जिन्हें जुत के समय ज़ेरे व उलजान ने भोजन और आवास दिया था, दूसरे दिन जनाज़े में शामिल होने आये। क़बीले की बुज़ुर्ग माँ को सारे सम्मान के साथ दफ़न किया गया।

समारोहों के सातवें दिन तक कुन्के के साथ क़ोनानबाय जिदेबाय में टिका रहा।

आबाय ने क़ुरान पढ़ने का काम किसी मुल्ला को सौंपने की जगह उसे ख़ुद पढ़ने का फ़ैसला किया था। हफ़्ते भर में उसने दो बार उसका पूरा पाठ किया। एक दिन भोजन के समय क़ोनानबाय अपने बेटे से यह टीका किये बिना नहीं रह पाया:

"तुम कितना धीमे-धीमे पढ़ते हो!"

आबाय ने कोई जवाब नहीं दिया। क़ोनानबाय मुल्लों द्वारा क़ुरान पढ़े जाने का आदी था और इतने ही दिनों में मुल्ले क़ुरान को तीन या चार बार पढ़ गये होते। आबाय ने अपनी बात स्पष्ट करने की कोई चिन्ता नहीं की। वह भी उतनी ही तेज़ी से पढ़ सकता था लेकिन अपनी दादी का ख़्याल कर वह श्रद्धापूर्वक, धीरे-धीरे, शब्दों में जान डालते हुए पाठ करने की कोशिश कर रहा था।

उसी हफ़्ते, एक दिन जब अपने बेटे के साथ उलजान अकेली थी, उसने ज़ेरे की बात शुरू की। आबाय उत्सुकतापूर्वक उसके शब्दों का पान करते हुए ध्यान से सुनता रहा।

"हमारी माँ," उसने कहा, उसकी आँखें डबडबा आयी थीं, "ने सच्चे सम्मान का एक उदाहरण क़ायम किया। अगर वह न होतीं तो शायद मैं भी हृदयहीन और लोगों की ज़रूरतों के प्रति निष्ठुर ही बन जाती।

में सारे स्वजन उस वृद्धा को अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करने आ जुटे जिसे वे सब स्नेह करते थे।

आबाय के विषण्ण, रुग्ण चेहरे को देख-देखकर उलजान काफ़ी दिनों से परेशान हो रही थी। जब स्मृति भोज समाप्त हो गया और मेहमान विदा हो गये, वह आबाय के पास जा पहुँची।

"मेरे बेटे, दुख भरे ख़्यालात तुम्हें घुन की तरह खाये डाल रहे हैं," उसने कहा। "तुम कितने दुबले हो गये हो। किसी नौजवान के लिए इस तरह शोक मनाना शोभनीय नहीं। बहुत सोच-विचार चुके! अपने पर क़ाबू लाओ। येर्बोल को बुला लो और घोड़े पर सवार हो आऊलों का चक्कर लगा आओ। अपना ध्यान बंटाने के लिए तुम्हें किसी चीज़ की तलाश करनी चाहिए।"

येर्बोल आया और अपने साथ सुयून्दिक़ के बेटे असिलबेक का सलाम लाया। अत्यन्त श्रद्धापूर्वक असिलबेक ने आबाय को अपने आऊल में मिलने का निमंत्रण भेजा था।

"अपनी बूढ़ी माँ की मौत के बाद से तो वह कहीं दिखाई ही नहीं दे रहा। कुछ समय के लिए वह हम लोगों के साथ आकर रहे," उसने संदेश भेजा था।

पहले की तरह ही आऊल जानिबेक में रह रहा था। और जब आबाय और येर्बोल वहाँ पहुँचे, असिलबेक व आदिलबेक उनका स्वागत करने बाहर निकल आये। अतिथियों ने सबसे पहले अपना सलाम मुख्य ओताव में बुज़ुर्गों को पेश किया।

सुयून्दिक़ ने उसका स्वागत अत्यन्त मित्रतापूर्वक किया। सिर्फ़ दस दिन पहले ही उसने और उसकी बायबिशे ने ज़ेरे की याद में विशेष दुआएँ की थीं। उसने उलजान और उसके परिवार का हाल-चाल पूछा, फिर अतिथियों के लिए असिलबेक का ओताव तैयार करने का आदेश दिया जिससे नौजवान आराम महसूस कर सकें और बुज़ुर्गों की मौजूदगी में किसी तरह की झेंप के बिना एक साथ उल्लासपूर्वक समय व्यतीत कर सकें।

लेकिन आदेश मिलने से पहले ही ओताव तैयार किया जा चुका था। आबाय का हर कहीं ख़ुशी के साथ स्वागत किया गया—ओताव तक जाते समय रास्ते में और ओताव में भी। हर किसी ने बढ़-चढ़कर उसकी तवज्जह की कोशिश की और उनमें सबसे आगे थी असिलबेक की बीवी क़ाराशाश।

दर्कमबाय ने भी गर्मजोशी से आबाय का अभिवादन किया। उसने ज़ेरे की याद संजो रखी थी और अत्यन्त श्रद्धापूर्वक उसके बारे में बातें कीं। उसे आबाय के सारे बच्चों के नाम याद थे, उसने उनकी सेहत के बारे में दरियाफ़्त की और सम्मानित मेहमान की बग़ल में ही बैठा रहा। "जाते शरद के जुत" के बाद से आबाय बोकेंशी व बोर्सक़ के उन लोगों का अंतरंग हो गया था जिन्हें जिदेबाय और मुसाकुल में पनाह मिली थी और जब कभी उसकी मुलाक़ात उन लोगों से होती, उनके चेहरे चमक उठते।

"मेरी आँखों की रोशनी," बोर्सक के एक बूढ़े ने कहा, "पिछले जुत में अगर मैं बच गया तो इसके लिए सबसे पहले ख़ुदा का शुक्रिया अदा करता हूँ और फिर सिर्फ़ तुम्हारा!"

"ख़ुदा का शुक्र है," दर्कमबाय बोल उठा, उसकी आँखें ख़ुशी से चमक रही थीं। "हमारे पास आज उतना ही दूध है जितना किसी और के पास! जिन्हें तुमने पनाह दी थी, उनमें से पंद्रह आऊलों से होकर मैं अभी-अभी लौटा हूँ और मैंने पाया, उनके जानवर दूसरे सारे आऊलों के मुक़ाबले संख्या में कहीं अधिक जीवित रह पाये हैं।"

अपने ओताव में क़ाराशाश ने आबाय का अभिवादन किसी पुराने और प्रिय मित्र की तरह किया। कभी आबाय से जल-भुन उठनेवाला और उसकी पीठ के पीछे धमकी देनेवाला आदिलबेक भी अपने पुराने झगड़े भुला चुका था। मेहमान के प्रति तवज्जह की आतुरता से उसने कपाट पूरे खोल दिये और अपने हाथों से उसका टोप और घुड़सवारी का उसका चाबुक थाम लिया। जहाँ तक असिलबेक का सवाल था, आबाय बहुत पहले से ही उसे भाई की तरह मान चुका था।

सब किसी ने उसका स्वागत पुराने और विश्वसनीय मित्र के रूप में किया। इर्गिज़बाय के दो निकटतम क़बीलों—जिगितेक और बोकेंशी में से आबाय हमेशा से ही असाधारण मैत्रीपूर्ण भावना के लिए बोकेंशी को पसन्द करता आया था और वास्तव में कोई भी ऐसी चीज़ न थी जिसे वे उस आदमी के लिए उठा रखते जिसकी वे इज़्ज़त करते थे।

आबाय के नौजवान मेज़बानों ने उसके तीन दिन के प्रवास को भरसक सुखद और रंगारंग बनाने की कोशिश की।

यूँ तो आबाय गाता, हँसता, मज़ाक़ करता रहा लेकिन उसके भीतर

दुख ने उसका पीछा नहीं छोड़ा और अपने मित्रों से इसे छुपाने में उसे बड़ी मेहनत करनी पड़ी।

सुयून्दिक़ का आऊल उसका प्यारा और परिचित स्थान था। जानिबेक की ओर पहुँचते ही उसके दिल में यादों की हलचल मच गयी थी। सपने—उम्मीदें—इन शब्दों ने पुरानी टीस जगा दी थी। इस पीड़ा का कोई अन्त भी न था, क्योंकि दिल के इन ज़ख्मों को भरनेवाला ही न था। तोग़जान के प्यारे नाम को, उसकी मुहब्बत को भूला नहीं जा सकता था।

सुयून्दिक़ के घर में क़दम रखते ही उसका मन तलाश में भटकने लगा। कुछ भी तो नहीं बदला था। लोग वही थे। अकेले तोग़जान ही नहीं थी। तीव्र आशाएँ उसके अन्दर जाग उठीं। दरवाज़े पर होनेवाली हर आहट पर वह काँप उठता—कहीं वही तो नहीं? जब सब कहीं चुप्पी छा जाती, उसे प्रतीत होता, वह उसके बालों के आभूषण के क्वणन को तो पहचान ही लेगा।

दहलीज़ उसने आधी बदहवासी में लाँघी थी। वहाँ उसके सामने ओताव का दाहिना हिस्सा था। अब, निश्चित रूप से, एक बार फिर उसकी ख़ुशियों पर पर्दा उठनेवाला था...

वही रेशमी पर्दे टँगे थे, हाथी दाँत जड़ित वही ऊँचा पर्यंक पड़ा था, वही अलंकरण—सब कुछ वैसे ही थे, जैसी कि उसे उम्मीद थी। मित्र भी वही थे—क़ाराशाश और येर्बोल—और क्या पहले जैसी ही ख़ामोशी से एक बार फिर मेहरबान दरवाज़े नहीं खोले गये थे? लेकिन इस बार उनकी दोस्ती उसके काम न आ पायी थी।

तोग़जान वहाँ न थी।

आबाय ने उल्लासमय होने की कोशिश की, उसने गीत गाये, खेलों में भी हिस्सा लिया लेकिन पीड़ा उसकी आँखों से झाँकती रही। कोई शब्द कहते-कहते वह बीच में ही रुक जाता और आह निकलने से ख़ुद को रोकना भूल जाता।

उसे कितनी पीड़ा थी, इसका अन्दाज़ सिर्फ़ क़ाराशाश ही लगा पायी थी। कोई कराह तो उसके होंठों से न निकल पायी लेकिन बार-बार निकल रही आहें, उसके हृदय की व्याकुलता प्रकट कर देतीं। कभी-कभी वह इतनी निरीहता से आह भर उठता कि प्रतीत होता वह रो पड़ेगा और क़ाराशाश का हृदय करुणा से विदीर्ण हो उठता।

तीसरे दिन जब वे ओताव में पल भर के लिए अकेले रह गये, क़ाराशाश ने उससे कहा:

"मेरे बदक़िस्मत आबाय! मैं देखती हूँ, तुम तोग़जान को नहीं भूल पाये हो। हमारे यहाँ आने पर तुम ज़रूर किसी परित्यक्त, विस्मृत जयलाव में आ गया-सा महसूस करते होगे: आऊल तो कब के जा चुके हैं, अब तो सिर्फ़ शिविर-अग्नि की राख भर बच रही है," क़ाराशाश थोड़ा सुर्ख़ पड़ते हुए मुस्कुरा उठी।

"तुम ठीक कहती हो, जेनेशे," आबाय ने जवाब दिया। "मैं क्या महसूस करता हूँ, तुम जानती हो। मैं तुमसे कुछ छुपा नहीं सकता। तुम तब भी सब कुछ समझती थी और अब भी, तुमने दिल से दोस्ती निभायी है! हाँ, मैं कुछ भी नहीं भूल सका हूँ, तनिक भी नहीं! यह सब मेरी आँखों के सामने है। उसके ख़्याल हमेशा मेरे साथ बने रहते हैं। मैं महसूस करता हूँ, तोग़जान किसी भी पल आ पहुँचेगी और मुझे फटकारना शुरू कर देगी..."

"तुम्हारा प्रेम अद्भुत है और मेरे दिल में तुम दोनों के प्रति सहानुभूति है," क़ाराशाश ने शान्तिपूर्वक कहा। "मन से वह तुम्हारी है। अपने दूल्हे के साथ विदा होते समय वह सुख के लिए नहीं, मौत की दुआएँ कर रही थी। उसने मुझसे कुछ भी नहीं छुपाया था।"

दोनों दुखी हो विचार में डूब गये।

तोग़जान के साथ अपनी अन्तिम मुलाक़ात और विदाई की बातें उसके दिमाग़ में इस तरह ताज़ा थीं मानो कल की बात हों।

क्या शान्त, निरभ्र शाम थी वह! तोग़जान झुटपुटे में उससे मिलने दर्रे में आयी थी, उसने ख़ुद आबाय को आऊल में बुलाया था। "कृपया उसे आने दो," उसने प्रार्थना की थी। यह बात उसके दूल्हे के अन्तिम आगमन के पहले की, अपने पैतृक आऊल को छोड़ जाने के पहले की बात थी – तब की जब उसका दूल्हा किसी भी रोज़ आ पहुँचनेवाला था।

तोग़जान – उसकी कोमल, शालीन तोग़जान – बहादुरी से, दृढ़संकल्प के साथ उस शाम उससे मिलने आयी थी। उसकी आँखों में आँसू घुमड़ रहे थे। वह हमेशा की तरह बच्चों जैसे विश्वास के साथ अपना सिर उसके सीने पर रखे, ग़ुस्से के साथ तेज़ी से बोल रही थी। वह उसे अपनी बाँहों में थामे, उसकी बातों का ध्यान से सुधापान करता रहा था...

वे एक-दूसरे से काफ़ी समय से मुहब्बत करते रहे थे लेकिन उन्हें कितनी थोड़ी-सी ख़ुशी नसीब हुई थी – उनकी मुलाक़ातें कितनी विरल थी! उस शाम तोग़जान इस बात पर बुरी तरह रोती-कलपती रही थी। उसने ज़िन्दगी को, सृष्टिकर्ता को इसका दोष दिया था, उसने हर चीज़ को और सबसे ज़्यादा अपनी क़िस्मत को धिक्कारा। आबाय उसे शान्त नहीं कर पाया था और भरे दिल घर लौट आया था।

एक बार फिर उसकी आँखों के सामने वह दृश्य घूम गया जब उस शाम वह उसे दुखी, आँसुओं से सिक्त छोड़ गया था... उसे अपनी आँखों के सामने उसके रेशमी लबादे और उसकी लम्बी पोशाक की झालर की एक एक तह दिखाई देती प्रतीत हुई। उसे कुछ-कुछ लबादे से लिपटी शोल्पि का संगीत लगभग सुनाई-सा देने लगा... यह सब उसके अन्दर जीता जागता-सा था – कुछ भी विस्मृत न हुआ था।

"मेरी अनमोल तोग़जान, मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूँगा... कभी भी नहीं!" वह बुदबुदा उठा।

क़ाराशाश के लिए आबाय परिवार के एक मित्र से कहीं अधिक था। वह उसे अपना निकटतम स्वजन मानती थी और उसने अपने पति असिल-बेक से एक अनुरोध करने का फ़ैसला किया।

वह अपने माँ-बाप से मिलने जाने की तैयारी कर रही थी और यह निश्चय करके कि उसका पति आबाय की ओर विशेष रूप से प्रवृत्त है, उसने उससे आबाय को भी साथ चलने के लिए आमंत्रित करने का अनुरोध किया। यह जानकर कि यात्रा से ज़ेरे की मौत का जो सदमा आबाय पर पहुँचा है, वह काफ़ी हद तक कम हो जायेगा, असिलबेक तत्परतापूर्वक सहमत हो गया।

"हम वहाँ चलेंगे, मौज-मज़े करेंगे और जब तक इच्छा होगी, रहेंगे," उसने कहा। "क़ादिरबाय कैसे आदमी हैं, तुम जानते ही हो। बड़ी अच्छी यात्रा रहेगी! हमारे साथ चल पड़ो," उसने अनुरोध किया।

आबाय सुयून्दिक़ के परिवार को चाहने लगा था। असिलबेक और क़ारा-शाश से अलग न होना पड़े, इस इच्छा से वह तुरंत राज़ी हो गया।

चार दिन बाद क़ाराशाश और तोबिक्ति के सर्वाधिक सम्मानित जिगित क़ादिरबाय के आऊल में आ पहुँचे।

नौजवान मेहमानों का हर्षपूर्वक स्वागत किया गया और वयस्कों और

बच्चों की भीड़ के साथ वे क़ादिरबाय के ओताव के अन्दर आये। कुछ समाचार जानने को, उनके स्वजनों के स्वास्थ्य जिन आऊलों से वे आये थे, उनकी स्थिति के बारे में जानने को उत्सुक थे तो कुछ सिर्फ़ उन पर एक नज़र भर डाल लेने को लालायित थे। जवान औरतों और लड़कियों ने क़ाराशाश को घेर लिया था।

क़ादिरबाय घर पर ही थे। बोजेय के स्मृति-भोज के बाद आबाय उनसे पहली बार मिला था। पिछले कुछ वर्षों में आक़िन स्पष्ट रूप से कुछ अधिक वृद्ध हो गये थे और उनकी सेहत भी कम गयी थी। उनके बाल पहले से अधिक सफ़ेद और चेहरे की झुर्रियाँ गहरी हो गयी थीं। वह पीले और दुबले पड़ गये थे, सिर्फ़ ऊँचा पुष्ट ललाट और सीधी सुतवीं नाक ही पुराने क़ादिरबाय की याद दिलाती थी। आक़िन ने पहले असिलबेक और क़ाराशाश से दुआ-सलाम किया, फिर आबाय व येर्बोल के स्वागत के लिए मुड़ गये।

वह आबाय को नहीं पहचान पाये और उन्हें उसके साथ हुई पिछली मुलाक़ात की याद तभी आयी जब उन्हें बताया गया कि यह क़ोनानबाय का बेटा है। फिर इसके बाद तो वह बोजेय के स्मृति-भोज के बारे में इस विस्तार से बताने लगे मानो यह कोई कल की बात हो। अन्त में वह बोले:

"बोजेय का स्मृति-भोज हमारे समय में सर्वाधिक स्मरणीय था! सारे मेहमान मेज़बानों से प्रसन्न व कृतज्ञ थे।"

बातचीत अधिकतर क़ादिरबाय ही कर रहा था। वह बारी-बारी से मेहमानों से उनके आऊलों और बुज़ुर्गों की सेहत के बारे में पूछताछ कर रहा था। आबाय संक्षिप्त रूप में और आदरपूर्वक उत्तर दे रहा था। इसके अलावा, बातचीत जारी रखने की ज़िम्मेदारी भी उसी पर थी; असिलबेक दामाद था, उसका अधिक बोलना शोभनीय न होता। और क़ादिरबाय सवाल भी अधिकतर आबाय को ही सम्बोधित कर पूछ रहा था।

इस समय आस-पास के पड़ोसी क़बीलों के लोग मिलते तो आम तौर से हाल के जुत की चर्चा किया करते।

क़ादिरबाय पूरी शाम आबाय से सवाल करते रहे। वह "जाते जाड़े के जुत" का तोबिक़्ति पर क्या असर पड़ा, किस आऊल को सबसे ज़्यादा और किसको सबसे कम नुक़सान उठाना पड़ा, भूखे लोगों का क्या बना,

क्या उन्हें हर तरह का दूध या दूध का सामान मिलता रहा था – इन सब चीज़ों कें बारे में जानना चाहते थे। तोबिक़्ति से वह इतनी अच्छी तरह परिचित थे मानो वह उसी क़बीले के हों और बस कुछ समय के लिए बाहर चले गये हों।

आबाय के उत्तरों की सूक्ष्मता पर असिलबेक और यर्बोल, दोनों ही चकित थे। उसे हर बात की ठीक-ठीक जानकारी थी – किस आऊल के पास कितने पशु थे, वास्तविक क्षति कितनी हुई और परिवार आगे क्या करने की सोच रहे हैं। उसे सब कुछ याद था मानो घटनाओं का यथातथ्य विवरण उसने अपने पास रख छोड़ा हो। आऊलों के बारे में उसकी सूचना से क़ादिरबाय को तोबिक़्ति के जीवन की पूरी तस्वीर मिल गयी।

अत्यन्त चिन्ता व्यक्त करते हुए वृद्ध क़ादिरबाय ध्यान से उसकी बातें सुनता रहा। पड़ोसी क़बीलों पर आयी विपदाओं से वास्तव में शोकार्त्त हो वह कभी अपना सिर हिलाने लगता, कभी पछताने के अन्दाज़ में अपनी जीभ को च्-च् कर उठता।

उसके अपने आऊलों की स्थिति भी कोई अच्छी न थी। हिम-तूफ़ान से सिबान लोग भी नहीं बच पाये थे और क़ादिरबाय के स्वजन तो लगभग बर्बाद ही हो गये थे। क़ादिरबाय ख़ुद भी धनी न था लेकिन पिछले सालों से उसके पास हमेशा क़िमिज़ और गोश्त की प्रचुरता रही थी। अब वह उन आऊलों के सामने दुधारू घोड़ियों के लिए हाथ पसारने को विवश हो गया था जिन पर जुत का कोई असर न पड़ा था। अपनी स्थिति पर पर्दा डाले बिना वह पूरे क़बीले पर आयी मुसीबत के बारे में बता गया।

आस-पास एक भी आऊल ऐसा न था जिसे नुक़सान न उठाना पड़ा हो। लोग ख़ुद भी पंगु हो गये पशुओं के ढोर जैसे थे। अपने स्वजनों की शोचनीय अवस्था की चर्चा करते हुए क़ादिरबाय ने कहा:

"हम दुर्दान्त घोड़ों की तरह धमा-चौकड़ी कर रहे थे लेकिन हिम-तूफ़ान ने हमें कुचल डाला, आँधी में ज़मीन पर दुर्बल, असहाय-सी बिछ जानेवाली बेंतों की तरह हमारी भी कमर झुक गयी है..."

चाय पी जा चुकी पी। ओताव के पास एक भेड़ ज़बह की जा रही थी। मेहमानों का साथ देने आये पड़ोसी अपने-अपने तम्बुओं में लौट गये थे। क़ाराशाश को घेरे लड़कियाँ भी जा चुकी थीं। सिर्फ़ एक लम्बी, छरहरी और लुभावनी लड़की रह गयी थी। उसकी बारीक भौंहों ने आबाय

26—3336

को तोग़जान की याद दिला दी। उसकी थोड़ी लम्बी-सी ग्राँखों में बुद्धिमत्ता की चमक थी ग्रौर जब वह हँसती, व दमक उठतीं तो पूरा ग्रोताव ही रोशन हो गया प्रतीत होता। उसका गरिमामय गोलाकार मुखड़ा शोख़ गुलाबी था। उसकी सीधी नाक ग्रौर गहरी भौंह तुरंत बता देती कि वह क़ादिरबाय की बेटी थी।

वह क़ादिरबाय की ग्राक़िन-क़िज़* के रूप में विख्यात क़ुवानदिक़ थी।

जब तक पड़ोसी ग्रौर उसके परिवार के लोग वहाँ मौजूद थे, वह घर के काम-काज में व्यस्त रही थी। वह चाय तैयार करने, मेहमानों को चाय देने ग्रौर ग्रपनी माँ को मदद देने में लगी रही थी। जब कभी बातचीत थम जाती, वह क़ाराशाश का ध्यान बँटाने की कोशिश करती। स्पष्ट रूप से वह ग्रपने पिता से भयभीत या ख़ुद को तुच्छ समझनेवाली न थी – चाय के समय उसकी गूंजती ग्रावाज़ दृढ़ ग्रौर ग्राश्वस्तपूर्ण थी।

"कुछ लीजिए! ग्राप कुछ लेते क्यों नहीं? ग्रापने तो कुछ खाया ही नहीं!" क़ुवानदिक़ चौकस मेज़बान थी।

जब चाय के सामान हटा लिये गये ग्रौर पूरा परिवार मेहमानों के गिर्द ग्रा जुटा, वह क़ाराशाश की बग़ल में बैठकर ग्राबाय के बारे में पूछताछ करने लगी। वह उसके बारे में बहुत पहले से सुनी-सुनाई बातें जानती थी।

जब जुत के बारे में बात चली, ग्राबाय ने विस्तारपूर्वक उसकी चर्चा की। उसके शब्द विवेकपूर्ण, सही ग्रौर यथातथ्य थे। उसने लोगों की वर्तमान दारुण दु:स्थिति की तुलना उनके पहले के जीवन से की। "जैसा कि सब जानते हैं," उसने कहा, "जुत ख़ानाबदोश क़ज़ाख़ों के लिए ग्रपरिहार्य ग्रापदा रहे हैं। लेकिन पीढ़ी-दर-पीढ़ी, क्या एक भी ऐसा ग्रादमी हुग्रा है जिसने लोगों के इस कटु ग्रनुभव से कोई सबक़ लिया हो? क्या किसी ने भी ऐसी ग्रापदाग्रों से हमें उबारने का कोई उपाय निकाला? लोगों ने जिनके गुण गाये, क्या उनमें एक भी ऐसा ग्रादमी था जिस पर वे निर्भर कर सकें, जो उन्हें इन मुसीबतों से बचने का तरीक़ा बता सके? क्या क़ादिरबाय ने कभी एसे ग्रादमी के बारे में सुना है?"

---

* ग्राक़िन-क़िज़ – बालिका ग्राक़िन। – सं॰

वृद्ध ग्राक़िन को ऐसे सवालों की कोई उम्मीद न थी। पल भर विचार करने के बाद उसने पद में जवाब दिया:

सुख एक घूमता चक्र है,
जीवन तूफ़ान का मारा नरकुल।
थिर रह नहीं सकती, चाँद के नीचे यह ज़मीन;
बग़ीचे सूख ही जायेंगे, कर लो यक़ीन!
ग्रौर कभी न भूल: तू भी है फ़ानी;
कुछ ग्रौर नहीं, पतझड़ के तोरण का फूल है प्राणी!

वह जीवन के शाश्वत चक्र की बातें कह रहा था। ग्राबाय को उसकी ख़ुशबयानी पसन्द ग्रायी लेकिन ग्रन्दरूनी तौर पर वह उसके विचारों से सहमत न था। मानव-जीवन की तुलना क्षण-भंगुर फूलों से नहीं करनी चाहिए। कज़ाख़ ग्रसंख्य ग्रौर दृढ़ थे; उनके भविष्य को निश्चित रूप से सुरक्षित बनाना चाहिए। क़ादिरबाय की बातों का मतलब था, हर जाति एक निरन्तर बनती-बिगड़ती रहनेवाली क़िस्मत की दया पर निर्भर करती थी लेकिन सबसे ज़्यादा उसका प्रभाव कज़ाख़ों पर ही था—वह ग्रपना खेल इन्हीं के साथ खेलती। ग्राबाय को उसकी बातें पसन्द न ग्रायीं। उसकी दलील के मुताबिक़ दूसरी जातियों के बीच ज्ञान-विज्ञान ने काफ़ी तरक़्क़ी कर ली है ग्रौर ज्ञान ही समृद्धि का ग्रक्षय स्रोत है। यह किसी भी ज़ुत के मुक़ाबले ग्रधिक ताक़तवर है।

"क्या ग्रापको मालूम है," उसने पूछा, "कि कज़ाख़ दूसरे लोगों के जीवन के बारे में बहुत कम जानते हैं? ग्रगर कोई जाति दूसरी जाति के जीवन के बारे में कुछ जानकारी रखती है तो उस जाति के जीवन के सबसे ग्रच्छे पहलुग्रों को उपयोग में ला सकती है। ग्रादम के ज़माने से ऐसा होता ग्राया है—ग्रगर कोई जाति किसी बहुत ग्रच्छी चीज़ का ईजाद करती है, उसे दूसरे लोग भी ग्रपना लेते हैं। लेकिन इस ग्राम बात से बहुत दूर, हम एक ग्रोर, ग्रलग-थलग रह गये।"

क़ादिरबाय ग्रौर क़ुवानदिक़ ने एक-दूसरे की ग्रोर देखा। बिना बोले, वे एक-दूसरे की बात समझ लेते। दूसरे पिताग्रों के विपरीत ग्राक़िन प्राय:

अपनी बेटी के साथ बहस करते, उसकी राय की क़द्र करते और उससे सलाह तक लेते।

बहस लगभग पूरी शाम चलती रही। नौजवान आबाय ने जो विचार व्यक्त किये, वे वृद्ध आक़िन के लिए पूर्णतया नये थे, उसने उन्हें सोचने के लिए काफ़ी मसाला दे दिया था।

क़ादिरबाय को अक्सर वृद्ध व्यक्तियों से बहस करने के मौक़े मिलते रहते थे लेकिन इस नौजवान की तरह कोई भी उसे संकट में नहीं डाल पाया था। नौजवान के बोलने का अन्दाज़ एकदम नया था, वह उन सब चीज़ों को भी एकदम अलग ढंग से देखता था जो बहुत पहले निबटायी जा चुकी थीं और एकदम चाँद की तरह साफ़ प्रतीत होती थीं। वह दलील देने में माहिर था – और वास्तव में अच्छी तरह, प्रभावशाली ढंग से तर्क कर रहा था। उसकी बातों को सुनने को कोई भी मजबूर हो जाता।

दूसरे दिन सुबह क़िमिज़ पीते समय बहस फिर दुबारा शुरू हो गयी। क़ुवानदिक़ बातचीत में कोई हिस्सा नहीं ले रही थी लेकिन स्पष्ट रूप से आबाय के विचारों के पक्ष में थी। मुस्कुराते हुए, वह प्रायः कोई न कोई टिप्पणी कर देती जिससे प्रकट हो जाता, उसकी सहानुभूति मेहमान के साथ है।

"लेकिन ज़रा यह तो बताओ, आख़िर तुम चाहते क्या हो?" क़ादिरबाय आख़िर पूछ ही बैठा। "तुम क्या रास्ता सुझाते हो? तुमने बखिये उधेड़े, ख़ामियाँ दिखायीं। लेकिन क्या तुम ख़ुद कोई रास्ता ढूंढ़ पाये? अगर हाँ, तो फिर बताओ! मैं सुनने को तैयार हूँ!"

"हमें अज्ञान से मुक्ति पाने और ज्ञान प्राप्त करने की ज़रूरत है," आबाय ने अपने तर्कों का सारांश बताया। "उन्हें सिखाना, शिक्षित करना चाहिए। अब मीठे सपने देखते रहने और तम्बू डालने के बड़े-बड़े मैदानों और चरागाहों पर निर्भर करने का समय नहीं रहा। यह दूसरी जातियों से, उन जातियों से जो हमें बहुत पीछे छोड़ चुकी हैं, सीखने का समय है! यही हमें करना चाहिए!"

आबाय एकदम झटपट ऐसे फ़ैसलों पर नहीं पहुँचा था – यह उसकी लम्बी खोज-बीन के परिणाम थे। "यह न सिर्फ़ मेरी जनता के लिए एकमात्र ठीक-ठिकाने की राह है बल्कि स्वयं मेरे लिए भी," वह प्रायः सोचा करता।

क़ादिरबाय की दलीलें अलग ढंग की थीं ; उसकी राय में ज्ञान तो अपने पूर्वजों की पुरानी सुरक्षित राह पर चलते रहने का साधन मात्र था। उस राह की अच्छी पहचान हो और उससे भटकाव न हो, यही सबसे ज़रूरी था।

वह अपनी आपत्तियाँ फिर से दुहराना चाहता था लेकिन क़ुवानदिक़ ने उसे बीच में ही रोक लिया।

"अब बहस करने को कुछ नहीं रह गया!" उसने दृढ़ता से कहा।

काफ़ी देर तक सोच-विचार करने के बाद क़ादिरबाय एक बार फिर आबाय से मुख़ातिब हुआ :

"मेरे बेटे, तुम बहुत ऊँचे जा पहुँचे हो। तुम्हारे होठों पर सच्चाई है। तुम्हारी इच्छा-आकांक्षाओं ने मुझे भी प्रभावित कर लिया है। तुम ठीक कहते हो ; हर युग की अपनी माँग होती है! तुम अपने युग की भाषा में बोल रहे हो और आनेवाली पीढ़ियों के बारे में सोच रहे हो। लेकिन सवाल यह है – हम ज्ञान के लिए किसके आगे हाथ फैलायें? कौन हमारे सामने आदर्श प्रस्तुत करेगा? हो सकता है, जीवन सच में हमें ग़लत राह पर ले जाये।"

क़ादिरबाय इसके बाद कुछ न बोला। उसने जीवन बहुत देखा था और आबाय की निष्पत्तियों के विरुद्ध लम्बे समय तक बहस की थी। अब उसने उन पर फिर से ग़ौर किया था, उन्हें पूरी तरह तौला था और स्वीकार कर लिया था।

बाद के दो दिन बिना किसी बहस के बीत गये। आबाय अब उत्सुक श्रोता बन गया था। उसने क़ादिरबाय से उन आक़िनों के बारे में पूछा जिनसे वह अपने जीवन में मिला था। यह एक ऐसा विषय था जिस पर वह वृद्ध व्यक्ति आसानी से और अधिकारपूर्वक बोल सकता था। इस विषय के प्रति उत्साह जताते हुए, उसने कई गीत गाये। जब कभी वह कुछ भूल जाता, अपनी बेटी की ओर देखता जो उसे तुरंत ही भूल गयी पंक्ति या बंद की याद दिला देती। उसे वे सारे कंठस्थ थे : आयतिस के गीत, वाक्चातुर्य प्रतियोगिता के गीत और "दुख के गीत"।

क़ादिरबाय को अपनी नौजवानी के आक़िन सादक़ को याद करना बड़ा प्रिय था।

"उसका ज्ञान असीम था। उसने सब कुछ देखा और अनुभव किया था।

उसने जितना कुछ कहा है, उसका हज़ारवाँ भाग भी समझना और याद रखना हमारी क़िस्मत में नहीं। उसके अन्दर एक महान दैदीप्यमान आत्मा थी," वृद्ध ने कहा।

आबाय ने क़ादिरबाय से दुबारा सादक़ से हुई प्रतियोगिता के बारे में सवाल किया। यह प्रतियोगिता "सादक़ का एक बालक से आयतिस" के नाम से प्रसिद्ध थी। आबाय जानता था, वह बालक कोई और नहीं क़ादिरबाय ही था लेकिन वृद्ध आक़िन ने उस प्रतियोगिता की विस्तारपूर्वक चर्चा नहीं की।

अहमन्यता और आत्म-प्रशंसा क़ादिरबाय के लिए विजातीय थी। वह स्वयं भी सादक़, बरलास और शुमेक जैसा आक़िन था जिन्होंने उसे बहुत प्रभावित किया था। फिर उसने कविता की – आक़िनों की ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभा की और उन अमर गीतों की चर्चा की जिनमें शताब्दियों से लोगों के जीवन, दुख और आशाएँ प्रतिबिम्बित हुई हैं।

"धुन को सुनते हुए, मुझे वेदना से छलकती वेदना महसूस होती है। तुम स्वयं महसूस कर सकते हो, गीत में आत्मा की उदासी किस तरह मुखर होती है। मेरे बेटे, कल तुमने एक गहन सत्य व्यक्त किया था! ऐसा कोई भी आदमी नहीं जो जीवन से सन्तुष्ट हो, दुनिया से विदा लेता ऐसा कोई भी इनसान नहीं जिसकी आशाएँ अधूरी न रही हों। बहुत से गीत हम तक शताब्दियों से गुज़रकर पहुँचे हैं और हरेक में हमें एकदम वही स्वर सुनाई देता है। और यह किसी भी तरह अचिंत्य हर्ष और विचारहीन उल्लास का स्वर नहीं। यह अवसाद का स्वर है – जीवन की लालसाओं का स्वर है... बस पुराने ज़माने के असनक़ायगि और हाल-फिलहाल के "जाते जाड़े के जुत" की याद करने की ज़रूरत है। हमारे ज़माने में भी आक़िनों के गीत अश्रुपूरित रहे हैं। हाँ, राह में जो हँसते चेहरे हमें मिलते हैं, वे कितने थोड़े होते हैं... सब जीवन के उस तूफ़ान के गीत गाते हैं जो श्रोतावों को अपने में समेट ले जाता है। और इसमें कोई आश्चर्य नहीं। तुमने क्या लोगों की असहायता की बात नहीं कही? यह सुख-सम्पत्ति नहीं बल्कि अवसाद और दुख हैं जो जीवन भर उनका साथ देते हैं – और इन्हीं से हमारे आक़िनों के गीत फूटते हैं।"

इस तरह क़ादिरबाय उस गुत्थी तक पहुँच गया जिसे सुलझाया नहीं जा सकता। उनके बीच आयु का भेद मिट गया – उनके कहने-सोचने

की भाषा एक ही थी। अब आबाय के सामने वृद्ध आक़िन का अन्तःकरण स्पष्ट उजागर था।

अपनी युवावस्था के आरंभ में आबाय का प्रिय आक़िन बरलास था। बाद में उसका परिचय शोजे और बाल्ता आक़िन से हुआ। क़ादिरबाय के साथ अपनी लम्बी बातचीत के बाद वह उसकी तुलना उनके साथ करने पर मजबूर हो गया। इस श्वेतकेशी गायक में गहन अन्तर्दृष्टि थी, वह सहजबोधगम्य तथा गहन विचारक था। जीवन के प्रति उसकी व्यापक दृष्टि थी और अपनी कुछ ख़ास ख़ूबियों के कारण भिन्न होते हुए भी वह दूसरे आक़िनों जैसा ही था। लेकिन मुख्य समस्याओं पर – उन समस्याओं पर जो व्यक्ति के हृदय के निकटतम थीं – वे एक ही थे और आबाय को वे गत शताब्दियों के सुदूर आकाश से उभरती विशाल पर्वतमाला के उत्तुंग श्रृंग से प्रतीत हो रहे थे।

वृद्ध व्यक्ति की सूक्ष्म मनीषा ने आबाय को मुग्ध कर लिया था जो उसे पिता की तरह स्नेह करने लगा था। लेकिन यह दूसरे पिताओं से सर्वथा भिन्न था – ऐसा पिता जो उसे यह कहने को तनिक भी प्रवृत्त न था: "पशुओं की देखभाल करो! अमीर बनो! मेरी संततियों का पालन पोषण करो और दूसरों के लिए अजनबी बन जाओ!" क़ादिरबाय एक प्रज्ञावान पिता था। जिन राहों पर वह चल रहा था, जो सलाह उसने दी थी, वे उज्ज्वल, सम्मानजनक थीं।

हर रोज़ उनके बीच दिली बातें होतीं और आबाय पल भर के लिए भी वृद्ध आक़िन का साथ नहीं छोड़ना चाहता। लेकिन उसके साथी – असिलबेक, येर्बोल, क़ुवानदिक़ और क़ाराशाश – कुछ और भी सोचते थे।

"हमें नौजवानों के ओताव में चलना चाहिए। वहाँ ज़्यादा मौज-मज़े रहेंगे," वे आबाय से अनुरोध करते रहते। क़ादिरबाय ने ख़ुद भी नौजवान को मुक्त कर देने का फ़ैसला किया।

"मेरे प्यारे बच्चो," दोम्ब्रा उठाते हुए उसने चौथे दिन शाम को कहा। "तुम लोगों से बातें कर हमारा जी हल्का हो गया है। हम बूढ़े उस जहाज़ के पंछी की तरह हैं जो उड़कर पुनः जहाज़ पर लौट आता है या उस बुढ़िया की तरह हैं जो अनवरत रूप से दुख का रोना रोती रहती है। क्या तुम वह निरानन्द राग और सुनते रहना चाहते हो? तुम्हारी आशाएँ, तुम्हारा भविष्य तुम्हारे सामने है जबकि हमारे झुक गये पताके

फीके पड़ गये हैं। अब वे ऊँचाइयों पर पहुँचकर फहराने को नहीं और न ही वे तुम्हारा पथ-प्रदर्शन कर सकेंगे। उत्तुंग शिखरों को जानेवाली राहें तुम्हें दृष्टिगोचर हैं। बहादुरी से उन्हें तय करो! उदासी को मार भगाओ! ख़ुश और निश्चिन्त बनो, अज्ञात की तलाश करो और अपनी बाट जोह रही ऊँचाइयों से कभी मुंह मत फेरो!"

कुछ पलों तक वह वृद्ध व्यक्ति चुपचाप बैठा रहा लेकिन फिर उन्हें ललकारा:

"जाओ! मौज-मज़े करो! मैं तुम्हें अपने एक अकिंचन गीत के साथ विदा करूँगा।" और एक बार फिर क़ादिरबाय के हाथों में दोम्ब्रा गूंज उठा।

नौजवान एकदम निस्तब्ध, वाद्ययंत्र पर कुशल हाथों की झंकार से मंत्रमुग्ध रह गये। फिर क़ादिरबाय ने गाना शुरू किया। उसकी आवाज़ कमज़ोर पड़ गयी थी लेकिन स्वर वैशिष्ट्य अभी भी प्रभावशाली था। अपनी जवानी में यह श्वेत-केशी आक़िन निश्चित रूप से अद्वितीय गायक रहा होगा। युगों पुरानी करुणा से आप्लावित स्वर-लहरी एक बार फिर तरंगायित हो उठी।

गीत के बोल किसी पिता के अन्तिम आदेश थे: "मेरी लाड़ली बेटी, मेरे अच्छे भाई – लायक और नेक बनो। लोग तुम्हें सम्मानपूर्वक याद रखें। तुम्हारे भाई, तुम्हारे इर्द-गिर्द के बाल-बच्चे – वे सब जो पीड़ित हुए हैं, ज़रूरत के समय तुम्हें संरक्षक के रूप में पायें। तुम उन्हें विशालकाय वृक्ष की तरह हिफ़ाज़त दे सको..."

लरजती आवाज़ गहराते झुटपुटे से एकात्म हो गयी प्रतीत हो रही थी। विशेषकर गीत के अन्तिम पदांश से आबाय स्पन्दित हो उठा था जिसकी रचना क़ादिरबाय ने बहुत साल पहले की थी। इसमें आक़िन के दिल का पूरा ख़ज़ाना खुला पड़ा था। तट पर अन्तहीन रूप से थपेड़े खाती लहरों की तरह एक-एक पंक्ति कर के यह अपने उच्च शिखर पर चढ़ती जाती: "मेरी जनता! आह, मेरे लोग!" इन सीधे-सादे शब्दों में ही क़ादिरबाय का सबसे अच्छा चित्रण हो सकता था।

वृद्ध आक़िन चुपचाप बैठा रहा।

उत्तेजना से फक आबाय हिल-डोल भी नहीं पा रहा था। उसका गला रुँध गया था, वह क़ादिरबाय से आँखें नहीं हटा पा रहा था। उसे

वृद्ध व्यक्ति महान, अगम्य ऊँचाइयों से गाता प्रतीत हुआ – जातियों का पिता, शताब्दियों की गहराइयों से निकलकर उन्हें सम्बोधित कर रहा था।

क़ुवानदिक़ ने आबाय के चेहरे के भाव भाँप कर सावधानी से अपने पिता के हाथों से दोम्ब्रा ले लिया।

"आपने "आनन्द-गान" का वायदा किया था! उसकी जगह आपने "रोओ, मेरे दोस्तो!" गा दिया। लेकिन अब हम रोना नहीं चाहते! खेल हमारा इन्तज़ार कर रहे हैं और आप पसन्द करें या न, हम मनोरंजन करने विदा हो रहे हैं!"

सब हँस पड़े और आबाय क़ुवानदिक़ की अपार प्राणवत्ता पर चकित हो गया। अगर क़ादिरबाय संध्या की क्षीण पड़ती रोशनी था तो वह स्वच्छ दोपहरी की जगमगाहट-सी थी।

नौजवानों के ओताव की ओर जाते समय राह में बहुत-सी लड़कियाँ और नौजवान उनके साथ शामिल हो गये। पौ फटने तक खेल व दूसरे शोरगुल भरे मनोरंजन चलते रहे।

खेल के बाद गीत व कविता प्रतियोगिता के साथ आयतिस होते, आयतिस के बाद फिर खेल होते – इस तरह बारी-बारी दोनों चलते रहते। सिबान लोग हमेशा से खेल व मनोरंजन के प्रति अपने प्रेम के लिए प्रसिद्ध रहे थे और क़ादिरबाय का आऊल उसके पिता आक़िन आक़तयदाक़ के समय से ही गीत व कविता प्रतियोगिताओं में रचे नये तरानों का वास्तविक पालना रहा था। और इसी पालने में चुहल व गीत की जीती-जागती प्रतिरूप क़ुवानदिक़ पलकर बड़ी हुई थी और उसकी सहेलियाँ भी गीत गाने में उसी की तरह कुशल थीं।

सिबान और नैमन आऊलों में लड़कियों को किशोरावस्था में न ब्याहने का रिवाज था। इसी कारण आस-पड़ोस के क़बीलों में यह मज़ाक़ चल पड़ा था: "अरे, वह तो सिबान की दुल्हन की तरह घर में ही बुढ़ा गयी है।" यह सारी लड़कियाँ ख़ुशमिजाज़, हँसमुख और सबकी सब श्रेष्ठ गायिका थीं।

शाम को क़ुवानदिक़ ही खेलकूद की अगुआ थी। उसकी छुतही हँसी अपूर्व रूप से संगीतात्मक थी – किसी छोटे से शोख़ गीत की तरह। कोई भी नौजवान उसके हाथों से बच नहीं पाता, हर हारनेवाले के लिए वह

चुहल के साथ सज़ा मुक़र्रर करती। और जब कभी वह ख़ुद हार जाती, उसकी शोख़ी में तनिक भी कमी न आ पाती और हँसते हुए स्वेच्छापूर्वक वह अपनी सज़ा भुगत लेती।

गीतों व कविताओं की प्रतियोगिता करते आबाय, क़ुवानदिक़ पूरी शाम साथ-साथ रहे। पहले आयतिस की शुरुआत क़ुवानदिक़ ने की और गीत में आबाय को चुनौती दी। वह ऐसी प्रतियोगिताओं का आदी न था और फिर शब्दों का चुनाव सोच-समझकर करने की उसकी आदत थी। आशु कविता में उसकी गति धीमी थी। चुनांचे, पहले उसने सिर्फ़ तरानों के सहारे जीतने की कोशिश की। कई जटिल धुनें यहाँ अब तक लोगों को मालूम न थीं और आबाय उन्हें अच्छी तरह गा लेता था। इस तरह उसने अपना सिक्का जमा दिया था।

अगली प्रतियोगिता में क़ुवानदिक़ गीत की जगह तेर्मे* पर आ गयी। आबाय को सिर्फ़ एक ही तेर्मे मालूम था – घोड़े की सरपट चाल की तरह तेज़। इसका सहारा लेते हुए आबाय ने तेज़ी से क़ुवानदिक़ की तरह तत्क्षण कविता शुरू कर दी। धीरे-धीरे उसमें आत्मविश्वास आता गया और उससे शब्द ख़ुद-ब-ख़ुद आते महसूस हुए। आयतिस के प्रवाह में वह बह गया, उसे अपने अन्दर नयी शक्ति, नयी प्रेरणा आती प्रतीत हुई। एक दूसरे के लिए उद्दीपक का कार्य करते हुए कभी लड़की विजयी होती तो कभी नौजवान बाज़ी मार ले जाता।

क़ुवानदिक़ की नाचती आँखें और उत्साह से सुर्ख़ हुए गाल, प्रतियोगिता से मिल रहे उसके आनन्द को प्रकट कर रहे थे। एक-दूसरे से होड़ में अब उनके पास हास्यास्पद चाटुक्तियों के अलावा कुछ भी शेष न रहा था। अब वे एक-दूसरे को दिलरुबा कहने का स्वांग कर रहे थे। आबाय तो बीच-बीच में "प्रेम" और "प्रियतमा" जैसे शब्द भी बोल जाता लेकिन क़ुवानदिक़ कहीं अधिक संयत हो जवाब दे रही थी: "मेहमान और आदरणीय नौजवान, मैं हर्षपूर्वक आपके आगमन का स्वागत करती हूँ। आप और आपका परिवार, दोनों गौरवशाली हैं। आपको ख़ुदा की देन है, आप मेधावी हैं लेकिन हमें परस्पर सम्मान करना चाहिए – ऐसी ही भावनाएँ हमारे लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं।"

---

* तेर्मे – सस्वर पाठ जिस में तराने का महत्व गौण हो जाता।–सं०

दत्तचित्त श्रोताओं की भीड़ के सामने तो वे हाज़िरजवाबी में होड़ करते और अकेले में उनके पास एक-दूसरे से कहने को बहुत कुछ होता। जब सब लोग खेलों में या गीत गाने में या हँसी-मज़ाक़ में लगे थे और आमोद-प्रमोद अपनी चरम सीमा पर थे, क़ुवानदिक़ ने बातचीत शुरू की थी।

"प्रगल्भता से गीत को हमेशा अपनी बात कहने के काम नहीं लाया जा सकता, आबाय," उसने कहा। "और दूसरों की उपस्थिति में कोई कह भी क्या सकता है? गीत में शब्द छुप जाते हैं... और अभी तो मेरे पास तुमसे कहने को बहुत कुछ रह गया है।"

दूसरे नौजवानों को शक न पड़ जाये, इसलिए यह बात हल्के ढंग से कही गयी थी – मज़ाक़ की तरह लेकिन उसके शब्दों से स्पष्ट था, वह आबाय के प्रति दिल से आकृष्ट थी। दोनों में परस्पर आकर्षण तो क़ादिरबाय के साथ आबाय की बातचीत के दौरान पहले ही प्रस्फुटित हो चुका था। अब जब उसने उसकी गोरी-गोरी अंगुलियाँ अपनी अंगुलियों में थाम लीं, उसे उसकी धमनियों में उन्मत्त दौड़ता रक्त और उसकी बेताबी महसूस हुई। दोनों के हाथ काँप रहे थे।

"देखती हो, हमारी धड़कनें एक हो गयी हैं," उसने कहा। "तुम्हारे शब्द मेरी ख़ुशी हैं..."

हर मुस्कान, हर परिहास, हर गति और तिरछी निगाह में उनका आन्तरिक उल्लास प्रकट हो रहा था। दोनों ख़ुशी से चमक रहे थे। खेलों के दौरान जुर्माने के तौर पर उन्हें एक-दूसरे को चुम्बन देने पड़े और उनके सुलगते भावावेग भड़क उठते, गाल सुर्ख़ हो जाते।

पौ फटने पर ही नौजवान एक-दूसरे से अलग हुए। क़ुवानदिक़ ने आबाय को आऊल के एक बाहरी ओताव में भेज दिया और सब लोगों के चले जाने के बाद उसके पास जा पहुँची। ओताव की मालकिन एक बूढ़ी औरत थी। वह पशुओं की देखभाल करने चली गयी थी। एक ही आग में जलते दो नौजवान वहाँ अकेले रह गये थे। अब उनके पास कहने को कुछ भी न था, उन्होंने ख़ुद को अनुभूतियों के तरंग के हवाले कर दिया था जिसने उन्हें अपने ख़ामोश आलिंगन में ले लिया।

आऊल में खेल तथा दूसरे मनोरंजन कई दिनों तक चलते रहे लेकिन आबाय और क़ुवानदिक़ के सम्बन्ध प्रेम की अपेक्षा कहीं अधिक स्नेहपूर्ण हो

गये थे। चिनगारी तो थी लेकिन उसमें प्रणयोन्माद की आग न थी। आबाय क़ुवानदिक़ के साथ भरसक अकेले न रहना पसंद करता। दूसरों की उपस्थिति में उसका साथ उसे ज़्यादा आनन्दायी लगता। उसकी अनुभूतियों की स्पष्ट प्रगल्भता उसे कुछ-कुछ झकझोर देती।

उन कुछ दिनों में आबाय क़ुवानदिक़ के बारे में बहुत कुछ जान पाया। केरेय क़बीले के किसी आदमी से उसकी सगाई हो चुकी थी। वह विवाहित था और क़ुवानदिक़ उसकी छोटी बीवी बननेवाली थी। उसका मँगेतर उससे मिलने कई बार आ चुका था लेकिन क़ुवानदिक़ उसके प्रति तनिक भी प्रेम महसूस नहीं कर पाती, उसका हृदय सर्द बनता रहा था। दुख के साथ वह यह सब आबाय को बता गयी थी और अपना युवा हृदय उसके सामने खोल दिया था।

आबाय चुपचाप सोचता रहा। घर में दिल्दा थी, उसके कई बच्चों की माँ... यह सच था, क़ुवानदिक़ उसी के लिए बनी प्रतीत होती थी: मेधावी थी, सुशिक्षित थी, आकर्षक थी। इससे पहले सौन्दर्य, बुद्धिमत्ता, प्रतिभा और चारीत्रिक दृढ़ता का ऐसा सुखद सामंजस्य उसने कभी नहीं देखा था। लेकिन एक ओर क़ादिरबाय की इच्छा के प्रतिकूल जाना और दूसरी ओर दिल्दा व बच्चों को भूल जाना अत्यंत कठिन था।

उसका ज़ेहन क़ुवानदिक़ को चाहता था लेकिन हृदय में कोई भी खलबली न थी। यह तोग़जान थी—यह उसी की छवि थी जो उसे तनिक भी चैन नही लेने देती थी। वह एक छाया-सी थी जो कभी उसका साथ न छोड़ती थी मानो हसीन क़ुवानदिक़ के विरुद्ध चौकसी से अपने अधिकारों की हिफ़ाज़त कर रही हो। और आबाय को ऐसा प्रतीत होता कि मुहब्बत की आग जिसे तोग़जान ने उसके दिल में लगा दी थी, उल्लास और सुख से परिपूर्ण हृदय जिसे उसने आबाय को सौंप दिया था, अब इस दुनिया में फिर से उसके पास लौटकर आने को न था। उसकी बराबरी करनेवाली न तो कोई मिली है, न ही मिल सकती है। तोग़जान का एक हल्का-सा अहसास भी उसके भीतर सब कुछ झकझोर डालता और क़ुवानदिक़ का आलिंगन करने अनजाने उठे उसके हाथ अपने आप झुक जाते।

क़ुवानदिक़ इसे येन-केन प्रकारेण महसूस कर लेती और उसका जोश धीरे-धीरे मैत्रीपूर्ण स्नेह में परिणत हो गया। तो भी वह अब तक आबाय की जीवन-संगिनी के ख़्याल से सराबोर थी।

ख़ुद तयकर पाने में असमर्थ हो, आबाय ने उससे सलाह माँगी। अगर वह इजाज़त दे तो आबाय असिलबेक और क़ाराशाश से सलाह-मशविरा ले, उनके कहे मुताबिक़ करे। क़ुवानदिक़ इस पर सहमत हो गयी।

आबाय ने असिलबेक और क़ाराशाश से अलग-अलग बात की। क़ाराशाश ने तत्क्षण अपनी सम्मति दे दी – वह तो बहुत अर्से से आबाय को सुखी देखना चाहती थी। लेकिन जितनी दृढ़ता से क़ाराशाश ने सहमति दी थी उतनी ही दृढ़ता से असिलबेक ने आपत्ति प्रकट की।

"यह असंभव है," उसने कहा। "दिल्दा बेक़ुसूर है और कुनेकेन उसकी उपेक्षा की आज्ञा कभी नहीं देंगे। वह किसी भी दूसरी लड़की से शादी करने से तुम्हें मना कर देंगे, वह अल्शिनबाय से सम्बन्ध-विच्छेद करना नहीं चाहेंगे। और बेचारी क़ुवानदिक़ तुम्हारे परिवार में अपमानित होती रहेगी... ज़रा सोचो, उसके पिता के लिए यह बात कितनी तकलीफ़देह होगी। ख़ुदा न करे, मेरे अलावा यह बात कोई सुन भी ले। एकदम अभी यह ख़्याल अपने दिमाग़ से पूरी तरह निकाल दो!"

असिलबेक ने क़ुवानदिक़ से भी यही कहा और उसे अपनी उम्मीदें पूरी होती नहीं प्रतीत हुईं। फिर भी, आबाय के विदा होनेवाले दिन दोनों युवा हृदयों ने एक-दूसरे से अपनी उम्मीदें पूरी करने के उपाय फिर से तलाशने के वायदे के साथ हार्दिक मित्रों की तरह विदा ली।

क़ादिरबाय के आऊल से तोबिक्ति के जाड़े के पड़ाव तक दो दिन का फासला था।

सुखद, आतिथ्यपरायण आऊल को छोड़ आबाय मुर्दा-सा हो उठा था और जैसे-जैसे उसका घोड़ा आगे बढ़ता जाता, क़ुवानदिक़ उसे उतनी ही प्रिय प्रतीत होती; वह वास्तव में दृढ़ अनुरागिनी, स्नेहमयी पत्नी हो सकती थी।

३

इस वर्ष का जयलाव सर्वथा भिन्न था। यह एक उदास ग्रीष्म था – बहुत कुछ पतझड़ की तरह। बुज़ुर्गों ने और यहाँ तक कि क़ोनानबाय ने भी अपने स्वजनों के रिवाजी जलसे नहीं बुलाये थे। अफ़वाह, बतंगड़ और मैं-मैं

तू-तू, तोबिक्ति में पहले जिनका बाज़ार गर्म था, अब रुक गये थे। तम्बू डालने के मैदानों व चरागाहों पर बहस करने का कारण ही नहीं रह गया था। इर्गिज़बाय और बायदालि, बायसाल, सुयून्दिक़ व क़ाराताय की वास-भूमियों के अलावा आऊलों के पास बहुत थोड़े से पशु रह गये थे और ढलानों पर के उन हरे-भरे चरागाहों की चौकसी करने की जो कभी चिर-न्तन वैमनस्य के कारण रहे थे, अब कोई ज़रूरत न रह गयी थी। उन लोगों के पास जो क़बीलों पर शासन करते थे, अपनी सत्ता और ताक़त जताने का अवसर ही न था। जुत के कारण लगभग सब लोग रंक-से हो गये थे और झगड़े करनेवाले अपनी शान्ति बनाये रखना चाहने लगे।

"लोगों के लिए दुखी होने का नाटक करना बेहतर है," वे सोच रहे थे। "क़बीले के जलसों में दूसरों के साथ मिलकर ठंडी आहें भरना और अतीत के सुखद दिनों की याद में रोना, जो कुछ आपके पास है, अब सब के साथ मिलकर उसके उपभोग का स्वांग करना और मट्ठा बाँटते समय यह कहते रहना, 'देखो, मैं भूखों को खिला रहा हूँ,' बेहतर होगा। ऐसे वर्ष में जब लोग धन-जन की हानि से ज़रूरतों को पूरा करने में परेशान हों, हाज़िरदिमाग़ और नरम होना बेहतर है। जब वे ठीक-ठाक हो जाते हैं, उनके हौसले फिर से बुलन्द हो जायें, उन्हें पहले की तरह लूटा जा सकता है।"

लोगों को लूटने के फ़िराक में रहनेवालों की यही दूरदर्शिता थी, नमदे की किताबों* में लिखा क़ानून ऐसा ही था।

उस वर्ष सचमुच लोगों के ऐसे ही बदलते मिजाज़ थे। सभी उदास और कमसुख़न थे, काफ़ी समय तक उनके चेहरे से चिन्ता की रेखाएँ नहीं मिटीं। पूरे ग्रीष्म में तोबिक्ति के जयलाव पर एक भी तोय नहीं हुआ। पहले बायगा पर बायगा हुआ करते थे, लेकिन इस बार क़ोनान –तीन साल के घोड़ों की दौड़ को भी मंसूख करना पड़ा। जब दुल्हनों की आग-वानी की जाती या सुन्नत के समारोह किये जाते, दूसरे वर्षों की शान-शौ-कत के एकदम विपरीत व्यंजन नाममात्र को होते।

लेकिन यह शान्ति एकाएक चौंका देनेवाली अफ़वाह से भंग हो गयी। चोरों की–घोड़ों के चोरों के धावा बोलने की चर्चा फैल गयी थी।

---

* बुज़ुर्गों के ओतावों में बनाया जानेवाला अलिखित क़ानून। – सं०

आऊलों ने पतझड़ के चरागाहों की ओर सफ़र शुरू कर दिया था और वे अपने सफ़र के कई चरण पूरे कर चुके थे जब सहसा ही चोरियाँ शुरू हो गयी। पाँच दिनों के अन्दर ही अन्दर मायबासार, जाक़िप और यहाँ तक कि क़ोनानबाय के ढोरों से सब से अच्छे बीस घोड़े चोरी हो गये। बिजली की तरह ख़बर आऊल-आऊल में फैल गयी। जिनके पास सामर्थ्य थी, उन्होंने फ़ौरन ही अपने ढोरों पर पहरेदारों की संख्या बढ़ा दी।

चोरों को पकड़ना असंभव था। साधारणतया ऐसे चोरों को अपना कारोबार छुपा रखने में कठिनाई होती थी। कोई न कोई निश्चित रूप से ताज़ा उतारे गये चमड़े या ख़ून के धब्बे और ज़बह किये गये जानवर की अंतड़ियाँ या गोश्त देख लेता। अफ़वाहें तेज़ी से फैल जातीं। लेकिन इस बार घोड़ों की कोई आहट तक न थी–ऐसा प्रतीत होता मानो घोड़ों को धरती निगल गयी हो।

मामले पर विचार-विमर्श करने के बाद क़ोनानबाय और जाक़िप इस फ़ैसले पर पहुँचे कि चोर आस-पास के केरेय, नैमन या सिबान क़बीलों के ही थे। यह बात और भी ठीक जँचती क्योंकि आऊल अपने पतझड़ के चरागाहों की ओर बढ़ रहे थे–चोर सुविधापूर्वक किसी की नज़र में आये बिना घोड़ों सहित निकल जा सकते थे।

क़ोनानबाय ने सफ़र स्थगित कर, अपने भेदिये आस-पास के सभी क़बीलों में भेज दिये। मायबासार और इज़गुत्ति के नेतृत्व में घुड़सवारों के छोटे-छोटे जत्थे जितनी दूर जा सकते थे, घोड़ों पर एक-एक क़बीले का चक्कर लगा आये लेकिन उन्हें कोई चिह्न नहीं मिला। सर्वाधिक होशियार, चतुर नौजवानों ने ज़मीन का चप्पा-चप्पा छान मारा, खड़ी चट्टानों, घाटियों, कन्दराओं, दर्रों और गिरिपर्वतों की एक-एक जगह झाँक आये लेकिन वे चोरों का कोई सुराग न पा सके।

चोरों की तलाश पूरे ज़ोरों पर थी तभी क़ोनानबाय के आऊल से और पाँच घोड़े ग़ायब हो गये। सिर्फ़ इर्ग़िज़बाय को ही नुक़सान नहीं उठाना पड़ रहा था। बायसाल और सुयून्दिक़ की भी कई घोड़ियाँ चोरी हो गयीं।

हर सुबह, पौ फटते ही फिर नयी, भयावह ख़बरें फैल जातीं: "वे फिर ले भागे! और ग़ायब हो गये!"

क़ोनानबाय आपे से बाहर हो उठा था। घोड़े पर सवार हो देहाती क्षेत्रों का उसने भी तलाश मे चक्कर लगाया लेकिन असफलता ही हाथ लगी। भेदिये निष्फल लौट आये और पहाड़ो पर जागकर रात गुज़ारते पहरेदार भी कुछ नही बता सके। अब सिर्फ़ एक ही काम किया जा सकता था: रात की पहरेदारी बढ़ा दी जाये। क़ोनानबाय के आदेश पर सारे आऊल एक हो आगे बढ़ते, एक ही जगह तम्बू डालते और जितना संभव हो सकता, पास-पास ही गड्ड-मड्ड से रहते।

सफ़र तेज़ी से आगे बढ़ा। आऊलों में जल्दी मची थी मानो वे स्तेपियों में लगी आग से भाग रहे हों। उन्हें उम्मीद थी, चोर पीछे छूट जायेंगे और उनका ध्यान दूसरे आऊलों की ओर बॅट जायेगा।

सफ़र की तेज़ गति से इर्गिज़बाय के आऊलों को वास्तव में लाभ हुआ लेकिन उसी अनुपात में जिगितेक और कोतिबक़ को होनेवाला नुक़सान बढ़ गया। इर्गिज़बाय को होनेवाला नुक़सान भी ख़त्म नही हुआ: एक ही रात में दो-दो साल के दो घोड़े और एक हृष्ट-पुष्ट घोड़ी ग़ायब हो गयी।

"अब मैं जान गया हूँ," क़ोनानबाय ने कहा। लेकिन उसने चोरों के नाम नहीं लिये।

बेइंतहा गुस्से से भरे बायसाल और सुयून्दिक़ अटकल लगाने में ही लगे थे। "उनकी तलाश जारी रखो। तलाश बन्द मत करो," क़ोनानबाय ने अपने सन्देशों में अनुरोध किया था लेकिन अपने सन्देह में उन्हे राज़दार नही बनाया था। इसके साथ ही उसने पड़ोसी क़बीलों में अपने कई जासूस भेज दिये।

किसी को भी अपना इरादा बताये बिना उसने उन्हें अलग-अलग आदेश दिये थे। उसने इस काम के लिए जिन लोगों को चुना था, उनकी ओर शायद ही किसी का ध्यान जा पाता। जैसे, जिगितेक के क़ाराशि के आऊल में उसने एक दुर्बल वृद्धा को, कोतिबक़ में एक बूढ़े को और तोग़ाय में ऊँट हाँकनेवाले एक बूढ़े को।

इन वृद्ध व्यक्तियों ने चोरियों में दिलचस्पी का कोई भी चिह्न प्रकट नहीं किया। वास्तव में उन्होंने ऐसा दिखाया मानो वे चोरियों के बारे में कुछ जानते तक नहीं। भला इन निरीह वृद्ध व्यक्तियों को, ख़ुदा की मेह-रबानी पर जीनेवालों को इन मामलों से क्या लेना-देना? लेकिन, हर रोज़ वे सुबह-शाम घर-घर का चक्कर लगाते और लोगों को खाना पकाते देखते। उन्हें बस यही आदेश मिला था।

चाल सफल रही। क़ोनानबाय ने शीघ्र ही अपने दुश्मन, उन चोरों को भाँप लिया था जो उसके दर्जनों घोड़े ले भागे थे। उसे एक बार फिर जिगितेक पर कुपित होना पड़ेगा। उसे अब क़ाराशा, क़ावमेन और उनके परिवारों से भिड़ना पड़ेगा।

उसका सन्देह सच साबित हुआ था: चोर जिगितेक के ही थे। यह सारा सिर्फ़ दो आदमियों का काम था: बालाग़ाज़ और अबिलग़ाज़ि का।

क़ावमेन का बेटा और बाज़ाराली का बड़ा भाई बालाग़ाज़ नौजवानों में सर्वाधिक बेलगाम था। अबिलग़ाज़ि क़ाराशा का बेटा था। उसके बच्चे अपने बाप की तरह शोर-ग़ुल व झगड़ा पसन्द थे, और पलक झपकते किसी से लड़-भिड़ जाने को तत्पर रहते। वस्तुत:, बोजेय के साथ क़ोनानबाय के झगड़े को भड़कानेवाले क़ाराशा और क़ावमेन ही थे। जैसा कि कहा जाता, तोकपाम्बेत की लड़ाई की शुरुआत उसके सन्देशवाहकों की क़ाराशा और क़ावमेन द्वारा पिटाई के बाद ही शुरू हुई थी। उसके बाद से सभी बड़े जलसों में, मुसाक़ुल की लड़ाई और बोजेय के स्मृति भोज के दौरान, क़ावमेन और क़ाराशा के बेटों ने सब का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया था और सदैव उनके बारे में कोई न कोई चर्चा चलती रहती। सम्मान के मामलों में वे सबके सब अत्यंत संवेदनशील और मज़बूत व दुस्साहसी थे। बाज़ाराली भी इसी नीड़ का पंछी था। वह बुद्धिमान, लम्बा और ख़ूबसूरत था। जिगितेक का उसपर गर्व करना उचित ही था। दुस्साहस और दृढ़ता हमेशा से उसके परिवार की ख़ूबी रही थी।

हर जगह की तरह जुत के कारण कई जिगितेक नष्ट हो गये थे ख़ास कर वे जिनके पास थोड़े से चरागाह थे। क़ावमेन और क़ाराशा के आऊल पूरी तरह बर्बाद हो गये थे और बाज़ाराली, अबिलग़ाज़ि, बालाग़ाज़ और आदिलख़ाँ जैसे नौजवानों के पास सिर्फ़ एक-एक घोड़ा बच रहा था।

भूख और कमी झेलते वे पूरी गर्मी अपने तम्बुओं में ही रहे। दूसरों से दूध माँगना उनके सम्मान के नीचे थे। उन्हें हाथ पसारना क़तई गँवारा न था और बायदालि जैसे अपने निकटतम स्वजनों से भी उन्होंने कुछ नहीं माँगा था। भाड़े पर काम करना उनके जीवन का एकमात्र सहारा रह गया था लेकिन विनाशक जुत के कारण किसी को उनकी ज़रूरत न थी। अगर किसी तरह उन्हें नौकरी मिल भी जाती तो अपने काम से उनका पेट भले भर जाता, परिवार का गुज़ारा नहीं हो पाता।

गर्मी भर बालाग़ाज़ और अबिलग़ाज़ि अपनी माताओं, भाभियों, पत्नियों और भूखे बच्चों को दुर्बल होते और उन्हें रोते-कलपते देखते रहे थे। अपनी क़िस्मत को दोष देते वे कोई भी उपाय नहीं निकाल पा रहे थे। उनके अन्दर क्रोध बढ़ता गया और धीरे-धीरे यह क्रोध नफ़रत में बदल गया।

बाज़ाराली स्थिति को अच्छी तरह समझ रहा था। नौजवानों के बीच एक दिन पहाड़ी के पास बैठे हुए उसने यह बात बहुत सही ढंग से व्यक्त की थी जो उन सबको परेशान कर रही थी। हमेशा की तरह अपनी कड़वाहट भरी मुस्कान के साथ उसने कहा था:

"जब तक हम झगड़ना नहीं बन्द करते, हमारे लोग हमेशा अभावग्रस्त रहेंगे। अब ज़रा सफ़र ही शुरू करके देखो! हमारे माँ-बाप, बीवियों और बच्चों को पैदल चलना पड़ेगा। सफ़र पर निकलते समय आदमी के पास कम-से-कम एक आख़िरी चीज़ तो होनी ही चाहिए—और वह है एक गाय। लेकिन हम वह भी नहीं कर सकते। अब इससे ज़्यादा सज़ा ख़ुदा हमें क्या देगा?"

गर्मियों के दौरान बाज़ाराली नौजवानों से प्राय: लोगों के दिलों को साल रही ज़िल्लतों के बारे में बोलता रहा था। ऐसी बातें सबसे ज़्यादा बालाग़ाज़ और अबिलग़ाज़ि को परेशान करतीं। वे लगभग हताश से हो गये थे। बार-बार वे बाज़ाराली से पूछते: "हमें बताओ तो, हम क्या करें! हमें कोई रास्ता दिखाओ! कुछ कहो तो!" लेकिन बाज़ाराली के पास जवाब न था।

आख़िर उन्होंने स्वयं ही उपाय ढूँढ़ निकाला।

बालाग़ाज़ और अबिलग़ाज़ि रात में घोड़ों पर सवार हो निकल जाते। कुछ समय तक बाज़ाराली को कोई भी सन्देह न हुआ। सबसे पहले मायबासार के, फिर जाक़िप के घोड़े ग़ायब हो गये। तीसरा शिकार क़ोनानबाय था।

एक दिन रात में नीन्द न आने के बाद सुबह-सुबह अपने ओताव से निकलकर तम्बुओं के पीछे मैदान में बाज़ाराली जा बैठा और शीघ्र ही विचारों में खो गया। कोई पाँच या छह ओतावोंवाला क़ाराशा का आऊल पास ही में था और सुबह की पहली किरण के साथ ही उसकी विचारों की धारा पहरुए कुत्ते आक़्तोस के भौंकने से टूट गयी। आक़्तोस की आवाज़

में गुस्से की लहर थी जो किसी बाहरी आदमी के वहाँ मौजूद होने की द्योतक थी।]

"लगता है, यहाँ आस-पास कोई अजनबी है! मुझे देखना होगा," ऐसा सोचकर बाज़ाराली वहाँ बैठा इंतज़ार करता रहा।

शीघ्र ही दो घुड़सवार आ पहुँचे और अबिलग़ाज़ि के युवा ओताव के पास रुक गये। उनमें से एक घोड़े से उतरा और दूसरा बाज़ाराली की ओर बढ़ गया।

स्पष्ट रूप से इस नौजवान का घोड़ा बालाग़ाज़ का था। यह उसका एकमात्र, अद्‌भुत क़दमबाज़ घोड़ा था और ज़ाहिरी तौर पर रात में वह काफ़ी तेज़ सवारी कर चुका प्रतीत हो रहा था। झाग-झाग हुआ घोड़ा रास छुड़ाना चाहता था। "नौजवान शायद लड़कियों के पीछे भागते रहे हैं," बाज़ाराली ने सोचा।

चुपचाप देखता, वह ख़ामोश बैठा रहा। नहीं, नौजवान लड़कियों से मिलने नहीं गये थे—बालाग़ाज़ सोयिल से लैस था। बाज़ाराली का दिल धड़क उठा और आशंकाओं से भरकर वह चित्त लेट गया और सावधानी से देखने लगा। बालाग़ाज़ आऊल के पास घोड़े से उतरकर घोड़े को पास की उन चट्टानी पहाड़ियों की ओर ले चला जो छुपने की अद्‌भुत प्राकृतिक जगहें थीं।

प्रकटत: वह आऊल की नज़र से अपनी रात की यात्रा को छुपाना चाहता था। ढोकों के बीच अपना घोड़ा छिपाकर वह पैदल अपने ओताव में लौट आया। धीरे-धीरे आऊल जाग पड़ा। लोग भी जाग गये। बाज़ाराली उस रात तनिक भी नहीं सो पाया।

क़ाराशा के आऊल के पीछे भी चट्टानों और ढोकों के छुपने की सुविधाजनक जगहें थीं और बाज़ाराली ने उन्हें जाँचने का फ़ैसला किया। जल्दी ही उसे दूसरा छिपा घोड़ा भी मिल गया, वह अबिलग़ाज़ि का था। गुस्से से भरा वह घर की ओर लौट पड़ा। घर में वह गुस्सों से भरी ख़ामोशी में रहा। कभी-कभी वह गुस्से से काँप उठता मानो उसे शीतज्वर हो आया हो।

दिन के भोजन के समय तक वह दुविधा में पड़ा रहा था। उसकी आशंकाएँ तब सच हो गयीं जब कावमेन निकटवर्ती आऊल से रात के समय इर्गिज़बाय के और घोड़ों की चोरी हो जाने की ख़बर के साथ वापस आया।

जब बाज़ाराली को यह जानकारी मालूम हुई थी, बालाग़ाज़ पूरी तरह आराम करने के बाद अपने बिस्तरे से उठ चुका था और दूसरों के साथ ओताव से बाहर निकल आया था। तब बाज़ाराली ने अपना कोट डाल, इस तरह पेटी कसी मानो किसी लम्बे सफ़र के लिए खुद को तैयार कर रहा हो और अपने पिता के पास जा पहुँचा।

"मुझे आपसे कुछ कहना है। आइये, हम बाहर चलें," उसने कहा और क़ावमेन को पहाड़ी की ओर ले गया।

रास्ते में उसने बालाग़ाज़ को आवाज़ दी। वह तत्परता से बाहर आ गया। वह लम्बा-चौड़ा आदमी शांत और संयमित लग रहा था। बाज़ाराली ने उसकी ओर ग़ुस्से से देखा। उसका प्रायः सुर्ख़ रहनेवाला चेहरा अनिष्टकारी ढंग से सफ़ेद पड़ गया। उसकी सांसों में रुँधन प्रकट होने लगी और उसकी आवाज़ विचित्र ढंग से ऊँची सुनायी देने लगी।

"पिताजी, आपने हमें सिखाया है, टूटी-फूटी झोंपड़ी में भी ईमानदारी से रहना संभव है। चाहे मेरी ज़रूरत कितनी भी बड़ी क्यों न हो, मैंने गुनाह न करने की सौगंध खा ली है। आप भी हमेशा बदी से बचते रहे है और यह आपका सबसे बड़ा गुण है। अब आप जब वृद्धावस्था में पहुँच रहे हैं, हमें अपयश के बुरे दिनों से गुज़रना पड़े, क्या यह संभव है?"

बाज़ाराली की आवाज़ काँप उठी। वह आगे नहीं बोल सका।

"ऐसी क्या बात है? वह क्या कहना चाहता है?" क़ावमेन ने न समझते हुए बालाग़ाज़ की ओर घूरकर देखा।

लेकिन बालाग़ाज़ कुछ भी नहीं बोला।

"मैंने उस चोर को पा लिया है जिसने मायबासार और पिछली रात इसांय के घोड़े चुराये थे," बाज़ाराली ने तेज़ी से कहा। "यह रहा वह चोर, आपका सपूत बालाग़ाज़!" उसने आख़िरी शब्द चीख़कर कहा।

"क्या कह रहा है वह? क्या मतलब है तुम्हारा?" क़ावमेन दहल उठा।

"हाँ, हाँ। मैं क्या कह रहा हूँ, मैं जानता हूँ। ज़रा इनकार तो करके देखो!" उसने अपने भाई से चिल्लाकर कहा।

बालाग़ाज़ भी उबल पड़ा।

"क्या देखा है तुमने? क्या जानते हो तुम? मुझे किस लिए तुम तंग कर रहे हो? ज़रा साफ़-साफ़ कहो, बताओ तो हुआ क्या है," उसने पूछा।

"आज सुबह मैंने तुमको अबिलग़ाजि के साथ छुपे-छुपे लौटकर आते देखा! तुम्हारे धोड़े अभी भी पहाड़ियों में छुपे हैं। तुम्हीं चोर हो! यह मान लो! अगर तुम सच में आदमी हो तो सच-सच बता दो।"

बालाग़ाज़ ने टाल-मटोल की कोई कोशिश नहीं की।

"हाँ। तुम ठीक कहते हो।"

बाज़ाराली ग़ुस्से से काँपते हुए अपने भाई पर टूट पड़ा, उसकी आँखें जल रही थीं।

दोनों शेर की तरह ताक़तवर थे, उनके हाथ-पाँव सोटों की तरह प्रभावशाली थे। बाज़ाराली का अचानक हमला बालाग़ाज़ के लिए अप्रत्याशित था लेकिन अपने भाई के पैरों को निशाना बनाते हुए वह आघात करके उसे मात करने में सफल रहा। बाज़ाराली लड़खड़ा गया। वह अपने घुटनों के बल गिर पड़ा और पलक झपकते ही बालाग़ाज़ उसपर पिल पड़ा। वह उसे धरती पर पटकने की कोशिश करने लगा। लेकिन बाज़ाराली कोई कम हाज़िरदिमाग़ न था: बल खाते हुए वह अपने प्रतिद्वन्द्वी की पकड़ से निकल गया और पैरों पर उठ खड़ा हुआ। एक ही झपट में उसने एक बार फिर बालाग़ाज़ को जकड़ लिया और ज़मीन पर पटक दिया। बालाग़ाज़ के सीने पर सवार हो उसने अपने भाई का गला दाहिने हाथ से दबोच लिया और बायाँ हाथ खोल में रखे चाकू की ओर बढ़ाया।

"ऐसी बातों के लिए," उसका गला रुँध गया था, "सिर्फ़ भाई की ही नहीं—अपने बाप तक की हत्या कर सकता हूँ!" उसने अपना चाकू ऊपर उठा लिया। बालाग़ाज़ निराशा से उसके नीचे दबा अपने हाथ-पाँव मार रहा था।

लेकिन बाज़ाराली उससे ज़्यादा ताक़तवर था और अगले ही पल वह भरपूर वार कर चुका होता, अगर उसके पिता ने उसका हाथ नहीं पकड़ लिया होता।

"रुक जा! कुत्तो! क्या कर रहे हो? उठो!" बाज़ाराली को खींचकर एक ओर करते हुए उसने आदेश दिया।

बालाग़ाज़ उछलकर खड़ा हो गया। उसका ग़ुस्सा जा चुका था, उसने बाज़ाराली की ओर तल्ख़ी से देखा।

"आह, कमीने!" उसने कहा। "तू कुत्ता है—फिर भी मेरा भाई छोटा होते हुए भी तूने मुझे अपने पैरों तले कुचल डाला। भला इससे

बढ़कर बेइज़्ज़ती हो सकती है! तू कितना बुद्धिमान है! क्या इससे भी ज़्यादा सोचने का दिमाग़ है तुझमें?"

बाज़ाराली फिर उदास ख़ामोशी में खो गया। उत्साहित हो, बालाग़ाज़ और तेज़ी से बोलने लगा, उसकी आवाज़ क्रोध के मारे अस्थिर हो गयी थी:

"जब तूने पूछा, क्या मैंने घोड़े चुराये थे, मैंने इनकार नहीं किया था। लेकिन अगर मैं इनकार कर देता, तू क्या साबित कर सकता था? मैं केरेय के यहाँ गया था, अगर मैं यह कहता तो? क़ोनानबाय तो क्या, ख़ुदा भी कभी हमारा सुराग़ नहीं पा सकेगा! मैं इस बारे में निश्चिंत हो चुका हूँ, डरने की कोई ज़रूरत नहीं! जो हो चुका, उससे इनकार करने से कोई लाभ नहीं! लेकिन ऐसा क्या मैंने अपने लिए किया? मैंने ऐसा दूसरों की मदद के लिए किया! मैंने चोरी इसलिए नहीं की कि मुझे पसन्द है। मुझे इससे नफ़रत है। मेरे पास कुछ भी नहीं और वह समृद्ध है। वह हमें ग़रीब बनाकर अमीर बना है। मेरी ज़मीन कहाँ गयी? मेरी सम्पत्ति कहाँ गयी? और उन छोटे-मोटे नुक़सानों से उन्हें क्या होनेवाला है? बस उनके ख़ज़ाने से दो-चार ठिकरे ही तो चले जायेंगे! जब हमारे एकदम अपने प्रियजन मर रहे हों, उन्हें भूखों मरने से बचाने का एकमात्र यही तरीक़ा है। मैं अमीर नहीं बन रहा हूँ—मैं लोगों की जीवन-रक्षा कर रहा हूँ! इसके लिए अगर मैं सिरफिरा ही बन गया तो क्या? तू मुझे नहीं रोक सकता—जीवन-भर! तू समझता है, तूने एक मामूली चोर पकड़ लिया है? मैं कोई चोर नहीं—ग़रीबों का पेट भरने के लिए मैं अमीरों को लूट रहा हूँ, मैं बदला लेनेवाला हूँ! अगर मैंने असहायों को लूटा होता, उनसे कुछ छीना होता, तुम मेरी निंदा कर सकते थे!"

क़ावमेन न आपत्ति कर सका, न सहमत हो सका। वह सन्नाटे में था। चाहे बालाग़ाज़ की नीयत जितनी भी नेक रही हो, क़ावमेन कभी भी चोरी के घोड़ों का गोश्त अपने घर में बनना सहन नहीं कर सकता था। उसने अपने बेटे को आऊल से निकाल देने का फ़ैसला किया।

"भाग जा! मेरी नज़रों से दूर हो जा! मेरे आऊल से अलग हो जा! फिर अपना चेहरा मुझे मत दिखाना," उसने दृढ़तापूर्वक कहा।

अपनी-अपनी धारणाओं के साथ तीनों अलग हो गये।

अपने पिता का आदेश-पालन करते हुए बालाग़ाज़ उसी दिन अपना ओताव हटाकर क़ाराशा के आऊल में ले गया।

पाँच दिन बाद क़ोनानबाय के फिर कई घोड़े ग़ायब हो गये।

बालाग़ाज़ के साथी थोड़े से ही थे—पहले तो सिर्फ़ अबिलग़ाज़ि और आदिलख़ाँ ही थे। बाद में उनके साथ दूरवर्ती नैमन आऊलों के चार नौजवान आ मिले। यह चारों नौजवान मज़बूत, हिम्मती और हाज़िरदिमाग़ थे। जुत के बाद अभावग्रस्तता के कारण वे भी ऐसे काम करने को मजबूर हो गये थे। शक्तिशाली और सम्पन्न आऊलों से घोड़े चुराने और ग़रीबों को न लूटने का फ़ैसला उन्होंने किया था। वे कभी एक साथ नहीं दिखाई देते—आम बटोहियों की तरह अलग-अलग चलते। उनकी एक और दूसरी तरकीब थी—उनके साथी जो घोड़े नैमन लोगों के यहाँ से चुराते, उन्हें लाकर सौंप देते और तोबिक्ति लोगों के यहाँ से चुराये घोड़े बालाग़ाज़ अपने नैमन दोस्तों को सौंप देता।

दोनों दल गोशा-गोशा, चप्पा-चप्पा, हरेक नदी, झील और हर निर्जन पगडंडी से परिचित थे। हर पहाड़ी, हर टेकरी, हर दर्रा और खाई का नक़्शा उनके दिमाग़ में रहता। इनपर मामूली यात्रियों की कभी नज़र भी नहीं पड़ सकती थी। इनका इस्तेमाल वे अपने पीछा करनेवालों को उलझन में डालने, उन्हें ग़लत राह पर ले जाने के लिए इस्तेमाल करते थे। इस मामले में बालाग़ाज़ विशेष रूप से पटु था और निरन्तर नये-नये दाँव-पेंच निकालता रहता।

छह या सात लोगों के इस छोटे-से गिरोह ने दोनों इलाक़ों को किसी वात्याचक्र की तरह हिला दिया था। यह दुस्साहसी नौजवान अपने शिकार पर बाज़ की तेज़ी से झपटते।

सुबह में जैसे ही आऊलों को अपने घोड़ों के ग़ायब हो जाने का पता चलता, एक-एक आदमी घोड़े पर सवार हो चल पड़ता। दो-दो या तीन तीन आदमियों के जत्थों में स्तेपियों को छान मारते हुए वे पहाड़ियों से गुज़रनेवाली हर राह की निगरानी करते। उन्हें यह निश्चय रहता कि केरेय, नैमन या क़ाराकेसेक की ओर जाते हुए वे ज़रूर ही चोरों का सुराग़ पा लेंगे। पहाड़ियों में लगातार कई-कई दिनों तक खोज-बीन चलती रहती लेकिन वे ख़ाली हाथ लौट आते।

"एक मक्खी तक नहीं गुज़री है या कोई चमगादड़ तक नहीं गया है," वे नाउम्मीदी से कहते।

"चोर कहीं चिंगीज़ में ही छुपे हैं," दूसरे ने अटकल लगायी और उन्होंने एक-एक झाड़ी खोज डाली लेकिन कोई परिणाम न निकला।

बालाग़ाज़ निर्भीकता से भारी ख़तरा मोल लेता। आऊल और घोड़ों का चुनाव करने के बाद वह अंधेरे में घोड़ों को कुछ दूर ले जाता। वह कभी उतावलेपन से सरपट भगा ले जाने या उन्हे सीधे नैमन की ओर ले जाने की कोशिश नहीं करता। इसके विपरीत दो-चार दिनों तक, जब तक कि चिल्ल-पों ख़त्म नहीं हो जाती, घोड़ों को वह उन आऊलों के क़रीब ही रखता जिनसे वे चुराये गये होते—बस उतनी ही दूर जितनी दूर भेड़ों को चराने के लिए ले जाया जाता है। पहाड़ियों और जंगलों को वह काम में नहीं लाता क्योंकि खोजी दलों का ध्यान निश्चित रूप से उनकी ओर जाता। वह उन जगहों की ओर बढ़ता जहाँ चारे के लिए घास काटी जा चुकी हो। इसके अलावा, अपने हर धावे में वह सिर्फ़ पाँच या छह चुराता और उन घोड़ों को पास ही लगाम और अश्व-आवरण लिये इन्तज़ार कर रहे अपने जिगितों की ओर ले जाता।

फिर जिगित चुराये गये घोड़ों पर सवार हो किसी घाटी में उतर जाते और बालागाज़ चौकसी से वहीं खड़ा रहता। जब आऊल से पीछा करने-वाले लोग आते दिखाई देते, वह शान्तिपूर्वक उनके गंतव्य की ओर देखता रहता। उसके हाथ का एक इशारा उसके जिगितों को विपरीत दिशा में ले जाने को पर्याप्त होता। इतना होने पर भी वे कभी सीधे नहीं जाते बल्कि सावधानीपूर्वक एक घाटी से दूसरी घाटी में, जंगलों-झाड़ियों में छुपते हुए जाते। कभी-कभी तो उनके और पीछा करनेवालों के बीच बस एक टेकरी भर होती। इस तरह वे लूटे गये आऊल के आस-पास ही रहते। कभी-कभी वे उन जगहों पर ख़ुद को छुपा लेते जिन्हें खोजी दल छान चुके होते।

इस तरह कई दिनों तक छुपते-छुपाते रहने के बाद बालाग़ाज़ अंधेरा घिर आने पर अपने साथियों के साथ घोड़ों को नैमन भेज देता।

क़ोनानबाय ने जिस वृद्धा को क़ाराशा के आऊल में भेजा था, वह इन चालबाज़ियों के बारे में कुछ भी नहीं जानती थी और काफ़ी समय तक कोई भी सुराग़ नहीं तलाश सकी थी। बालाग़ाज़ और उसके साथी घर पर कभी भी किसी घोड़े को नहीं काटते। यही नहीं, वे चुराये गये घोड़ों को अपने आऊलों के आस-पास भी नहीं लाते। लेकिन एक बार अबिलग़ाज़ि अपने लालच पर क़ाबू नहीं रख पाया। नैमन के पीछा करनेवाले लोग

काफ़ी पीछे छूट चुके थे श्रौर कोई भी ख़तरा नहीं दिखाई दे रहा था। सो, श्रबिलग़ाज़ि श्रौर उसके दोस्तों ने दो साल के एक घोड़े को नदी के किनारे ज़बह किया श्रौर सिर्फ़ एक तेलिशक़* घर ले श्राये।

जब सब लोग सो गये, स्वादिष्ट गोश्त को एक कड़ाह में चढ़ा दिया गया लेकिन वृद्धा को घोड़े के गोश्त की ख़ुशबू मिल गयी। गोश्त के पकते समय वृद्धा दूर ही दूर रही लेकिन जब वह तैयार हो गया श्रौर एक तश्तरी में श्रबिलग़ाज़ि को परोसा जानेवाला था, वह सहसा श्रोताव के श्रन्दर घुस श्रायी। उसने तेलिशक़ पर नज़र पड़ते ही फ़ौरन जान लिया, यह किसी दो साल के घोड़े का था।

यह सूचना पाते ही क़ोनानबाय ने एक सन्देशवाहक बायदालि के पास भेज दिया: "क़ाराशा बायदालि का स्वजन है। बायदालि ख़ुद उससे सवाल जवाब करे। सचाई प्रकट हो चुकी है श्रौर इसका एक गवाह भी है। बायदालि ही बताये, वह क्या करना चाहता है। श्रगर क़ाराशा चोरियों से इनकार करता है तो क़ावमेन क़ाराशा के लिए क़सम खाये। क़ावमेन निश्चित रूप से सब कुछ जानता होगा। वह दरोग़हलफ़ी नहीं करेगा। श्रगर क़ोनानबाय किसी चीज़ का यक़ीन कर सकता है तो वह है क़ावमेन की क़सम।" बायदालि को भेजा गया सलाम यही था।

क़ाराशा से सवाल-जवाब किये बिना बायदालि ने फ़ौरन ही क़ावमेन को जा पकड़ा। क़ावमेन ने इस बात पर ज़ोर डालते हुए सब कुछ से इनकार कर दिया कि क़ाराशा या बालाग़ाज़ से उसे कुछ भी नहीं लेना देना श्रौर उसने काफ़ी समय पहले से ही उनसे नाता तोड़ दिया है।

लेकिन बायदालि डटा रहा:

"उन्हें दोषी मानो या बेक़ुसूर! क़ोनानबाय को सिर्फ़ तुम्हारी बात का यक़ीन है। श्रगर उनके निर्दोष होने का तुम्हें पक्का विश्वास है, तुम इस बात पर हलफ़ उठाकर श्रपने स्वजनों को श्रनुचित दोषारोपण से बचा क्यों नहीं लेते!"

श्रौर तब क़ावमेन सहसा भण्डा फोड़ करते हुए बोल उठा:

"मैं दोज़ख़ में नहीं जाना चाहता," उसने जवाब दिया। "मैं उसका दोष मोल लेनेवाला नहीं हूँ।"

---

* तेलिशक़ – एक पसली श्रौर थोड़ी-सी चर्बी। – सं०

"क़ावमेन ने हलफ़ उठाने से इनकार कर दिया है! उसका कहना है, वह उन लोगों के लिए सौगंध नहीं लेगा! चोर क़ाराशा के ग्राऊल के हैं!" इर्गिज़बाय के सारे श्रोतावों में यही चर्चा चल पड़ी।

"वे ख़ुद को स्वजन कहते हैं और हम लोगों के साथ दुश्मनों से भी बुरा बर्ताव करते हैं! हम ऐसी चीज़ कभी माफ़ नहीं करेंगे! वे हमसे किसी तरह की दया की उम्मीद न रखें! हम उनका सब कुछ छीन लेंगे, हम धन-जन सहित उनके ग्राऊलों को जला डालेंगे," मायबासार और जाक़िप ने धमकी दी।

"उन्हें छोड़िये मत!" उन्होंने क़ोनानबाय के ग़ुस्से को हवा दी। "हमें उनपर क़रारी चोट करनी चाहिए!"

लेकिन क़ोनानबाय ग्रलग ढंग से सोच रहा था। यह साल ग्रसाधारण रूप से कठिन रहा था और मामले पर गंभीरता से विचार करना ज़रूरी था। इसके ग्रलावा, हाल-फिलहाल से बायदालि के साथ उसके ग्रच्छे सम्बन्ध क़ायम हो गये थे। फिर चोर सिर्फ़ इर्गिज़बाय को ही नहीं, कोतिबक़ और बोकेंशी को भी लूट रहे थे। बायदालि भी नहीं बचा था। इसलिए उसके साथ मिलकर काम करना ज़रूरी था और ग्रगर संभव हो तो उसी के हाथों चोट की जाये। लेकिन हर हालत में चोरी का ग्रारोप केवल जिगितेक पर लगना चाहिए।

क़ोनानबाय ने फ़ौरन ही मायबासार का जोश ठंडा कर दिया।

"ठहरो! लाल-पीला होने से क्या लाभ? धीरज से काम लो। क़ाराशा भाग नहीं जायेगा!" फिर उसने एक और सन्देशवाहक जिगितेक भेजा।

इस बार सन्देशवाहक जुमाबाय था। वह पहले बायदालि के पास गया। उसने कहा, क़ोनानबाय ने ग्रपना सन्देश भेजा है और ग्रपना पहला ग्रनुरोध तत्परतापूर्वक पूरा करने के लिए बायदालि का शुक्रिया ग्रदा किया है। क़ावमेन से पूरी बात साफ़ हो चुकी है। जुमाबाय ने फिर बताया, क़ोनानबाय क़ाराशा और ग्रबिलग़ाज़ि दोनों को ग्रपने यहाँ बुलाना चाहता है।

बायदालि ने कोई एतराज़ नहीं किया।

"उनसे वह ख़ुद स्वजन की तरह बात कर ले! वह ठीक ही चाहता है। मैं उसका सलाम क़ाराशा तक पहुँचा दूँगा," उसने जवाब दिया।

क़ोनानबाय का निमंत्रण यथासमय क़ाराशा और ग्रबिलग़ाज़ि को भेज

दिया गया लेकिन दोनों में से किसी ने भी उसका पालन नहीं किया। बायदालि ने धमकियाँ दीं लेकिन उनका भी कोई असर न हुआ। क़ाराशा और उसके साथी दोहरे अपराधी सिद्ध हो गये थे—उन्होंने घोड़े तो चुराये ही थे, अब अपना क़ुसूर मानने से भी इनकार कर रहे थे।

क़ोनानबाय की स्थिति और मज़बूत हो गयी।

इर्गिज़बाय चौकसी से दिन-रात क़ाराशा के आऊल की निगरानी करते। क़ाराशा और क़ावमेन के आऊलों से अनुपस्थित सारे नौजवान चोर करार दिये गये।

"अबिलग़ाज़ि अकेले चोरी नहीं कर रहा होगा। निश्चित रूप से उसका कोई बड़ा-सा गिरोह होगा। सब लोगों को मिलकर उनकी तलाश करनी चाहिए!" सब यही सोच और कह रहे थे।

अफ़वाहें तेज़ी से फैल गयीं। बालाग़ाज़ और आदिलख़ाँ को काफ़ी पहले से अबिलग़ाज़ि के सहयोगियों के रूप में मान लिया गया था। जब अबिलग़ाज़ि ने आने से इनकार कर दिया, क़ोनानबाय ने बालाग़ाज़ और आदिलख़ाँ को बुला भेजा। मध्यस्थों के मार्फ़त क़ाराशा और क़ोवमेन ने बालाग़ाज़ को भी क़ोनानबाय से मिलने की सलाह दी।

लेकिन बालाग़ाज़ ने इसपर कोई कान नहीं दिया। "हम क़ोनानबाय से क्या उम्मीद रख सकते हैं?" उसने अपने दोस्तों को समझाया। "वह काफ़ी समय से मुझे परेशान करने के लिए कोई बहाना ढूँढ़ता रहा है। मेमने की तरह निरीह बन हम क्यों उसके पास जायें? मैं अपनी इच्छा से उसके जाल में क्यों फँसूं? मैंने जो कुछ किया है, मुझे उसका कोई अफ़सोस नहीं। पहले वह हमें पकड़कर बेड़ियों में जकड़े तो। चाहें कुछ भी हो, मैं बदमाश तो करार दिया ही जा चुका हूँ लेकिन मैं "आज्ञाकारी बदमाश" या "विवेकपूर्ण बदमाश" नहीं बनना चाहता—इससे तो मुझे मरना ही ज़्यादा अच्छा है।"

बालाग़ाज़ और अबिलग़ाज़ि की दुर्दमनीयता ने क़ोनानबाय को सोचने पर विवश कर दिया। अगर यह बात पहले कभी हुई होती, वह हमला करके अपराधियों की सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा कर लेने का आदेश दे देता लेकिन इस समय यह नहीं किया जा सकता था। इस समय अधिकांश लोग भूखे और दयनीय स्थिति में थे। इससे एक ऐसी आग भड़क उठती जिसे बुझाया नहीं जा सकता।

इसके बावजूद एक और भी रास्ता था—वह ज़िला अधिकारियों से शिकायत दर्ज कर सकता था। वह अपराधियों को पकड़ने के लिए पुलिस का दस्ता बुलवाकर उन्हें बेड़ियों में जकड़वा सकता था। इस तरह मामला ही ख़त्म हो जाता।

लेकिन क़ानून बदल गये थे। आग़ा-सुल्तान का पद उठा दिया गया था। इसके अलावा कुछ नयी बातें भी लागू कर दी गयी थीं। तोबिक्ति क़बीला अब एकदम ही एक अलग दुवान के अधिकार-क्षेत्र में था। गर्मियों की शुरुआत के समय से वे सेमिपलातींस्क प्रशासन के अधीन थे। पहले वे एक वोलोस्त-प्रमुख के अन्तर्गत थे, लेकिन अब उन्हें तीन वोलोस्तों में विभक्त किया गया था। नये दुवान का प्रशासन नये आदमियों के हाथों में था। अब तक क़ोनानबाय की उनसे मुलाक़ात नहीं हुई थी और उनमें उसका कोई परिचित भी न था। चुनाव होनेवाले थे और यह समय निश्चित रूप से अपने ही आऊल के विरुद्ध शिकायत दर्ज कराने का न था। कम से कम चुनाव तक प्रतीक्षा ज़रूरी थी।

बेशक, प्रतीक्षा ज़रूरी थी लेकिन बालाग़ाज़ का गिरोह अधिकाधिक हुक्म उदली पर उतर आया था। उसने दो बार उन्हें बुलावा भेजा था लेकिन उन लोगों ने बात सुनने तक से इनकार कर दिया था। "वे समझ लेंगे, कोई उनपर हाथ नहीं डाल सकेगा," क़ोनानबाय सोच रहा था। काफ़ी हिचकिचाहट के बाद आख़िर उसने विश्वसनीय जिगितों का एक दल अपराधियों को पकड़ लाने का आदेश देकर भेज दिया।

लेकिन बालाग़ाज़ इतनी आसानी से पकड़ानेवाला न था। उसके नौजवान चारों दिशाओं में घोड़ों पर सरपट भाग लिये। थके-हारे घोड़ों पर पीछा करनेवाले ख़ाली हाथ लौट आये। बालाग़ाज़ और उसके साथी रफ़ूचक्कर हो चुके थे। इस बार भी उन्होंने क़ोनानबाय के ढोरों को लूटा लेकिन सिर्फ़ थोड़े-से घोड़े ही लिये।

चोरी ठीक उसी दिन हुई जब आऊल अपने जाड़े के पड़ाव की ओर विदा हुए। मौसम ठंडा था। गायों और घोड़ियों ने अब दूध देना बन्द कर दिया था। इसलिए क्षति और भी ज़बर्दस्त थी। भटकते पशु आसानी से भूखों के हाथ पड़ सकते थे।

क़ोनानबाय वोलोस्त प्रशासक के चुनाव किसी भी दिन होने की आशा

कर रहा था। उसने बाज़ाराली को बुला भेजा जो दूसरे जिगितेकों के विपरीत तत्क्षण आ पहुँचा।

क़ोनानबाय उससे अपने नये तोक़ल नूरग़ानिम के ओताव में मिला। वह अभी हाल ही में अपने शरदकालीन गृह में आया था। मकान गर्म और किसी युवा ओताव की तरह सुसज्जित था। नूरग़ानिम मूर्तिवत लुभावनी थी; उसकी काली चमकती आँखें विशेष रूप से सुन्दर थीं। उसमें नवयुवती का आकर्षण, स्वास्थ्य और सुघड़ता थी। उसकी कुछ-कुछ लम्बी-सी नाक की दाहिनी ओर एक छोटा-सा तिल था जो उसके गोरे रंग-रूप में चार चाँद लगा देता था। उसकी पतली, लचकती कमर पर कोई भी सुन्दरी ईर्ष्या कर सकती थी।

क़ोनानबाय के बोलने की प्रतीक्षा करता बाज़ाराली एकाग्रता से नूरग़ानिम की रूप-सुधा का पान करता रहा। "ऐसी तोक़ल धरती पर उसके लिए कहाँ से उतर आयी?" वह चकित था।

नूरग़ानिम का व्यवहार साधारण किन्तु आश्वस्तकारी था। उसके आदेश पर एक समोवर लाया गया और दस्तरख़ान बिछा दिया गया। चाय के दौरान बिना किसी संकोच के वह अपने पति और अतिथि की ओर देखती, घरेलू मामलों के बारे में बोलती रही। उसका पति उसे क़ाल्माक़* कहकर बुलाता। चाय के बाद उसने उससे कहा:

"क़ाल्माक़, चाय का सामान उठाने कहो। मुझे बाज़ाराली से बात करनी है।"

बिना हड़बड़ाये नूरग़ानिम ने आज्ञा का पालन किया फिर नौकर को बाहर भेजकर ख़ुद क़ोनानबाय से कुछ दूर मर्दों की तरह पालथी मारकर बैठ गयी।

क़ोनानबाय शान्तिपूर्वक, धीमी आवाज़ में बोल रहा था। उसने बाज़ाराली के अभिमान को ललकारा।

"वे तुम्हारा नाम डुबो देंगे। तुम सच्चे इनसान हो, अपनी इज़्ज़त की क़द्र करते हो। जो कुछ उन्होंने किया है, उससे तुम्हारी नेकनामी पर कालिख पुत जायेगी। मुझे पक्का विश्वास है, तुम उनकी ओर से न तो बो-

---

* क़ाल्माक़ – क़ाल्मी की लड़की। – सं०

लोगे और न ही उन्हें बेक़ुसूर साबित करने की कोशिश करोगे। तुम्हारी क्या राय है?"

बाज़ाराली ने बेझिझक, संक्षिप्त-सा उत्तर दिया। उसकी दृष्टि सधी हुई थी। उसके शब्द शान्त, संयमित और प्रभावशाली थे। वह डाकुओं की हिमायत करने नहीं आया था। वह उन्हें दोषी मानता था और इसी-लिए उसने उनसे सम्बन्ध तोड़ लिये थे। बेशक, बालाग़ाज़ उसका भाई था लेकिन बहुत पहले ही उनके रास्ते अलग-अलग हो चुके थे और उन्होंने फिर कभी न मिलने का फ़ैसला कर लिया था।

चाय की गरमाहट से बाज़ाराली का तमतमाया चेहरा और ख़ूबसूरत हो उठा था। उसकी चमकती, गहरे पैठ जानेवाली आंखें, स्वस्थ सुर्ख़रू रंग, शक्तिशाली गठन और लम्बी गोरी अँगुलियाँ नूरग़ानिम का ध्यान खींच रही थीं। उसने महसूस किया, उसके चौड़े कन्धे, शक्तिशाली सीना और मज़बूत बाज़ू ज़ोर-ज़बर्दस्ती सहन नहीं करेंगे।

तोबिक़्ति में क़ोनानबाय को यह पहला आदमी मिला था जो उससे इतनी स्वच्छन्दता से बात कर सके। बाज़ाराली के जवाब और उसकी बेलागियत पर वह चकित था।

वह तुरन्त कुपित हो उठा:

"अगर तुम उन्हें दोषी मानते हो तो डकैतियाँ बन्द करने में हमारी मदद करो!"

"हाँ, मैं उन्हें दोषी मानता हूँ," बाज़ाराली ने जवाब दिया। "और मैं ऐसा कह भी चुका हूँ। लेकिन वे ऐसा काम करने पर मजबूर क्यों हुए? हाल के जुत और नितान्त अभावग्रस्तता के कारण। और दूसरा कारण है वह बेइंसाफ़ी जिससे हमारा पूरा क़बीला लम्बे अर्से से पीड़ित है। जो ऊपर हैं, मुखिया हैं—सब कुछ अपनी जायदाद समझते हैं, हड़प लेते है। बादवाले अपना हिस्सा चूक जाते हैं। और निरीह, बेआवाज़ लोगों को तो कुछ भी नहीं मिलता। इसका नतीजा क्या हुआ? जुत के पहले जिनके पास हर तरह की सुख-सुविधा थी, बेहतर साधन थे, वे बिना किसी नुक़सान के रहे। और जिनके पास थोड़ा कुछ था—वे अब अन्धों-सा बेसहारा हो गये। क्या किसी ने इसपर ग़ौर किया है? क्या कोई भी ऐसा बुज़ुर्ग है जिसने लोगों के दुख में हमदर्दी महसूस की हो? मैं आपसे यही पूछने आया हूँ," उसने कहा।

जवाब देने के बदले बाज़ाराली ने उल्टी गंगा बहा दी थी। यह क़ोनानबाय को तनिक पसन्द न था। अपने मेहमान पर खा जानेवाली निगाह डालकर उसने उसे समझाया – जुत एक प्राकृतिक आपदा है, ख़ुदा की भेजी हुई, अगोचर भाग्य का विधान है।

"जुत आदमी के वश की बात नहीं। तुम किसे इसका दोषी ठहरा सकते हो? जिनके पास कुछ था, उन्होंने क्या उसमें लोगों का हिस्सा नहीं बँटाया? लेकिन कोई अकेला हर किसी की मदद कर सकता है? लायक़ लोग थोड़े में ही सन्तोष कर लेते हैं। हमें सृष्टिकर्त्ता की मर्ज़ी के आगे झुकना ही होगा!"

लेकिन बाज़ाराली "सृष्टिकर्त्ता की मर्ज़ी" के आगे भयभीत हो जानेवाला न था। यदि ख़ुदा की मर्ज़ी पर दुख से कराहने को लोग विवश हुए थे तो ख़ुद को जनता के रक्षक कहनेवालों ने लोगों को सहायता क्यों नहीं दी? सहायता देने के बदले में हुक्मबरदारी व घुटने टेक देने जैसी बातें ही करते रहे। इस तरह तो आदमी वास्तव में क़ब्र की ही शरण ले लेगा। क़ोनानबाय के उपदेशों से बस यही निष्कर्ष बाज़ाराली निकाल सका था और ऐसा कहने में उसे कोई झिझक नहीं हुई।

बाज़ाराली से बहस और वाद-विवाद करना क़ोनानबाय ने अपने सम्मान से नीचे समझा। बस भौंहें चढ़ाकर उसने दृढ़तापूर्वक कहा:

"अब मेरा मन साफ़ हो गया है। मेरे ख़्याल से उनपर रहम करने की कोई ज़रूरत नहीं। बल्कि मैं इतना ही कहूँगा: बालाग़ाज़ और अबिलग़ाज़ि मुसीबत बुला रहे हैं। उन्हें इसकी क़ीमत चुकानी होगी। मैंने समय रहते तुम्हें चेता दिया है: वे और किसी को नहीं, ख़ुद को ही दोष देंगे!"

बातचीत ख़त्म हो चुकी है, यह बाज़ाराली समझ गया। जाने से पहले वह एक बार फिर क़ोनानबाय से मुख़ातिब हुआ।

"मुझे बालाग़ाज़ से कुछ भी लेना-देना नहीं। जो होना है, वही होगा। पर बात इसमें नहीं है। आप अपनी पूरी ज़िन्दगी अपनी ताक़त लोगों की बातों से, काम से डराकर क़ाबू करने में लगाते रहे और लोग अपनी ताक़त आपका विचार बदलने, आपको नरम बनाने में लगाते रहे लेकिन बेकार। हम कभी एक राह नहीं चलेंगे। हमारी क़िस्मत में हमेशा-हमेशा लड़ते रहना बदा है," अपना टोप उठाते हुए उसने कहा।

कोई जवाब न पाकर वह आराम से उठा और विदा ले दरवाज़े की

ओर चल पड़ा। नूरग़ानिम और क़ोनानबाय अपलक उसके पीछे देखते रहे। विचारों से ऊहापोह किन्तु संयमित, चिन्ता, उद्विग्नता या व्याकुलता की एक भी परछाँई के बिना वह अपनी राह चला गया।

क़ोनानबाय बन्द दरवाज़े की ओर ताकता रहा फिर नूरग़ानिम से मुख़ातिब हो गया:

"लाजवाब आदमी है बाज़ाराली! उस जैसा ख़ूबसूरत और चतुर एक भी जिगित यहाँ नहीं! लेकिन वह अपने विचारों से पीड़ित है। और क़ावमेन जैसे फूहड़ आदमी का बेटा होकर तो इसने और भी मामला गड़बड़ कर दिया है! अगर यह किसी मज़बूत आदमी का बेटा होता तो पूरे क़बीले का गौरव होता।"

क़ोनानबाय के शब्दों में ईर्ष्या मिश्रित प्रशंसा की ध्वनि थी।

नूरग़ानिम बाज़ाराली की बातें मगन मन से सुन रही थी। उसके पति के शब्द ख़ूबसूरत और चतुर नौजवान में उसकी दिलचस्पी को सिर्फ़ गहन करने का काम कर रहे थे। क़ोनानबाय की प्रशंसा और ईर्ष्या में से वह प्रशंसा की ओर ही प्रवृत्त थी। अब तक ख़ुद अपनी ही भावनाओं को समझ पाने में असमर्थ, उसे अपना दिल रस्सा तुड़ाकर भाग लेने की कोशिश करते किसी अनसधे घोड़े की तरह छलांगें भरता महसूस हुआ।

४

ऐसी ख़बर थी, चुनाव कराने ज़िला अधिकारी शीघ्र ही आनेवाले हैं और क़ोनानबाय ने आबाय को बुला भेजा।

नौजवान ने पतझड़ अपने दोम्ब्रा और संगीत के साथ नि:संगता में गुज़ारी थी। चाहे वह "पीली माइमाका नदी," "दो लड़कियों के आँसू" अथवा "लवा का गीत" नाम की धुनें दोम्ब्रा पर बजा रहा हो, हर स्वर साभिप्राय होता। उसके दोम्ब्रा के स्वर क्या कह रहे थे? वे असन-ऐगि के तीव्र गति से दौड़नेवाले ऊँट और अल्शागिर के विषण्ण निराशा भरे भावों को जीवित कर रहे थे। अतीत के यह शहीद जिन्होंने कुंठा-

ग्रस्त होने के बावजूद परिस्थितियों के ग्रागे ग्रपने घुटने नहीं टेके थे, उसके दोम्ब्रा की धुनों में रुदन कर रहे थे।

ग्राबाय के विचार सदैव क़ादिरबाय की ग्रोर मुड़ जाते। उसे उस वृद्ध ग्राक़िन ग्रौर ग्रपने उत्तरों का एक-एक शब्द याद था। "ग्रतीत ने क्या पीड़ा हमें विरासत में दी है," ग्राबाय तब चीत्कार कर उठा था। ग्रपने उस वाक्य से उसका तात्पर्य था, "यह एक महान वेदना है जो ग्राक़िनों के ग्रधूरे सपनों, उनके पदों ग्रौर गीतों में गुंजरित होती है।" जब ग्राख्यानों के प्राचीन गायक दोम्ब्रा को उसकी ग्रंगुलियाँ छेड़ती होतीं, वह यही सोचता होता।

उसने ग्राम मनोरंजन का त्याग कर, नौजवानों के साथ बैठना भी छोड़ दिया। जब येर्बोल उससे मिलने ग्राया, उसने उसे खेलों व दूसरे ग्रामोद प्रमोद में हिस्सा लेने को ग्रामंत्रित किया, नयी-नयी ख़ूबसूरत लड़कियों के नाम गिनाकर उसे ललचाने की कोशिश की। लेकिन ग्राबाय उदासीन रहा। ग्रपने दोस्त के जवाब में उसने एक नया गीत रच डाला: "हो जा ख़ामोश, दिल मेरे, हो जा ख़ामोश!" गीत सुनकर येर्बोल ने दलील देकर उसे समझाना शुरू किया।

"क्या तुम सच में यौवन को हमेशा-हमेशा के लिए ग्रलविदा कह रहे हो? तुम तो ग्रभी पच्चीस के भी नहीं हुए। क्या ग्रजीब ख़्यालात तुम्हारे दिमाग़ में भर गये हैं? मैं तो बाबा तुम्हें समझ ही नहीं पा रहा हूँ," उसने कहा।

लेकिन ग्राबाय चुपचाप हँसता रहा। हमेशा की तरह वह जब भी ग्रपने दोस्त के साथ ग्रकेला होता, दोम्ब्रा बजाता, गीत पर गीत गाये जाता, ग्रपने विचार, ग्रपनी ग्रनुभूतियाँ उँड़ेलते जाता। "ख़ामोश हो जा..." एक ऐसा गीत था जिसे वह दिन-ब-दिन दुहराता रह सकता था।

गीत के भाव से येर्बोल सहमत न था लेकिन उसके शब्द उसे पसन्द थे ग्रौर यदाकदा वह ग्राबाय के साथ मिलकर "ख़ामोश हो जा..." गीत गाता। दस दिनों तक ऐसा प्रतीत हुग्रा मानो दोनों जिगितों ने ग्रपने यौवन को ग्रन्तिम सलाम कह दिया हो।

येर्बोल को घर लौटना था।

"येर्बोल, मैं बुढ़ापा नहीं चाहता," ग्राबाय ने उससे विदा होते हुए ग्रपना राज़ बताया। "क्या तुम नहीं सोचते, मैं ग्रपने यौवन की क़द्र कर-

28--3336

ता हूँ? यौवन से बेहतर क्या चीज़ हो सकती है? तुम ख़ुद यह जानते हो। लेकिन जाते बचपन और दुर्दम यौवन की जगह मैं विचक्षण तथा फलप्रद यौवन की तलाश करना चाहूँगा। मेरी प्रतीक्षा कर रही नयी प्रेमिकाएँ भी हैं। अगर मैं तुम्हें उनके बारे में बताऊँ तो तुम देखोगे, मेरा हृदय सपनों से भरा है... किसी दिन इसके बारे में तुम जान लोगे!"

यह आत्म-स्वीकृति-सा प्रतीत हुआ।

उसी दिन आबाय को अपने पिता का बुलावा आ गया और येर्बोल जब अपने घर को रवाना हुआ, आबाय ने अपने घोड़े का सिर क़ाराशोक़ि की ओर मोड़ा।

जब वह अपने पिता के आऊल के क़रीब पहुँचा, अंधेरा हो आया था। उग आये बेंतों से आच्छादित एक दर्रे में उसने एक घुड़सवार को अपनी ओर बढ़ते देखा। वह लम्बा, चौड़े कन्धोंवाला नौजवान कोई और नहीं उसका छोटा भाई ओस्पान था। घिर आते अंधेरे में आबाय उसे अपने सम्मुख आने पर ही पहचान सका। वह विस्मित था। ओस्पान को हर रोज़ देखते रहने के बावजूद उसे महसूस नहीं हो पाया था कि ओस्पान इतना बड़ा हो गया है। अठारह साल की अवस्था में ही वह उससे भी अधिक लम्बा-चौड़ा हो गया था।

ओस्पान सरपट घोड़ा दौड़ाता उस तक पहुँचा। अपने भाई को पहचान, घोड़ा रोक वह ख़बरें सुनाने लगा:

"आज मैं पिताजी से मिलने गया था और पहली चीज़ जो उन्होंने पूछी, वह यह थी, 'अच्छा, अब फ़ौरन जवाब दो। तुम रोज़ा रखते हो और दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ते हो?' एकदम मुंकर और नाकिर* की तरह! मैं उन्हें सच बता देना चाहता था: 'मैं स्तेपियों के वन्य घोड़ों की तरह गुनाह और रोज़ा से अछूता हूँ,' लेकिन मुझे हिम्मत नहीं हुई। मुझे भय था, वह भड़क उठेंगे। सो, मैंने कह दिया, 'हाँ, सब करता हूँ!' पिता जी ख़ुश हो गये, मुझे अपनी बग़ल में बैठा लिया और दिन भर भूखा रखा। सोचो, मैं कितना ऊब गया होऊँगा! कुछ किया नहीं जा सकता था, सो, मैंने पाँच बार नमाज़ पढ़ी। हालाँकि मैंने तहारत**

---

* मुन्कर और नाकिर – मुस्लिम धर्म के अनुसार मृतात्माओं से धरती पर किये गये काम के बारे में पूछताछ करनेवाले फ़रिश्ते। – सं०

** तहारत – वुज़ू। – सं०

भी नहीं की थी और कह दिया था, रोज़ा भी रख रहा हूँ। शाम को मिताहार के समय मैं उनके साथ खाने बैठा और ख़ुद को सन्तोष दिलाने के लिए उन सारी अच्छी चीज़ों को खा गया जो उनके लिए तैयार की गयी थीं। अब मैं घर जा रहा हूँ। इस तरह आपके सामने वही ओस्पान है जो आपके पिताजी को भी बेवक़ूफ़ बनाकर आ रहा है!" और नौजवान ठहाका लगाकर हँस पड़ा।

अपने विचारों में खोया होने के बावजूद आबाय हँस पड़ा लेकिन एक मामूली फ़ब्ती के साथ कन्नी काट गया।

"अगर तुमने पिताजी से सच बता दिया होता, जितना कि अभी ख़ुश दिखाई दे रहे हो, उतनी ख़ुशी से वहाँ बैठे नहीं रहते। झूठ बोलना बड़ा ज़ोरदार मालूम पड़ता है!"

और हँसते हुए उसने घोड़े को एड़ लगा दी। जवाब नहीं ढूंढ़ पाने के कारण ओस्पान ने भी वही किया।

क़ाराशोक़ि में आबाय पिता के पास जाने से पहले कुन्के के घर जा पहुँचा। उसका प्रिय भाई क़ुदायबेर्दि काफ़ी अर्से से बीमार था और आबाय ने पहले उसका हाल-चाल लेने का फ़ैसला किया।

खाँसी से बेहाल क़ुदायबेर्दि एक ऊँचे पलंग पर लेटा था। उसकी काली, लम्बी, बेतरतीब दाढ़ी बढ़ आयी थी। वह दुबला हो गया था, हड्डियाँ निकल आयी थीं और उसकी नसें अनिष्टकारी काली गुमड़ियों की तरह सूज गयी थीं। अपने भाई को देखकर उसका निष्प्रभ चेहरा प्रत्यक्ष रूप से खिल उठा।

अपने भाई की दयनीय स्थिति देखकर आबाय पीड़ित हो उठा। चोग़ा उतारकर वह उसके पास जा पहुँचा और बिस्तरे के पास बैठ गया।

उसके भाई की शक्ति को खा डालती व्याधि ने अब उसपर पूरी तरह क़ब्ज़ा कर लिया था। आबाय अभी पन्द्रह दिन पहले ही उसे देख गया था लेकिन इतने ही दिनों में भाई की हालत एकदम गिर गयी थी। आबाय के हाथों की ओर अपना हाथ बढ़ाकर उसने थाम लिया, फिर उसे दबाकर अपनी कमज़ोर अंगुलियों से थपथपाया।

"तुम आये, बहुत अच्छा किया," उसने कहा।

आबाय ने अपने भाई का हाथ दोनों हाथों से थाम, सीने से चिपका

लिया। दोनों चुप थे लेकिन एक-दूसरे को शब्दों के बिना ही समझ रहे थे। आख़िर क़ुदायबेर्दि ने शान्तिपूर्वक पूछा:

"क्या पिताजी से मिल चुके?"

"अभी तक नहीं। मैं यहीं पहले आ गया," आबाय ने जवाब दिया।

आबाय को सलाम करने तीन लड़के पास के कमरों से दौड़ पड़े। यह तीनों क़ुदायबेर्दि के बेटे थे – शाके, शुबार और नूरताज़ा।

लड़कों को बाँहों में भरकर आबाय ने उन्हें स्नेहपूर्वक चूम लिया। शाके और शुबार को घर पर पढ़ाने शिक्षक आने लगा था और आबाय जब कभी आता, उनकी पढ़ाई के बारे में पूछता। लड़के उसे चाहते थे और उसकी मौजूदगी में तनिक भी शर्माते नहीं थे।

क़ुदायबेर्दि आबाय को घेरे बच्चों की ओर देखता रहा। देखते-देखते उद्वेग से भर उसने अपना सिर दीवार की ओर घुमा लिया। आबाय की नज़रों से यह छुपा नहीं रहा। कुछ देर तक वह लड़कों से बात करता रहा फिर उन्हें खेलने के लिए बाहर भेजकर दुबारा उसके बिस्तरे के पास आ बैठा।

क़ुदायबेर्दि जाते बच्चों की ओर उदासी से देखता रहा।

"उनका क्या बनेगा? क्या होगा अगर... वे तुम्हारे भाई* हैं। उनका जीवन कैसा रहेगा – वे क्या बनेंगे? मैं उनका क़र्ज़दार रह जाऊँगा," उसने इस तरह कहा मानो लड़कों से विदा ले रहा हो।

आबाय की आँखों में गरम-गरम आँसू उमड़ आये और उसने काँपती हुई आवाज़ में कहा:

"मैं वह क़र्ज़ ख़ुद पर ले लूंगा, बाके! मुझसे जितना हो सकेगा, उनके जीवन का बोझ मेरे कन्धों पर रहेगा!"

"अब रोओ मत... रोने की कोई ज़रूरत नहीं," क़ुदायबेर्दि ने उसे दिलासा देने के लिए बार-बार कहा।

कुछ पलों तक दोनों ख़ामोश रहे। आबाय की ओर मुंह करने के लिए क़ुदायबेर्दि ने करवट ली लेकिन हिलते ही उसपर खाँसी का दौरा पड़ गया। आबाय ने उसे कन्धों तक कम्बल ओढ़ाकर उसमें लपेट दिया।

---

* भाई – कज़ाख़ों की पारिवारिक परम्पराओं के अनुसार भतीजे और छोटे भाई में कोई अन्तर नहीं किया जाता। – सं०

"क्या तुम जानते हो, पिता जी ने तुम्हें किस लिए बुलाया है?" क़ुदायबेर्दि ने विषय बदल दिया।

"नहीं, बाके, मुझे अब तक कुछ भी नहीं मालूम।"

"तो फिर मैं तुम्हें बता देता हूँ। अधिकारी आज ही पहुँचे हैं: वे चुनाव कराने आये है। पिताजी ने उन्हें जाक़िप के आऊल में ठहराया है। उनका कहना है, नये वोलोस्त बनेंगे और नये अधिकारी –'शासक' होंगे। पिता जी तुम्हारा नाम देना चाहते हैं। तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

"तुम इस बारे में क्या सोचते हो? तुम्हारी क्या सलाह है?"

"अगर तुम मेरी सलाह जानना चाहते हो तो," क़ुदायबेर्दि ने विचार-पूर्वक कहा, "मैं इनकार कर दूंगा। आदमी की क़ीमत शासक होने या न होने पर निर्भर नही करती। हम इसे ख़ुद भी देख चुके हैं। शक्ति आदमी को बिगाड़ देती है और नेकनामी के बदले वह बस बददुआ ही पाता है। बेकार मे अपनी जवानी क़ुर्बान न करो!"

"हाँ, बाके। एकदम सच है," आबाय ने तत्परता से हामी भरी।

"तकेजान अपना चुनाव कराने की कोशिश कर रहा है। उसकी ख़ुशी के लिए उसे ही वोलोस्त-प्रमुख का पद संभालने दो!" क़ुदायबेर्दि ने अपनी बात समाप्त की।

रात होने तक आबाय अपने भाई के पास ही रहा। रुग्ण व्यक्ति के अनुरोध पर एक दोम्ब्रा ले आया गया और आबाय एक के बाद दूसरी धुन बजाता रहा। लड़के लौट आये थे और क़ुदायबेर्दि को नीन्द आ जायेगी, इस आशा से आबाय उन्हें "अलिफ़ लैला" की कहानियाँ सुनाने लगा। लड़के उससे चिपके कहानियाँ सुन रहे थे। वे अपने चाचा से ख़ुश थे जो दोम्ब्रा बजा सकता था और इतनी अच्छी तरह गा भी सकता था। जब सोने का समय हुआ, वे उसके साथ सोने की ज़िद करने लगे। नूरताज़ा और शुबार ने झगड़ना शुरू कर दिया:

"मै आबाय चाचा के साथ सोने जा रहा हूँ!"

"नहीं, तुम नही, मैं उनके साथ सोऊँगा।"

आख़िर दोनों उसकी चादर के अन्दर घुस आये–एक बायीं ओर, दूसरा दाहिनी ओर। जब तक सो नहीं गये, दोनों आबाय से चिपकने और उसे अपनी ओर खीचने में लगे रहे।

चुनाव कराने के लिए आये अधिकारी के साथ क़ोनानबाय की लम्बी

बातचीत हुई थी। वोलोस्त-प्रमुख के पद के लिए उम्मीदवारों का चुनाव करने में वह स्पष्ट रूप से क़ोनानबाय की राय पर चलने को तैयार था।

वोलोस्त-प्रमुख के सम्बन्ध में नया क़ानून लागू होनेवाले दिन से ही क़ोनानबाय ने ऐसे पद को स्वीकार न करने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। पूरे इलाक़े पर शासन करनेवाले आग़ा-सुल्तान के ओहदे के समय से ही शक्ति-लोलुपता ने क़ोनानबाय को घर कर लिया था। बाद में उसे पद-च्युत कर दिया गया था और वह तोबिक्ति का मुखिया बन गया था। लेकिन इसके बावजूद वह पूरे क़बीले पर शासन करता था।

लेकिन अधिकारी आगे ही बढ़ते जा रहे थे। अब तोबिक्ति एक क़बीले के अधीन नही रहनेवाले थे। उन्हें तीन वोलोस्तों मे विभक्त किया जाना था। क़बीले की तिहाई का शासक होना, कोई बड़े सम्मान की बात न थी। इसके अलावा पद अस्वीकार करके और अलग-अगल रहकर वह निस्सन्देह अपना प्रभाव पूरे क़बीले पर बनाये रख सकता था। उसके दिमाग़ में पहली बात यह थी।

दूसरी बात यह थी कि व्यवस्था बनाये रखना दिन-व-दिन कठिनतर होता जा रहा था। बालाग़ाज़ जैसे हुक्म उदूली करनेवाले लोग भी थे जिनसे जूझना ज़रूरी था। अगर उसे ख़ुद उन्हें दण्डित करना पड़ता, पहले की ही तरह दुश्मनी भड़क उठती। अपनी बराबरी के बोजेय के साथ लड़ना ही काफ़ी बुरा हुआ था लेकिन वोलोस्त प्रशासक बनकर मजबूरन अनाड़ी नौजवानों से जूझना उसे अपमानजनक प्रतीत हुआ।

उन्हें दृढ़ समझवाले किसी युवा शासक की ज़रूरत थी।

नौजवान अपने में ही लड़ें-झगड़ें। युवा पीढ़ी वयस्क हो चुकी थी। उनके हाथों में अधिकार सौंपना और दूसरे के माध्यम से अपनी मर्ज़ी चलाना ज़रूरी था।

और अन्त में एक तीसरी बात भी थी। अब वह सत्तर का होनेवाला था और अपने बेटों में से किसी उत्तराधिकारी के चुनाव करने का समय आ गया था।

मामले पर अच्छी तरह ग़ौर करने के बाद उसने आबाय का चुनाव किया। यहाँ भी उसने होशियारी से काम लिया था।

आबाय उसके प्रभाव से परे जा चुका था। उसके आचरण, उसकी बातों से प्रकट था, अपने बेटे के रूप में उसकी पीठ पीछे एक कठिन पार-

खी उठ खड़ा हुआ था। पिछले कुछ वर्षों में यह बात विशेष रूप से स्पष्ट हो गयी थी और आबाय ने अपने पिता से नूरग़ानिम से उसके विवाह करने के बाद से पूर्णतया सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया था। क़ोनानबाय इसका दोष सबसे ज्यादा उलजान को देता था। "तुमने उसे पाल-पोसकर तोताचश्म बना दिया है," उसने पिछली गर्मियों में उसे फटकार बतायी थी।

अपने बेटे के अलग-थलग रहने के बावजूद क़ोनानबाय जानता था, आबाय बुद्धिमान और चुस्त है। अपने से दूर जाते इस बेटे पर क़ाबू पाना ज़रूरी था। शासन का भारी बोझ अपने कन्धों पर लेने के बाद आबाय— वह चाहे या न चाहे—ख़ुद-ब-ख़ुद अपने पिता के हाथों में आ जायेगा। अगर क़ोनानबाय अपनी बात मनवाना चाहेगा—उसके बेटे को उसकी बात माननी ही पड़ेगी और बहुत-सी बातें जो अधिकांश नौजवानों के बूते के बाहर थीं, आबाय बहुत अच्छी तरह निबटा सकता था। उसपर उसके पिता को भरोसा था और बेशक, इस कारण भी वह यह फ़ैसला लेने को तत्पर हुआ था।

आबाय उस समय पहुँचा जब उसका पिता चाय ख़त्म कर चुका था। दस्तरख़ान हटाया जा चुका था और फ़र्श पर बिछे नमदे को अभी-अभी बुहारा गया था। तकेजान वहाँ उससे पहले से ही विराजमान था। वह अपने पिता के पास ही एक घुटने के बल बैठा आराम कर रहा था। मदरसे के नेक छात्र की तरह तब क़ोनानबाय ने अपने बेटों के अलावा सबको कमरे से बाहर कर दिया। हालाँकि वह दोनों से मुख़ातिब था, उसके अल्फ़ाज़ सिर्फ़ आबाय के लिए थे। वह बूढ़ा होता जा रहा है, उसने कहा। उसका पूरा जीवन—मामूली दिनों से गौरवशाली वर्षो तक —चिन्ता और संघर्ष से भरा रहा था। वह किस चीज़ के लिए प्रयत्नशील रहा था, अपने बेटों, अपने बच्चों के भविष्य के लिए ही तो! अब वे वयस्क हो गये थे, उन्हें अपने जीवन की बागडोर संभालने का समय आ गया था। भविष्य में उन्हें दोस्त मिलें या दुश्मन—निश्चित रूप से उनके समवयस्कों में ही होंगे। वर्तमान युग की पहेलियाँ बूढ़ों के मुक़ाबले वे कही अधिक अच्छी तरह समझ सकते थे। आगे बढ़ने के बेहतर रास्ते वे कही अधिक तेज़ी से तलाश लेंगे। अपने हितों की रक्षा बारी-बारी से उसके दोनों बेटों को करनी है—एक को आज तो दूसरे को कल। वे एक-दूसरे से ईर्ष्या न करें और जो कुछ प्राप्त हो, उसपर झगड़े नही। अभी फिलहाल, उनके पिता ने

आबाय को चुना है। उसका विश्वास था, वोलोस्त प्रमुख का ओहदा आबाय को स्वीकार लेना चाहिए।

वस्तुत: काफ़ी अर्से बाद क़ोनानबाय ने इतने विस्तार के साथ आबाय को सम्बोधित किया था।

पल भर के लिए आबाय ख़ामोश रहा मानो गहरे सोच-विचार में डूबा हो। फिर खखार कर उसने कहा:

"आपके विश्वास के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, पिता जी। अपने जीवन के दायित्व हम लोगों पर सौंपने का आपका फ़ैसला उचित ही है। अब आपके आराम करने का समय है और अमन-चैन से रहने की इच्छा करने का आपको पूरा हक़ है। लेकिन अगर आपने मेरा चुनाव किया है तो मैं कहूँगा, मैं वोलोस्त-प्रमुख नहीं बनना चाहता। मेरे दिल को यह गवारा नहीं। तकेजान मुझसे बड़ा है और ज़्यादा हाज़िरदिमाग भी। वह उस पद के अधिक उपयुक्त है। उसे वोलोस्त स्वीकार करने दीजिए!"

अन्तिम शब्दों के साथ आबाय तकेजान की ओर मुड़ा। वह ख़ुशी से चमक उठा था लेकिन विनीत छात्र की अपनी अदा बरक़रार रखे था। जनाज़े में काफ़ी कुछ पाने की उम्मीद लगाये किसी ढोंगी मुल्ले की तरह वह लग रहा था।

क़ोनानाबाय ने अपनी फाड़ खाती अकेली आँख आबाय पर गड़ा दी और दो बार कारण जानना चाहा।

आबाय का पहला जवाब था: "मैं इसके क़ाबिल नहीं।" लेकिन अपने पिता के ज़ोर डालने पर विस्तारपूर्वक जवाब दिया।

शासक को एक परिपक्व व्यक्ति होना चाहिए और आबाय अपने को इस दायित्व के उपयुक्त नहीं समझता था। अनुभवहीन व्यक्ति के हाथों में सत्ता किसी बच्चे के हाथों में उस्तरे की तरह थी: बेचारा या तो अपनी अंगुलियाँ काट लेगा या दूसरों को जख़्मी कर देगा। उसे अपना डर नहीं था लेकिन वह उन लोगों पर तरस खाने से ख़ुद को नहीं रोक पायेगा जो उसपर निर्भर करेंगे। चुनाँचे, वह इनकार करने को मजबूर था। जब वह लोगों के लिए पर्याप्त ज्ञान विकसित कर लेगा और दायित्व संभालने की वास्तविक योग्यता स्वयं में महसूस करेगा, वह अपने पिता के कहने की प्रतीक्षा नहीं करेगा बल्कि ख़ुद आगे बढ़कर ऐसा अनुरोध करेगा—यह उसका वायदा था। लेकिन फिलहाल ज़ोर न डालने की उसने अपने पिता से आरज़ू की।

क़ोनानबाय ने अचानक मुंह फेर तकेजान से प्रस्ताव किया। उसे फुसलाने की कोई ज़रूरत न थी। वह तत्क्षण राज़ी हो गया।

तकेजान का नामांकन पन्द्रह दिनों में स्वीकृत हो गया और उसने तुरंत ही अपना जोश प्रकट किया।

उसके सलाहकार बहुत से थे: एक ओर क़ोनानबाय था और दूसरी ओर मायबासार व जाक़िप। वे भी उसे सिखाने में लगे रहते।

नये वोलोस्त-प्रमुख ने तत्काल शहर का दौरा किया। उसके ज़रिये क़ोनानबाय ने अपना सलाम तिनिबाय को भेजा और शहर में काम निबटाने में अपने बेटे के मार्ग-दर्शन की प्रार्थना की। व्यापारी के साथ सेमिपलातींस्क के ज़िला-प्रमुख के दोस्ताना ताल्लुक़ात थे और इनकी बदौलत तकेजान अपने पहले दौरे में ही बहुत-से मामले तय कराने में सफल रहा। चुनाव कराने के लिए आये अधिकारी को क़ोनानबाय ने सारी समस्याओं से परिचित करा दिया था और उनमें पहली और सर्वोपरि समस्या थी, बालाग़ाज़ और अबिलग़ाज़ि की।

शासक की नयी भूमिका में अपनी सत्ता और शक्ति प्रदर्शित करने को लालायित तकेजान ने बालाग़ाज़ और अबिलगाज़ि के विरुद्ध संघर्ष में अपनी सारी कोशिशें लगा दीं। जब वह शहर से लौटने को था, सेमिपलातींस्क के नये ज़िला प्रमुख ने पुलिस के पाँच हथियारबंद सिपाही उसके साथ भेज दिये।

जुमागुल जिसे तकेजान ने तुरंत ही अपना सन्देशवाहक नियुक्त कर लिया था और नौजवान जिगित कार्पिक सिपाहियों के मार्ग-दर्शक बन गये। उनके आगमन को गुप्त रखने के लिए रात देर गये सिपाहियों को वोलोस्त कार्यालय में ले जाया गया। तकेजान और मायबासार ने उनकी मदद के लिए दस नौजवान साथ दे, उन्हें उसी रात जिगितेक से मोर्चा लेने रवाना कर दिया।

पहले तोबिक्ति का साबक़ा सैनिक दस्तों के साथ केवल आपात्कालीन स्थितियों में ही पड़ता था और जब हथियारबन्द सिपाही आऊलों से घोड़ों पर गुज़रे तो जवान-बूढ़े, सब भयभीत हो गये।

दस्ते ने आसानी से चिंगीज़ में बालाग़ाज़ और अबिलग़ाज़ि को ढूंढ़ निकाला। लेकिन शहर में पले और उस इलाक़े से अपरिचित सिपाहियों की निरीहता प्रकट हो गयी। पहाड़ी इलाक़े में घोड़े दौड़ाना उनके बूते के बाहर

था, वे ज़ीनों से चिपके, इधर-उधर भटकते, पीछे रह गये। पहाड़ी पर पत्थरों का हर ढेर उन्हें छुपने का स्थान प्रतीत होता। समय-समय पर वे बड़े-बड़े जासूसी ख़ुर्दबीन निकालते और आस-पास का निरीक्षण करते। दूर से ही भगोड़ों की टोह पा लेनेवाला जुमागुल उनके ढुलमुलेपन पर ख़फ़ा था। "काश, मैं सोयिल की चोट से उनके ख़ुर्दबीन तोड़ पाता," दाँत पीसते हुए वह सोच रहा था। लेकिन वह विवश था। सिपाही इससे तेज़ नहीं बढ़ सकते थे।

बालाग़ाज़ को भी इसका अहसास हो गया और पीछा करनेवालों पर एक नज़र डालने को उसने घोड़ा रोका लिया। इर्ग़िज़बाय आगे-आगे थे और उसने जुमागुल, कार्पिक तथा दूसरे जिगितों को स्पष्ट रूप से पहचान लिया। भगोड़ों ने जवाबी वार करने की ठान ली।

अबिलग़ाज़ि और बालाग़ाज़ अपने साथियों को चिंगीज़ के एक संकरे दर्रे की ओर भेज ख़ुद आदिलख़ान के साथ एक खड़ी चट्टान के पीछे ठहर गये।

दुश्मन अभी बहुत दूर है, इस निश्चय के साथ जुमागुल का दस्ता तितर-बितर था। बालाग़ाज़ ने जुमागुल और कार्पिक को आगे निकल जाने दिया फिर हठात पीछे से उनपर टूट पड़े। हमलावर दो के मुक़ाबले तीन थे। उन्होंने भूर्ज के बने सोयिलों, काले चोक़मारों से मँजे हाथों से दो या तीन प्रहार किये। मज़बूत और फुर्तीले बालाग़ाज़ और उसके साथी आनन-फानन में अपने प्रतिद्वन्द्वियों को घोड़ों से गिरा, उनके घोड़ों के साथ चम्पत हो गये।

पुलिस के सिपाहियों को ऐसे दुश्मन का पीछा करने की हिम्मत नहीं हुई जो उनके हरावल दस्ते की ऐसी दुर्गत कर झटपट चंपत हो गया था। उन्होंने पीछा छोड़ दिया और इकट्ठा हो उन आऊलों की ओर चल पड़े जिनसे वे आये थे।

तकेजान ने शान्तिपूर्ण आबादी की जायदाद पर क़ब्ज़ा करके बदला लिया। जुमागुल, कार्पिक तथा दूसरे नौजवान काराशा व क़ावमेन के आऊलों पर टूट पड़े और उनके सारे जानवर हाँक लाये। उर्किमबाय के साथ भी यही किया गया और बेचारे ग़रीब आख़िरी दुधारू गाय से भी वंचित हो गये। पहले कभी ऐसी बात नहीं हुई थी। अतीत में दण्डात्मक हमले होते रहे थे लेकिन सिर्फ़ अपराधियों के विरुद्ध। कज़ाख़ कहावत भी थी: "जि-

सने अपने हाथों गुनाह किया, वह अपनी गर्दन देकर उसकी क़ीमत चुकायेगा।" तकेजान ने कुछ ऐसा काम किया था जो अब तक किसी ने नहीं सुना था: उसने बूढ़े मर्द, औरतों और बच्चों के जीवन का अन्तिम आधार तक छीन लिया था।

पूरा जिगितेक क्रुद्ध हो उठा था।

"यही कुछ हो रहा है! हवा उल्टी बह रही है! क़ुसूर किसका और क़ुसूरवार किसी और को ठहराया जा रहा है!" जिगितेक कड़ुवाहट से कहते।

जिगितेक के सहयोगी कोतिबक़ और बोकेंशी भी उतने ही क्रुद्ध थे। और सबसे ज़्यादा ग़ैर-वाजिब बात यह थी कि इसके शिकार क़ावमेन जैसे निर्दोष व्यक्ति हुए थे। सब जानते थे, उसने बालाग़ाज़ से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया था। फिर उर्किमबाय भी था जिसका चोरियों से कुछ भी लेना-देना न था।

ऐसे अन्याय की ज़िम्मेदारी किस पर थी, लोग ठीक-ठीक नहीं कह पा रहे थे लेकिन फिर भी प्रतिक्रिया तीव्र थी।

"हम लोगों पर नयी मुसीबतें टूट पड़ी हैं," लोग शिकवे कर रहे थे।

तकेजान वोलोस्त का कार्यालय अपने आऊल मुसाक़ुल में ले गया था। उसने अपने पीछे सन्देशवाहकों और दुभाषियों की भीड़ तो लगा ही रखी थी, मायबासार और जाक़िप जैसे सलाहकार भी थे। वे सब के सब कभी न कभी बालाग़ाज़ के हाथों लूटे गये थे और पूरे जिगितेक से हिसाब चुकाने को व्यग्र थे।

वास्तव में शहर से दस्ता लोगों को संत्रस्त करने और चोरों को धमकाने के लिए ही भेजा गया था।

तीन दिनों बाद सेमिपलातींस्क को रवाना होने से पहले सिपाही एक बार फिर भगोड़ों की खोज में गये लेकिन उन्हें बालाग़ाज़ या उसके नौजवानों का कोई भी चिह्न नहीं मिल सका।

उन्हें विदा करके तकेजान सेमिपलातींस्क को शिकायतें भेजने के लिए दस्तावेज़ तैयार करने बैठा।

तकेजान द्वारा सिपाहियों के दस्ते बुलाने से आबाय कुपित था लेकिन जब दूसरी ज़्यादतियों के बारे में सुनकर वह अपना धीरज खो बैठा और पूर्ण वेग से मुसाक़ुल की ओर घोड़े पर चल पड़ा।

वहाँ उसने बाज़ाराली को तकेजान के साथ प्रतिवाद करते देखा।

"अगर तुम लड़ने को इतने ही बेचैन हो," बाज़ाराली ने अनुरोध किया, "तो अपराधियों से लड़ो। लेकिन बेचारे शान्तिपूर्ण लोगों को जो ग़रीब तो हैं ही, क्यों तकलीफ़ पहुँचाते हो? अगर तुम नहीं चाहते कि औरतें और बच्चे भूखों मरें, तुम उनके जानवर लौटा दो! जो दुधारू गायें तुमने उनसे छीन ली हैं, वही उनकी आजीविका के आधार हैं। थोड़ा सोचो भी तो..."

लेकिन तकेजान ने उससे बात तक नहीं की।

"यह तो शुरुआत भर है," उसने कहा। "जब तक मैं बालाग़ाज़ और अबिलग़ाज़ि को पकड़ नहीं लूँगा, मैं चैन से नहीं बैठूँगा! मैं नहीं, वे लोग मुसीबत पैदा कर रहे हैं," वह बिगड़ उठा।

बाज़ाराली भी फट पड़ा।

"तुम सीधे-सीधे क्यों नहीं कहते कि जब तक बालाग़ाज़ को नहीं पकड़ लोगे, सब लोगों को बेड़ियों से जकड़वा दोगे।"

"तुम पंच कब से बन गये हो?" तकेजान ने मज़ाक़ उड़ाया। "तुम्हें किसने बहाल किया? तुम्हें ख़ुश होना चाहिए कि मैं तुम्हें बालाग़ाज़ के लिए बंधक के तौर पर बन्दी नहीं बना लेता। क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं? अगर बात ऐसी रही तो मैं तुम्हें यह बता दूं, अगर बालाग़ाज़ कोई और बदमाशी करता है, तुम उसके लिए जवाबदेह होगे! और तुम इस मुसीबत से बच नहीं पाओगे!"

लेकिन बाज़ाराली भयभीत होनेवाला न था।

"मेरा ख़्याल था, मैं किसी बुद्धिमान आदमी से बात कर रहा हूँ लेकिन लगता है, मेरा सामना किसी काठ के उल्लू से है। मुझे खेद है, मैं तुम्हारे पास आया। तुम्हारे सन्देशवाहकों से बात करके लौट जाना ही काफ़ी होता!" जाने के लिए खड़ा होते हुए उसने जवाब दिया।

आबाय ने ऐसा दिखाया मानो वह उनके बीच आ टपकेगा और अपने भाई को बतायेगा कि वह ग़लत कर रहा है लेकिन तकेजान फटाक से बोल उठा:

"टाँग न अड़ाओ!"

कार्यालय में आबाय ने दस्तावेज़ें देखीं। जिगितेक को मुसीबत में डालनेवाली एक भी बात नहीं भूली गयी थी: सज़ाएँ, दस्तख़त और मुहर—

उसी शाम ज़रूरी डाक से शहर भेजने के लिए सारी चीज़ें तैयार की जा चुकी थीं। आबाय ने तुरंत बाज़ाराली को सूचित कर दिया।

"यह बेवकूफ़ एक भयानक मामला तैयार कर रहे हैं," उसने कहा। "एक नये तोकपाम्बेत और मुसाक़ुल की तैयारी कर रहे हैं। लेकिन लोगों को चिन्ता करने या घबड़ाने की कोई ज़रूरत नहीं, बाज़ेके। फोड़ा अभी नासूर नहीं बना!"

बाज़ाराली अपना उद्देश्य पूरा किये बिना लौट जानेवाला था। वह उन लोगों की मदद करने आया था जिनके जानवर छीन लिये गये थे। आबाय ने उससे रुकने का अनुरोध किया। फिर मायबासार, जाक़िप और तकेजान को एक ओर ले जाकर वह नये वोलोस्त-प्रमुख पर बरस पड़ा।

"अपने बराबरवालों से लड़ने में तुम बुज़दिल हो लेकिन औरतों और बच्चों के सामने शूरवीर! तुमने जुत से तबाह हुए लोगों से दूध का आख़िरी क़तरा तक छीन लिया। क्या तुम्हें ख़ुद पर शर्म नहीं आती? तुमने जो सारे लोगों को कुपित कर दिया है, क्या तुम सोचते हो, इससे तुम्हारे गुरुजन तुमसे प्रसन्न होंगे? ज़रा इसके बाद अपना पद बरक़रार रख के तो देखना!" उसने तकेजान को चेतावनी दी फिर मायबासार का सामना किया। "निस्सन्देह, यह सब आपका ही किया-कराया है? आप इतना गिर कैसे सकते हैं? लोगों को फ़ौरन उनके जानवर लौटा दीजिए!"

तकेजान आग-बबूला हो उठा था लेकिन बहस करने से डरता था। किस तरह पिता ने आबाय से वोलोस्त का पद स्वीकार कर लेने की वकालत की थी, वह भूला नहीं था। अगर कहीं इस बार तकेजान ग़लत और आबाय सही हो गया तो? यह बड़ा ख़तरनाक था। कौन जाने, क़ोनानबाय क्या फ़ैसला ले? शायद वह वोलोस्त का पद आबाय को ही सौंप दे। काश, वह पिता की राय जानता होता लेकिन इधर कुछ दिनों से उनकी कोई भी राय नहीं मिल सकी थी—पता नहीं जिगितेक के विरुद्ध उठाये गये क़दमों को वे सहमति देंगे या नहीं। तकेजान जवाब देने से हिचकिचा रहा था। उसने ऐसा दिखाया मानो अपने भाई की बातों पर विचार कर रहा हो।

यह स्पष्ट था, जिस ख़तरे की ओर आबाय ने इशारा किया था, उसपर गंभीरता से विचार करने की जरूरत थी। तकेजान और मायबासार

अभी भी अपनी ज़िद पर बने रहना चाहते थे लेकिन जाक़िप ने मामले पर सावधानी से ग़ौर किया था। आबाय के चले जाने के बाद उसने अपनी बात शुरू की।

"अबिलग़ाज़ि और बालाग़ाज़ का मामला ज़िला-प्रमुख को सुपुर्द किया जा सकता है। बस काग़ज़ात तैयार करा के जितनी जल्दी हो सके सेमिप-लातींस्क भेज दो। इसके साथ ही हम अगर सिर्फ़ अपराधियों को ही तंग करें तो अच्छा होगा। हम छीने गये जानवर लौटा दें, यही बेहतर हो-गा," उसने सलाह दी।

जानवर मालिकों को लौटा दिये गये – इस तरह बाज़ाराली का उद्देश्य सफल रहा। लेकिन उसने जिगितेक को तकेजान की धमकियों के बारे में भी बता दिया। बालाग़ाज़ के विरुद्ध क़ानूनी कार्रवाई की जा रही है, उसने यह भी बता दिया। हालाँकि उसने अपने भाई से सम्बन्ध तोड़ रखा था, बाज़ाराली हर दिन एक आदमी क़ाराशा के आऊल में घटनाओं से उसे अवगत कराने के लिए भेजा करता।

तकेजान द्वारा सेमिपलातींस्क को भेजा गया ज़रूरी डाक रास्ते में चुरा लिया गया है, यह ख़बर सुन पूरा चिंगीज़ तीन दिनों बाद दहल उठा। यह घटना तोबिक़्ति की सीमाओं पर मुकिर दर्रे में घटी थी। "अब मुसी-बतों का कोई अन्त नहीं रहेगा!" सब की यही राय थीं।

बालाग़ाज़ और उसके साथियों के विरुद्ध तकेजान द्वारा तैयार की गयी दस्तावेज़ें ज़रूरी डाक द्वारा भेजी गयी थीं। मुसाक़ुल से रवाना हुए जुमा-गुल, कार्पिक और एक दूसरे जिगित ने नियमानुसार अपने टोपों और ठसाठस भरे अपने झोलों पर पंख लगा रखे थे। रास्ते में घोड़े बदलते समय वे हर कहीं हाँका देते जाते: "ख़ास डाक! ज़रूरी डाक!"

दूसरे दिन अंधेरा घिर आने तक सेमिपलातीस्क पहुँच जाने की उम्मीद में सन्देशवाहक रात-दिन कठिन घुड़सवारी कर रहे थे। वे संकरे-से मुकिर दर्रे के पास तक पहुँच भी चुके थे। तभी उनकी मुलाक़ात तीन अन्य घुड़-सवारों से हो गयी। जब वे एक-दूसरे से हाथ भर की दूरी पर पहुँचे, तीनों अजनबियों ने सहसा उनके कॉलर थामकर, उन्हें ज़मीन पर पटक दिया।

तीन के मुक़ाबले तीन की भिड़ंत थी। हमलावरों ने अपनी ज़बान बन्द रखी थी और चेहरे काले कपड़ों से ढँक रखे थे। सन्देशवाहकों पर क़ाबू कर, अजनबियों ने झोले छीन लिये और सरपट चलते बने।

तकेजान की शिकायतों और ज़रूरी डाक की ख़बर आदिलख़ाँ के आऊल में पहुँची। बालाग़ाज़ और अबिलग़ाज़ि से सलाह-मशविरा किये बिना वह तुरंत डाक ले जा रही टोली की राह चल पड़ा था। वह उनके पीछे-पीछे चलता रहा था और जब वे चाय के लिए एक जगह रुके, वह उनके आगे बढ़ गया था। आदिलख़ाँ के साथ नैमन क़बीले के तीन जिगित थे और अपनी योजना आसानी से पूरी कर वे चिंगीज़ लौट आये थे।

डाक लूटना भयानक सज़ा तक का कारण बन सकता था, अपने ग़ुस्से में आदिलख़ाँ यह बात भूल गया था। लेकिन परिणाम चाहे कुछ भी हो, काम किया जा चुका था।

फिर आदिलख़ाँ सिबान और तोबिक्ति की भू-सीमा पर स्थित आऊलों में से एक में जा छुपा। यह आऊल बालाग़ाज़ और उसके साथियों के लिए छुपने के स्थान का काम करता था। बालाग़ाज़ यहाँ सबसे पहले उस समय आया था जब जुत से तबाह भूखे लोग खेतों में छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं को पकड़कर खाने पर उतर आये थे। उस समय वह उनके लिए दुधारू गाय और घोड़े दोनों लेकर आया था।

आदिलख़ाँ ने अबिलग़ाज़ि और बालाग़ाज़ को अपनी प्रतीक्षा करते पाया। उसके दुस्साहस पर दोनों प्रसन्न हुए थे और लूट पर पछताने की कोई ज़रूरत नहीं, यह फ़ैसला किया था।

"वोलोस्त-प्रमुख शायद फिर शहर जायेगा। निस्सन्देह, वह बड़ा बबेला मचायेगा और ज़िला अधिकारी फिर सिपाही भेजेंगे। उनके लिए हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहना हमारी मूर्खता होगी। हम तीन-चार दिनों तक अपने घोड़ों को तरोताज़ा होने छोड़ देंगे, अपने लिए भोजन-पानी का इन्तज़ाम करेंगे और घोड़ों पर सवार हो नैमन लोगों के बीच चले जायेंगे। जाड़ा शुरू होने ही वाला है। हम गर्मियों के शुरू होने तक नैमन लोगों के साथ रहेंगे और फिर सब कुछ शांत पड़ जायेगा," उन्होंने एक-दूसरे को आश्वस्त किया।

लेकिन क़ोनानबाय उनकी उम्मीद से कही अधिक चालाक साबित हुआ। उसने तकेजान, इर्गिज़बाय के सभी वृद्ध व्यक्तियों और बुज़ुर्गों के बीच अन्य स्वजनों सहित बायसाल, सुयून्दिक़ को भी बुला लिया।

"जब तक मैं उन्हें पकड़ नही लेता, बस नही करूँगा," ग़ुस्से से काँपते हुए उसने कहा। "देखूं, अब कौन उसे बचाने की हिम्मत करता

है? मेरे हाथों से कोई चोरों को निकाल तो ले जाये! अगर वे देश-निकाले में सड़ नहीं मरें तो मेरा नाम क़ोनानबाय नहीं!"

जिन लोगों को उसने इकट्ठा किया था, उनसे सलाह लेने की कोई ज़हमत उसने नहीं की। उन्हें उसने बस अपने इरादे बता दिये और समर्थन की माँग की। उन्हें और ज्यादा रोब में लेने के लिए उसने तकेजान को आदेश दिया:

"पुलिस के सिपाहियों को बुला भेजो। वे बाग़ियों को कुचल डालें!"

किसी भी दिन हथियारबन्द दस्तों के आगमन की उम्मीद करते बुज़ुर्ग अपने आऊलों को लौट गये। अपने इरादों की भनक किसी को न लग पाये, इसी उद्देश्य से क़ोनानबाय ने पुलिस दस्ते का हवाला भर दिया था। अत्यन्त गुप्त रूप से उसने उसी दिन तीस जिगितों की एक फ़ौज गठित कर ली। उस दिन आदिलख़ाँ बालाग़ाज़ और उसके साथियों के पास जा पहुँचा था।

उसी रात क़ोनानबाय के जिगित छह शिकारी कुत्तों के साथ रवाना हो गये। उन्हें अपनी पोशाकों के अन्दर चोक़मार, मुंगरी और खंग आदि हथियार छुपा लेने के लिए कहा गया था। बालाग़ाज़ के टोहियों ने पहाड़ियों पर घुड़सवारों को आते देखा लेकिन उन्हें शिकारी समझ लिया। जब तक बर्फ़ नहीं जम जाती, चिंगीज़ में शिकार चलता रहता और दस्ते का अगुआ इज़गुत्ति उन्हें बिना किसी बाधा के आऊल तक ले आने में सफल रहा।

लम्बा-सा नग्न खंग लिऐ वह पूरे दस्ते सहित तेज़ी से उस घर में घुस गया जिसमें दसों भगोड़े शान्तिपूर्वक सो रहे थे।

इज़गुत्ति ने बालाग़ाज़ पर खंग मारा। वह चीख़ते हुए एकाएक चौंककर खड़ा हो गया:

"सब ख़त्म हो गया! मैं बर्बाद हो गया!"

वास्तव में सब कुछ ख़त्म हो चुका था। सब के सब पकड़े जा चुके थे। उन्हें बाहर निकाला गया, दो-दो को एक-एक घोड़े पर सवार कराया गया। क़ैदियों को ले जाते प्रत्येक घोड़े की पहरेदारी पाँच या छह जिगित कर रहे थे। अपना खंग ताने इज़गुत्ति बालाग़ाज़ के पास-पास चल रहा था।

पकड़े गये दसों आदमियों में सिर्फ़ एक भाग पाने मे सफल रहा—अबि-

लग़ाज़ि। उसने अपने साथ बैठे साथी के कान में कुछ बुदबुदाकर कहा और किसी तरह दूसरों से थोड़ा पीछे रहने लगा। रात भर जागते रहने और दिन भर की चिन्ताओं के कारण उसके साथ-साथ चल रहा जिगित घोड़े पर थोड़ा ऊँघने लगा। उसने अपना चोक़मार लापरवाही से घुटने के नीचे खोंस रखा था।

जब पूरी टोली ऊँची खड़ी चट्टानों से घिरे एक घुमावदार दर्रे से गुज़र रही थी, अबिलग़ाज़ि असावधान जिगित के घुटने के नीचे से एकाएक चोक़-मार खींच, उसे नीचे गिरा एक ही छलाँग में अपने प्रतिद्वन्द्वी के घोड़े पर जा बैठा। घोड़े से गिर जाने पर अपनी साँस पर क़ाबू पाने में उसे कई पल लगे। उसने दूसरे क़ैदी के थके घोड़े की रास थामकर खींच ली और चीख़ना शुरू किया।

लेकिन अबिलग़ाज़ि जा चुका था।

जब तक आगे चल रहे लोगों को इस घटना का अहसास हुआ और उन्होंने आगे के क़दम पर ग़ौर किया तब तक अबिलग़ाज़ि काफ़ी दूर जा चुका था। अंधेरा बढ़ रहा था और भगोड़े के पीछा करने के चक्कर में दूसरे क़ैदी भी कहीं भाग न निकलें, इस डर से इज़गुत्ति ने टोली को आगे बढ़ते रहने का आदेश दिया। उसके बाद से वह ख़ुद पीछे-पीछे घोड़े पर चलने लगा।

क़ाराशोक़ि पहुँचने पर उसने एक सन्देशवाहक चोरों के पकड़े जाने के बारे में सूचना देने के लिए क़ोनानबाय के पास भेज दिया। उसने यह भी पूछा था कि क्या वह ख़ुद चोरों से सवाल करना चाहेंगे।

क़ोनानबाय का आदेश छोटा-सा था।

"उन्हें मुसाक़ुल ले जाओ और तकेजान व उसके मुंशी को आज ही रात में उन्हें सेमिपलातींस्क रवाना कर देने कहो। उन्हें गाड़ी में डालकर कड़ी पहरेदारी में शहर ले जाया जाये और क़ैद में डाल दिया जाये। उसे बिना किसी झिझक या देर किये, यह सारा काम निबटा डालने कहो!"

तकेजान ने ठीक वैसा ही किया जैसा कहा गया था। पकड़े गये नौज-वानों को रात के अन्तिम पहर में गाड़ियों में डालकर सेमिपलातींस्क ले जाया गया।

इस तरह बालाग़ाज़ के पकड़े जाने की ख़बर लोगों को तभी लगी जब उसे और उसके साथी जिगितों को काफ़ी दूर ले जाया गया था।

क़ोनानबाय और नया वोलोस्त-प्रमुख अब पकड़े गये चूहों पर गुर्राते, घुरघुराते बिलाव की तरह हो रहे थे। वे घटनाओं के बारे में क्रोधपूर्वक और व्यथित लहजे में बात करते। तीन दिनों तक लगातार वे इस बात पर ज़ोर देते रहे:

"उनके जैसा काम सिर्फ़ हमारे सबसे बुरे दुश्मन ही कर सकते थे। उन्होंने जानबूझकर सरकारी काग़ज़ात नष्ट कर दिये जिससे तकेजान पर मुक़द्दमा चल जाये!"

"वे तकेजान को बर्बाद ही कर डालना चाहते थे! जघन्यतम काम!"

लेकिन यह सारा गर्जन-तर्जन बनावटी था। क्रोध का यह घटाटोप एक एकदम ही भिन्न उद्देश्य को छुपाने के लिए था।

अतीत में भी झगड़े हुए थे लेकिन कभी भी किसी दुश्मन को जेलख़ाने या सुदूर निर्वासन के लिए नहीं भेजा गया था। क़ोनानबाय को घेरे रहनेवाले लोग अच्छी तरह जानते थे, जब लोग शान्त पड़ जायेंगे और घटनाओं पर गंभीरता से विचार करने लगेंगे, उनके लिए इन ख़बरों को शान्तिपूर्वक ग्रहण करना अत्यन्त कठिन हो जायेगा। चुनाँचे, बढ़ा-चढ़ाकर, शोर-शराबा मचाकर वोलोस्त-प्रशासक एक ऐसी सज़ा को वाजिब क़रार देने की उम्मीद कर रहे थे जिसके बारे में स्तेपियों में अब तक सुना नहीं गया था।

जब क़ोनानबाय ख़ुद सत्ता में था, उसने कभी ऐसे क़दम नहीं उठाये थे लेकिन बालाग़ाज़ और उसके साथियों के मामले में उसने ऐसा ख़तरा मोल लेने का फ़ैसला किया। जिस ढंग से बालाग़ाज़ और उसके साथी पेश आ रहे थे, वह उसकी असीमित शक्ति और सत्ता के प्रति आम विश्वास के लिए एक चुनौती से कम न था।

बालाग़ाज़ के धावों को वह मात्र घोड़ों की चोरी से कहीं कुछ अधिक समझता था। और, वस्तुत:, बाज़ाराली की बातों तथा बालाग़ाज़ के कामों का स्रोत एक ही था। यह इस तथ्य से स्पष्ट हो जाता था कि बालाग़ाज़ उटपटाँग डकैतियाँ नहीं डाल रहा था बल्कि उसने सावधानी से अपने शिकारों का चुनाव किया था – मुख्य रूप से उसके शिकार इर्ग़िज़बाय में से थे। उसके आदमियों ने ग़रीबों को कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया था और आम लोगों के बीच उन्होंने जो हमदर्दी पा ली थी, वह दिन-ब-दिन अनवरत रूप से बढ़ती ही जा रही थी।

अगर सारे भूखे, सारे मुसीबतज़दा लोग उनके नक़्शेक़दम पर चल पड़ें तो फिर क्या होगा? क़ोनानबाय इस ख़्याल से ही दहल उठता। यह ख़तरनाक स्थिति निर्मम, तीव्र और फ़ैसलाकुन कार्रवाई की माँग करती थी और वह विद्रोहियों को ऐसी सजा दिलाकर लोगों को भयभीत करने की उम्मीद रखता था।

लेकिन चाहे जितनी भी सावधानी से उसने अपनी योजनाओं को छुपा रखने की कोशिश की हो, कुछ ऐसे भी लोग थे जिनकी आँखों में धूल नहीं झोंका जा सका।

क़बीले के लोग आम तौर से क़ोनानबाय के इस कठोर कृत्य से सहमत न थे और क़ैद व निर्वासन को कभी न सुनी गयी क्रूरता मानते थे। बायसाल और सुयुन्दिक़ को भी अन्देशा था। चोरों के शिकार वे भी बने थे और गुप्त रूप से सख़्त से सख़्त क़दम उठाये जाने के पक्ष में थे लेकिन उनमें वोलोस्त-प्रमुख द्वारा उठाये गये क़दम स्वीकार करने का साहस न था। वे विवेकपूर्वक अपने आऊलों में ही सिमटे रहे।

क़ोनानबाय जिगितेक के बीच और विशेष रूप से बायदालि के आऊल में हुई प्रतिक्रिया के प्रति सचेत था।

जिगितेक उत्तेजित थे और बायदालि भी उस समय क्रुद्ध हो उठा जब उसने पकड़े गये नौजवानों को जेल भेज दिये जाने के बारे में सुना। उसे उन आदमियों के लिए अफ़सोस था। उसने वोलोस्त-प्रमुख द्वारा उठाये गये क़दमों से असहमति प्रकट करते हुए खुले आम घोषणा कर दी:

"ऐसा दिन कभी नहीं आयेगा जब हम क़ोनानबाय को अपने काम पर शर्मिन्दा होते या लोगों की बातों पर कान देते देख पायेंगे! अगर उसने अपने हाथों या अपने स्वजनों के हाथों सज़ा दी होती तो एक भी आदमी आपत्ति करने की हिम्मत नहीं करता। लेकिन अब वह लोगों को क्या जवाब देगा? वह अपने जिगितों को निगलता एक भेड़िये जैसा है। जिगितेक के जिगित उसे कोई जल्लाद समझेंगे!"

बायदालि को कोई भय न था: क़ोनानबाय जान ले तो जान ले। वह जहाँ कहीं भी जाता, अपनी बातें दुहरा देता।

क़ोनानबाय के कानों तक उसकी बातें काफ़ी साफ़-साफ़ पहुँच गयीं। यह ऐसी आवाज़ थी जिसे दबा देना ज़रूरी था और हो सका तो वह और भी सख़्त क़दम उठायेगा।

"जिगितेक चोरों के साथ हैं और उनकी हिमायत करते हैं! उन्हें भी जवाबदेह होना पड़ेगा," उसने तकेजान से कहा।

तकेजान और मायबासार ने तुरंत ही अभियुक्तों की अपनी सूची नौ से तीस पर पहुँचा दी। इसमें उन्होंने क़ाराशा, क़ाबमेन, उर्किमबाय के साथ-साथ उन लोगों को भी शामिल कर लिया जिनके जानवर अभी हाल में लौटा दिये गये थे।

इतना ही नहीं, बाज़ाराली को भी शामिल कर लिया गया था। जब सूची तैयार की जा रही थी, मायबासार ने तकेजान को बताया:

"क्या तुम भूल गये, डाक कैसे लूटा गया था? जब काग़ज़ात तैयार किये जा रहे थे, बाज़ाराली यहीं था और सब कुछ जान गया था। उसने सरपट अपने आऊल में पहुँच कर आदिलख़ाँ को भड़काया होगा। जो शब्द उसने हम पर उछाले थे, मुझे अब भी सुनाई पड़ रहे हैं। वह मासूम होने का ढोंग करता है, नहीं तो भीतर से वह बाक़ियों से भी ज़्यादा कपटी है!"

तकेजान को तुरंत दूसरे अपमान याद आ गये। बाज़ाराली किस तरह अप्रतिहत रूप से उसका विरोध कर रहा था, भला-बुरा और निन्दा कर रहा था। वह मुंहफट और दंभी था। अगर कहीं बालाग़ाज़ का निर्वासन हो गया तो दूसरे ही दिन बाज़ाराली उसपर आरोप लगाने और लोगों को भड़काने के लिए उठ खड़ा होगा। तकेजान मायबासार से पूरी तरह सहमत था।

"आप ठीक कहते है," उसने कहा। "इसी आदमी को तो क़ाबू में लेना है।"

तकेजान जिगितेक के विरुद्ध आरोप लगाने की तैयारी कर रहा है, यह ख़बर पा बायदालि ने बाज़ाराली को बुला भेजा और काफ़ी देर तक उसके साथ विचार-विमर्श करता रहा। बायदालि ने वह विचार प्रकट किया जो उसे चैन नहीं लेने दे रहा था।

"मुझे अपनी लापरवाही पर हमेशा खेद करना पड़ा है। क़ोनानबाय द्वारा लगायी आग में न जाने कितनी बार मैं जल चुका हूँ—इसके बावजूद बार-बार ग़फ़लत में वह मुझे धर दबोचता है। एक बार फिर मेरे साथ यही हुआ है। क्या पूरी गर्मी भर हम उसके इशारों पर नाचते नहीं रहे थे? क्या हमने बालाग़ाज़ के जिगितों को चोर और क़ोनानबाय को उनके

ख़िलाफ़ कड़े क़दम उठाने नहीं कहा था? लेकिन मैं अच्छी तरह विचार कर चुका हूँ — सब बातों को तौल चुका हूँ: वे चोरी नहीं कर रहे थे बल्कि कोई वीरतापूर्ण, सम्मानजनक काम कर रहे थे। वे अपने अपमान का बदला चुका रहे थे। क्या तुम्हें एक भी ऐसा भूखा आदमी मिला जो उनके विरुद्ध कुछ बोल रहा हो? मैं उन्हें — अच्छे, बहादुर और अपने क़रीबी लोगों को चोर कैसे कह सकता... और अब क़ोनानबाय अपने हाथ क़ावमेन, यहाँ तक कि उर्किमबाय की ओर बढ़ा रहा है! बचा ही कौन है? क्या तुम्हारे ख़्याल में वह किसी को भी छोड़ेगा? क्या हमें फिर लड़ाई के मैदान में उतरना होगा? वह तकेजान और मायबासार के अत्याचारों को दुहरायेगा। उसकी अपनी क्या राय है? जिगितेक का यही सलाम उस तक पहुँचाओ! अपने घोड़े पर बैठो और तुरंत उसके पास चले जाओ। तुम्हें बात करना सिखाने की ज़रूरत नहीं। तुममें काफ़ी आग है। अगर वह अपनी ही बात पर अड़ा रहे तो उसे छोड़ना मत। उसे सब बता देना!"

बाज़ाराली बायदालि की बात से सहमत था और वह तुरंत क़ोनानबाय को बायदालि की राय बताने रवाना हो गया। लेकिन क़ाराशोक़ि जाने से पहले वह मुसाक़ुल की ओर मुड़ गया: तकेजान के अभियोगपत्र में — किसका नाम शामिल किया गया है, इसकी निश्चित जानकारी न तो उसे थी और न बायदालि को। क़ावमेन और उर्किमबाय के विरुद्ध आरोपों की बस अफ़वाह भर थी।

रास्ते में बाजाराली ने फिर से विचार किया और सबसे पहले जिदेबाय जाने का फ़ैसला किया।

आबाय घर पर ही था। उसे अभी हाल ही में तकेजान और मायबासार की ज़्यादतियों के बारे में मालूम हुआ था।

"बस अधिकार पाकर उनका दिमाग़ चढ़ गया है," उसने ग़ुस्से से कहा। "सारे लोगों को ही क्षुब्ध कर दिया है।"

किन-किन लोगों पर नये आरोप लगाये गये हैं, इसकी ठीक-ठीक जानकारी हासिल करने उसने यर्बोल को मुसाक़ुल भेजा था।

बाज़ाराली अभी आबाय से बातें ही कर रहा था कि येर्बोल लौट आया। वह उदास और परेशान था। जब आबाय ने उससे नामों के बारे में पूछा, बाज़ाराली की उपस्थिति से वह कुछ उलझ-सा गया प्रतीत हुआ।

"तुम्हें जो कुछ मालूम है, बता डालो," आबाय ने दबाव डाला। "और कुछ भी छुपाना मत!"

"तकेजान और मायबासार लोगों का सत्यानाश कर देंगे," आख़िर येर्बोल को बोलना पड़ा। "जब तक सबको निगल नहीं जायेंगे, वे चैन नहीं लेंगे।" फिर उसने नयी सूची में शामिल लोगों के नाम गिनाये। उनमें ऐसे बूढ़े और जवान भी शामिल थे जिनका डकैतियों से दूर का भी सम्बन्ध नहीं था। बाज़ाराली पर भी आरोप लगाया गया है, यह सुनकर आबाय तो उछल ही पड़ा।

"यह कैसे हो सकता है?" वह धक से रह गया। "क्या वे अपना विवेक खो बैठे हैं? क्या वे अन्धे हैं?"

बाज़ाराली को पहली बार अपने विरुद्ध दोषारोपण की बात मालूम हुई थी लेकिन वह तनिक भी विक्षुब्ध नहीं दिखाई दे रहा था बल्कि हँस रहा था। सिर्फ़ सहसा पीला पड़ गये उसके चेहरे से ही उसके गुस्से का पता चल रहा था। आबाय और येर्बोल दोनों ही उसे आश्चर्य से देख रहे थे।

"आज ही मैंने बायदालि को पछताते सुना था, अब यह मेरी बारी है। मैं भी बाड़े से भटक गया भेड़ ही प्रतीत होता हूँ। मैं चोरों में अपनी शुमार नहीं कराना चाहता था, क्या इसी कारण मैंने अपने भाई से सम्बन्ध-विच्छेद नहीं कर लिया था? लेकिन वे चोर नहीं और न ही किसी भी तरह बदमाश हैं, आबाय। उन्होंने जो कुछ किया, वह सब तुम सुन चुके हो। क्या चोर उसी तरह पेश आते हैं? बताओ मुझे!" उसने उनपर सवाल भरी निगाह डाली।

"वह चोर नहीं! तुम ठीक कहते हो! वह डाकू नहीं," आबाय और येर्बोल ने एक स्वर में जवाब दिया।

"अगर ऐसी बात है तो मैं क्यों उधेड़बुन में पड़ा रहा था? मैंने उनका साथ क्यों नहीं दिया? मैंने उनके प्रारब्ध में हाथ क्यों नहीं बँटाया?"

बाज़ाराली इसके आगे कुछ नहीं बोला।

येर्बोल को भी पछतावा था। उसी दिन तकेजान से मिलने के बाद से ही वह लौटते समय रास्ते भर इसी पर विचार करता रहा था।

"आह, आबाय! जब तुमसे पिता ने कहा था, तुमने वोलोस्त-प्रमुख का पद ख़ुद ही क्यों नहीं स्वीकार कर लिया था? तुम लोगों का पक्ष

लेते और ऐसी स्थिति आ ही नहीं पाती। ज़रा तुम ही देखो, हमें क्या क्या झेलना पड़ रहा है और तुम यहाँ घर पर शर्म से आंखें नीची किये बैठे हो! तुम लोगों का यही तो भला कर रहे हो! मैं अब चुप नहीं रह सकता! मैं इसे सहन नहीं कर सकता!" आख़िरी शब्द उसने लगभग चीख़कर कहा।

"वह ठीक कहता है," बाज़ाराली ने समर्थन किया। "काश, तुम हम लोगों की हिमायत कर पाते!"

आबाय ख़ामोश था। उसे वोलोस्त-प्रमुख के पद से इनकार करने का नहीं बल्कि अपने भाई के चुनाव पर आपत्ति नहीं कर पाने का अफ़सोस था। उस समय वह अपने पिता के बहकावों से ख़ुद को बचाने के चक्कर में पड़ा था।

अपना भाई और निकटतम स्वजन तकेजान आबाय के लिए ग़ैर बन गया था। दोनों भाइयों में झगड़े भी हो चुके थे। खाई बढ़ गयी थी और अब तो दोनों में खुला मुक़ाबला होना निश्चित ही था। शायद संघर्ष शुरू भी हो चुका था। आबाय सोच रहा था, अगर उसे सचमुच बाज़ाराली तथा दूसरे लोगों के लिए हमदर्दी है तो उसे तुरंत ही हस्तक्षेप करना होगा।

"बाज़ेके," उसने आख़िर कहा, "यदि मैं आपकी ओर से हस्तक्षेप न करूँ तो मैं आदमी नहीं। तकेजान की ताक़त स्तेपियों में नहीं, शहर में है। तो फिर क्यों न शहर ही हमारी क़िस्मत का फ़ैसला करे! कल ही मैं सेमिपलातींस्क रवाना हो जाऊँगा और आपके हितों के लिए वहाँ अन्त तक लड़ाई करूँगा।"

बाज़ाराली उसका कैसे शुक्रिया अदा कर सकता था। बस उसपर एक कृतज्ञता भरी निगाह डाल वह उठ खड़ा हुआ, मानो उसने अपनी उम्मीद से कहीं कुछ ज़्यादा पा लिया हो। लेकिन अब उसे जल्दी थी। जल-पान किये बिना वह क़ाराशोक़ि की ओर रवाना हो गया।

शाम देर गये वह क़ोनानबाय के आऊल में पहुँचा। नूरग़ानिम के घर पर अजनबियों में कोई भी न था लेकिन क़ोनानबाय जिगित से नहीं मिला।

"उसे अतिथि ओताव में ले जाओ और वहीं उसका खाना भेज दो," उसने आदेश दिया।

बाज़ाराली काफ़ी देर तक बैठा इन्तज़ार करता रहा। एक नौकर उसके

लिए चाय ले आया। लेकिन आख़िर बिना अपनी सूचना दिये बाज़ाराली क़ोनानबाय के कमरे में जा पहुँचा।

क़ोनानबाय एक तकिये के सहारे लेटा था और नूरग़ानिम उसके पाँव दबाती कोई कहानी सुना रही थी।

बाज़ाराली के सलाम का रुखाई से जवाब मिला लेकिन उसे उस समय क़ोनानबाय के मिज़ाज की कोई परवाह न थी। वहाँ वह ख़ुद जा बैठा और उसने सीधे अपनी बात शुरू कर दी। झल्लाहट के कारण उसके शब्द दृढ़ और तीक्ष्ण हो उठे थे, उनमें अपने प्रति न्याय की माँग करता दृढ़ संकल्प था। उसकी अभिव्यक्ति उसके मस्तिष्क की तरह ही स्पष्ट थी। नूरग़ानिम ने उसपर अपनी आंखें गड़ा रखी थीं, उसके चेहरे का रंग बारी-बारी से बदलता जाता—कभी लाल, कभी पीला।

बाज़ाराली ने अपनी बात तकेजान की कारगुज़ारियों से शुरू की:

"वह बूढ़ों और बच्चों के लिए मौत का कारण बन जायेगा। क्या वह सोचता है, क़ोनानबाय बूढ़ा गया है, सब बातों से अपने कान बन्द कर लिये हैं, लाचार हो गया है? तकेजान और मायबासार क़ोनानबाय के ज़िन्दा रहते ऐसे क़दम उठाने की हिम्मत कैसे कर सकते हैं जिनके बारे में स्तेपियों में कभी सुना भी नहीं गया?"

क़ोनानबाय ज़्यादा बात करने का इच्छुक न था।

"क्या तुम तकेजान से मिले हो? क्या तुमने उससे बात की है?" उसने पूछा।

बाज़ाराली ने जवाब दिया, वह अभी तक तकेजान से नहीं मिला है लेकिन यह सब उसने विश्वस्त सूत्रों से सुना है और तुरंत क़ोनानबाय के पास चला आया है। उसने उन लोगों के नाम गिनाये जिनको तकेजान ने अपने अभियोगपत्र में शामिल किया है और फिर बायदालि का सन्देश दिया: "तकेजान अपने जिगितों को निगल रहे भेड़िये जैसा है।"

"जो भी क़ैदी निर्वासन को जाता है, उसे मरा ही समझना चाहिए," उसने आगे कहा। "तकेजान भले निश्चिंत हो जाये कि उसे इस तरह अपने स्वजनों से छुट्टी मिल जायेगी लेकिन उसे उन लोगों को रास्ते के लिए कफ़न का और उनके पीछे भूखे बच्चों के लिए यहाँ क़ब्र खोदवा देने का इन्तज़ाम कर देना चाहिए। क्या उसके दिमाग़ में यह बात नही आती कि ऐसी नृशंसता अक्षम्य होगी?"

क़ोनानबाय बाज़ाराली की मंशा अच्छी तरह समझ रहा था और उसे यह तनिक भी रास नहीं आ रही थी।

"अगर तुम यहाँ अपनी ताक़त दिखाने आये हो तो मैं तुम्हें याद दिला दूं–ताक़त काम से, न कि बक-बक करने से साबित होती है। तुम्हारा ग़ुस्सा तकेजान के ख़िलाफ़ है। फिर जाओ और उससे अपनी ताक़त की आज़माइश करो," उसने सलाह दी।

अब कहने को कुछ भी नहीं रह गया था और बाज़ाराली ने अपनी बात प्रत्यक्ष चुनौती के साथ ख़त्म की:

"बहुत अच्छा: तकेजान किसी को न छोड़े। चाहे वह बुराई करना चाहता हो या बुराई का बदला ले रहा हो, दोनों एक ही बात है। लेकिन याद रखिये, निष्ठुर घृणा और निष्ठुर प्रतिशोध भी एक ही चीज़ हैं। इससे नयी दुश्मनी शुरू होगी जिसकी चर्चा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहेगी–और इसमें जिगितेक की कोई ग़लती नहीं होगी। यह सब के सामने स्पष्ट है, बददुआएँ किस पर पड़ेंगी। बस यही मैं अपनी ओर से और कुल मिलाकर जिगितेक की ओर से कह सकता हूँ।"

क़ोनानबाय आख़िर तक उसकी बात सुनता रहा।

"बहुत अच्छा! तुम बोल चुके हो! काफ़ी है! अब बन्द करो।"

बाज़ाराली उठकर कमरे से बाहर चला गया। क़ोनामबाय अब नूरग़ानिम की कहानी नहीं सुन रहा था। उसने अपने पैर खींच लिये थे जिनपर वह मुक्के लगा रही थी। सहसा वह बूढ़ा गया था। उसकी कानी आंख अप्रसन्नता से भरी थी। वह अपनी नौजवान बीवी को बर्फ़ीले शरद का प्रतिरूप लग रहा था। वह अपने ही ख़्यालों में खोया हुआ था और उसे किसी अजनबी से कहीं अधिक दूर प्रतीत हो रहा था।

तो उसने बाज़ाराली को अपनी मर्ज़ी करने की छूट दे दी थी–ऐसी छूट जिसे वह किसी और के मामले में सहन नहीं कर सकता था... उसने न सिर्फ़ प्रभावशाली आघात किया था बल्कि अनाहत भी रहा था। और क़ोनानबाय जवाब भी नहीं दे पाया था। अगर कोई इस पर विचार करता तो तकेजान ने वास्तव में बड़ी ज़्यादती की थी। किसी इस या उस जिगित को तंग करना ठीक-ठाक था लेकिन बाज़ाराली के विरुद्ध अंगुली उठाना एकदम ही अलग बात थी! क्या उसका बेटा यह महसूस नहीं करता? यह सच था, क़ोनानबाय तकेजान जितना ही जिगितेक से नफ़रत करता

था लेकिन उसने अपने बेटे को बाज़ाराली जैसों पर हाथ साफ़ करने नहीं कहा था। उसके दिल में पहली बात बाज़ाराली को छोड़ देने की आयी थी लेकिन उसने तेज़ी से ख़ुद पर क़ाबू कर लिया था। बाज़ाराली एक जिगितेक ही तो था जिसने अपने पूरे क़बीले के साथ उससे प्रतिशोध लेना और उसे नुक़सान पहुँचाना चाहा था—और यही काफ़ी था।

अतिथि ओताव में अकेले भोजन करने के बाद बाज़ाराली सोने चला गया। पिछले दो-तीन दिनों से उसके अन्दर उबलता ग़ुस्सा अब क़ोनानबाय को कहे गये अपने अन्तिम शब्दों के कारण ठंडा पड़ गया था। पिछले दिनों उसे नीन्द नहीं आ रही थी—रातें वह जागते ही गुज़ार रहा था लेकिन अब तकिये पर सिर रखते ही उसे गहरी नीन्द आ गयी।

सहसा, अंधेरे में वह चौकस हो जाग पड़ा। किसी ने उसका स्पर्श किया था।

"कौन है?" उसका गला रुँध गया।

"डरो मत," एक कोमल आवाज़ सुनाई दी।

उसने नूरग़ानिम को पहचान लिया।

"तुम यहाँ क्या कर रही हो, पागल औरत?" बाज़ाराली ने अपना सिर उठाकर बुदबुदाकर कहा।

"शान्त रहो," उसने शान्तिपूर्वक जवाब दिया। "मेरा दिल न जाने कब से तुम्हारे साथ है... ख़ुद मिर्ज़ा ने उसे तुम्हें सौंप दिया था..."

उसे दृढ़ता से चूमते हुए, वह उसकी बाँहों में डूब गयी। जिगित आगे एक भी शब्द नहीं बोला।

जब नूरग़ानिम उठकर जाना चाहती, बाज़ाराली को महसूस होता, वह उसे नहीं जाने दे पायेगा।

"मेरी जान, तुमने मेरे दिल में एक आँधी उठा दी है। जाने की इतनी भी जल्दी क्या?" और उसने उसे फिर अपनी बाँहों में भर लिया।

लेकिन नूरग़ानिम ने धीमे से ख़ुद को उससे अलग कर लिया।

"तुम जहाँ कहीं भी रहो, क़िस्मत तुम्हारा साथ दे! मैं तन-मन से तुम्हारी हूँ और तुम्हारा भला चाहती हूँ, बाज़ेके।"

वह उसे दुबारा चूमने झुक पड़ी और फिर तेज़ी से उठ कर चली गयी।

ऐसा प्रतीत हो रहा था, वह वहाँ पल भर के लिए ही थी लेकिन

उसी एक पल ने बाज़ाराली की दुनिया तबाह कर दी थी। नूरग़ानिम अपने साथ वह ख़ुशी भी ले गयी थी जिसे वह अपने दिल में मुश्किल से समा पा रही थी – और वह थी पहले प्यार की ख़ुशी।

नूरग़ानिम की मौजूदगी में क़ोनानबाय ने बाज़ाराली के चेहरे-मोहरे और बुद्धिमत्ता की प्रशंसा की थी और उसी दिन साफ़-साफ़ कह दिया था – दुश्मन होने पर भी ऐसे नौजवान को छोड़ देना चाहिए। काश, घाघ और चौकस क़ोनानबाय जान पाता, उसके अल्फ़ाज़ क्या रंग लायेंगे!

५

आबाय और येर्बोल काफ़ी समय से शहर में थे।

क़ोनानबाय के बेटे जब कभी शहर आते, आम तौर से तिनिबाय के यहाँ ठहरा करते लेकिन तकेजान सेमिपलातींस्क पहले से ही आ चुका था और वहीं रह रहा था। अत: आबाय और येर्बोल ने अपने परिचित एक नि:सन्तान व्यापारी से एक कमरा किराये पर ले लिया।

शहर में घोड़े पर चलने का रिवाज नहीं था और बचपन से ही शहरी जीवन के अभ्यस्त आबाय ने ख़ुद को तेज़ी से नयी स्थितियों के मुताबिक़ ढाल लिया। जिस मोटे-ताज़े कर्बूराश्व पर येर्बोल आऊल से शहर आया था, अब दोस्तों को स्लेज में यहाँ से वहाँ सड़कों पर तेज़ी से खींचे ले जाता। दिन तो साफ़ था लेकिन ठंड काट खानेवाली थी। सड़कों पर बर्फ़ की ठोस तहें जमी थीं जो स्लेज के पहियों के नीचे कचर-कचर कर उठतीं। वे सेमिपलातींस्क के सुप्रसिद्ध वकील अन्द्रेयेव से मिलने जा रहे थे। उसे कज़ाख़ लोग आक़्बास* अन्द्रेयेविच कहा करते थे।

पहले दिन से ही आबाय बालाग़ाज़ की ओर से काम में झटपट पिल पड़ा था। शहर नवागन्तुक तोबिक़्तियों से भरा था। उनमें विशेष रूप से जिगितेक और इर्गिज़बाय के लोग थे। अपराधियों पर मुक़द्दमा चलाने के अधिकार और ताक़त के नशे में चूर तकेजान भी अपने पूरे दलबल के साथ आ-

---

* आक़्बास – सफ़ेद बालोंवाला। – सं॰

या था। उसने न्यायाधीशों, ज़िला-प्रमुख और गवर्नर जनरल के सामने काग़ज़ों की भरमार लगा दी थी और अपने द्वारा अभियुक्त क़रार दिये तीस जिगितों को क़ुसूरवार साबित करने में लगा था।

उस समय तक क़ानूनी तौर पर जिगितेक का प्रतिनिधित्व बोजेय का बेटा कर रहा था लेकिन न तो उसे और न ही उसके सलाहकारों को क़ानूनी कार्रवाइयों या काग़ज़ी लड़ाई की बारीकियों की कोई जानकारी थी। वे शहर में काफ़ी समय से थे लेकिन कोई भी सफलता नहीं पा सके थे। आबाय ने ही आकर सब कुछ ठीक-ठाक किया।

सबसे पहले उसने बालाग़ाज़, आदिलख़ाँ तथा हिरासत के अन्य लोगों के परिवारों की ओर से मुख़ालिफ़ शिकायत दर्ज करायी। जहाँ कहीं भी वोलोस्त-प्रमुख के काग़ज़ पेश किये जाते, वहीं निश्चित रूप से जिगितेक की मुख़ालिफ़ शिकायतें भी होतीं।

क़ानूनी कार्रवाई के बारे में तकेजान की जानकारी नहीं के बराबर थी लेकिन आबाय जानता था, उसका समर्थन तिनिबाय कर रहा है और उसके सामने सारे दरवाज़े अपने आप खुल जाते। अत:, उसने अपना एक आदमी अपने सलाम के साथ तिनिबाय के पास भेजा।

"तकेजान क़ोनानबाय का बेटा है, लेकिन मैं भी उन्हीं का बेटा हूँ," आबाय ने अपने सन्देश में कहा था। "वोलोस्त-प्रमुख ने इस बार ख़ुद को एक ऐसे मामले में फँसा दिया है जो उसको और उसके पिता – दोनों के नाम डुबो देगा। तिनिबाय हमेशा से अच्छे दोस्त रहे हैं। चुनाँचे, उन्हें तकेजान को अपना समर्थन नहीं देना चाहिए। वह एक ग़लत उद्देश्य सिद्ध करने के लिए लड़ रहा है। अगर तिनिबाय सचमुच तकेजान का भला चाहते हैं तो उसे ऐसे लज्जाजनक कार्यों से मना करें।"

इसका मक़सद अपने प्रतिद्वन्द्वी को कमज़ोर करना था। तिनिबाय ख़ुद आबाय से मिलने आया और उसके साथ लम्बी बातचीत करने के बाद उसने तकेजान के प्रति स्पष्ट रूप से ठंडा रुख़ अख़्तियार कर लिया।

आबाय अब तक दूसरा अत्यन्त महत्वपूर्ण क़दम उठानेवाला था। वह इलाक़े के सबसे प्रमुख वकील के यहाँ बालाग़ाज़ और उसके जिगितों के क़ानूनी बचाव का काम अपने हाथ में लेने, सारी शिकायतों को जमा करने, उन्हें तरतीब में लाने और तत्संबंधी सही अधिकारियों के पास भेजने के लिए अनुरोध करने जा रहा था।

स्लेज इर्तिश नदी के किनारे बने एक एक-मंज़िले मकान के पास पहुँच गयी। श्राबाय श्रौर येर्बोल श्राँगन में जा पहुँचे।

पहली बार वे इस वृद्ध वकील से मिलने श्राये थे। श्रन्द्रेयेविच चेहरे से वृद्ध नहीं था लेकिन वास्तव में उसके बाल सफ़ेद थे श्रौर दाढ़ी बिलकुल काली थी। वह एक लम्बा, हृष्ट-पुष्ट श्रौर प्रभावशाली व्यक्तित्ववाला श्रादमी था। उसका चेहरा चौड़ा, ख़ूबसूरत था। उसकी श्राँखें पैनी थीं। वह उनकी श्रोर श्रपने चश्मे से उत्सुकतापूर्वक देख रहा था। श्रपने इस श्रन्दाज़ में वह खोया-खोया व ध्यानावस्थित प्रतीत हो रहा था।

वकील के कमरे में एक काली मूंछों श्रौर मुड़ी नाकवाला दुभाषिया श्राबाय की प्रतीक्षा कर रहा था। प्रादेशिक न्यायालय द्वारा दुभाषिये के रूप में नियुक्त इस गर्ममिजाज़ मूढ़ में सिर्फ़ एक ही गुण था—वह रूसी भाषा में किसी न किसी तरह बात कर सकता था।

वकील से हाथ मिलाते समय जिस पहली चीज़ पर श्राबाय की नज़र पड़ी, वह थी किताबों के बेहिसाब शैल्फ़। नीरस पुस्तकों की स्वच्छ क़तारों ने कमरे की चारों दीवारों को ढँक रखा था। वकील के साथ श्रपनी लम्बी बातचीत के दौरान भी वह श्रपनी श्राँखें उनपर से नहीं हटा सका था। श्रपने जीवन में एक ही मकान में इतनी श्रधिक पुस्तकें उसने कभी नहीं देखी थीं—श्रौर वह भी सारी की सारी एक ही श्रादमी की थीं।

श्राबाय ने श्रपने काग़ज़ात मेज़ पर रख दिये। दोनों दोस्तों ने जिगितेक श्रौर विशेष रूप से बाज़ाराली, क़ावमेन, उर्किमबाय श्रौर उनके निकटतम स्वजनों के बचाव की कोशिश की।

दुभाषिये न शिकायतों का मतलब श्रनुवाद करके समझाया श्रौर वकील ने वादियों के नाम पूछे। क़ोनानबाय का नाम सुनकर श्रन्द्रेयेव हैरानी से नज़रें ऊपर उठाकर देखने के बाद मेज़ के काग़ज़ों के पूले को जल्दी जल्दी उलटने लगा। यह विश्वास हो जाने पर कि उसके एक मुवक्किल का भी वही नाम है श्रौर वह वोलोस्त-प्रमुख है, उसने दुभाषिया से यही सवाल किया। श्राबाय श्रौर वोलोस्त-प्रमुख सगे भाई हैं, यह जानकर वह चकित हो उठा।

"तुम्हारे भाई ने इन लोगों पर श्रभियोग लगाया है श्रौर मुक़द्दमा चलाने की माँग की है श्रौर तुम इन्हें श्रारोपमुक्त कराने श्राये हो? इसका क्या मतलब है?" उसने पूछा।

दुभाषिया ने उसकी बातें अनुवादकर आबाय को बता दीं।

"हाँ, वोलोस्त-प्रमुख मेरा भाई है," आबाय ने कहा। "और चूंकि मैं उसका निकटतम स्वजन हूँ, इसलिए इस मामले के बुरे पक्ष को दूसरों के मुक़ाबले कही अच्छी तरह देख सकता हूँ। अन्याय और उत्पीड़न के सामने मैं ख़ामोश नहीं रह सकता। न तो मैं कोई प्रशासक हूँ और न ही कोई भाड़े का वकील, न तो मैं मुद्दालेह क़ावमेन का कोई रिश्तेदार हूँ और न मेरा दोस्त येर्बोल। हम निरपेक्ष गवाहों के रूप में आये हैं। हमारी शिकायत भी वैसी ही है। अगर प्रशासन और न्यायालय सचाई जानने को इच्छुक हो तो हम जैसों से पूछताछ करे। हम चाहते हैं, आप यह सारी बातें हमारे काग़ज़ों में लिपिबद्ध कर दें।"

वकील ने आबाय को दिलचस्पी से देखा। एक असभ्य क़बीले, एक ख़ानाबदोश में पैदा हुआ यह जवान आदमी कर्त्तव्य और मानवीयता की बातें कर रहा था—और उसके शब्दों में दृढ़ आस्था थी।

अन्द्रेयेव महान विद्वान और अगाध अनुभवोंवाला आदमी था। लेकिन वह अभी हाल-फिलहाल में कज़ाख़ों के बीच आया था और अब तक इन लोगों को नहीं जान पाया था। अपनी जवानी में वह सेंट पीटर्सबुर्ग में रहा था। वहाँ उसका सम्बन्ध ज़ारशाही अधिकारियों की निरंकुशता के विरुद्ध लड़ रहे लोगों से हो गया था। इसके फलस्वरूप उसे राजधानी से भाग खड़े होने को मजबूर होना पड़ा था। अब वह बिना उथल-पुथलवाले प्रान्तों में रहता और काम करता। काफ़ी समय तक वह वोल्गा के शहरों और बाद में ऊराल में वकालत करता रहा था। पिछले कुछ साल उसने साइबेरिया में बिताये थे। इस अत्यन्त शिक्षित व ज्ञान-प्रसार के उदग्र हिमायती ने क़िर्ग़िज़ लोगों* के जीवन और रीति-रिवाजों के बारे में सामग्री एकत्र करना शुरू किया था। किसी महत्वपूर्ण सरकारी ओहदे पर न होने के बावजूद शहर में उसका काफ़ी प्रभाव था।

अन्द्रेयेव के सवालों का जवाब देते हुए आबाय किताबों के शैल्फ़ को भी देखता जा रहा था।

"हाँ, यही तो है!" आख़िर वह बोल उठा। "दुनिया का सबसे

---

* सोवियत सत्ता के पहले क़िर्ग़िज़ और कज़ाख़—इन दोनों विशाल जन-समूहों को प्रगतिशील रूसी भी प्राय: एक जैसा मान लेते थे।—सं०

बड़ा ख़ज़ाना। और यहाँ कितनी ख़ूबसूरती से उनकी, उन भव्य विचारों की जिल्दसाज़ी की गयी है!"

दुभाषिये ने उसके शब्द वकील तक पहुँचा दिये।

आबाय की आँखें निकटतम शैल्फ़ पर रखी साफ़-सुथरी जिल्दों में बँधी कई किताबों पर टिक गयी।

"क्या यह क़ानून की किताबें हैं? इनमें क्या कहा गया है?" उसने उत्सुकता से पूछा।

वे पुश्किन की कृतियाँ थी और उन कृतियों के श्वेत-केशी स्वामी ने समझाना शुरू किया:

"नहीं, यह क़ानून की किताबें नहीं। यह किताबें एक कवि ने लिखी हैं..." उसने निराशा से अपना हाथ झटका। "तुम कभी नहीं समझ पाओगे! इसे समझाना कठिन है!"

उसका ख़्याल था, क़िर्ग़िज़ लोगों में एक भी कवि न था और शायद वे इस शब्द का मतलब भी नहीं समझ पायेंगे।

लेकिन आबाय दुभाषिये के माध्यम से सवाल करता रहा। दुभाषिये ने वकील के वाक्यों का अनुवाद अत्यन्त विवेकपूर्ण ढंग से किया था लेकिन "कवि" शब्द पर पहुँचकर, उसके लिए कोई उपयुक्त कज़ाख़ शब्द तलाश करने की ज़हमत उठाये बिना, बस इतना ही कह दिया:

"आक़िन... आक़िन की पुस्तकें हैं..."

"वह, क्या कहा तुमने? कौन-सा आक़िन?" आबाय साफ़-साफ़ नही समझ सका था।

दुभाषिया उसके बेकार सवालों से छुटकारा पाकर ख़ुश होता।

"तुम्हें ऐसी चीज़ों के बारे में क्या मालूम? तुम नहीं समझ पाओगे," उसने कहा।

यह बात उसके मर्मस्थल को छू गयी और आबाय ने व्यंग्यपूर्वक कहा:

"यह अजीब बात है। वह एक मनुष्य है और सोच सकता है। मैं भी एक मनुष्य हूँ और मैं भी सोच सकता हूँ। लेकिन हम एक-दसरे को नहीं समझ सकते। शब्दों के अभाव में हमारे विचार खोकर रह जाते है और हम एक-दूसरे के सामने आदमियों की तरह नहीं, जानवरों जैसे देखते रह जाते हैं। वह मुझसे उसी तरह झेंप रहे हैं जैसे किसान का घोड़ा स्तेपियों में ऊँट से झेंपता है।"

येर्बोल अपना सिर झटककर ठहाका लगा उठा। अन्द्रेयेव ने उसके हँसने का कारण पूछा और आबाय ने आँखें तरेरकर दुभाषिये की ओर देखा।

"जो कुछ मैंने कहा, उसे शब्द-ब-शब्द बता दो।"

वकील ध्यान से सुनता रहा और फिर वह भी हँस पड़ा।

"वह ठीक कहता है। एकदम ठीक। घोड़ा ऊँट से झेंपता है और ऊँट घोड़े से दूर भागता है। हम सचमुच बहुत कुछ उन्हीं के जैसे हैं।" और वह दुबारा हँस पड़ा। "लेकिन हम सिर्फ़ उन्हीं की तरह नहीं। यहाँ यह रहीं क़ानून की किताबें और वहाँ," उसने खिड़की की ओर इशारा किया, "अपने रीति-रिवाजों और क़ानूनोंवाली वह रही क़िर्गिज़ स्तेपियाँ। वे एक-दूसरे को देखती रहती हैं लेकिन समझ कुछ भी नहीं पातीं। तुमने बहुत अच्छा उदाहरण पेश किया है!"

आबाय और अन्द्रेयेव की यह पहली मुलाक़ात थी। इसके बाद वे प्राय: एक-दूसरे से मिलते रहे।

लेकिन आऊलों में चिन्ता बढ़ती ही जा रही थी। तकेजान द्वारा अभियोगी क़रार दिये गये लोगों में से बहुतों को हिरासत में ले लिया गया था और बाज़ाराली व क़ाराशा के छुपते फिरने की अफ़वाह थी।

घटनाएँ इस तरह हो रहीं थीं कि बायदालि को भी शहर आना ज़रूरी प्रतीत हुआ। सारे प्रशासनिक कार्यालयों का चक्कर लगाने के बाद आख़िर वह आबाय के पास जा पहुँचा।

"आबाय! मेरी आँखों की रोशनी! इस शहर की सड़कों पर तो हमारे घोड़े भी भयभीत हो जाते हैं," उसने शिकवा की। "यहाँ तो बड़ी भीड़-भाड़ है। और किसी के घर जाओ तो तुम्हारे पैरों के नीचे जमीन खिसक जाती है। अगर किसी अधिकारी से बात करने की कोशिश करो तो ख़ुद को बहरे-गूंगों की तरह हाथ-पाँव मटकाते पाओगे। मैं कुछ भी तो नहीं करा पाया। हम स्तेपीवासियों के लिए शहर तो पथ-विहीन-सा है और हम बर्फ़ पर बूढ़े ऊँटों की तरह बस फिसलकर रह जाते हैं।"

सब हँस पड़े। इसके बावजूद बायदालि के मज़ाकिया शब्दों में कड़वाहट का पुट था। उस दिन के बाद से आबाय बायदालि और उसकी टोली के साथ सारे कार्यालयों में जाया करता।

आक्बास अन्द्रेयेविच के साथ दोस्ताना ताल्लुक़ात क़ायम करने के बाद उसने वकील के साथ आगे के क़दमों पर विचार-विमर्श किया।

तकेजान अभी भी लोगों की पकड़-धकड़ कर रहा था लेकिन जिस दिन से अन्द्रेयेव बीच में आ गया था, मामले जिगितेक के पक्ष में ज़ाहिरी तौर पर मोड़ लेने लगे थे। आबाय ने बचाव-पक्ष को नयी सामग्री दी जिसके कारण मामले का पहलू ही बदल गया।

वकील से बात करते हुए उसने सुझाया कि बालाग़ाज़ और उसके जिगितों के छापे न तो चोरी और न डकैती थे। उसने भूखे लोगों की निरीह अवस्था का चित्रण करते हुए बहुत से उदाहरण प्रस्तुत किये। लोगों के पास ज़मीन न थी, फिर जुत के कारण वे तबाह हो गये थे और अन्ततोगत्वा उनके जानवर छीन लिये गये थे। उसने वकील को समझाया कि विनाशकारी जुत से कुछ थोड़े से इने-गिने ख़ुशक़िस्मत लोग ही बच पाये थे। नौजवानों ने सिर्फ़ अमीर लोगों के घोड़े लिये थे और उन्हें भूखे लोगों के साथ बाँट लिया था। उसकी बातें सुनते हुए अन्द्रेयेव को रॉबिन हुड, कार्ल मूर और दुब्रोवस्की की याद आ गयी। उसने आबाय को अपने पास से न जाने दिया और रात देर गये तक उससे सवाल करता रहा।

इसके बाद क़ैद में पड़े अबिलग़ाज़ि और उसके साथियों की स्थिति तेज़ी से बेहतर होती गयी। अपने पतियों और पिताओं की रिहाई के लिए पत्नियों और बच्चों की ओर से दी गयी याचिकाओं का वकील ने कौशलपूर्वक समर्थन किया। कुछ ही दिनों में क़ावमेन, उर्किमबाय, बाज़ाराली तथा दूसरे लोग रिहा कर दिये गये। इस सुखद ख़बर के साथ सन्देशवाहक घोड़ों पर सरपट जिगितेक की ओर भाग चले।

तकेजान ने तुरंत ही क्रोध से भरा सलाम आबाय के पास भेजा: "आबाय इस मामले में अपनी टाँग न अड़ाये! वह मुझे क्यों नुक़सान पहुँचाना चाहता है?"

आबाय ने टके-सा जवाब दिया:

"हम अपने माँ-बाप की आँखों में भले ही भाई हो सकते हैं लेकिन जब जीवन-मरण और जिस तरह उसने लोगों को पीड़ित किया है, इसका सवाल उठेगा, हम बेगाने होंगे। वह मुझसे मेरे कामों का कोई लेखा-जोखा न माँगा करे।"

तकेजान ने जल्दी से आबाय की बातों और उसके कामों का विवरण देते हुए एक सन्देशवाहक क़ोनानबाय के पास भेज दिया। पिता ने उसी के मुता-

बिक़ अपना सलाम आबाय के पास भेजा: "आबाय फ़ौरन लौट आयें। क्या उसने वोलोस्त-शासक के पद से इनकार नहीं कर दिया था? फिर वह अपने भाई की राह में रोड़े न अटकाये!"

लेकिन उसका सलाम तब पहुँचा जब आबाय वह सारा काम निबटा चुका था जो ज़रूरी था और अब किसी भी तरह घटनाचक्र को मोड़ा नहीं जा सकता था।

बहरहाल, इतना कुछ करने के बावजूद ज़िला अधिकारियों पर बचाव-पक्ष की सारी बहसों, दलीलों का कोई असर नहीं पड़ा और उन्होंने सिर्फ़ उन्हीं लोगों को रिहा किया जो डकैतियों से सीधे-सीधे सम्बंद्ध नहीं थे। बालाग़ाज़ और आदिलख़ाँ की क़िस्मत उनकी मज़बूत जकड़ में रह गयी। अपराध अभावग्रस्तता और भूख के फलस्वरूप किये गये हैं, यह बात उनके कानों में जितनी बार पड़ती, वे उतने ही कठोर होते जाते। रूस में हुए किसानों के हाल के विद्रोह का आतंक गवर्नर के मस्तिष्क को खाये डाल रहा था और वह "विद्रोह" का सूत्रपात करनेवालों के विरुद्ध कठोरतम पग उठाने को तत्पर था।

फिर भी अधिकारी दो-टूक कार्रवाई करने से झिझक रहे थे। घटनाएँ सुदूर स्तेपियों में हुई थीं। वे उनसे अपरिचित थे। इसके अलावा, वे याचिकाओं की विपुल संख्या से भी हिचक उठे थे। अगर स्तेपियों में नयी अशान्ति वे पैदा करना नहीं चाहते तो उनके लिए मामले पर सावधानी से ग़ौर करना ज़रूरी था। तो भी तकेजान द्वारा अभियुक्त क़रार दिये गये लोगों में से दस पर मुक़द्दमा चलाया जाना तय था।

पहले भयानक सज़ाओं की चर्चा थी: बालाग़ाज़, आदिलख़ाँ और उनके जिगितों को आजीवन सश्रम कारावास की सज़ा मिलेगी। लेकिन आबाय और वकील के सारे संभव दाँव-पेच की बदौलत सज़ा कम करके इर्कुत्स्क के निकट निर्वासन की कर दी गयी।

शहर में मौजूद उनके स्वजनों ने आँखों में आंसू भरकर उन निर्वासित लोगों से विदा ली। इसके बावजूद उन्हें उन लोगों के लौट आने की उम्मीद बच रही थी।

"धीरज रखो, तुम घर लौट आओगे, अपने आऊलों में!" निर्वासितों को ढाढ़स बँधाने, उनके आत्म विश्वास को दृढ़ बनाने की कोशिश करते हुए उन्होंने दिलासा दिया।

अब आबाय घर लौटने के बारे में सोच रहा था और वह अन्द्रेयेव से अलविदा कहने उसके पास जा पहुँचा।

"तुम्हारे हृदय में लोगों के प्रति बड़ी चिन्ता है," वकील ने अपनी राय दी। "किसी आदमी में इतनी कम उम्र में यह गुण होना, अद्भुत बात है। लेकिन अगर तुम लोगों की और ख़ुद की मदद करने को वास्तव में लालायित हो तो तुम्हें ज्ञान-प्रसार के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए। तुम्हें अध्ययन करना चाहिए।"

अन्द्रेयेव ने आबाय की सर्वप्रिय आकांक्षा भाँप ली थी।

"मैं पढ़ना तो चाहता था," आबाय ने उदासी से कहा, "लेकिन कहाँ? मैं इस उम्र में स्कूल जाने से तो रहा। मुझे बताइये, क्या कोई स्कूल गये बिना पढ़ सकता हूँ?"

वकील ने जल्दी से आबाय को आश्वस्त किया: पढ़ने से किसी की उम्र का कोई वास्ता नहीं। ऐसे भी लोग हैं जिन्होंने चालीस साल की अवस्था में पढ़ना शुरू किया था और अपने स्वाध्याय से ही प्रसिद्ध विद्वान बन गये। उसने उन लोगों के नाम बताकर समझाया, किस तरह स्कूल गये बिना कोई आदमी अध्ययन कर सकता है। और वकील ने आबाय के लिए एक अध्यापक की तलाश करने का वायदा किया। सिर्फ़ ज़रूरत है इस बात को पक्के तौर से अपने दिमाग़ में बैठा लेने की और किताबो में जुटकर कठिन मेहनत करने की, उसने आबाय को बताया। अगर आबाय यह करने को तैयार है, ज्ञान के दरवाज़े उसके लिए खुल जायेंगे।

आबाय की ख़ुशियों की कोई सीमा न रही। उसे प्रतीत हुआ, जिन बन्धनों ने उसे इस तरह जकड़ रखा था, अब वे आख़िर खुलने को थे। वह अपने आऊल परिवार से आशीर्वाद लेने, ज़रूरी साधन जुटाने और यथासंभव जल्दी से जल्दी शहर को रवाना हो जाने लौट आया। वह यौवन के उत्साह से भरा था।

जिदेबाय में उसे ज़्यादा देर नहीं लगी। दिल्दा और उलजान शीघ्र ही राज़ी हो गयीं। दूसरों की राय कोई मायने नहीं रखती थी। मिर्ज़ाख़ाँ को एक घोड़ी के साथ सेमिपलातींस्क भेज दिया गया। उस घोड़ी को शहर में अच्छे सगुन के लिए काटा जाना था। दूसरी समस्या पैसों की थी। इसका समाधान एक गट्ठर चमड़ा और कई जानवर शहर भेज कर किया गया। फिर आबाय ने यात्रा की ख़ुद तैयारी की।

उस वर्ष ग्रीष्म में दिल्दा ने तीसरे बच्चे का जन्म दिया था। नन्हा ग्रब्दुर्रहमान अब हँसने लगा था। यह आबाय की पितृ भावनाओं को जगानेवाला पहला बच्चा था।

दिल्दा के बच्चे अपनी माँ पर गये थे और आबाय से नाक-नक़्श में तनिक भी नहीं मिलते थे। उनके छोटे-छोटे मुखड़े साँवले नहीं बल्कि पीले थे। अब्दुर्रहमान भी उन्हीं जैसा था, लेकिन उसका आकर्षक गोल-मटोल चेहरा, आश्चर्यजनक रूप से बड़ी-बड़ी आँखे और चापवत भौंहें भिन्न थीं और उसकी अपनी ही विशेषताएँ थीं जो आबाय को प्रिय थीं।

जब दोनों अकेले थे, आबाय ने दिल्दा से विदा ली। कहने को कुछ भी न था। दोनों में एक-दूसरे के प्रति मैत्रीपूर्ण भावनाएँ थीं। हमेशा की तरह संयमित और मितभाषी दिल्दा ने बस एक ही इच्छा प्रकत की:

"आपकी माँ और नन्हें बच्चे आपके पीछे घर पर रह जायेंगे। उन्हें आप भूलियेगा मत। मैं अपने लिये कुछ भी नहीं कहती। बस हमें काफ़ी समय तक बाट जोहते न छोड़ दीजियेगा। जब भी मौक़ा लगे, घर आ जाया कीजिए!" वह मुस्कुराकर बोली।

दिल्दा आँखों में आँसू भर या ठंडी आहें भरकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करनेवाली औरतों में नहीं थी। वह हमेशा से संयमित रहती थी। लेकिन अगर कोई बात उसके दिमाग़ में होती, वह हमेशा साफ़-साफ़ कह डालती – बिना छल-प्रपंच के। आबाय ने उसे स्नेहपूर्वक देखा और उसका कन्धा चूम लिया।

"मैं मौज-मज़े करने दूर नहीं जा रहा बल्कि एक क़ाबिल आदमी बनने जा रहा हूँ। इसे याद रखना।"

उसने नन्हे अब्दुर्रहमान को कपड़े पहना दिये और अपनी बाँहों में ले लिया। माँ उलजान से मिलने जाते समय वह उसे भी साथ ही ले गया।

पिछले कुछ वर्षों में उलजान स्पष्ट रूप से वृद्ध हो गयी थी। पल भर तक निर्निमेष आँखों से बेटे को देखने के बाद उसने बच्चे को अपनी गोद में ले लिया। वृद्ध माँ ने पल भर तक बच्चे का सिर अपने मुंह से सटा रखने के बाद दिल्दा को सौंप दिया। उसके हृदय में मचलती सारी भावनाएँ उसके पीले पड़े चेहरे से प्रकट हो रही थीं।

"मेरी आँखों की रोशनी! तुम्हारी दिवंगत दादी ने एक बार तुम्हें 'अपना इकलौता' कहा था। सारे दूसरे उसके इकलौते ही थे लेकिन तुम

एकदम ख़ास थे। तुम्हें याद है, जब तुम बीमार थे, वह किस तरह ख़ुदा से मिन्नतें करती रही थी: 'हे ख़ुदा, मेरी आत्मा की इस ज्योति की निष्ठुर, निर्मम... से हिफ़ाज़त कर... अपनी ज़बान पर इन्हीं अल्फ़ाज़ों के साथ वह हम लोगों के बीच से चली गयी।"

आबाय को ज़ेरे के अन्तिम शब्द याद थे, उसकी माँ ने उनमें थोड़ा परिवर्तन कर दिया था।

"तुम्हारा ज़माना आ गया है," उलजान ने विचारमग्नता से आगे कहा, "और तुम्हारा मैदाने जंग तुम्हारे सामने है। बहादुर बनो! कैसे विजय पाओगे, यह तुम हम लोगों से कहीं ज़्यादा अच्छी तरह समझ सकते हो। तुम्हारे पैरों में बेड़ी डालना हम लोगों के लिए उचित नहीं। ख़ुदा तुम्हें ख़ुशी दे!"

बच्चे की तरह आबाय ने माँ को बाँहों में भर, उससे सस्नेह विदा ली। पूरा आऊल उसे विदा करने जुट आया था और जब वह घोड़े पर सवार हो सबको अलविदा कह चुका था, उसकी माँ दुबारा उससे मुख़ातिब हुई।

"आबायजान, तुम्हें तोयग़ुलि के आऊल में थोड़ी देर के लिए रुक जाना चाहिए! तुम्हारे पिता और उनके मित्रगण वहाँ एक सगाई सम्पन्न करने गये हैं। उन्होंने हम लोगों को वहाँ पूरे आऊल के साथ आने के लिए कहा था लेकिन यह मेरे लिये बहुत कठिन है। अगर तुम भी वहाँ नहीं जाओगे, उन्हें ठेस पहुँचेगी। आगे जाने से पहले तुम वहाँ थोड़ी देर के लिए उन लोगों से मिल लेना," उसने अनुरोध किया।

आबाय ने उसके कहे मुताबिक़ करने का वायदा किया, हाथ हिलाया और घोड़े को एड़ लगा दी।

तोयग़ुलि का आऊल ओर्दा पहाड़ की तलहटियों में, उसके रास्ते से कुछ परे था लेकिन जिदेबाय के मुक़ाबले सेमिपलातींस्क से क़रीब था।

तोयग़ुलि ममाय लोगों का एक प्रमुख बी था और क़ोनानबाय ने इस साल जाड़े में शादी के माध्यम से उसके साथ सम्बन्ध सथापित करने का फ़ैसला किया था। जाड़े का मौसम अच्छा रहा था और जानवर अच्छी तरह खा-पीकर मोटे-ताज़े हो गये थे। सो, तोयग़ुलि के लिए क़ोनानबाय के आने की तारीख़ पक्की करना संभव रहा था। अब क़ोनानबाय अपने स्वजनों की भीड़-भाड़ के साथ वहाँ सगाई सम्पन्न करने आया हुआ था।

आबाय और येर्बोल भी आ पहुँचे। क़ोनानबाय के साथ क़ारातायें, ज़ुमाबाय, जाक़िप तथा अन्य वृद्ध जन थे। तोयग़ुलि के तीनों घर मेहमानों से भरे थे और हर कहीं शोरग़ुल और हँसी के ठहाके पड़ रहे थे। आबाय और येर्बोल एक घर के अन्दर जा पहुँचे और लोगों की बातें सुनते बैठे रहे। हमेशा की तरह सबसे ज़्यादा क़ारातार बोल रहा था।

कई मामलों पर विचार-विमर्श करते बूढ़े लोग पुराने ज़माने से आज के ज़माने की तुलना करने लगे। क़ारातार अपनी जवानी की, बाप-दादों की बात करते हुए आख़िर आज के ज़माने पर आ पहुँचा: उसकी राय में आज के लोग उसी तरह हीन हो गये थे जैसे जुत के समय जानवर। उनमें गुणों की भी कमी हो गयी थी।

इस बात पर आबाय ने मुस्कुराते हुए आपत्ति की:

"वे पुराने दिन बड़े अच्छे थे जब पड़ोसी क़बीले निरन्तर एक दूसरे पर हमले बोलते और लूट-पाट मचाते रहते थे! तब वृद्ध लोग, औरतें और बच्चे न तो चैन से खा सकते थे, न सो सकते थे। और सिबान से तोबिक़्ति या तोबिक़्ति से सेमिपलातींस्क जाता एकाकी मुसाफ़िर हमेशा अपने सिर पर ख़तरा महसूस करता रहता था। लूटे जाने या मारे जाने के भय से उसे हमेशा चौकस रहना पड़ता था! जी हाँ, बेशक, वे बड़े शानदार दिन थे!"

लेकिन बूढ़े लोगों ने इसपर कान देने की कोई ज़रूरत ही नहीं समझी। अतीत उन्हें आनन्ददायी प्रतीत होता: वे निर्बन्ध जीवन और बीते दिनों की वैभवशालिता की बातें करते रहे।

"लोग भी आज के मुक़ाबले कहीं अधिक लम्बे और अधिक प्रभावशाली थे," उनका कहना था।

क़ोनानबाय पूरी तरह इस बात से सहमत था और अपनी एक वज़नदार उक्ति द्वारा उसने उनकी दलीलों को एकदम पक्का कर दिया:

"हर नयी पीढ़ी, पिछली पीढ़ी के मुक़ाबले दुनिया के अन्त के क़रीब है और मानवजाति क्षीण पड़ती जा रही है। दूसरी ओर, इनके मुक़ाबले हमारा युग मुहम्मद के युग से क़रीब था। और मुहम्मद के युग से जो लोग जितने ही क़रीब रहे, वे उतने ही श्रेष्ठ रहे!"

लेकिन आबाय ने तुरंत ही प्रतिक्रिया ज़ाहिर की। वह कविता और गीत प्रतियोगिता में भाग लेने जा रहे किसी आक़िन की तरह अनोखे ढंग

से उत्तेजित था। उसमें अन्तर्निहित शक्तियाँ उसे खुले मुक़ाबले के लिए ललकार रही थीं।

"अच्छाई और ख़ुशहाली स्थान और काल द्वारा नहीं नापी जाती," उसने आपत्ति की। "आला-ताउ का शिखर सूर्य के क़रीब है लेकिन फिर भी वह निरन्तर हिमाच्छादित रहता है जबकि उसकी तलहटियाँ हरियाली और फूलों से सजी और फलों से भरी पड़ी हैं और हर प्रकार की जीवन्तता से परिपूर्ण हैं। लेकिन मुहम्मद के पिता अबू तालिब जो आप लोगों से कहीं ज़्यादा उनके क़रीब थे, ग़ैर* की मौत मरे।"

सब के सब हँस पड़े। वृद्ध व्यक्तियों को प्रबल आघात महसूस हुआ और उन्होंने चुपचाप क़ोनानबाय की ओर देखा जिसने रोषपूर्वक आबाय से चीख़कर कहा:

"बहुत हुआ!"

आबाय ने आश्चर्य से अपना हाथ उठाया लेकिन आगे कुछ नहीं कहा।

हँसी तत्क्षण थम गयी और कमरे में भारी चुप्पी छा गयी।

लेकिन क़ाराताय भीतर ही भीतर ख़ुश था और उसने कोहनी से जाक़िप को टहोका लगाते हुए फ़ुसफ़ुसाकर कहा:

"ज़रा देखो तो, वह हमें अपनी राह भी नहीं चलने देगा; उसने हमें शिकंजे में जकड़ लिया है!"

शीघ्र ही नाश्ता-पानी आ गया। अपनी यात्रा पर दुबारा चल पड़ने को आबाय और येर्बोल खड़े हो अपने चोग़े डालने लगे। जब वे घर से बाहर निकले, क़ोनानबाय भी उनके पीछे-पीछे चला आया।

आबाय को बुलाकर वह उसे एक ओर पहाड़ी टीले के पास ले गया। बहुत दिनों बाद दोनों अकेले में मिले थे।

क़ोनानबाय ने अपने बेटे की ओर रुखाई से देखा।

"तुम्हें पढ़ने के लिए, ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजा गया और तुम्हें शिक्षक ने पढ़ाया-लिखाया जब कि हम अज्ञानता में पले-बढ़े। लेकिन तुम्हारा ज्ञान तुम्हें यह सिखाने में क्यों असफल रहा कि दूसरों की उपस्थिति में अपने पिता का सम्मान करना चाहिए? अपने पिता को उछालने में और

---

* ग़ैर – नास्तिक। – सं०

बेगानों के सामने उसे नीचा दिखाने में क्या बड़ाई है?" उसने मलामत से पूछा।

तो उसके पिता ने हार मान ली थी।

आबाय ने उत्सुकता से पिता की ओर देखा: कठोर, रोबदाबवाला चेहरा मुरझा और सिमट गया था। वह झुके सूखे प्रतीत हो रहे थे। उनकी मलामतों में भी अब कुछ बच्चों जैसा चिड़चिड़ापन था—लगभग निरीह-सी। बुज़ुर्गों का आदर करना नौजवानों का और अपने पिता का आदर करना बेटे का कर्त्तव्य है।

"आप ठीक कहते हैं। निस्सन्देह, मैं इसमें दोषी हूँ। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए!" बात ख़त्म करने के लिए उसने जवाब दिया लेकिन अभी पिता ने अपनी बातें नहीं ख़त्म की थीं।

"कुछ समय से मैं तुमसे बातें करने की सोच रहा था," पल भर सोचने के बाद उसने कहा। "मैं तुममें तीन कमियाँ देखता हूँ। सुनो, जो मैं कहना चाहता हूँ।"

"कहियें, पिताजी," आबाय ने क़ोनानयाय की ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए कहा।

"पहली तो यह कि तुम में दाना और भूसे में फ़र्क़ करने का माद्दा नहीं है। जो तुम्हारे पास है तुम उसकी क़ीमत नहीं जानते और अपने ख़ज़ाने बेमतलब लुटाते फिरते हो। तुम बहुत खुले और सुलभ हो—सपाट किनारोंवाली झील की तरह जिसका पानी कुत्ते सुड़कते हैं और जानवर अपने पैरों से पंकिल बनाते हैं। दूसरी यह कि तुम दोस्त और दुश्मन में भेद नहीं कर सकते और इसलिए दुश्मन के साथ दुश्मन की तरह और दोस्तों के साथ दोस्त की तरह व्यवहार नहीं कर सकते। तुम अपने अन्दर कुछ भी छुपाकर नहीं रखते। लोगों को नेतृत्व देनेवाला आदमी इस तरह व्यवहार नहीं कर सकता है। वह उन्हें अपने हाथों में नहीं रख पायेगा। तीसरी यही कि तुमने रूसियों की ओर झुकना शुरू कर दिया है। तुम्हारा मन उन लोगों की ओर भाग रहा है और तुम्हें इसकी परवाह नहीं कि हरेक मुसलमान तुम्हें एक अजनबी के रूप में देखने लगेगा," क़ोनानबाय ने कहा।

आबाय फ़ौरन समझ गया, उसका पिता कहाँ वार कर रहा था—उसकी सर्वप्रिय आकांक्षाओं पर। अपनी राह का चुनाव करने के बाद आबाय जिस

चीज़ के लिए समर्थन की इच्छा रखता था, उसी पर अब उसका पिता कुठाराघात कर रहा था।

क़ोनानबाय ने वास्तव में अपने बेटे की ख़ूबियों का सही-सही अन्दाज़ लगाया था। आबाय अपनी इच्छा का त्याग किसी के सामने नहीं करेगा। वह दुबारा उसी अनोखे ढंग से उत्तेजित हो उठा जिस तरह मकान के अन्दर हुआ था। वह चुप नहीं रह सका—अपने पिता के प्रति दया महसूस करके भी नहीं:

"पिताजी, मैं आपकी एक भी मलामत को स्वीकार नहीं कर सकता। मुझे यक़ीन है, मैं सही हूँ। आप मुझे सपाट किनारोंवाली झील कहते हैं। क्या गहरे कुएँ का पानी होना उससे बेहतर है जो सिर्फ़ उसी को सुलभ है जिसके पास रस्सी, बाल्टी और मज़बूत बाँहें हैं? मैं उन बूढ़ों, बच्चों—उन सब के लिए सुलभ होना पसन्द करूँगा जिनकी बाँहें कमज़ोर हैं। दूसरी बात, आप ने लोगों को हाथ में रखने और इस कार्य के लिए कैसे आदमी की ज़रूरत है, इसकी बात कही। मेरी राय में लोग कभी भेड़ों के एक ढोर की तरह थे: अगर गरेड़िया कहता, 'अइत!' वे सारे उठ खड़े होते और जब 'शइत!' कहता, वे सब ज़मीन पर लेट जाते। फिर लोग ऊँटों के ढोर की तरह हो गये: जब उनके सामने पत्थर फेंका जाता और चीख़कर 'शोक!' कहा जाता, वे पहले चारों ओर देखते, सोचते और फिर तभी अपनी राह से हटते। लेकिन अब लोग जो अपनी पहले की वह सहिष्णुता छोड़ चुके हैं और साहसपूर्वक अपनी आँखें खोल चुके हैं—घोड़े के ढोर की तरह हैं जो सिर्फ़ अपने सवारों की ही आज्ञा का पालन करते हैं, जो उसके साथ-साथ पाले और हिम-तूफ़ान जैसी सारी आफ़तें सामना करते हैं, जो ढोर के लिए अपने घरों तक को बिसराकर बर्फ़ के ढेर को तकिया और हिम-परत को बिछावन बना सकते हैं। तीसरी बात आपने रूसियों के बारे में कही। लोगों के लिए, मेरे लिए सर्वाधिक बहुमूल्य चीज़ है ज्ञान और प्रकाश। यह सारी चीज़ें रूसियों के हाथों में हैं और अगर वे मुझे वे ख़ज़ाने दे देंगे—जिनके लिए मैं जीवन भर ललकता रहा हूँ तो मेरे लिए वे बेगाने कैसे हो सकते हैं? अगर मैं इसे इनकार कर दूँ तो मैं जाहिल रह जाऊँगा और मुझे इसमें कोई भी सम्मानजनक बात नहीं दिखाई देती।"

क़ोनानबाय ने ध्यानपूर्वक सारी बातें सुन कर एक ठंडी आह भरी। मायू-

सी की एक असामान्य परछाँई उसके चेहरे पर छा गयी लेकिन उसने और कुछ नहीं कहा।

आबाय उससे विदा ले रवाना हो गया।

क़ोनानबाय पहाड़ी के पास अकेला सोच में डूबा और भग्नहृदय रह गया। तो वह फिर एक बार पराजित हो गया था—और सिर्फ़ अपने बेटे से ही नहीं, तीव्र और सर्व-विजयी जीवन से भी। "आपकी शक्ति ख़त्म हो चुकी है, आपका समय बीत चुका है और आपको भी चला जाना चाहिए," इसने उसके बेटे की आवाज़ में उससे रुखाई से कहा था और इसकी निष्ठुर धाराएँ उसे एक ओर बहाये ले जा रही थीं।

आबाय घोड़े पर उन्हीं मैदानों से एक बार फिर चला जा रहा था जिनसे वह कभी बचपन में मदरसे से लौटा करता था—उस समय अपने परिवार और अपने आऊल के लिए वह कितना बेचैन था! उस समय की शाद्वल स्तेपियाँ, इस समय जहाँ तक दृष्टि जा पाती, बर्फ़ से ढँकी थीं। दूह और पहाड़ियाँ चारों ओर से सफ़ेद दिखाई देतीं, उदासीनता से अतीत की धुंधली तस्वीरों पर विचार करती प्रतीत होतीं। ऐसा भी समय था जब इन स्तेपियों को देखकर उसका बाल-सुलभ हृदय उल्लास से भर उठता था, जब वह इन चरम विस्तृतियों में, अपने आऊल में सुख की कामना करता था। लेकिन अब वह उनसे विदा ले रहा था—शहर जा रहा था, उस चीज़ को पाने की उम्मीद में जिसकी कामना उसने तभी की थी...

अब वह पच्चीस साल का हो चुका था। दिनों का एक लम्बा क्रम अतीत की अनन्त शृंखला में खो चुका था। वह स्पष्ट रूप से देख सकता था, किस तरह उसके जीवन का पथ उसे कभी भूल-भुलैया में, कभी पहाड़ी दर्रों में ले गया। और उसके जीवन का वही टेढ़ा-मेढ़ा मार्ग उसे एक बार फिर ऊपर की ओर—एक और टेढ़े-मेढ़े मार्ग की ओर ले जा रहा था।

हाँ, बेशक, वह अब ऊँचाइयों पर था।

वह पौद जो पथरीली ज़मीन को तोड़कर बाहर निकल आने के लिए कभी संघर्ष कर रही थी, आख़िर उसमें एक कोमल-सी टहनी निकल ही आयी थी—उस बीहड़ खड़ी चट्टान पर वही तो एकाकी जीवन्त चीज़ थी।

उस बिरवे ने गहरी जड़ें पकड़ ली थी और सबल, सुस्थिर और विशाल वृक्ष बनने को उठ खड़ा हुआ था—जिसे न तो शरद के पालों का, न तो पहाड़ी हिमतूफ़ानों का भय था।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषयवस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है: ताशक़न्द १२९, नवाई स्ट्रीट, ३०,

Progress publishers,
Tashkent 129,
Navai Street, 30.

Мухтар Ауэзов

АБАЙ.

1 книга

Роман

Перевод осуществлен
с английского языка по изданию:
Мухтар Ауэзов, Абай.
Издательство «Прогресс». Москва.

Редактор русского текста *И. Соболев.*
Ответственный редактор *А. Файзуллаев*
Художественный редактор *Н. Нуридинов*
Технический редактор *Г. Максудова*
Корректор *Ш. Худайкулов*

Сдано в набор 17. 08 78 г. Подписано в печать 15. 11. 79 г. Формат 84×108 1/32. Бумага тип. № 1. Печать высокая. Гарнитура бхилаи Условн печ л 24,99+0,01 вкл Уч. изд. л. 33,68+0,05 вкл. Тираж 2110. Зак № 3336 Цена 5 р 41 к. Издат. № 30008.

Ташкентское отделение издательства «Прогресс» Государственного комитета СССР по делам издательств, полиграфии и книжной торговли. Ташкент, 700129, ул. Навои, 30.

Полиграфкомбинат Ташкентского полиграфического производственного объединения «Матбуот» Государственного комнтета УзССР по делам издательств, полиграфии и книжной торговли. Ташкент, 700129, ул. Навои, 30.